प्रकाशक —
गोयल एण्ड कम्पनी
दरीबा, दिल्ली-६

दिसम्बर, १९५६
मूल्य आठ रुपये

मुद्रक —
इण्डिया प्रिंटर्स
एस्प्लेनेडरोड, दिल्ली-६

द्वितीय खण्ड

हस्त-रेखा-विचार

सात मुख्य रेखाएँ

१०वां प्रकरण—जीवन-रेखा

विषय-प्रवेश—हाथ की बनावट के अनुसार रेखाओं के फल में तारतम्य—रेखा के स्वरूप तथा गुण-दोष—जीवन-रेखा के सम्बन्ध में भारतीय मत—पाश्चात्य मत—जीवन-रेखा की क्षीणता का प्रभाव—जीवन-रेखा का आरम्भ—जीवन-रेखा की लम्बाई और सन्तान—जीवन-रेखा का रूप और लक्षण—गहरी जीवन-रेखा का प्रभाव—पतली और कम गहरी रेखा—चौड़ी और उथली रेखा—जीवन-रेखा से रोग-विशेष का परिज्ञान—इसको आड़ी काटने वाली रेखाएँ—लक्षण और फल—इस पर चिह्न और उनसे रोग-परिज्ञान—जीवन-रेखा पर द्वीप-चिह्न और रोग-निर्णय—इस पर बिन्दु चिह्न और उनका फल—यदि जीवन-रेखा टूटी हो—टूटी हुई जीवन-रेखा की क्षति-पूर्ति—शाखायुक्त जीवन-रेखा—जीवन-रेखा से निकलकर ऊपर आने वाली रेखाएँ—जीवन-रेखा का अन्त—जीवन-रेखा का रंग—उपसंहार। १४१-१८

११वां प्रकरण—शीर्ष-रेखा

भारतीय मतानुसार—इस रेखा के विविध नाम—शीर्ष-रेखा का आरम्भ—शीर्ष-रेखा की दिशा—रूप—गुण—अवगुण आदि—शीर्ष-रेखा तथा हृदय-रेखा में अन्तर—शीर्ष-रेखा का रंग—उसकी गहराई और चौड़ाई—यदि यह रेखा टूटी, शृंखलाकार या अन्य दोषों से युक्त हो—अन्य लक्षणों के योग से शीर्ष-रेखा के शुभ-लक्षण—शीर्ष रेखा का अन्त—शीर्ष-रेखा की शाखाएँ—यदि शीर्ष-रेखा टूटी हो—शीर्ष-रेखा का अन्य

प्राक्कथन

"एषु सर्वेषु भूतेषु गूढात्मा न प्रकाशते।
दृश्यते त्वग्र्यया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः ॥" (१।३।१२)

—कठोपनिषत्

इस अखिल ब्रह्माण्ड के चराचर प्राणियो, में, उस सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की सत्ता व्यापक है—कोई वस्तु—अणु-के-परमाणु से लेकर सौरमण्डल के विशिष्ट-से-विशिष्ट तेजपिंड तक—ऐसी नही जिसमें भगवत् सत्ता न हो परन्तु महर्षि कठ ने अपने उपर्युक्त वचनो में कहा है कि वह गूढात्मा सब में समान रूप से प्रकाशित नही होता। उस सच्चिदानन्दघन की, सत्ता, चेतना और आनन्द कला 'अणोरणीयान् महतो महीयान्' सब में व्याप्त है—परन्तु प्रकाशित समान रूप से नही है। प्रस्तर में उतनी 'चेतना' नही है जितनी वृक्षो में और वृक्षो की अपेक्षा मनुष्य में अधिक चेतना है। चेतना की शास्त्रीय परिभाषा न कर सर्वबुद्धिगम्य यह परिभाषा सुगम होगी कि जितना 'क्रियात्मक' व्यापार—मन या इन्द्रियो का—इस चराचर जगत् में देखा जाता है—वह 'प्राण' शक्ति पर आधारित होता है और उस प्राण-शक्ति का आधार 'चेतना' है। महर्षि चरक ने कहा है—

'सेन्द्रिय चेतनद्रव्य निरिन्द्रियमचेतनम्।'

अर्थात् जिन पदार्थों में इन्द्रियाँ कार्य करती है वे चेतन है जिनमें इन्द्रियाँ कार्य नही करती वे अचेतन हैं। इस व्यावहारिक परिभाषा के अनुसार प्रस्तरादि निरिन्द्रिय होने से 'अचेतन' हुए। परन्तु वास्तव में गम्भीर दृष्टि से देखा जावे तो जो मनुष्य में जितनी 'क्रिया' है—उतनी वृक्षो में नही—फिर भी वृक्ष बढते हैं—उनमें कोमल अकुर पैदा होते हैं, पुष्प खिलते हैं—फल उत्पन्न होते हैं, वृक्ष बड़े होते है, पुराने होते हैं और सूखकर मर जाते हैं।

'अत सज्ञा भवन्त्येते सुख दुःख समन्विता।' (मनुस्मृति)

प्रतिक्षण उनमें कुछ-न-कुछ क्रिया होती रहती है। उसी प्रकार भूगर्भ-विज्ञान वेत्ता हमें बताते हैं कि यह पत्थर दस हजार वर्ष पुराना है, यह एक लाख वर्ष

पुराना और यह दस लाख वर्ष पुराना। प्रस्तरों में जो क्रिया होती है वह सुसूक्ष्म दृष्टि से वैज्ञानिक देखते हैं—यही भाव महर्षि कठ ने व्यक्त किया है कि यह 'गूढ़ात्मा' सब में प्रतिष्ठित है।

यच्चापि सर्व भूतानां बीजं तदहमर्जुन।

न तदस्ति विनायत्स्यान्मया भूतं चराचरम् ॥ (१०।३९ भ० गी०)

परन्तु सर्व भूतों की अपेक्षा मनुष्य में चेतना या क्रिया विशेष है। इसमें दसों इन्द्रियाँ और मन, दसों प्राण, पूर्ण विकसित रूप में हैं।

काल पुरुष की कल्पना द्वादश राशियों द्वारा की जाती है। इसकी व्याख्या करते हुए दशम शताब्दी में ज्योतिष विद्या के धुरन्धर विद्वान् श्री रुद्र ने लिखा है—

"द्रेक्काणः पादौ होरावक्त्र, नवभागा पाणियुगलं, त्रिंशांशक चक्षुषी, द्वादशांशको नासापुट श्रोत्रश्रवणयुगलम्। नवांशका नव प्राणात्मका।

"प्राणोपान समानश्चोदानव्यानौ च वायवः।

नागः कूर्मश्च कृकलो देवदत्तो धनञ्जय ॥"

आगे चलकर कहते हैं कि धनञ्जय के अतिरिक्त नवप्राण, नवांश होते हैं। द्वादशांश—दस इन्द्रिय—मन और बुद्धि इन द्वादश का प्रतीक है। इन द्वादश इन्द्रियों और नव प्राणों से 'एक विंशतिविध सूक्ष्मशरीरमुत्पद्यते। तथा चोक्तं भगवत्पादाचार्येण।

"इह तावदक्षदशकं मनसा सह बुद्धितत्त्वमथवायुगणः"

इति लिंगमेतदमुना पुरुषः सह संगतो भवति जीवः ॥

अर्थात् इन २१ से सूक्ष्म शरीर बनता है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि "यत्पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे।" अर्थात् जो इस मनुष्य शरीर में है वही ब्रह्माण्ड (विराट् पुरुष के शरीर) में है। जैसे एक छोटे से वट के वृक्ष के एक-एक फल में अनेकों बीज होते हैं, और प्रत्येक बीज में एक महान् वट-वृक्ष सूक्ष्म रूप से निहित होता है, उसी प्रकार मायावच्छिन्न नर-शरीर में उस अखिल ब्रह्माण्डनायक का कल्पनातीत सूक्ष्म रूप है और उसी के प्रकाश से चेतना, क्रिया आदि का उद्गम है। इस मनुष्य-शरीर के अधिष्ठाता भी वही देवी, देवता या शक्ति विशेष हैं जो देवलोक में।

कर्मेन्द्रियों में हाथ और पैर ये दो इन्द्रियाँ अन्य कर्मेन्द्रियों की अपेक्षा विशेष प्रधान हैं—इस विषय में दो मत नहीं हो सकते। मनुष्य का आधार पैर है। मनुष्य पैर पर स्थित या प्रतिष्ठित होता है। इसी 'प्रतिष्ठा तत्त्व' के देवता विष्णु हैं। क्रियात्मक इन्द्रियों—किंवा कर्मेन्द्रियों में सर्वप्रधान हाथ या 'कर' है इस कारण इनका अधिष्ठाता 'इन्द्र' देव है। जब बालक घुटने के बल चलता है तो हाथ (इन्द्र) आगे होते हैं और पैर (उप+इन्द्र) पीछे। या यों कहिये कि जब बालक बड़ा हो जाता है और चलता है तब भी हाथ (इन्द्र) ऊपर होते हैं पैर (उप+इन्द्र) नीचे। इसी कारण 'विष्णु' (प्रतिष्ठा तत्त्व के देवता) को उपेन्द्र कहा है। अन्यथा विष्णु के लिये इन्द्र से द्वितीय पद-वाचक 'उपेन्द्र' शब्द की प्रयोजनता क्या ? (देखिये तैत्तिरीयोपनिषद् शिक्षावल्ली प्रथम अनुवाक)

देवताओं का राजा इन्द्र है, क्योंकि समस्त क्रियात्मक शक्ति में सर्वप्रमुख 'हाथ' हैं। भगवान् ने गीता में कहा है—

" ... देवानामस्मि वासवः"

(भ० गी० १०।२२)

अर्थात् मैं देवताओं में 'इन्द्र' हूँ। ज्योतिष के मतानुसार भी ऊपर बताया गया है कि 'पाणियुगल' काल पुरुष की राशि के नवांश का प्रतीक हैं। 'नवांश' को 'राशि' के समान ही प्रधानता दी जाती है, यह ज्योतिषियों से छिपा नहीं है। श्री मन्त्रेश्वर ने 'फलदीपिका' में कहा है—

"षड्वर्ग सन्नास्त्वथ राशिभाव तुल्यं नवांशस्य फलं हि केचित्।

(फ० दी० ३।२)

इस दृष्टिकोण से भी नवांश के प्रतीक 'पाणियुगल' का विशेष महत्त्व है।

जैसे केवल नाडी को देखने से अनुभवी वैद्य को सम्पूर्ण शरीर के कुपित दोषों का (वात, पित्त, कफ के विकारों का) ज्ञान हो जाता है, जैसे केवल हथेली की गरमाई या पीलापन ज्वर या पीलिया रोग प्रकट कर देता है, उसी प्रकार हाथ का आकार, उंगलियों के आकार, अंगुष्ठ आदि मनुष्य की चित्तवृत्ति, बौद्धिक शक्ति और प्रवृत्ति का परिचय दे देते हैं। यह तर्कसम्मत सिद्धान्त है, कि प्रत्येक कार्य के मूल में 'कारण' अवश्य होता है। यदि मनुष्यों के हाथों के आकार भिन्न-भिन्न हैं तो क्या 'कारण' में भिन्नता नहीं होगी ? नीचे मनुष्य के 'मस्तिष्क' का एक चित्र दिया गया है।

मस्तिष्क के विभिन्न भाग शरीर के विभिन्न अवयवों का संचालन करते हैं। मस्तिष्क का कौन-सा भाग किस अवयव का संचालक या अधिष्ठाता है

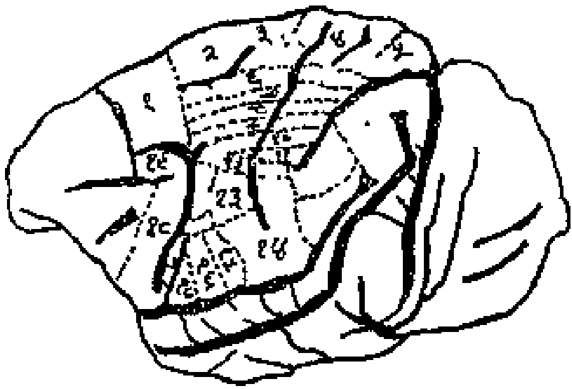

या किस अंग से सम्बन्धित है यह निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट होगा—

मस्तिष्क का भाग	शरीर का अवयव या क्रिया	मस्तिष्क का भाग	शरीर का अवयव या क्रिया
१	सिर को घुमाना	११.	अंगुष्ठ
२	नितम्ब प्रदेश	१२	पलक
३	घुटने और टखने	१३	मुख का भीतरी भाग
४.	पैर के अंगूठे	१४	मुख-ओष्ठ से वेष्टित भाग
५.	पैर की उंगलियाँ	१५.	चबाना
६	कंधे	१६.	नासिका का भीतरी भाग जहाँ कण्ठ के भीतरी भाग से योग होता है।
७	कुहनियाँ		
८.	हाथ की कलाइयाँ	१७	कंठ (भीतरी भाग—जहाँ से शब्द उच्चारित किया जाता है।
९.	हाथ की उंगलियाँ	१८.	नेत्र प्रान्त (नेत्रों को घुमाकर बगल से देखना)
१०	तर्जनी	१९	सिर और आँखों का युगपत् संचालन।

मस्तिष्क के किस भाग का शरीर के किस अवयव से विशेष सम्बन्ध है यह वैज्ञानिक प्रयोगों से सिद्ध हो चुका है। मस्तिष्क के भाग-विशेष के चोट या अन्य कारण से अस्वस्थ हो जाने से, सम्बन्धित शरीर का अवयव विशेष, काम करना बन्द कर देता है। इन मस्तिष्क के विभिन्न भागों का सम्बन्ध विविध प्रकार की इच्छाओं, आकांक्षाओं, वासनाओं तथा क्रियात्मक प्रवृत्तियों से भी है। इसी कारण शरीर-लक्षण से चेष्टाओं तथा मानसिक क्रियाओं का पता लगता है।

प्रायः जो भी कार्य हाथ करते हैं उनका सर्वप्रथम अंकुर इच्छा-शक्ति या मस्तिष्क में होता है। भगवान् मनु ने कहा है —

'अकामस्य क्रिया काचिद् दृश्यते नेह कर्हिचित्।
यद्यद्धि कुरुते किंचित् तत् तत् कामस्य चेष्टितम्॥

(मनुस्मृति २।४)

इसीलिये भिन्न-भिन्न इच्छा वाले व्यक्ति, एक सी परिस्थिति में रहते हुए भी भिन्न-भिन्न कार्यों की इच्छा करते हैं और उनमें संलग्न होते हैं। संलग्न होने पर, अपनी-अपनी शक्ति और गुण-दोष के अनुसार सफल, विफल या आंशिक सफल होते हैं।

हमारे शास्त्रकारों ने हाथ को विविध भागों में विभाजित किया है। देखिये चित्र।

१. ब्रह्मतीर्थ
२. पितृतीर्थ
३. पितृस्थान
४. मातृस्थान
५. भ्रातृस्थान
६. बन्धुस्थान
७. { विद्यास्थान / सुतस्थान }
८. करभ
९. करतलमूल
१०. करतल-मध्य

अंगुलियों के अग्रभाग को देवतीर्थ कहते हैं। कार्य-विशेष के लिये हाथ का भाग विशेष, निर्दिष्ट है।

इसी कारण शास्त्रों में लिखा है कि भगवान् का पूजन करने के लिये चन्दन घिसकर हाथ से उठाकर चन्दन की कटोरी में रखना हो तो करभस्थान से करना। विशेष

तो तर्पण करना हो तो पितृतीर्थ से करना। जातकर्म संस्कार के समय अनामिका से घी या शहद चटाना, आदि।

हाथ में देवताओं का वास माना गया है। यह तो प्रसिद्ध ही है—

करांग्रे वसते लक्ष्मी, करमध्ये सरस्वती।
करमूले तु गोविन्द प्रभाते कर दर्शनम्॥

केवल यही नही करतल तथा उंगलियो से भिन्न-भिन्न प्रकार की 'मुद्रा' बनाकर विविध भावों का उदय करना हमारे यहाँ की बहुत प्राचीन विज्ञान-शैली है। अक्षमाला मुद्रा, परशु मुद्रा, गदा मुद्रा, आवाहनी मुद्रा, धेनु मुद्रा, सथापिनी मुद्रा, महा मुद्रा आदि अनेको मुद्राओं के मूल मे यही वैज्ञानिक रहस्य है कि भिन्न-भिन्न उंगलियो के भिन्न-भिन्न प्रकार के मोडने और सयोग से पृथक्-पृथक् प्रभाव उत्पन्न करना। मस्तिष्क के सहस्रो ज्ञान-तंतुओ द्वारा विचार और शक्ति हमारे हाथो और उंगलियो मे आती है और हाथो की उंगलियो को विशिष्ट वैज्ञानिक रूप से क्रियान्वित करने से मस्तिष्क पर प्रभाव पडता है। इसी कारण सबसे पहले अंगन्यास और करन्यास किया जाता है। मूल मंत्र या उसके विविध अक्षरो से उंगलियो को प्रभावित किया जाता है। देखिये श्रीमद्भागवत स्कन्ध ६, सर्ग ८—"करन्यास ततः कुर्यात् द्वादशाक्षर विद्यया"। न्यास के बिना मंत्र मूक होता है—"न्यास बिना मंत्रंमूकं"-मुद्राओ का रहस्य बहुत गम्भीर और इस प्राक्कथन के विषय से बाहर का है परन्तु किस प्रकार मुद्रा बनाई जाती हैं—इस विषय मे केवल धेनु मुद्रा बनाने का विधान बताया जाता है।

वामाङ्गुलीर्दक्षिणनामङ्गुलीनाञ्च मन्धिषु।
प्रवेश्य मध्यमाभ्यां तु तर्जन्यौ द्वे प्रयोजयेत्।
कनिष्ठे द्वेऽनामिकाभ्यां युञ्ज्यात् सा धेनुमुद्रिका॥

इसीको अमृतीकरण मुद्रा भी कहते हैं। शान्ति के अनुष्ठानो में पद्म मुद्रा, वशीकरण मे परशु मुद्रा, स्तम्भन के लिये गदा मुद्रा, विद्वेषण में अशनि मुद्रा, और 'मारण' में खड्ग मुद्रा हाथ की उंगलियो से बनानी चाहिये यह शास्त्रो मे लिखा है। भिन्न-भिन्न उंगलियो को किस-किस कार्य के लिए महत्व दिया है और जहाँ 'अनामिका' का प्रयोग करना चाहिये वहाँ 'तर्जनी' का प्रयोग

करने से कितनी भयंकरता उपस्थित हो सकती है इसकी पुष्टि के लिए मन्त्रशास्त्र के ग्रंथ देखने चाहिये—

'तत्राङ्गुलि जप कुर्वन् साङ्गुष्ठाङ्गुलिभिर्जपेत् ।
अङ्गुष्ठेन विनाकर्म कृतं तदफलं भवेत् ॥
अङ्गुलीर्नवियुञ्जीत किञ्चिदाकुञ्चिते तले ।
अङ्गुलीनां वियोगे तु छिद्रेषु स्रवते जपः ॥"

विषय बहुत गम्भीर होने से यहां इसका रहस्य नहीं समझाया जाता है। जिज्ञासु की बिना परीक्षा किये कुछ बताना भी मन्त्रशास्त्र के सिद्धान्त के विरुद्ध है। प्रस्तुत विषय यह है कि भिन्न-भिन्न उंगलियों से भिन्न-भिन्न प्रकार की शक्ति प्रादुर्भूत होती है। इस कारण प्रत्येक उंगली और हाथ के प्रत्येक भाग का अपना विशेष महत्त्व है। कमी है केवल उससे सम्बन्धित विज्ञान को समझने की।

हमारे यहाँ वैदिक मंत्रों का प्रयोग करने के पहले ऋषि, देवता, छन्द आदि उच्चारण करने का जो प्रचार है उससे उस मंत्र सम्बन्धी वैज्ञानिकता का पता लग जाता है, यह वेदों को पढ़ने वाले जानते हैं। हाथ में जो चार उंगलियाँ और अंगुष्ठ हैं उनका क्रमशः, गायत्री का कनिष्ठिका से, त्रिष्टुप का अनामिका से, मध्यमा का विराट् से, तर्जनी का जगती से तथा अंगुष्ठ का 'पंक्ति' छन्द से सम्बन्ध है।

अनादिकाल से भारत हस्त-रेखा विज्ञान का उद्गमस्थान रहा है। यूरोप के देशों में तथा मिस्र-चीन आदि प्राचीन सभ्यता वाले देशों में भी भारत का हस्त-रेखा-विषयक चमत्कार हजारों वर्ष पहले से फैला है। सुप्रसिद्ध हस्तपरीक्षक 'कीरो' ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि उसे एक हस्त-रेखा-विषयक विचित्र विज्ञान-वैशिष्ट्ययुक्त पुस्तक आदमी के चमड़े पर लिखी हुई भारतवर्ष में देखने को मिली। उसी के आधार पर उसने बहुत-कुछ लिखा है। परन्तु हमारे यहाँ विदेशियों के आक्रमण से तथा शताब्दियों तक उनकी दासता में रहने के कारण बहुत से ग्रन्थ-रत्न नष्ट-भ्रष्ट हो गये और बहुत से सम्प्रदायों का लोप हो गया। इसी कारण बहुत सी बातें हमारी अपनी होने पर भी—आज वे विदेशी पुस्तकों में ही उपलब्ध होती हैं। इस कारण 'पाश्चात्य मत' के अन्तर्गत उनका परिचय कराया है। यदि किसी महानुभाव को इस पुस्तक की

उपयोगिता-वृद्धि लिये कोई नया सुझाव देना हो तो कृपया निम्नलिखित पते से मुझे सूचित करें। यदि कोई विचित्र हाथ देखने में आवे तो उसकी छाप और विवरण प्रेषित करने का अनुग्रह करें। द्वितीय संस्करण के समय विद्वानों के उचित सुझावों और सहयोग का लाभ उठाया जायगा। जो सज्जन मुझसे मिलना चाहें २३७२८ इस टेलीफोन द्वारा या पत्र द्वारा समय निश्चित कर मिल सकते हैं। मुझे अन्त में केवल यही कहना है जो अथर्ववेद में कहा गया है—

"अयं मे हस्तो भगवान् अयं मे भगवत्तर ।

यह आपका हाथ ही भगवान् है—यह भगवान् से भी बलवान् है। रेखाएं और चीन हाथ की क्रियात्मक शक्ति का प्रभाव दिखा रहे हैं। 'सुकर्म' ही ईश्वराराधना का सर्वश्रेष्ठ उपाय है। 'कर्म' ही भाग्य है। कर्म का कारण और फल दोनों ही हाथ में हैं।

अंग्रेजी में कहावत भी है कि "ईश्वर उनकी सहायता करता है—जो स्वयं अपनी सहायता करते हैं।"—अर्थात् जो क्रियाशील और कर्मण्य हैं उनके लिए ईश्वर भी वरद है। भगवदनुग्रह से फल-प्राप्ति बिना 'कर्म' के भी हो जाती है—यह तर्क जो उपस्थित करते हैं वे यह भूल जाते हैं कि भगवद्भक्ति स्मरण, कीर्तन, चिन्तन आदि भी तो कर्म हैं, कर्म नहीं विशिष्ट कर्म हैं।

इसलिये मनुष्य को सत्कर्म में प्रवृत्त होते हुए क्रियाशील होना चाहिये और अपने में दैवी चेतना का प्रादुर्भाव कर भाग्यवान् होना चाहिये।

"या देवी सर्व भूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥" शुभम् ॥

विजयादशमी २०१३
६३, दरियागंज,
दिल्ली।

गोपेशकुमार ओझा

विषय-सूची

प्रथम खण्ड

हस्त-परीक्षा विचार

१ला प्रकरण—हाथ देखने की विधि

हाथ देखने की विधि—सात आवश्यक लक्षण—अभ्यास की आवश्यकता—हस्त-परीक्षा का स्थान—दाहिने हाथ या बायें हाथ की तुलनात्मक आलोचना—पुरुषों के दाहिने हाथ की मुख्यता—स्त्रियों के बायें हाथ की प्रधानता—हस्त-परीक्षा का समय—हाथ का चित्र लेने का प्रकार—चित्र के साथ हाथ का विवरण। १७—२४

२रा प्रकरण—हाथ का आकार

हाथ का आकार (बनावट)—हाथ के आकार से गुण और स्वभाव का परिचय—हाथ का महत्व—आकार की दृष्टि से सात प्रकार के हाथ—सब से निम्न श्रेणी का हाथ—वर्गाकार हाथ—वर्गाकार हाथ और छोटी वर्गाकार उंगलियाँ—वर्गाकार हाथ किन्तु लम्बी वर्गाकार उंगलियाँ—वर्गाकार हाथ और गांठ-दार उंगलियाँ—वर्गाकार हाथ और आगे से फैली हुई उंगलियाँ—वर्गाकार हाथ और आगे से कुछ नुकीली उंगलियाँ—वर्गाकार हाथ और बहुत नुकीली उंगलियाँ—वर्गाकार हाथ और मिश्रित लक्षणों वाली उंगलियाँ—आगे से फैला हुआ हाथ—दार्शनिक हाथ—कुछ नुकीला हाथ—शान्तिनिष्ठ हाथ—मिश्रित लक्षण वाले हाथ। २५—४६

३रा प्रकरण—मणिबन्ध

मणिबन्ध—पाश्चात्य मत—कलाई की हड्डी की दृढता या दुर्बलता का फल—मामलता का लक्षण और फल—तीन सम्पूर्ण रेखाओ का फल—दो रेखाओ का फल—एक रेखा का फल—यव चिह्नो का फल—स्त्रियो के मणिबन्ध—लक्षण और फल—पाश्चात्य मत—शृ खलाकार रेखा का फल—मणिबन्ध से आने वाली रेखाएँ—मणिबन्ध पर चिह्न—क्रॉस चिह्न—त्रिकोण चिह्न—इनका फल। ५०–५५

४था प्रकरण—करपृष्ठ

करपृष्ठ (हाथ का ऊपर का भाग)—भारतीय मत—लक्षण और फल—करपृष्ठ पर रोम (बाल) और उनका फल—स्त्रियो के करपृष्ठ—लक्षण और फल—पाश्चात्य मत—विविध रग के बाल और उनका फल॥ ५६–५८

५वा प्रकरण—हाथ के नाखून

पुरुषो के हाथ के नाखून—भारतीय मत—नाखूनो का आकार और रग—भारतीय मत—गर्ग ऋषि का मत—बडे और टेढे नाखूनो का फल—नाखूनो पर सफेद बिन्दु—टूटे नख का फल—सामुद्रतिलक का मत—विवेक-विलास-ग्रन्थ का मत—स्त्रियो के हाथ के नाखून—स्कन्दपुराण के अनुसार लक्षण और फल—गर्ग-सहिता का मत—नख पाश्चात्य मत—नाखूनो और स्नायुओ का सम्बन्ध—नाखूनो पर सफेद धब्बे—नाखूनो पर आडी धारी—इनका फल—नाखूनो से शारीरिक शक्ति का ज्ञान—यदि नाखून चौडे अधिक हो और लम्बे कम—चौडे और चौकोर नाखून—छोटे और चौकोर नाखून—नाखूनो से यक्ष्मा या क्षय रोग का ज्ञान। ५६–७०

६ठा प्रकरण—उगली-लक्षण

उंगली लक्षण—भारतीय मत—पुरुषो के हाथो की उंगलियाँ—भविष्य पुराण का मत—गरुड पुराण का मत—विवेक-विलास

का वर्णन—उंगलियों की लम्बाई—छोटी और टेढ़ी उंगलियों का फल—सामुद्रतिलक का मत—उंगलियों से यह जानना कि बचपन, युवा अवस्था या वृद्धावस्था में मनुष्य कब सुखी होगा—कर लक्षण का मत—कनिष्ठका उंगली की लम्बाई से आयु-विचार—नारद ऋषि का मत—गर्ग ऋषि का मत—स्त्रियों के हाथ की उंगलियां—लक्षण और फल—छोटी उंगलियों का फल—उंगलियों के सम्बन्ध में पाश्चात्य मत—उंगलियों से ग्रह के प्रभाव का ज्ञान—उंगलियों की लम्बाई—अधिक लम्बी उंगली का लक्षण और फल—उंगलियों के अग्र-भाग—अत्यन्त नुकीली, नुकीली, चतुष्कोणाकृति और आगे से फैली हुई उंगलियों के लक्षण—उंगलियों की लचक—उंगलियों का फैलाव—उंगलियों के एक-दूसरे की ओर झुके होने का फल—उंगलियों के मूल (आरम्भ होने का स्थान)—लक्षण और फल—उंगलियों के फैलने पर उनमें परस्पर अन्तर—उंगलियों के पर्व—हाथ की बनावट तथा पर्वों की लम्बाई का सम्मिलित प्रभाव—उंगलियों की लम्बाई या छोटाई के कारण भिन्न-भिन्न प्रकार की योग्यता और स्वभाव—तर्जनी—मध्यमा—अनामिका—लम्बाई की दृष्टि से उंगलियों की तुलना—लक्षण और फल—उंगलियों की गांठें—यदि एक गांठ उन्नत हो—यदि दोनों गांठें उन्नत हों—भिन्न-भिन्न प्रकार की उंगलियों में गांठों का फल। ७१–९६

७वां प्रकरण—हाथ का अंगूठा

अंगूठे के लक्षण—भारतीय मत—सामुद्रतिलक का मत—प्रयोग-पारिजात का मत—नारद ऋषि का मत—विवेक-विलास का मत—स्त्रियों के अंगूठे—पाश्चात्य मत—अंगूठे का मस्तिष्क-शिरा तन्तुओं से सम्बन्ध—अंगूठे का महत्त्व—अंगूठे के पर्व—प्रथम पर्व के विविध लक्षण और फल—द्वितीय पर्व—लक्षण और फल—अंगूठे और हथेली का जोड़—लम्बा या छोटा अंगूठा—अंगूठे की लचक। ९७–१०९

८वां प्रकरण—ग्रह-क्षेत्र

हथेली के दस भाग—आठ ग्रह-क्षेत्र और करतल-मध्य के दो भाग—अपने स्थान से सरके ग्रह-क्षेत्र के शिखर—ग्रह-क्षेत्रो का महत्व—भाग्य-विचार तथा रोग-विचार में ग्रह-क्षेत्र की मुख्यता—बृहस्पति का क्षेत्र—इसका स्थान—प्रभाव—भिन्न-भिन्न प्रकार की उगलियो वाले व्यक्तियो पर बृहस्पति-क्षेत्र का भिन्न-भिन्न प्रभाव—शनिक क्षेत्र—लक्षण और फल—शनिक क्षेत्र का महत्व—बिगडे हुए शनिक क्षेत्र का परिणाम—सूर्य-क्षेत्र—इसका स्थान—दबे हुए क्षेत्र का अशुभ परिणाम—उच्च-क्षेत्र का शुभ फल—अति उच्च क्षेत्र का फल—सूर्य-क्षेत्र से रोग-विचार—बुध-क्षेत्र—स्थान—अशुभ लक्षण और उसका फल—उच्च बुध-क्षेत्र का फल—अति उच्च क्षेत्र का फल—बुध-क्षेत्र का स्वास्थ्य से सम्बन्ध—मंगल क्षेत्र—मगल के दो क्षेत्र—इनका स्थान और लक्षण—उच्च क्षेत्र से सम्बन्धित गुण—अति उच्च क्षेत्र का फल। चन्द्र-क्षेत्र का स्थान और लक्षण—अवनत क्षेत्र का फल—उच्चक क्षेत्र का फल—अति उच्च क्षेत्र का फल—शुक्र-क्षेत्र का स्थान—दबे हुए शुक्र-स्थान का फल—स्त्रियों के हाथ में शुक्र-क्षेत्र के स्थान का महत्व। १०९–१२४

९वां प्रकरण—करतल लक्षण

करतल लक्षण—भारतीय मत—सामुद्रतिलक का मत—विवेक-विलास का मत—हाथ की लम्बाई—हथेली की और उगलियो की लम्बाई का अनुपात—करतलमध्य—लक्षण—मासलता और मृदुता का प्रभाव—चपटा और ऊंचा करतल-मध्य—चपटा गड्ढेदार करतल-मध्य का फल—बृहत कोण लक्षण और फल—अन्य लक्षणो के योग से विविध फल—बृहत कोण का प्रथम कोण—द्वितीय कोण—तृतीय कोण। बृहत चतुष्कोण—लक्षण और फल—अन्य लक्षणो के योग से विविध फल। १२५–१४०

रेखाओं से योग—शीर्ष-रेखा पर सफेद चिह्न—इस पर नीले या काले धब्बे—काला दाग—क्रॉस चिह्न—द्वीपयुक्त शीर्ष-रेखा—चतुष्कोण चिह्न । १८६–२१६

१२वां प्रकरण—हृदय-रेखा

भारतीय मत—इस रेखा से आयु-विचार—वराह मिहिर का मत—विवेक-विलास का मत—सामुद्रतिलक का मत—पाश्चात्य मत—अन्य लक्षणों के योग से इसके फल में भिन्नता—हृदय-रेखा की स्थिति और दिशा—हृदय-रेखा के गुण-दोष—रूप-गठन आदि—हृदय-रेखा की गहराई और रंग—हृदय-रेखा के उद्गम स्थान तथा प्रारम्भ से निकली हुई शाखा—हृदय-रेखा का अन्त—हृदय-रेखा की शाखाएं—यदि हृदय-रेखा टूटी हो—हृदय-रेखा की अन्य प्रधान रेखाओं से युति या सम्बन्ध—हृदय-रेखा पर विविध चिह्न—लक्षण और फल—यदि दो हृदय-रेखा हों । २१७–२४७

१३वां प्रकरण—भाग्य-रेखा

भारतीय मत—पाश्चात्य मत—भाग्य-रेखा का प्रारम्भिक स्थान—इस रेखा का रूप—लक्षण, गुण, अवगुण—भाग्य-रेखा में दोष चिह्न—भाग्यरेखा पर द्वीपचिह्न—प्रारम्भ में द्वीप—शुक्रक्षेत्र की प्रभाव रेखा के योग से द्वीपचिह्न का विशेष अनिष्ट फल भाग्य-रेखा को काटने वाली छोटी-छोटी अर्गला रेखाएं—भाग्य-रेखा को काटने वाली चिन्ता रेखाएं—भाग्य-रेखा की सहायक रेखाएँ—सहायक या पुष्टिनी रेखाओं के प्रारम्भिक स्थानों के अनुसार विविध फल—भाग्य-रेखा पर अन्य चिह्न—यदि शनिक्षेत्र पर समाप्त हो—यदि बृहस्पति-क्षेत्र पर समाप्त हो—चन्द्रक्षेत्र से प्रारम्भ रेखा का विशेष फल—मगल क्षेत्र पर अन्त होने से फल में विभिन्नता—यदि अन्त में द्विशाखायुक्त हो—भाग्य-रेखा का अन्त । २४८–२६६

१४वां प्रकरण—सूर्य-रेखा

भारतीय मत—पाश्चात्य मत—सूर्य रेखा और भाग्य-रेखा के फलों में समानता—सूर्य रेखा के गुण—यदि सूर्य रेखा न हो—सूर्य-रेखा की लम्बाई—सूर्य-रेखा के प्रारम्भिक स्थान—सूर्य-रेखा के गुण-दोष—विविध चिह्नों के लक्षण तथा फल—सूर्य-रेखा का अन्त तथा अन्त में विविध-चिह्न—बिन्दु चिह्न का अनिष्टफल—तारे के चिह्न का शुभफल—यदि दो तारे के चिह्न हों—दोनों सिरों पर तारे के चिह्न का विशेष फल—यदि अन्त में आड़ी रेखाओं से कटी हो—यद्वीप चिह्न का फल—क्रास का अशुभ फल—वर्ग चिह्न से रक्षा—यदि अन्त में दो शाखा-युक्त हो—सूर्य-रेखा की शाखाएँ—लक्षण और फल। २७०—२८७

१५वां प्रकरण—स्वास्थ्य-रेखा

लक्षण और फल—स्वास्थ्य-रेखा का प्रारम्भ—इस पर दोष-चिह्न, स्वास्थ्य-रेखा का रंग—यदि स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो—अन्य दोष—स्वास्थ्य-रेखा से भाग्योदय विचार—स्वास्थ्य-रेखा से निकली हुई शाखाएँ—स्वास्थ्य-रेखा का अन्त—उपसंहार। २८८—३०५

१६वां प्रकरण—विवाह-रेखा

लक्षण—भारतीय मत, पाश्चात्य मत—सामाजिक भेद के अनुसार फल में विभिन्नता—विवाह-रेखा से विवाह के समय का अनुमान—कई छोटी रेखाओं का फल—अन्य लक्षणों के योग से विवाह-रेखा के विविध फल—द्वीप चिह्न का अनिष्ट फल—विवाह से भाग्योदय—यदि घूमी हुई विवाह रेखा पर क्रास हो—द्विशाखा युक्त विवाह रेखा—वैवाहिक जीवन में कलह या सम्बन्ध विच्छेद—विवाह-रेखा का अन्त—इसकी शाखाएँ—इस पर विविध चिह्न—विवाह-रेखा का अन्य रेखाओं से सामञ्जस्य। ३०६—३२०

तृतीय खण्ड

अन्य रेखाएँ तथा हाथ पर विविध चिह्न

१७वां प्रकरण—मंगल रेखा आदि

मंगल-रेखा आदि पाँच रेखाएँ—मंगल-रेखा का लक्षण और फल—मंगल-रेखा की लम्बाई—इससे निकलने वाली रेखाएँ—मंगल-रेखा से निकली रेखाओं का अन्य लक्षणों के सहयोग से फल—मंगल-रेखा और जीवन-रेखा का तुलनात्मक अध्ययन—शुक्र-क्षेत्र का प्रभाव (या चिन्ता)-रेखाएँ—मंगल-रेखा से समानान्तर रेखाएँ—तिरछी प्रभाव रेखाएँ—छोटी रेखाएँ—बड़ी रेखाएँ—प्रभाव रेखाएँ जिनके आरम्भ में कोई चिह्न न हो,—शुक्र-क्षेत्र पर विविध चिह्न और उनके अनुसार प्रभाव-रेखा के फलों में भिन्नता—शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ प्रभाव-रेखायें जिनके अन्त में कोई चिह्न हो—प्रभाव-रेखाएँ जिनके आदि तथा अन्त दोनों स्थानों पर चिह्न हो—शुक्र-मेखला—लक्षण और फल—भिन्न-भिन्न प्रकार के हाथों में भिन्न-भिन्न फल—रेखा के स्वरूप के अनुसार फल में विभिन्नता शनिमुद्रिका—लक्षण और फल—खण्डित शनि मुद्रिका का प्रभाव—बृहस्पति मुद्रिका, लक्षण और फल। ३२१–३५१

१८वां प्रकरण—यात्रा रेखा आदि शेष पाँच रेखाएँ

यात्रा-रेखाओं के विविध स्थान—चन्द्र-क्षेत्र पर यात्रा रेखाएँ—मणिबन्ध से प्रारम्भ होने वाली रेखाएँ—जीवन-रेखा से निकलने वाली रेखाएँ—यात्रा-सम्बन्धी दुर्घटनायें—सन्तान-रेखाएँ—भारतीय मत—भविष्य पुराण का वचन—प्रयोग-पारिजात का मत—पाश्चात्य मत, कैरो का मत—मातृ-रेखा-लक्षण और फल—स्वास्थ्य-रेखा की सहायिका रेखा—लक्षण और फल—

अतीन्द्रिय ज्ञान किसे कहते हैं—अतीन्द्रिय ज्ञान-रेखा—लक्षण और फल। ३५२–३६४

१९वां प्रकरण—करतल में चिह्न

भारतीय मत—भविष्य पुराण का मत—वराह मिहिर का मत—स्कन्द पुराण का मत—ग्रह-क्षेत्रों पर विविध चिह्न—तारे का चिह्न—बृहस्पति-क्षेत्र पर—शनि-क्षेत्र पर—सूर्य-क्षेत्र पर—बुध-क्षेत्र पर—चन्द्र-क्षेत्र पर—शुक्र-क्षेत्र पर—क्रॉस का चिह्न—बृहस्पति क्षेत्र पर इसका प्रभाव—शनि-क्षेत्र पर—सूर्य-क्षेत्र पर फल—बुध-क्षेत्र पर—मंगल-क्षेत्र पर—चन्द्र क्षेत्र पर—शुक्र-क्षेत्र पर—अन्य स्थान पर—चतुष्कोण चिह्न का फल—विविध ग्रह-क्षेत्रों पर वर्ग-चिह्नों के प्रभाव—जाल चिह्न—लक्षण और फल—त्रिकोण चिह्न—त्रिशूल-चिह्न—वृत्त-चिह्न—विविध क्षेत्रों पर धब्बे या बिन्दु चिह्न—ग्रह-क्षेत्रों पर एक या अधिक सीधी या आड़ी रेखाओं का फल—बृहत चतुष्कोण में विविध चिह्न और उनका फल। ३६५–४०४

२०वां प्रकरण—अंगूठों और उंगलियों पर चिह्न

भारतीय मत—पाश्चात्य मत—अंगूठे के प्रथम पर्व पर चिह्न—खड़ी रेखाओं का फल—क्रॉस चिह्न—तारे का चिह्न—त्रिकोण चिह्न—वृत्त-चिह्न—वर्ग-चिह्न—जाल-चिह्न—द्वितीय पर्व पर विविध चिह्नों का फल—उंगलियों पर चिह्न—सामान्य लक्षण और उनका फल—तर्जनी पर खड़ी रेखा—आड़ी रेखा—क्रॉस-चिह्न—मध्यमा उंगली पर विविध चिह्नों के लक्षण और फल—अनामिका उंगली पर विविध चिह्न—लक्षण और फल—कनिष्ठा उंगली पर विविध चिह्न और उनका फल। ४०५–४२०

चतुर्थ खण्ड

शरीर-लक्षण

२१वां प्रकरण—सामान्य लक्षण

लक्षण-शास्त्र का महत्व, भारतीय लक्षण-शास्त्र की उपयोगिता और महत्व—वाल्मीकी ऋषि द्वारा शरीर-लक्षणों का उल्लेख—ज्योतिष और लक्षण-शास्त्र का सम्बन्ध—विविध लक्षणों का समन्वय—लक्षण-शास्त्र में वर्णित शरीर के विविध अंग—दाहिना भाग प्रधान या बायाँ—मनुष्य की ऊँचाई—वजन—चाल—अंगों का मिलान—साम्य—वर्ण—स्नेह—स्वर—मनुष्य की प्रकृति और स्वर—किसी पशु या पक्षी की आकृति से समानता—शरीर-कांति—गन्ध-लक्षण—रुधिर-लक्षण—शरीर के दस भागों के अनुसार जीवन का शुभ और अशुभ काल। ४२१–४६०

२२वां प्रकरण—मनुष्य का पैर

भविष्य पुराण तथा गरुड पुराण के अनुसार पैर का लक्षण—स्कन्द पुराण काशी खण्ड का मत—ज्योतिर्निबन्ध में वर्णित लक्षण और फल—पैर के तलुए—गर्ग संहिता का मत—रेखा और चिह्नों का फल—पैर का अंगूठा—लक्षण और फल—सामुद्रतिलक का मत—पैरों की उंगलियाँ—समुद्रऋषि का मत—पैर के नाखून—पाद-पृष्ठ लक्षण, टखने—एड़ी—पैर की लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई—पैर की उंगलियों की लम्बाई—लंका देश के प्राचीन विद्वान् का मत—स्त्रियों के पैर—भविष्यपुराण का मत—गरुड पुराण का मत—पाद-तल लक्षण—सामुद्रतिलक का वचन—पाद-रेखा लक्षण—विविध—चिह्नों का फल—अंगुष्ठ लक्षण—स्कन्द पुराण का

मत—पैर के तलुऐ—पराशर ऋषि का मत—समुद्र ऋषि का मत—पैरों के नाखून—चरणपृष्ठ लक्षण—एड़ी—स्कान्द शारीरक के अनुसार पैर की रेखाओं का फलादेश—ऊर्ध्व रेखा का फल। ४६१-४८६

२३वां प्रकरण (प्रथम भाग)—पुरुष-लक्षण

पिंडलियों का लक्षण—रोम-लक्षण—सामुद्रतिलक का मत—जांघ लक्षण—कटि लक्षण—वराह मिहिर का मत—कुक्षिलक्षण—पार्श्व लक्षण—उदर लक्षण—हृदय लक्षण—वक्ष—जत्रु—कक्षा—बाहु—पृष्ठ लक्षण—ग्रीवा लक्षण—चिबुक—हनु—दाढ़ी-मूंछ—कपोल—मुख—अधर—ओठ—गन्ध लक्षण—जिह्वा-लक्षण—तालु—हंसना—नासिका—छींक—नेत्र-लक्षण—गरुड़ पुराण का मत—बृहत् संहिता का मत—महाभारत का मत—समुद्र ऋषि का मत—दृष्टि लक्षण—पक्ष्म—आंख की बरौनी—निमेष-लक्षण—रुधिर लक्षण—भौं लक्षण—कान लक्षण—सर्व-गात्र-लक्षण—भौंरी का लक्षण। ४६०-५१५

२३वाँ प्रकरण—(द्वितीय भाग) स्त्री-लक्षण

लक्षणों का मिलान—विवेक-विलास का मत—स्त्री-लक्षण का प्रयोजन—कन्या-निरीक्षण का काल—शातातप ऋषि का मत—गरुड़ पुराण का मत—विष्णुधर्मोत्तर पुराण तथा अग्नि पुराण में वर्णित शुभ लक्षण—कन्या के दोष—कन्या का नाम—बहुधान ऋषि का मत—भविष्य-पुराण का मत—बृहन्नारदीय पुराण का मत—पृथ्वी चन्द्रोदय का वचन—कन्या-परीक्षा के अन्य प्रकार—कण्ठ लक्षण—भविष्य पुराण का मत—गर्ग-ऋषि का मत—चिबुक तथा हनु लक्षण—स्कन्द पुराण काशी खण्ड का मत—कपोल लक्षण—मुख लक्षण—अधर लक्षण—ऊपर का ओठ—दन्त लक्षण—जिह्वा लक्षण—तालु लक्षण—

हसित लक्षण—नासा लक्षण और फल—छींक—नेत्र लक्षण और फल—आंख की बरौनी—भौं—कान—तिल—मस्सा—लहसन—भौंरी—गन्ध-लक्षण—छाया-लक्षण—सत्त्व—स्वर—गति—वर्ण। ५१६-५३८

२४वा प्रकरण—मनुष्य का सिर

सिर का महत्त्व—पाश्चात्य मत—सिर का परिमाण—सिर की नाप—ललाट—सिर का आकार—सिर के विविध भागो के सम, विषम, उन्नत या अवनत होने से फल में विभिन्नता—पुरुषो के सिर के लक्षण और फल—भारतीय मत—लक्षण और फल—वराह मिहिर का मत—लंका द्वीप के विद्वान् का मत—स्त्रियो का सिर-लक्षण—स्कन्द पुराण का मत—फल—पुरुषो के केश—स्त्रियो के केश—पुरुषो का ललाट—वराह-मिहिर का मत—समुद्र ऋषि का मत—ललाट-लक्षण से आयु-विचार—स्त्रियो के ललाट-लक्षण और फल—समुद्र ऋषि का मत—शरीर में तिल, मस्से और लहसन का फल। ५३९-५७०

२५वा प्रकरण—तिल-विचार

तिल, मस्से तथा लहसन विचार—वराहमिहिर का मत—अन्य मत—ललाट के तिल—शुभ तथा अशुभ लक्षण—नेत्र-प्रदेश के तिल—पुरुषो के चेहरे पर—स्त्रियो के चेहरे पर—नासिका-प्रदेश के ८ तिलो का विस्तृत फल—पुरुषो के—स्त्रियो के—कान के आस-पास के तिलो का शुभाशुभ फल—पुरुषो के कपोल पर तिलो का फलादेश—स्त्रियो के कपोल पर तिल चिह्नो का विस्तृत विचार,—हनु प्रदेश के ९ तिलो का फल—चिबुक (ठोडी) पर तिल चिह्नो से शुभाशुभ परिज्ञान। ५७१-६००

6. Laws of Scientific Hand Reading by W G Benham.
7. How To Choose Vocation From the Hands by W. G. Benham
8. Cheiro's Language of the Hand.
9. Hands What Do They Tell ? by Alferotta G Bell
10 Comfort's Palmistry Guide
11 Practical Palmistry by Henry Frith
12 The book of the Hand by Katharine St Hill.
13 Hand reading by M N Laffan
14 The Hand and the Mind by M N Laffan
15 Palmistry by Elmo Jean La Seer
16 How to know your future by Martim
17 Palmistry made plain by Ina Oxenford
18 Characteristic Hands by Ina Oxenford
19 The mystery of your Palm by Psychos
20 Masters of Destiny. by Josef Ranald
21 My mysteries and my story by Velma
22 Hands Up by Capim Vequin
23 Scientific Palmistry and its use by Joseph Wood
24 New Complete Palmistry by Prof and Mme Zancig
25 Character reading from the face by Grace A Rees M B E
26 Faces And How To Read Them by Irma Blood
27 Students Course in Characterology by L. Hamilton Mc Cormic
28 Faces-What They Mean and How to Read Them by John Spon
29 Character Reading at Sight by David steel.
30 Clues to Character by R Dimsdale Stocker.
31. Moles and their meaning by Harry Windt
32. The Face is indicative of Character by Alfred T Story.
33 Heads and how to read them by Stackpool O'Dell.
34 Reminiscences of Dr Supurzheim and George Combe.
35. Evolution and Phrenology by Alfred Thomas story.
35. How To Become Rich Prof Wm Windsor

हस्त-रेखा-विज्ञान

प्रथम खण्ड

१ला प्रकरण

हाथ देखने की विधि

सर्वप्रथम हस्तरेखा के मूल सिद्धान्तो को हृदयस्थ कर लेना चाहिये। यह पुस्तक के कई वार पठन और मनन से होगा। जो लोग इस पुस्तक को कही से भी खोलकर किसी एक रेखा का फलादेश मिलाने की चेष्टा करेगे उनका फलादेश बहुत से स्थानो मे गलत हो जायगा। इस का कारण यह है कि ज्योतिष-शास्त्र की भाँति हस्तरेखा-विज्ञान मे भी गुण-दोष की तुलना करना, किस गुण की ओर सब लक्षण झुकते है या दोषो की अधिकता है तो, किस दोष का मार्जन (दूर होना) होता है किनका नही, यह परमावश्यक है। ज्योतिष-शास्त्र मे किसी एक भाव (जैसे धन विचार या मातृ सुख विचार) का विचार करने के लिये जैसे यह देखा जाता है कि इस भाव का स्वामी किस राशि मे है, किस नवांश मे है, दशवर्गों मे—शुभ वर्गो मे है या पाप वर्गो मे—मित्र वर्गो मे या शत्रु वर्गो मे, भाव का स्वामी किन ग्रहो से दृष्ट या युत है, वह देखने वाले ग्रह बलवान हैं—शुभ वर्गो मे या अशुभ वर्गो मे, किन ग्रहो से स्थान-विनिमय है, अपने अष्टक वर्ग मे इस भाव के स्वामी की कितनी शुभ रेखा है, सर्वाष्टक वर्ग मे इस भाव मे कुल कितनी रेखा हैं, भावेश को काल, दिक्, चेष्टाबल कितना प्राप्त

है तथा भाव से नवम-पंचम, द्वितीय-द्वादश या चतुर्थ-अष्टम में कितने और कैसे ग्रह हैं, भाव का स्थिर-कारक बलवान् है या निर्बल, उसी प्रकार किसी एक रेखा का विचार करते समय निम्नलिखित बातों की ओर सदैव ध्यान रखना चाहिये कि—

(१) दाहिने हाथ में रेखा कैसी है, बायें हाथ में कैसी।

(२) हाथ का आकार कैसा है, उंगलियां मोटी हैं या पतली, उंगलियों में गाँठें निकली हैं या नहीं, उंगलियों के अग्रभाग कैसे हैं, चौकोर, नुकीले या आगे की ओर फैले हुए तथा नाखून कैसे हैं।

(३) हाथ चुस्त है या ढीला, मांसल है या सूखा, हथेली का रंग कैसा है लंबी है या चौड़ी, हथेली का मांस सख्त है या मुलायम।

(४) हाथों के ग्रह-क्षेत्र उन्नत हैं या अवनत, ग्रह-क्षेत्र अपने-अपने उचित स्थान पर है या कोई सरके हुए हैं।

(५) हाथ में या उंगलियों पर कोई विशेष चिह्न है क्या? यदि है तो किस स्थान पर तथा कितने चिह्न हैं।

(६) हाथ में जिस रेखा का विचार कर रहे हैं उस रेखा से मिलते-जुलते हुए हाथ में अन्य लक्षण हैं या उनसे विरुद्ध।

(७) शरीर तथा मुखाकृति से क्या परिणाम निकलता है।

ये सब बातें ध्यान में तभी रह सकती हैं जब बारम्बार इस पुस्तक का अध्ययन किया जावे और अनेक हाथ देखे जावें। जिस प्रकार केवल पाकशास्त्र की पुस्तक पढ़ लेने से कोई भोजन बनाने में चतुर नहीं हो जाता उसी प्रकार केवल हस्तरेखा की एक या दो पुस्तक पढ़ लेने से मनुष्य फलादेश करने में पूर्ण समर्थ नहीं होता। इस बात की आवश्यकता है कि अनेक प्रकार के लोगों के हाथ देखें जावें—धनिकों के तथा गरीबों के, अकस्मात् धनी होने वालों के

और निरतर जीवन-भर परिश्रम कर धनिक होने वालो के, विद्वानो के तथा मूर्खो के, जो अनेक वर्ष स्कूल मे गँवाकर, पैसा खर्च कर मास्टरो के रखने पर भी पढ नही सके, कुलीन पतिव्रता स्त्रियो के तथा अनुचित आचार-विचार वाली स्त्रियो के, स्वस्थ पुरुषो के तथा जीर्ण रोगियो के, जिससे एक ही प्रकार के गुण-दोषो, सैकडो हाथो मे देखते-देखते वे गुण-दोष हृदय मे खचित हो जावे।

कहावत है कि 'शतमारी' वैद्य होता है अर्थात् सैकडो-हजारो व्यक्तियो का इलाज-करते-करते जब अपनी गलती से (गलत निदान और गलत औषधि देकर) एक सौ रोगियो को मार चुकता है तब कही वैद्य की बुद्धि, ज्ञान और अनुभव परिपक्व होते है। इसी प्रकार हजार-दो हजार, तीन हजार हाथ देख लेने के बाद अच्छा अनुभव प्राप्त होता है। यदि किसी हाथ मे कोई लक्षण देखने मे आवे तो नवीन हस्त-परीक्षको को चाहिये कि उनके अनुमान से जो फला-देश आता है वह जातक के जीवन मे घटित हुआ या नही यह पूछे। यदि, फल, जिस अवस्था मे होना चाहिये, जातक की वह अवस्था बीत चुकी है तो अनुसधान करना चाहिये कि किस अन्य लक्षण के कारण वह फल घटित नही हुआ।

इसके अतिरिक्त देश, काल, पात्र का जिस प्रकार ज्योतिष-शास्त्र मे पूर्ण विचार किया जाता है उस प्रकार हस्तरेखा-विचार मे भी रखना चाहिये। जिन देशो मे परस्पर स्त्री-पुरुषो के अन्यथा सबन्ध-विशेष होते है वहाँ हृदय-रेखा, विवाह-रेखा या शुक्र-क्षेत्र (तथा वहाँ से आरम्भ होने वाली प्रभाव रेखाओ) का फलादेश भिन्न होता है। इसी प्रकार जहाँ विधवा-विवाह प्रचलित है वहाँ स्त्रियो के भी २-३ विवाह तक बताये जा सकते है परन्तु भारतवर्ष

में जहाँ सामाजिक वातावरण भिन्न है यदि पाश्चात्य हस्त-परीक्षा सिद्धान्तों को अक्षरशः घटाने का प्रचार किया जायेगा तो परिणाम ठीक नहीं बैठेगा। इस कारण पाश्चात्य हस्तपरीक्षा के केवल मूल सिद्धान्तों को अपनाना चाहिये। जैसे समाज के लोगों की हस्तपरीक्षा करनी है उसके अनुसार अपनी बुद्धि से तारतम्य कर फलादेश करना उचित है।

जब हाथ देखते-देखते पर्याप्त अभ्यास हो जावे तब शुद्ध तथा शान्त चित्त से ऐसे स्थान में हाथ देखना चाहिये जहाँ अनेक लोगों की भीड़ न हो, कोलाहल न हो। क्या ज्योतिष-शास्त्र, क्या मन्त्र-शास्त्र सभी गम्भीर शास्त्रों का अनुशीलन तथा उपयोग करते समय बुद्धि का एकाग्र होना परमावश्यक है। बुद्धि की एकाग्रता होने से अनेक रेखाओं तथा हाथ के अन्य लक्षणों का स्मरण बराबर बना रहता है। इस कारण एक लक्षण का दूसरे लक्षण से बुद्धि तत्काल समन्वय और सामंजस्य कर लेती है। किन्तु जहाँ हाथ देखा जा रहा हो वहाँ अनेक मनुष्य बैठे हों तो हस्तपरीक्षक का ध्यान बट जाता है। इस कारण चित्त में वह एकाग्रता नहीं आने पाती जो परमावश्यक है। जब एकाग्र चित्त का बुद्धि से संयोग होता है तो हृदय में भीतर से स्फूर्ति होती है। उस स्फूर्ति के अनुसार फलादेश किया जाता है। यदि चित्त की एकाग्रता नहीं होती तो स्फूर्ति भी नहीं होती।

शास्त्र का नियम है कि जहाँ हँसी-दिल्लगी या चुहलबाजी हो रही हो, जहाँ हस्तपरीक्षा में विश्वास न करने वाले कुतर्की हों, किसी स्थान पर खड़े-खड़े, रास्ते में, घोर रात्रि में, जहाँ पूर्ण प्रकाश न हो वहाँ हस्तपरीक्षा नहीं करनी चाहिये। जो जातक हस्तपरीक्षक

से विवाद या बहस करे, बिना आवश्यकता के बीच-बीच मे बात कर विघ्न डालता जावे, अभिमानी हो, हस्तपरीक्षक की अवहेलना करे, उसका हाथ न देखे।

हस्तपरीक्षा कराने वाले को उचित है कि शात चित्त हो, फल फूल या द्रव्य भेंट कर हस्तपरीक्षक को नमस्कार कर विनीत भाव से शुभाशुभ पूछे।

शास्त्रो मे यह जो लिखा है कि सभा मे, विद्वानो के बीच या मूर्खों की मडली मे हाथ न देखे तो इसका कारण यह है कि मूर्खों के बीच मे उपहास का भय होता है। अनेक विद्वानो के बीच मे बैठने से उनके मस्तिष्क का प्रभाव हस्तपरीक्षक पर पड़ता है। इस कारण हस्तपरीक्षक के विचार स्वाभाविक रीति से एकाग्र नही हो पाते। विचारो की एकाग्रता के बगैर बुद्धि से शुद्ध सयोग नही होता। जिस समय हस्तपरीक्षा की जावे हस्त-परीक्षक के चित्त मे क्रोध, भ्रान्ति, उद्वेग, भय, लज्जा, घृणा, अवहेलना या त्वरा नही होनी चाहिये। यदि हाथ देखते-देखते कौटुम्बिक परिस्थितिवश ऐसा हो जावे (बाहर से कोई मेहमान आ जाये, जिनके आतिथ्य की ओर ध्यान आकृष्ट हो गया या किसी की सहसा बीमारी के कारण चिंता या उद्वेग हो जावे) तो हस्त-परीक्षा स्थगित कर किसी दूसरे दिन हस्त-रेखाओ का, शुद्ध तथा अचल चित्त से, विचार करना चाहिये।

हस्त-परीक्षक को उसके तथा अपने स्वरूपानुरूप भेंट देना आवश्यक है, 'रिक्तपाणि' (खाली हाथ) पडित या ज्योतिषी के पास जाकर फल पूछना शास्त्रीय मर्यादा के विरुद्ध है। इस शास्त्रीय परिपाटी का उल्लघन करने से फल ठीक नही मिलता। इसी कारण

लिखा है—

'हस्त श्रीफल पुष्पाद्यैं अपूर्यं विनयान्वित ।'

दाहिना हाथ या बायाँ हाथ

भारतीय मत यह है कि पुरुषो का दाहिना हाथ तथा स्त्रियो का बायाँ हाथ प्रधान होता है । पाश्चात्य मत इस सबध मे भिन्न-भिन्न है । कुछ पाश्चात्य हस्त-परीक्षक स्त्री-पुरुष दोनो के बाये हाथ को ही प्रधानता देते है, कुछ दाहिने को । ईसा से ३५० वर्ष पूर्व सिकन्दर महान् के गुरु सुप्रसिद्ध दार्शनिक एरिस्टोटिल हुए । उन्होने लिखा है कि हृदय के विशेष समीप होने के कारण 'बाये' हाथ का अधिक महत्व है । किंतु अधिक सम्मत मत यह है कि दाहिने हाथ को प्रधान मानना चाहिये । बाये हाथ मे जन्मजात गुण-अवगुण अविकल रूप से रहते है । दाहिने हाथ मे जन्म के गुण-अवगुणो मे जातक ने अपने आचार-विचार-व्यवहार से क्या परिवर्तन उपस्थित किया, यह विशेष स्पष्ट होता है । इस कारण हमारा विचार यह है कि दोनो हाथो की रेखाओ को ध्यानपूर्वक देखकर पुरुषो के दाहिने हाथ तथा स्त्रियो के बाये हाथ को विशेष महत्व देना चाहिये ।

दोनो हाथो मे एक से लक्षण हो तो उस फल की पुष्टि होती है । इस विषय मे यह उल्लेख करना भी आवश्यक है कि बहुत से ऐसे मनुष्यो के हाथ देखने का हमे अवसर प्राप्त हुआ जिनका दाहिने की अपेक्षा बायाँ हाथ विशेष क्रियाशील है—अर्थात् यदि उनसे कहा जावे कि आप एक गेंद को पूरी ताकत से दाहिने हाथ से फेंकिये और फिर उनसे ही बाये हाथ से गेंद फिकवाई जाये तो बाये हाथ से फेंकी हुई गेंद अधिक दूर जावेगी । ऐसे व्यक्तियो के

कुछ गड्ढेयुक्त होता है इसलिये जिस कागज पर हाथ की छाप ली जावे उसके नीचे मध्य भाग मे थोडी सी रुई की पतली-सी गद्दी रख दी जावे तो हाथ के मध्य भाग की छाप भी अच्छी प्रकार आ जावेगी।

हाथ की छाप लेते समय अर्थात् जब कागज पर हाथ रखा हो एक काली पेंसिल से उगली, अँगूठे तथा हथेली के आकार स्पष्ट करने के लिये उनके चारो ओर बिल्कुल भिडाकर रेखा खीचनी चाहिये। इस प्रकार हाथ तथा उँगलियो का आकार पेंसिल से खीची हुई रेखा से स्पष्ट हो जावेगा और करतल की रेखाओ की छाप ज्यो-की-त्यो कागज पर आ जावेगी।

प्रारम्भ मे अभ्यास न होने से हाथ की छाप स्पष्ट न आवेगी। किन्तु अभ्यास कर लेने से यह कार्य अत्यन्त सुगम हो जाता है।

हाथ की छाप एक प्रकार से हाथ का स्थायी 'रिकार्ड' या नक्शा हो गया। किन्तु इसे सर्वांग सम्पूर्ण बनाने के लिये हाथ की बनावट, हथेली का रग, आकार, नखो, अगुष्ठो तथा उँगलियो की बनावट, लबाई, मोटाई, पारस्परिक अन्तर, रेखाओ तथा चिह्नो का विवरण लिख लेने से कोई बात भूलने की गुंजाइश नही रहती।

इस पुस्तक मे हस्तरेखा-विज्ञान पर जितने प्रकरण दिये गये है उतने ही शीर्षक बनाकर—विवरण लिखना विशेष सुविधाजनक होता है। फिर सब लक्षणो का सतुलन और समन्वय कर देश, काल, पात्र, परिस्थिति का विचार कर फलादेश करना उचित है।

२रा प्रकरण

हाथ का आकार (बनावट)

हस्तपरीक्षा को हम दो भागो मे विभक्त कर सकते है—(१) हाथ का आकार और (२) रेखाएँ तथा चिह्न। हाथ की बनावट मे हथेली, उँगलियो तथा अँगूठे की बनावट, आकार, मासलता, करपृष्ठ, नाखून आदि आ जाते है। हथेली के आकार के साथ-साथ, कौन सा भाग उठा हुआ है, कौन सा दबा हुआ, यह भी एक प्रकार से हाथ की बनावट मे ही आ जाता है। हाथ की रेखाओ और चिह्नो के अन्तर्गत सभी प्रधान और अप्रधान रेखाएँ और चिह्न आ जाते है।

हाथ की बनावट—आकार, करपृष्ठ आदि से केवल मनुष्य की प्रवृत्ति, बौद्धिक शक्ति तथा नैतिक चरित्र का पता लगता है। वह क्रियाशील होगा, पुरुषार्थी और परिश्रमी अथवा सुस्त, आरामतलब और निकम्मा, वह विद्या या कला के क्षेत्र मे आगे बढ़ेगा या व्यापार मे, क्रोधी और विलासी होगा या सयमी वा सुशील इन सब गुणो और अवगुणो का पता लगता है। नाखूनो तथा हथेली के रग से उसके स्वास्थ्य के विषय मे भी बहुत जानकारी होती है। इन सब गुणो का यद्यपि भाग्योदय, धन-सग्रह आदि से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है किंतु हाथ के केवल आकार से यह पता नही चल सकता कि किस वर्ष मे भाग्योदय होगा या किस वर्ष मे व्यक्ति बीमार होगा। इन बातो का पता रेखाओ से ही चलता है।

इस कारण इस हस्त-परीक्षा-विचार को तीन खडो मे विभक्त

किया गया है। प्रथम खण्ड में निम्नलिखित विषयों को समझाया गया है —

(१) मणिबन्ध (कलाई)
(२) हाथ का आकार या बनावट
(३) करपृष्ठ (हथेली के दूसरी ओर वाला हिस्सा)
(४) नाखून
(५) हाथों की उँगलियाँ
(६) अँगूठा
(७) हथेली के दस भाग—(१) सूर्य क्षेत्र, (२) चन्द्र क्षेत्र, (३) मगल का प्रथम क्षेत्र, (४) मगल का द्वितीय क्षेत्र, (५) बुध क्षेत्र, (६) बृहस्पति क्षेत्र, (७) शुक्र क्षेत्र, (८) शनि क्षेत्र, (९) करतल-मध्य प्रथम भाग—जीवन-रेखा, शीर्ष-रेखा एव स्वास्थ्य-रेखा के बीच का स्थान, (१०) करतल-मध्य द्वितीय भाग—शीर्ष-रेखा तथा हृदय-रेखा के बीच का स्थान। गहक्षेत्रों पर करतल-मध्य मे चिह्नों का फल तृतीय खण्ड मे वर्णित किया गया है।

लोगों के हाथ भिन्न-भिन्न प्रकार के होते है। कुछ के बडे कुछ के छोटे। किसी के आगे से नुकीली उँगलियो सहित, किसी के आगे से फैले हुए। जब तक हस्त-परीक्षा-विषय मे दिलचस्पी न हो, लोग एक-दूसरे के हाथों की ओर गौर से नही देखते, परन्तु जब एक बार इस विषय मे रुचि हो जाती है तो पहले-पहल दृष्टि हाथ की ओर ही जाती है। यदि आप दूर बैठे हुए भी लोगो के हाथों की ओर देखेगे तो पता चलेगा कि जिस प्रकार दो आदमियों के चेहरे एक-से नहीं होते उसी प्रकार लोगों के हाथ भी भिन्न-भिन्न बनावट के होते है।

यह नियम नही है कि लम्बे आदमियो के हाथ लम्बे हो और छोटे आदमियो के छोटे। यदि आप एक ही लम्बाई के ८-१० व्यक्तियो के हाथ नापे तो पता चलेगा कि किन्ही के हाथ अपेक्षा-कृत लम्बे है किन्ही के छोटे। कलाई से मध्यमा (बीच की उँगली) के अन्त तक, हाथ की लम्बाई होती है। एक ही लम्बाई के हाथो मे भी आप भिन्नता पावेगे—कुछ की हथेली लम्बी, उँगलियाँ छोटी होगी और दूसरो की हथेली छोटी, उँगलियाँ लम्बी। इसी प्रकार कुछ व्यक्तियो के हाथ अधिक चौडे होते है कुछ के सकडे। इन्ही सब भेदो के कारण सैकडो प्रकार के हाथ होते है। परन्तु जैसे भिन्न-भिन्न वर्ण (रग) के आदमियो को भी हम चार विभाग (१) अति गौर (२) गौर (३) श्याम (४) अति श्याम मे विभक्त कर देते है उसी प्रकार हस्त-परीक्षको ने हाथ को सात वर्गो मे विभाजित किया है—

(१) सबसे निम्न प्रकार का हाथ (अर्थात् ऐसे व्यक्ति का हाथ जिसकी मानसिक उन्नति या मस्तिष्क का विकास बहुत कम हुआ हो)—हाथो की शिराओ (नसो) और हड्डियो का साक्षात् सम्बन्ध मस्तिष्क से है। मानसिक विचारो और क्रियाओ का प्रभाव सीधा हाथ पर पडता है। जो बुद्धिमान्, विद्वान्, क्रियाशील, चतुर होते है उनके हाथ सुन्दर, विकसित और सुसस्कृत होते है। इसके विपरीत जो कुल परपरागत मूर्ख, उजड्ड, असस्कृत, अपरिष्कृत व जगली होते है उनके हाथ निम्न श्रेणी के होते है। इसके लक्षण विस्तार से आगे बताये जावेगे इनमे तामसिक वृत्ति प्रधान होती है।

(२) वर्गाकार हाथ—उपयोगिता की दृष्टि से इस प्रकार का हाथ सर्वप्रथम कोटि का होता है। ऐसे व्यक्तियो मे रजोगुण प्रधान होता है।

(३) आगे से फैला हुआ हाथ—ऐसे व्यक्तियो मे क्रियाशीलता अधिक होती है। वे परिश्रमी व कार्य करने वाले होते है, साथ ही उनका स्नायु-मंडल भी बहुत 'चल' (अस्थिर-क्रियान्वित) होता है। इसमें रजोगुण प्रधान होता है।

(४) दार्शनिक हाथ—इन हाथो की उगलियो मे गाँठे निकली रहती है। ये लोग उच्च कोटि के विचारक होते है। इन मे सात्त्वगुण-प्रधान रजोगुण का मिश्रण होता है।

(५) आगे से कुछ नुकीले हाथ—ये लोग कलाकार होते है या उस ओर उनकी प्रवृत्ति होती है। इन मे भी रजोगुण प्रधान होता है।

(६) शातिनिष्ठ हाथ—शान्त प्रकृति के लोगो का हाथ, जो कोई कार्य करना पसन्द नही करते। आलसी नही होते किन्तु सासारिक वस्तुओ मे उन्हे रुचि नही होती। ऐसे व्यक्तियो मे सत्वगुण प्रधान होता है। न उन्हे काम-क्रोधादि मन के वेगो से विशेष उद्वेग होता है न सासारिक उन्नति के साधनो मे क्रियाशीलता। ऐसे शुद्ध सात्विक हाथ प्राय देखने मे नही आते।

(७) मिश्रित हाथ—जिस मे उपर्युक्त ६ प्रकार के हाथो के लक्षणो मे से कई मिश्रित रहते है।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हो गया होगा कि भिन्न-भिन्न प्रकार के हाथो वाले व्यक्तियो की मनोवृत्ति, रुचि, योग्यता भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है। अभ्यास और परिश्रम से, जिस कार्य के योग्य मनुष्य नही होता है, उस कार्य के योग्य भी अपने को बना लेता है परन्तु जिस ओर जन्मजात प्रवृत्ति और विशेष बौद्धिक साधन-

सम्पन्नता हो उसमे मनुष्य विशेष सफल होता है यह प्राकृतिक नियम है।

ऊपर आकार या बनावट के दृष्टिकोण से हाथ के सात विभाग बताये गये है। अब प्रत्येक प्रकार के हाथ का लक्षण और उसका फल बताया जाता है। उगलियो के वर्गाकार 'फैली हुई' 'नुकीली' आदि विशेषणो का साधारण उल्लेख इस प्रकरण मे कर दिया है। 'वर्गाकार' या 'नुकीली' या 'आगे से फैली हुई' कैसी होती हैं तथा एक-दूसरे के लक्षण और फलादेश मे क्या अन्तर है, इसकी विस्तृत आलोचना 'उगलियो' के प्रकरण मे पृथक् की गई है। (देखिये प्रकरण ६)।

सबसे निम्नश्रेणी का हाथ

सब से निम्नश्रेणी के हाथ वाले व्यक्ति के मस्तिष्क का विकास बहुत कम होता है। ऐसा हाथ बेढगा, अपरिष्कृत व गवारू होता है। हाथ की जिल्द मोटी, खुरदरी होती है। हथेली बहुत मोटी और भारी होती है। उगलियाँ छोटी होती है और नाखून भी छोटे होते है। यह साधारण नियम है कि उगलियाँ यदि लम्बी हो तो विशेष बौद्धिक विकास होता है। हाथ मे उगलियो की अपेक्षा हथेली जितनी अधिक बडी और भारी होगी उसी अनुपात से मनुष्य मे पशुवृत्ति विशेष होगी। निम्नश्रेणी के हाथ मे यही लक्षण विशेष होता है। न केवल अगुलियाँ छोटी होती हैं अपितु वे बेढगी, अपरिष्कृत, गँवारू मालूम होती हैं। हथेली मे रेखाये भी कम होती है। ऐसे लोग जानवर की तरह खाते-पीते है, परिश्रम करते हैं, सोते है, लडते हैं, विषय-वासना मे प्रवृत्त होते हैं। उनमे कोई नफासत या सौन्दर्यप्रियता नही होती। पशुवृत्ति और असयम इनके

कार्य और व्यवहार मे प्रवीन होना है। ऐसे व्यक्तियो का अंगूठा छोटा और बहुत मोटा होता है। अंगूठे का प्रथम पर्व मोटा, भारी

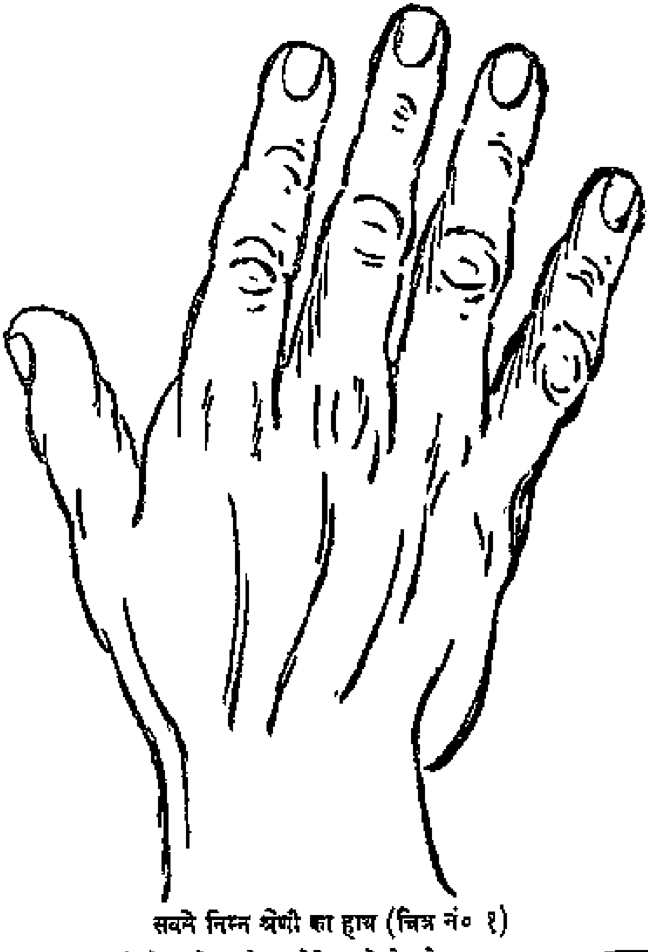

सबसे निम्न श्रेणी का हाथ (चित्र नं० १)

और प्राय चौकोर होता है। ऐसे लोगो मे आत्मबल या साहस नही होता। क्रोधी बहुत होगे, वासनाओ मे प्रचण्ड वेग भी होगा

परन्तु जैसे गुर्राने वाला मोटा कुत्ता जरा डंडा दिखाने से भागता है वैसे ही इन लोगो के मन मे कायरता होती है। ऐसे लोगो मे चालाकी प्राकृतिक होती है, -बुद्धि से उत्पन्न तर्क के कारण चतुरता नही होती। क्रोध के आवेश मे ये लोग कत्ल भी कर बैठते हैं। इन को एक प्रकार पशु-वृत्ति का असस्कृत रूप कहना चाहिए। आजकल सभ्यता के युग मे शिक्षा के क्रमिक विस्तार के कारण बिल्कुल पशुवृत्ति का उपर्युक्त लक्षण-युक्त हाथ कम देखने को मिलता है। फिर भी निम्न श्रेणी के लोगो मे काफी लक्षण मिलेगे। सस्कृत का एक श्लोक है कि आहार, निद्रा, भय, विषय-वासना, मनुष्य मे यदि केवल यही हो (अर्थात् विद्या, विचार-शान्ति, साहित्य, सगीत कला आदि न हो) तो वह पशु के समान है। देखिये चित्र नं० १

वर्गाकार हाथ

जिस हाथ मे हथेली का नीचे का भाग (कलाई के पास) तथा ऊपर का भाग (उँगलियो के जड के पास) वर्गाकार हो, अर्थात् हथेली जितनी लम्बी हो प्राय उतनी ही चौडी और उगलियो के अग्रभाग भी समचतुष्कोणाकृति या वर्गाकृति हो (अर्थात् उगलियाँ न आगे की ओर फैली हुई हो न नुकीली) उसे वर्गाकार हाथ कहते हैं। ऐसे हाथो मे नाखून भी प्राय छोटे और वर्गाकार होते हैं। ऐसे हाथ वाले व्यक्ति कार्यकुशल होते है इसलिये इस प्रकार के हाथ को उपयोगी हाथ भी कहते हैं। (देखिये चित्र न० २)

ऐसे व्यक्ति तरतीब वाले, समय के पाबन्द, ठीक-ठीक उचित रीति से कार्य करने वाले होते है। ऐसे व्यक्तियो के विचार तथा कार्य दोनो मे सुव्यवस्था होती है। ये लोग कानून तोडना पसन्द नही करते और अधिकारी-वर्ग का सम्मान करते है। स्वय

झगडालू नही होते न आगे बढकर झगडा मोल लेते है परन्तु यदि

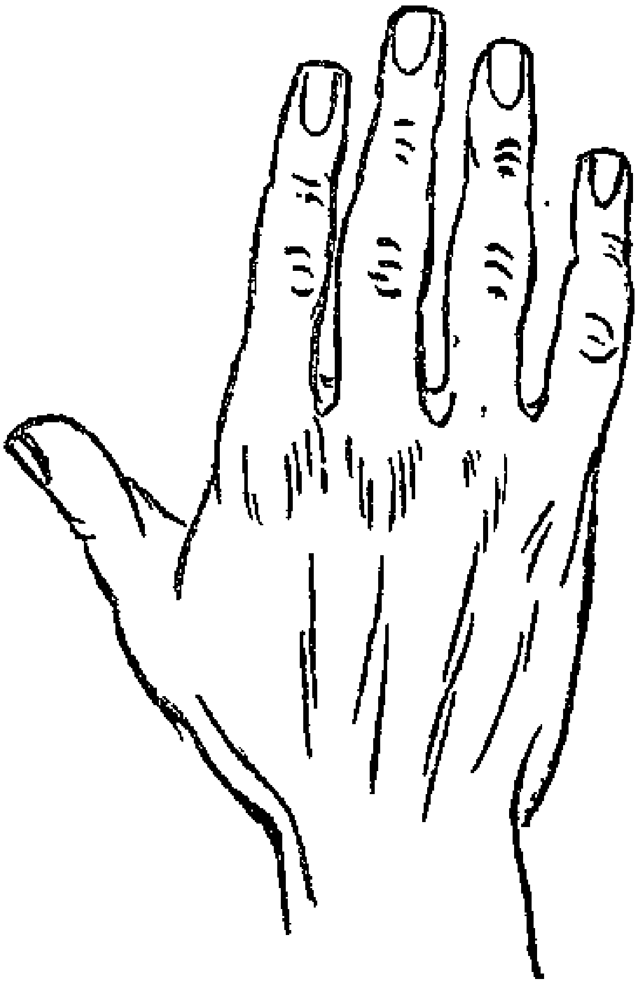

वर्गाकार हाथ (चित्र नं० २)

कोई इनका विरोध करे तो ये भी अपनी पूरी ताकत से विरोध

करते हैं। इनमे प्रत्येक बात का आगा-पीछा सोचकर कार्य करने की प्रवृत्ति होती है। इनमें धैर्य और कार्य-तत्परता भी होती है। काव्य या कला मे इनका मन इतना नही लगता जितना किसी उपयोगी कार्य में, अर्थात् प्रत्येक बात का मूल्य ये लोग उपयोगितावाद, सासारिक व्यवहार या व्यापार के दृष्टिकोण से आंकते हैं। धार्मिक अन्धविश्वास भी इनमे नही होता। इनमे नवीन आविष्कार करने की शक्ति या विशेष कल्पना नही होती परन्तु परिश्रम और लगन के कारण अधिक बुद्धिमान व्यक्तियो से भी ये बाजी मार ले जाते है, क्योकि सासारिक सफलता बहुत अशो तक परिश्रम और अध्यवसाय पर निर्भर है। ऐसे व्यक्ति कृषि, व्यापार आदि कार्यों मे सफल होते है। जिस भी कार्य मे हिसाब-किताब और नाप-तोल, व्यवस्था, ढग या व्यावहारिकता की आवश्यकता अधिक होती है उसे ये लोग खूबी से अजाम देते है। ये लोग घर के प्रेम, कौटुम्बिक परिस्थिति को पसन्द करने वाले होते है परन्तु इनके प्रेम मे प्रदर्शन या दिखावा नही होता। ये लोग सच्चे, मित्रता निभाने वाले व ईमानदार होते है। किन्तु एक बडा अवगुण इनमे यह होता है कि हरेक बात की इस कदर जाँच-पड़ताल करते है कि दूसरा आजिज हो जाता है और जो बात इनके पूरी तौर से समझ मे नही आ जाती उसे मानने को तैयार नही होते। वर्गाकार हाथ मे यदि उगलियाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की हो तो वर्गाकार हाथ के भी कई भेद हो जाते है—

(१) वर्गाकार हाथ और छोटी वर्गाकार उगलियाँ
(२) ,, ,, लम्बी वर्गाकार उगलियाँ
(३) वर्गाकार हाथ और गाँठदार उगलियाँ (जिनकी उगलियो

के जोड गठीले और बाहर निकले हुए हो)

(४) वर्गाकार हाथ किन्तु आगे से फैली हुई उगलियाँ

(५) वर्गाकार हाथ किन्तु आगे से नुकीली उगलियाँ

(६) वर्गाकार हाथ किन्तु शान्तिप्रियता सूचित करने वाले उगलियों के अग्रभाग

(७) वर्गाकार हाथ किन्तु भिन्न-भिन्न प्रकार (आकार) की उगलियाँ।

अब इनका प्रत्येक का विस्तृत लक्षण और फल दिया जाता है —

वर्गाकार हाथ और छोटी वर्गाकार उंगलियाँ

प्राय ऐसे हाथ देखते ही स्पष्ट पहचान लिये जाते है क्योंकि हाथ तथा उगलियाँ दोनो वर्गाकार होते है। यदि उगलियाँ लम्बी किन्तु आगे से वर्गाकार या समचतुष्कोण की आकृति की हो तो उगलियो को देखने मे भ्रम हो सकता है कि अन्य प्रकार की उगलियाँ है या वर्गाकार। किन्तु उगलियाँ छोटी और वर्गाकार होती है तो ऐसा भ्रम नही हो सकता।

उपर्युक्त प्रकार के लोग धन सचय करने के प्रयत्न मे रहते है और परिश्रमी होने के कारण धन सचय कर लेते है। ये लोग चाहे कजूस न हो परन्तु प्रत्येक बात मे उनका व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रधान रहता है और व्यापारिक दृष्टि से प्रत्येक बात का मूल्य आँकते है। ये लोग जिस बात की जाँच-पडताल स्वय कर लेते है उसे ही ठीक मानते है। इनका चित्त उदार नही होता और कुछ हठी स्वभाव के भी होते है। इनमे सासारिकता व धन-सचय की वृत्ति ही प्रधान होती है।

वर्गाकार हाथ किन्तु बड़ी वर्गाकार उंगलियां

उपर्युक्त प्रकार से इस हाथ मे यही भिन्नता होती है कि उगलियाँ लम्बी होती है। छोटी उगलियो की बजाय बडी उगलियाँ होने से मानसिक विकास और उदारता इनमे अधिक होती है। ये लोग प्रत्येक बात मे तर्क करते है और इनके काम मे तरतीब और ढग होता है। ये लोग भी प्रत्येक बात मे सोच-विचार कर कदम रखते है, परन्तु उतने अविश्वासी नही होते और ऐसे कार्यों में सफल होते है जिनमे तर्क तथा वैज्ञानिक ढग से तरतीब से कार्य करने की आवश्यकता हो।

वर्गाकार हाथ और गांठदार उंगलियाँ

प्राय बडी उगलियाँ जिन हाथो मे होती हैं उन्ही (उगलियो) मे गाँठे उन्नत होती हैं। ऐसे लोग प्रत्येक बात की तफसील मे जाते है। उस विषय की छोटी-छोटी बारीकियो को भी स्वय देखते हैं। ये लोग 'निर्माण-प्रिय' होते हैं और मकान या मशीनो के निर्माण, कल-कारखाने के चलाने मे सफल होते है। गणित विद्या मे भी ये लोग प्रवीण हो सकते है। जिस किसी भी काम मे छोटी-से-छोटी बारीकी पर व्यक्तिगत ध्यान देने की आवश्यकता हो उसमे ये लोग विशेष सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

वर्गाकार हाथ और आगे से फैली हुई उंगलियां

आगे से फैली हुई उँगलियां होने से मनुष्य मे आविष्कारक बुद्धि होती है। साथ ही वर्गाकार हाथ होने से मनुष्य मे व्यावहारिकता काफी अधिक मात्रा में होती है। इस कारण ये लोग अपनी बुद्धि को ऐसे कार्यों में लगाते है जिनमे उपयोगिता हो। मशीन, पुर्जे घरेलू कार्यों मे आने वाले नये यत्र या साधन, या इसी प्रकार अन्य

वस्तुएँ निर्माण करते है। इजीनियरिंग या मशीनरी, बिजली आदि के उपयोगी कार्यो मे इन्हे विशेष सफलता प्राप्त हो सकती है।

वर्गाकार हाथ और आगे से कुछ नुकीली उंगलियां—

यद्यपि वर्गाकार हाथ मे 'उपयोगितावाद' ही प्रधान होता है तथापि आगे से कुछ नुकीली उगलियां होने से बाजा बजाने, गायन साहित्यिक रचना आदि के कार्यो मे भी ऐसे हाथ वाले सफल होते है।

शुद्ध कलाकार का हाथ लम्बोतरा और उगलियो का अग्रभाग भी कुछ नुकीला होता है इस कारण बहुत से लोगो को यह कुछ आश्चर्य की बात मालूम होगी कि वर्गाकार हाथ वाले व्यक्ति भी सगीत, साहित्य आदि मे सफल हो सकते है। किन्तु वास्तव मे इसका रहस्य यह है कि हाथ भी लबोतरा और उगलिया भी नुकीली हो तो शुद्ध कलाकार तो मनुष्य होता है किंन्तु सृजनात्मक योग्यता का अभाव होने के कारण अपने कार्य का सम्पादन वह इतने अच्छे रूप मे नही कर सकता कि उसका ससार मे नाम हो या धन प्राप्त हो। इसे, वर्गाकार हाथ और कुछ नुकीली उगलियां, इन दोनो गुणो के सम्मिश्रण से कलात्मक योग्यता और सासारिक दृष्टि से उसका प्रसार और व्यावहारिक रूप देने मे सफलता होती है।

वर्गाकार हाथ और बहुत नुकीली उंगलियां

वर्गाकार हाथ का गुण है—व्यावहारिकता और उपयोगितावाद। अत्यन्त नुकीली उगलियो का गुण है—आत्म-चिन्तन, निष्क्रियता, मानसिक जगत् मे विचरण करना—सासारिकता से मतलब नही।

ये दोनो गुण प्राय एक हाथ में नही मिलते परन्तु यदि हो तो व्यावहारिकता या उपयोगिता का गुण होने से मनुष्य प्राय कलात्मक या अन्य व्यापार-सम्बन्धी-कामो का प्रारम्भ तो खूब जोर-शोर से करता है किन्तु उन्हे आखिर तक पूरा नही करता और बहुत से अच्छी प्रकार प्रारम्भ किये कार्य बीच मे ही रह जाते है।

वर्गाकार हाथ और मिश्रित लक्षणों वाली उंगलियाँ

यदि हाथ वर्गाकार हो और उगलियाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की हो—कोई नुकीली, कोई समचतुष्कोण (वर्गाकृति), कोई आगे से फैली हुई और कोई बहुत नुकीली तो ऐसे हाथ की उगलियो को मिश्रित लक्षण की उगलियो वाला कहेगे। स्त्रियो की अपेक्षा प्राय पुरुषो मे ऐसे हाथ विशेष पाये जाते है। ऐसे व्यक्तियो का अगूठा प्राय लचकदार होता है और बीच मे पीछे की ओर काफी मुडता है। तर्जनी प्राय नुकीली, मध्यमा चतुष्कोण (वर्गाकृति), अनामिका आगे से फैली हुई और कनिष्ठिका भी नुकीली होती है। ऐसे लोग बहु-विषयज्ञ होते है। अनेक विषयो मे चतुर होने के कारण क्या साहित्य, क्या विज्ञान प्रत्येक विषय मे वे अच्छा ज्ञान रखते है और अनेक कार्यों का योग्यतापूर्वक सम्पादन कर सकते है, किन्तु यह बहु प्रकार की योग्यता उनके लिये हानिप्रद साबित होती है। किसी एक काम में वे जम कर नही लगते। इस कारण थोडा-थोडा अनेक ढंग का काम करने के कारण वे किसी एक मे भी चोटी पर नही पहुँच पाते और उन्हे सफलता नही मिलती।

आगे से फैला हुआ हाथ

फैले हुए हाथ मे न केवल उगलियो के अग्र भाग आगे से फैले होते है बल्कि हथेली भी (या तो कलाई के पास वाला भाग, या

उंगलियों के मूल के पास का स्थान) फैली हुई होती है। समचतु-ष्कोण या वर्गाकृति हाथ मे हथेली दोनो ओर करीब-करीब बराबर

आगे से फैला हुआ हाथ (चित्र नं० ३)

रहती है किन्तु फैले हुए हाथ मे एक ओर फैली हुई, यह दोनो प्रकार

के हाथो मे अन्तर है। (देखिये चित्र न० २ और ३)

यदि फैला हुआ हाथ, सख्त और मजबूत हो तो ऐसे मनुष्य के मन मे स्थिरता नही होती, उसमे उत्साह और जोश, कुछ करने की प्रवृत्ति, उत्तेजना अधिक मात्रा मे होती है। किन्तु यदि हाथ मुलायम हो और मास भी ढीला हो तो चित्त मे अस्थिरता और चिड़चिड़ापन होता है। ऐसा व्यक्ति कभी-कभी जोश मे आकर कार्य आरम्भ करता है किन्तु उसमे लगा नही रहता। अध्यवसाय की कमी होती है।

प्राय 'फैले हुए हाथ' बडे होते है, उगलियाँ भी पुष्ट और लम्बी होती हैं। इन व्यक्तियो मे स्वतन्त्रता, स्वय काम करने की प्रवृत्ति, क्रियाशक्ति, उत्साह तथा आत्मनिर्भरता विशेष मात्रा मे होती है। ये लोग खाली नही बैठ सकते। 'कर्मण्यता' इनका गुण है। इस कारण नवीन स्थानो की खोज, समुद्र-यात्रा या कल-कारखानो मे नवीन आविष्कार या किसी भी काम मे अनोखी सूझ-बूझ मे ये लोग लगे रहते है और सफल होते है।

इनमे कर्मशीलता के साथ-साथ जो दूसरा गुण है, वह है अपना नया स्वतत्र रास्ता निकालना। मशीन, कल-पुर्जो या बिजली या अन्य वैज्ञानिक कार्यो मे ये नई चीज ईजाद करेंगे या पुरानी चीज का भी किसी नवीन ढग से उपयोग करेंगे। जैसे एक भेड दूसरी भेड के पीछे चलती है वैसे ये नही चल सकते। इसलिए चाहे गायन या कला मे, सिनेमा या धर्मोपदेश मे, राजनीतिक या सामाजिक क्षेत्र मे, डाक्टरी या किसी भी विभाग मे ऐसे व्यक्ति किसी नये तरीके से चलते है। चाहे इनकी नवीन योजना या प्रकार गलत साबित हो, या उसकी कद्र तत्काल न हो, किन्तु आविष्कार

या नवीन मार्ग से कार्य करने का इनका स्वभाव होता है।

ऊपर बताया गया है कि फैले हुए हाथ मे हथेली (१) या तो उगलियो के मूल मे अधिक फैली हुई होती है या (२) कलाई के पास। यदि उगलियो की जड के पास अधिक फैली हो तो आविष्कारक प्रवृत्ति को व्यावहारिकता या उपयोगिता का रूप देने मे ऐसे व्यक्ति विशेष सफल होते है। कल-कारखाने-सम्बन्धी आविष्कार करेंगे तो जनता के उपयोगी रेल, जहाज आदि मे काम आने वाले यत्र बनावेंगे। किन्तु यदि मणिबन्ध या कलाई के पास वाला भाग विशेष चौडा हो तो आविष्कारक बुद्धि का उपयोग 'विचार' या 'मानसिक' क्षेत्र मे विशेष होता है। नवीन वैज्ञानिक या साहित्यिक अनुसधान, विशेष फूल-पौधो की बारीकियो का अन्वेषण आदि, चाहे उस नवीन आविष्कार से कोई जनहित कार्य न होता हो। यदि वह नवीन आविष्कार-मात्र है तो उनकी प्रवृत्ति की पूर्ति हो जाती है।

दार्शनिक हाथ

ऐसा हाथ प्राय लबा और नुकीला होता है, उगलियो मे हड्डी का ढाचा विशेष प्रमुख, उगलियो की गाठे भी उन्नत और निकली हुई और नाखून भी लम्बे होते है। ऐसे व्यक्ति बहुत 'विचारक' होते है। इनकी दृष्टि मे बुद्धि और ज्ञान का महत्व द्रव्य से अधिक होता है। इस कारण द्रव्य की परवाह न कर ये लोग 'विचार'-प्रधान या मानसिक विकास-सम्बन्धी कार्यो मे विशेष प्रवृत्त होते है। इस कारण साधारण जनसमुदाय से (जो केवल द्रव्य के ही पीछे लगा रहता है) इनका मार्ग भिन्न रहता है। चाहे कठिनाइयाँ सहनी पडे, ये अपनी विचार-प्रधान, बौद्धिक गवेषणा मे ही लगे रहते हैं। इनके विचार मे रहस्यवाद की भी गहरी छाप रहती है। चाहे ग्रथ लिखे,

या उपदेश दे, या काव्य लिखे सभी पर दार्शनिक दृष्टिकोण सा

दार्शनिक हाथ (चित्र नं० ४)

आत्मिक अन्वेषण का रग चढा रहता है। सुप्रसिद्ध हस्तपरीक्षक 'चेरो' ने लिखा है कि ज्ञान और दर्शन की तपोभूमि भारत मे ऐसे विचारवादियों के हाथ, विशेषत ब्राह्मणो मे विशेष प्राप्त होते है।

ऐसे व्यक्ति गभीर विचारक होते है। कम बोलते है और उनकी चित्तवृत्ति अन्तर्मुखी होती है। इनमे गौरव की भावना विशेष होती है और छोटी-सी भी बात विचारकर बोलते है। इनमे धैर्य होता है परन्तु यदि धार्मिकता की ओर अन्य लक्षणो से अधिक प्रवृत्ति मालूम हो तो ऐसे व्यक्तियो मे प्राय धर्मान्धता होती है—अर्थात् अपने धर्म के अतिरिक्त और किसी धर्म को कुछ नही समझते।

उगलियो मे गाठे निकला होना 'विचारक' होने की प्रवृत्ति प्रकट करता है। प्रत्येक बात का विश्लेषण करना इनका स्वभाव होता है। उगलियो के अग्रभाग चतुष्कोणाकृति या कुछ नुकीले होने से इनमे आत्मिक स्फूर्ति होती है। वर्गाकृति उगलियो के कारण इनमे धैर्य और अध्यवसाय तथा कुछ नुकीली उगलियो के कारण आत्म-त्याग की भावना रहती है।

कुछ नुकीला हाथ

ऐसा हाथ प्राय मझोले (न बहुत बडा न छोटा) आकार का होता है। हथेली आगे की ओर कुछ कम चौडी होती है। उगलियाँ जहाँ हथेली से प्रारम्भ होती है—पुष्ट होती है किन्तु नाखूनो तक पहुँचते-पहुँचते कुछ नुकीली हो जाती है। (देखिये चित्र न० ५)

ऐसे व्यक्तियो मे इच्छा-शक्ति और मन की सूझ की प्रधानता होती है। 'इच्छाशक्ति' से तात्पर्य है कि जब चित्त की जैसी सहसा रुचि हुई काम कर डाला। 'विचार'-कर—ऊहापोह कर, गुण-दोष मीमासा कर कार्य नही करते। चित्त मे लहर आई काम कर डाला।

इसके मन में सूझ हुई, एक स्फूर्ति हुई कि यह सौदा करने में फायदा

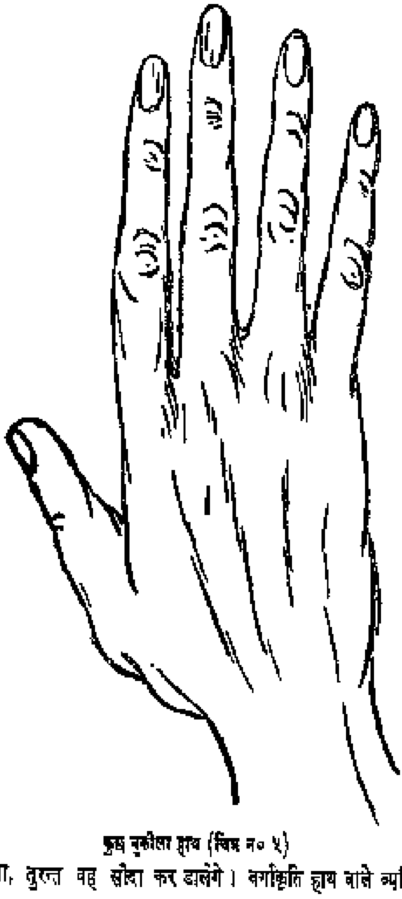

कुछ नुकीला हाथ (चित्र न० ५)

होगा, तुरन्त वह सौदा कर डालेंगे। वर्गाकृति हाथ वाले व्यक्ति

की तरह् हिसाब-किताब फैलाकर व्यापारिक दृष्टि से नही सोचेंगे ।

ऐसे व्यक्तियो मे कलात्मक भावना, चित्त का आवेश, इच्छा की प्रधानता होती है । साथ ही ये लोग आरामपसन्द, विलासी और आलसी होते है । ये लोग चतुर होते है और तुरन्त ही मन मे उमग आते ही कार्य कर डालते है और वे कार्य लाभप्रद भी हो सकते है । परन्तु ऐसे लोगो मे धैर्य और अध्यवसाय की कमी होती है इसलिए इनके सकल्प (योजना) पूरे नही होते ।

ऐसे व्यक्ति बातचीत मे निपुण होते है । ५-७ आदमियो मे बैठे हो तो तुरन्त दूसरे के मन की बात का अन्दाज लगा, खूबी से और फबती हुई बात करेंगे परन्तु इनके ज्ञान मे ऊपरी 'कलई' अधिक होती है । ठोस योग्यता नही आने पाती । ठोस योग्यता केवल परिश्रमपूर्ण अध्ययन से आती है और इसकी इनमे बहुत कमी होती है । धैर्यपूर्वक किसी काम मे न लग सकने के कारण इनकी मैत्री या प्रेम भी स्थिर नही रहता । जरा सी बात पर नाराज हो जाते है । पर क्रोध अधिक देर नही रहता ।

ये लोग जिस वातावरण मे रहते है या जिनके सम्पर्क मे आते है उनसे शीघ्र प्रभावित हो जाते है । प्रेम-सम्बन्ध भी शीघ्र स्थापित हो जाता है परन्तु चिरस्थायी नही होता । ये उदार और सहानुभूतिपूर्ण होते है परन्तु स्पष्ट वक्ता होते है । अपने शरीर-सुख के विचार से ये स्वार्थी परन्तु दूसरो को द्रव्य देने मे उदारता का परिचय देते है । नाम या यश के लिए दान देने की भावना इतनी नही होती, मन की उमग ही प्रधान होती है ।

ये स्वय चाहे कलाकार न हो परन्तु कला, सगीत, नाटक, औरो के हर्ष-दु ख आदि का इनके मन पर गहरा प्रभाव पडता है ।

यदि इस प्रकार का हाथ सख्त और लचकदार हो तो ऐसा व्यक्ति स्वयं कलाकार भी होता है। इनमें तात्कालिक स्फूर्ति और सभा या गोष्ठी मे बात करने की प्रभावशाली शक्ति होती है। इसलिये रगमच, राजनीतिक सभा या अन्य स्थानो मे जहा तत्काल लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता हो ये लोग विशेष सफल होते हैं। इनमे तर्क या युक्ति की प्रधानता नही होती। तात्कालिक हृदय का जोश ही इनका सबसे बडा गुण या शक्ति है और यही इनकी सफलता का आधार होता है।

शान्तिनिष्ठ हाथ

शान्तिप्रियता तथा निष्क्रियता प्रकट करने वाले हाथ के आकार मे यह विशेषता होती है, कि वह लम्बा, पतला और कोमल होता है। यह देखने मे अत्यन्त सुकुमार और सुन्दर होता है। हाथो की उगलियाँ भी लम्बी, पतली आगे से नुकीली, सुन्दर होती है। नाखून भी लम्बे बादाम की आकार के मनोहर होते है। एक प्रकार से यह कह सकते है कि सबसे सुन्दर यही हाथ होता है, परन्तु ऐसे हाथ वाले व्यक्ति 'भाग्यहीन' होते हैं। क्योकि 'भाग्य' का निर्माण मनुष्य अपने प्रयत्न और कर्म से करता है और 'कर्मण्यता' के दृष्टिकोण से ये लोग शून्य होते है। (देखिये चित्र न० ६)

इन हाथो की अत्यन्त सुन्दरता और सुकुमारता से ही पता चलता है कि ये लोग परिश्रम करने मे बिल्कुल अक्षम होते है। ये लोग सौन्दर्यप्रिय, सुशील, नम्र और शात होते है। जो इनके साथ दयालुता का व्यवहार करता है उसका तुरन्त विश्वास कर लेते है। इन सब गुणो के होने पर भी परिश्रमशीलता, सासारिक चतुरता या व्यावहारिकता न होने के कारण ये कोई कार्य सम्पादन

नही कर सकते है। केवल अपने विचारो की शान्त दुनिया मे भ्रमण

शांतिनिष्ठ हाथ (चित्र नं० ६)

करने से, जीवन के संघर्ष मे ये आगे नही बढ सकते। इनमे धार्मिक

भावना की प्रधानता होती है और शुद्ध चित्त होने के कारण दूसरो के मन की बात समझने की भी विशेष योग्यता होती है। परन्तु उसका उपयोग ये नहीं कर सकते। प्राय जीवन मे असफल होने के कारण इनमें एक प्रकार की मनोहानि या दुःख की भावना पैदा हो जाती है।

मिश्रित लक्षण वाले हाथ

ऊपर विविध प्रकार के हाथो के लक्षण बताये गये है परन्तु ईश्वर की सृष्टि में हाथ इन छः प्रकार के साँचो मे ढाल कर नही बनाये जाते है कि फौरन यह कह दिया जावे कि वह अमुक साँचे मे ढला हुआ है।

बहुत-से हाथ ऐसे होते है जिनमें कुछ लक्षण किसी के और कुछ किसी के दिखाई देते है। उगलियाँ भी अलग-अलग प्रकार की होती है—कोई नुकीली तो कोई आगे से फैली हुई। ऐसे हाथ वाले व्यक्ति अनेक गुणो से युक्त होते है, परन्तु बहुगुण होने के कारण कुछ-कुछ बुद्धि और समय भिन्न-भिन्न बातो मे लगने से किसी एक बात की खूबी उनमे नही आ पाती। (देखिये चित्र नं० ७)

यदि ऐसे हाथ मे शीर्ष-रेखा बलवान हो तो ऐसा व्यक्ति किसी ऐसे कार्य मे अपनी बुद्धि लगावेगा जिसमे उसकी योग्यता विशेष हो और उस कार्य मे उसके अन्य गुण सहायक होगे। जिस किसी भी कार्य में नीति और चतुरता की आवश्यकता हो ये लोग विशेष सफल होते हैं। ये लोग परिस्थिति के अनुकूल अपने को शीघ्र ही बना लेते है। इनमे अस्थिरता, परिवर्तनशीलता बहुत होती है। यदि हथेली किसी एक प्रकार की हो और उगलियाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की हो तो हथेली का गुण प्रधान होता है और उगलियाँ

जिस-जिस ढंग की हो वे गुण मनुष्य में आने के कारण उसमें

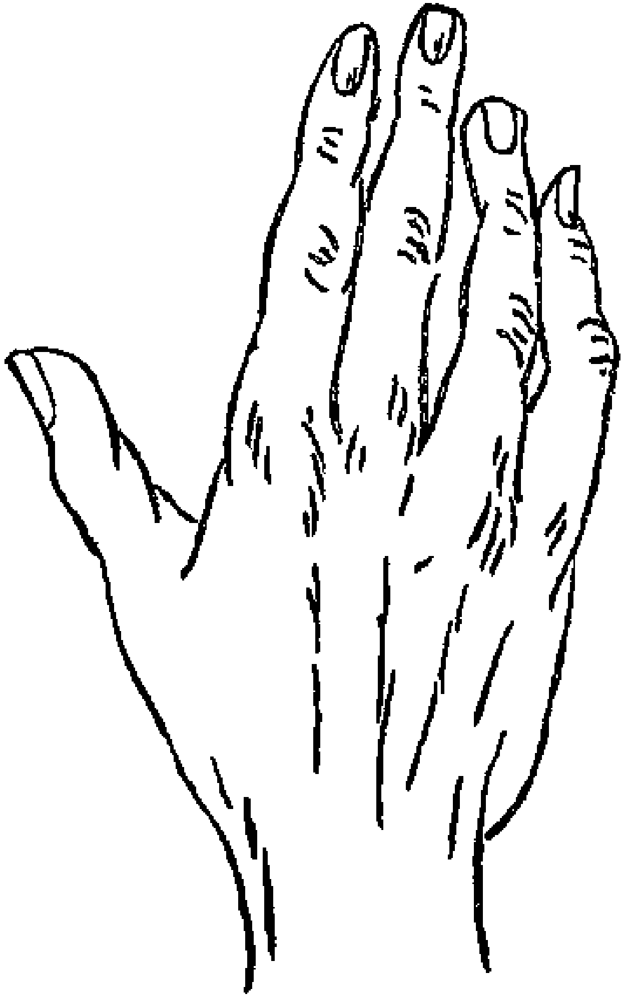

मिश्रित लक्षण वाले हाथ (चित्र नं० ७)

विविध प्रकार की योग्यता होती है। परन्तु हाथ की रेखाओं से यह

निश्चित करना चाहिये कि बुद्धि और योग्यता बहुत प्रकार की हो जाने से सफलता मे बाधा होगी या सहायता।

ये संक्षेप में हाथ के आकार के लक्षण और फल बताये गये हैं। आगे के प्रकरण में हथेली के विविध भागो तथा उगलियो के प्रकरण हैं। उनको पढकर सब लक्षणों का मिलान कर किसी निर्णय पर पहुंचना उचित है।

३रा प्रकरण

मणिबन्ध

हाथ जहाँ से आरम्भ होता है वहाँ, कलाई पर भीतर की ओर (हथेली की तरफ) जो रेखाएँ होती हैं उन्हें संस्कृत में मणि-बन्ध कहते हैं। इस स्थान को सामुद्रिक शास्त्र में 'पाणिमूल' या हाथ की जड या प्रारम्भ भी कहा गया है। यदि कलाई का यह भाग मांसल (मांसयुक्त—जिसमें हड्डी दिखाई न दे), पुष्ट, अच्छी सन्धि सहित (अच्छी तरह जुड़ा हुआ अर्थात् दृढ) हो तो जातक भाग्य-शाली होता है। यदि इसके विपरीत हो अर्थात् देखने से यह मालूम हो कि हाथ और बाहू का, जो कलाई के पास जोड है वह ढीला, लटकता

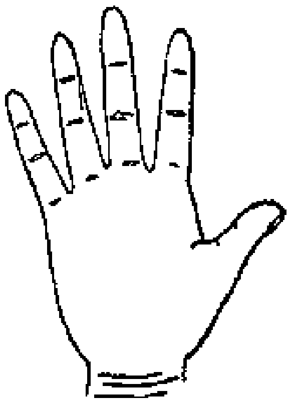

मणिबन्ध हाथ (चित्र नं० ८)

हुआ, असुन्दर, कमजोर है और हाथ को हिलाने से वहाँ कुछ आवाज होती है (हड्डी का जोड पुष्ट न होने के कारण) तो मनुष्य निर्धन होता है और यदि अन्य अशुभ लक्षण हो तो राज-दंड का भागी हो या किसी दुर्घटना के कारण हाथ पर आघात लगे। 'गरुड पुराण' तथ 'वाराही संहिता' दोनो के अनुसार मणिबन्ध की हड्डियाँ दिखाई नही देनी चाहिये और यह जोड दृढ होना सौभाग्य का लक्षण है।

इसी स्थान पर हथेली के प्रारम्भ में ही रेखा होती हैं। 'सामुद्रतिलक' में लिखा है—

रेखाभि पूर्णाभिस्त्रिसृभि कर मूलमकित यस्य।
धन काञ्चन रत्नयुत श्रीपतिमिधि भवति सुख च॥
त्रिपरिक्षेपा व्यक्ता यवमाला भवति यस्य मणिबन्धे।
नियत महार्घ सहित स सार्वभौमो नराधिपति॥
करमूले यवमाला द्विपरिक्षेपा मनोहरा यस्य।
मनुज स राजमन्त्री विपुल मतिर्जायते स मतिमान्॥
सुभगैक परिक्षेपा यवमाला यस्य पाणितले स्यात्।
भवति धनधान्य युत श्रेष्ठो जनपूजितो मनुज॥

अर्थात् यदि तीन रेखा पूर्ण (कही से खडित न हो) कलाई के चारो ओर हो तो धन, सुवर्ण, रत्न का स्वामी होता है। यदि इन चारो ओर पूर्ण रहने वाली मणिबन्ध की तीनो रेखाओ मे निरन्तर यवमाला (जौ के आकार की लड़ियाँ) स्पष्ट हो तो राजा होता है। यदि कलाई के चारो ओर दो रेखा हो और सुन्दर यवमाला उनमे निरन्तर हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त बुद्धिमान और राजा का मत्री होता है। यदि एक सुन्दर यवमाला-युक्त रेखा कलाई के चारो ओर हो तो ऐसा व्यक्ति धन-धान्य पूर्ण, होता है और उसकी लोग प्रतिष्ठा करते हैं। यहाँ तीन बातो पर जोर दिया गया है—प्रथम यह कि केवल रेखा होना पर्याप्त नही है, उन रेखाओ मे यवमाला (एक जौ से दूसरा जौ जुडा हुआ) का चिह्न निरन्तर होना चाहिये। दूसरी बात यह कि यह यवमाला सुन्दर होनी चाहिये। अर्थात् जैसे सुन्दर (बराबर एक से) निरन्तर मोती की माला बहुमूल्य होती है, किन्तु छोटे-बडे या कही नजदीक कही दूर ऐसी

माला अच्छी नही समझी जाती, इसी प्रकार 'यवमाला' सुन्दर हो। तीसरी बात यह कि यह यवमाला कलाई के चारों ओर हो—केवल हथेली की ओर नही। यदि हस्तपृष्ठ पर भी कलाई के स्थान पर यवमाला होगी तभी पूर्ण फल होगा। अन्यथा न्यून फल समझना चाहिये।

'विवेक विलास' मे लिखा है—

'मणिबन्धे यवश्रेण्य तिसृश्चेत् स नृपो भवेत्।
यदि ता पाणिपृष्ठेऽपि ततोऽधिकतर फलम्॥

स्त्रियो के मणिबन्ध के विषय मे 'भविष्य पुराण' मे लिखा है कि मणिबन्ध यदि तीन रेखायुत, सम्पूर्ण (बीच मे टूटा नही) और सुन्दर हो तो ऐसी स्त्री भाग्यशालिनी होती है, और रत्न तथा सुवर्ण-जटित हाथ के आभूषण पहनने वाली होती है—

मणिबन्धोऽव्यवच्छिन्नो रेखात्रयविभूषित ।
ददाति न चिरादेव मणिकाञ्चन मण्डनम् ॥

पाश्चात्य मत

मणिबन्ध से रेखाओ का निकलकर उगलियो की ओर जाना अच्छा माना गया है किन्तु हथेली की कोई रेखा नीचे की ओर मणिबन्ध की ओर आवे तो यह अच्छा नही।

(१) यदि मणिबन्ध पर एक ही रेखा हो और टूटी न हो तो २३–२८ वर्ष तक की आयु जातक की होगी।

(२) यदि दो रेखा हो तो आयु ४६ से ५६ तक।

(३) यदि तीन रेखा सम्पूर्ण हो तो ६९ वर्ष से ८४ वर्ष तक जातक का जीवन-योग समझना चाहिये।

यदि मणिबन्ध की रेखा अच्छी हो किन्तु जीवन-रेखा अच्छी

न हो तो भाग्य अच्छा किन्तु स्वास्थ्य अच्छा नही रहेगा।

यदि स्त्रियो के हाथ मे मणिबन्ध की प्रथम रेखा हथेली की ओर बढी हुई हो और उसी ओर गोलाई लिये हुए हो तो प्रसव कठिनता से होता है।

यदि मणिबन्ध की तीनो रेखाये सुस्पष्ट, सुन्दर और अच्छे वर्ण की हो तो जातक दीर्घायु, स्वस्थ और भाग्यशाली होता है। यदि सुस्पष्ट न हो तो जातक अपव्ययी होने के कारण धन का सग्रह नही कर पाता और यदि अन्य लक्षण भी पाये जावे तो विषय-भोग के कारण स्वास्थ्य-हानि भी करता है।

यदि प्रथम रेखा (हाथ की ओर से गिनना चाहिये) शृङ्खलाकार हो तो परिश्रम और चिन्तायुक्त जीवन रहता है किन्तु परिणाम मे सफलता प्राप्त होती है।

मणिबन्ध से जाने वाली रेखायें

यदि मणिबन्ध से कोई रेखा निकलकर शुक्रक्षेत्र पर होती हुई बृहस्पति के क्षेत्र पर जावे तो किसी लम्बी यात्रा द्वारा सफलता प्राप्त होती है। यदि मणिबन्ध से निकलकर दो रेखा शनिक्षेत्र को जावे और यदि ये दोनो रेखा एक-दूसरे को काटे तो दुर्भाग्य प्रकट करती है। सभवत जातक दूर देश को जाकर फिर वापिस न आवे।

यदि मणिबन्ध से निकलकर कोई रेखा सूर्य के क्षेत्र पर जाये तो यात्रा के फलस्वरूप विशिष्ट व्यक्तियो के सम्पर्क मे आने से मनुष्य को प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यदि सूर्यक्षेत्र की बजाय यह रेखा बुधक्षेत्र पर आवे तो अकस्मात् धन-प्राप्ति होती है। ऐसी स्थिति मे स्वास्थ्य-रेखा के पास ही यह दिखाई देगी।

मणिबन्ध से निकलकर यदि रेखा चन्द्रक्षेत्र पर आवे तो जल-यात्रा अर्थात् समुद्र-पार देशो को मनुष्य जाता है। जितनी रेखा हो उतनी ही यात्राये समझनी चाहिये। लम्बी रेखा हो तो लम्बी यात्रा, छोटी हो तो छोटी। किन्तु यदि दो रेखा बिलकुल समानान्तर रूप से चन्द्रक्षेत्र पर आवे तो लाभयुक्त होने के साथ-साथ यात्रा मे भय भी रहता है।

यदि मणिबन्ध की तीनो रेखा एक के ऊपर एक—एक ही स्थान पर खण्डित हो तो असत्य-भाषण तथा वृथा अभिमान के कारण कष्ट पाता है।

यदि मणिबन्ध से कोई रेखा निकलकर जीवन-रेखा पर आकर समाप्त हो जावे तो यह प्रकट करता है कि किसी यात्रा मे ही जातक की मृत्यु होगी। यदि मणिबन्ध से अस्पष्ट, लहरदार रेखा निकलकर स्वास्थ्य-रेखा को काटे तो आजीवन जातक मन्दभागी रहता है।

मणिबन्ध पर चिन्ह

(१) यदि मणिबन्ध की रेखा सुन्दर हो और प्रथम रेखा के मध्य मे 'क्रॉस' का चिह्न हो तो जीवन के प्रथम भाग मे कठिनाइयो का सामना करना पड़ेगा किन्तु बाद का जीवन सुख और शान्ति से व्यतीत होगा।

(२) यदि मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर कोई रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर जावे और मणिबन्ध की प्रथम रेखा पर 'क्रॉस' या कोण का चिह्न हो तो किसी विशेष सफल यात्रा से धन-लाभ प्रकट करता है।

(३) यदि मणिबन्ध की प्रथम रेखा के मध्य मे कोण-चिह्न

हो तो वृद्धावस्था में किसी की विरासत पाने से भाग्योदय होता है। यदि त्रिकोण चिह्न हो और त्रिकोण के अन्दर 'क्रॉस' हो तो उत्तराधिकार द्वारा धन-प्राप्ति होती है।

(४) यदि हाथ में अन्य लक्षण उत्तम हों और प्रथम मणिबन्ध रेखा के मध्य मे 'तारे' का चिन्ह हो तो विरासत से धन-प्राप्ति। यदि यही चिह्न ऐसे हाथ मे हो जिसमे असयम और दुराचार प्रकट होता हो तो यह व्यभिचारी प्रवृत्ति का द्योतक है।

४था प्रकरण

करपृष्ठ (हाथ का ऊपर का भाग)

अथ शस्त करपृष्ठ विस्तीर्ण पीनमुन्नत स्निग्धम् ।
निर्गूढशिर परित क्षोणिपते फणिफणाकारम् ॥

'सामुद्रतिलक' के मतानुसार पृथ्वीपतियो (राजा या उच्चाधिकारियो) के करपृष्ठ (हाथ के एक ओर हथेली होती है, दूसरी ओर के भाग को करपृष्ठ कहते है) ऊँचे उठे हुए, चिकने, चारो ओर से सर्प के फन की आकार के फैले हुए होते है । उनमे नसे नही दिखाई देनी चाहिये । 'विवेक विलास' मे भी उपर्युक्त लक्षणो को शुभ माना गया है । इससे विपरीत यदि करपृष्ठ सूखा, मासरहित नीचा (मणिबन्ध के समतल, अर्थात् ऊँचा उठा हुआ न हो), रोएँ या बाल सहित, खुरदरा और जिसका रग उडा हुआ या सुन्दर वर्ण न हो तो अच्छा नही होता—

विवर्ण परुप रूक्ष रोमश मासवर्जितम् ।
मणिबन्ध सम निम्न न श्रेष्ठ करपृष्ठकम् ॥

'सामुद्रतिलक' के मतानुसार यदि करपृष्ठ मे रोएँ या बाल हो या नसे दिखाई देती हो तो मनुष्य निर्धन होता है ।

स्त्रियों के करपृष्ठ

स्त्रियो के करपृष्ठ के सम्बन्ध मे कहा गया है कि जिस स्त्री के करपृष्ठ उन्नत, रोएँ से रहित हो और नसे न दिखाई देती हो तो शुभ लक्षण है किन्तु यदि करपृष्ठ मॉसरहित (पुष्ट नही) हो,

जिस पर रोएँ बहुत हो और नसें दिखाई दे तो ऐसी स्त्री विधवा हो जाती है—

विरोम विशिर शस्त पाणिपृष्ठ समुन्नतम् ।
वैधव्य हेतु रोमाढ्य निर्मांस स्नायुमत्त्यजेत् ॥

(स्कन्दपुराण-काशीखंड)

रोमशिरा परिहीन वनमास पाणिपृष्ठमवहस्तम् ।
स्निग्ध समममबलाना समुन्नत शस्यते प्राय ॥

(सामुद्रतिलकम्)

यदि मणिबन्ध के समतल करपृष्ठ हो और अन्य गुण हो तो दोष नही है । यदि मणिबन्ध की अपेक्षा कुछ ऊँचा हो तो और भी अच्छा । 'मासलता' को बहुत अधिक गुण माना है और रोओ या बालो का होना, किंवा नसो का दिखाई देना अवगुण माना गया है । स्त्रियो के लिए सबसे बडा दुर्भाग्य विधवा होना या पति-सुख का अभाव माना गया है—आजकल के युग मे, जहाँ बहुत अधिक अवस्था तक बहुत सी लडकियाँ विवाह नही करती या जिनके विवाह नही होते या पारस्परिक कलह के कारण वैवाहिक सुख नही होता इस दोष का लक्षण चरितार्थ हो जाता है । किन्तु जहाँ विवाह उचित अवस्था मे हो गया हो और पतिसुख भी हो वहाँ वैधव्य होने का लक्षण—कम उम्र मे वैधव्य नही मानना चाहिये । अन्य लक्षण तथा ग्रहो के प्रभाव से कम उम्र मे, मध्य उम्र मे या वृद्धावस्था मे इसका फल कब होगा यह विचारना चाहिये ।

पाश्चात्य मत

यदि करपृष्ठ पर रोएँ या बाल हो तो उन्हे तीन कक्षा मे बाँटना चाहिये—

(क) जिनके हाथ पर भूरे या हल्के रग के सूक्ष्म बाल हो वे

मृदु स्वभाव के, सज्जन, शीघ्र दूसरो के प्रभाव मे आ जाने वाले होते है, किन्तु ये लोग कुछ आलसी स्वभाव के होते हैं और अधिक परिश्रम करना पसन्द नही करते ।

(ख) यदि बाल काले हो तो मनुष्य के स्वभाव मे उग्रता होती है । इनके प्रेम मे वासना तथा ईर्ष्या की मात्रा बहुत होती है । ये लोग कुछ चिडचिडे मिजाज के होते हैं और सहिष्णुता कम होने के कारण इन्हे शीघ्र क्रोध आ जाता है ।

(ग) यदि हाथ के बाल लाल और मोटे हो तो काले बाल होने के, जो गुण या अवगुण ऊपर बताये गये है वे सब किन्तु तीव्र मात्रा मे, इस प्रकार के व्यक्तियो मे पाये जाते है । प्रत्येक बात अधिक मात्रा मे होने से इनकी प्रकृति क्रूर, क्रोधयुक्त होती है । प्रेम मे वासना की मात्रा अधिक होने से ये हर प्रकार से अपनी इच्छापूर्ति करने मे तत्पर हो सकते है ।

करपृष्ठ पर बाल नही होना प्रकृति (शरीर और चित्त) की मृदुता का लक्षण है । बाल होना शारीरिक शक्ति का तथा हृदय की कठोरता का सूचक है । बाल जितने पतले और विरल हो उतना ही मृदु प्रकृति का मनुष्य होगा किन्तु यदि घने और अधिक हो तो इससे विपरीत फल होगा ।

५वाँ प्रकरण

हाथ के नाखून

पुरुषों के हाथ के नाखून

नखों को बहुत ध्यान से देखना चाहिए। इनसे भाग्य-सम्बन्धी तथा स्वास्थ्य-सम्बन्धी बहुत सी बातों का पता लगता है। भारतीय मत के अनुसार नखों से स्वभाव और सौभाग्य का ही पता लगता है किन्तु पाश्चात्य मतानुसार इनसे स्वास्थ्य के विषय में भी बहुत सी बातें मालूम हो सकती हैं। पहले भारतीय मत दिया जाता है उसके बाद पाश्चात्य मत दिया जायेगा।

'गरुड पुराण' में लिखा है जिनके हाथों के नाखून तुष की तरह होते हैं (अर्थात् मिलाई या पीलापन लिए हुए और जल्दी टूटने वाले) वे व्यक्ति नपुंसक हैं। जिनके नाखून टेढे और रेखायुक्त होते हैं वे दरिद्री होते हैं। जिनके नाखूनों पर धब्बे हों और देखने में अच्छे न हों वे दूसरों की सेवा करके अपना उदर-पोषण करते हैं। 'गर्गसंहिता' में लिखा है कि जिनके नाखून एक वर्ण के न हों, (कहीं ललाई अधिक, कहीं सफेदी अधिक, कहीं नीलापन या पीलापन) छाजले की तरह उंगलियों के अग्रभाग की ओर फैले हुए हों या सीप की आकार के हों या फटे हुए-से दिखाई दें या बहुत छोटे हों, वे दरिद्र होते हैं और इसके विपरीत जिनके नाखून निर्मल एवं ललाई लिए हुए हों वे भाग्यशाली होते हैं। 'सामुद्रिक तिलक' के अनुसार कछुए की पीठ की तरह कुछ ऊँचाई लिए हुए, मूँगे की

तरह लाल, चिकने और चमकदार नाखून होना अच्छा है, उगलियो का प्रथम पर्व जितना लम्बा हो उसकी आधी लम्बाई नाखूनो की होना उत्तम है[१]। आगे की ओर कुछ बडे, पीछे की ओर कुछ छोटे हो किन्तु उतार-चढाव बहुत कम और क्रमश होना चाहिए। उगली के मास से नखो का कुछ आगे निकला रहना अच्छा है। यदि उपर्युक्त गुणयुक्त नाखून हो तो मनुष्य उच्च पद प्राप्त करता है। कनिष्ठिका की अपेक्षा अनामिका का नाखून बड़ा, अनामिका की अपेक्षा मध्यमा का, मध्यमा की अपेक्षा तर्जनी का और तर्जनी की अपेक्षा अगुष्ठ का नाखून बडा होना अच्छा है। यदि नाखून बहुत बडे हो, टेढे या रूखे हो, उगली की त्वचा मे ही धँसे हुए हो और उनमे न तेज हो न कान्ति, तो ऐसे मनुष्य सुखी नही होते। जिनके नाखूनो पर सफेद बिन्दुओ के चिन्ह हो वे स्वय दु शील (सुशील के विपरीत) होते है और पराधीन रहकर अपना जीवन व्यतीत करते है किन्तु 'सामुद्र-तिलक' का उपर्युक्त मत से थोडा सा मतभेद है। इनके मत से नाखूनो पर बाद मे यदि श्वेत-बिन्दु दिखाई दे तो शुभ लक्षण है। 'विवेक विलास' मे लिखा है—

ताम्रस्निग्धोच्छिखोत्तुङ्ग पर्वार्घोत्था नखा शुभा।
श्वेतैर्यतित्वमस्थानै नखै पीतै. सरोगता॥
पुष्पितै दुष्टशीलत्व क्रौर्य व्याघ्रोपमैर्नखै।
शुक्त्याभै श्यामलै स्थूलै स्फुटिताग्रैश्च नीलकै॥
अद्योत रूक्षवक्रैश्च नखै पातकिनोऽधमा।
तर्जन्यादि नखै भंग्नैर्जातमात्रस्य तु क्रमात्॥

---

१. 'निज पर्वार्द्ध परिमिता भवन्ति सर्वेऽपि पाणिनखा।'

अर्द्धं त्र्यंश चतुर्थांशाष्टांशा स्युः सहजायुषः ।
अंगुष्ठस्य नखे भग्ने धर्मतीर्थरतो नरः ॥

अर्थात् यदि नख कुछ चिकनाई और ललाई लिए हुए, उंगली के अग्र भाग से कुछ आगे बढ़े हुए, उंगली के पोरवे की लम्बाई से आधे, कुछ ऊँचे नाखून हों तो शुभ लक्षण है। यदि इनका रंग कुछ पीलेपन पर हो तो रोग सूचित करते हैं। यदि कुछ सफेदी हो तो वैराग्य प्रकृति के द्योतक हैं। यदि उन पर सफेद बिन्दु हों तो उनसे दुष्टता प्रकट होती है और यदि शेर के नाखून की तरह हों तो क्रूरता। जिनके नाखूनों में चमक न हो और टेढ़े व रूखे हों उन्हें अधम कोटि का और पातकी समझना चाहिए। यदि पैदा होते ही तर्जनी, मध्यमा, अनामिका या कनिष्ठिका का नाखून टूट जाये तो क्रम से जो आयु होती उसका आधा, एक तिहाई, चौथाई और अष्टमांश रह जाता है। यदि अंगूठे का नाखून टूट जाय तो ऐसा जातक धर्माचरण करने वाला होता है।

'सामुद्रतिलक' के अनुसार नाखूनों का कछुए की पीठ के समान कुछ उन्नत होना शुभ लक्षण है किन्तु यह नियम केवल चारों उंगलियों के लिए ही लागू होता है क्योंकि 'विवेक-विलास' का विशेष वचन है कि—

"कूर्मोन्नतेऽङ्गुष्ठनखे नरः स्याद् भाग्यवर्जितः ।"

अर्थात् यदि अंगूठे का नाखून कछुए की पीठ की तरह उन्नत हो—ऊपर उठा हुआ हो, तो मनुष्य भाग्यहीन होता है।

स्त्रियों के हाथ के नाखून

स्त्रियों के नखों के विषय में 'भविष्यपुराण' में लिखा है—

बन्धुजीवारुणैस्तुङ्गैर्नखैरैश्वर्यं माप्नुयात् ।
खरैर्वक्रैर्विवर्णाभैः श्वेत पीतैरलीशताम् ॥

अर्थात् यदि नख बन्धूक पुष्प की तरह लाल, कुछ ऊँचाई लिए हुए हो तो ऐसी स्त्री ऐश्वर्यशालिनी होती है। किन्तु यदि टेढ़े खुरदरे, कान्तिहीन, सफेद या पीलापन लिये हुए, या चकत्तेदार नाखून हो तो दरिद्रा होती है। 'स्कन्दपुराण काशीखण्ड' में लिखा है कि यदि स्त्रियों के हाथ के नाखून उंगली के अग्र भाग से कुछ आगे निकले हुए, गुलाबी वर्ण के हो तो शुभ होते है। पीले, कान्तिहीन, नीचे धसे हुए या सुन्दर रग से युक्त न हो तो दरिद्रता के सूचक है। नखो पर सफेद बिन्दु होना व्यभिचार का लक्षण है। पुरुषो के भी यदि नाखूनो पर सफेद विन्दु दिखाई दे तो उन्हे दुखभागी समझना चाहिए। किन्तु 'गर्ग सहिता' का मत इसके विपरीत है। उसके मत से नाखूनो पर सफेद बिन्दु होना सुख का लक्षण है—

नखेषु बिन्दव श्वेता. प्राय स्युः स्वैरिणी स्त्रिय ।
पुरुषा अपि जायन्ते दुखिन पुष्पितैर्नखै ॥

(स्कन्दपुराण)

श्लक्ष्णा सुवर्णा क्षतजप्रभाश्च
वैडूर्यमुक्ताफल सन्निभाश्च ।
पुष्पान्वित सौख्यकरा भवन्ति
कुशेशयाभाश्च नखा करेषु ॥

(गर्ग सहिता)

नख : पाश्चात्य-मत

नाखूनो की अच्छी प्रकार परीक्षा कर उनके रग, आकार बनावट और खुरदरे है या चिकने, कोमल है या कठोर, दबाव सह सकने वाले है या शीघ्र टूटने वाले इसका निर्णय करना चाहिए। इन सब बातो से जातक के स्वास्थ्य और स्वभाव का बहुत पता

लगता है। नाखूनो का जो वर्ण हमे दिखाई देता है वह वास्तव मे नाखूनो का वर्ण नही है बल्कि नाखूनो के नीचे जो उगली का भाग है उसका रग नाखूनो के अन्दर से छनकर आता है। हमारे शरीर मे जो स्नायु-जाल व्याप्त है उसका अग्र भाग उगलियो मे व्याप्त है। इस कारण उगलियो के अग्र भाग का और उस स्थान की दशा बताने वाले नाखूनो का बहुत महत्व है। जब हमारी आन्तरिक शक्तियो में कुछ परिवर्तन होता है तो उनका प्रभाव नाखूनो पर भी पडता है। जैसे शरीर की त्वचा (चमडा), रग, रूप, चिकनाई, चमक, कोमलता आदि के विचार से उत्तम, मध्यम और निकृष्ट कोटि की होती है उसी प्रकार नाखून भी रग, रूप, चिकनाई, आकार, मृदुलता आदि के विचार से अच्छे और बुरे होते हैं। बहुत बार हाथ तो (कोमलता आदि के विचार से) अच्छे प्रतीत होते हैं किन्तु नाखूनो मे सुन्दरता का अभाव होता है। हो सकता है कि स्वास्थ्य बिगडने से नाखूनो का अच्छापन जाता रहा हो।

जब शरीर में स्नायु-जाल निर्बल हो जाता है तो उस कारण नाखूनो पर खडी-धारियां दिखाई देती है या कुछ ऊंचा-नीचापन (खुरदरापन) मालूम होता है। नाखूनो का चिकना होना शुभ लक्षण है। स्वस्थ मनुष्यो के नाखून मुलायम और लचकदार होते है।

स्वास्थ्य या अस्वास्थ्य का विचार करने के लिए तीन बाते देखनी चाहिएँ—

(१) यदि नाखूनो पर खडी-धारी सी हो तो स्नायु-मडल का रोग प्रदर्शन होता है।

(२) यदि शरीर में स्नायु-सम्बन्धी विकार बढ गया है तो नाखून भी उतने मुलायम नही होगे, शीघ्र ही तड़कने वाले

(जल्दी टूटने वाले)* और कठोर मालूम होंगे।

(३) नाखून अपने नीचे स्थित मांस से भी अच्छी तरह चिपके हुए नहीं होंगे। यह भी रोग का लक्षण है।

तीनों अवगुण जितनी अधिक मात्रा मे हो उतना अधिक स्नायु-जाल निर्बल हो चुका है, यह निष्कर्ष निकालना चाहिए।

नाखूनों पर सफ़ेद धब्बे

जब स्नायुओं की शक्ति कम हो जाती है तो उनका एक लक्षण यह भी होता है कि नाखूनो पर सफेद दाग दिखाई देने लगते है। कभी-कभी नाखूनों पर ऊँची-नीची खड़ी रेखाएँ दिखाई देने लगती है। नाखून कठोर और शीघ्र टूटने वाले हो जाते हैं और नीचे के मास से अलग भी होने लगते है। यदि ये सब लक्षण अधिक मात्रा मे हो तो यह सूचित होता है कि स्नायु-जाल बिलकुल जर्जर हो गया है। ऐसे व्यक्तियो को लकवे की बीमारी का भी अन्देशा रहता है। वास्तव मे हमारे मस्तिष्क और शरीर मे जो-कुछ अच्छा या बुरा परिवर्तन स्नायुओं मे हो रहा है

---

*नोट—'शीघ्र टूटने वाला' किसे कहते हैं? यह कैसे समझा जाय कि इस व्यक्ति का नख कठोर और शीघ्र टूटने वाला है? एक चतुर नाई से कहिए कि उस व्यक्ति की उँगली का बढा हुआ नाखून इस प्रकार काटे कि धागे की तरह एक ही गोल टुकड़ा नहरनी से निकले। इस गोल तागे की आकार के कटे हुए नाखून को बीच से मोड़ दीजिए। यदि ऐसा करने से शीघ्र टूट जाए तो उसे शीघ्र टूटने वाला कहेंगे। यदि इसके विपरीत बीच में से मोड़ने पर भी न टूटे तो उसे मृदु और लचकदार नाखून समझना चाहिए। इसी को हमारे शास्त्रकारों ने 'तुष' की उपमा दी है। धान का छिलका जब हरा होता है तब मृदुता के कारण मोड़ने पर भी नहीं टूटता किन्तु वही जब सूख कर तुष हो जाता है तो मोड़ने से तुरन्त टूट जाता है।

उसकी झलक नाखूनों में दिखाई देती है। यदि नाखूनों की दशा अधिक खराब दिखाई दे तो स्नायविक शक्ति में भी विशेष ह्रास समझना चाहिए।

नाखूनों पर आड़ी धारी

यदि नाखूनों पर आड़ी रेखा दिखाई दे तो भी शक्ति में ह्रास प्रकट होता है। देखने में ऐसा मालूम होगा कि आधा नाखून एक प्रकार का है और ऊपर का आधा नाखून दूसरे प्रकार का। इससे यह प्रकट होता है कि नाखून की वृद्धि में बीच के समय में कुछ बाधा हो गई। एक नाखून पूरा बढ़ने में प्रायः ६ महीने लगते हैं। (उदाहरण के लिए यदि एक नाखून किसी कारण से कुचल जाय तो उसके स्थान पर पूरा नया नाखून आने में ६ महीने का समय लगेगा।)

अब आप ध्यान से देखिए कि नाखून में जो एक आड़ी रेखा है वह, जहाँ नाखून का अन्त है उससे कितनी दूरी पर है। यदि यह आड़ी रेखा नाखून के बीचों-बीच हो तो समझिए कि करीब ३ महीने पहले यह व्यक्ति किसी गहरे रोग से पीड़ित था। उस समय नाखून बढ़ना बन्द हो गया और जब पूर्ण स्वस्थ हो गया तब फिर नाखून बनना शीघ्रता से प्रारम्भ हुआ। नाखून की सम्पूर्ण लम्बाई ६ महीने में पूरी होती है तो इस हिसाब से (बीच वाली रेखा से) यह अनुमान लगाना चाहिए कि बीमारी कितने दिन पहले हुई थी।

नाखून का नया निकला हुआ भाग यदि स्वस्थ है तो जातक पूर्ण स्वस्थ हो चुका है और यदि नवीन भाग में भी रोग-चिन्ह हैं तो अभी तक कुछ रोग का शेष है ऐसा समझिए।

यदि पुराना नाखून अच्छा है और नये नाखून (जो निकल रहे है) पर खडी रेखा हो तो स्नायविक दुर्बलता के कारण रोग हुआ था। नये नाखून यदि पूर्ण स्वस्थ हो तो ये प्रकट करते है कि रोगी बिलकुल अच्छा हो गया है किन्तु यदि उन पर कुछ रोग-चिह्न हो तो यह समझना चाहिए कि यद्यपि यह व्यक्ति देखने मे स्वस्थ मालूम होता है किन्तु भीतर रोग का कुछ अश शेष है। नखो से अन्य रोगो के परिज्ञान के विषय मे कुछ विशेष बाते आगे बताई जा रही है। नाखूनो मे यदि ये रोग-चिह्न हो तो किस रोग के कारण जातक बीमार हुआ था यह देखकर निश्चय करना चाहिए। पुराने नाखून मे ये चिह्न हो तो यह रोग समाप्त हो चुका और यदि नये निकले हुए नाखून मे इसके ये लक्षण हो तो रोग शेष है यह परिणाम निकालना उचित है।

नाखूनों से शारीरिक शक्ति का ज्ञान

सामान्य नियम यह है कि नाखून बडे, चौडे और अच्छे रग के हो तो यह अच्छे स्वास्थ्य का लक्षण है। जिनके नाखून कम चौडे होते है उनकी मास-पेशियो मे कम बल होता है। ऐसे व्यक्ति जब परिश्रम करते है, तो मास-पेशियो की आपेक्षिक निर्बलता के कारण सारा बोझा स्नायविक शक्ति पर पडता है और उनकी शारीरिक प्रकृति उतनी दृढ नही रह पाती। इसी कारण पतले (कम चौडे) नाखून वाले शारीरिक दृष्टि से बलवान नही होते। कम चौडे नाखून भी कई रग के होते है। यदि ये लाल रग के हो तो स्वास्थ्य अच्छा किन्तु इनका रग सफेदी, या पीलापन या नीलापन लिये हुए हो या जडो पर कुछ नीलापन हो तो यह प्रकट होता है कि शरीर मे रक्त का प्रवाह और प्रसार ठीक नही है। यदि कम चौडे नाखूनो

पर सीधी रेखाएँ भी हों या शीघ्र टूटने वाले हों तो और भी अधिक अस्वास्थ्य प्रकट होता है।

यदि नाखून चौड़े अधिक हों और लम्बे कम

यदि नाखून अधिक चौड़े हो और लम्बे कम तो आलोचनात्मक प्रकृति होती है। साधारणतः उँगली के प्रथम पर्व से आधी नाखून की लम्बाई होनी चाहिए। इस अनुमान से यह निश्चय करना चाहिए कि नाखून कितने कम लम्बे हैं। यदि लम्बाई सामान्य से कुछ कम हो, तो प्रकृति आलोचनात्मक, विश्लेषणात्मक प्रकृति अवगुण नही किन्तु अध्ययनशील व्यक्तियो के लिए गुण है। साहित्य, सगीत, व्यापार, व्याख्यान सभी क्षेत्रो मे यह गुण सहायक होता है। किन्तु यदि लम्बाई बहुत कम हो और चौड़ाई बहुत अधिक तथा इसके ऊपर तीनो ओर से त्वचा बढी हुई हो और नाखून चपटे हो तो ऐसे व्यक्तियो में व्यर्थ मे बहस करने का अवगुण होता है। वे जानते है कि जो वे कह रहे है वह सही नही है किन्तु व्यर्थ की बहस करने मे उन्हें मजा आता है और वे इस मौके की तलाश मे रहते है कि किसी की भी बातो मे, किसी भी पक्ष का कोई समर्थन करे तो वे उससे विरुद्ध पक्ष का समर्थन करेंगे। उनकी आलोचना मे सार नही होता। जैसे खिलाडियो को खेलने मे आनन्द आता है इसी प्रकार व्यर्थ मे बहस और झगडा करना इनके मनोविनोद का साधन होता है। ऐसे व्यक्तियो के नाखून बहुत कम लम्बे, व अधिक चौडे होते है और उगलियो का अग्रभाग गदा की तरह गोल होता है। नाखूनो पर पतली त्वचा तीन ओर बढी हुई होती है। ऐसे व्यक्तियो का स्वास्थ्य तो अच्छा रहता है किन्तु इनकी झगड़ालू और व्यर्थ बहस करने की आदत के कारण लोग इनसे

परेशान रहते हैं। यदि ऐसे नाखूनों के साथ हाथ सख्त हो, अंगूठा बड़ा हो, उंगलियों की गांठें विशेष निकली हुई हों और मंगल का क्षेत्र अधिक उन्नत हो तो झगड़ालूपने के प्रायः सभी लक्षण एकत्रित समझिए।

चौड़े और चौकोर नाखून

यदि नाखूनों का रंग ललाई लिए हो और वे चौड़े, चौकोर तथा बगल में गोलाई लिये हुए हों तो व्यक्ति निष्कपट होता है जो इसके दिल में हो वह साफ-साफ कह देता है। यदि नाखूनों का रंग ललाई लिये न हो तो निष्कपटता पूर्णरूप से न होगी।

छोटे और चौकोर नाखून

यदि नाखून छोटे और ऊपर की ओर चौकोर हों और नीचे की ओर (उंगलियों की जड़ की तरफ) पतले हो गये हों तो यह हृदय-रोग का लक्षण है। प्रायः बड़े हाथों पर या बड़ी उंगलियों पर ये देखने में अधिक छोटे मालूम होते हैं। यदि इनमें कुछ नीला रंग भी हो और नीचे की ओर चन्द्रमा के आकार का चिह्न हो तो हृदय-रोग के लक्षण की पुष्टि होती है। नाखूनों में नीलापन यह प्रकट करता है कि हृदय रक्त का चारों ओर प्रसार ठीक रूप से नहीं कर रहा है और जब किसी एक ही रोग के दो-तीन लक्षण मिलें, तो उस रोग की पुष्टि होती है। नाखूनों का रंग कुछ नीलापन लिये हो तो यह प्रकट करता है कि शरीर में रक्त-प्रवाह और प्रसार ठीक नहीं है, किन्तु यदि १३ वर्ष से १५ वर्ष तक की लड़कियों के या ४५ वर्ष के आसपास की अवस्था की स्त्रियों के नाखूनों में कुछ नीलापन दिखाई दे तो किसी चिन्ताकारक रोग का चिह्न नहीं समझना चाहिये क्योंकि मासिकधर्म के आरम्भ

और अन्त होने के समय बहुत सी स्त्रियों के नाखूनों पर कुछ नीलापन आ जाता है। हाथों में यह ध्यानपूर्वक देखना चाहिए कि कुछ नीलापन सारे नाखूनों पर है या केवल जड़ में। यदि सारे नाखून पर हो तो स्वाभाविक दुर्बलता का लक्षण है किन्तु केवल जड़ों में हो तो हृदय-रोग सूचित करता है।

नाखून से यक्ष्मा या क्षय-रोग का ज्ञान

जिस व्यक्ति में क्षय-रोग बहुत अधिक पुराना और बढ़ा हुआ होता है उसमें तो यक्ष्मा के लक्षण इतने अधिक दिखाई देने लगते है कि दूर से ही वह क्षय-रोगी दिखाई देता है, किन्तु प्रारम्भिक अवस्था में इसका ज्ञान कठिनता से होता है कि साधारण कमजोरी या कृशता है या क्षय-रोग के कारण स्वास्थ्य गिरता जा रहा है। ऐसी स्थिति में क्षय-रोग का पता लगाने के लिए, क्षय-रोगी के नाखूनों के क्या लक्षण है यह नीचे बताया जाता है—

(१) उँगली का अग्रभाग मोटा और गोलाई लिये हुए हो जाता है। इसके ऊपर नाखून भी गोलाई लिये हुए होता है। देखने तथा छूने से मालूम होता है कि उँगलियों के अग्रभाग कांच की गोली की तरह गोल हैं।

(२) नाखूनों का रंग नीला होता है।

(३) इसके अतिरिक्त हाथों के रंग, रोग-जन्य मांस-पेशियों की शिथिलता तथा अन्य सामान्य लक्षणों की ओर ध्यान देना चाहिए।

यदि नाखून की ऊपरी सतह गोलाई लिये हुए हो किन्तु उँगली का अग्र भाग (मांस वाला भाग) गोल न हो तो गले या

फेफड़े की बीमारी का लक्षण है। ऐसे व्यक्ति क्षय के रोगी नहीं होते किन्तु फेफड़े और गले के कमजोर होने के कारण जल्दी ही उन्हें कफ, खांसी या गले की बीमारी हो जाती है। यदि इस लक्षण के साथ-साथ स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो उपर्युक्त लक्षण की पुष्टि होती है।

छठा प्रकरण

उंगली-लक्षण

पुरुषों के हाथ की उंगलियां

हाथ में चार उगली और एक अगूठा इस प्रकार कुल पांच उगली हुई। परन्तु अगूठे का अपना एक विशेष स्थान है। यह अन्य उगलियो की अपेक्षा मोटा और दृढ होता है। चारो उगलियां पास-पास होती हैं किन्तु अगूठा उनसे कुछ दूर स्वतत्र होता है। इस कारण अगूठे का नाम भी उगलियो से भिन्न 'अगूठा' रखा गया है। अग्रेजी में भी अगूठे का नाम उगलियो से भिन्न है।

अगूठे का विचार पृथक् किया गया है। इस प्रकरण मे केवल उंगलियो का विचार किया जायेगा। 'भविष्य पुराण' के मतानुसार जिनकी उगलिया 'विरल' हो अर्थात् छीदी हो वे दरिद्र होते है। तथा जिनकी उगलिया 'सघन' अर्थात् एक-दूसरे से मिली हुई हो वे धनी होते हैं—

विरलाङ्गुलयो ये तु तान् दरिद्रान प्रचक्षते।
धनिनस्तु महाबाहो ये घनाङ्गुलयो नरा ॥

यदि 'विरल' होने के साथ-साथ उगलियां रूखी भी हो तो जातक केवल निर्धन ही नही किन्तु दुखी भी रहता है—

विरलाश्च तथा रूक्षा दृश्यन्तेऽङ्गुलय करे।
स भवेत् दुखितो नित्य नरो दारिद्रय भाजनम् ॥

'गरुड पुराण' के मतानुसार भी यदि उगलियां सीधी हो तो शुभ है

और आयु को बढाती है। अर्थात् जिनकी उगलियां टेढी न हो वे दीर्घायु होते है जिनकी उगली पतली हो उनकी स्मरण-शक्ति अच्छी होती है। किन्तु जिनकी उगली चपटी हो वे दूसरो की नौकरी कर अपना पालन करते है। जिनकी उगली बहुत मोटी हो वे भी निर्धन होते है और यदि पीछे अर्थात् करपृष्ठ की ओर उगलियाँ झुकी हुई हो तो शस्त्र से मृत्यु होती है—

हस्ताङ्गुलय एव स्युरायुर्दावलिता शुभा ।
मेधाविना च सूक्ष्मा स्युर्भृ-त्याना चिपिटा स्मृता ॥
स्थूलाङ्गुलीभिर्निस्वा स्युर्नताभि शस्त्रमृत्यव ।

'विवेक-विलास' के मतानुसार भी उगलियो का छीदा, सूखा अति-स्थूल या टेढा होना निर्धनता का लक्षण है। यदि उगलियो के पर्व (पोरवे) लम्बे हो और अगूठे की जड पर अर्थात् शुक्रस्थान पर रेखाएँ हो तो ऐसे मनुष्य के अनेक पुत्र होते है और वह दीर्घायु तथा धनी भी होता है—

यच्छन्ति विरला शुष्का स्थूला वक्रा दरिद्रताम् ।
शस्त्रघात बहिर्नम्रा स्नेटरव चिर्पिटाश्चता ॥
अगुष्ठ मूलजै पुत्री स्याद्दीर्घाङ्गुलि पर्वक ।
दीर्घायु सधनश्चैव निर्धनो विरलागुलि ॥

यहाँ केवल उंगलियो के विषय मे ही बताया जा रहा है इस कारण अगूठे के मूल मे सन्तान-प्रदर्शक रेखाओ के विषय में यहाँ विशेष नही लिखा जाता है। दूसरे प्रकरण में इस का विशद विचार किया गया है। यहाँ केवल यह बताना है कि यदि उगलियाँ छीदी हो तो ऐसे व्यक्ति के पास द्रव्य जमा नही होता और यदि जमा होता भी है तो थोडा जमा होता है।

साधारणत उगलियों को देखने से यह अच्छी तरह मालूम नही पड़ता कि उगलिया-सटी हुई है या छीदी। इसका अच्छी तरह निश्चय करने के लिए जातक को कहना चाहिए कि वह चारो उगलियो को एक-दूसरे से भिडाकर परीक्षक की आँखो के सामने रखे। यदि हस्त-परीक्षक को उन परस्पर मिली हुई उगलियो के बीच छिद्र या दरार दिखाई दें और उनमे होकर बाहर की वस्तु को देख सके तो उगलियो को विरल या छीदा समझना चाहिए। इसके विपरीत यदि उगलियो के परस्पर भिडे रहने के कारण उन उगलियो के बीच से प्रकाश दिखाई न दे तो उगलियो को सघन या भिड़ा हुआ समझना उचित है।

उंगलियों की परस्पर लम्बाई

लका के प्राचीन विद्वान् अबनमदर्शी का मत है कि 'दीर्घाङ्गुलिक पुरुषो बहुयोषित समागम' अर्थात् जिसकी उगलिया लम्बी हो उसका बहुत स्त्रियो से समागम होता है। जातक की मध्यम उगली का मध्य पर्व जितना चौड़ा हो उसे एक उगल चौड़ा मानना चाहिए। इस नाप से जातक के हाथ की लम्बाई—मणिबन्ध से प्रारम्भ कर मध्यमा उगली के अन्त तक, बारह उगल होनी चाहिए। इसमें हथेली का भाग सात उगल चौडा और बीच की उगली का ५ उगल चौड़ा।

सप्त तल पच मध्यमागुलिक

बीच की उगली की अपेक्षा तर्जनी आधा पर्व कम होती है। अर्थात् तर्जनी उगली मध्यमा उगली के नख वाले पर्व की आधी लम्बाई तक पहुँचनी चाहिए। तर्जनी के बराबर ही अनामिका होती है और इस से एक पर्व हीन कनिष्ठिका होती है अर्थात्

अनामिका उगली का नख वाला पर्व जहाँ प्रारम्भ होता है उसी लम्बाई की चिटली उगली होनी चाहिए—

मध्याऽङ्गुली विहीना प्रदेशिनी भवती पर्वणार्द्धेन।
तत्समाना ऽनामा कानिष्ठिका पर्व परिहीना ॥

'सामुद्र-तिलक' के मतानुसार यदि चिटली उगली का नाखून अनामिका के दूसरे पर्व से आगे निकल जाय (अर्थात् चिटली उगली इतनी लम्बी हो कि अनामिका के तृतीय पर्व तक पहुँचे) तो प्राय मनुष्य अधिक धनी होता है। यदि उगलियाँ लम्बी हो और उनके पोरवे भी लम्बे हो तो ऐसा पुरुष सौभाग्यशाली होता है। उगलियों के विरल, कुटिल तथा सूखे होने से मनुष्य निर्धन होता है—

नियत कनिष्ठिकाङ्गुलिरनामिका पर्व युगलमुल्लघ्य
यद्यधिकतरा पुंसाँ धनमधिक जायते प्राय ॥
दीर्घाभिरङ्गुलीभि सौभाग्ययुत सदीर्घ पर्वाभि।
विरलाभि कुटिलाभि शुष्काभिर्भवति धनहीन ॥

प्राय सभी शास्त्रकारो ने उगलियो का छीदा होना निर्धनता का लक्षण बताया है। इस कारण यहाँ यह जिज्ञासा होना स्वाभाविक है कि सब उगलियो के बीच मे समान रूप से छिद्र या दरार हो तो उसका क्या फल है और यदि छिद्र केवल (१) कनिष्ठिका-अनामिका के बीच मे या (२) अनामिका-मध्यमा के बीच मे या (३) मध्यमा-तर्जनी के बीच हो तो क्या फल? किन्ही दो उगलियो के बीच मे अधिक चौडी दरार हो और अन्य उंगलियो के बीच कम या इससे विपरीत क्रम हो तो क्या फल? इस शका का समाधान निम्नलिखित शास्त्रवचनो से होता है—

छिद्र मिथ कनिष्ठाऽनामा मध्या प्रदेशिनीना स्यात्
वृद्धत्वे तारुण्ये बाल्ये क्रमशो नरस्य दुःखम् ॥
(सामुद्र तिलक)

तर्जनी मध्यमा रन्ध्रे मध्यमानामिकान्तरे।
अनामिका कनिष्ठान्तश्छिद्रे सति यथा क्रमम् ॥
जन्मत प्रथमे त्वंशे द्वितीयेऽथ तृतीयके।
भोजनावसरे दुःख केप्याहु श्रीमतामपि ॥
(विवेक विलास)

यदि तर्जनी और मध्यमा के बीच मे छिद्र या दरार हो तो जीवन के प्रथम भाग मे धनहीनता, यदि मध्यमा और अनामिका के बीच में छिद्र या दरार हो तो जीवन के मध्यभाग मे धनहीनता और यदि अनामिका और कनिष्ठिका के बीच छिद्र या दरार हो तो वृद्धावस्था मे धन की कमी होती है। जिसकी उगलियो में किसी दो उगलियो के बीच मे छिद्र या दरार न हो तो ऊपर बताये हुए क्रम से जीवन के उस भाग में धन-कष्ट नही होता। यदि सभी उगलियो के बीच मे छिद्र या दरार हो तो जीवन के तीनो ही भाग कष्ट मय होगे। सस्कृत का ही भाव लेकर 'कर-लक्षण' मे प्राकृत भाषा मे निम्नलिखित गाथा दी गई है—

*"बालत्तणम्मि[1] सुलह[2] पएसिणी[3]-मज्झ[4] मतर[5] घणम्मि[6]।
मज्झिम[7] - अणामियाए[8] तरुणत्तणे[9] सुक्ख[10] ॥

अर्थात् प्रदेशिनी और मध्यमा सघन (मिली हुई) हो तो बचपन मे सुख, मध्यमा और अनामिका सघन हो तो युवावस्था मे सुख होता है।

* १ बचपन में २. सुलभ ३. प्रदेशिनी ४ मध्यमा में ५ अन्तर ६. सघन ७. मध्यमा ८ अनामिका ९. जवानी में १०. सुख।

* पावई[11] पच्छा[12] सुक्ख[13] कणिट्ठिआ[14] णामि[15] अतर[16] घणम्मि[17] ।
सयगुलि[18] घणम्मि[19] अ होइ[20] सुही[21] घण[22] समिद्धो[23] अ ॥

यदि कनिष्ठिका और अनामिका एक-दूसरे से मिली हुई हो तो उसको बुढ़ापे मे धन-सुख होता है। यदि सभी उंगलियाँ एक-दूसरे से भिडी हुई सघन हो तो सदैव धन समृद्ध रहता है।

'विवेक-विलास' नामक ग्रन्थ मे यह विशेष रूप से बताया गया है कि अनामिका के नख वाले पर्व पर यदि कनिष्ठिका पहुँच जाय तो ऐसे जातक की धन-वृद्धि होती है और माता का पक्ष (मामा, नाना, मौसा, मौसी आदि) सबल होता है—

अनामिकान्त्यरेखाया कनिष्ठेह यदाधिका ।
धनवृद्धिस्तदा पुंसा मातृपक्षो बहुस्तथा ॥

कनिष्ठिका उंगली की लम्बाई से आयु-विचार

'नारद-सहिता' मे लिखा है कि अनामिका का मध्यम पर्व लांघ-कर कनिष्ठिका आगे बढ जाय तो जातक सौ वर्ष तक जीता है। यदि कनिष्ठिका का अग्र भाग अनामिका के मध्यम पर्व तक पहुँचे तो ८० वर्ष। उससे कुछ कम हो तो ७० वर्ष और यदि अनामिका के मध्य पर्व के मध्यम भाग तक पहुँचे तो जातक की आयु केवल ६० वर्ष की होती है—

"अनामिका पर्व यदा विलङ्घयते
कनिष्ठिकाग्रेण शत स जीवति ।
समे त्वशीतिं विषमे तु सप्तति
पर्वार्ध हीने खलु षष्टिमादिशेत् ॥

---

*११. पाता है १२ पीछे १३ सुख १४. कनिष्ठिका १५. अनामिका १६. अन्दर १७. घना १८ सब उगली १९ सघन २०. होवे २१. सुखी २२. धन २३ समृद्ध।

यह उस समय के शास्त्र का वचन है जब साधारणतय' लोगो की ८०-९० वर्ष की आयु होती थी। इसलिए ऊपर जो १००, ८० तथा ६० वर्ष की आयु बताई गई है उसे क्रमश दीर्घायु, मध्य-आयु तथा अल्प-आयु समझकर आयु-निर्णय करना चाहिए।

'गर्ग-संहिता' का भी इसी आशय का वचन है कि—

अनामिकान्तिम पर्व समानीता कनिष्ठिका।
आयामशुद्ध पर्वाणि येषा ते चिरजीविन' ॥

यदि कनिष्ठिका के पर्व लम्बे हो और कटे न हो तभी उक्त फल चरितार्थ होगा। किसी एक लक्षण से फल नही कहना चाहिए, अन्य लक्षणो से तुलना कर फलादेश करना उचित है।

स्त्रियो के हाथ की उंगलियाँ

स्त्रियो के उगली के विषय में 'भविष्य-पुराण' मे लिखा है कि जिस की उगलियाँ गोलाई लिये हुए, बराबर पर्व (पोरवे) वाली, आगे से पतली, कोमल त्वचा वाली तथा गाठ-रहित हो वह स्त्री सुख भोगती है। यहाँ उगलियो के पाँच गुण बताये गये हैं—(१) चपटी न हो किन्तु गोल हो अर्थात् उगली के किसी भाग मे छल्ला पहनाया जाये तो छिद्र न रहे। (२) उगलियो के पर्व या पोरवे बराबर हो अर्थात् तर्जनी के तीनो पर्वो की लम्बाई एक सी हो, मध्यमा के तीनो पर्वो की लम्बाई एक सी हो, अनामिका के तीनो पर्वो की लम्बाई बराबर हो और इसी प्रकार कनिष्ठिका के तीनो पर्वो की लम्बाई बराबर हो। (३) आगे से पतली हो अर्थात् नखवाले पर्व की ओर पतली हो। उगलियो का अग्र भाग जितना पतला हो उतना ही अच्छा। (४) उगलियो की त्वचा अत्यन्त कोमल हो। पीछे की ओर रोये (बाल) या खुरदरापन

न हो। (५) उगलियो मे गाँठे न हो और टेढी भी न हो। ये पाँचो गुण होने से स्त्रियो की उगलियाँ अच्छी मानी जाती है।

इसके विपरीत किन-किन लक्षणो से स्त्री दु खभागिनी होती है अर्थात् कष्ट पाती है यह 'स्कन्द पुराण काशी खण्ड' मे बताया गया है—यदि (१) उगलियो मे बहुत पर्व हो—किसी उगली मे तीन की जगह चार। (२) कृश हो—अर्थात् सूखी हुई मासरहित हो। (३) बहुत लाल हो। (४) बहुत छोटी हो। (५) विरल अर्थात् छीदी हो तो शुभ लक्षण नही है। स्त्रियो की उगलियो के पिछले भाग मे यदि रोम या बाल हो तो अशुभ लक्षण है। यदि चपटी या रूखी उगलियाँ हो तो यह भी शुभ लक्षण नही है—

चिपिटा स्थपुटा रूक्षा पृष्ठरोमयुजोऽशुभा ।
अतिह्रस्वा कृशा रक्ता विरला रोग हेतुका ॥
दु खायाड्गुंल्य स्त्रीणा बहु पर्व समन्विता ।

जिस स्त्री की उगलियाँ बहुत छोटी हो और दोनो हाथो से अजली बनाने से उगलियो के बीच मे छिद्र रहे तो वह स्त्री अपने पति के घर को खाली कर देती है—अपने पति का सारा धन खर्च कर देती है, द्रव्य सग्रह-शील नही होती।

हाथों की उंगलियाँ (पाश्चत्य-मत)

पाश्चात्य मतानुसार भी अगूठे का उगलियों की अपेक्षा विशेष महत्व है। इस कारण चारो उगलियो का एक प्रकरण मे विचार किया जाता है। अगुष्ठ का आगे के प्रकरण मे पृथक् विचार किया जायेगा। उगलियो का विचार करते समय प्रत्येक उगली का अलग-अलग विचार करना चाहिए। तर्जनी के नीचे बृहस्पति का क्षेत्र होता है इसलिए तर्जनी उगली पुष्ट, बलिष्ठ और लम्बी हो तो

बृहस्पति के गुण जातक में विशेष पाये जायेंगे। इसी प्रकार मध्यमा यदि विशेष पुष्ट और सामान्य से अधिक लम्बी हो तो शनि का प्रभाव जातक पर विशेष होगा। अनामिका के नीचे सूर्य का क्षेत्र होता है इसलिए अनामिका यदि सामान्य से विशेष लम्बी और

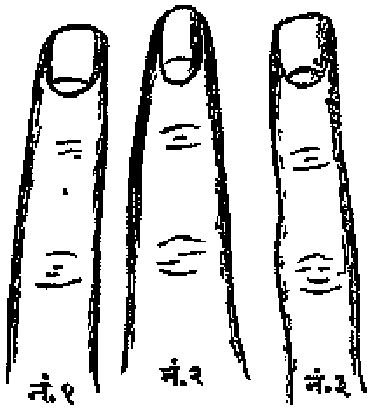

चित्र न० ६

उंगली न० १. आगे से चतुष्कोणाकृति है। गांठें निकली हुई नहीं हैं।
२. आगे से नुकीली है। गांठें नुकीली नहीं हैं।
३ इसमें ग्रन्थियां उन्नत हैं अर्थात् गांठें निकली हुई हैं।

बलिष्ठ हो तो सूर्य-क्षेत्र के जो विशेष गुण हैं वे जातक में अधिक मात्रा में पाये जायेंगे। सबसे छोटी उंगली के नीचे बुध का क्षेत्र है इस लिए इस उंगली के सामान्य से अधिक लम्बी और पुष्ट होने से बुध-क्षेत्र के गुण जातक में विशेष होंगे। एक प्रकार से जो गुण, बृहस्पति, शनि, सूर्य तथा बुध क्षेत्रों के उन्नत और विस्तृत होने से मनुष्य में होते हैं वही क्रमशः तर्जनी आदि उंगलियों के पुष्ट, बलिष्ठ और लम्बे होने से समझने चाहिएं। इन चारों ग्रह-क्षेत्र में यदि कोई क्षेत्र सुन्दर, विस्तृत या उन्नत न हो (अर्थात् नीचा धंसा हुआ

हो) किन्तु उसके ऊपर वाली उगली लम्बी और प्रमुख हो तो उस क्षेत्र के गुणो की कमी को पूरा करती है। उदाहरण के लिए बृहस्पति का क्षेत्र उन्नत और विस्तृत हो और उसके ऊपर वाली उगली तर्जनी भी प्रमुख, प्रशस्त हो तो बृहस्पति का विशेष और अच्छा प्रभाव, उत्कृष्ट कोटि का समझना चाहिए। यदि बुध का क्षेत्र नीचा और दबा हुआ हो और उसके ऊपर की उगली कनिष्ठिका भी छोटी तथा सामान्य से अधिक पतली हो तो बुध का निकृष्ट प्रभाव, जातक पर होगा। सूर्य और शनि इन दोनो क्षेत्रो का भी इसी प्रकार विचार करना चाहिए। यदि सूर्य का क्षेत्र नीचा और असुन्दर हो किन्तु सूर्य की उंगली प्रमुख और पुष्ट हो तो क्षेत्र का निकृष्ट प्रभाव तथा उंगली का उत्कृष्ट प्रभाव—इस प्रकार दोनों का मिलकर, सूर्य-ग्रह का मध्यम फल समझा जायेगा। शुक्र, मगल तथा चन्द्र क्षेत्रो के ऊपर उगलियाँ नही होती इसलिए इन ग्रहो के विषय मे केवल उनके क्षेत्रो से ही विचार किया जाता है।

उंगलियों की लम्बाई

इसके अतिरिक्त यह देखना चाहिए कि उगलिया कितनी लम्बी हैं। बीच की उगली सदैव सब उंगलियो मे अधिक लम्बी होती है। इससे छोटी तर्जनी और अनामिका ये दोनो प्राय एक ही लम्बाई की होती है। यदि तर्जनी अनामिका से विशेष लम्बी हो तो बृहस्पति का प्रभाव अधिक और यदि अनामिका तर्जनी से विशेष लम्बी हो तो सूर्य का विशेष प्रभाव समझना चाहिए। छोटी उंगली सबसे छोटी होती है। इस का अग्र भाग अनामिका के प्रथम पर्व के अन्त तक पहुँचना चाहिए। यदि कनिष्ठिका इससे छोटी हो तो उसे छोटी और यदि इससे अधिक लम्बी हो तो उसे लम्बी कहेंगे।

उंगलियों के अग्रभाग

उगलियो के अग्रभाग को चार कक्षाओ मे विभाजित किया जाता है—(१) अत्यन्त नुकीले, (२) नुकीले, (३) चतुष्कोण आकार के तथा (४) फैले हुए। उगलियो के अग्रभाग से जातक की प्रकृति, स्वभाव तथा किस क्षेत्र मे वह सफलता प्राप्त करेगा इसका परिचय मिलता है। इस कारण यह पहचान कर लेना आवश्यक है कि उगली उपर्युक्त चारो प्रकारो मे से किस प्रकार की है—

(१) उगली की ओर ध्यान से देखिये, यदि जड से लेकर (अर्थात् जहाँ से उगली आरम्भ होती है) ऊपर तक (जहाँ अन्त होती है) क्रमशः उगली पतली होती जावे और अग्रभाग अत्यन्त नुकीला हो तो इसे अत्यन्त नुकीली उगली कहेंगे—

(२) यदि उगली जड से लेकर नीचे की गाँठ (हाथ की ओर से प्रारम्भ करने पर उगली मे जो प्रथम गाँठ होती है) तक समान रूप से मोटी हो और उसके बाद क्रमश पतली हो तथा अग्रभाग गोलाई लिये हुए नुकीला हो तो ऐसी उगली को नुकीली कहेंगे।

(३) यदि नीचे से लेकर ऊपर तक उगली समान रूप से मोटी हो और अग्रभाग चतुष्कोण आकार का या आगे से कुछ गोलाई लिये हो तो ऐसी उगलियो को चतुष्कोण आकार की उगली कहेंगे। (देखिये चित्र न० ६)

(४) यदि उगली नीचे से द्वितीय ग्रंथि (जहाँ नखवाला पर्व अन्त होता है) तक समान रूप से चौडी हो और ऊपर की ग्रन्थि के बाद अधिक चौडी हो जावे तथा नाखून तक पहुँचते-पहुँचते बिलकुल चौडी मालूम पडे तो इसे फैली हुई कहेंगे।

इन चारो प्रकार के अग्रभागो मे अत्यन्त नुकीले अग्रभाग वाले बहुत विचारशील होते है, इनमे क्रियाकुशलता (सासारिक, व्यापारिक या व्यावहारिक कार्यो मे चतुरता) कम होती है। इसके बाद क्रमश. जो अग्रभागो के लक्षण दिये गये है उनमे विचारशीलता क्रमश. कम तथा क्रिया-कुशलता अर्थात् कार्य-सम्पादन की योग्यता अधिक होती है। यह निम्नलिखित विवरण से स्पष्ट किया जाता है—

उंगलियों के अग्रभाग के अनुसार

	दार्शनिक, कलात्मक या विचारात्मक प्रवृत्ति	सासारिक चतुरता या कार्यसम्पादन योग्यता
(१) अत्यन्त नुकीला अग्रभाग	८०%	२०%
(२) नुकीला अग्रभाग	७०%	३०%
(३) चतुष्कोण अग्रभाग	५०%	५०%
(४) आगे से फैला हुआ अग्रभाग	२०%	८०%

उंगलियों की लचक

प्रत्येक उगली की अलग-अलग परीक्षा करनी चाहिए कि उसमे कितनी लचक है। लचक से तात्पर्य है कि वह पीछे की ओर कितनी मुड सकती है। यदि किसी उगली मे अधिक लचक है तो उस उगली के नीचे वाले ग्रह-क्षेत्र के प्रभाव की विशेष पुष्टि होती है। उदाहरण के लिए यदि अनामिका मे विशेष लचक हो तो सूर्य-सम्बन्धी प्रभाव का जातक पर अधिक प्रभाव होगा। यहाँ यह स्पष्ट कर देना उचित है कि केवल एक गुण लचक, लम्बाई इत्यादि से सहसा किसी नतीजे पर नही पहुँचना चाहिए। सब लक्षणो का विचार कर उनका सन्तुलन और सामञ्जस्य करने के बाद ही अन्तिम नतीजे पर पहुँचा जा सकता है।

उंगलियों का फैलाव

यदि कोई उंगली बायीं तथा दायीं दोनों ओर दूर तक फैल सकती है तो यह भी अपने-अपने सम्बन्धित ग्रह-क्षेत्र के अच्छे-अच्छे प्रभाव को बढाती है। उंगलियों के फैलाव की परीक्षा करने का प्रकार यह है कि जातक से कहिए कि अपने हाथ को मेज पर इस प्रकार रखे कि हथेली और उंगलियों के नीचे का भाग मेज को स्पर्श करे। अब जातक से कहिए कि तीन उंगलियों को, हथेली को तथा अंगूठे को न उठाये और चौथी उंगली को उठाकर दाहिनी या बायीं ओर ले जावे। जो उंगली दाहिनी और बायीं ओर अधिक जा सके उसे अधिक चुस्त समझना उचित है और उस उंगली से सम्बन्धित ग्रह (बृहस्पति, शनि, सूर्य, बुध) के कार्यों में वह जातक विशेष चतुर होगा।

उंगलियों का एक-दूसरे की ओर झुका होना

जातक से कहिए कि अपना हाथ आपके सामने इस प्रकार ऊंचा करे कि हाथ फैला हुआ हो, हथेली आपकी ओर हो और उंगलियों के अग्रभाग ऊपर की ओर हों। जातक के ऐसा करने पर देखिए कि कौनसी उंगली अपने स्थान पर बिलकुल सीधी है और कौनसी किसी दूसरी उंगली की तरफ मुखातिब (आकृष्ट) मालूम होती है। जो उंगली अपने स्थान पर सीधी हो उसे प्रधान और अन्य जो उसकी ओर मुखातिब हों उन्हें अप्रधान समझिए। अप्रधान उंगलियां अपने गुण और शक्ति का थोडा अंश प्रधान उंगली को देती हैं। उदाहरण के लिए यदि तीनों उंगलियां तर्जनी की ओर झुकी हों तो तर्जनी को बल प्राप्त हो रहा है और इस कारण बृहस्पति क्षेत्र सम्बन्धी प्रभाव को बढावेगा। यदि छोटी

उगली की तरफ सब उगलियाँ झुकी हुई है तो बुध के प्रभाव मे वृद्धि समझनी चाहिए।

यहाँ यह बताना आवश्यक है कि यदि अप्रधान उगलियाँ सीधी होकर दूसरे की ओर आकृष्ट हो किन्तु यदि अप्रधान उगली टेढी हो तो वह प्रधान उगली के गुण और शक्ति को नही बढाती किन्तु अपने ही नीचे स्थित ग्रह के प्रभाव को बढाती है।

उंगलियो के प्रारम्भ होने का स्थान

उगलियो के प्रारम्भ होने का स्थान करीब-करीब एक ही ऊँचाई पर होना चाहिए। यदि कोई उगली अन्य उगलियो की अपेक्षा नीचे से प्रारम्भ होती है, तो इससे उस उगली की शक्ति की कमी प्रकट होती है और यदि कोई उगली अधिक ऊँचे स्थान से प्रारम्भ होती है तो उस उगली की विशेष शक्ति प्रदर्शित होती है।

उंगलियों के फैलने पर उनमें परस्पर अन्तर

जातक से कहिये कि अपने हाथ को इस प्रकार आपके सम्मुख खडा करे कि उगलियो के अग्र भाग ऊपर की ओर हो। उगलियाँ न परस्पर भिडी हो न उद्योग कर फैलाई जायें। हाथ की खुली हुई स्थिति होनी चाहिए। अब ध्यान से देखिए कि किन-किन उगलियो के बीच विशेष अन्तर है—

(१) यदि अगुष्ठ तथा तर्जनी मे समान से अधिक अन्तर हो तो जातक उदार तथा स्वतन्त्रता-प्रिय होगा और कडे अनुशासन में रहना पसन्द नहीं करेगा।

(२) यदि तर्जनी और मध्यमा मे विशेष अन्तर हो तो जातक स्वतत्र विचार का होता है और किसी भी विषय पर अपनी स्वतत्र

राय कायम करता है। अन्य व्यक्तियों की राय से पाबन्द नहीं होता।

(३) यदि मध्यमा और अनामिका में सामान्य से अधिक अन्तर हो तो जातक भविष्य के विषय में चिन्ता नहीं करता। मिलनसार और ऊँच-नीच का विचार किये बिना सब में घुल मिल जाता है।

(४) यदि अनामिका और कानिष्ठिका में विशेष अन्तर हो तो जातक मनमानी करता है।

यदि किन्ही दो उंगलियों के बीच में सामान्य से कम अन्तर हो तो अन्तर अधिक होने का जो फल दिया गया है उसके विपरीत समझना चाहिए। यदि सभी उंगलियां बहुत पास-पास रहें तो जातक में कृपणता होती है तथा मिलनसारी कुछ कम होती है।

उंगलियों के पर्व

साधारणत प्रत्येक उंगली में तीन-तीन पर्व होते हैं तथा अंगुष्ठ में दो। यदि किसी की उंगली १० सेंटी-मीटर लम्बी हो तो साधारणत प्रथम पर्व २ से० मी०, द्वितीय पर्व ३½ से० मी० तथा तृतीय पर्व ४½ से० मी० लम्बा होना चाहिए। अर्थात् उंगली जितनी लम्बी हो उसका पंचमांश प्रथम पर्व, ३½/१० द्वितीय पर्व तथा ४½/१० तृतीय पर्व लम्बाई में होना चाहिए। इस अनुपात से कोई पर्व बड़ा हो तो लम्बा और छोटा हो तो छोटा समझना चाहिए। यदि किसी उंगली का पहला पर्व (जिस पर्व में नख होता है) लम्बा और बड़ा हो तो उस उंगली के नीचे वाले ग्रह का मस्तिष्क-सम्बन्धी कार्यों पर (अध्ययन, पुस्तक-लेखन, दार्शनिक विचार, हुकूमत करने की भावना) विशेष प्रभाव होगा। यदि मध्यम पर्व सबसे अधिक लम्बा और बड़ा हो तो उस उंगली से सम्बन्धित ग्रह का प्रभाव व्यापारिक क्षेत्र

मे अधिक होगा और यदि तृतीय पर्व सबसे अधिक बलवान हो तो शारीरिक सुख-भोग, विलास की प्रवृत्ति अधिक होगी। यदि तृतीय

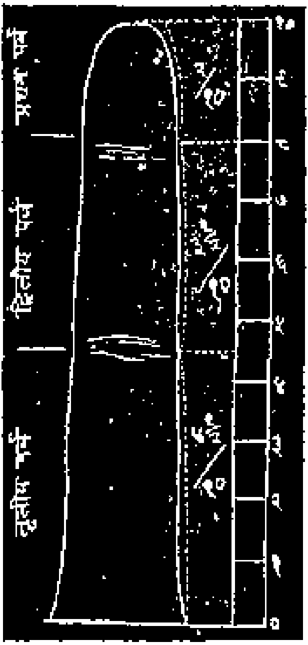

उँगलियो के पर्व (चित्र नं० १०)

पर्व बहुत मोटा और फैला हुआ हो तो ऐसा जातक खाने-पीने का बहुत शौकीन होता है। यदि सब उगलियो के तृतीय पर्व लम्बे, फैले और उठे हुए हो तो खूब खाने-पीने की इच्छा अधिक मात्रा मे होगी। इस फलादेश को मनुष्य के स्वरूप तथा हाथ के अन्य लक्षणो का सामञ्जस्य कर कहना उचित है। उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की उगलियो के तृतीय पर्व उन्नत, विस्तृत तथा फूले हुए हो और अन्य लक्षणो से बृहस्पति या मगल का प्रभाव उस पर अधिक दिखाई देता हो तो खाने-पीने का बहुत ही अधिक शौकीन होगा। किन्तु यदि उस पर बृहस्पति या मगल के बजाय शनि का प्रभाव विशेष हो तो खाने-पीने की उतनी अधिक प्रवृत्ति नही होगी।

यदि उगलियो के तृतीय पर्व सकडे और जडों के पास इतने भीतर धँसे हुए हो कि उगलियो के मिलाने पर भी तृतीय पर्वों के बीच दुर्बल होने के कारण छिद्र दिखाई दे तो ऐसा मनुष्य चिन्तन-

शील होता है।

हाथ की बनावट तथा पर्वो की लम्बाई का सम्मिलित प्रभाव

ऊपर बताया जा चुका है कि उंगली के प्रथम पर्व का सम्बन्ध मस्तिष्क के कार्यो तथा मानसिक जगत् से है यदि हाथ नुकीला या अत्यन्त नुकीला हो तो उपर्युक्त दोनो गुण—हाथ की बनावट तथा पर्व का—एक ही गुण की पुष्टि करने के कारण विशेष बलवान हो जायेंगे। इसी प्रकार यदि हाथ 'चतुष्कोण' हो और द्वितीय पर्व लम्बे और पुष्ट हो तो दोनो गुण व्यापारिक या व्यावसायिक क्षेत्र मे लाभ-प्रद होने के करण, इस क्षेत्र मे जातक विशेष सफल होगा। किन्तु यदि हाथ की बनावट तो हो नुकीली तथा दार्शनिक ढग की और मध्यम पर्व अर्थात् व्यापारिक भावना का पर्व लम्बा हो तो विरुद्ध गुणो के मिलने से न जातक दार्शनिक ही हो सकेगा और न सफल व्यापारी ही।

उंगलियों की लम्बाई

(१) यदि उगलिया बहुत लम्बी हो तो दूसरो के कार्यों में हस्तक्षेप करने की प्रवृत्ति होती है। ऐसे लोग दूसरो के कार्यो मे छिद्रान्वेषण करते रहते है और इनकी प्रकृति मे क्रूरता होती है।

(२) यदि उगलिया अति लम्बी तो नही किन्तु लम्बी हो तो विश्लेषणात्मक योग्यता अधिक होती है। ऐसे आदमी हर एक काम को तरतीब से करते हैं और छोटी-छोटी बारीकियो पर जाते है। उदाहरण के लिए यदि इनके हाथ मे कोई प्रबन्ध सौंपा जाय तो प्रबन्ध-सम्बन्धी छोटी-से-छोटी बात पर भी ये स्वय ध्यान देंगे।

(३) यदि उंगलियाँ लम्बी और पतली हो और हाथ मे अन्य लक्षण अच्छे हो तो जातक नीतिज्ञ तथा चतुर होता है। यदि अन्य लक्षण अच्छे न हो तो ताश खेलने मे बेईमानी करना, किसी का जेब काट लेना या अन्य ऐसी ही बातो मे चतुरता काम मे आती है।

(४) यदि उंगलियाँ साधारण लम्बाई की हो अर्थात् न उन्हे लम्बी कह सके और न छोटी, तो ऐसे मनुष्य मे कोई बात विशेष मात्रा मे नही होती।

(५) यदि उंगलियाँ छोटी हो तो, मनुष्य को यदि कोई बात समझाई जाय तो वह तुरन्त समझ जाता है। ऐसे लोग अनेक विचार-धाराओ का सन्तुलन और समन्वय करके परिणाम निकालने मे सफल होते है। अर्थात् इनमे सश्लेषणात्मक योग्यता विशेष होती है। यदि साथ ही उंगलियो की गाठे निकली हुई न हो तो ऐसे लोग बिना किसी हेतु के भी यह समझ जाते है कि दूसरो के हृदय का भाव या इरादा क्या है। इनमे Intuition की मात्रा अधिक होती है।

(६) यदि उंगलियाँ बहुत छोटी हो तो ऐसे जातक प्राय सुस्त और स्वार्थी होते है। अपना समय आमोद-प्रमोद मे लगाते है। ऐसे लोग कुछ क्रूर प्रकृति के होते है और अपना कर्त्तव्य पालन नही करते है।

उंगलियो की लम्बाई की विचार से ये सामान्य नियम बताये गए है कि लम्बी उंगलियो या छोटी उंगलियो के होने से मनुष्य की प्रकृति और स्वभाव मे क्या अन्तर होता है। किन्तु हाथ मे सब उंगलियो की अनुपात से एकसी लम्बाई न होकर कोई बहुत बडी

या कोई बहुत छोटी हो इसका क्या फल होगा यह विस्तारपूर्वक बताया जाता है—

तर्जनी

(१) यदि तर्जनी साधारणत लम्बी हो तो ऐसा जातक हुकूमत करना चाहता है। यदि बहुत लम्बी हो तो उसकी प्रकृति में क्रूरता आ जाती है। यदि बहुत छोटी हो तो जातक अपने ऊपर उत्तरदायित्व लेना नही चाहता। यदि टेढी हो तो उसको सम्मान प्राप्त नही होता।

मध्यमा

(२) यदि मध्यमा साधारण लम्बी हो तो मनुष्य में दूरदर्शिता होती है। यदि अत्यधिक लम्बी हो तो ऐसा मनुष्य गमगीन (दुखी) रहता है। यदि चपटी भी हो तो ऐसा स्वभाव अवश्य होता है। यदि बहुत छोटी हो तो गम्भीरता की कमी अर्थात् छिछोरपन। यदि टेढी हो तो या तो जातक को हिस्टीरिया रोग होता है या हिंसात्मक प्रवृत्ति प्रकट होती है।

अनामिका

(३) यदि अनामिका साधारणत लम्बी हो तो सौन्दर्य-प्रियता, यदि अधिक लम्बी हो तो सट्टा या जुआ खेलने की इच्छा, यदि बहुत छोटी हो तो कलात्मक प्रकृति नही होती, केवल रुपये कमाने की तरफ ध्यान होता है, यदि टेढी हो तो कला के विषय में ठीक आदर्श नही होता परन्तु उसका उपयोग गलत बातो के लिए किया जाता है।

कनिष्ठिका

(४) यदि कनिष्ठिका लम्बी हो तो ऐसा जातक अनेक विषयों

मे चतुर होता है। यदि बहुत अधिक लम्बी हो तो प्रकृति में क्रूरता। यदि बहुत छोटी हो तो ऐसे आदमी बहुत जल्दबाजी से किसी निश्चय या परिणाम पर पहुँच जाते है। (अत्यधिक जल्दबाजी को अवगुण समझना चाहिए) यदि यह उंगली टेढी हो तो बेईमानी की प्रकृति होती है।

लम्बाई की दृष्टि से उंगलियों की तुलना

(१) यदि तर्जनी मध्यमा के बराबर हो तो ऐसे व्यक्ति की हुकूमत करने की बहुत प्रबल इच्छा रहती है। नेपोलियन की तर्जनी मध्यमा के बराबर थी। यदि तर्जनी मध्यमा से भी बढ जावे तो प्रकृति मे अत्यन्त तानाशाही या नादिरशाही हुक्म की उग्र प्रवृत्ति होती है।

यदि तर्जनी अपनी स्वाभाविक लम्बाई से कम हो तो भीरुता की द्योतक है। ऐसा व्यक्ति आगे बढने से झिझकता है।

यदि तर्जनी अनामिका से बहुत बडी हो तो महत्वाकाक्षा अति मात्रा मे बढी हुई होती है। यदि अनामिका के बराबर हो तो यश तथा धन की बहुत लिप्सा होती है। यदि अनामिका की अपेक्षा छोटी हो तो महत्वाकाक्षा नही होती। जातक के जीवन का जैसा ढर्रा चल रहा है उसी से सतुष्ट रहता है।

(२) यदि मध्यमा तर्जनी की अपेक्षा बहुत बडी हो तो जातक दुःखी रहता है। यदि अन्य बुद्धिमत्ता के लक्षण हाथ मे न हो तो गमगीन (दुःखी) अन्तःकरण के प्रभाव से जातक मूर्खता भी कर बैठता है यथा घर-बार छोड देना या हताश होकर किये-कराये पर पानी फेर देना।

यदि मध्यमा तर्जनी के बराबर हो तो जैसा ऊपर बताया जा

चुका है, उच्चपद तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने की तीव्र अभिलाषा जातक के हृदय मे रहती है ।

यदि मध्यमा तर्जनी की अपेक्षा भी छोटी हो तो पागलपन का लक्षण है । ऐसा व्यक्ति बिना योग्यता या क्षमता हुए, बड़े पद प्राप्त करने के खयाली पुलाव पकाया करता है ।

यदि मध्यमा अनामिका की अपेक्षा बहुत बडी हो तो उसके हृदय की गमगीन वृत्ति (अन्त करण दु खी तथा निराश रहने) के कारण जातक कला साहित्य, विद्या या धर्म-उपार्जन मे सफल नही होता

यदि मध्यमा अनामिका के बराबर हो तो जुआ या सट्टा करने की इच्छा । यदि अनामिका से छोटी हो तो जातक ऐसे कारो-बार करता है जिसमे लाभ की कोई आशा नही किन्तु मूर्खतावश वह समझता है कि इसमे लाभ होगा और अपनी मूर्खता से ऐसे धधो मे घाटा उठाता है ।

(३) यदि अनामिका तर्जनी से बडी हो तो कला तथा साहित्य से प्रेम होता है । महत्वाकाक्षा की कमी के कारण कोई सफल परिणाम नही निकलता । यदि तर्जनी के बराबर हो तो यश तथा धन-लिप्सा । यदि तर्जनी से छोटी हो तो महत्वाकाक्षा के आधिक्य के कारण अपनी योग्यता को बहुत बढी हुई समझता है ।

यदि अनामिका मध्यमा से बहुत बढी हुई हो तो ऐसा व्यक्ति ऐसा कारबार करता है जिसमे अत्यधिक लाभ हो या फिर अत्य-धिक घाटा लग जावे । यदि मध्यमा के बराबर हो तो जुआ तथा सट्टा द्वारा द्रव्य-उपार्जन की विशेष अभिलाषा रहती है । यदि मध्यमा की अपेक्षा बहुत छोटी हो तो दु खी स्वभाव के कारण कोई उन्नति नही कर सकता ।

यदि अनामिका कनिष्ठिका की बजाय बहुत अधिक लम्बी हो तो कला, साहित्य, संगीत आदि के क्षेत्र में ही महत्वाकांक्षा होगी और जातक को उसमें सफलता मिलेगी।

यदि अनामिका कनिष्ठिका के बराबर हो तो जातक अनेक विषयों में चतुर होता है और दूसरों को समझाकर अपना दृष्टिकोण उनके हृदय में खचित कर सकता है।

(४) यदि कनिष्ठिका तर्जनी के बराबर हो तो जातक कुशल राजनीतिज्ञ होता है। छल तथा प्रपंच से भी अपना पक्ष प्रबल करने में उसे कोई हिचकचाहट नहीं होती।

यदि कनिष्ठिका मध्यमा के बराबर हो तो विज्ञान-सम्बन्धी बहुत विशिष्ट योग्यता होती है।

यदि कनिष्ठिका अनामिका के बराबर हो तो बहु-विषयज्ञता तथा वाक्-चातुर्य का लक्षण है। ऐसा आदमी दूसरों को प्रभावित कर अपना कार्य करा सकता है। किन्तु यदि हाथ में अन्य चालाकी या बेईमानी के लक्षण हो तो धोखेबाजी का भी लक्षण है।

ऊपर तर्जनी तथा मध्यमा बराबर हो तो इसका फल तर्जनी के प्रसंग में भी दिया गया है और फिर मध्यमा के प्रसंग में भी। इसका कारण यह है कि (१) मध्यमा स्वाभाविक लम्बाई की हो और तर्जनी उसके बराबर हो तो पृथक् फल होगा तथा (२) तर्जनी स्वाभाविक लम्बाई की हो और मध्यमा उसके बराबर तो पृथक् फल। इसके अतिरिक्त जिस उंगली का जिस प्रसंग में प्रधानतया वर्णन किया जा रहा है, वह यदि लम्बी होने के साथ-साथ अन्यगुण तथा शुभ लक्षणों से युक्त है, उसके नीचे का ग्रह-क्षेत्र विस्तृत और उन्नत है तो शुभ लक्षण पूर्ण मात्रा में

घटित होंगे और यदि अन्य अशुभ लक्षण विशेष है (यथा निम्न ग्रह क्षेत्र आदि) तो अशुभ लक्षण पूर्ण घटित होंगे।

इस प्रकार सब लक्षणों का तारतम्य कर अन्तिम परिणाम पर पहुँचना चाहिये।

उंगलियों मे गाँठें

चारों उंगलियों में दो-दो गाँठें होती हैं। यदि ये ग्रंथियाँ न हो तो हम लोगो की उंगलियाँ सीधी रहें, मुड न सकें। इसलिए सभी हाथों की उंगलियों मे ग्रंथियाँ होती हैं। परन्तु जिन मनुष्यों की उंगलियों मे ये गाँठें बडी नही होतीं तथा हाथ मांसल होने के कारण दिखाई नही देतीं उनकी उंगलियाँ सीधी और चिकनी मालूम होती है, जैसे उनके हाथो मे गाँठें हो ही नही। इसके विपरीत कुछ लोगो के हाथ मे गाँठें इतनी बडी तथा निकली हुई होती हैं कि दूर से ही दिखाई देती हैं। नाखूनों की ओर से प्रारम्भ करने पर जो पहली गाँठ होती है उसे ऊपर की गाँठ तथा जो दूसरी होती है उसे नीचे की गाँठ कहते हैं।

(१) यदि उंगलियाँ बिल्कुल चिकनी हो अर्थात् दोनो गाँठो मे से एक भी दिखाई न दे और उंगलियो के अग्रभाग अत्यन्त नुकीले हो तो ऐसा जातक साहित्य और कला का प्रेमी तथा धार्मिक विचारो का होता है। वह कल्पना के मनोराज्य में विचरण करता है किन्तु कार्यक्षम बिल्कुल नही होता। उसके विचारो मे कार्यक्रम या तरतीब नही होती। ऐसे आदमी सासारिक दृष्टि से निकम्मे तथा अत्यन्त सुस्त होते हैं परन्तु इनमे दूसरो के मनोभावो को जानने की विशेष शक्ति होती है।

यदि ऐसे हाथो मे ऊपर की ग्रन्थि दिखाई दे तो कुछ-कुछ

कार्यक्षमता होती है। परन्तु काव्य या कला मे उतनी विशिष्टता नही होती जितनी कि ऊपर बताई गई है।

यदि उगलियो की दूसरी ग्रन्थि उन्नत हो तो उगलियो के नुकीले होने के कारण साहित्य और कला की ओर झुकाव तो होता है किन्तु साथ ही द्रव्य कमाने की ओर भी ख्याल होता है और इस विषय मे कुछ चतुरता आ जाने से सासारिक दृष्टि मे जातक सफल रहता है।

यदि उगलियाँ तो अत्यन्त नुकीली हो किन्तु दोनो गाँठे मोटी और निकली हुई हो तो दो प्रकार के विरुद्ध गुणो का एकत्र समन्वय होने से जातक विशेष उन्नति नही कर सकता।

(२) यदि उगलियाँ साधारणत नुकीली और चिकनी हो तो जातक के विचार और व्यवहार स्वतन्त्रता लिए होते है। वह अपना आदर्श स्वय कायम करता है और सासारिक बन्धनो की परवाह नही करता। उसकी मानसिक वृत्ति भी सौन्दर्य की ओर नही किन्तु वासनामय होती है।

यदि ऐसे हाथो मे पहली (ऊपर की) गाँठ बडी हो और दिखलाई दे तो संगीत, साहित्य किंवा अन्य कलाओ मे निपुणता के साथ-साथ जातक मे सासारिक सफलता की भावना भी दृढ होती है। प्राय सफल गायक, कलाकार एव रगमच पर अभिनय करने वाले लोगो की उगलियाँ इस तरह की होती है।

यदि ऊपर की गाँठ उन्नत न हो और केवल नीचे की गाँठ ही उन्नत हो तो जातक व्यावहारिक दृष्टि से अपनी कला का मूल्य आँकता है कि उसे आर्थिक लाभ कितना होगा।

यदि दोनो गाँठे उन्नत हो तो साहित्य, सगीत तथा कला से

मनुष्य अच्छा द्रव्य उत्पन्न करता है।

यह स्मरण रखना चाहिए कि उंगलियों का नुकीलापन या अत्यन्त नुकीलापन साहित्यिक, कलात्मक किंवा दार्शनिक प्रवृत्ति का द्योतक है और उंगलियों की गाँठे सासारिक कार्यक्षमता और व्यावहारिक कुशलता की द्योतक है। इस कारण विरुद्ध गुणों का सम्मिश्रण कम दिखाई देता है। नुकीले या अत्यन्त नुकीले हाथों में गाँठे होगी तो बहुत हल्की या कम निकली हुई दिखाई देगी।

(३) यदि उंगलियों का अग्र-भाग चतुष्कोणाकार का हो तो जातक काव्य, साहित्य, दर्शन आदि मे रुचि रखता हुआ भी व्यावहारिकता और सासारिक सफलता को हमेशा विचार मे रखता है। व्यवहारिक क्षेत्र मे भी ऐसे जातक की बुद्धि अच्छी चलती है। ऐसे लोग प्राय सफल होते है।

ऐसे जातक की उंगलियाँ चाहे चिकनी हो या गठीली, वह कुछ हद तक स्वतन्त्र प्रकृति का होता है और सच्चा भी होता है।

यदि ऐसी उंगलियों मे केवल ऊपर की गाँठ उन्नत हो तो तर्क-शक्ति अच्छी होती है और इस कारण यह गुण सफलता मे सहायक होता है। किन्तु यदि ऊपर की गाँठ उन्नत न हो और केवल नीचे की गाँठ उन्नत हो तो व्यावहारिक अनुशासन, कर्त्तव्य-पालन आदि की ओर विशेष झुकाव रहता है। यदि दोनो गाँठे उन्नत हो तो विज्ञान, कानून, बैंकिंग आदि व्यावहारिक शास्त्रों के क्षेत्रों मे विशेष सफलता प्राप्त होती है। काव्य या कला को जातक उतना महत्व नही देता। उंगलियों के अग्र-भाग जब चतुष्कोणाकार के होते है तो नीचे की गाँठे प्राय उन्नत होती है।

(४) यदि उंगलियों के अग्र-भाग फैले हुए हो तो जातक

खेल-कूद तथा अन्य ऐसे कार्यों का शौकीन होता है जिनमे बहुत से मनुष्यो के कार्य की जाँच, देख-भाल या अन्य प्रबन्ध का कार्य हो।

यदि ऐसी उगलियो मे ऊपर की ग्रन्थि विशेष उन्नत हो तो जातक आदर्शवादी नही होता। वह क्रियावादी होता है। वह प्रत्येक नवीन अनुसधान या आविष्कार का मूल्य उपयोगिता की दृष्टि से आकता है।

यदि केवल नीचे की गाँठे उन्नत हो तो उपर्युक्त गुण ही विशेष मात्रा मे समझने चाहिएँ। यदि दोनो गाँठे उन्नत हो तो ऐसा आदमी बहुत अधिक क्रियाशील होता है और जब तक काम करते-करते थक न जाये तब तक इसे सन्तोष नही होता।

७वां प्रकरण

हाथ का अँगूठा

अंगूठे का शुभ लक्षण

यद्यपि अंगूठा पांच उगलियो मे से एक है किन्तु उसका महत्व इतना अधिक है कि अनादिकाल से इसकी मुख्यता मानते चले आ रहे हैं। चारो उगलियो को बडी-छोटी होने पर भी उगलियाँ ही कहा जाता है किन्तु अंगूठे का नाम पाँचवी उगली न रख कर अलग नाम इसलिये रखा गया है कि यह इतना अधिक प्रधान है कि चारो उगलियाँ एक तरफ और अंगूठा एक तरफ रखा जाय तो भी अंगूठा विशेष महत्वशाली समझा जावेगा। 'सामुद्रतिलक' मे लिखा है कि अंगूठा सीधा, चिकना, ऊँचा, गोल, दाहिनी तरफ घूमा हुआ हो, इसके पर्व सघन (अर्थात् एक-दूसरे से अच्छी तरह मिले और मांसल हो) और बराबर हो तो जातक धनवान होता है। जिसके अंगूठे के पर्वों मे 'यव' के चिह्न स्पष्ट हो वह भाग्यवान होता है, जिसके अंगूठे की जड पर 'यव' हो वह विद्वान् और पुत्रवान होता है। जिसके अंगूठे के बीच मे 'यव' चिह्न हो वह धन, सुवर्ण, रत्न आदि प्राप्त करता है और भोगी होता है। यदि अंगुष्ठ के मूल मे चारो ओर घूमने वाली तीन 'यवो' की माला हो तो ऐसा व्यक्ति राजा या राजा का मन्त्री होता है। अनेक हाथी उसके पास रहते हैं। यदि तीन की अपेक्षा दो 'यव माला' हो तो भी व्यक्ति राजपूजित होता है अर्थात् उच्च पदवी प्राप्त

करता है। 'प्रयोग-पारिजात' के मतानुसार यदि अंगुष्ठ-मूल में एक भी यवमाला हो तो भी मनुष्य धनाढ्य होता है। यदि अंगूठे के नीचे काक-पद हो तो वृद्धावस्था में कष्ट पाता है। 'यव' का चिह्न दो रेखाओं से बनता है, एक रेखा ऊपर कुछ गोलाई लिये हुए, एक रेखा नीचे कुछ गोलाई लिये हुए। इन दोनों रेखाओं के बीच में जो भाग होता है वह एक 'जौ के दाने' की तरह लम्बा, दोनों सिरों पर पतला और बीच में मोटा होता है। 'यव' चिह्न को भारतीय शास्त्र में बहुत अधिक शुभ माना गया है—

"अमत्स्यस्य कुतो विद्या अयवस्य कुतो धनम्।"

(नारदीय संहिता)

अर्थात् जिसके हाथ में मत्स्य-चिह्न नहीं होगा वह पूर्ण विद्वान् कैसे हो सकता है? यदि 'यव' चिह्न न हो तो धन कैसे होगा।

'विवेक विलास' के अनुसार अंगुष्ठ के मूल में जितने यव-चिह्न हों उतने ही पुत्र होते हैं। अंगुष्ठ के बीच में 'यव' चिह्न हो तो विद्या, ख्याति और विभूति (ऐश्वर्य) प्राप्त होती है। यदि शुक्ल पक्ष में जन्म हो तो दाहिने हाथ के अंगूठे से विचार करना चाहिये। यदि कृष्ण पक्ष में जन्म हो तो बायें हाथ के अंगूठे से विचार करना उचित है। यदि एक भी 'यव' हो तो मनुष्य श्रीमान होता है।

स्त्रियों के अंगूठे

यदि स्त्रियों के हाथ में गोल, सीधा, गोल नाखून वाला मुलायम अंगूठा हो तो शुभ होता है। जिन स्त्रियों के अंगुष्ठ तथा उंगलियों में यव-चिह्न हो और यव की ऊपर तथा नीचे की रेखा बराबर हो तो ऐसी स्त्रियाँ बहुत धन-धान्य की स्वामिनी होती हैं और सुख भोगती हैं।

पाश्चात्य मत

अंगूठे का मस्तिष्क-शिरा-तंतुओं से सम्बन्ध

'जिप्सी' जाति में हाथ देखने की कुल-क्रमागत विद्या है। ये लोग भी हाथ देखने में अंगूठे को बहुत अधिक महत्व देते हैं। क्या चीनी, क्या अंग्रेज सभी ने अंगूठे को बहुत अधिक महत्व दिया है। अंगूठे के अन्दर कुछ शिराओं के अग्रभाग ऐसे हैं जिनका मस्तिष्क से विशेष सम्बन्ध है। लकवा—वायुजनित स्नायुरोग है। जिन लोगों को लकवे की बीमारी होती है उनके शरीर के एक भाग का स्नायुजाल हरकत करना बन्द कर देता है। कुछ प्रसिद्ध वैज्ञानिकों का आविष्कार है कि जिस व्यक्ति को लकवा होने वाला होता है, बरसों पहले उसके हाथ के अंगूठे की परीक्षा करके वे बता देते हैं कि इस व्यक्ति को लकवा होगा। बरसों बाद होने वाले लकवे रोग के चिह्न या लक्षण शरीर के किसी भाग में नहीं मिलते किन्तु अंगूठे में मिल जाते हैं। बरसों पहले अंगूठे से केवल रोग मालूम ही नहीं हो जाता है बल्कि आशंकित रोग रोका भी जा सकता है। अंगूठे का ऑपरेशन कर वहाँ की शिराओं को ठीक कर देने से फिर लकवा होने की आशंका नहीं रहती। इस उदाहरण से अच्छी तरह समझा जा सकता है कि अंगूठे का कितना अधिक महत्व है।

अंगूठे का महत्व

अंगूठे से आत्मबल और साहस भी प्रकट होता है। बच्चे अपराध व भय की अवस्था में प्राय अंगूठों को मुट्ठी में छिपा लेते हैं। जिनके अंगूठे, मुट्ठी के अन्दर रहें उनमें आत्मबल और आत्मविश्वास की कमी समझनी चाहिये। पैदा होने के बाद जो बच्चे अंगूठे को

उगलियो के नीचे दबाये रहते है वे प्राय कमजोर होते है। यदि कोई पागलखाने का निरीक्षण करे तो उसकी दृष्टि फौरन इस ओर जाएगी कि जो लोग जन्म से ही पागल, अर्ध-विक्षिप्त या भोले होते है उनके अँगूठे बहुत छोटे और कमजोर होते है। अँगूठा चैतन्य-शक्ति का एक प्रधान केन्द्र है। यदि कोई अधिक बीमार हो और अँगूठा ढीला होकर हथेली पर गिर पडे तो समझना चाहिये कि अन्तिम समय आ पहुँचा। यदि अँगूठे मे कुछ जान हो तो कुछ बचने की आशा रहती है।

मनुष्य के अँगूठे का महत्व इसलिये अधिक है कि वह सब प्राणियो मे विशेष उन्नत और बुद्धिमान है। इस कारण मनुष्य का अँगूठा लम्बा होता है। अँगूठा जितना ऊँचा और पुष्ट हो उतना ही अच्छा। चिम्पाजी का शरीर बहुत-कुछ मनुष्य के शरीर से मिलता है किन्तु उसका अँगूठा तर्जनी उगली की जड तक भी नही पहुँचता। इससे यह नतीजा निकलता है कि जितनी ही ऊची अँगूठे की जड होगी और अँगूठा जितना बडा होगा उतनी ही बुद्धि और शक्ति की प्रबलता होगी। इसके विपरीत यदि अँगूठा छोटा हो या हथेली मे बहुत नीचा हो तो मनुष्य मे आत्मशक्ति और बुद्धि दोनो कम मात्रा मे पाई जाएँगी। जिन व्यक्तियो के अँगूठे लम्बे और सुन्दर हो वे बुद्धिमान तथा सभ्य व्यवहार वाले होगे। ऐसे अँगूठे परिष्कृत मस्तिष्क वालो के होते है, किन्तु यदि अँगूठा आगे से मोटा, बेडौल, छोटा और हाथ के अधिक नीचे हो तो मनुष्य जानवर कि तरह उद्दड, असभ्य और मूर्ख होता है।

किसी मनुष्य के हाथ को अपने हाथ मे लेकर अँगूठे के आकार स्वरूप, नख आदि से जो नतीजे निकाले जा सकते है उनका वर्णन

आगे किया जावेगा। किन्तु किसी मनुष्य की हस्तपरीक्षा करने का अवसर प्राप्त न हो और किसी बड़े आदमी से, अपने कार्य के लिये मिलने जाना हो तो उसके हाथ के अँगूठे को दूर से ही देख-कर उस मनुष्य की प्रकृति और स्वभाव का आप कुछ-कुछ पता लगा सकते है। जिससे हमे कुछ कार्य लेना है, उसकी प्रकृति का कुछ पता लगा लेने से उसकी रुचि के अनुकूल बातचीत करके उससे आसानी से अपना कार्य निकाला जा सकता है—

१ यदि किसी मनुष्य के अगूठे का नखवाला पर्व बहुत लम्बा हो तो समझिये कि वह मनुष्य तानाशाही प्रकृति का है, वह सब पर अपना रोब और प्रभाव जमाना चाहता है। यदि ऐसे मनुष्य की खुशामद की जावे तो तुरन्त प्रसन्न हो जाता है और प्रार्थी के मनोनुकूल कार्य कर देता है।

२ (क) यदि नखवाला पर्व बहुत छोटा हो तो ऐसे व्यक्ति के विचार मे दृढता नही होती। ऐसे व्यक्ति पर जोर डाल कर काम कराया जा सकता है।

(ख) किन्तु यदि नखवाला पर्व छोटे होने के साथ-साथ चौड़ा भी हो तो ऐसा व्यक्ति जिद्दी होगा, उस पर अधिक जोर नही डालना चाहिए वरना वह चिढ जावेगा।

३ यदि नखवाला पर्व बहुत चौड़ा हो और आगे से गोल हो तो आदमी बहुत जिद्दी तथा गुस्सा करने वाला होता है। यदि अशिष्ट हो तो झगड़ा हो जाने पर मार-पीट करने के लिए भी तैयार हो जाता है।

४ यदि अँगूठा पीछे की ओर झुका है तो मनुष्य उदार होगा। यदि पीछे की ओर बहुत झुका हो तो बहुत अधिक उदार होगा।

अंगूठे के पर्व

अँगूठे मे दो ही पर्व होते है। प्रथम पर्व वह है जिसमे नाखून होता है। द्वितीय पर्व इसके नीचे वाला। तृतीय पर्व नही होता। उँगलियो की अपेक्षा इसमे यह भिन्नता है।

अँगूठे के प्रथम पर्व से आत्मबल, आत्म-शक्ति, इच्छा की दृढता आदि का विचार किया जाता है। दूसरे पर्व से तर्क-शक्ति विचार-शक्ति, ऊहा-पोह करना आदि।

अंगूठे की जड मे अत तक अगूठे की लम्बाई को नापना चाहिए। यदि इसे पाँच भागो मे विभाजित करे तो दो हिस्सा लम्बा प्रथम पर्व और तीन हिस्सा लम्बा द्वितीय पर्व होना चाहिए। यदि दोनो पर्वों की लम्बाई इस अनुपात से भिन्न हो तो कौनसा पर्व अपनी स्वाभाविक लम्बाई से बडा है कौनसा छोटा, यह निश्चय करना चाहिए।

प्रथम पर्व—यदि प्रथम पर्व विशेष दृढ और सामान्य से अधिक लम्बा हो तो ऐसा मनुष्य तर्क या विचार को काम मे नही लेता, केवल अपनी इच्छा या प्रवृत्ति के अनुसार काम करता है। यदि द्वितीय पर्व बहुत बड़ा हो और प्रथम पर्व बहुत छोटा तो ऐसा मनुष्य किसी बात पर विचार तो बहुत बारीकी और बुद्धिमत्ता से करेगा किन्तु आत्म-शक्ति या दृढता न होने के कारण अपने विचारो को कार्यान्वित नही कर सकेगा। इस कारण सफलता के लिए दोनो पर्व अच्छी लम्बाई के और पुष्ट होने चाहिए।

अँगूठे का प्रथम पर्व यदि बहुत छोटा और कमजोर हो तथा

शुक्र-क्षेत्र बहुत उन्नत हो तो मनुष्य कामवासना के वशीभूत हो जाता है, उसके मन मे संयम कम होता है। यदि स्त्री का हाथ इस प्रकार का हो तो वह शीघ्र ही परपुरुष के बहकाने मे आ सकती है। जिसके अगूठे का प्रथम पर्व बलिष्ठ होता है उसमे विचार की दृढता होती है, इस कारण कोई शीघ्र बहका नहीं सकता।

यदि पहला पर्व मोटा और भारी हो और नाखून चपटा हो तो ऐसे व्यक्ति को बहुत तेज गुस्सा आता है। वह गुस्से मे आपे से बाहर हो जाता है। अँगूठे का आगे का हिस्सा बिलकुल 'गदा' की भाँति हो तो जातक गुस्सा आने पर उचित-अनुचित का विचार कुछ नही करता। (देखिये चित्र नं० ११) अगुष्ठ की प्रथम और द्वितीय पर्व के बीच की सन्धि (गाँठ) यदि सख्त हो तो और भी क्रोध का लक्षण है। ऐसे व्यक्ति के लिए मारपीट तो मामूली बात है। क्रोध के आवेश मे खून भी कर सकता है। यदि प्रथम पर्व चपटा हो तो मनुष्य शान्त प्रकृति का होता है।

द्वितीय पर्व—अगूठे के द्वितीय पर्व भी भिन्न-भिन्न प्रकार के पाये जाते है। कुछ बीच में पतले होते है। ऐसे व्यक्ति नीति-कुशल होते है। उनके व्यवहार मे चतुरता विशेष होती है। यदि बीच मे वह अत्यन्त पतला हो तो स्नायु-शक्ति कमजोर हो जाती है और जातक विचार करते-करते घबरा जाता है।

यदि द्वितीय पर्व बहुत लम्बा हो तो ऐसा व्यक्ति प्रत्येक विषय पर लम्बी बात करता है, परन्तु किसी का विश्वास नही करता। यदि साधारण लम्बा हो तो ऐसे व्यक्ति मे तर्क-शक्ति अच्छी होती है, वह प्रत्येक बात के हरेक पहलू पर विचार करता है। यदि छोटा हो तो तर्क-शक्ति निर्बल होती है, यदि बहुत छोटा हो बुद्धि की

कमी प्रगट होती है। ऐसा आदमी किसी कार्य करने के पहले उस पर विचार करना भी नही चाहता।

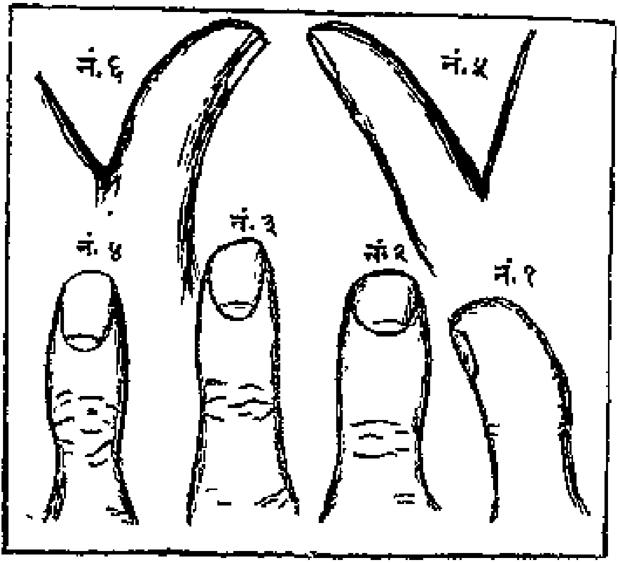

चित्र नं० ११

अंगूठा नं० १—गदा की आकार का अंगूठा।
२—द्वितीय पर्व बीच से मोटा है। अंगूठा भी छोटा है।
३—द्वितीय पर्व न मोटा न पतला।
४—द्वितीय पर्व बीच से पतला है।
५—पीछे अधिक नहीं मुड़ने वाला अंगूठा।
६—पीछे अधिक मुड़ने वाला, लचकदार अंगूठा।

अंगूठे और हथेली का जोड़

अंगूठा हथेली से किस प्रकार संयुक्त है यह भी देखना आवश्यक है। यदि अंगूठे और हथेली के बीच मे बहुत अन्तर हो अर्थात् अंगूठा

हथेली से दूर करने पर यदि समकोण बने तो भी अच्छा लक्षण नही और अँगूठे और हथेली के बीच मे केवल ३०°-३५° का कोण बने तो वह भी उत्तम नही। अँगूठे की परीक्षा करते समय जातक से कहिये कि वह अँगूठे को उँगलियो से दूर ले जावे और देखिए कि कितने डिगरी का कोण बनता है। यदि अँगूठे और हथेली के बीच मे समकोण या अधिक कोण बने तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त स्वतन्त्र स्वभाव का होगा और हर एक कार्य अपनी इच्छा के अनुकूल करेगा। ऐसे व्यक्ति मध्यम मार्ग का अनुसरण नही करते, अपनी मनमानी करते हैं। इन लोगो को दबाकर रखना कठिन है।

यदि अँगूठे की बनावट तो अच्छी हो किन्तु वह बिलकुल उगलियों के पास ही रहता हो (अर्थात् अँगूठे और हथेलियो के बीच मे कोई बहुत छोटा कोण बने तो ऐसे व्यक्तियो मे स्वतन्त्रता की बिलकुल कमी होती है। ये लोग सदैव दूसरे पर अवलम्बित रहने की चेष्टा करते हैं। उनके चित्त मे घबराहट तथा शका बनी रहती है। सदैव सावधान रहते है। इतनी हिम्मत नही होती कि किसी निर्णय पर स्वय पहुँच सके या अपने विचारो को कार्यान्वित करें। ऐसे लोगो के मन मे क्या है यह जानना बहुत कठिन होता है। वे खुले दिल से अपने विचार प्रकट नही करते।

लम्बा या छोटा अँगूठा

यदि हाथ के अन्य लक्षण तथा अँगूठे से यह प्रकट हो कि जातक मे क्रोध की मात्रा काफी है और उसमे अपने शत्रु से बदला लेने की भावना के साथ-साथ बुद्धि और साहस भी है तो यह देखना चाहिये

कि उसका अँगूठा लम्बा है या छोटा। यदि अँगूठा लम्बा होगा तो जातक अपने बुद्धि-बल से अपने शत्रु को हरावेगा। किन्तु यदि अँगूठा छोटा और मोटा हो तो वह चुपचाप ताक मे रहेगा और मौका पाते ही छुरा भोक देना, गोली मार देना, धक्का दे देना आदि हिंसक कार्य करेगा, इस कारण अँगूठे के विषय मे लम्बाई और बनावट के दृष्टिकोण से निम्नलिखित तीन बाते ध्यान मे रखनी चाहिए—

(१) यदि अँगूठा लम्बा और सुन्दर बना हो तो बुद्धि और साहस (इच्छा-शक्ति) दोनो गुण होते है।

(२) यदि अँगूठा छोटा और मोटा हो तो पाशविक प्रवृत्ति और हठ होता है।

(३) यदि अँगूठा छोटा और कमजोर हो तो न इच्छा-शक्ति दृढ होती है न साहस।

अँगूठे की बनावट के साथ-साथ यह भी ध्यान मे रखना चाहिए कि हाथ सख्त है या मुलायम। यदि अगूठे से दृढता और शक्ति मालूम होती हो और हाथ सख्त हो तो इन गुणो की पुष्टि होगी। ऐसा व्यक्ति अपने विचार मे दृढ होगा और अपनी योजनाओ को कार्यान्वित करेगा। किन्तु यदि अगूठे मे तो उपर्युक्त गुण हो परन्तु हथेली मुलायम हो तो ऐसा व्यक्ति कभी तो अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने मे तेजी से कदम उठावेगा और कभी एकदम शिथिल पड जावेगा। इच्छा-शक्ति की प्रबलता होने पर भी (अगूठे का लक्षण) हाथ की हथेली मुलायम होने के कारण स्वाभाविक आलस्य और शिथिलता उन्नति मे बाधक होती है।

अंगूठे की लचक

अंगूठे की लचक और मनुष्य के स्वभाव मे बहुत अधिक सम्बन्ध है। जिनका अगूठा लचकदार होता है और पीछे की ओर काफी मुड जाता है उनमे अन्य स्त्री या पुरुष से शीघ्र मैत्री स्थापित करने की क्षमता होती है। किन्तु जिनका अगूठा पीछे की ओर न मुडे बल्कि सीधा और सख्त हो, वे इस विषय मे विशेष आदर्शवादी होते हैं और सहसा अन्य लोगो से सम्पर्क स्थापित करने की इच्छा उनकी नही होती। (देखिये चित्र न० ११, अगूठा न० ५ व ६)

जिनके अगूठो मे लचक अधिक होती है उनके अगूठे पीछे की ओर अधिक मोडे जा सकते है। ऐसे व्यक्ति बहुत उदार और फिजूल खर्च करने वाले होते है। जिस प्रकार द्रव्य के विषय मे ये लापरवाह होते हैं उसी प्रकार अपने समय की भी उन्हें परवाह नही रहती। उनके विचार से भी बहुत भावुकता होती है। जैसी परिस्थिति में या जैसे लोगो के बीच ये रहते हैं उसी के अनुकूल अपने को बना लेते है। इनमे मिलन-सारी विशेष होती है। जीवन-धारा मे ये लोग बहते है। धारा के विरुद्ध कुशल नाविक की तरह परिश्रम कर अपने ध्येय की ओर ये लोग नही जा सकते।

(देखिए चित्र न० ११)

इसके विपरीत जिनके अगूठो मे लचक नही होती अर्थात् दोनो पर्वो के बीच की सधि जिनकी दृढ और सख्त होती है वे लोग धन-सचय करने की चेष्टा करते हैं। समय को व्यर्थ नही गँवाते। व्यर्थ के विचारो मे नही उलझते। व्यवहार-कुशलता के साथ जिस बात को पकडते है उसको पूर्ण करने की चेष्टा करते है और कुशल होते हैं।

संक्षेप में यह समझना चाहिये कि लचक और पीछे की ओर झुकाव होने से कल्पना, भावुकता, उदारता आदि गुण तथा फिजूल-खर्ची, विचारों की अधिकता के कारण उन्हें कार्यान्वित न कर सकना आदि अवगुण होते हैं। यदि लचक न हो और जोड़ दृढ़ हो तो सांसारिक कार्यक्षमता, परिश्रम, मितव्ययता आदि गुण होते हैं परन्तु कला और सौन्दर्य का आकर्षण, विचारों का विस्तार, प्रेम-प्रदर्शन आदि गुण नहीं होते।

इन सब गुण और अवगुणों का हाथ के अन्य लक्षणों से सामञ्जस्य कर अन्तिम निर्णय पर पहुँचना चाहिये।

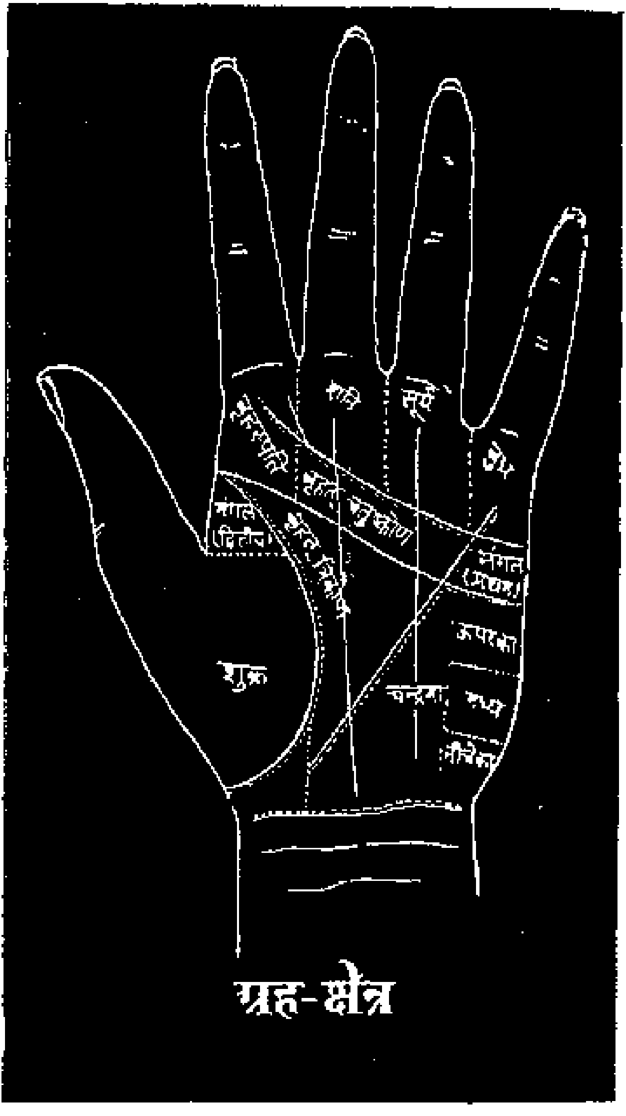

चित्र सं० १२

८वाँ प्रकरण

ग्रह-क्षेत्र

हाथ के मोटे तौर पर दो हिस्से होते है—एक हथेली और दूसरा अंगूठा और उंगलियाँ। हथेली के अध्ययन की सहूलियत के लिये दस भाग किये जाते है। तर्जनी उंगली के नीचे के स्थान को बृहस्पति का क्षेत्र कहते है। मध्यमा उंगली के नीचे के, हथेली के भाग को शनि-क्षेत्र कहते है। अनामिका उंगली के नीचे जो हथेली का हिस्सा है उसे सूर्य-क्षेत्र कहते है और कनिष्ठिका उंगली के नीचे के भाग को बुध-क्षेत्र। ये चारो क्षेत्र चारो उंगलियो के नीचे (अर्थात् उंगली जहाँ से प्रारम्भ होती है) हथेली के ऊपर होते हैं। इसी प्रकार अंगूठे के नीचे, हथेली पर चारो ओर जीवन-रेखा से घिरा हुआ जो भाग है उसे शुक्र-क्षेत्र कहते है। यदि आप अपने दाहिने हाथ को देखे तो एक ओर अंगूठे के नीचे उठा हुआ हिस्सा शुक्र-क्षेत्र होगा। यह तो दाहिने हाथ के दाहिने ओर हुआ। बायी ओर जो हथेली का ऊँचा उठा हुआ काफी लम्बा हिस्सा है इसे चन्द्र-क्षेत्र कहते हैं। (देखिए चित्र न० १२) चन्द्र-क्षेत्र काफी दूर तक फैला हुआ है। मणिबन्ध की रेखा से प्रारम्भ होकर शीर्ष-रेखा तक यह (दाहिने हाथ का हथेली का बायाँ भाग और बाये हाथ का हथेली का दाहिना भाग) जाता है। इस पर ऊपर या नीचे या मध्य मे चिन्ह विशेष होने से उनका फलादेश अलग-अलग होता है। इस कारण चित्र मे इसे तीन हिस्सो मे —(१) ऊपर

का भाग (२) मध्य भाग (३) नीचे का भाग—इस प्रकार बाँट कर दिखाया गया है। वास्तव मे यह सारा चन्द्र-क्षेत्र ही है।

हृदय-रेखा के नीचे और शीर्ष-रेखा के ऊपर हथेली के किनारे का जो ऊँचा उठा हुआ भाग है इसे मगल का प्रथम क्षेत्र कहते हैं। इसी प्रकार शुक्र-क्षेत्र के ऊपर, जहाँ से जीवन-रेखा प्रारम्भ होती है और बृहस्पति-क्षेत्र के नीचे के भाग को मगल का द्वितीय क्षेत्र कहते हैं।

इस प्रकार सूर्य, चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि इन छ ग्रहो के छ ग्रह-क्षेत्र और मगल के दो क्षेत्र—इस प्रकार आठ क्षेत्रो मे हथेली के चारो ओर का भाग बाँटा गया है। इन ग्रह-क्षेत्रो के अतिरिक्त जो हथेली का मध्य भाग कुछ नीचा धसा हुआ होता है उसे करतल-मध्य कहते है। उसको भी अध्ययन की सुविधा के लिए दो भागो मे बाँट दिया गया है—एक शीर्ष-रेखा के ऊपर करतल-मध्य भाग, दूसरा शीर्ष-रेखा के नीचे। इस प्रकार हथेली के दस भाग हुए।

इस प्रकरण मे केवल आठो ग्रह-क्षेत्रो का वर्णन किया जावेगा। यदि आप ध्यान से दस-बीस हाथ देखेंगे तो शीघ्र ही पता चल जावेगा कि हथेली के मध्य भाग की अपेक्षा ये हिस्से कुछ ऊँचे उठे हुए रहते है। चारो उगलियो के नीचे जो ग्रह-क्षेत्र है उनको ध्यान से देखने पर आप की दृष्टि मे यह बात आवेगी कि प्रत्येक ग्रह-क्षेत्र के ऊपर एक उठान है। इस उठे हुए स्थान के सर्वोच्च शिखर के चारो ओर ढलाव है। यह शिखर मानो पर्वत की चोटी है

जिसके चारो ओर क्रमश नीचे उतरता हुआ मैदान है। इस उठान और 'शिखर' के कारण बहुत से हस्त-परीक्षको ने इस स्थान को बृहस्पति पर्वत, शनि पर्वत, सूर्य पर्वत, बुध पर्वत, शुक्र पर्वत, मगल पर्वत, चन्द्र पर्वत भी लिखा है। अग्रेजी मे इन स्थानो को 'माउण्ट' कहते है।

अपने स्थान से सरके हुए ग्रह-क्षेत्र के शिखर

कभी-कभी ग्रह-क्षेत्र की चोटी ठीक मध्य भाग मे नही होती, बल्कि कुछ दाहिने या बाये सरककर होती है। उदाहरण के लिये गुरु-क्षेत्र की चोटी या शिखर कुछ सरका हुआ, शनि-क्षेत्र की ओर हो सकता है। इसी प्रकार शनि-क्षेत्र का उच्च-शिखर या तो अपने स्वाभाविक स्थान—क्षेत्र के मध्य मे हो या गुरु-क्षेत्र की ओर सरका हुआ या सूर्य-क्षेत्र की ओर सरका हुआ हो सकता है। इसी प्रकार सूर्य-क्षेत्र का शिखर (१) क्षेत्र-मध्य मे (२) शनि-क्षेत्र की ओर सरका हुआ या (३) बुध-क्षेत्र की ओर सरका हुआ हो सकता है।

वास्तव मे कभी-कभी ग्रह-क्षेत्र का शिखर इतना दाहिनी या बायी ओर सरका होता है कि यह समझ मे नही आता कि यह किस ग्रह-क्षेत्र का शिखर है। उदाहरण के लिये कितने ही हाथो मे उगलियो के ठीक नीचे—ग्रह-क्षेत्र पर उठा हुआ 'शिखर' या 'गुम्बद'—ऊँचा भाग नही होता परन्तु दो उगलियो के बीच के भाग के नीचे होता है। यदि अनामिका और कनिष्ठिका के बीच के भाग के नीचे हुआ तो यह समझने मे कठिनता होती है कि यह सूर्य-क्षेत्र की सरकी हुई चोटी है या बुध-क्षेत्र की।

ऐसी स्थिति मे निश्चय करने का तरीका यह है कि Magnifying Glass से यह देखना चाहिए कि प्रत्येक ग्रह-क्षेत्र की 'चोटी'

या 'शिखर' कहाँ है। हथेली की चमड़े मे जो बाल से पतली सूक्ष्म-धारियाँ होती है वे प्रत्येक ग्रह-क्षेत्र के शिखर पर आकर मिलती है (देखिये चित्र न० १२)। बस यह स्थान आपके ग्रह-क्षेत्र या ग्रह-स्थान

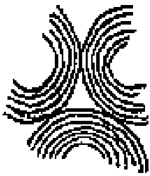

चित्र नं० १२

या ग्रह-पर्वत का शिखर है। चाहे आप दसो हजार हाथो की परीक्षा कर ले, चारो उगलियो के नीचे का जो हथेली का भाग है उस पर ऐसे चार 'स्थान' ही आपको मिलेंगे जहाँ ग्रह-क्षेत्रो पर फैली हुई सूक्ष्म धारियाँ मिलती हो। अब आप शीशे की सहायता से या ध्यान से देखने पर चारो 'शिखरो' का पता लगायेगे तो यह निश्चय करना कठिन न होगा कि प्रथम बृहस्पति-क्षेत्र का शिखर है, द्वितीय शनि-क्षेत्र का, तृतीय सूर्य-क्षेत्र का, चतुर्थ बुध-क्षेत्र का।

बहुत से हाथो मे ग्रह-क्षेत्र ऊँचे उठे हुए नही होते। सारा ग्रह-क्षेत्र का भाग चपटा समतल होता है। ऐसी स्थिति मे जब उठान—कोई ऊँचा भाग नजर ही नही आता तो ग्रह-क्षेत्र की 'चोटी' किसे मुकर्रिर की जावे यह सवाल पैदा होता है। वास्तव मे ऊपर जो चमड़े की सूक्ष्म धारियो के सम्मिलन का स्थान है वही ग्रह-क्षेत्र का शिखर है। चाहे यह भाग ऊँचा हो या नीचा, वही स्थान 'शिखर' कहलावेगा। प्राय ग्रह-क्षेत्रो का यह मध्य भाग ऊँचा होता है इसी कारण इसे शिखर, सर्वोच्च शिखर, 'चोटी' कहते हैं। किसी भी ग्रह-क्षेत्र का उच्च होना यह प्रकट करता है कि उस ग्रह का प्रभाव उस मनुष्य पर अधिक है और अक्सर एक या दो या अधिक ग्रह-क्षेत्र उठे हुए भी पाये जाते हैं। बहुत से हाथो मे तो इतने उठे

हुए होते हैं कि आप देखते ही कह देंगे कि इस ग्रह-क्षेत्र का शिखर यह बिन्दु है। किन्तु जहाँ स्पष्ट दिखाई न दें वहाँ काली स्याही से छाप लेकर या शीशे की सहायता से यह निश्चय करना चाहिये कि कौनसे ग्रह-क्षेत्र का शिखर अपने स्वाभाविक स्थान पर है और कौनसा सरका हुआ। जब कोई ग्रह-क्षेत्र सरका हुआ होता है तो जिस ओर के ग्रह-क्षेत्र की ओर सरका होता है उसका भी कुछ प्रभाव उसमें आ जाता है। यथा—यदि सूर्य-क्षेत्र का 'शिखर' अपने ग्रह-क्षेत्र के ठीक मध्य मे न हो और बुध-क्षेत्र की ओर कुछ सरका हो तो बुध का भी कुछ-कुछ प्रभाव सूर्य मे आ जावेगा।

ऊपर बताया जा चुका है कि किन्ही हाथो मे ग्रह-क्षेत्र उठे हुए होते हैं किन्ही में नही, किन्तु यह नही समझना चाहिये कि परिश्रम करने से, कसरत या हाथो से काम करने से ग्रह-क्षेत्र दब गये। हाथों को अधिक काम मे लेने से वे मुलायम नही रहते। मांस-पेशियाँ सख्त हो जाती हैं, जिल्द या चमड़ा सख्त या खुरदरा हो जाता है परन्तु ग्रह-क्षेत्रो के उठान या ऊँचाई मे अन्तर नही आता।

हस्त-परीक्षा में ग्रह-क्षेत्रो का जो इतना महत्व है इसका कारण यह है कि जो ग्रह-क्षेत्र अधिक उठा हुआ या शुभ रेखा या चिन्हयुक्त हो उस ग्रह का प्रभाव उस मनुष्य पर विशेष होगा और एक बार यह निश्चय हो जाने पर कि इस मनुष्य पर इस ग्रह का प्रभाव अधिक है अन्य लक्षणो से यह तारतम्य करना सरल हो जाता है कि परिणाम में फल क्या होगा। उदाहरण के लिये शनि का विशेष स्वभाव है परिश्रम करना, चिंतन करना, अविश्वास करना, दूरदर्शी होना, आध्यात्मिकता या वैराग्य की

ओर प्रवृत्ति, दु:ख या ग्लानि का भाव, अन्तर्मुखी मनोवृत्ति आदि।

यदि किसी मनुष्य के ग्रह-क्षेत्रों को देखने से यह मालूम पड़े कि शनि का प्रभाव उस पर विशेष है और शीर्ष-रेखा भी चन्द्र-क्षेत्र के नीचे के भाग तक लम्बी और ढलावदार गई हो तथा अन्य लक्षण भी आत्महत्या की ओर प्रवृत्ति करने वाले हो तो ऐसा मनुष्य शीघ्र ही आत्महत्या की ओर प्रवृत्त हो जावेगा, किन्तु यदि मनुष्य का शुक्र-क्षेत्र, गुरु-क्षेत्र आदि उन्नत हो और बृहस्पति या शुक्र का प्रभाव मनुष्य पर विशेष हो तो जीवन मे मामूली कठिनताएँ या मुसीबते भी मनुष्य को गमगीन या दु:खी नही बनावेगी। चन्द्र-क्षेत्र के निचले भाग की ओर जाने वाली लम्बी ढलावदार शीर्ष-रेखा कल्पना को अत्यधिक बढावेगी पर दु:ख की ओर मनुष्य को नही ले जावेगी।

इसी प्रकार आगे चलकर जीवन-रेखा के सिलसिले मे बताया गया है कि जिन पर बृहस्पति का प्रभाव अधिक होता है वे खान-पान मे असयमी होते हैं; खासकर यदि उँगलियो के तृतीय पर्व बहुत फूले हुए हो तो वे बहुत खाते-पीते हैं। इस कारण उनको Apoplexy आदि रोग अधिक होने की सभावना होती है। शनि का प्रभाव विशेष हो तो वातरोग, गठिया, पैरो की या कान की बीमारी, बहरापन आदि अधिक होता है।

इस कारण भाग्य-विचार तथा रोग-विचार अच्छी प्रकार करने के लिए किस ग्रह का मनुष्य पर विशेष प्रभाव है उसकी प्रकृति—शारीरिक और मानसिक—कैसी है यह परिज्ञान परमावश्यक है। यदि किसी हाथ को देखने से यह मालूम पड़े कि अमुक ग्रह-क्षेत्र

सबकी अपेक्षा अधिक उन्नत है और उस ग्रह-क्षेत्र पर एक खड़ी रेखा भी हो तो आप निश्चय कह सकते है कि उस ग्रह का मनुष्य पर अधिक प्रभाव है। किन्तु किसी ग्रह-क्षेत्र को बलवान् कहने के पूर्व यह भी देख लेना चाहिये कि उसका रग विवर्ण तो नही है। इसी प्रकार यदि वहाँ का 'मास' बिलकुल ढीला-पोला हो तो उस ग्रह-क्षेत्र को बलवान् नही कहना चाहिए। ग्रह-क्षेत्र पूर्ण बलवान तभी होता है जब वह उन्नत, विस्तृत और सुन्दर हो और उसमे उपर्युक्त अवगुण न हो। साथ ही जिन ग्रह-क्षेत्रो के ऊपर उँगलियाँ है, उन ग्रह-क्षेत्रो का विचार करते समय यह भी ध्यान मे रखना चाहिये कि उस ग्रह-क्षेत्र के ऊपर वाली उँगली कैसी है। उदाहरण के लिये यदि बृहस्पति-क्षेत्र के ऊपर वाली उँगली लम्बी, (अपनी स्वाभाविक लम्बाई की—जैसा उँगलियो के प्रकरण मे बतलाया गया है।) पुष्ट और अपने उचित स्थान से प्रारम्भ हो तो बृहस्पति-क्षेत्र को पूर्ण सुन्दर कहेगे। अन्यथा यदि बृहस्पति-क्षेत्र सुन्दर, उन्नत, विस्तृत होते हुए भी तर्जनी उँगली जैसी चाहिए बलिष्ठ न हो तो बृहस्पति-क्षेत्र अपना पूर्ण शुभ फल नही करेगा। ऐसा ही अन्य ग्रह-क्षेत्रो (बुध, सूर्य, शनि, शुक्र) के सम्बन्ध मे समझना चाहिए। मगल या चन्द्र-क्षेत्र के ऊपर तो उँगली होती ही नही।

गुरु या बृहस्पति-क्षेत्र—बृहस्पति को ही गुरु कहते है। जिस व्यक्ति के हाथ मे बृहस्पति-क्षेत्र उच्च हो उसमे महत्त्वाकाक्षा, अभिमान, उत्साह और हुकूमत करने की इच्छा अधिक मात्रा मे होती है। यदि किसी व्यक्ति के हाथ मे गुरु-क्षेत्र बहुत चपटा हो तो उसमे धार्मिक विश्वास, माता-पिता या गुरु-जनो मे श्रद्धा नही होती। उचित मात्रा मे उन्नत होने से धार्मिक विश्वास, प्रकृति-प्रेम, कुछ

खुशामद प्रियता, बाहरी तडक-भडक या दिखावे की भावना होती है। यदि यह क्षेत्र अधिक उन्नत हो तो हृदय में अहंकार बहुत अधिक होता है। ऐसा व्यक्ति झूठी शान दिखाने के लिए अपव्यय भी बहुत करता है। दूसरो को दबाने मे क्रूरता का उपयोग या अहं-भाव के कारण ईर्ष्या-द्वेष, स्वार्थपरता आदि अवगुण भी होते हैं। यदि गुरु-क्षेत्र अति उन्नत हो और उँगलियो के अग्र भाग (१) नुकीले हों तो अन्धविश्वास विशेष होता है, (२) चतुष्कोणाकृति हो तो क्रूरता विशेष होती है। यदि उँगलियाँ लम्बी हो और जोड (उँगलियो की गाँठे) निकली हुई न हो और गुरु-क्षेत्र अति उन्नत हो तो ऐसे व्यक्ति बहुत आरामपसन्द, विलासी और खर्चीले होते हैं।

यदि मनुष्य पर बृहस्पति का प्रभाव अधिक हो (जो ग्रह-क्षेत्र की उन्नति और तर्जनी की बलिष्ठता से साबित होगा) तो यह देखना चाहिए कि तर्जनी उँगली का कौनसा पर्व लम्बा है। यदि प्रथम पर्व बडा हो तो ऐसा व्यक्ति राजनीतिक, धार्मिक या बौद्धिक (पठन-पाठन, ग्रन्थ-लेखन) क्षेत्र मे सफल होगा। यदि द्वितीय पर्व बड़ा और लम्बा हो तो व्यापारिक क्षेत्र मे सफलता होगी। खूब धन कमावेगा। यदि तृतीय पर्व बडा और पुष्ट हो तो खाने-पीने का शौकीन व विलासी होगा। ऐसे व्यक्ति को अधिक खाने से Apoplexy आदि रोग भी विशेष होते हैं।

शनि-क्षेत्र—यह मध्यमा उँगली के नीचे होता है। इसके स्वाभाविक गुण है एकान्तप्रियता, शान्ति, बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता, परिश्रमशीलता किसी वस्तु का गभीरतापूर्वक अध्ययन। धार्मिक सगीत या दु.खान्त, गम्भीर स्वर वाले सगीत की इच्छा आदि।

यदि किसी हाथ मे शनि-क्षेत्र बिलकुल गुणरहित हो (अर्थात् न ग्रह-क्षेत्र गुणयुक्त हो, न उस पर कोई रेखा हो और न मध्यमा उंगली ही अच्छी, बलिष्ठ और सुन्दर हो) तो उस मनुष्य के जीवन मे कोई भी महत्त्वयुक्त बात नही होती। यदि साधारण उन्नत हो तो मनुष्य विचारशील होता है। किसी खतरे के काम मे नही जाता। ऐसे लोग प्राय ऐसा काम करते हैं जिसमे परिश्रम अधिक हो पर निश्चित कमाई हो, रुपये मे घाटा न लगे। प्राय ऐसे व्यक्तियो की लम्बी उगलियाँ हो तो प्रथम तथा द्वितीय पर्व के बीच की गाठ निकली हुई, गठीली होती है। यदि शनि-क्षेत्र बहुत अधिक उन्नत हो तो मनुष्य पर शनि का प्रभाव अधिक होने से दुखी, विशेष चिन्तायुक्त, सदैव मृत्यु की बाबत सोचता रहा है। उसमे अविश्वास की मात्रा अधिक होती है। अन्य अशुभ लक्षण होने से आत्महत्या की प्रवृत्ति अधिक होती है।

प्राय हाथो मे शनि-क्षेत्र अति उन्नत दिखाई नही देता। किन्तु यदि मध्यमा उगली बहुत अधिक बडी हो (साधारणत. तर्जनी या अनामिका से आधा पर्व लम्बी होती है, यदि इससे भी अधिक लम्बी हो) तो शनि के गुण उस मनुष्य मे विशेष होते है। यदि मध्यमा विशेष बडी और बलिष्ठ हो और अन्य उगलियाँ मध्यमा उँगली की ओर झुकी हो तो भी शनि-क्षेत्र को बलवान समझना चाहिए।

सभी ग्रहो के प्रभाव के सम्बन्ध मे यह कहा जा सकता है कि थोडी मात्रा मे जो गुण होते हैं वही अधिक मात्रा मे अवगुण हो जाते हैं। शनि-क्षेत्र थोडा उन्नत हो तो विचारशीलता, मितव्ययता, दूरदर्शिता आदि गुण होते है। अधिक मात्रा में उन्नत होने से मनुष्य

कजूस और लोभी हो जाता है। दूसरो के साथ रहना पसन्द नही करता, विवाह मे रुचि नही होती, किसी नये कार्य मे उत्साह नही होता। यदि हाथ मे अन्य अशुभ लक्षण हो तो ऐसे व्यक्ति पाप या जुर्म करने वाले या अन्य दोषयुक्त होते है। यदि उँगलियो के प्रथम पर्व लम्बे हो तो ऐसे व्यक्ति गम्भीर शास्त्र-अध्ययन करने वाले, गुप्त विद्याओ के प्रेमी होते है। द्वितीय पर्व लम्बा हो तो जमीन, रसायन, लोहा या खनिज पदार्थो का व्यापार करते है। तृतीय पर्व लम्बा हो तो दुनिया की चालाकी या नीच वृत्ति अधिक होगी।

शनि-क्षेत्र यदि बिगडा हो तो स्वास्थ्य की दृष्टि से दांत या कान की बीमारी, वातरोग, गठिया, नसो का फूल जाना या सख्त हो जाना, हड्डी टूटना, दुर्घटना, दम घुटना या लम्बे समय तक जारी रहने वाली बीमारी होती है।

सूर्य-क्षेत्र—यह अनामिका उगली के नीचे होता है। यह उन्नत होने से मनुष्य मे उत्साह और सौन्दर्यप्रियता होती है। चाहे मनुष्य कलाकार या सगीतज्ञ न हो किन्तु काव्य-कला और सगीत मे उसकी रुचि अवश्य रहती है। ये इस ग्रह-क्षेत्र के साधारण गुण है। अब निम्न, साधारण, उच्च या अति उच्च इन तीनो लक्षणो के अलग-अलग फल बताये जाते है—

यदि यह क्षेत्र बिलकुल धँसा हुआ हो तो उत्साह-शक्ति कम होती है। कला, काव्य आदि की ओर मन बिलकुल नही जाता। न अध्ययन की ओर रुचि होती है। तमाशा देखना, खाना-पीना—बस यही जीवन का ध्येय होता है। बुद्धि प्रखर नही होती।

यदि साधारण उच्च हो तो जो गुण प्रारम्भ मे बताये गये है

नही होते हैं। कला, काव्य, सौन्दर्यप्रियता आदि की ओर प्रवृत्ति रहते हुए भी सृजन-शक्ति नही होती।

यदि अच्छी प्रकार उच्च हो तो यश, मान, प्रतिष्ठा धन-सग्रह आदि मे सफलता होती है। सौन्दर्यप्रियता विशेष होती है, विवाह की ओर रुचि होते हुए भी या विवाह कर लेने पर भी इन्हें पूर्ण वैवाहिक सुख प्राप्त नही होता, क्योकि इनका आदर्श बहुत ऊँचा होता है। ये लोग आभूषण-प्रेमी होते हैं। धार्मिकता की ओर भी इनकी रुचि होती है। यदि उगलियो का प्रथम पर्व लम्बा हो तो काव्य या साहित्यकर्ता या कलाकार होते हैं।

यदि बहुत अधिक उच्च हो तो 'अति' मात्रा मे गुण भी अवगुण हो जाते हैं। 'अह' भाव या अभिमान बहुत बढ जाता है। इनमे ईर्ष्या, खुशामद प्रियता आदि दुर्गुण होते है। यदि साथ ही अँगूठे का प्रथम पर्व अधिक लम्बा और द्वितीय पर्व छोटा हो, उँगलियाँ टेढी हो तो ये दुर्गुण विशेष मात्रा में होते हैं।

स्वास्थ्य की दृष्टि से नेत्र-विकार, कम दिखाई देना, हृदय-रोग आदि का सूर्य-क्षेत्र से विशेष सम्बन्ध है। यदि शीर्ष-रेखा पर सूर्य-क्षेत्र के नीचे बिन्दु-चिह्न हो तो अन्धापन, यदि हृदय-रेखा द्वीपयुक्त या अन्य दोषयुक्त हो तो हृदय-रोग होता है। यह सब आगे विस्तारपूर्वक बताया गया है—

बुध-क्षेत्र—यह कनिष्ठिका उगली के नीचे होता है। इसमे बुध-ग्रह के सब गुण होते हैं यथा, किसी एक स्थान या कार्य से मन उकता जाना और दूसरे नवीन स्थानों पर जाना, यात्रा, या नये लोगों से सम्पर्क स्थापित करना, शीघ्र विचार कर लेने की या बोलने की शक्ति, हाजिर-जवाबी, मजाक आदि। यदि हाथ में

अन्य शुभ लक्षण हो तो ये सब गुण शुभ फल देने वाले होते है। यदि अन्य अशुभ लक्षण हो और बुध-क्षेत्र दोषयुक्त हो तो चालाकी, धोखा देना, जालसाजी आदि द्वारा मनुष्य अपनी बुद्धि का दुरुपयोग करता है।

यदि बुध-क्षेत्र नीचा हो तो हिसाब-किताब, वैज्ञानिक कार्य या किसी ऐसे व्यापारिक कार्य मे भी मनुष्य की तबियत नही लगती जिसमे हिसाब-किताब की विशेष आवश्यकता हो।

यदि साधारण उच्च हो तो ऐसा मनुष्य सुन्दर वक्ता, व्यापारिक चतुरतायुक्त, बुद्धिमान, शीघ्र कार्य करने वाला, यात्रा-प्रेमी होता है। उसमे नवीन आविष्कारक बुद्धि भी विशेष होती है। यदि उगलियों के अग्रभाग (१) नुकीले हो तो बहुत सुन्दर वक्तृत्व-शक्ति होती है, (२) चतुष्कोणाकृति हों तो तर्क-शक्ति बलवान होती है। (३) यदि आगे से फैली हुई हो तो उसकी जिरह या दलील बहुत प्रभावयुक्त होती है।

जिनका बुध-क्षेत्र उच्च होता है वे हास्यप्रिय, गोष्ठी पसन्द करने वाले होते है। यदि बुध-क्षेत्र चिकना और रेखा-रहित हो तो ऐसे व्यक्ति जिस काम को प्रारम्भ करते हैं उसे अन्त तक पूरा करते है। यदि बुध-क्षेत्र अति उच्च हो तो मनुष्य को जितना ज्ञान होता है उससे कही अधिक विद्वान् होने का ढोंग करता है। ऐसे लोगों मे धोखा देना या फरेब की प्रवृत्ति भी होती है। कनिष्ठिका उगली टेढी होने से बेईमानी की पुष्टि होती है।

यदि बुध-क्षेत्र पर तीन खड़ी रेखा हो और क्षेत्र साधारण उन्नत हो तो मनुष्य कुशल डॉक्टर या वैद्य हो सकता है। यदि कनिष्ठिका उगली का प्रथम पर्व लम्बा और नाखून छोटे हों तो

ऐसा व्यक्ति सफल वकील हो सकता है। यदि यह उंगली नुकीली भी हो तो ऐसा व्यक्ति सुन्दर वक्ता होता है। यदि द्वितीय पर्व लम्बा हो तो कुशल वैज्ञानिक या डॉक्टर हो सकता है। यदि तृतीय पर्व लम्बा हो तो व्यापार द्वारा विशेष धन कमा सकता है।

बुध-क्षेत्र का स्नायु-विकार, पित्तज रोग, उदर-विकार, यकृद रोग, मन्दाग्नि आदि से विशेष सम्बन्ध है।

मंगल-क्षेत्र—मंगल के दो क्षेत्र होते हैं। एक चन्द्र-क्षेत्र और बुध-क्षेत्र के बीच में और दूसरा बृहस्पति-क्षेत्र के नीचे जहाँ से जीवन-रेखा प्रारम्भ होती है। यह दूसरा क्षेत्र जीवन-रेखा के अन्दर शुक्र-क्षेत्र की समाप्ति पर होता है।

मंगल का साधारण गुण है साहस, बल, लड़ाई की शक्ति, प्रवृत्ति आदि। ये सब गुण मंगल के प्रथम क्षेत्र से विचार करने चाहियें। जिनका यह क्षेत्र उच्च हो वे साहसी होंगे, लड़ाई करेंगे और दबेंगे नहीं। यह प्राय अनुभव-सिद्ध है कि बल-प्रयोग व साहस आदि का संसार में सदुपयोग भी होता है, दुरुपयोग भी। यदि हाथ में अन्य लक्षण अच्छे हो तो ऐसा व्यक्ति फौज में या जहाँ साहस की आवश्यकता हो ऐसे उच्च पद में सफल हो सकता है। इसके विपरीत यदि अन्य अशुभ लक्षण हो तो ऐसा व्यक्ति डाकू, लूट-मार करने वाला भी हो सकता है। यदि यह दबा हुआ हो तो मनुष्य कायर होता है। बहुत दबा हुआ होना जिस प्रकार दुर्गुण है उस प्रकार अत्यन्त ऊँचा होना भी दोषयुक्त है। वैसा होने से दुस्साहस, अत्याचार करने की प्रवृत्ति, क्रूरता आदि होती है।

'साहस' का यदि विश्लेषण किया जावे तो दो प्रकार का होता है—(१) जिसके होने से मनुष्य दूसरे पर आक्रमण करता है, (२)

जिसके कारण यदि कोई दूसरा आक्रमण करे तो मनुष्य बलपूर्वक अपनी रक्षा करता है। प्रथम प्रकार का साहस मगल के प्रथम क्षेत्र से देखना चाहिये। दूसरे प्रकार का साहस अर्थात् अपनी रक्षा करने की क्षमता, धैर्य, आत्म-सयम आदि गुण मगल के द्वितीय क्षेत्र से देखने चाहिये।

मंगल-क्षेत्र उच्च होने से खून मे जोश जल्दी आता है। यदि अन्य रोग-चिह्न हो तो रक्तचाप-वृद्धि (blood pressure), मूर्च्छा (apoplexy), चर्म-विकार, रक्त-विकार आदि रोग होते है। पेट मे शोथ भी होता है।

चन्द्र-क्षेत्र—दाहिने हाथ मे (नीचे की ओर) हथेली का बायाँ किनारा चन्द्र-क्षेत्र होता है। बायें हाथ मे यह भाग हथेली की दाहिनी ओर वाला नीचे का भाग होता है। चन्द्र-क्षेत्र का कल्पना, सौन्दर्यप्रियता, आदर्शवाद, काव्य, साहित्य आदि से विशेष सम्बन्ध है। यह समझ लेना चाहिये कि 'कल्पना' किसे कहते है। बुद्धि अत्यन्त सूक्ष्म और उच्च कोटि की होने पर भी मनुष्य कल्पना के बिना कवि नही हो सकता। कल्पना है 'खयाली दुनिया' जिसमे हमारा दिमाग उडता रहता है। कल्पना के आधार पर ही कुशल चित्रकार अपनी सूझ से ऐसा दृश्य बनाता है जैसा कि न कही उसने देखा हो न सुना। कल्पना के आधार पर ही हजारो वर्ष पहले हुई घटना के मामुली से ढाँचे पर लेखक हजारों पृष्ठ का सुन्दर और रोचक उपन्यास लिख देते हैं। कल्पना के आधार पर ही 'सट्टा' करते हैं।

जिनके हाथ मे चन्द्र-क्षेत्र दबा हुआ हो उनमे कल्पना, मन की विशेष स्फूर्ति, नये आविष्कार या सूझ के विचार नही होते। जिनके

हाथ मे यह उच्च हो वे काव्य, कला, कल्पना, सगीत, साहित्य आदि मे सफल होते है। शरीर से आलसी अर्थात् एक ही जगह पड़े रहेंगे, पर उनका मन सारे ससार मे घूम आवेगा और हजारों खयाली दृश्य बना लेगा।

अन्य गुणो के साथ कल्पना होना सहायक होता है किन्तु यदि अन्य गुण न हो, केवल बुद्धिहीनता हो तो कल्पना होने से मनुष्य शेख-चिल्ली की तरह खयाली मनसूबे बाँधता रहता है।

यदि यह भाग साधारण उच्च हो और मध्य का तृतीयांश विशेष फूला हुआ हो तो अन्तड़ियो की बीमारी व पाचन-शक्ति की कमी होती है। यदि ऊपर का तिहाई हिस्सा अधिक ऊँचा हो तो गठिया, पित्त, कफ आदि के रोग होते हैं।

सारा भाग अत्युच्च हो और स्वास्थ्य के अन्य लक्षण अच्छे न हो तो चिड़चिड़ापन, दु खी मनोवृत्ति, पागलपन, सिर-दर्द आदि के रोग होते हैं।

यदि यह क्षेत्र ऊँचा न हो बल्कि लम्बा और सकड़ा हो तो शान्ति-प्रियता, एकान्तवास, ध्यान मे मन लगाना, नवीन कार्य मे उत्साह न होना आदि होते हैं।

शुक्र-क्षेत्र—अगूठे के नीचे जीवन-रेखा का भीतरी भाग शुक्र-क्षेत्र होता है। शुक्र-क्षेत्र का साधारण उच्च होना गुण है। शुक्र-क्षेत्र से स्वास्थ्य, सौन्दर्यप्रियता, कामवासना, सन्तानोत्पादन-शक्ति, सगीतप्रियता, दया, सहानुभूति आदि का विचार किया जाता है।

यदि किसी हाथ मे यह भाग उठा हुआ न हो तो ऐसे व्यक्ति मे उपर्युक्त गुण कम मात्रा मे होते है। साधारण उठा हुआ हो तो

उपर्युक्त सब गुण होते हैं। अति उच्च होने से मनुष्य कामी, व्यभिचारी तथा अत्यन्त विलासी हो जाता है।

उपर्युक्त गुण सीमा के अन्दर रहेंगे या सीमा को अतिक्रान्त कर अवगुण हो जावेंगे यह निश्चय करने के लिये हाथ के अन्य लक्षणों को भी देखना चाहिये। उदाहरण के लिए 'कामुकता' (कामवासना) अधिक होने पर भी यदि अंगूठे का प्रथम पर्व बलिष्ठ है और शीर्ष-रेखा लम्बी और सुन्दर है तो मनुष्य आत्मसंयमी होगा, व्यभिचार के रास्ते नहीं जावेगा। किन्तु यदि किसी स्त्री के हाथ में शुक्र-क्षेत्र बहुत ऊँचा हो, बृहस्पति तथा सूर्य का क्षेत्र दबा हो, हृदय-रेखा में बहुत से द्वीपचिन्ह हो, शीर्ष-रेखा छोटी और कमजोर हो, अंगुष्ठ का प्रथम पर्व छोटा, पतला और कमजोर हो तो वह शीघ्र पथभ्रष्ट हो जावेगी।

यदि शुक्र-क्षेत्र बड़ा और ऊँचा हो तो सन्तानोत्पादन-शक्ति अच्छी होती है। यदि बहुत धँसा हुआ या सकड़ा हो तो यह शक्ति कम होती है। यह स्थान दोषयुक्त हो और अन्य रोग-लक्षण हो तो जननेन्द्रिय-सम्बन्धी रोग होते हैं।

ऊपर संक्षेप में भिन्न-भिन्न ग्रह-क्षेत्रों के लक्षण और फल बताये गये हैं। किसी हाथ में एक, किसी में दो किसी में तीन ग्रह-क्षेत्र उच्च रहते हैं। इस लिये अलग-अलग फलों का मिलान कर, परिणाम में जो फल आवे वह कहना चाहिये।

९वाँ प्रकरण

करतल (हथेली)-लक्षण

जिसका करतल (हथेली) नीचा हो (अर्थात् हथेली की चारों ओर की सीमाओं का भाग ऊँचा हो, इस कारण बीच का भाग नीचा होगा) तो उसको अपने पिता का रुपया मिलता है। पिता के सौभाग्यशाली होने से ही पिता का द्रव्य मिल सकता है। इस-लिये निम्न (नीचा) करतल होने से धनिक घर मे जन्म प्रकट होता है। यदि बीच का भाग उठा हुआ हो तो मनुष्य दाता (दूसरों को धन देने मे उदार) होता है। यदि करतल का मध्य भाग ऊँचा-नीचा हो तो मनुष्य क्रूर और दरिद्र होता है। यदि हथेली का रग लाख की तरह ललाई लिये हुए हो तो यह ऐश्वर्य का लक्षण समझना चाहिए। करतल का चिकना और चमकदार होना धनवान होने का लक्षण है और रूखा तथा आभा से रहित होना दरिद्रता का लक्षण है। जिनकी हथेली का रग नीला या काला, धब्बेदार हो वे मदिरापान करने वाले या पीलापन लिये हो तो व्यभिचारी होते हैं—

"करतलैर्दैवशार्दूल लाक्षाभैरीश्वराः स्मृताः।
अगम्यागामिनः पीतै रूक्षैर्निर्धनता स्मृता॥
अपेयपानं कुर्वन्ति नीलकृष्णैस्तथैव च॥"

"सामुद्रतिलक' मे लिखा है कि यदि मनुष्य का हाथ रेखा-हीन हो (अर्थात् ऊर्ध्व रेखा आदि न हो) या बहुत सी पतली-

पतली रेखाओ से भरा हो तो मनुष्य निर्धन और दुखी होता है। 'विवेक-विलास' के अनुसार भी हथेली का मध्यभाग नीचा होने से धनी और ऊँचा-नीचा होने से निर्धन होता है।

हाथ की लम्बाई

हथेली सात अगुल लम्बी, होनी चाहिए। मणिबन्ध की प्रथम रेखा से हथेली का प्रारम्भ होता है और मध्यमा उगली की जड पर इसका अन्त। यह हिस्सा सात अ गुल का उसी आदमी की उंगली से होना चाहिए। चारो उंगलियाँ बराबर चौडी नही होती इस कारण मध्यमा उंगली का मध्य पर्व जितना चौडा हो उसे एक अंगुल मानना उचित है। उगलियो की लम्बाई मध्यमा उंगली की जड से मध्यमा उगली के अन्त तक होती है। यह लम्बाई पाँच अंगुल होना श्रेष्ठ है। इस प्रकार मणिबन्ध से मध्यमा उगली के अन्त तक १२ अगुल होनी चाहिये। कोहनी से ऊपर बाहू का भाग जितना हो उसका दो-तिहाई मणिवन्ध से बीच की उंगली के अन्त तक होना श्रेष्ठ है। और कोहनी से मणिबन्ध तक जितनी लम्बाई हो उसकी तीन-चौथाई लम्बाई उगलियो सहित हथेली की होना उत्तम है। उदाहरण के लिए बाहुमूल अर्थात् कन्धे से बीच की उंगली के अन्त तक यदि ४६ अगुल लम्बाई हो तो १८ अगुल भुजा का ऊपरी भाग, १६ अगुल कोहनी से पहुँचे तक, ७ अगुल हथेली और ५ अगुल लम्बी बीच की उगली होनी चाहिए।

पाश्चात्य हस्तरेखा-विचार मे हथेली को ग्रह-क्षेत्रो तथा कर-तल-मध्य इन भागो मे बांट कर पृथक्-पृथक् विचार किया गया है। ग्रह-क्षेत्रो का विचार पिछले प्रकरण मे किया गया है। अब करतल-मध्य का विचार किया जावेगा।

करतल-मध्य

हाथ के मोटे तौर पर दो विभाग होते हैं—एक हथेली और दूसरा उगलियाँ और अँगूठा। हथेली के दस भाग हैं—६ तो सूर्य, चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र-शनि के क्षेत्र, २ क्षेत्र मगल के और करतल-मध्य अर्थात् हथेली का मध्य भाग जो गड्ढेदार (अर्थात् चारो ओर के क्षेत्रो से) नीचा होता है। इस करतल-मध्य भाग को भी अध्ययन की दृष्टि से दो भागो मे विभक्त किया गया है—

प्रथम भाग—(१) जीवन-रेखा, शीर्ष-रेखा तथा स्वास्थ्य-रेखा के बीच का भाग। जिन हाथो मे स्वास्थ्य-रेखा न हो उनमे कल्पित सीमा उस स्थान तक मान ली जाती है जहाँ पर स्वास्थ्य-रेखा का स्थान होता है।

द्वितीय भाग—(२) शीर्ष-रेखा और हृदय-रेखा के बीच का स्थान, दोनो ही करतल-मध्य भाग हैं। परन्तु बहुत सी हस्तरेखा की पुस्तको मे प्रथम—करतल-मध्य भाग को बृहत् त्रिकोण (तीन रेखा तीन ओर होने से त्रिकोण के आकार का यह भाग बन जाता है) और द्वितीय—करतलमध्य भाग को बृहत् चतुष्कोण (शीर्ष-रेखा और हृदय-रेखा के बीच का भाग बडा चतुष्कोण के आकार का बन जाता है) कहते हैं।

बृहत् त्रिकोण मे यदि स्वास्थ्य-रेखा हुई तो तीन रेखाओ से वेष्टित यह भाग होगा अन्यथा बृहत् त्रिकोण की जीवन-रेखा और शीर्ष-रेखा ये दो भुजा होगी। तीसरी, स्वास्थ्य-रेखा स्थानीय कल्पित रेखा होगी।

बृहत् चतुष्कोण मे शीर्ष-रेखा और हृदय-रेखा की दो आमने-सामने की रेखा होती हैं। यदि स्वास्थ्य-रेखा हो तो वह तीसरी भुजा

समझी जावेगी अन्यथा स्वास्थ्य-रेखा वहाँ कल्पित-रेखा समझनी चाहिये। चौथी ओर कोई रेखा नहीं होती—बृहस्पति का क्षेत्र जहाँ प्रारम्भ हो वहीं तक इसकी सीमा समझी जाती है। हस्तपरीक्षा करते समय करतल-मध्य को अँगूठे से दबाकर देखना चाहिए कि यह भाग मोटा या पतला, मुलायम या सख्त है। यहाँ मुख्य ध्येय ऊपरी चमड़े की चिकनाई देखना नहीं है, परीक्षा करनी है मांसलता और कठोरता की।

(१) यदि यह भाग मांसल और बहुत कठोर (सख्त) हो तो मनुष्य बहुत क्रूर प्रकृति का होगा।

(२) यदि मांसल और साधारण सख्त हो तो प्रकृति में कुछ कठोरता अवश्य होगी किन्तु ईमानदारी आदि गुण भी होंगे।

(३) यदि मांसल और कम कठोर हो तो ऐसा व्यक्ति परिश्रमी होता है। उसमें प्रेम की भावना होती है किन्तु बहुत विलासी प्रकृति नहीं होती।

(४) मांसल और साधारण मुलायम हो तो सुख-भोग, विलासिता की प्रवृत्ति होती है, किन्तु सीमा के भीतर।

(५) मांसल और कुछ अधिक मुलायम हो तो ऐसा व्यक्ति सुस्त और अत्यन्त विलासी प्रकृति का होता है। बुद्धि और कल्पना अच्छी होती है। कुशल चित्रकार, कलाकार या गायक के लिए ऐसा होना अच्छा है परन्तु साधारणतः कामवासना अधिक होने से दोष भी आ जाते हैं। आलस्य बहुत होता है।

(६) मांसल और अत्यधिक मुलायम हो तो मनुष्य बिलकुल परिश्रमी नहीं होता। अत्यन्त आलसी, विलासी प्रकृति का, शिथिल

अपनी वासनाओं के सम्बन्ध में विचार करते रहना, यही उसका कार्य होता है।

(७) यदि यह भाग पतला, मांसहीन (बहुत कम मांस वाला) और बहुत सख्त हो तो प्रेम का अभाव, क्रूरता, इरादे का पक्का होना, अन्य लक्षण अच्छे न हों तो जुर्म करने वाला होता है।

(८) यदि यह भाग मांसहीन (पतला) और सख्त हो तो स्वार्थी, लोभी और क्षुद्र प्रकृति का होता है।

(९) यदि मांसहीन (पतला), सकड़ा और विशेष विस्तृत न हो तो ऐसा व्यक्ति कमजोर चित्त का, शीघ्र किसी निर्णय पर न पहुँचने वाला, होता है।

(१०) मांसहीन (पतला) और मुलायम हो तो शरीर दृढ नहीं होता, चरित्र में चञ्चलता होती है। वासना-पूर्ति के लिए आदर्श-रक्षा का विचार नहीं होता।

(११) यदि मांसहीन (पतला) और बहुत मुलायम हो तो चरित्र अच्छा नहीं होता या दुखी प्रकृति का होता है। यदि हाथ में अन्य लक्षण उत्तम हों तो अवगुणकारक नहीं हैं। ऐसे व्यक्तियों में स्फूर्ति और दूसरों के मन की बात समझ जाने की विशेष बुद्धि होती है।

(१२) यदि भाग ऐसा पारदर्शी हो कि हाथ के भीतर के भाग की भी कुछ-कुछ झलक दिखाई दे तो अच्छे लक्षणयुक्त हाथों में धार्मिकता आदि गुण किन्तु निकृष्ट कोटि के हाथों में कल्पना या मूर्खता की ओर झुकाव समझना चाहिए।

ऊपर मांसलता तथा मांसहीनता एवं कठोरता या मृदुता के

अनुसार फल बताये गये हैं। अब यह भाग चपटा है या गड्ढेदार (नीचे घसा हुआ), इन लक्षणों के अनुसार फल बताये जाते है—

(१) यदि करतल-मध्य चपटा किन्तु ऊँचा हो (अर्थात् सूर्य और शनि के क्षेत्र जितने ऊँचे हो उतना ही ऊँचा हो) तो ऐसा व्यक्ति बहुत अभिमानी होता है, उसमे घमड की मात्रा अधिक होने से वह किसी से दबता नही। प्रकृति में क्रूरता भी होती है।

(२) यदि करतल-मध्य चपटा और नीचा हो तो डरपोक स्वभाव भीरुता, निरुद्देश्य जीवन का लक्षण है। कोई महत्त्वाकाक्षा, उच्च अभिलाषा या उसकी प्राप्ति के लिये तत्परता नही होती।

(३) साधारण नीचा (गड्ढेदार) हो तो यह स्वाभाविक स्थिति है।

(४) यदि बहुत गड्ढेदार हो (खासकर जीवन-रेखा की ओर अधिक गहरा हो) तो पारिवारिक जीवन कष्टमय होता है। घरेलू झगडे बहुत रहते है। यदि शीर्ष-रेखा की ओर विशेष गड्ढेदार या नीचा हो तो मस्तिष्क-सम्बन्धी बीमारी मूर्छा रोग आदि। यदि हृदय-रेखा की ओर विशेष नीचा या दबा हुआ हो तो 'हृदय' की दुर्बलता या प्रेम मे निराशा का लक्षण है। यदि चन्द्र-क्षेत्र की ओर विशेष नीचा या दबा हुआ हो तो पेट की बीमारी (स्त्रियो के हाथ मे गर्भाशय-सम्बन्धी रोग भी), स्नायुओ की दुर्बलता का लक्षण है।

(५) अधिक नीचा या गड्ढेदार होना जीवन मे असफलता, भाग्यहानि प्रकट करता है। ऐसा व्यक्ति उद्योगी नही होता या उसके उद्योग सफल नही होते।

करतल-मध्य गड्ढेदार अधिक है या कम यह निर्णय करते समय यह ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि ग्रह-क्षेत्रो के अत्यधिक

उन्नत होने से स्वाभाविक करतल-मध्य भी गड्ढेदार तो प्रतीत नही हो रहा है ? यदि ग्रह-क्षेत्र उन्नत हो तो उनका फल उत्तम होगा और करतल-मध्य वास्तव में नीचा न हो केवल अत्यधिक उन्नत ग्रह-क्षेत्रो के कारण नीचा मालूम होता हो तो उसे भ्रम से गड्ढेदार समझकर अनिष्ट लक्षण नही समझना चाहिए।

बृहत् त्रिकोण

करतल-मध्य के साधारण लक्षण दिये जा चुके है। ये बृहत् त्रिकोण तथा बृहत् चतुष्कोण दोनो भागो मे लागू होते हैं। अब बृहत् त्रिकोण के सम्बन्ध में कुछ बातें विस्तार से बताई जाती हैं—

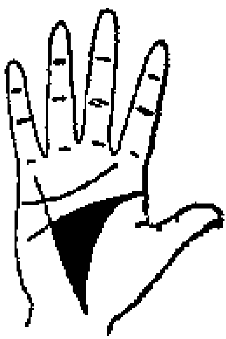

चित्र न० १४

(१) यदि यह दोनो हाथो मे उन्नत हो या ऊपर की ओर कुछ उठा हुआ हो तो ऐसा व्यक्ति खर्चीला, बहुत व्यय करने वाला होता है। यदि केवल एक ही हाथ मे उपर्युक्त लक्षण हो तो वीरता, उदारता आदि गुण होते हैं।

(२) यदि शीर्ष-रेखा और जीवन-रेखा की भाँति स्वास्थ्य-रेखा भी सुन्दर और पूरी हो और बृहत् त्रिकोण की तीनो भुजाएँ सुस्पष्ट दिखाई दे तो ऐसे व्यक्ति सुस्थिर और दयालु प्रकृति के होते हैं। यदि यह तीन ओर से घिरा हुआ स्थान काफी बड़ा हो तो जातक में साहस होता है, वह दीर्घायु और भाग्यवान भी होता है। हाथो मे अधिक उष्णता या अत्यधिक ललाई अच्छे स्वास्थ्य का चिह्न नही समझना चाहिये। इस बृहत् त्रिकोण की तीनो

भुजाओं (शीर्ष-रेखा, जीवन-रेखा और स्वास्थ्य-रेखा) का सुस्पष्ट होना बुद्धिमत्ता का लक्षण है।

(३) यदि यह त्रिकोण स्थान बहुत विस्तृत हो और मंगल का प्रथम क्षेत्र भी बहुत उन्नत हो तो दुस्साहस और मुँहजोरी होती है।

(४) यदि उपर्युक्त (३) मे जो लक्षण बताये गये हैं उससे विपरीत लक्षण हो अर्थात् यह स्थान बहुत छोटा हो और मंगल-क्षेत्र भी दबा हुआ हो तो जातक मे साहस की कमी होती है। प्रकृति मे क्षुद्रता भी होती है।

(५) यदि यह बिल्कुल चपटा हो और शनि-क्षेत्र भी दबा हुआ हो और उस पर (शनि-क्षेत्र पर) कोई रेखा या शुभ चिह्न न हो तो जातक का जीवन प्रभावयुक्त नही होता। साधारण नगण्य जीवन रहता है।

(६) यदि बहुत अधिक दबा हो तो प्रकृति मे अनुदारता, कजूसी, क्षुद्रता आदि अवगुण होते हैं। ऐसे व्यक्ति को अन्य लोग पसन्द नही करते।

(७) यदि उपर्युक्त (६) के लक्षण हो और चन्द्र-क्षेत्र अधिक उन्नत हो तथा मणिबन्ध मे एक ही रेखा हो तो स्नायु-दुर्बलता के कारण मूर्छा रोग होने का भय रहता है।

(८) यदि दोनो हाथो मे यह भाग बहुत नीचा हो और हृदय-रेखा छोटी और चौड़ी हो तो मनुष्य आलसी होता है।

(९) यदि शीर्ष-रेखा भद्दी और कमजोर हो और नीचे की ओर इस प्रकार जावे कि त्रिकोण का स्थान बहुत छोटा हो जावे, स्वास्थ्य-रेखा भी अच्छी न हो तो व्यापार मे असफलता होती है। (देखिये चित्र न० १५)

(१०) यदि यह स्थान मुलायम, भारी और पीलापन लिये हो, उंगलियां छोटी और मोटी हो, उगलियो के तृतीय पर्व फूले हुए हो, अगुष्ठ बहुत छोटा हो तो सासारिक सुख-भोग ही जीवन का उद्देश्य होता है।

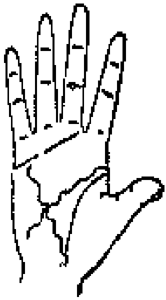

चित्र नं० १५

(११) यदि शीर्ष तथा स्वास्थ्य-रेखा गोलाईदार हो जिस कारण यह स्थान छोटा हो तो कायरता, क्षुद्रता, कजूसी का लक्षण है।

(१२) यदि हथेली की जिल्द सख्त और खुरदरी हो तो ऐसा व्यक्ति परिश्रमी होता है।

(१३) यदि त्रिकोण बडा और उन्नत न हो और हृदय-रेखा मगल के प्रथम क्षेत्र के ऊपर से जाती हुई हथेली के बाहर तक चली जावे तो मनुष्य बहुत कजूस होता है।

(१४) यदि इस स्थान पर बहुत सी बारीक-बारीक रेखा हो, और मगल का प्रथम क्षेत्र तथा बुध का क्षेत्र भी उन्नत हो तो तबीयत मे बेसब्री, जल्दबाजी, चिता करने की आदत होती है। ऐसे व्यक्ति को क्रोध भी जल्दी आ जाता है। यदि बृहस्पति-क्षेत्र अधिक उन्नत हो तो घमड की मात्रा अधिक होती है। मनुष्य बिना कारण भी समझ लेता है कि उसका अपमान किया गया है।

(१५) यदि त्रिकोण सुन्दर और विस्तीर्ण हो और हृदय-रेखा अत मे शाखायुक्त हो तो उदारता का लक्षण है।

यह सदैव स्मरण रखना चाहिये कि हृदय-रेखा खण्डित या शाखाहीन हो तो मनुष्य कठोर प्रकृति का होता है।

ऊपर वृहत् त्रिकोण के सामान्य लक्षण बताये गये है। यह बताया जा चुका है कि इसकी तीन भुजाएँ—शीर्ष-रेखा, जीवन-रेखा और स्वास्थ्य-रेखाएँ है। इन्ही तीन से तीन कोण भी बनते हैं।

अब शीर्ष-रेखा और जीवन-रेखा के मिलने से जो कोण बनता है उसका विचार किया जाता है। इसे प्रथम कोण समझना चाहिए—

प्रथम कोण

(१) यदि यह न्यून कोण केवल २० या २५ डिग्री का ही बनता हो और सुन्दर रीति से बना हो (अर्थात् जीवन-रेखा और शीर्ष-रेखा मिली हो) तो बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता का लक्षण है।

(२) यदि यह कोण केवल १०-१५ डिग्री का ही बने तो मनुष्य बहुत बुद्धिमान किन्तु ईर्ष्या करने वाला क्रूर प्रकृति का होता है। यदि जीवन-रेखा और शीर्ष-रेखा प्रारम्भ में दूर तक जुडी हुई हो तो साहस की कमी होती है।

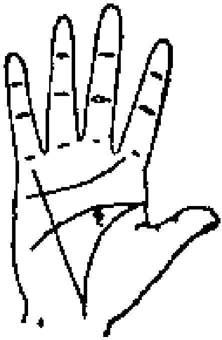

चित्र० नं० १६

(३) यदि कोण चौडा, करीब ६०-६५ डिग्री का हो और शीर्ष-रेखा छोटी हो तथा स्वास्थ्य-रेखा तक न जावे तो बुद्धि की कमी और गंवारपन होता है। यदि शीर्ष-रेखा लम्बी हो तो ऐसा व्यक्ति दूसरो की परवाह नही करता, सदैव कजूसी करता है। उसे सदैव यह चिन्ता रहती है कि भविष्य मे पैसे की दिक्कत न हो।

(४) यदि शीर्ष-रेखा जीवन-रेखा से मिली न हो तो मनुष्य भविष्य का विचार न कर जिस ओर प्रवृत्ति हुई, काम में लग जाता है। यदि शीर्ष-रेखा और जीवन-रेखा के बीच में अधिक अन्तर हो तो दुस्साहस या अदूरदर्शिता अधिक होती है।

द्वितीय कोण

(१) दूसरा कोण शीर्ष-रेखा और स्वास्थ्य-रेखा के योग से बनता है। यदि दोनों रेखा सुन्दर हों और कोण भी अच्छी प्रकार बने तो दीर्घायु का लक्षण है।

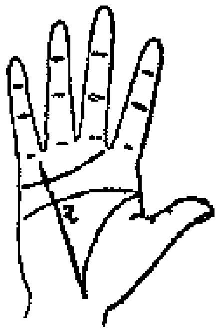

चित्र न० १७

(२) यदि यह कोण करीब ८५-९० डिग्री का हो और हृदय-रेखा अच्छी न हो तथा हृदय-रेखा और शीर्ष-रेखा के बीच का स्थान चौड़ा न हो तो स्वभाव में उदारता नहीं होती।

(३) यदि यह कोण केवल ४०-४५ डिग्री का हो तो अस्वास्थ्य तथा चिड़चिड़ापन होता है।

(४) यदि यह कोण ९०° से अधिक हो तो स्नायु-शक्ति निर्बल होने से चित्त में बेचैनी रहती है।

(५) यदि स्वास्थ्य-रेखा और शीर्ष-रेखा का योग चन्द्र-क्षेत्र पर होता हो तो मिर्गी या कफ के रोग होते हैं। यदि शीर्ष-रेखा बलिष्ठ न हो और चन्द्र-क्षेत्र बहु-रेखायुक्त हो तो लकवे का अंदेशा, यदि हृदय-रेखा कमजोर हो तथा शनि-क्षेत्र पर तारे का चिन्ह हो तो मूर्च्छा रोग।

यदि किसी बच्चे के हाथ मे यह कोण अच्छा न हो तो उसकी पढाई पर विशेष जोर नही देना चाहिये, स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान की आवश्यकता है।

तृतीय कोण

(१) प्राय स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा का स्पर्श नही करती इस कारण यह कोण पूरी तौर से नही बन पाता है। यदि दोनो रेखाओ के बीच कुछ स्थान खुला रहे तो अच्छा ही है। स्वास्थ्य का लक्षण है।

(२) यदि दोनो रेखाओ मे मिलने के स्थान पर बहुत थोडा अन्तर हो, कोण २०-२५ डिग्री का बने और बुध-क्षेत्र उन्नत हो तो, हाजिरजवाबी, मजाकिया बात करने का स्वभाव होता है।

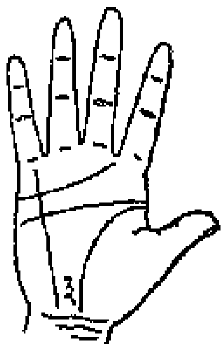

चित्र न० १८

(३) यदि दोनो रेखाओ के मिलने के स्थान पर काफी अन्तर हो और स्वास्थ्य-रेखा बुध-क्षेत्र के ऊपर जावे तो व्यापार मे सफलता, उदारता और दीर्घायु का लक्षण है।

(४) यदि उपर्युक्त (३) के लक्षण हो किन्तु स्वास्थ्य-रेखा बुध-क्षेत्र पर न जावे, अगुष्ठ का प्रथम पर्व कमजोर हो, शुक्र-क्षेत्र बहुत उन्नत हो तो प्राय. चरित्रहीनता का लक्षण है।

(५) स्वास्थ्य तथा जीवन-रेखाएँ छोटी-छोटी रेखाओ मे आड़ी कटी और कमजोर हों तो सिर-दर्द या स्नायु-पीड़ा होती है।

(६) यदि जीवन-रेखा और स्वास्थ्य-रेखा खंडित हो तो मनुष्य सुस्त और निकम्मा होता है और उसकी प्रकृति में भी दुष्टता होती है।

बृहत् त्रिकोण का वर्णन समाप्त हुआ। इस पर विविध चिह्नों का फल तृतीय भाग में दिया गया है।

बृहत् चतुष्कोण या शीर्ष-रेखा और हृदय-रेखा के बीच का भाग

वास्तव मे यह भी करतल-मध्य भाग ही है। अध्ययन की सुविधा के विचार से करतल-मध्य को दो भागो मे विभक्त कर दिया गया है—एक त्रिकोण और एक चतुष्कोण। दोनो का सम्मिलित वर्णन पहले दिया जा चुका है। बृहत् त्रिकोण वाले भाग का वर्णन भी ऊपर दिया गया है अब चतुष्कोण—अर्थात् शीर्ष-रेखा और हृदय-रेखा के बीच के भाग—का वर्णन किया जाता है।

इस स्थान के ऊपर और नीचे तो उपर्युक्त दो रेखा होती ही है। तीसरी ओर बृहस्पति क्षेत्र तक इसकी सीमा होती है, और चौथी ओर मगल के प्रथम क्षेत्र तक। इन दोनो क्षेत्रो का जहाँ ज़रा-सा भी प्रारम्भ हो वही तक इस बृहत् चतुष्कोण की सीमा समझनी चाहिए—देखिए चित्र नं० १९

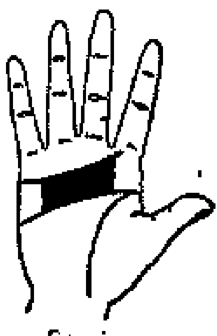

चित्र नं० १९

(१) यदि यह भाग सुन्दर, चिकना, छोटी-छोटी बारीक रेखाओ से रहित हो तो ऐसे व्यक्ति की शान्त, स्थिर प्रकृति होती है। यह प्राय अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करता है।

(२) यदि यह भाग मंगल-क्षेत्र की ओर विशेष चौडा हो तो निष्कपट व्यवहार का लक्षण है।

(३) यदि यह सम्पूर्ण लम्बा भाग बहुत चौडा हो तो मनुष्य अत्यन्त स्वतन्त्र प्रकृति का होता है। किसी की बात नही मानता, अपनी मनमानी करने मे मूर्खता भी कर बैठता है। इस लक्षण को काफी प्रधानता देनी चाहिये क्योकि अन्य विपरीत लक्षणो से इस-की प्रकृति मे विशेष अन्तर नही पडता।

प्राय जिन हाथो मे यह भाग बहुत चौडा होता है, हृदय-रेखा बहुत ऊँची होती है (जिस कारण कामुकता और ईर्ष्या की प्रकृति बढ जाती है) और शीर्ष-रेखा बहुत नीची होती है, इस कारण मस्तिष्क-शक्ति मे तर्क की योग्यता विशेष अच्छी नही होती।

(४) यदि यह भाग सूर्य-क्षेत्र के नीचे की बजाय शनि-क्षेत्र के नीचे अधिक चौडा हो तो ऐसे व्यक्ति को अपनी बदनामी का डर नही होता।

(५) यदि सूर्य-क्षेत्र के नीचे बहुत अधिक चौडा हो तो साधारण से अधिक इस बात की फिक्र रहती है कि "लोगो की मेरी बाबत क्या राय है" और जरा सुनने मे आया कि फला आदमी बुराई कर रहा था तो तबीयत भड़क जाती है।

(६) यदि यह भाग शनि-क्षेत्र के नीचे अधिक सकडा हो तो चित्त मे उदासी छाई रहती है।

(७) (क) यदि शीर्ष-रेखा हृदय-रेखा की ओर झुकी हुई हो और इस कारण यह भाग सकडा हो तो मस्तिष्क मे उदारता नही होती।

(ख) या हृदय-रेखा शीर्ष-रेखा की ओर झुकी हो, इस कारण

यह भाग सकड़ा हो तो क्षुद्रता, तबियत में कमीनापन, कंजूसी का लक्षण है।

(८) यह-भाग सुन्दर न हो (रेखाओं के छोटी या भद्दी होने से) तो बुद्धि में तीक्ष्णता नही होती, मनुष्य सहृदय या कृपालु नही होता।

(६) यह भाग ऊपर उठा हुआ और सुन्दर हो तो सन्तानोत्पादन-शक्ति अधिक होती है। मनुष्य बहुत द्रव्य कमाना और खर्च करना चाहता है।

(१०) यदि यह भाग चपटा हो (जितने ऊँचे ग्रह-क्षेत्र हों उतना ही ऊँचा हो) तो मितव्ययिता का लक्षण है।

(११) बहुत गड्ढेदार हो तो व्यक्ति कंजूस होता है।

(१२) सख्त हो तो पाशविक प्रवृत्ति (काम-क्रोध) विशेष होती है।

(१३) बहुत मुलायम हो तो मनुष्य आलसी होता है।

ये साधारण लक्षण बताये गये हैं। अब अन्य लक्षणों के संयोग से क्या फल होता है यह बताया जाता है—

(१) यदि यह भाग चौड़ा हो, शीर्षरेखा अच्छी हो और अंगूठे का दूसरा पर्व लम्बा और अच्छा हो तो मस्तिष्क की उदारता का लक्षण है।

(२) यह स्थान सकड़ा हो और स्वास्थ्यरेखा अच्छी न हो तो दमा, Hay fever आदि रोग होते हैं।

(३) यह स्थान सकड़ा हो और उंगलियाँ भीतर की ओर (हथेली की ओर) कुछ मुड़ी हो तो प्रकृति में क्षुद्रता होती है। ऐसा व्यक्ति लोगों से खुले दिल से नही मिलता। कंजूस भी होता है।

(४) यदि यह भाग बीच में सकड़ा हो और कनिष्ठिका उंगली का तृतीय पर्व अपेक्षाकृत लम्बा हो तो दूसरे को धोखा देने की प्रवृत्ति होती है। ऐसा व्यक्ति जल्दी ही दूसरो की बाबत खराब राय भी कायम कर लेता है।

(५) यदि यह भाग सकड़ा हो और बृहस्पतिक्षेत्र बहुत उन्नत हो तो धार्मिक विचार उच्चकोटि के होते है। त्याग और सन्यास की ओर प्रवृत्ति होती है।

(६) यदि दोनो हाथो मे यह भाग सकड़ा हो और बुधक्षेत्र पर बहुत सी छोटी-छोटी रेखाएँ हो तो झूठ बोलने का स्वभाव होता है।

(७) यदि मगल और बुध के क्षेत्र अति उन्नत हो और बृहत् चतुष्कोण बहुत सकड़ा हो तो बेईमानी का लक्षण है।

(८) यदि यह भाग सकड़ा हो, हृदय-रेखा छोटी हो, शीर्ष और हृदय-रेखाएँ लाल हो, मगल का क्षेत्र बहुत उन्नत हो तो मनुष्य क्रूर प्रकृति का होता है।

प्रधान रेखाएँ

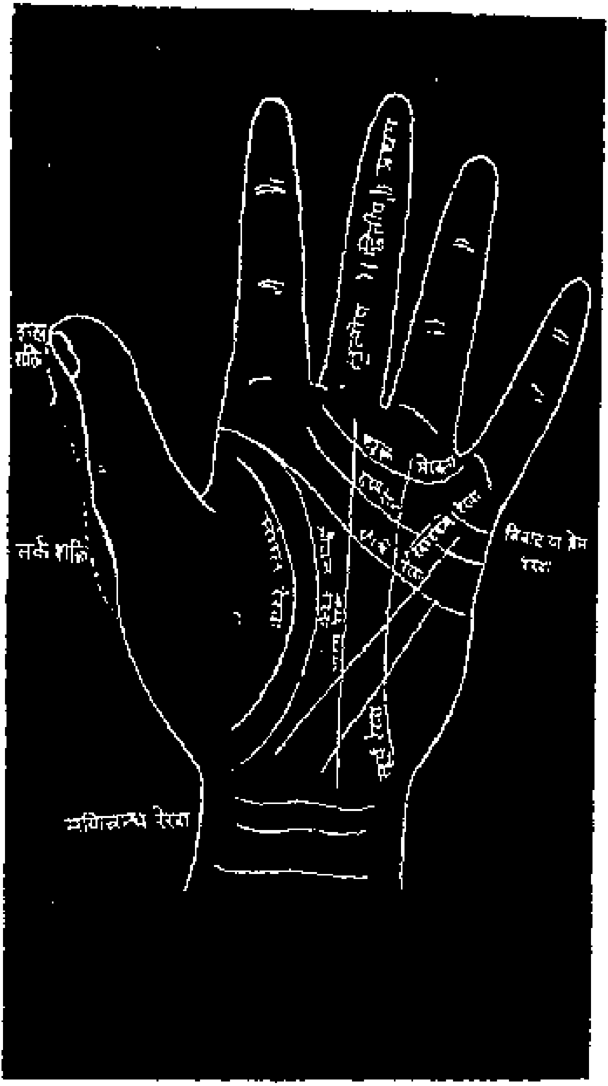

चित्र नं० २०

द्वितीय खण्ड

दसवाँ प्रकरण

हस्त-रेखा-विचार

सात मुख्य रेखाएँ

प्रथम खण्ड मे हाथ के आकार, उगलियो, अगूठो तथा ग्रहक्षेत्रों का विस्तृत विचार किया जा चुका है। उसको न केवल ध्यानपूर्वक बारम्बार पढना चाहिए बल्कि मनन करना चाहिये—क्योंकि उस खड में जो शुभाशुभ लक्षण बताये गये है उनका भाग्योदय, स्त्रीसुख धन-लाभ, यश-प्राप्ति आदि से साक्षात् और घनिष्ठ सम्बन्ध है। बहुत से लोग गलती से यह समझते है कि हाथ की बनावट किंवा उगलियो या अगूठे की विशेषताओ से केवल व्यक्ति का चरित्र, प्रवृत्ति, स्वभाव, गुण-अवगुण आदि जाने जा सकते हैं। उनको जानने से कोई विशेष लाभ नही, इसलिये एकदम रेखाओ का मिलान करने लगते है किन्तु यह पद्धति गलत है। मनुष्य के स्वभाव और विद्या-प्राप्ति किंवा धन प्राप्ति मे कितना अधिक सम्बन्ध है यह निम्नलिखित सिद्धान्तो से स्पष्ट होगा—

१. क्रोधश्रिय सर्वमेवाभिमान—क्रोध लक्ष्मी को नाश कर देता है और अभिमान सब कुछ नष्ट कर देता है।

२ सुखार्थी वा त्यजेत् विद्या, विद्यार्थी व सुख त्यजेत्—आराम तलबी से जीवन व्यतीत करने वालो को विद्या नही भाती। विद्या की इच्छा है तो आराम करना छोड दो।

३. नालसा प्राप्नुवन्त्यर्थान्—आलसी व्यक्ति धन नही कमा सकते ।

४ क्रोधो मूलमनर्थानां—क्रोध सारे अनर्थो का मूल है ।

५ आलस्य स्त्रीसेवा सरोगता जन्मभूमिवात्सल्यम् ।
सतोषो भीरुत्व व्याघाता षट् महत्वस्य ॥

(आलस्य, स्त्रीसेवा, रोगी शरीर, जन्मभूमि से इतना प्रेम होना कि उसे छोड़ बाहर न जाना, सतोष (महत्वाकाक्षा का अभाव) कायरता (डरना) ये छ महादोष हैं, जिनके होने से मनुष्य उन्नति नही करता ।)

६ उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथै ।

(कार्य उद्योग करने से सिद्ध होते है केवल इच्छा करने से नही ।)

७ न कस्यचित् कश्चिदिह स्वभावात् भवत्युदारोभिमत. खलो वा। लोके गुरुत्व विपरीतता वा स्वचेष्टितान्येव पर नयन्ति ॥

(किसी का भी कोई बिना बात मित्र या शत्रु नही होता । मनुष्य अपनी चेष्टाओ से ही दूसरो को अपना उपकारी या अपकारी बनाकर श्रेष्ठता या कष्ट प्राप्त करता है ।)

८ शाठ्येन धर्म कपटेन मित्र परोप तापेन समृद्धि भावम् ।
सुखेन विद्या परुषेण नारी वान्छन्ति ये व्यक्तिमपडितास्ते ॥

शठता से धर्म उपार्जन, कपट से मित्र-प्राप्ति दूसरो को पीड़ा पहुँचाकर स्थायी, धन-सग्रह, आरामतलबी करके विद्या तथा क्रूर व्यवहार से जो स्त्री को वश मे करना चाहते है, वे मूर्ख हैं ।

यह हमारे भारतीय प्राचीन सिद्धान्तो का कथन है । प्राय

धैर्य, उदारता, शान्ति, बुद्धि, शूरता, पराक्रम, शठता, क्रोध, मात्सर्य, ईर्ष्या, आलस्य, उत्साह, परिश्रमशीलता, अध्यवसाय आदि गुणों तथा अवगुणों से ही हमारे भाग्य का निर्माण होता है। इस कारण उंगलियों, अंगूठे, हथेली के ग्रह-क्षेत्रों से गुण, अवगुण, प्रवृत्ति आदि का पूर्ण परिचय प्राप्त करने के बाद रेखाओं को सुस्थिरता से देखना और अनुसंधान करना चाहिए कि परिणाम क्या होगा। द्वितीय-तृतीय खंडों में रेखाओं और चिह्नों का विस्तृत विचार किया गया है। पहले रेखाओं का स्वरूप, उनके गुण-दोष तथा उनसे सम्बन्धित पारिभाषिक शब्द समझाए गये हैं। इसके बाद द्वितीय खंड में निम्नलिखित रेखाओं का वर्णन किया गया है—

(१) जीवन-रेखा
(२) शीर्ष-रेखा
(३) हृदय-रेखा
(४) भाग्य-रेखा
(५) सूर्य-रेखा
(६) स्वास्थ्य-रेखा
(७) विवाह-रेखा

ये सात प्रायः प्रधान रेखा मानी जाती हैं। इस कारण इन सातों का वर्णन इस द्वितीय खण्ड में एक साथ किया गया है। अन्य रेखाओं तथा चिह्नों का वर्णन तृतीय खण्ड में किया गया है। बहुत से विषयों का विचार पूर्ण तभी होगा जब तृतीय भाग में वर्णित रेखाओं के फल का भी समन्वय किया जावे। उदाहरण के लिये—

(१) आयु-विचार या स्वास्थ्य का विचार करने के लिये जीवन-

रेखा, मगलरेखा, मणिबन्धरेखा, स्वास्थ्यरेखा, शीर्षरेखा, हृदय-रेखा तथा नखो का विशेष विचार करना चाहिये।

(२) धनविचार या भाग्योदय के लिये ग्रहक्षेत्र, उगलियो की बनावट, भाग्यरेखा, जीवनरेखा, शीर्षरेखा तथा सूर्यरेखा का विशेष विचार करना उचित है।

(३) वैवाहिक सुख या प्रेम के विषय मे फलादेश करना हो तो शुक्रक्षेत्र, हृदयरेखा, विवाहरेखा, शुक्रमेखला और शुक्र-क्षेत्र से आनेवाली प्रभाव रेखाओ की ओर विशेष ध्यान देना चाहिये।

इस प्रकार, किसी एक बात का विचार करने के लिये अनेक प्रकरणो और अनेक रेखाओ के सम्बन्ध मे बताये हुए सिद्धान्तो का विचार कर किसी नतीजे पर पहुँचा जा सकता है।

अब आगे के प्रकरणो मे रेखा के स्वरूप, गुणदोष तथा सात मुख्य रेखाओ का क्रमश विचार किया जावेगा।

११वाँ प्रकरण

जीवन-रेखा

अंगूठे और तर्जनी के बीच से आरम्भ हो जो रेखा गोलाई लिये शुक्रक्षेत्र को घेरती हुई मणिबन्ध या उसके समीप तक आती है उसे 'गरुड़ पुराण' के अनुसार कुलरेखा कहते हैं—

कुल रेखा तु प्रथमा अंगुष्ठादनुवर्तते ।

इसी रेखा को ज्योतिष तथा लक्षण के अन्य ग्रन्थों में पितृरेखा, गोत्र-रेखा, अंगुष्ठरेखा आदि भिन्न-भिन्न नाम दिया गया है ।

'सामुद्रिक जातक सुधाकर' के मतानुसार यदि यह पुष्ट, सुन्दर और खूब गोलाई लिये हो तो ऐसा मनुष्य स्वस्थ, दीर्घायु, ऐश्वर्य-युक्त होता है । किन्तु यदि खंडित हो तो उसे जीवन में असफलता तथा अपमान प्राप्त होता है । यदि यह रेखा सम्पूर्ण न हो तो ऐसा मनुष्य सदा दुःखी रहता है । यदि इस रेखा पर तिल का चिह्न हो तो मनुष्य को सुन्दर सवारी प्राप्त होती है ।

इस रेखा पर से शुक्ल पक्ष में जन्म है या कृष्ण पक्ष में इसका भी विचार कुछ लोगों ने दिया है परन्तु वह विचार सब आदमियों के हाथ में ठीक नहीं बैठता । यह हाथ की ४ प्रधान रेखाओं में एक है । परन्तु भारतीय ग्रन्थों में इसका उतना विशद वर्णन नहीं है जितना पाश्चात्य ग्रन्थों में । अब पाश्चात्य मत दिया जाता है—

पाश्चात्य मत देने से पहले पाठकों का ध्यान साथ के चित्र की ओर आकृष्ट किया जाता है । टूटी हुई या खंडित रेखा, दो शाखा-युक्त रेखा, शृङ्खलाकार रेखा, गोपुच्छाकृति रेखा आदि विविध प्रकार

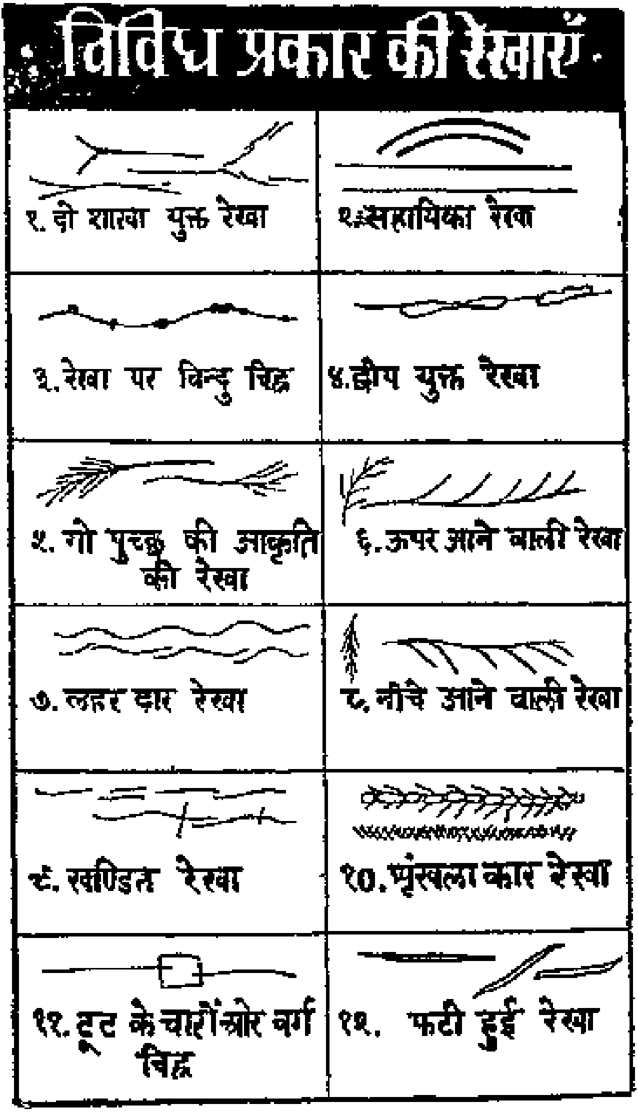
विविध प्रकार की रेखाएँ
१. दो शाखा युक्त रेखा
२. सहायिका रेखा
३. रेखा पर बिन्दु चिह्न
४. द्वीप युक्त रेखा
५. गो पुच्छ की आकृति की रेखा
६. ऊपर आने वाली रेखा
७. लहर दार रेखा
८. नीचे आने वाली रेखा
९. खण्डित रेखा
१०. शृंखला कार रेखा
११. टूट के चारों ओर वर्ग चिह्न
१२. फटी हुई रेखा

चित्र नं० २१

की रेखाएँ जो इस पुस्तक में बताई गई हैं वे इस चित्र को देखने से सुस्पष्ट समझ में आ जायेंगी। इसके गुण-दोष प्रसगानुसार आगे बताये गये हैं।

जीवन-रेखा : पाश्चात्य मत

पाश्चात्य मत से इसका नाम आयु-रेखा या जीवन-रेखा है। यह रेखा करतल के दाहिनी ओर से निकलकर गुरुक्षेत्र के नीचे गोलाई लिये हुए नीचे मणिबन्ध की ओर चली जाती है। इस प्रकार मगल का द्वितीय क्षेत्र और शुक्र का क्षेत्र इससे घिरे हुए रहते हैं। बहुत बार यह रेखा मणिबन्ध की ओर न जाकर शुक्र-क्षेत्र के ही नीचे की ओर घूम जाती है। जीवन-रेखा से मनुष्य के स्वास्थ्य तथा शक्ति का पता लगता है कि उसकी प्राण-शक्ति कैसी रहेगी, कब उसकी शक्तियाँ वृद्धि को प्राप्त होंगी और वह जीवन में सफलता प्राप्त कर सकेगा और कब प्राण-शक्ति के ह्रास (कमी) के कारण उसे असफलता मिलेगी।

जीवन-रेखा की क्षीणता या अभाव

प्राय. सभी हाथ मे यह पाई जाती है। जिन व्यक्तियो के हाथ में यह साधारणतया दिखाई न दे वहाँ भी ध्यान से देखने पर यह क्षीण रूप मे दिखाई देगी लेकिन ऐसे व्यक्तियो मे प्राण-शक्ति का अभाव होगा अर्थात् उनका स्वास्थ्य यदि अच्छा भी दिखाई दे तो भी वे दीर्घायु होंगे यह निश्चय-पूर्वक नही कहा जा सकता। हाँ, यह अवश्य है कि जिनका अगूठा बडा होता है और शीर्षरेखा अच्छी होती है वे जीवनरेखा के क्षीण होने पर भी दीर्घायु भी हो सकते हैं।

कई हाथों में ऐसा होता है कि जीवनरेखा तो आधी ही दूर तक जाती है और भाग्यरेखा पहुँचे के पास से निकलकर गोलाई

लिये हुए आगे जाकर शीर्षरेखा में मिल जाती है। ऐसी स्थिति मे ध्यानपूर्वक निश्चय करना चाहिए कि जीवनरेखा कौन सी है। कई बार जीवनरेखा की सहायक रेखा को लोग जीवनरेखा समझ लेते है। ऐसा भ्रम उन हाथो मे होता है जहाँ जीवनरेखा छोटी और क्षीण होती है और सहायक रेखा बडी और गहरी होती है। ऐसे हाथो मे पहचान का सहज उपाय यह है कि सहायक रेखा शुक्रक्षेत्र के ऊपर होती है और जीवनरेखा शुक्रक्षेत्र को घेरती हुई।

जीवन-रेखा का प्रारम्भ (क)

प्राय करतल के बगल से ही जीवनरेखा प्रारम्भ होती है। यह उसकी स्वाभाविक स्थिति है परन्तु यदि यह बृहस्पति के क्षेत्र से प्रारम्भ हो तो यह समझना चाहिए कि वह व्यक्ति बहुत धनाकांक्षी है और यश तथा मान की इच्छा रखता है। शनि, गुरु, सूर्य, बुध, शुक्र, चन्द्र आदि—जिनके भी क्षेत्र ऐसे व्यक्ति के हाथ पर विशेष उन्नत होगे उसी के अनुसार उसकी महत्वाकांक्षा होगी। यदि बुध का प्रभाव उस पर विशेष है तो वक्ता, विज्ञान या व्यापार मे वह प्रसिद्धि चाहेगा। यदि सूर्य का स्थान और अनामिका प्रमुख है तो धन और कला-सम्बन्धी उसकी आकांक्षायें होगी, ऐसा ही सर्वत्र समझना चाहिए अर्थात् गुरु का प्रभाव अधिक हो तो पद, मान की लिप्सा आदि। जीवनरेखा के प्रारम्भ होने के उपर्युक्त दो ही स्थान है।

जीवनरेखा शुक्रक्षेत्र को 'चाप' की तरह घेरे रहती है, किन्तु बहुत हाथो मे तो घेरा बडा होता है अर्थात् शुक्रक्षेत्र बडा और विस्तृत होता है, किन्तु कुछ हाथो मे जीवनरेखा की गोलाई कम रहती है इस कारण शुक्रक्षेत्र छोटा, सीमित और सकुचित हो

जाता है। जितनी गोलाई अधिक होगी उतना ही शुक्रक्षेत्र का विस्तार अधिक होगा। जितनी गोलाई कम होगी उतना ही शुक्रक्षेत्र छोटा हो जायगा। (देखिए चित्र नं० २२)

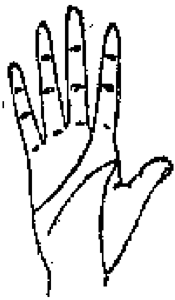

चित्र नं० २२

शुक्रक्षेत्र से आकर्षण, अनुराग, स्त्री-पुरुष का पारस्परिक प्रेम, इच्छा, कामुकता आदि का विचार किया जाता है। इस कारण जिनका शुक्रक्षेत्र सीमित और संकुचित होगा उनके हृदय में प्रेम, आकर्षण, स्त्री का पुरुष के प्रति और पुरुष का स्त्री के प्रति झुकाव कम होगा। ऐसे व्यक्तियों में जब अनुराग की भावना में ही कमी है तो सन्तान उत्पादन शक्ति भी कम ही होगी और इस कारण विवाह होने पर भी उतनी अधिक संख्या में सन्तान नहीं होती जितनी उन लोगों की जिनका शुक्रक्षेत्र पुष्ट और विस्तृत है। इस कारण जीवनरेखा कितना भाग घेरती है यह संतति के दृष्टिकोण से भी महत्व का है। सामान्य नियम यह है कि जीवनरेखा जितनी ही बड़ी होगी उतनी ही मनुष्य की आयु अधिक होगी।

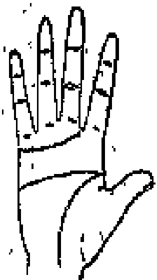

चित्र नं० २१

बहुत बार तो यह देखा कि मृत व्यक्तियों की जीवनरेखा से जितनी आयु प्रतीत होती थी उतनी आयु पूर्ण होने पर उनका शरीरान्त हुआ। किन्तु कई बार यह भी देखा कि जिस अवस्था में उस व्यक्ति की मृत्यु हुई उसके बहुत बाद तक की अवस्था जीवनरेखा

से प्रकट होती थी अर्थात् जीवनरेखा सुस्पष्ट और लम्बी थी। ऐसी स्थिति मे यह शका उठती है कि जब जीवनरेखाओं से उन व्यक्तियो की मृत्यु नही प्रकट होती थी तो उनकी मृत्यु पहले ही कैसे हो गई। इसका उत्तर यही है कि जीवनरेखा से ही आयु के अन्तिम निर्णय पर नही पहुँचना चाहिए। जीवनरेखा स्वाभाविक प्राण-शक्ति प्रकट करती है। हृदय-रेखा, शीर्षरेखा स्वास्थ्यरेखा तथा अन्य रेखाओ व चिह्नों से भी यह देखना चाहिए कि सांघातिक बीमारी या मृत्यु के चिह्न है क्या? इसी कारण हस्तपरीक्षको को सावधान किया जाता है कि किसी एक रेखा या चिह्न से ही शीघ्रता मे परिणाम निकालने की चेष्टा न करे।

यदि ये रेखा दाहिने और बाये हाथ मे भिन्न-भिन्न प्रकार की हो अर्थात् एक मे बडी और एक मे छोटी हो तो निम्नलिखित निष्कर्ष निकालना चाहिए—

(१) यदि दाहिने हाथ में रेखा बड़ी हो तो समझिये कि पैदा होने के समय यह व्यक्ति उतनी प्राण-शक्ति लेकर उत्पन्न नही हुआ था किन्तु बाद मे आहार, विहार, विचार और सयम द्वारा इसकी प्राणशक्ति बढी है और इस कारण इसकी आयु लम्बी हो गई।

(२) यदि बायें हाथ मे रेखा बडी हो तो यह समझना चाहिए कि माता के गर्भ से तो यह पर्याप्त प्राण-शक्ति लेकर आया था किन्तु बाद में उपर्युक्त विविध कारणो से यह शक्ति कम हो गई।

(३) जहाँ भी जीवनरेखा सुस्पष्ट, गम्भीर और दीर्घ हो यह समझना चाहिए कि जीवन और स्वास्थ्य को कायम रखने के लिए काफी प्राणशक्ति है और इसके विपरीत जहाँ जीवनरेखा छोटी हो समझना चाहिए कि उतनी आयु पूर्ण होने पर जीवन को भय है।

रेखा का रूप और लक्षण (ख)

यदि यह रेखा गहरी और सुस्पष्ट हो तो समझिए कि प्राण-शक्ति का प्रवाह उत्तम है। ऐसा व्यक्ति बलशाली और स्वस्थ होगा और बीमारी का डर कम है। प्राय. पुष्ट व्यक्तियो के हाथ मे रेखा स्पष्ट और गहरी होती है। ऐसे व्यक्ति चिन्ता कम करते हैं और उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

यदि जीवनरेखा गहरी न हो और आवश्यकता से अधिक चौडी हो, या शृङ्खलाकार हो तो मांसल और लचकदार करतल होने पर भी ऐसे व्यक्तियो मे उतनी शक्ति नहीं होगी जितनी गम्भीर रेखा वालो में। बहुत हाथों में देखने मे आया है कि प्रारम्भ में तो रेखा सुन्दर है (अर्थात् गहरी और सुस्पष्ट है) किन्तु बाद में पतली होती गई है। इसका अर्थ है कि जीवन के पूर्वभाग में तो उनमें काफी प्राणशक्ति संचित थी किन्तु जीवन के उत्तर भाग में (जहाँ से जीवनरेखा सूक्ष्म होती गई) इस प्राणशक्ति का ह्रास होता गया।

गहरी जीवन-रेखा का प्रभाव

ऊपर बताया जा चुका है कि स्पष्ट, पुष्ट, गम्भीर और दीर्घ जीवनरेखा बल, शक्ति और स्वास्थ्य प्रदर्शित करती है। किन्तु हाथ के और भागो से जो गुण या अवगुण प्रकट होते हैं उनके संयोग से क्या दुष्परिणाम पैदा होते हैं उनका विचार करना भी आवश्यक है—

(१) जिस मनुष्य पर बृहस्पति का प्रभाव अधिक है अर्थात् गुरु का क्षेत्र उन्नत और विस्तृत हो और तर्जनी अधिक लम्बी हो तथा उसकी उगलियो के तृतीय पर्व यदि अन्य पर्वों की अपेक्षा पुष्ट और

फूले हुए हो तो ऐसा व्यक्ति जीवनरेखा की प्रदान की हुई बल और शक्ति का दुरुपयोग करता है और अत्यधिक भोजन (जिन परिवारो मे मदिरापान प्रचलित है वहाँ मदिरापान) द्वारा सदैव अपनी तृप्ति करता रहता है। यदि ऐसे हाथ व हथेली मे अधिक लाल वर्ण भी दिखाई दे तो समझिए कि अति भोजन और अति मदिरापान अपना काफी प्रभाव जमा चुके हैं।

ऐसे हाथो मे जीवनरेखा के पुष्ट, गम्भीर और दीर्घ रहने पर भी यह भय बना रहता है कि यद्यपि शरीर और शक्ति मे क्रमिक ह्रास नही है किन्तु अधिक भोजन और मदिरापान के असयम के फलस्वरूप सदैव स्वस्थ रहने वाला भी व्यक्ति रक्तचाप, मूर्च्छा आदि का सहसा शिकार हो जाता है। इन रोगो के कारण सहसा चक्कर आ जाना, बेहोशी, पक्षाघात आदि साघातिक रोग हो जाते हैं।

(२) उन्नत सूर्यक्षेत्र, सूर्यरेखा एव लम्बी अनामिका वाले व्यक्ति प्राणशक्ति का सदुपयोग करते हैं और दीर्घायु होते हैं।

(३) जिन पर मगल का प्रभाव अधिक हो अर्थात् मगल के क्षेत्र उन्नत और विस्तृत हो उनकी भी वही प्रवृत्ति होती है जैसी गुरु के प्रभाव वाले व्यक्तियो की, ऊपर वर्णित की जा चुकी है।

(४) शुक्रक्षेत्र जिनका उच्च और विस्तृत है और जिनके अन्य लक्षण भी शुक्र का विशेष प्रभाव प्रकट करते हैं ऐसे व्यक्ति भी अधिक भोग-विलास द्वारा प्राणशक्ति का दुरुपयोग करते हैं और परिणाम ह्रास ही होता है।

(५) चन्द्र, बुध या शनि का प्रभाव जिन पर विशेष होता है उनकी वृत्तियाँ अपेक्षाकृत सयमित होती है।

पतली और कम गहरी रेखा

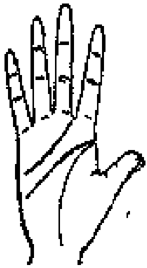

चित्र नं० २४

यदि जीवनरेखा बहुत पतली और कम गहरी हो तो समझना चाहिए कि प्राणशक्ति सामान्य से कम है। ऐसे व्यक्ति थोड़ा भी कारण उपस्थित होने पर बीमार हो जाते हैं। ज्यादा शारीरिक कष्ट या परिश्रम भी सहन नहीं कर सकते। जीवनरेखा किस हद तक पतली और उथली है यह निश्चय करने के लिए हाथ की और रेखाएँ भी देखनी चाहिए और फिर तुलनात्मक दृष्टि से निर्णय करना उचित है। यदि अन्य रेखाओं की अपेक्षा जीवनरेखा गहरी है तो ऐसा व्यक्ति चिन्ता कम करेगा। किन्तु यदि और रेखाओं की अपेक्षा जीवनरेखा पतली है तो ऐसा व्यक्ति सदैव यह अनुभव करेगा कि वह बहुत परिश्रम कर रहा है और उस पर बड़ा जोर पड़ रहा है। उसके स्वास्थ्य बिगड़ने का डर रहता है। रेखा पर जहाँ भी कोई गड़बड़, टूट या अन्य बीमारी का चिह्न हो तो अवश्य बीमारी होती है। बहुत पतली या उथली रेखा वाले व्यक्ति सदैव चिन्तित-से रहते हैं। उन्हें भविष्य चिन्ता और विपत्तियों से ग्रस्त प्रतीत होता है। इसलिए जहाँ कष्ट, परिश्रम, आशंका या साहस का कार्य हो वहाँ ऐसे व्यक्तियों को कदापि नहीं चुनना चाहिए क्योंकि वे सदैव काल्पनिक आशंकाओं से ही भयभीत रहते हैं।

जहाँ पतली रेखा के अवगुण हैं वहाँ इसका गुण भी यह है कि यदि बृहस्पति या मंगल का चिह्न पर विशेष प्रभाव है ऐसे व्यक्तियों के हाथ में पतली रेखा हो तो वे अत्यधिक मोयन नहीं करेंगे और

इस कारण बीमार नहीं होंगे। परन्तु क्षीण रेखा वाले व्यक्तियों का स्नायु-मंडल प्रायः कमजोर रहता है और ये लोग सुस्त रहते है।

चौड़ी और उथली रेखा

रेखा का चौड़ा होना गुण नहीं है। सकडी जगह में मात्रा उतनी ही होने से प्रवाह तीव्र होता है। किन्तु प्राण-शक्ति जब चौड़ी रेखाओं में होकर प्रवाहित होती है तो उसकी गति मन्द हो जाती है। इसलिए यदि आप देखें कि जीवनरेखा गहरी नहीं है और चौड़ी है तो समझिए कि प्राणशक्ति की कमी है। शरीर भी बलवान नहीं होता। ऐसे व्यक्ति तुरन्त रोग के शिकार हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति यदि देखने में मोटे भी हो तो समझिए कि उनमें बल अधिक नहीं है।

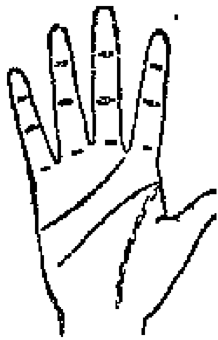

चित्र सं० २५

रोग के कीटाणु ऐसे शरीर में शीघ्र ही अपना घर बना लेते है। ऐसे व्यक्तियों में आत्मविश्वास की भी कमी रहती है और वे सदैव किसी-न-किसी रोग की शिकायत करते रहते हैं। उन्हें प्रायः अपने मित्रों और सम्बन्धियों पर निर्भर रहने का अभ्यास हो जाता है और स्वयं जीवन में विशेष सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। ऐसे व्यक्ति केवल ऐसा काम कर सकते हैं जो एक ही क्रम का हो और जिसमें नवीन स्फूर्ति, साहस या उत्तरदायित्व न हो। यदि ऐसे व्यक्तियों को किसी साहस और उत्तरदायित्व के काम में लगा दिया जाय तो ऐसे काम में वे अधिक दिन तक नहीं लगे रह सकते। यदि ऐसी रेखा निश्शक्त से, ढीले हाथ में हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत ही आलसी होता है।

जिनकी उगली के अग्रभाग चौडे (आगे से फैले) होते है उनके हाथ मे भी चौडी और उथली रेखा हो तो उनको भी यह निष्क्रिय बना देती है और इनकी कार्य-शक्ति या क्रिया बहुत अल्प-मात्रा मे रहती है। बृहस्पति, मगल या शुक्र किसी भी ग्रह का प्रभाव इन मनुष्यो के ऊपर हो तो इनकी इच्छाएँ चित्त तक ही सीमित रहती हैं। कार्यान्वित करने की क्षमता उनमे नही होती। ऐसे व्यक्तियो की सन्तान भी कम ही होती हैं। चौडी और उथली रेखा सब व्यक्तियो के हाथो में एक-सी नही होती। जितनी ही अधिक मात्रा में ये अवगुण हो उनके अनुरूप ही फलादेश करना चाहिए। यदि बाये हाथ की अपेक्षा दाये हाथ मे रेखा अच्छी हो तो समझना चाहिए कि अब दशा सुधर रही है। किन्तु यदि दाहिने हाथ में रेखा अधिक खराब हो तो समझिए कि दशा और भी बिगड रही है।

यदि हाथ की अन्य रेखाऐं उत्तम हो और केवल जीवनरेखा मे ही ये अवगुण हो तो समझना चाहिए कि असफलता का कारण ऐसे व्यक्ति की अस्वस्थता और निर्बलता है। शनि के क्षेत्र को भी ध्यान से देखना चाहिए। यदि यह क्षेत्र भी विस्तृत हो या शनि का प्रभाव विशेष हो तो ऐसे व्यक्ति प्राय दुखी, गमगीन और कष्ट पाने वाले होते है और आत्म-हत्या तक करने की इच्छा हो जाती है।

यदि स्त्रियो के हाथ में उपर्युक्त सब बाते हो और चन्द्रमा के क्षेत्र के नीचे के तृतीय भाग से स्त्री-रोग भी प्रकट होते हो तो उनमे उपर्युक्त निराशावाद और ऐहिक लीला समाप्त करने की भावना और भी अधिक होती है। ऐसे हाथो मे यह भी ढूंढना चाहिए कि किस बीमारी के चिह्न या लक्षण है। माता-पिता को उचित है कि ऐसेलोगो का विवाह न करे।

यदि जीवन-रेखा नसेनी के छोटे-छोटे डंडो की भांति छोटे-छोटे आडे रेखा-खण्डो से बनी हो तो ऐसी रेखा मे भी वही अवगुण समझने चाहिए जो चौडी और उथली रेखा के सम्बन्ध मे पहले कहे जा चुके हैं। ऐसे व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा नही रहता और वह बारम्बार बीमार होता है। यदि जीवन-रेखा छोटी-छोटी सूक्ष्म रेखाओ से बनी हो तो ऐसे व्यक्ति का स्नायु-मण्डल क्षीण होता है और वह मनुष्य निर्बल होता है। हाथ मे ग्रहो के विविध क्षेत्रो के देखने से पता लगेगा कि शरीर मे कौनसा रोग है। इसी प्रकार यदि जीवनरेखा शृङ्खला की भांति हो तो उसमे भी उपर्युक्त दोष होते हैं।

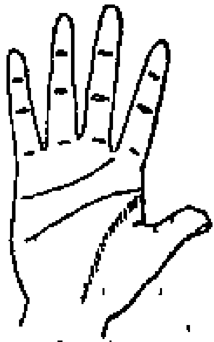

चित्र नं० २६

जीवनरेखा के जिस भाग मे नसेनी की तरह या शृङ्खलाकार या अन्य दोषयुक्त बनावट हो उसी के अनुसार वय मे रोग, स्वास्थ्य हानि, निर्बलता आदि कहना चाहिए। जीवन के आरम्भ (बचपन) में बच्चे अधिकतर बीमार पडते हैं। इसलिए जीवन-रेखा का प्रारम्भिक भाग ही छिन्न-भिन्न या शृङ्खलाकार रहता है। यदि प्रारम्भ मे तो जीवनरेखा बहुत सुन्दर हो और बाद में कटी-फटी, उथली, चौडी आदि अवगुणो से युक्त हो तो वर्तमान में जो अवस्था आवे उतनी उम्र में बीमारी या अस्वास्थ्य कहना चाहिए। परन्तु जिनकी सम्पूर्ण जीवनरेखा ही दोषयुक्त हो वे कभी भी पूर्ण स्वस्थ नही रह सकेंगे।

ग्रहो के क्षेत्रो मे रेखा, जाल, क्रॉस या अन्य चिह्नो से रोग-

विशेष का पता लगेगा। नाखूनों की बनावट, रंग, हथेली का वर्ण, स्वास्थ्य रेखादि से भी रोग का पता लगेगा और जहाँ-जहाँ जीवन-रेखा टूटी हो या फटी हो या कटी हो या बिन्दु अथवा द्वीप-चिह्न से युक्त हो उस-उस अवस्था में बीमारी कहनी चाहिए।

जीवन-रेखा से रोग-विशेष का परिज्ञान और इसको आड़ी काटने वाली रेखाएँ (ग)

जो भी रेखाएँ जीवनरेखा को काटती हैं वे प्राण-शक्ति के प्रवाह में बाधा पहुँचाती हैं और जिस वय में यह अवरोध प्रकट होता है उसी समय स्वास्थ्य में गड़बड़ होती है। बहुत से हाथों में ऐसा देखा है कि अति सूक्ष्म—अत्यन्त छोटी-छोटी रेखाओं से जीवन-रेखा कटी रहती है लेकिन जीवनरेखा में कोई टूट नहीं होती। इन अत्यन्त सूक्ष्म काटने वाली रेखाओं का प्रभाव मानसिक स्वास्थ्य को बिगाड़ना होता है अर्थात् कोई भयानक शारीरिक बीमारी तो नहीं होती किन्तु अनेक चिन्ताओं के कारण मन उद्विग्न रहता है इस कारण मनुष्य अपने को पूर्ण स्वस्थ अनुभव नहीं करता। जितनी छोटी, सूक्ष्म रेखा आयुरेखा को काटे उतना ही मानसिक उद्वेग या शारीरिक रोग के अवसर समझने चाहिए। परन्तु यदि ये काटने वाली रेखाएँ गहरी हों तो उत्कट बीमारी की द्योतक हैं। यदि इन काटने वाली रेखाओं का रंग लाल हो तो ज्वर द्वारा रुग्णता होगी। जितनी गहरी काटने वाली रेखा हो उतनी ही कष्टदायक रुग्णता का फलादेश करना उचित है।

ये काटने वाली रेखाएँ किसी-न-किसी ग्रहक्षेत्र पर जाकर रुकती हैं और उनसे रोग-विशेष का परिज्ञान होगा।

(१) यदि कोई आड़ी रेखा जीवनरेखा को काटे और शनि-क्षेत्र

पर जहाँ वह जाकर रुके रेखाजाल हो तो शनि के वर्ग का रोग होगा—कौनसा रोग होगा यह नाखूनों और वर्ण से ज्ञात हो सकेगा।

(२) यदि जीवनरेखा को काटने वाली रेखा सूर्यक्षेत्र के नीचे हृदयरेखा पर जाकर रुके और वहाँ हृदयरेखा पर बिन्दु या द्वीप हो या स्वयं हृदयरेखा ही कटी हुई हो तो हृद्रोग समझना चाहिए। यदि जीवनरेखा इस कटे हुए स्थान के आगे दोनों हाथों में टूटी हुई हो तो जीवन का ही अन्त हो जावेगा। हृद्रोग जहाँ सूचित होता हो वहाँ नाखूनों आदि अन्य बताये हुए लक्षणों पर भी ध्यान देना चाहिए।

(३) यदि काटने वाली रेखा जाकर लहरदार स्वास्थ्यरेखा से मिलती हो तो पीलिया या तीव्र पित्तज्वर होगा।

(४) यदि काटने वाली रेखा मंगल के प्रथम क्षेत्र पर पर्यवसित हो और वहाँ रेखाजाल हो तो रक्तविकार, रक्त-प्रसार, या गले (खाँसी, निमोनिया आदि) की बीमारी का द्योतक है। स्वास्थ्यरेखा पर द्वीप-चिह्न हैं या नाखूनों से यदि इन रोगों की पुष्टि होती है क्या यह भी देखना चाहिये।

(५) यदि काटने वाली रेखा चन्द्रक्षेत्र के ऊपरी भाग पर जाकर समाप्त हो और वहा पर रेखाजाल हो तो संग्रहणी, अंतड़ियों के रोग, उदरशोथ आदि रोग होंगे।

(६) यदि काटने वाली रेखा का चन्द्रक्षेत्र के मध्य भाग में अन्त हो तो वायुजनित, गठिया आदि रोग होते हैं। यदि रेखा के अन्त पर चन्द्रक्षेत्र के मध्य में अशुभ जाल-चिन्ह हो तो इस रोग की पुष्टि होती है। अथवा यदि जीवनरेखा को काटने वाली किसी दूसरी रेखा में द्वीप-चिह्न हो और वह शनिक्षेत्र को जावे तो भी इसकी पुष्टि होती है।

(७) यदि जीवनरेखा को काटने वाली रेखा चन्द्रक्षेत्र के नीचे के भाग में समाप्त हो और वहाँ जाल, चिह्न या क्रॉस या इस रेखा को काटने वाली दूसरी छोटी रेखा हो तो मूत्राशय या स्त्री-सम्बन्धी रोग होते हैं। यदि हाथ फूले हुए, मुलायम और सफेद रंग के हों और चिकने नजर आयें तो उपर्युक्त रोगों की पुष्टि होती है। यदि स्वास्थ्य-रेखा पर तारे का चिह्न हो, विशेष-कर उस स्थान पर जहाँ स्वास्थ्य-रेखा शीर्षरेखा को काटती हो तो भी उपर्युक्त रोगों की पुष्टि होती है।

(८) यदि जीवन-रेखा अच्छी हो और यह प्रदर्शित करती हो कि स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तो इन रोगों से थोड़े ही दिनों के लिए बीमारी होगी और फिर जातक शीघ्र ही अच्छा हो जायगा। यदि जीवन-रेखा अत्यन्त पतली या अत्यन्त चौड़ी, उथली या शृङ्खलाकार-हो तो उसका स्वास्थ्य जल्दी-जल्दी बिगड़ेगा और इस कारण जीवन रेखा को काटने वाली रेखाएँ भी अधिक संख्या में दिखाई देंगी।

किसी भी आड़ी काटने वाली रेखा से जब रोग की सम्भावना प्रतीत हो तब यह देखना चाहिए कि जिस स्थान पर जीवन-रेखा कटी है उसके आगे के भाग मे जीवन-रेखा की कैसी दशा है। यदि काटने वाली रेखा का अन्त, द्वीप, क्रॉस या बिन्दु पर होता है, या यह शीर्ष-रेखा को काटती है और जिस स्थान पर जीवन-रेखा कटी है उसके आगे का भाग चौड़ा और उथला है तथा वहाँ जीवन-रेखा पर द्वीप-चिह्न है तो समझना चाहिए कि इस बीमारी से उसका शारीरिक स्वास्थ्य और दिमागी ताकत दोनों को गहरा आघात पहुँचेगा और बीमारी के बाद उसकी दशा अच्छी नहीं रहेगी।

(९) कभी-कभी जीवन-रेखा को काटने वाली रेखाएँ शुक्र-क्षेत्र

पर प्रभावरेखाओं से प्रारम्भ होती है। ऐसी स्थिति से समझना चाहिए कि किसी चिन्ता-विशेष (प्रभाव-रेखा सम्बन्धी) के कारण रोग होगा। यदि प्रभाव-रेखा गहरी और दृढ हो तो उपर्युक्त निष्कर्ष की पुष्टि होती है।

(१०) यदि आडी काटने वाली रेखा हृदय-रेखा और शीर्ष-रेखा के मध्य में समाप्त हो और शीर्ष और हृदय रेखाओं के बीच का यह मध्य भाग बहुत चौड़ा न हो तो दमे का रोग होगा। यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि यह मध्यभाग जब सकडा होता है तो दम घुटने की बीमारी होती है। इसी कारण दमे की बीमारी का निर्देश किया गया है। यदि यह स्थान सकडा न हो तो दमा न होगा।

(११) यदि आडी काटने वाली रेखा जाकर स्वास्थ्यरेखा पर समाप्त हो और स्वास्थ्य-रेखा नसैनी की भाँति हो तो उदर-रोग होगा।

(१२) यदि आडी काटने वाली रेखा जाकर स्वास्थ्यरेखा पर ऐसी जगह समाप्त हो जहाँ स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो गले और फेफड़े का रोग कहना चाहिए।

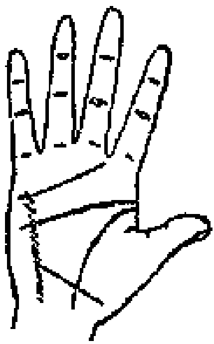

चित्र नं० २७

जीवन-रेखा-चिह्नों से रोग-परिज्ञान

द्वीप—यदि जीवन-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो समझना चाहिए कि प्राण-शक्ति दो धाराओं में फूटकर बह रही है। इस कारण उसकी गति और शक्ति में कमी हो गई। स्वास्थ्य की वृद्धि के लिये यह समय अच्छा नहीं होता और जितना जीवन-रेखा का भाग

द्वीप-युक्त होगा उतने ही जीवन के काल तक अस्वस्थता रहेगी। यदि द्वीप समाप्त होने के बाद जीवन-रेखा सुन्दर और पुष्ट हो तो इस अस्वास्थ्य के बाद जातक पूर्ण स्वस्थ हो जायगा, किन्तु यदि बाद की जीवन-रेखा पतली या दोष-युक्त है तो पुनः पूर्ण स्वस्थ नहीं होगा। यदि यह द्वीप-चिह्न बहुत छोटा है तो एक ही बार बीमार करेगा। अन्य रेखाओं तथा ग्रह-क्षेत्रों से यह देखना चाहिए कि किस प्रकार के रोग की सम्भावना है।

यदि जीवन-रेखा में निरन्तर एक के बाद दूसरा—इस प्रकार कई द्वीप-चिह्न हों तो एक प्रकार से शृङ्खलाकार रेखा का-सा स्वरूप दिखाई देगा। ऐसी दशा में निरन्तर स्वास्थ्य खराब रहेगा, यह फलादेश करना उचित है। यदि प्रथम द्वीप-चिह्न बड़ा हो और बाद के छोटे हों तो यह समझिए कि पहली बीमारी बहुत सख्त और गहरी होगी और बाद की हल्की। किन्तु यदि इससे उल्टा क्रम हो अर्थात् पहला द्वीप छोटा और बाद के बड़े होते जाएँ तो उत्तरोत्तर रोगों में वृद्धि होगी।

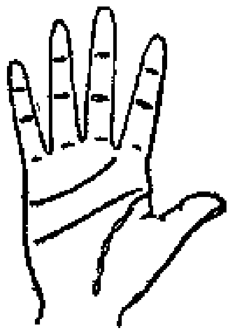

चित्र नं० २८

यदि जीवन-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो हाथ के अन्य भाग के चिह्नों से किस प्रकार रोग का अनुमान करना चाहिए यह स्पष्ट किया जाता है। यदि जीवनरेखा पर द्वीप-चिह्न हो और—

(१) सारे हाथ पर बहुत सी पतली आड़ी रेखाएँ हों तो इससे स्नायु-दुर्बलता और मानसिक अशान्ति के कारण स्वास्थ्य हानि होगी।

(२) यदि शीर्ष-रेखा छोटी-छोटी सूक्ष्म आड़ी रेखाओं से कटी हो तो सिर-दर्द, दिमाग की कमजोरी, नजला बिगड़ना इस प्रकार के रोग होते है। किन्तु यदि शीर्ष-रेखा को काटने वाली छोटी रेखाएँ गहरी हों तो शिरोवेदना या मस्तिष्क-सम्बन्धी गहरा रोग।

(३) यदि शीर्ष-रेखा पर भी द्वीप हो तो दिमाग की कमजोरी और मस्तक के अन्दर स्नायु को आघात पहुँचाने वाले रोग।

(४) यदि शीर्षरेखा पर बिन्दु (पिन की नोक के बराबर गड्ढे) हो तो शिरो-रोग। यदि ये बिन्दु ललाई लिये हो तो रोग मे भी तीव्रता हो।

(५) यदि हृदयरेखा पर बिन्दु हो तो हृदय रोग। यदि हृदय-रेखा पर बहुत से बिन्दु हो तो बारम्बार हृदय-रोग का आक्रमण होगा और इस कारण स्वास्थ्य गिरा हुआ रहेगा। इसकी पुष्टि के लिए हथेली के वर्ण और नाखूनो को भी देखना चाहिए।

(६) यदि हृदय-रेखा पर भी द्वीप हो तो हृदय की कमजोरी के कारण स्वास्थ्य गिरा हुआ रहे।

नोट—उपर्युक्त नम्बर ५ और ६ मे बताये हुए लक्षणो मे अन्तर यह है कि यदि हृदय-रेखा पर पिन की नोक के बराबर छोटे-छोटे गड्ढे हो तो हृदयरोग के तीव्र आक्रमण (दिल की बीमारी के दौरे) होते है। किन्तु यदि हृदयरेखा पर केवल द्वीप हो तो हृदय की साधारण कमजोरी की वजह से स्वास्थ्य गिरा हुआ होगा।

(७) यदि स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो तो पित्त-रोग, यकृत-सम्बन्धी खराबी। देखिये चित्र न० २६ (पृष्ठ १६३)

(८) यदि स्वास्थ्य-रेखा नसेनी की भाँति हो तो अपच, मन्दाग्नि तथा अन्य उदर रोग।

(९) ग्रह-क्षेत्रों पर जाल-चिह्न, क्रॉस, छोटी काटने वाली रेखा ध्यान से देखनी चाहिए। जिस ग्रह-क्षेत्र पर ऐसे चिह्न हों उसी ग्रह-सम्बन्धी रोग होगा।

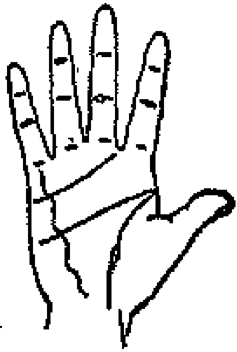

चित्र न० २९

नोट—यदि जीवन-रेखा पर कोई बिन्दु-चिह्न हो और उसके बाद ही जीवनरेखा पर द्वीप बना हो तो यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि तीव्र रोग का आक्रमण होगा और इसके बाद स्वास्थ्य गिरा रहेगा।

यदि जीवन-रेखा पर कई द्वीप-चिह्न हों और हाथ में उपर्युक्त अनेक रोगों के लक्षण हों तो कब कौन-सी बीमारी होगी?

यदि जीवनरेखा पर एक से अधिक द्वीप हों और हाथ में एक से अधिक रोग के लक्षण हों तो यह नतीजा निकालना चाहिए कि यह द्वीप-चिह्न पृथक्-पृथक् रोगों के कारण बीमार या कमजोर रखेंगे। यथा—

(१) यदि जीवनरेखा के प्रारम्भिक भाग में एक द्वीप हो और दूसरा बहुत आगे जाकर और शीर्षरेखा के प्रारम्भिक भाग में रोग के लक्षण हों तथा हृदयरेखा के बाद के भाग में द्वीप हो तो समझना चाहिए कि जीवनरेखा के दो द्वीप, जो दो रोगकाल बताते हैं उनमें प्रथम रोग का परिचय शीर्षरेखा से मिलेगा क्योंकि जीवनरेखा का प्रथम द्वीप जीवनरेखा के प्रारम्भिक भाग में है और शीर्षरेखा का द्वीप भी शीर्षरेखा के प्रारम्भिक भाग में ही

है। जीवन-रेखा मे जो द्वितीय द्वीप है वह आगे चलकर है अर्थात् अधिक आयु मे है और इसके मुकाबिले का रोग-लक्षण, हृदय-रेखा मे भी आगे जाकर है अर्थात् अधिक उम्र में है। इस कारण द्वितीय बार जब यह जातक विशेष बीमार होगा तब हृदयरोग के कारण, यह निष्कर्ष निकालना उचित है।

(२) जीवन-रेखा पर यदि द्वीप-चिह्न हो और उस द्वीप से प्रारम्भ होकर काटने वाली रेखा (जीवनरेखा को) यदि किसी ग्रह-क्षेत्र को जाती हो तो उस ग्रह-वर्ग-सम्बन्धी रोग का अनुमान करना चाहिए। जिस द्वीप का जिस ग्रह-क्षेत्र से (काटने वाली रेखा द्वारा) सम्बन्ध हो उस द्वीप से निर्धारित जीवन-काल मे, उसी ग्रह-क्षेत्र-सम्बन्धी रोग होगा। किस ग्रह-क्षेत्र से क्या बीमारी होती है इसका विवरण नीचे दिया जाता है—

(१) यदि जीवन-रेखा पर द्वीप से कोई रेखा निकलकर शनि-क्षेत्र को जाती हो और इस काटने वाली रेखा पर भी द्वीप-चिह्न हो तो गठिया या वायु-सम्बन्धी विकार होगा। यदि जीवन-रेखा के द्वीप से दूसरी रेखा चन्द्र-क्षेत्र के मध्यभाग पर जाती हो तो इस रोग की पुष्टि होती है।

(२) यदि जीवन-रेखा पर द्वीप मे से कोई रेखा शनि-क्षेत्र को जाती हो और वहाँ जाल-चिह्न हो, शीर्ष-रेखा के उस भाग पर जो शनि-क्षेत्र के नीचे है विन्दु या द्वीप हों; तथा नाखून रेखायुक्त और जल्दी टूटने वाले हों तो लकवे की बीमारी होगी ?

(३) जीवन-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो और उससे निकलकर कोई रेखा गुरु-क्षेत्र को जाती हो (और वहाँ लाल बिन्दु हो), हाथ का वर्ण और रेखाओ का वर्ण लाल हो तो मूर्च्छा (अधिक

भोजन, मदिरा-पान आदि के कारण-रक्तचाप अधिक होने के कारण रोग), यदि मंगल के प्रथम क्षेत्र पर क्रॉस या जाल-चिह्न हो तो इसकी पुष्टि होती है।

(४) जीवन-रेखा पर द्वीप हो, शनि-क्षेत्र पर जाल चिह्न हो और इन दोनों को कोई रेखा जोड़ती हो, स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो तो पित्त रोग, पाचन-शक्ति की कमी, यकृत रोग आदि। देखिए चित्र नं० ३०।

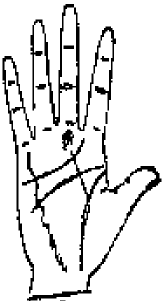

चित्र नं० ३०

यदि हाथ का रंग पीला हो तो इसकी पुष्टि होती है और यदि शीर्ष-रेखा पर छोटे-छोटे द्वीप हों या शीर्ष-रेखा को छोटी-छोटी कई रेखाएँ काटती हों तो पित्त के कारण सिरदर्द।

अस्वास्थ्य या बीमारी देखनी हो तो जीवन-रेखा पर विशेष दृष्टि देनी चाहिए। स्त्रियों में प्रायः ४२ से ४६ वर्ष की अवस्था में जीवन-रेखा पर द्वीप-चिह्न होता है।

यदि इस द्वीप के बाद जीवन-रेखा गहरी हो तो बाद में स्वास्थ्य ठीक रहेगा किन्तु यदि बाद का भाग अधिक पतला या चौड़ा हो या उथला या शृंखलाकार हो तो ऐसी स्त्रियों में पहले जैसी शक्ति और स्वास्थ्य का अभाव रहता है। यदि साथ-ही-साथ चन्द्र-क्षेत्र के नीचे के भाग में जाल-चिह्न हो तो स्त्री-रोग अवश्य होते हैं। यदि जीवन-रेखा के द्वीप से चन्द्र-क्षेत्र जाल तक कोई रेखा जाती हो तो इस रोग की पुष्टि होती है। जहाँ स्वास्थ्य-रेखा और शीर्ष-रेखा मिलती है वहाँ यदि तारे का चिह्न हो तो भी इस रोग की पुष्टि होती है।

जीवन-रेखा पर बिन्दु-चिह्न

जीवन-रेखा पर जहाँ बिन्दु-चिह्न हो (यानी पिन के ऊपरी भाग के बराबर गड्ढे का चिह्न हो) उन्हे रोग का लक्षण समझना चाहिए। कई बार ये गड्ढे बहुत बडे भी होते है, ये जितने बडे होंगे उतने ही भयानक सिद्ध होगे अर्थात् छोटा बिन्दु हल्की बीमारी का द्योतक है, बडा और गहरा बिन्दु बडी और गहरी बीमारी का। रग के अनुसार भी फलादेश मे तारतम्य होता है। जैसे—

(१) यदि बिन्दु सफेद हो तो इतने अधिक रोगकारक नही होते। फिर भी कौनसा रोग होगा इसका निर्णय हाथ के अन्य भागो से करना चाहिए।

(२) यदि गहरा लाल चिह्न हो तो तीव्र ज्वर, मोतीभरा आदि। बहुत बार इन गड्ढो के बाद जीवन-रेखा श्रृंखलाकार या अन्य दोषयुक्त हो जाती है। इससे यह परिणाम निकालना चाहिए कि ज्वर-रोग के बाद जातक पूर्ण स्वास्थ्य-लाभ नही कर सका।

(३) यदि जीवन-रेखा मे जिस स्थान पर बिन्दु हो उसके आगे के भाग को काटती हुई कोई रेखा शीर्ष-रेखा पर जाये और वहाँ (शीर्ष-रेखा पर) कोई बिन्दु, द्वीप, क्रॉस या छोटी काटने वाली रेखा हो तो तीव्र ज्वर के कारण मस्तिष्क की दुर्बलता।

(४) यदि जीवन-रेखा पर बिन्दु हो और वहाँ से कोई रेखा मंगल-क्षेत्र पर जाये और स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो गले और छाती की बीमारी।

(५) यदि जीवन-रेखा पर स्थित बिन्दु से कोई रेखा चन्द्र-क्षेत्र पर जावे और उस पर जाल-चिह्न हो और दूसरी रेखा जीवन-

रेखा के बिन्दु से गुरु-क्षेत्र पर जाये तो अंतड़ियों में सूजन तथा उदर-विकार कहना चाहिए।

(६) जीवन-रेखा पर बिन्दु हो और वहाँ से कोई रेखा निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर जावे तथा इस दूसरी रेखा पर द्वीप, बिन्दु या क्रॉस का चिह्न हो तो हृदय रोग।

(७) जीवन-रेखा पर बिन्दु हो और इसको काटती हुई कोई रेखा ऐसी स्वास्थ्य-रेखा से मिले जो लहरदार हो तथा जिस पर बिन्दु या क्रॉस-चिह्न हो या किसी अन्य छोटी रेखा से कटी हो तो पित्त रोग, यकृत रोग आदि।

(८) जीवन-रेखा पर बिन्दु-चिह्न हो और चन्द्र-क्षेत्र के मध्य-भाग पर जाल-चिह्न, क्रॉस या अस्पष्ट तारे का चिह्न हो या छोटी-छोटी आड़ी रेखाएँ हो तो गठिया रोग। यदि शनि-क्षेत्र पर बिन्दु-चिह्न हो और वहाँ से कोई रेखा चलकर जीवन-रेखा को काटती हो तो इस रोग की पुष्टि होती है।

(९) जीवन-रेखा पर बिन्दु हो और वहाँ से कोई रेखा चलकर चन्द्र-क्षेत्र के नीचे भाग पर आये और वहाँ तारे का अस्पष्ट चिह्न, जाल, क्रॉस या छोटी-छोटी आड़ी रेखाएँ हो तो गुर्दे तथा मूत्राशय-सम्बन्धी रोग होते है।

(१०) यदि जीवन-रेखा पर ऐसा बिन्दु हो, जो पीला हो, तो पित्त-ज्वर, यकृत-रोग आदि प्रकट करता है।

(११) यदि जीवनरेखा पर बिन्दु हो और उसको काटती हुई कोई रेखा शनि-क्षेत्र पर आवे और वहाँ क्रास-चिह्न हो तो ऊँचे से गिरना, किसी मोटर या सवारी से टकरा जाना या ऐसा ही कोई अकल्पित आघात या दुर्घटना का भय होता है।

यदि जीवन-रेखा टूटी हुई हो (घ)

यदि जीवनरेखा टूटी हुई हो तो समझना चाहिए कि प्राण-शक्ति के एकरस प्रवाह मे बाधा पड गई। यदि जीवन-रेखा पुष्ट और गम्भीर है तो जीवन-रेखा खडित होने का अधिक दुष्परिणाम नही होता। किन्तु यदि जीवन-रेखा चौडी, उथली तथा शृङ्खलाकार हो तो प्राण-शक्ति पहले ही कम है यह प्रकट होता है। इस कारण जीवन-रेखा खडित होने से स्वास्थ्य को विशेष धक्का पहुँचता है।

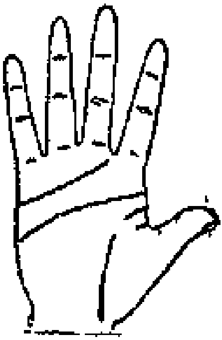

चित्र नं० ३१

जीवन-रेखा खडित होने का अर्थ है तीव्र रोग या दुर्घटना। यदि जीवन-रेखा टूटी हुई हो और फिर प्रारम्भ हो गई हो अर्थात् दोनों खडो मे विशेष अन्तर न हो तो उतना भयानक नही है। यदि इस टूटे हुए स्थान के चारो ओर कोई चतुष्कोण हो तो आपत्ति से रक्षा होना प्रकट करता है। इस प्रकार की हल्की टूट, साधारण दुर्घटना या बीमारी प्रकट करती है और जिस प्रकार बिन्दु या द्वीप-चिह्न अशुभ लक्षण है उसी प्रकार इसे भी समझना चाहिए उससे अधिक भयकर नही।

किन्तु यदि जीवनरेखा अधिक टूटी हुई हो अर्थात् जीवन-रेखा के दोनो टुकड़ो के मध्य भाग मे अधिक अन्तर हो तो जीवन को भय प्रकट करता है। यदि टूट के स्थान पर जीवन-रेखा के टुकड़े पीछे की ओर शुक्र-क्षेत्र पर कुछ घूमे हुए दिखाई दे तो और भी भयकर है। जीवन-रेखा के दोनो खडो मे जितना अधिक अन्तर हो और

जितना अधिक, टूट की जगह, इन टुकड़ों का शुक्र-क्षेत्र पर झुकाव हो उतनी ही अधिक मृत्यु की सम्भावना समझिए।

जहाँ जीवनरेखा लम्बी हो और अचानक टूट गई हो वहाँ उपर्युक्त निष्कर्ष निकालना उचित है। पुष्टि के लिए दोनों हाथों को देखकर परिणाम निकालिए। यदि बायें हाथ में जीवनरेखा खण्डित है और दाहिने में ठीक है तो उतना भय नहीं।

किन्तु यदि सारी जीवनरेखा ही छोटे-छोटे टुकड़ों से बनी हो तो उसका वही भाव होगा जो शृंखलाकार रेखा का। ऐसे व्यक्ति की प्राणशक्ति निर्बल होने के कारण उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं होगा। यदि प्रत्येक टूट के बाद रेखा पतली होती जाती है तो ऐसा जातक भी उत्तरोत्तर निर्बल होता जायगा। जिस भाग में जीवन-रेखा है उस भाग से स्वास्थ्य की दशा और जहाँ पर टूट है वहाँ से रोग की दशा का अनुमान करिये। किस प्रकार के रोग-विशेष होंगे यह हाथ के अन्य भागों से मालूम होगा।

किन्तु यदि जीवनरेखा के छोटे-छोटे टुकड़ों में प्रारम्भिक क्षीण हों और बाद वाले सबल तथा पुष्ट प्रतीत हों तो समझिए कि उत्तरोत्तर स्वास्थ्य अच्छा होता जायगा। जीवनरेखा जहाँ ज़रा सी खण्डित हुई हो उसके आगे ही उस पर द्वीप-चिह्न हो या जीवन-रेखा शृंखलाकार हो गई हो तो गहरी बीमारी के बाद भी काफी समय तक कुछ-न-कुछ बीमारी चलती रहेगी।

यदि वृद्धावस्था में जीवनरेखा खण्डित हो और उसके बाद का रेखा-खण्ड क्रमशः क्षीण होता चला गया हो तो समझिए कि वृद्धावस्था की किसी भयानक बीमारी के बाद स्वास्थ्य गिरता ही गया है। यदि बाद में अधिक खण्डित दिखाई दे तो उस स्थान पर मृत्यु की शंका होगी।

टूटी हुई जीवन-रेखा की क्षति-पूर्ति

अब यह विचार किया जाता है कि यदि जीवन-रेखा टूटी हुई हो तो इसकी क्षति-पूर्ति किस प्रकार सम्भव है—

(१) यदि खण्डित होने के स्थान पर दोनों खण्ड एक-दूसरे के ऊपर आ जावें (और कोई खण्ड भीतर की ओर आंकड़ेदार न हो अर्थात् घूमा हुआ न हो) तो इसका अर्थ है कि रेखा का खण्डित होना दोषपूर्ण नहीं रहा।

(२) यदि खण्डित भाग के पीछे जीवनरेखा के सदृश गोलाई लिए हुए जीवनरेखा की सहगामिनी कोई रेखा हो तो यह खण्डित होने के दोष को उसी तरह दूर करती है जैसे फटे हुए कपड़े पर नये कपड़े की पत्ती लगा दी जाय।

(३) यदि जीवनरेखा जहाँ खण्डित हुई है उस स्थान को चारों ओर से घेरे हुए एक चतुष्कोण हो तो भी खण्डित होने का दोष बहुत कुछ दूर हो गया यह समझिए।

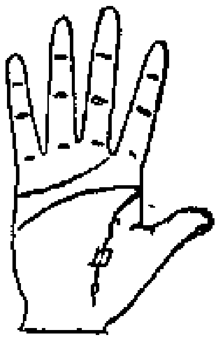

चित्र न० ३२

शाखायुक्त जीवन-रेखा

यदि नीचे की ओर (मणिबन्ध की ओर) जाती हुई जीवन-रेखा की दो शाखाएँ हो जायें और वे पास-पास काफी दूर तक चलती रहें तो समझना चाहिए कि जो प्राण-शक्ति एक धारा में जा रही थी वह दो धाराओं में विभाजित हो गई। इस कारण उसका प्रवाह कम हो गया। आयु के जितने भाग तक इस प्रकार दो शाखायुक्त रेखा चले जीवन के उस भाग में शक्ति में कुछ

कमी प्रतीत होगी। यहाँ इस ओर ध्यान दिलाना आवश्यक है कि जीवनरेखा के दाहिनी ओर शुक्र-क्षेत्र पर ही जीवनरेखा के आकार की ही और भी रेखाएँ होती है जिन्हे मगल-रेखा और प्रभाव-रेखा कहते है। इसलिए यह निश्चय कर लेना चाहिए कि जीवन-रेखा ही दो शाखाओ मे विभाजित हो मणिबन्ध की ओर गई है। मगल-रेखा या प्रभाव-रेखा को गलती से जीवनरेखा की शाखा न समझे।

किन्तु यदि जीवन-रेखा दो शाखाओ मे विभाजित न हो और उसमें से बाल की तरह बारीक-बारीक छोटी-छोटी रेखाएँ कुछ-कुछ दूर पर फूटकर निकलती हुई दिखाई दे और जीवन-रेखा पुष्ट और गहरी हो तो इससे प्राणशक्ति की कमी प्रकट नही होती बल्कि प्राणशक्ति का विशेप प्रवाह कुछ-कुछ फूट निकला है और इस कारण जीवनरेखा पूर्ण पुष्ट है यह परिणाम निकालना चाहिए।

जीवन-रेखा से निकलकर ऊपर जाने वाली रेखाएँ (५)

यदि जीवन-रेखा मे से रेखाएँ निकल-निकलकर हाथ में ऊपर की ओर (अर्थात् उगलियो की ओर) जावे तो यह शुभ लक्षण है। पहले यह बताया जा चुका है कि यदि जीवन-रेखा पतली, शृङ्खलाकार, द्वीपयुक्त या बिन्दु-सहित हो और उन रोग के परिचायक स्थानो से निकलकर कोई रेखा किसी ग्रह-क्षेत्र पर जाकर ऐसे चिह्न से मिल जावे जो स्वय रोग का लक्षण हो (जैसे—जाल-चिह्न) तो इससे-रोग विशेष का पता लगेगा। अब

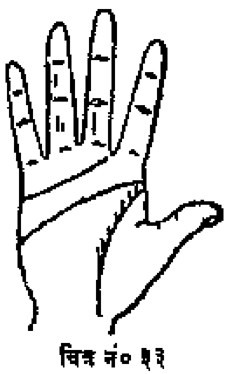

चित्र नं० ५३

उन रेखाओं का वर्णन किया जाता है जो सुन्दर, स्पष्ट, गहरी, निर्दोष और पुष्ट जीवनरेखा से निकलकर अच्छे, उन्नत और विस्तृत-ग्रह क्षेत्रों की ओर जाती है अर्थात् ये रेखाएँ शुभप्रद और उन्नति की सूचक है। जीवन-रेखा प्राण-शक्ति की शक्ति की सूचक है। यदि ऐसे स्थान से कोई रेखा निकलती है तो वह प्राण-शक्ति के उत्कर्ष या वृद्धि की सूचक है और जिस उम्र मे ऐसी रेखा का उद्गम हो उसी उम्र मे जातक अपने बल और परिस्थिति के अनुसार उन्नति करेगा।

प्राय बाल्यावस्था के बाद और वृद्धावस्था के पहले जब प्राण-शक्ति विशेष बलवती होती है तभी ऊपर जाने वाली इन रेखाओं का प्रादुर्भाव होता है। जीवन-रेखा पर जहाँ इन रेखाओं का निकलना बन्द हो जावे तब समझिए उस उम्र मे प्राण-शक्ति ऊर्ध्वगामी (ऊपर को जाने वाली, उन्नति करने वाली) नही रही और इसमे कमी आने लग गई है। जीवन-रेखा के इस स्थान के आगे रेखाएँ जीवन-रेखा से निकलकर यदि नीचे की ओर अर्थात् मणिबन्ध की ओर जाने लगें तो इन्हे गिरावट पैदा करने वाली, अवनति-सूचक रेखाएँ समझना चाहिये। जीवन-रेखा से जो रेखा उंगलियो की ओर जाए वह उन्नति-सूचक तथा जो मणिबन्ध की ओर जावे वह अवनति-सूचक। यदि जीवन-रेखा पर कोई द्वीप हो और उसके तत्काल बाद ही नीचे की ओर जाने वाली रेखाएँ जीवन-रेखा से निकलें तो समझिए,

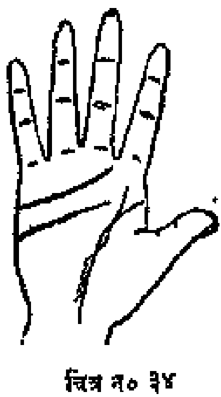

चित्र न० ३४

कि इस जातक को कोई गहरी बीमारी हुई और उसके बाद प्राण-शक्ति गिरती ही गई किन्तु यदि पचास या आगे की उम्र के स्थान से नीचे जाने वाली रेखाएँ निकलना आरम्भ हो तो यह अनुमान करना उचित है कि वृद्धावस्था की स्वाभाविक क्षीणता के कारण प्राण-शक्ति निर्बल हो गई है।

पहले बताया जा चुका है कि बृहस्पति का क्षेत्र यदि उन्नत हो और बृहस्पति के क्षेत्र के ऊपर वाली उगली (तर्जनी) भी अच्छी हो तो ऐसे जातक पर बृहस्पति का विशेष प्रभाव होगा। किन्तु यदि ऐसे जातक की उगलियो के प्रथम पर्व लम्बे और अच्छे है तो वह साहित्यिक, राजनीतिक अथवा धार्मिक क्षेत्र मे उच्च महत्वाकांक्षा रखेगा। यदि उगलियो के द्वितीय पर्व अधिक लम्बे और सुन्दर है तो वह आर्थिक और व्यावसायिक-क्षेत्र मे ख्याति प्राप्त करने का इच्छुक होगा। यदि तृतीय पर्व फूले हुए और पुष्ट हैं तो खाना-पीना और आराम करना, यही उसका ध्येय होगा। इस प्रकार एक बृहस्पति के क्षेत्र से ही उगलियो के पोरवो की लम्बाई के अनुसार अलग-अलग फल होते हैं। इसका निश्चय हाथ के अन्य भागो को देखकर विशेषकर उगलियो के पोरवो से करना चाहिए कि इस व्यक्ति की महत्वाकाक्षाएँ, प्रभुता या ख्याति प्राप्त करने की है या धन-सग्रह या उससे भी नीचे दर्जे की। किन्तु यदि सुन्दर और पुष्ट जीवन-रेखा से निकलकर कोई रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर आवे तो यह फलादेश करना चाहिए कि जिस वर्ष मे यह रेखा जीवन-रेखा से निकली है उस वर्ष बृहस्पति-वर्ग-सम्बन्धी कोई उन्नति अवश्य होगी। बाल्या-वस्था तथा युवावस्था का आरम्भिक काल विद्याध्ययन का होता है, इस कारण यदि उस समय ऐसी रेखाएँ जीवन-रेखा से निकल

कर बृहस्पति-क्षेत्र पर जाएँ तो विद्या उपार्जन मे अर्थात् परीक्षा मे सफलता कहना चाहिए। यदि बाद की अवस्था मे (जीवनरेखा के जिस स्थान से रेखा निकले उस स्थान से उम्र का अन्दाज करना चाहिए) ऐसी रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर जावे तो पदोन्नति, ख्याति, धनलाभ आदि कहना चाहिए।

यदि ऐसी रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर न जाकर शनि के क्षेत्र पर जावे तो शनि के वर्ग-सम्बन्धी लाभ होगा। यदि सूर्य या बुध के क्षेत्रो पर जाकर समाप्त हो तो सूर्य-वर्ग या बुध-वर्ग-सम्बन्धी लाभ कहना चाहिए। चित्र मे स्वास्थ्य-रेखा दिखाई गई है। (देखिये चित्र न० २०) उस स्वास्थ्य-रेखा मे और जीवन रेखा से निकलकर उन्नति-सूचक जो रेखा बुध-क्षेत्र को जाती है उसमे अन्तर है।

इसी प्रकार यदि जीवन-रेखा से निकलकर रेखा मगल या चन्द्र-क्षेत्र को जावे तो उसे ग्रह-वर्ग-सम्बन्धी लाभ या उन्नति होगी।

एक बात की ओर ध्यान दिलाना परमावश्यक है। ये जितनी ऊर्ध्वगामी उन्नतिसूचक रेखाएँ बताई गई है वे सब जीवन-रेखा से ही निकलती है। जीवन-रेखा के पीछे से उसको काटती हुई नही आती। जीवन-रेखा से ही निकलने वाली रेखाएँ शुभ है, जीवन-रेखा को काटने वाली रेखाएँ अशुभ है इस बात को सदैव ध्यान मे रखना चाहिए। दोनो भिन्न-भिन्न प्रकार की रेखाएँ है। इनको सही पहचानने का अभ्यास कर फलादेश करना उचित है।

जीवन-रेखा का अन्त (च)

यह बताया जा चुका है कि जीवन-रेखा पर यदि द्वीप-चिह्न हो या कटी हुई हो या अन्य लक्षण हो तो उनका क्या फल होता है।

परिणाम क्या होगा या कब तक जीवन चलेगा यह बहुत-कुछ इस बात पर निर्भर है कि जीवन-रेखा का अन्त कैसे और कहाँ होता है।

यदि जीवन-रेखा गहरी और बलिष्ठ है और जहाँ तक जाकर रुक जाती है वहाँ तक सुन्दर, गहरी, पूर्ण प्राण-शक्ति लिए हुए प्रतीत होती है तो ऐसा जातक आखीर तक पूर्ण स्वस्थ और बलवान रहेगा। जीवन-रेखा के अन्त मे कोई विशेष चिह्न न होना यह बताता है कि मृत्यु के पहले कोई लम्बी बीमारी नही होगी। इस लक्षण की पुष्टि के लिए हृदय-रेखा और शीर्ष-रेखा भी ध्यान से देखनी चाहिएँ कि कोई स्नायविक या हृद्रोग या दिमाग की कमजोरी तो जीवन के अन्तकाल मे प्रकट नही होती। यदि हाथ को देखने से बृहस्पति या मगल का प्रभाव अधिक हो तो मृत्यु तक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा इस लक्षण की पुष्टि होती है।

यदि जीवन-रेखा बीच मे ही समाप्त हो जाय तो यह जीवन-के अन्त का लक्षण है। ऐसी स्थिति मे यदि जीवन-रेखा की समाप्ति पर कोई बीमारी प्रकट करने वाला चिह्न न हो और शीर्ष-रेखा पर (करीब-करीब उसी अवस्था पर जिस पर जीवन-रेखा समाप्त होती है) बिन्दु, क्रॉस, या अन्य चिह्न हो तो यह अन्तिम बीमारी का द्योतक है। इससे यह अनुमान लगाना चाहिए कि शिर-सम्बन्धी किसी रोग से मृत्यु होगी। यदि ऐसा ही कोई रोग-लक्षण हृदय-रेखा पर हो तो हृद्रोग का अनुमान करना उचित है।

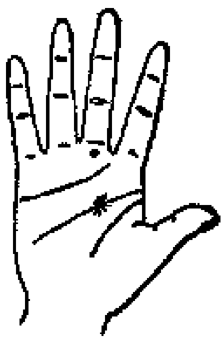
चित्र न० ३५

जब जीवन-रेखा गहरी और बलिष्ठ दशा मे ही सहसा

अन्त हो जावे तो मृत्यु के पूर्व लम्बी बीमारी नहीं होती, बल्कि सहसा बीमारी होकर दस-पाँच दिन मे ही मनुष्य समाप्त हो जाता है। यदि इस मृत्यु-समय को प्रकट करने वाले जीवन-रेखा के अन्त पर कोई क्रॉस, बिन्दु या अन्य-चिह्न हो तो वह बीमारी का कारण प्रकट करेगा। जीवन-रेखा के अतिरिक्त अन्य किसी रेखा मे निरन्तर अस्वास्थ्य के चिह्न हो और जीवन-रेखा सहसा बलिष्ठ रूप मे ही समाप्त हो जावे तो यह परिणाम निकालना चाहिए कि साधारण अस्वास्थ्य रहता था परन्तु मृत्यु सहसा तीव्र आक्रमण के कारण हुई। उदाहरण के लिए यदि स्वास्थ्य-रेखा पित्तज या यकृत रोग प्रकट करती हो तथा उस पर क्रॉस, बिन्दु आदि का चिह्न हो और सहसा जीवन-रेखा का अन्त हो जाये तो पित्तज रोग से मृत्यु होगी यह अनुमान करना चाहिए।

जीवन-रेखा का जहाँ अन्त होता है वहाँ से कोई रेखा निकलकर किसी ग्रह-क्षेत्र पर जाती हो या किसी अन्य रेखा से मिलती हो और कोई रोग-चिह्न हो तो उस चिह्न-प्रदर्शक रोग के कारण मृत्यु होगी यह परिणाम निकालना उचित होगा। उदाहरण के लिए यदि जीवन-रेखा का सहसा अन्त होता हो और वहाँ से एक रेखा चलकर बृहस्पति के क्षेत्र पर आवे जहाँ पर अशुभ बिन्दु-चिह्न हो तो रक्तचाप-जनित मूर्छा से मृत्यु होगी। यदि बृहस्पति की बजाय शनि-क्षेत्र पर रेखा आवे—जहाँ अशुभ बिन्दु-चिह्न हो—तो लकवा या शनि-वर्ग की अन्य बीमारी होगी। यदि इसके अतिरिक्त शनि-क्षेत्र के नीचे शीर्ष-रेखा पर अशुभ बिन्दु, क्रॉस या तारे का चिह्न हो तो लकवे आदि रोगो की पुष्टि होती है। इसी प्रकार यदि अन्य किसी ग्रह-क्षेत्र पर जीवन-रेखा के अन्त से रेखा जावे और उस पर अशुभ चिह्न हो तो ग्रह-क्षेत्र के अनुसार अन्तिम रोग

का निर्देश करना चाहिए। जब जीवन-रेखा सहसा अन्त प्रकट करती हो तो किसी भी ग्रह-सम्बन्धी रोग हो वह भी सहसा जीवन का अन्त करने वाला होगा यह ध्यान मे रखना उचित है।

यदि जीवन-रेखा गहरी और बलिष्ठ दशा मे ही अन्त हो जाती है तो यह भी सम्भव है कि बाद मे वह बढ जावे और मृत्यु न हो। कई बार सहसा अन्त होने के पहले जीवन-रेखा कुछ कमजोर भी हो जाती है किन्तु ऐसी दशा मे भी यह सम्भव है कि जीवन की उस अवस्था को प्राप्त होने पर प्राणशक्ति बलवान हो जाय और जीवन-रेखा मे प्राणशक्ति का प्रवाह आगे बढ निकले।

किन्तु यदि जीवन-रेखा के अन्त पर क्रॉस, बिन्दु या तारे का चिह्न हो या स्वय जीवन-रेखा का अन्त गोपुच्छाकृति हो जावे तो जीवन का अन्त ही समझना चाहिए। अब तक ऐसी जीवन-रेखाओ के विषय मे बताया गया है जिनका गहरी और बलिष्ठ दशा मे ही अन्त हो जाता है। अब ऐसी जीवन-रेखाओ के विषय मे विचार किया जायेगा जो क्रमिक ह्रास प्रकट करती हैं।

यदि जीवन-रेखा अन्त होने के पहले क्रमश कमजोर होती जावे अर्थात् पतली, अस्पष्ट और उथली हो जाये या अन्त मे गोपुच्छाकृति हो जाये तो ऐसे व्यक्ति वर्षों तक क्रमश. कमजोर होते जाते है और लम्बी बीमारी के बाद उनका अन्त होता है। किस प्रकार की लम्बी बीमारी होगी इसका अनुमान जीवन-रेखा के अन्त से जाने वाली रेखाओ से, हृदय, शीर्ष तथा स्वास्थ्य रेखाओ से और ग्रह-क्षेत्रो के चिह्नो से करना चाहिए।

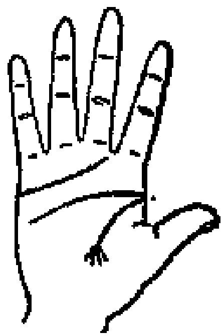

चित्र नं० ३६

यदि जीवन-रेखा अन्त भाग में शाखायुक्त हो जाये तो यह परिणाम निकालना चाहिए कि प्राण-शक्ति का प्रवाह दो धाराओं में बट जाने के कारण मन्द हो गया। इस कारण दीर्घ आयु की सम्भावना कम हो गई। यदि दोनों शाखाएँ बहुत ही क्षीण, पतली, अस्पष्ट और उथली हों तो आगे के काल में जीवित रहने की सम्भावना भी कम है। किन्तु विभाजित हो जाने पर भी यदि दोनों शाखाएँ गहरी, स्पष्ट और बलिष्ठ हैं तो इस काल के बाद भी जीवित रहने की सम्भावना है। जहाँ भी जीवन-रेखा की क्षीणता प्रकट हो, यदि आयु के उसी भाग में शीर्ष-रेखा और हृदय-रेखा निर्दोष और पुष्ट हो तो जीवित रहने की सम्भावना अधिक हो जाती है।

जीवन-रेखा अन्तिम स्थिति में यदि दो शाखायुक्त हो जाये तो यह देखना चाहिए कि दोनों शाखाएँ पास-पास हैं या एक-दूसरे से बहुत दूर। यदि पास-पास हों तो आगे जीवित रहने की सम्भावना अधिक किन्तु यदि दूर-दूर हों तो कम सम्भावना समझनी चाहिए। यदि जीवन-रेखा छोटी है तो दीर्घ आयु की सम्भावना भी स्वभावतः कम होगी।

यदि अन्तिम स्थिति में जीवन-रेखा तीन शाखाओं में विभाजित हो जाये तो और भी अधिक प्राण-शक्ति का ह्रास प्रकट होता है। यदि तीनों ही शाखाएँ निर्बल और एक-दूसरे से दूर-दूर हों तो आगे जीने की सम्भावना भी बहुत कम होगी। किन्तु यदि बीच की शाखा गम्भीर और पुष्ट हो तो जातक इस समय के बाद भी जी सकता है।

यदि जीवन-रेखा अन्त में गोपुच्छाकृति हो जाये तो जीवन के

अन्त में प्राण-शक्ति का अत्यन्त ह्रास और व्यय प्रकट होता है। प्राय ६०—६५ वर्ष की अवस्था के स्थान पर ऐसी रेखा दिखाई देती है जब वृद्धावस्था के कारण मनुष्य शक्तिहीन हो जाता है। किन्तु यदि इसके पहले की अवस्था मे जीवन-रेखा का अन्त होता हो और वही गोपुच्छाकृति हो तो जातक उसी अवस्था पर पहुँच-कर निर्बल और शक्तिहीन हो जायगा। कुछ पाश्चात्य विद्वानो का मत है कि यह चिह्न (गोपुच्छाकृति) प्राण-शक्ति का ह्रास नही किन्तु मन-शक्ति का ह्रास बताता है। देखिये चित्र न० ३६ पृष्ठ १७७

यदि जीवन-रेखा का अन्तिम भाग मुड़कर किसी ग्रहक्षेत्र पर चला जाय

यदि जीवन-रेखा का अन्तिम भाग मुडकर किसी ग्रह-क्षेत्र पर चला जाय और उस ग्रह-क्षेत्र पर अशुभ चिह्न न हो तो समझना चाहिए कि जीवन के उस भाग मे उस ग्रह-सम्बन्धी प्रभाव अधिक होगा। किन्तु यदि वहाँ (ग्रहक्षेत्र पर) कोई जाल, क्रॉस, बिन्दु या अशुभ चिह्न हो और जीवन-रेखा उनसे योग करे तो उस ग्रह-सम्बन्धी रोग होगा। उदाहरण के लिए यदि ४० वर्ष की अवस्था में जीवन-रेखा मुडकर चन्द्रक्षेत्र के मध्य भाग पर चली जाती है और वहाँ अशुभ जाल चिह्न से योग करती है तो गठिया या अन्य पक्षाघात रोग होगा। यदि स्त्रियो के हाथ मे जीवन-रेखा चन्द्र-क्षेत्र के नीचे के तृतीयाश मे जावे तो मासिकधर्म-सम्बन्धी रोग समझना चाहिए।

यदि जीवन-रेखा चलती-चलती कही अचानक रुक जावे और वहाँ क्रॉस चिह्न हो तो अचानक बीमारी के कारण मृत्यु होगी।

कोई लम्बा रोग न होगा। जितना ही 'क्रॉस' स्पष्ट हो उतनी ही अधिक अचानक बीमारी द्वारा मृत्यु की सम्भावना होगी।

इसी प्रकार यदि जीवन-रेखा कहीं बीच में ही समाप्त हो जावे और उसे अर्गला* की भाँति कोई छोटा रेखा-खण्ड आड़ा रोके तो भी अचानक मृत्यु का लक्षण है।

जब कभी भी अचानक मृत्यु का उपर्युक्त कोई लक्षण दिखाई दे तो दोनो हाथों को सावधानी से देखना चाहिये। यदि बायें हाथ मे जीवन-रेखा पूर्ण हो और केवल दाहिने हाथ मे पूर्णायु से पूर्व सहसा मृत्यु का लक्षण हो तो समझिये कि जन्मजात किसी अवयव (शरीर-भाग) की कमजोरी के कारण जातक की बीच में ही मृत्यु नहीं होगी, किन्तु उसने किसी दुर्व्यसन के कारण अपने शरीर मे दुर्बलता या रोग उत्पन्न कर लिया है। हृदय-रेखा या स्वास्थ्य-रेखा या किसी ग्रह-क्षेत्र पर रोग-विशेष दिखाई दे तो जातक को सावधान कर देना चाहिये, जिससे वह रोग के कारण को दूर करने की चेष्टा करे और अकाल मृत्यु का शिकार न हो।

बायाँ हाथ जन्म की स्थिति का द्योतक है। दाहिना हाथ जन्मोत्तर (जन्म के बाद की) परिस्थिति का।

यदि अधूरी जीवन-रेखा के अन्त पर बिन्दु-चिह्न हो तो भी सहसा बीमारी से मृत्यु होगी। किस रोग से होगी इसका परिज्ञान हाथ के अन्य भाग से होगा। इसी प्रकार अधूरी जीवन-रेखा के

---

*अर्गला—लकड़ी का टुकड़ा जो दरवाजा बन्द करने के लिये भीतर से आड़ा लगा दिया जाता है।

अन्त पर तारे का चिह्न हो तो आकस्मिक रोग से मृत्यु का लक्षण है।

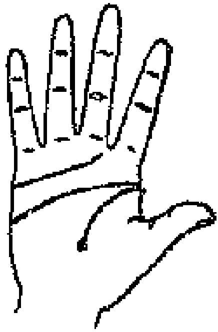

चित्र नं० ३१

किन्तु यदि जीवन-रेखा अधूरी न हो, पूरी हो और उस पर क्रॉस चिह्न हों तो जीवन का अन्त नहीं होगा। कोई रोग या दुर्घटना-मात्र होगी। 'क्रॉस' प्राणशक्ति के अवरोध (रुकावट) प्रकट करते हैं और यदि जिस अवस्था पर जीवन-रेखा पर क्रॉस-चिह्न है उसी अवस्था पर भाग्य-रेखा या सूर्य-रेखा पर अशुभ चिह्न हो तो, रोग के कारण भाग्य में हानि प्रकट होती है।

यदि जीवन-रेखा पर तारे का चिह्न हो तो यह भी अकाल-मृत्यु का द्योतक है। यदि जीवन-रेखा के बिलकुल पास, नीचे की ओर तारे का चिह्न हो और जीवन-रेखा से कोई छोटी रेखा निकलकर इस तारे के चिह्न से योग करे तो यह भी किसी दुर्घटना या साघातिक* रोग का द्योतक है। यदि दोनों हाथों में एक ही अवस्था पर अशुभ चिह्न हो तो परिणाम बहुत भयकर है। केवल बायें हाथ पर उतना अशुभ नहीं है।

जीवन-रेखा का रंग

जीवन-रेखा के रग से भी बहुत-कुछ स्वास्थ्य का अनुमान लगाया जा सकता है। जीवन-रेखा चाहे अच्छी भी हो किन्तु यदि उसका रग सफेदी लिये हो तो बहुत सुन्दर स्वास्थ्य नहीं रहेगा। यदि जीवन-रेखा स्पष्ट और गहरी हो और उसका रग भी कुछ

*जिसके कारण सभवत मृत्यु हो जावे।

लालिमा लिये हो तो यह अच्छे स्वास्थ्य का लक्षण है। यह स्मरण रखना चाहिये कि अधिक लाल रंग होना अच्छा नही है बल्कि दोष है। अधिक लाल रङ्ग बहुत बार ज्वर तथा अधिक रक्तचाप* का द्योतक होता है। ऐसे व्यक्ति आवश्यकता से अधिक भोजन (तथा जो लोग मदिरा पीते हो वह मदिरा पीने) के शौकीन होते है और यदि ऐसी जीवन-रेखा पर क्रॉस, तारे या अन्य अशुभ चिह्न हो तो आकस्मिक जीवन का अवसान होने की संभावना बहुत अधिक हो जाती है।

यदि जीवन-रेखा का रंग कुछ पीलापन लिये हो तो पित्तज तथा यकृतजन्य रोगो का द्योतक है। ऐसे व्यक्तियो के शनि तथा बुध के क्षेत्र और स्वास्थ्य-रेखा सावधानी से देखनी चाहिये। यदि स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो या नसेनी की तरह हो, या उस पर बिन्दु, क्रॉस, अर्गला-रेखा या द्वीप-चिह्न हो तो तीव्र यकृत रोग, पीलिया आदि के द्योतक है। यदि स्वास्थ्य-रेखा के द्वीपो के साथ-साथ जीवन-रेखा भी पीलापन लिये हो तो ऐसा जातक सदैव चिड़-चिड़ा मिजाज होगा, बारम्बार पित्त रोगो से उसकी स्नायविक-शक्ति दुर्बल हो जावेगी और यदि हाथ के अन्य लक्षण चोरी, धोखेबाजी या अन्य दुर्व्यसन प्रकट करते हो तो ऐसा व्यक्ति निकृष्ट कोटि का-विश्वास के योग्य नही होगा। यदि शनिक्षेत्र से अपराध करने की प्रवृत्ति और बुध-क्षेत्र से चालाकी प्रकट हो और जीवन-रेखा पीलापन लिये हो तो ऐसे व्यक्ति धोखेबाज होते हैं। यदि साथ ही मगल का क्षेत्र अति उन्नत, शीर्ष-रेखा सीधी और मगल का प्रथम क्षेत्र पार कर हाथ के बगल तक जा रही हो और अगुष्ठ का

---

* Blood Pressure.

यह है प्रथम पर्व गदाकार हो तो ऐसा जातक 'खून' तक करने में नहीं हिचकता।

यदि जीवन-रेखा का रंग कुछ नीलापन लिये हो तो यह प्रकट होता है कि शरीर में रक्त का प्रसार ठीक नहीं है। यदि हृदय-रेखा भी अच्छी न हो और नीलापन लिये हो, तथा नाखून भी कुछ नीले हों तो हृदय-रोग काफी अधिक है, यह सूचित होता है। यदि ऐसे हाथ में जीवन-रेखा पर तारे का चिह्न हो तो उस अवस्था पर हृद्रोग से सहसा मृत्यु होना विशेष सम्भव है। क्रॉस, बिन्दु, काटने वाली अड़ी-रेखा यदि कोई भी अशुभ चिह्न जीवन-रेखा पर हो तो ऐसे हाथ पर आकस्मिक मृत्यु की विशेष सम्भावना करते हैं। किन्तु तारे का चिह्न सबसे अधिक अशुभ है। जीवन-रेखा के बिलकुल पास भी तारे का चिह्न हो, तो भी अशुभ फल करता है।

उपर्युक्त जो दोष बतलाये गये हैं वे पतली या मोटी दोनों प्रकार की जीवन-रेखा को दोषयुक्त करते हैं। यदि रेखा पतली हो और हाथ बहुत लाल हो तो यह प्रकट होता है कि प्राण-शक्ति का वेग बहुत है और जीवन-रेखा पतली होने से उसमें समा नहीं पाती। यह भी स्वास्थ्य के लिये अशुभ चिह्न है। जिनकी जीवन-रेखा पतली तथा पीलापन लिये हुए होती है वे प्रायः क्षुद्र प्रकृति के होते हैं। उनमें उदारता तथा हृदय की विशालता नहीं होती। यदि शृंखलाकार या चौड़ी और उथली जीवन-रेखा हो तो शारीरिक शक्ति की निर्बलता प्रकट होती है। जिनके हाथ में जीवन-रेखा बहुत पतली हो वे प्रायः स्वास्थ्य-सम्बन्धी कुछ-न-कुछ शिकायत करते रहते हैं। उनमें स्थिरता या आमोद-प्रमोद के लिये जोश नहीं होता। ऐसा व्यक्ति शीघ्र निराश हो जाता है किन्तु

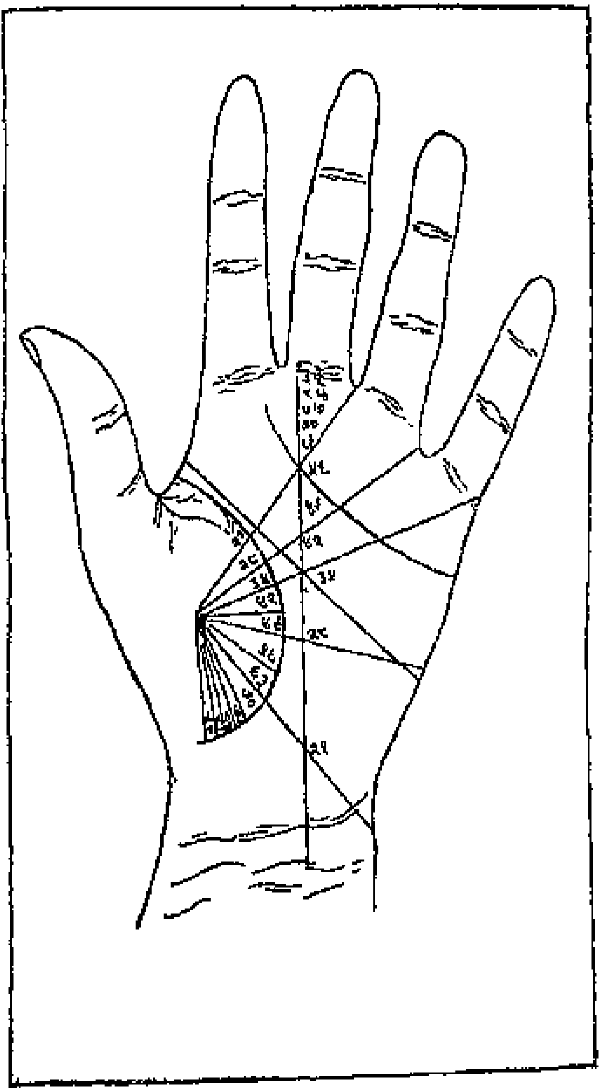

चित्र नं० ३८

जिसकी रेखा ललाई लिये हो वह उत्साहशील होता है। उथली और चौड़ी, शृंखलाकार या पतली रेखा हो और गुलाबी रंग हो तो रेखा-सम्बन्धी निर्बलता की काफी क्षतिपूर्ति हो जाती है।

इन सब बातों का अच्छी तरह विचार कर मनुष्य के शरीर-लक्षणों से तथा हाथ के अन्य लक्षणों से समन्वय और सामञ्जस्य कर फलादेश करना चाहिये।

(परिचय—चित्र नं० ३८)

जीवन-रेखा में किस स्थान से क्या वय समझना यह सुप्रसिद्ध हस्त-परीक्षक 'कीरो' ने हाथ का चित्र देकर समझाया है। इसी प्रकार भाग्यरेखा पर किस स्थान से क्या वय समझना यह भी दिखाया गया है।

सबके हाथों की बनावट तथा रेखा समान रूप से गोलाई लिये हुए नहीं होती इस कारण कोई एक 'माप' सबके लिये उपयुक्त नहीं होती। किन्तु अभ्यास करते-करते उम्र का अन्दाज ठीक बैठने लगता है।

११वाँ प्रकरण

शीर्ष-रेखा

जिस रेखा का इस पुस्तक मे शीर्ष-रेखा के नाम से वर्णन किया गया है उसे भारतीय मतानुसार धन-रेखा, विभव-रेखा आदि कहते है—

"आ पाणि मूलकरभान्निसृत्यागुष्ठतर्जनी मध्ये ।
नून भवन्ति तिस्रो गोत्र द्रव्यायुषो रेखा ॥"

(स्कन्द पुराण)

अर्थात् हाथ के मूल तथा हथेली के बगल के भाग से निकलकर अगूठे और तर्जनी के बीच वाले भाग तक तीन रेखा जाती हैं उन्हे क्रमश गोत्र-रेखा, द्रव्य-रेखा तथा आयु-रेखा कहते है। गोत्र-रेखा का ही नाम 'जीवन-रेखा' है और उसका विस्तृत परिचय १०वे प्रकरण मे दिया जा चुका है। जिसे भारतीय मतानुसार 'आयु-रेखा' कहते है उसे पाश्चात्य मत से हृदय-रेखा कहते है। उसका विस्तृत परिचय अग्रिम (१२वे) प्रकरण मे दिया जायगा। बीच की रेखा को अग्रेजी मे मस्तिष्क-रेखा (मस्तक-रेखा) या शीर्ष-रेखा कहते है। भारतीय मतानुसार यह धन-रेखा या विभव-रेखा कहलाती है। इसका संभवत कारण यह है कि धन कमाना या सग्रह करना बहुत कुछ मस्तिष्क और स्वभाव पर निर्भर होता है। इस रेखा के लक्षणो के अनुसार इसके 'व्याघ्रविलास लीला', 'भुगीगति', 'वराटिका' आदि अनेक नाम दिये गये है। इसका फल

कि यदि यह सुन्दर, बलिष्ठ और लम्बी हो तो मनुष्य धनी, बुद्धिमान व विद्वान् होता है। अब पाश्चात्य मतानुसार इसका विस्तृत वर्णन दिया जाता है।

पाश्चात्य मत से भी हाथ में जो तीन प्रधान रेखा हैं उनमें से यह एक है। इससे मनुष्य के मस्तिष्क और बुद्धि का पता लगता है कि वह बुद्धिमान है या मूर्ख, उसकी मानसिक विचारधारा किस ओर जाती है और उसकी बुद्धि का उसके जीवन मे क्या उपयोग होगा।

शीर्ष-रेखा का प्रारम्भ

बृहस्पति-क्षेत्र के नीचे तथा जीवन-रेखा के प्रारम्भ के ऊपरी भाग से प्रारम्भ होकर मगल के प्रथम क्षेत्र या चन्द्र-क्षेत्र की ओर यह जाती है। बहुत से हाथो मे यह बृहस्पति-क्षेत्र के अन्दर से प्रारम्भ होती है या कभी-कभी जीवन-रेखा के भीतर मगल के द्वितीय क्षेत्र से ही प्रारम्भ हो जाती है। (देखिये चित्र न० ३९)

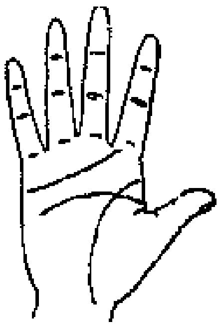
चित्र न० ३९

यदि बृहस्पति-क्षेत्र से प्रारम्भ हो और शीर्ष-रेखा तथा जीवन-रेखा प्रारम्भ मे एक-दूसरे से स्पर्श करती हो तो इसका प्रारम्भ शुभ समझना चाहिये। यह योग रेखा को बल प्रदान करता है और यदि रेखा लबी भी हो तो बलिष्ठ रेखा समझनी चाहिए। ऐसा व्यक्ति शासन मे निपुण होता है और उसमें अधिकार तथा महत्वाकाक्षा की भावना प्रबल होती है। बृहस्पति-क्षेत्र से सयोग होने के कारण शीर्ष-रेखा मे

उदात्त भावना और महत्वाकाक्षा के साथ-साथ न्यायप्रियता, दयालुता और समझदारी भी होती है, इस कारण वह अधिकार-प्रयोग मे उद्दण्डता या कठोरता का व्यवहार नहीं करता। जीवन-रेखा से योग होने के कारण उसमे बौद्धिक शक्ति का प्राणशक्ति से समन्वय होता है। वह साहसपूर्वक कार्य को आगे बढाता है किन्तु विचार, सावधानी और सतर्कता भी उसमें पर्याप्त मात्रा मे होती है।

यदि बृहस्पति के क्षेत्र से तो शीर्ष-रेखा प्रारम्भ हो किन्तु जीवन-रेखा से इसका योग न हो, दोनो मे थोडा अन्तर हो तो ऐसे जातक मे उपर्युक्त गुण तो विद्यमान होगे किन्तु सतर्कता और सावधानी कम होगी। साहस अधिक होने से बिना गुण-दोष का विचार किये वह काम को जल्दी से कर डालेगा। 'नीति' की अपेक्षा उसमे साहस विशेष होगा। इसलिए जिन कार्यों मे सहसा साहसपूर्वक कार्य निपटा लेना चाहिए उनमे उसे सफलता मिलेगी किन्तु अदूरदर्शिता के दुष्परिणाम से भी ऐसे लोग नही बच सकते।

किन्तु यदि शीर्ष-रेखा और जीवन-रेखा के प्रारम्भिक भागो मे अधिक अन्तर हो तो अदूरदर्शिता की मात्रा बहुत अधिक हो जाती है और साहस दुस्साहस हो जाता है। इस कारण जल्दबाजी मे बडा काम कर बैठने से जो हानि या घाटा उठाना पडता है वही परिणाम ऐसे व्यक्तियो को भोगना पडता है।

ऊपर तीन प्रकार की शीर्ष-रेखा के प्रारम्भिक स्थान बताये गये है। तीनों मे शीर्ष-रेखा (१) जीवन-रेखा से मिली हुई (२) दोनो के प्रारम्भिक भागो मे कुछ अन्तर तथा (३) विशेष अन्तर हो तो क्या परिणाम होता है यह बताया गया है, किन्तु उपर्युक्त तीनो ही दशा मे शीर्ष-रेखा का प्रारम्भ बृहस्पति-क्षेत्र के अन्दर से

बताया गया है। यदि बृहस्पति-क्षेत्र से शीर्ष-रेखा का योग न हो, अर्थात् वहाँ से प्रारम्भ न होकर उस क्षेत्र के नीचे से प्रारम्भ हो और शीर्ष-रेखा का प्रारम्भिक भाग जीवन-रेखा से मिला हो तो जातक मे साहस की बहुत कमी होती है। वह किसी काम को करने में इतना सोच-विचार करता है कि वह तो सोच-विचार मे ही पडा रहता है और अन्य साहसी लोग बाजी मार ले जाते है। सतर्कता और सावधानी यदि जरूरत से ज्यादा हो और प्रत्येक कदम आदमी सोच-सोचकर रखे तो बडा काम नही कर सकता। ऐसे लोग किसी भी नये काम करने मे झिझकते है। नौकरी करते रहेंगे। यदि व्यापार का अच्छा मौका मिलेगा या नई—पहले से बहुत अच्छी नौकरी भी मिले, तो भी न जाने क्या परिणाम हो इस आशका से कोई नया कदम नही उठाते। ऐसे व्यक्ति जल्दी में घबरा जाने वाले होते है। चिन्ता करते रहना उनका स्वभाव ही हो जाता है। किन्तु यदि अगुष्ठ का प्रथम पर्व बलिष्ठ हो और बृहस्पति का क्षेत्र उच्च हो तो यह दोष कम हो जाता है। जातक मे उत्साह, आत्मशक्ति तथा साहसपूर्वक अपने निर्णय को कार्यान्वित करने का बल होता है।

यदि जीवन-रेखा के भीतर से अर्थात् मगल के द्वितीय क्षेत्र से शीर्ष-रेखा प्रारम्भ हो तो मस्तिष्क पर मगल-ग्रह का अशुभ परिणाम होने के कारण ऐसा व्यक्ति सदैव झुँझलाने वाला तथा चिड़चिडे मिजाज का होगा। पडोसियो से या साथ काम करने वालो से हमेशा झगडा करता रहेगा। उसके मातहत सदैव उसकी झल्लाहट से परेशान रहेंगे। वह जल्दी ही चिन्तायुक्त हो जाता है और उसके विचारो में शान्ति या स्थिरता न होने के कारण वह किसी काम को

शुरू से लेकर आखीर तक मुस्तकिल मिजाजी के साथ अन्जाम नहीं दे सकता। स्वभावत ये अवगुण सफलता मे बाधक होते है।

इस प्रकार (१) जीवन-रेखा मे मिली हुई, (२) प्रारम्भिक अवस्था मे कुछ दूर तथा (३) बहुत दूर—इन तीनो लक्षणो का सामान्य फल बतलाने के बाद, अन्य लक्षणो के साथ इनका क्या परिणाम होता है यह सक्षेप मे बतलाया जाता है—

(१) (क) यदि शीर्ष-रेखा तथा जीवन-रेखा दोनो उद्‌गम-स्थान पर एक-दूसरे से भिडी न हो और, यदि हाथ मुलायम न हो तथा उगलियो के प्रथम पर्व चतुष्कोणाकार हो तो आत्म-विश्वास और शक्ति होती है।

(ख) यदि बृहस्पति तथा मगल के क्षेत्र अति विस्तृत तथा अति उन्नत हो तो अत्यधिक साहस और आत्म-विश्वास होता है।

(ग) यदि बृहत् चतुष्कोण पर क्रॉस-चिह्न हो तो अत्यधिक उत्साह होता है।

(घ) यदि शीर्ष-रेखा बृहस्पति-क्षेत्र के ऊपरी भाग (तर्जनी के नीचे) से प्रारम्भ होकर बृहस्पति-क्षेत्र के नीचे गोलाई लिये आवे और फिर सीधी हथेली के दूसरी ओर तक चली जावे तो वृथाभिमान अधिक मात्रा मे होता है।

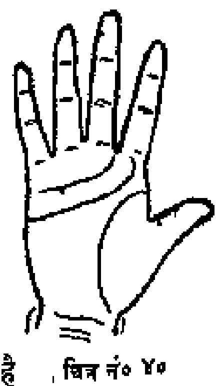

चित्र नं० ४०

(ङ) और यदि शीर्ष-रेखा चन्द्र-क्षेत्र की ओर झुकती हुई जावे, हृदय-रेखा अच्छी न हो तथा अगुष्ठो का प्रथम पर्व छोटा और चौड़ा हो तो जातक जिद्दी तथा झगड़ालू होता है

(च) यदि शीर्ष-रेखा जीवन-रेखा से दूर, शनि के क्षेत्र के नीचे प्रारम्भ हो (हथेली में अपने स्वाभाविक स्थान पर, न नीची न ऊँची) तो युवावस्था मे नेत्र-विकार होता है।

(२) यदि (अ) शीर्ष-रेखा के प्रारम्भ में दो शाखा हो—एक शाखा जीवन-रेखा से मिली हो और दूसरी शाखा हृदय-रेखा का स्पर्श करे किन्तु उसे काटे नही, (आ) तथा हृदय-रेखा भी प्रारम्भ मे दो शाखायुक्त हो तो भाग्योदय का उत्तम लक्षण है।

चित्र नं० ४१

(३) यदि शीर्ष-रेखा और जीवन-रेखा के प्रारम्भ मे काफी अन्तर हो और मगल तथा बृहस्पति के क्षेत्र अति विस्तीर्ण तथा अति उन्नत हो और बुध का क्षेत्र नीचा हो, तो वृथाभिमान, दुस्साहस तथा स्वभाव मे अदूरदर्शिता होती है। यदि शीर्ष-रेखा छोटी हो तो बुद्धि की कमी भी समझना चाहिये। यदि उगलियों की गाठे छोटी और बाहर निकली हुई न होने के कारण उगलियाँ चिकनी प्रतीत हो तो ऐसे व्यक्ति मे व्यावहारिक चतुरता नही होती।

शीर्ष-रेखा की दिशा तथा रूप, गुण, अवगुण आदि

यदि शीर्ष-रेखा अपने स्वाभाविक स्थान की अपेक्षा नीची हो, (अर्थात् उगलियो की जड से जितनी दूर होना चाहिये उसकी अपेक्षा अधिक दूर हो) तो आत्मविश्वास की कमी होती है और थोडी सी बात या कष्ट से ऐसे व्यक्ति नाराज तथा दुःखी हो जाते हैं।

यदि शीर्ष-रेखा अपने स्वाभाविक स्थान पर हो और सीधी, स्पष्ट तथा समान रूप से गहरी हो तो मनुष्य में व्यावहारिक बुद्धि अच्छी होती है और उसकी पुस्तक पढ़ने, दर्शन, काव्य या कलात्मक अनुसंधान की बजाय धन-दौलत की ओर विशेष प्रवृत्ति रहती है किन्तु यदि प्रारम्भिक आधे भाग में सीधी हो और उसके बाद नीचे की ओर कुछ झुकी हुई हो तो दोनों ओर (धन-दौलत तथा विद्या-सम्बन्धी) समान रूप से प्रवृत्ति रहती है। ऐसे व्यक्ति मस्तिष्क-सम्बन्धी, कल्पना-प्रधान या दार्शनिक ग्रंथियों को सुलझाते हुए भी सांसारिक व्यावहारिकता का ध्यान रखते हैं। किन्तु यदि शीर्ष-रेखा प्रारम्भ से ही गोलाई लिये चन्द्र-क्षेत्र की ओर जाती हो तो काव्य, दर्शन कला आदि की ओर विशेष झुकाव होता है। काव्य, दर्शन, नव आविष्कार किंवा मशीन आदि की भी नई योजना बनाने की ओर इनका मानसिक झुकाव विशेष होता है। यदि हाथ चतुष्कोणाकार हो तो सांसारिक उन्नति के साधन में (यथा नई प्रकार की योजना या क्षेत्र-निर्माण में) इनका दिमाग लगता है, यदि हाथ लम्बा और नुकीला हो तो काव्य या दर्शन-शास्त्र में मन लगता है।

यदि यह रेखा बहुत अधिक झुकी हुई हो तो कल्पना-शक्ति बहुत अधिक बढ़ी हुई होती है। ऐसा जातक कल्पना-जगत् में अधिक रहता है तथा वास्तविक जगत् में कम। यदि 'प्रेम' हो गया तो उसे 'स्वर्ग' समझ बैठता है यदि 'निराशा' हुई तो जीवन को बिल्कुल निस्सार समझने लगेगा। प्रेम के पीछे लोक-व्यवहार की उपेक्षा कर बैठेगा। यदि झुकाव अधिक होते हुए चन्द्र-क्षेत्र पर शीर्ष-रेखा चली जावे और दो शाखायुक्त (एक प्रधान रेखा, एक शाखा) हो जावे ऐसे जातक की साहित्य

तथा काव्य की ओर विशेष रुचि तथा इन विषयों में विशेष योग्यता भी होती है।

यदि शीर्ष-रेखा बिलकुल सीधी और बहुत लम्बी हो और सारी हथेली पार कर मंगल के प्रथम क्षेत्र पर होती हुई हथेली के बाहर तक चली जावे तो वह प्रकट होता है कि जातक बहुत अधिक बुद्धिमान है किंतु उसकी बुद्धि स्वार्थ में अधिक लगेगी, परमार्थ में कम। यदि मंगल-क्षेत्र साथ-ही-साथ उन्नत हो और अंगूठे का प्रथम पर्व बलिष्ठ हो तो जातक की किसी से शत्रुता हो जाने पर वह उससे बदला अवश्य लेगा और यदि अंगुष्ठ का द्वितीय पर्व भी लम्बा हो तो नीतिज्ञ होने से शत्रु पर विजयी भी होगा।

यदि शीर्ष-रेखा मंगल के प्रथम क्षेत्र तक तो सीधी जावे और उस क्षेत्र पर जाकर कुछ ऊपर को मुड़ जावे तो जातक को व्यापार में अत्यधिक सफलता मिलती है और शीघ्र धन-संग्रह करने में सफल होता है।

यदि शीर्ष-रेखा छोटी हो (अर्थात् हाथ के मध्य भाग तक ही हो) तो सांसारिक बातों में तो जातक चतुर होता है किन्तु विद्या, कल्पना, दर्शन, साहित्य आदि में बुद्धि विशेष नहीं चलती।

यदि शीर्ष-रेखा अत्यन्त छोटी हो और अन्य लक्षण भी यदि अल्पायु होना प्रकट करते हों तो जातक अल्पायु होता है और शिरो-रोग के कारण मृत्यु होती है।

शीर्ष-रेखा तथा हृदय-रेखा में अन्तर

(१) यदि बीच में कुछ हृदय-रेखा की ओर झुककर शीर्ष-रेखा इस प्रकार सीधी जावे कि हृदय-रेखा से क्रमशः दूर होकर

जावे और हथेली के उस पार तक लम्बी हो तो बुद्धि और आत्मिक शक्ति दोनो सबल होती है।

(२) यदि शीर्ष-रेखा हृदय-रेखा के बहुत पास-पास जावे अर्थात् दोनो मे कम अन्तर हो तो दमा या hay fever होता है। दोनों के बीच का स्थान संकीर्ण होने से जातक रोगी तथा हृदय का क्षुद्र होता है।

(३) यदि शीर्ष-रेखा हृदय-रेखा की ओर झुकती चली जावे और जीवन-रेखा से निकलकर स्वास्थ्य-रेखा इनको काटे तो मूर्च्छा रोग हो। पाचन-शक्ति बिगड़ने पर प्राय यह रोग होता है और मूर्च्छा का भय रहता है।

(४) यदि शीर्ष-रेखा करीब-करीब शनि-क्षेत्र की सीध तक हृदय-रेखा की ओर झुकती चली आवे और फिर मुड़कर नीचे की ओर (चन्द्र-क्षेत्र की ओर) चली जावे तो जिनको जातक स्नेह करता है उनके कारण घोर मानसिक कष्ट प्रकट होता है।

(५) यदि शीर्ष-रेखा इतनी ऊँची हो कि उसके और हृदय-रेखा के बीच बहुत कम अन्तर रहे तो (१) यदि शीर्ष-रेखा दृढ और पुष्ट हो तो दिमाग दिल को काबू मे रखेगा तथा (२) यदि हृदय-रेखा दृढ और पुष्ट हो तो दिल दिमाग पर काबू पा लेगा।

शीर्ष-रेखा का रंग, उसकी गहराई और चौड़ाई

(१) यदि शीर्ष-रेखा चौडी और पीली हो, हाथ सख्त हो तथा सूर्य-क्षेत्र नीचा हो तो जातक मन्दबुद्धि होता है। शीर्ष-रेखा का सूक्ष्म होना गुण है तथा चौड़ा होना अवगुण। पीला रंग यह

प्रकट करता है कि पित्त कुपित होने के कारण बुद्धि में कुशाग्रता नहीं है।

(२) शीर्ष-रेखा न अत्यन्त गहरी होनी चाहिये न इतनी उथली कि अस्पष्ट हो। यदि यह रेखा लम्बी किन्तु अस्पष्ट हो और बुध-क्षेत्र अत्यधिक विस्तीर्ण तथा उन्नत हो तो जातक धोखेबाज होता है। यदि रेखा तो उपर्युक्त प्रकार की हो किन्तु बुध उन्नत न हो तो जातक धोखेबाज न होगा। किन्तु मानसिक एकाग्रता का अभाव होगा। स्पष्ट रेखा छोटी या लम्बी रेखा अस्पष्ट हो तो दोनों ही मानसिक शक्ति की कमी प्रकट करती है।

(३) शीर्ष-रेखा यदि बहुत गहरी हो तो स्नायविक-शक्ति पर अधिक जोर पड रहा है, यह प्रकट होता है। जिन कारणों से ऐसा हो रहा हो उन्हें रोकना चाहिए, नहीं तो स्वास्थ्य पर अहितकर प्रभाव पड सकता है।

(४) यदि बीच में बहुत पतली हो गई हो तो अनुमान से जिस अवस्था में यह लक्षण हो, उस अवस्था में जातक को दिमागी कमजोरी या स्नायविक दुर्बलता होगी।

(५) यदि अत्यन्त पतली तथा अस्पष्ट हो तो ऐसा जातक दिमागी गम्भीर कार्य करने में क्षम नहीं होता।

(६) यदि रेखा अस्पष्ट हो, बहुत पतली या छोटी हो, और स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो तो पित्तज, शिरोरोग, अपच, मन्दाग्नि आदि का लक्षण है।

हस्त-परीक्षकों का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया जाता है कि शीर्ष-रेखा का बहुत चौडा होना गुण नहीं है, अवगुण है किन्तु साथ ही यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि शीर्ष-रेखा जब बहुत

कम गहरी और बहुत सूक्ष्म होती है तो अस्पष्ट या अत्यन्त क्षीण होना भी अवगुण है।

यदि शीर्ष-रेखा श्रृङ्खलाकार, टूटी या अन्य दोषो से युक्त हो

यदि शीर्ष-रेखा एकरूप न हो, (किन्तु कही चौडी कही सकडी, कही गहरी कही उथली, कही ललाई लिये कही पीलापनलिये, या सीधी न होकर लहरदार हो) तो इन सब को अवगुण समझना चाहिए। बहुत गहरी हो तो यह प्रकट होता है कि स्नायविक शक्ति पर बहुत जोर पड रहा है

(१) यदि शीर्ष-रेखा लहरदार हो और हाथ मे ऊँची लहरदार होते हुए सूर्य-क्षेत्र या बुध-क्षेत्र के नीचे बिलकुल हृदय-रेखा के समीप तक पहुँच जावे तो पागलपन का लक्षण है। इसकी पुष्टि अन्य लक्षणो से भी करनी चाहिये, विशेषतः चन्द्र-क्षेत्र के अशुभ चिह्नो से इस रोग की पुष्टि होती है।

(२) यदि शीर्ष-रेखा लहरदार हो, हृदय-रेखा तथा उसके बीच अन्तर कम हो, बुध-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक बेईमान होता है।

(३) यदि समस्त शीर्ष-रेखा पर छोटे-छोटे द्वीप-चिह्न हो और नाखून ऊपर उठे हुए हो तथा उन पर खडी रेखा हो तो यक्ष्मा, यदि बाये हाथ मे ये लक्षण हों और दाहिने मे न हो तो समझना चाहिये कि मातृ या पितृ-कुल मे यह रोग था, उसके कुछ संस्कार जातक मे थे किन्तु अब जातक उन लक्षणो से मुक्त हो रहा है।

(४) यदि शीर्ष-रेखा बहुत छोटी हो और अंगूठे भी बहुत छोटे हो तो मूर्खता का लक्षण है—जिसे लोग सीधा या भोला कहते है।

(५) शीर्ष-रेखा लहरदार हो, रंग एकरूप न हो (कहीं कैसा कहीं कैसा) तो स्नायविक कमजोरी तथा यकृत-विकार का लक्षण है। स्वभाव में कजूसी तथा चित्त में उत्साह नहीं होता।

(६) यदि शृ खलाकार हो तो या तो सिरदर्द, शिरोरोग या विचारों में स्थिरता नहीं होती।

(७) यदि शीर्ष-रेखा शनि-क्षेत्र के नीचे टूटी हुई हो तो समय से पूर्व आकस्मिक मृत्यु का लक्षण है।

(८) यदि छोटे-छोटे द्वीपों के मिलने से रेखा बनी हुई हो या छोटी-छोटी बाल बराबर पतली रेखाओं से बनी हुई प्रतीत हो तो तीव्र सिर-दर्द की बीमारी या मस्तिष्क-विकार होगा।

(९) यदि शीर्ष-रेखा अच्छी न हो (छोटी, अस्पष्ट, शृ खलाकार या द्वीपयुक्त हो) हृदय-रेखा न हो और स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो तो 'हृदय' कमजोर होता है। हृदय में प्रेम की भावना या 'मोह' की अधिकता तथा दिमाग की कमजोरी से जातक ऐसे काम कर बैठता है जिनसे हानि उठाता है।

अन्य लक्षणों के योग से शीर्ष-रेखा के शुभ, अशुभ लक्षण

अब शीर्ष-रेखा के उन गुणों की ओर ध्यान आकृष्ट किया जाता है जो हाथ में अन्य शुभ लक्षणों के विद्यमान होने से फल-दायक होते हैं—

(१) यदि शीर्ष-रेखा लम्बी और सुन्दर हो और शुक्र-क्षेत्र अति उच्च न हो तो जातक का प्रेम अपनी पत्नी (या पति) तक ही सीमित रहता है। अपने दाम्पत्य कर्तव्य-पालन की ओर ध्यान, आत्मसंयम तथा विशेष कामुकता न होने से सतीत्व या एकपत्नीत्व गुण होता है।

(२) यदि शीर्ष-रेखा लम्बी और सुन्दर हो और मगल, बुध तथा वृहस्पति के क्षेत्र उन्नत तथा विस्तीर्ण हो तो एकाग्रचित्तता (अध्ययन-विचार, किंवा आध्यात्मिक उन्नति के लिये) का गुण होता है। ऐसा जातक किसी विषय पर अपने चित्त को एकाग्र कर सकता है।

(३) यदि दोनो हाथो मे शीर्ष-रेखा लम्बी तथा चन्द्र-क्षेत्र की ओर घुमावदार हो, चन्द्र-क्षेत्र बलवान हो और अनामिका तथा मध्यमा बराबर लम्बी हो तो जातक ऐसा व्यापारिक कार्य करता है जिसमें एकदम बहुत लाभ हो या चाहे घाटा ही हो जावे (यथा शेयर, चाँदी, रुई आदि का सट्टा)।

(४) शीर्ष-रेखा लम्बी और चन्द्र-क्षेत्र की ओर घूमी हुई हो, वृहस्पति-क्षेत्र अति उच्च हो और उस पर जाल-चिह्न हो तो प्रसिद्ध राजनीतिक वक्ता होता है। उसका भाषण बहुत ओजस्वी और प्रभावपूर्ण होता है। जाल-चिह्न जहाँ होता है उस स्थान के गुण को बढा देता है, किन्तु उस गुण का जातक सदुपयोग न कर दुरुपयोग करता है (यथा-राजनीति मे प्राय ओजस्विता पार्टीबाजी के ही उपयोग में आती है)।

(५) यदि शीर्ष-रेखा लम्बी और सीधी हो, हाथ लम्बे हो और हाथो की उगलियाँ भी लम्बी हो तो ऐसा जातक प्रत्येक बात के विवरण की जाँच-पडताल करता है (उदाहरण के लिये यदि वह दावत देगा तो क्या-क्या भोजन बनेगा, क्या चीज क्या भाव आई, कौन मेहमान कहाँ बैठेगा आदि छोटी-से-छोटी बात के विश्लेषण और प्रबंध की ओर ध्यान देगा)।

(६) यदि शीर्ष-रेखा लम्बी और सीधी हो किन्तु उगलियो में

गाठें बहुत निकली हों और चिटली उगली बहुत छोटी हो तो जातक में व्यावहारिक कुशलता या नीतिज्ञता नहीं होती।

(७) शीर्ष-रेखा सारी हथेली पर फैली हुई हो और यकृत-रेखा साफ तथा सीधी हो और अधिक चौडी न हो तो स्मरण-शक्ति अच्छी होती है।

(८) (क) यदि सारी हथेली पर पेंसिल की भांति बिलकुल सीधी हो और जीवन-रेखा, शीर्ष-रेखा तथा भाग्य-रेखा से सुन्दर त्रिकोण न बनता हो तो लोभ की प्रवृत्ति अधिक होती है। यदि शीर्ष-रेखा के मध्य भाग मे बिलकुल झुकाव या गोलाई न हो तो उदारता या उपकार-बुद्धि या दूसरे की बात मान जाना यह गुण नही होता।

(ख) यदि सूर्य तथा बृहस्पति के क्षेत्र उन्नत और विस्तीर्ण हो या अन्य शुभ लक्षणो से युक्त हो, तर्जनी का अग्रभाग नुकीला हो तथा शीर्ष-रेखा लम्बी, सीधी और स्पष्ट हो तो जातक पढने का शौकीन होता है।

(९) यदि शीर्ष-रेखा लम्बी तथा सुन्दर हो तथा शीर्ष एवं हृदय-रेखा के बीच का भाग चौडा हो, तर्जनी का अग्रभाग नुकीला अन्य उगलियो का अग्रभाग चतुष्कोणाकार हो तो जातक मे न्याय-प्रियता होती है। वह सबके साथ इन्साफ चाहता है और किसी का हक नही छीनना चाहता।

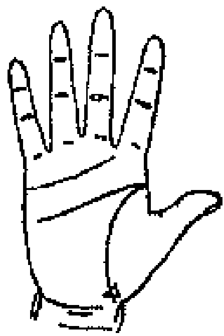

चित्र नं० ४२

(१०) यदि यह रेखा तथा हृदय-रेखा भी—दोनो लम्बी और सुन्दर हो और जीवन-रेखा के अन्तिम भाग पर त्रिकोण चिह्न हो तो जातक मे नीतिज्ञता, बुद्धिपूर्वक कार्य-साधन की योग्यता होती है।

(११) यदि शीर्ष तथा हृदय-रेखाएँ लम्बी और अच्छी हो और तर्जनी विशेष लम्बी हो तो ऐसा जातक अपने दोस्तो की खातिरदारी, दावत आदि तो खूब करता है किन्तु उसकी दोस्ती इतने तक ही सीमित रहती है।

(१२) यदि शीर्ष-रेखा बिलकुल सीधी (डंडे की तरह) हो और हृदय-रेखा अच्छी न हो तो जातक स्वयं अपने भोगविलास पर व्यय करेगा, अन्य लोगों के लिये नही।

(१३) यदि सूर्य-रेखा लम्बी हो, मध्यमा-अनामिका बराबर हों और शीर्ष-रेखा लम्बी व चन्द्र-क्षेत्र की ओर झुकी हुई हो तो जातक ऐसी यात्रायें करता है जो भय से खाली न हों (यथा जंगलों मे, तूफानी समुद्रो मे, वायुयानो के उडान-प्रदर्शन में)।

(१४) यदि शीर्ष-रेखा छोटी हो, साथ ही हृदय-रेखा भी अच्छी न हो और जीवन-रेखा के अन्त भाग पर त्रिकोण-चिह्न हो तो ऐसा आदमी बहुत बोलता है, जिसका उसके लिये शुभ परिणाम न होकर अशुभ परिणाम ही होता है। बुद्धि की कमी तथा क्रूर प्रकृति होने से मनुष्य उचित-अनुचित अवसर का विचार न कर पर-निन्दक होता है।

(१५) यदि बृहस्पति-क्षेत्र तो अवनत (नीचा) हो और शुक्र तथा चन्द्रमा के क्षेत्र उन्नत हो, और शीर्ष-रेखा छोटी हो तो जातक आरामपसन्द तथा सुस्त होता है। बृहस्पति का क्षेत्र नीचा रहने से महत्वाकांक्षा नही होती।

(१६) यदि शीर्ष-रेखा छोटी हो, शुक्र-क्षेत्र नीचा हो, शीर्ष-रेखा तथा हृदय-रेखा का मध्यभाग सकड़ा हो तो मानसिक (हृदय की) क्षुद्रता तथा अनुदारता का लक्षण है।

यदि चन्द्र-क्षेत्र नीचा हो तो दूसरो के साथ सहानुभूति नही होती।

शीर्ष-रेखा का अन्त

जहाँ शीर्ष-रेखा समाप्त हो वहाँ या उससे कुछ पहले किसी भी ग्रह-क्षेत्र की ओर उसका झुकाव हो या शीर्ष-रेखा से निकलकर कोई शाखा किसी ग्रह-क्षेत्र पर जावे तो उस ग्रह-क्षेत्र का प्रभाव शीर्ष-रेखा मे आ जाता है।

(१) यदि चन्द्र-क्षेत्र की ओर झुकी हो या उस क्षेत्र पर शाखा-रेखा जावे तो कल्पना, गुप्तविद्या, प्रेम आदि की ओर मस्तिष्क का झुकाव होता है।

(२) बुध-क्षेत्र पर या उस ओर झुकी हो—विज्ञान या व्यापार मे कुशलता।

(३) सूर्य-क्षेत्र पर या उस ओर जावे—यशलिप्सा।

(४) शनि-क्षेत्र पर या उस ओर जावे—विचार-गाम्भीर्य, सगीत तथा धार्मिकता।

(५) बृहस्पति-क्षेत्र—यदि शाखा बृहस्पति-क्षेत्र पर जावे तो हुकूमत की इच्छा तथा अभिमान।

(६) यदि शीर्ष-रेखा से निकलकर कोई रेखा जाकर हृदय-रेखा मे मिल जावे तो समझना चाहिये कि जातक का किसी से अत्यन्त प्रेम और गाढ अनुराग होने का लक्षण है। इस प्रकार का यह प्रेम इतना आत्यन्तिक तथा तीव्र होगा कि मनुष्य किसी लाभ, हानि, आशका या मर्यादा की परवाह न कर उसके वशीभूत हो जायगा।

(७) यदि शीर्ष-रेखा शनि-क्षेत्र के ही नीचे समाप्त हो जावे तो समय से पहले आकस्मिक मृत्यु हो या उस अवस्था पर दिमाग

पूरा काम करना बन्द कर दे व नया दिमागी काम न कर सके।

(८) यदि हाथ के मध्य मे समाप्त हो जावे और (क) सूर्य तथा बृहस्पति के क्षेत्र उन्नत न हो तो बुद्धि की कमी (ख) मगल-क्षेत्र नीचा हो तो साहस तथा उत्साह की कमी।

(९) यदि भाग्य-रेखा से योग करने के पहले ही शीर्ष-रेखा का अन्त हो जावे तो दु खी-जीवन तथा अकाल-मृत्यु हो।

(१०) यदि शीर्ष-रेखा मगल के प्रथम क्षेत्र तक लम्बी जावे और वहाँ अकुश की तरह नीचे की ओर मुड जावे तो अत्यधिक आत्म-विश्वास एव अभिमान के कारण जातक कष्ट उठाता है। देखिए चित्र नं० ४२

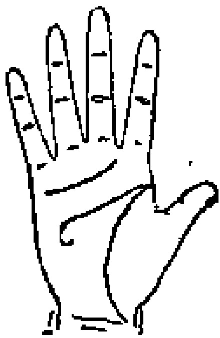
चित्र नं० ४३

(११) (क) यदि शीर्ष-रेखा शनि-क्षेत्र के नीचे तक तो सीधी जावे और फिर मुडकर हृदय-रेखा को काटती हुई शनि-क्षेत्र के ऊपर जाकर समाप्त हो जावे तो सिर मे चोट लगने से मृत्यु होती है। ऐसे व्यक्ति मे धर्मान्धता भी होती है।

(ख) यदि उपर्युक्त प्रकार की शीर्ष-रेखा हो किन्तु हृदय-रेखा काटने के पहले ही समाप्त हो जावे तो सिर मे चोट तो लगेगी किन्तु प्राण-रक्षा हो जावेगी। धर्मान्धता भी अधिक नहीं होगी।

(१२) (क) यदि शीर्ष-रेखा सूर्य-क्षेत्र के नीचे तक सीधी आवे फिर एकदम हृदय-रेखा को काटती हुई सूर्य-क्षेत्र की ओर मुड जावे तो जातक को साहित्य या कला का अत्यधिक व्यसन होगा।

(ख) यदि उपर्युक्त प्रकार की शीर्ष-रेखा हो किन्तु हृदय-रेखा

को न काटे तो साहित्य या कला मे सफलता प्राप्त होने का लक्षण है।

(ग) यदि हाथ के अन्य लक्षण (यथा उगलियो की बनावट, ग्रहो के क्षेत्र, भाग्य-रेखा आदि) उपर्युक्त सफलता के प्रतिकूल हो तो केवल ऐसी रेखा का परिणाम यह होता है कि जातक बिना अधिक परिश्रम किये धनी होने की इच्छा रखता है।

(१३) यदि ऊपर (ख) भाग मे जैसा आकार बताया गया है वैसा आकार हो किन्तु सूर्य-क्षेत्र की बजाय सूर्य-क्षेत्र तथा बुध-क्षेत्र के बीच के भाग की ओर मुडकर जावे और हृदय-रेखा को न काटे तो ऐसा जातक कला को व्यापारिक रूप देकर, या व्यापारिक वस्तु को कला से विशेष उत्कृष्ट बना, सफलता प्राप्त करता है।

(१४) यदि शीर्ष-रेखा मगल के प्रथम-क्षेत्र तक आवे और फिर मुडकर बुध-क्षेत्र वाले हृदय-रेखा के भाग से स्पर्श कर (क) समाप्त हो जावे या (ख) हृदय-रेखा का बिना स्पर्श किये समाप्त हो जावे या (ग) हृदय-रेखा को काटकर बुध-क्षेत्र पर पहुँच जाय तो फलादेश निम्नलिखित होगा।

(क) मस्तिष्क मे चक्कर आने का रोग।

(ख) लोगो की नकल बनाने का हुनर (जैसे नाटक इत्यादि मे मनोरजन के लिये किया जाता है)।

(ग) प्रबन्ध-कुशलता, चतुरता, नीतिज्ञता। यदि हाथ मे अन्य लक्षण अच्छे न हो तो ऐसा व्यक्ति धोखेबाज होता है।

(१५) यदि शीर्ष-रेखा मगल-क्षेत्र को पार कर हथेली के बाहर तक जावे और स्वास्थ्य-रेखा अच्छी हो तो स्मरण-शक्ति अच्छी होती है।

(१६) यदि उपर्युक्त प्रकार की सीधी शीर्ष-रेखा हो, अंगूठा भीतर की ओर झुका हो, बृहस्पति तथा शुक्र के पर्वत उन्नत न हो, तथा उंगलियां परस्पर भिडी हों तो जातक स्वार्थी, अनुदार और कंजूस होता है।

(१७) यदि शीर्ष-रेखा के अन्त मे दो शाखा हो जावे (एक प्रधान रेखा तथा एक छोटी सी शाखा) तो कल्पना पर व्यावहारिक बुद्धि का सयम रहता है।

साधारणत. इस प्रकार की शीर्ष-रेखा की समाप्ति अच्छी समझी जाती है। किन्तु यदि हथेली मोटी और मुलायम हो, अंगूठा छोटा हो और उंगलियो के तृतीय पर्व फूले हुए और उपर्युक्त प्रकार की शीर्ष-रेखा हो तो जातक विश्वास के योग्य नही होता। ऐसे व्यक्ति मे कामुकता तथा सुस्ती होती है।

(१८) यदि शीर्ष-रेखा लम्बी और सुन्दर हो व मगल-क्षेत्र पर जाकर समाप्त होवे किन्तु एक बहुत बडी शाखा शीर्ष-रेखा से निकलकर चन्द्र-क्षेत्र पर नीचे तक जावे तो जातक धोखा नही देता।

(१९) यदि शीर्ष-रेखा अन्त में दो शाखायुक्त हो जावे—एक शाखा हृदय-रेखा को काटती हुई बुध-क्षेत्र पर जावे दूसरी नीचे की ओर चन्द्र-क्षेत्र पर तो जातक चालाक, व्यापार मे (ईमानदारी या बेईमानी से भी) धन कमाने वाला तथा दूसरो पर प्रभाव जमा सकता है।

(२०) यदि शीर्ष-रेखा की एक शाखा चन्द्र-क्षेत्र पर जावे तथा दूसरी शाखा जाकर हृदय-रेखा से स्पर्श करे तो जातक प्रेम के पीछे सर्वस्व बलिदान करने के लिये सन्नद्ध रहेगा।

यदि उपर्युक्त लक्षण के साथ-साथ भाग्य-रेखा का भी हृदय-रेखा तक जाकर अन्त हो जावे तो 'प्रेम' के कारण जातक का आर्थिक सर्वनाश समझना चाहिये।

(२१) यदि शीर्ष-रेखा अन्त में दो शाखाओं में विभक्त हो जावे और दोनो शाखाएँ चन्द्र-क्षेत्र पर जायें तो दिमाग खराब हो जाता है (कल्पना का आधिक्य ही पागलपन है)।

शीर्ष-रेखा की शाखाएँ

यदि छोटी-छोटी सीधी रेखाएँ शीर्ष-रेखा को काटे तो सिर-दर्द या चिन्ता का लक्षण है।

यदि शीर्ष-रेखा से कोई रेखा या शाखा निकलकर बृहस्पति के क्षेत्र तक अन्दर तक जाये और उस शाखा के अन्त पर तारे का चिह्न हो तो सफलता का लक्षण है।

यदि शीर्ष-रेखा से कोई शाखा या रेखा निकलकर तर्जनी उंगली के मूल तक पहुँचे तो महत्वाकांक्षा प्रकट होती है।

यदि शीर्ष-रेखा से निकलकर बृहस्पति के क्षेत्र पर जाने वाली रेखा के अन्त पर क्रॉस का चिह्न हो या कोई आडी रेखा हो तो जातक को सफलता प्राप्त नही होती बल्कि यह प्रकट होता है कि उसकी आकांक्षाएँ पूरी नहीं होंगी। किन्तु यदि इस लक्षण के साथ-साथ मणिबंध पर भी क्रॉस का चिह्न हो तो धन आगमन सूचित होता है।

यदि शीर्ष-रेखा से निकलकर तीन या अधिक रेखाएँ बृहस्पति के क्षेत्र पर जावें तो धन, महत्वकांक्षा और पूर्ण सफलता का लक्षण है।

यदि शीर्ष-रेखा से कोई रेखा निकलकर बृहस्पति के क्षेत्र पर

आवे और वहाँ सहसा घूमकर शनि-क्षेत्र पर चली जावे तो ऐसे जातक में धर्मान्धता तथा अत्यन्त अभिमान होता है।

यदि शीर्ष-रेखा से कोई शाखा निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर जावे और भाग्य-रेखा भी अच्छी हो तो अच्छा धन-लाभ होता है। यदि हाथ के अन्य लक्षणों से साहित्य, संगीत या कला में प्रवीणता प्रकट होती हो तो उसी प्रकार की सफलता मिलेगी।

यदि शीर्ष-रेखा से कोई शाखा निकलकर अनामिका और कनिष्ठिका उंगली के बीच के भाग तक जावे तो कलात्मक हाथ हो तो कला में अन्यथा नये आविष्कार द्वार धनागमन होता है।

यदि शीर्ष-रेखा से कई रेखाएँ निकलकर बुध-क्षेत्र पर जावें तो व्यापारिक सफलता और धन-लाभ का लक्षण है।

यदि शीर्ष-रेखा टूटी हो

यदि शीर्ष-रेखा खंडित हो तो सिर में चोट लगती है या अन्य कोई सिर की बीमारी होती है। यदि यह रेखा कई स्थानों में टूटी हो तो सिर-दर्द का लक्षण है। यदि यह रेखा इस प्रकार खंडित हो कि खंडित हुए सिरे एक-दूसरे के ऊपर आ जावे तो प्रकट होता है कि जातक को मस्तिष्क-सम्बन्धी गहरी बीमारी होगी किन्तु अच्छा हो जावेगा।

यदि शीर्ष-रेखा शनि-क्षेत्र के नीचे टूटी हो और एक भाग चन्द्र-क्षेत्र के ऊपर तक गया हो तो पागल हो जाने का लक्षण है। यदि खंडित हुए दोनों भाग एक-दूसरे के ऊपर हों तो जातक अच्छा हो जावेगा। किन्तु यदि रेखा इस प्रकार खंडित हो कि बीच में बिलकुल लुप्त हो तो पुन. स्वास्थ्य-लाभ करना कठिन है।

यदि दोनों हाथों में इसी प्रकार शीर्ष-रेखा खंडित हो तो जातक

की मृत्यु का भय है। शीर्ष-रेखा के खण्डित हुए एक भाग के चन्द्र-क्षेत्र पर जाने के कारण पागलपन का रोग बताया गया है किन्तु यदि रेखा उपर्युक्त प्रकार से खण्डित हो और कोई खण्डित भाग चन्द्र-क्षेत्र पर न जावे तो पागलपन न होकर सिर की चोट या अन्य मस्तिष्क की बीमारी से मृत्यु होती है। जहाँ दोनों हाथों में एक ही स्थान पर शीर्ष-रेखा खण्डित हो वहाँ जातक को काफ़ी सावधान कर देना चाहिए क्योंकि खण्डित सिरों के एक-दूसरे के ऊपर होने से तो जीवन की कुछ आशा हो जाती है अन्यथा नहीं।

यदि उपर्युक्त प्रकार से रेखा खण्डित हो तथा उतने ही काल तक जीवन-रेखा भी चलती हो—उसके बाद जीवन-रेखा का मार्ग किसी आड़ी रेखा द्वारा बन्द कर दिया गया हो और जीवन-रेखा स्वास्थ्य-रेखा तथा शीर्ष-रेखा के बीच में क्रॉस-चिह्न हो तो ऐसे जातक की फाँसी के द्वारा मृत्यु होती है। यदि दोनों हाथों में यही अशुभ लक्षण हो तो निश्चय ही ऐसा होता है।

यदि शीर्ष-रेखा सूर्य-क्षेत्र के नीचे टूटी हो तो नेत्र-रोग, लू लगना तथा पागल कुत्ते, शृङ्गाल आदि के काटने से बीमारी होने का लक्षण है।

यदि शीर्ष-रेखा खण्डित हो और हृदय-रेखा से निकलकर कोई रेखा नीचे की ओर जाकर भाग्य-रेखा को काटे तो जातक को किसी प्रियजन की मृत्यु के कारण दुःख उठाना पड़ता है। यदि स्त्री के हाथ में यह लक्षण हो तो विधवा होने का लक्षण है।

यदि शीर्ष-रेखा कई जगह टूटी हो तो जातक को सिर-दर्द का रोग होता है या उसकी स्मरण-शक्ति अच्छी नहीं रहती। यदि इन अशुभ लक्षणों के साथ-साथ शीर्ष-रेखा, जीवन-रेखा और स्वास्थ्य-

रेखा के बीच में क्रॉस-चिह्न हो और उंगलियों के नाखून छोटे हो तो मिरगी का रोग होता है।

शीर्ष-रेखा का अन्य रेखाओं से योग

शीर्ष-रेखा का जीवन-रेखा से योग हो तो क्या फल होता है यह बताया जा चुका है किन्तु जीवन-रेखा से योग होने पर, शीर्ष-रेखा का आगे जाकर अलग-अलग ओर झुकाव या अन्य रेखाओं से योग होने से फल में क्या विभिन्नता होती है यह बताया जाता है।

(१) जीवन-रेखा से योग करती हुई शीर्ष-रेखा प्रारम्भ हो तथा हृदय-रेखा की ओर कुछ झुकती हुई आगे जावे, फिर बीच में पहुँच कर हृदय-रेखा की ओर झुकाव बंद हो जावे और ऊपर की बजाय नीचे की ओर अपनी स्वाभाविक दिशा में जाने लगे, तो ऐसे जातक का किसी से आत्यन्तिक प्रेम हो जाता है और बहुत बरसो तक हृदय की ऐसी ही स्थिति रहती है। परिणाम में सफलता प्राप्त नही होती। ऐसे व्यक्ति में शुद्ध उदात्त प्रेम की अपेक्षा वासना-पूर्ति की आकांक्षा विशेष होती है। हृदय तथा शीर्ष-रेखा में अन्तर कम होने से अनुदार वृत्ति (कंजूसी तथा अन्य बातों में भी) होती है।

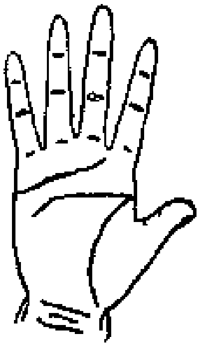
चित्र नं० ४४

(२) यदि शीर्ष-रेखा अपने प्रारम्भिक स्थान पर जीवन-रेखा व हृदय-रेखा दोनो से संयुक्त हो तो जातक की अचानक मृत्यु होती है।

(३) (क) यदि जीवन-रेखा से तो प्रारम्भ हो—किन्तु जीवन-

रेखा के उस भाग से आरम्भ हो जो शनि-क्षेत्र के नीचे है—तो जीवन के प्रारम्भिक काल में शिक्षा का अभाव होने के कारण मस्तिष्क का विकास तथा दिमागी उन्नति देर से प्रारम्भ हुई यह प्रकट होता है।

(ख) किन्तु यदि उपर्युक्त प्रकार की शीर्ष-रेखा हो और जीवन-रेखा तथा हृदय-रेखा भी छोटी हों तो जातक की सहसा मृत्यु हो जाती है।

(४) (क) यदि शीर्ष रेखा आरम्भ मे जीवन-रेखा से मिली हुई हो और आगे ऊँची होती-होती हृदय-रेखा से मिलकर उसमे विलीन हो जावे और हृदय-रेखा, सुन्दर, बृहस्पति के क्षेत्र से निकलकर आई हो तो ऐसा जातक किसी एक व्यक्ति को ही जी-जान से प्रेम करता है और उसमे उसको हद से ज्यादा खुशी हासिल होती है। जातक एक प्रकार से अपने को प्रेमी या प्रेमिका पर न्योछावर कर देता है। सभव है ऐसी परिस्थिति मे दुनियावी कामो में सफलता न मिले किन्तु प्रेम के क्षेत्र मे पूर्ण सुख प्राप्त होता है।

(ख) यदि उपर्युक्त प्रकार की रेखा हो किन्तु हृदय-रेखा बृहस्पति के क्षेत्र से न निकली हो और शीर्ष-रेखा, हृदय-रेखा से जहा मिले वह भाग शनि-क्षेत्र के नीचे हो तो प्रेम के पीछे दीवाना हो जाने से जातक आत्महत्या या अन्य साघातिक कार्य कर सकता है (हाथ के अन्य लक्षणो से क्या विदित होता है यह भी अच्छी तरह विचारना चाहिये)।

(५) यदि बृहस्पति-क्षेत्र अति उच्च हो, जीवन-रेखा छोटी-छोटी रेखाओ से कटी हो, भाग्य-रेखा कमजोर हो और शीर्षरेखा स्वास्थ्य-रेखा से मिली हो (उसमे विलीन हो जावे) तो जातक की आत्म-हत्या की ओर प्रवृत्ति होती है।

(६) यदि जीवन-रेखा प्रारम्भ मे दो शाखायुक्त हो (एक प्रधान रेखा, एक शाखा) और शीर्ष-रेखा स्वास्थ्य-रेखा मे जाकर विलीन हो जाय तो मस्तिष्क रोग, सदैव दु खी और गमगीन रहना।

(७) यदि शीर्ष-रेखा चन्द्र-क्षेत्र के ऊपर स्वास्थ्य-रेखा को काट कर आगे बढ जाय तो कल्पना इतनी बढ जाती है कि उसे एक प्रकार से 'पागलपन' का रोग कहना चाहिये।

(८) यदि शीर्ष-रेखा जीवन-रेखा से प्रारम्भिक स्थान पर न मिली हो किन्तु पतली-पतली छोटी-छोटी रेखाएँ जीवन-रेखा से निकलकर शीर्ष-रेखा से योग करती हो तो जातक बदमिजाज होता है, किन्तु यदि हाथ मे अन्य लक्षण अच्छे हो तो जल्दबाजी, तथा शिष्टता का अभाव समझना चाहिये। देखिये चित्र।

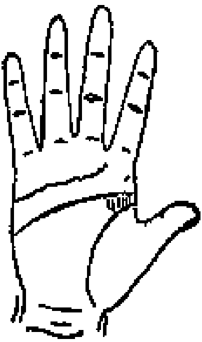

चित्र नं० ४५

(९) यदि शीर्ष-रेखा तथा जीवन-रेखा प्रारम्भिक स्थान पर मिली न हो किन्तु उस स्थान पर दोनो के बीच क्रॉस-चिह्न हो और उसके द्वारा दोनो रेखाओ मे योग होता हो तो जातक के बचपन मे ही कोई पारिवारिक मुकदमेबाजी होती है जिसके कारण जातक को नुकसान उठाना पडता है।

(१०) यदि शुक्र-क्षेत्र के मूल से रेखाएँ निकलकर जीवन-रेखा तथा शीर्ष-रेखा दोनो को काटे तो कौटुम्बिक परिस्थिति के कारण आर्थिक कठिनता का लक्षण है।

(११) शीर्ष-रेखा कही भी हृदय-रेखा से आकर मिल जावे—उसमे विलीन हो जावे, तो जातक प्रेम के पीछे मतवाला हो जाता

है। यदि शीर्ष-रेखा लहरदार या अन्य दोषयुक्त हो तो इस प्रेम मे और भी अधिक दीवानापन होता है।

(१२) छोटी-छोटी रेखाएं शीर्ष-रेखा से निकलकर हृदय-रेखा मे आकर विलीन हो जावें—उसे काटे नही—तो मित्रो का जातक पर बहुत प्रभाव रहता है।

(१३) जहाँ शीर्ष-रेखा का अन्त होता है—उसके कुछ पहले शीर्ष-रेखा से एक शुद्ध गम्भीर रेखा निकलकर हृदय-रेखा मे विलीन हो जावे तो आत्यन्तिक प्रेम के कारण जातक किसी बात की परवाह नही करता।

(१४) यदि शुक्र-क्षेत्र से कोई आडी रेखा निकलकर जीवन, शीर्ष तथा विवाह-रेखा तीनो को काटे तो विवाह या गुप्तप्रेम के कारण कठिन आपत्ति या विपत्ति सहनी पडेगी।

यदि दो शीर्ष-रेखा हों

यदि दो शीर्ष-रेखा सुन्दर और लम्बी हो तो जातक को विरासत मे धन प्राप्त होता है। किन्तु हस्त-परीक्षक को ध्यानपूर्वक इसका निश्चय करना चाहिए कि वास्तव मे दो शीर्ष-रेखाएं है। कई बार एक ही शीर्ष-रेखा चौडी और फटी हुई होने के कारण दो-सी दिखाई देती है। इस प्रकार की रेखा अच्छी नही होती क्योकि रेखा के फटे होने से दिमाग की कमजोरी होकर मनुष्य पागल हो जाता है।

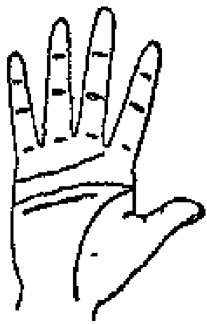

चित्र न० ४६

शीर्ष-रेखा पर सफेद चिह्न

यदि शीर्ष-रेखा छोटी-छोटी खडी रेखाओ से कटी हो तो सिर-

दर्द का लक्षण है। यदि इसको काटने वाली छोटी रेखाएं गोल या लहरदार हों और शीर्ष-रेखा स्वयं नीचे चन्द्र-क्षेत्र के अन्त तक जाती हो तो जातक के पागल होने का डर होगा।

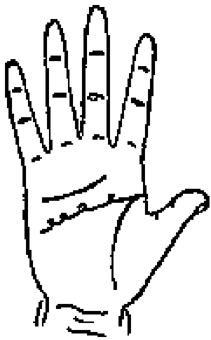
चित्र नं० ४७

चित्र में जिस प्रकार की रेखा है यदि इस प्रकार की रेखा हो तो जातक दूसरे की हत्या करता है। यदि इस रेखा का रंग पीला हो तो समझिए कर चुका, यदि लाल हो तो करेगा।

यदि शीर्ष-रेखा पर चोट के से चिह्न हों* तो उग्र सिर-दर्द का लक्षण है। यदि सफेद चिह्न हों या सफेद दाग से हों तो जातक नवीन आविष्कार करता है। यदि यह सफेद चिह्न शनि-क्षेत्र के नीचे वाले भाग पर शीर्ष-रेखा पर हों तो जातक को अपने कार-बार में सफलता मिलती है।

यदि हृदय-रेखा छोटी-छोटी आड़ी रेखाओं से कटी हो और सूर्य-क्षेत्र के नीचे—शीर्ष-रेखा पर सफेद बिन्दु हों तो साहित्यिक सफलता मिलती है। यदि सफेद चिह्न शीर्ष-रेखा के उस स्थान पर हो जो बुध के क्षेत्र से समीप है तो वैज्ञानिक आविष्कारों में सफलता प्राप्त होती है।

शीर्ष-रेखा पर नीले या काले धब्बे

यदि जीवन-रेखा तथा स्वास्थ्य-रेखा बहुत गहरे रंग की हों और शीर्ष-रेखा पर काले दाग हों तो मलेरिया, मोतीझरा या अन्य उग्र ज्वर का लक्षण है।

---

*दांतेदार

यदि जीवन-रेखा प्रारम्भ में दो शाखायुक्त (एक मुख्य रेखा, एक शाखा) हो और शीर्ष-रेखा पीली और चौड़ी हो तथा उस पर काले दाग हों तो बहुत तीव्र दिमागी बीमारी होती है।

यदि मगल के दोनों क्षेत्र बहुत उन्नत हो और शीर्ष-रेखा पर—जहाँ वह स्वास्थ्य-रेखा से योग करती है उसके पहले ही नीला दाग हो तो जातक किसी की हत्या करने का विचार करता है। यदि उपर्युक्त नीला दाग शीर्ष-रेखा पर बृहस्पति-क्षेत्र के नीचे हो तो यह फल नहीं होता।

यदि शीर्ष-रेखा लहरदार या विवर्ण हो और स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो तथा उस पर नीला दाग हो तो मलेरिया के कारण स्वास्थ्य बिगडा रहता है।

यदि शीर्ष-रेखा पर काला या नीला दाग हो तो लम्बे अरसे तक चलने वाले शिर-रोग या मोतीझारा का लक्षण है।

शीर्ष-रेखा पर काला दाग

(१) यदि शीर्ष-रेखा पर काला दाग हो और (२) शुक्र-क्षेत्र के नीचे के भाग से अथवा जीवन-रेखा से प्रारम्भ होकर कोई रेखा चन्द्र-क्षेत्र पर तारे के चिह्न पर जाकर समाप्त हो तो सन्निपात, बदहोशी आदि मस्तिष्क विकार हो।

यदि शनि-क्षेत्र उच्च हो और शीर्ष-रेखा पर काले दाग हो तो जातक को दाँतो के दर्द का रोग होता है।

यदि सूर्य-क्षेत्र उच्च हो और शीर्ष-रेखा पर काला दाग हो तो नेत्र-रोग। यदि सूर्य-क्षेत्र या उसके नीचे क्रॉस-चिह्न हो तो इस रोग की पुष्टि होती है।

यदि शुक्र-क्षेत्र उच्च हो और शीर्ष-रेखा पर काला दाग हो तो वृद्धावस्था में बहरापन हो जाता है।

यदि शुक्र-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो और उस चिह्न से आरम्भ होकर कोई रेखा शीर्ष-रेखा के उस स्थान पर योग करे जहाँ काला दाग भी हो तो किसी प्रेमी की मृत्यु के कारण गहरे सदमे का लक्षण है।

शीर्ष-रेखा पर क्रॉस चिह्न

यदि शीर्ष-रेखा लहरदार हो और उस पर 'क्रॉस' का चिह्न हो तो सिर को साघातिक चोट लगती है। यदि क्रॉस की बजाय छोटी गहरी आड़ी रेखा से शीर्ष-रेखा कटी हो तो भी सिर पर चोट लगती है।

(क) यदि शीर्ष-रेखा आरम्भ में जीवन-रेखा से मिली हो तथा कुछ आगे चलकर शीर्ष-रेखा से निकलकर कोई छोटी रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर जाकर क्रॉस के चिह्न से योग करे तो जातक की महत्त्वाकांक्षा दबी रह जाती है, सफल नहीं होती।

(ख) यदि बृहस्पति-क्षेत्र पर जाने वाली उपर्युक्त छोटी रेखा बिल्कुल सीधी हो अर्थात् शीर्ष-रेखा से ८०-१०० का कोण बनावे और हाथ में अन्य शुभ लक्षण न हो तो विपत्ति का चिह्न है।

यदि शीर्ष-रेखा भाग्य-रेखा पर जाकर रुक जाय और समाप्त होने के पहले शीर्ष-रेखा पर क्रॉस का चिह्न हो और हृदय-रेखा भी भाग्य-रेखा तक जाकर रुक जाय तो जातक की अकाल मृत्यु होती है।

शीर्ष-रेखा पर कहीं भी तारे का चिह्न हो तो सिर में चोट

लगना प्रकट करता है। यदि दोनो हाथ मे एक-सा ही लक्षण हो तो ऐसी चोट के कारण मृत्यु भी हो सकती है।

यदि शीर्ष-रेखा नीचे की ओर घूमकर चन्द्रमा के क्षेत्र पर नीचे के पिछले भाग तक जाये और वहाँ पर तारे के चिह्न से योग करे तो आत्म-हत्या या बिना उसके पानी मे डूबने पर मृत्यु होती है। किन्तु यदि शीर्ष-रेखा मणिबन्ध तक जावे और वहाँ क्रॉस या तारे का चिह्न हो तो प्रबल भाग्योदय का लक्षण है। यदि किसी स्त्री के हाथ मे शीर्ष-रेखा स्वास्थ्य-रेखा को काट कर आगे जाय और दोनो के योग के स्थान पर तारे का चिह्न हो तो ऐसी स्त्री वन्ध्या होती है या प्रसव के समय जीवन को मृत्यु-भय होता है।

यदि शीर्ष-रेखा बहुत छोटी हो और उसके प्रारम्भिक स्थान मे ही एक शाखा निकलकर बृहस्पति के क्षेत्र पर जाकर तारे के चिह्न से योग करे तो जातक अत्यन्त अभिमान के कारण बहुत नुकसान उठाता है। किन्तु शीर्ष-रेखा लम्बी हो और उससे निकल-कर शाखा बिलकुल तर्जनी उगली के नीचे तक पहुँच जाय और वहाँ तारे का चिह्न हो तो जातक की महत्वाकांक्षाये सफल होती हैं।

यदि शीर्ष-रेखा पर वृत्त चिह्न हो और स्वास्थ्य-रेखा पर क्रॉस का चिह्न हो तो जातक वृद्धावस्था मे अन्धा हो जाता है।

यदि शीर्ष-रेखा लम्बी हो और जिस स्थान पर यह बुध-क्षेत्र के नीचे हो वहाँ इस पर त्रिकोण चिह्न हो तो वैज्ञानिक आविष्कार द्वारा सफलता प्राप्त होती है।

शीर्ष-रेखा पर द्वीप-चिह्न

यदि शीर्ष-रेखा के प्रारम्भ मे ही द्वीप-चिह्न हो तो जातक मे

जन्म से ही पैतृक-मातृक दोष के कारण मस्तिष्क या फेफड़े-सम्बन्धी रोग होता है। यदि बीच मे कही द्वीप-चिह्न हो तो सिर-दर्द या स्नायु की दुर्बलता व शरीर के अन्य भाग मे दर्द। यदि शीर्ष-रेखा मे द्वीप-लक्षण के साथ-साथ स्वास्थ्य-रेखा, उस स्थान पर लाल दिखाई दे जहाँ उसका शीर्ष-रेखा से योग होता है, तो पित्त के कारण शिरो-रोग होता है।

यदि शीर्ष-रेखा मे बहुत से छोटे-छोटे द्वीप हो तो विशेष मानसिक परिश्रम के कारण दिमागी बीमारी। यदि उपर्युक्त लक्षण के साथ-साथ जातक के हाथ मे लम्बे, ऊपर उठे हुए, ऊपर गोलाई लिये हुए, शीघ्र टूटने वाले, खडी रेखायुक्त नाखून भी हो तो यक्ष्मा का चिह्न है।

यदि शीर्ष-रेखा के अन्त मे बहुत बडा द्वीप-चिह्न हो तो अतड़ियो का रोग सूचित होता है।

यदि शीर्ष-रेखा के उस भाग पर जो शनि-क्षेत्र के नीचे है, द्वीप-चिह्न हो तो जातक के बहरे हो जाने का लक्षण है। बहुत से हाथो मे पहले केवल दाग-सा दिखाई देता है फिर बाद मे द्वीप का आकार धारण कर लेता है।

शीर्ष-रेखा पर चतुष्कोण चिह्न

यदि शीर्ष-रेखा पर यह चिह्न हो तो यह प्रकट होता है कि जातक अपनी बुद्धिमत्ता से किसी दुर्घटना या विपत्ति से अपनी रक्षा कर लेगा।

१२वां प्रकरण

आयु-रेखा अथवा हृदय-रेखा

इस चित्र मे कनिष्ठिका (छोटी) उगली जहाँ से प्रारम्भ होती है, उसके नीचे के स्थान से निकलकर तर्जनी की ओर जाने वाली जो रेखा दिखाई गई है उसे हमारे आर्य भारतीय मतानुसार 'आयु-रेखा' कहते है। सस्कृत साहित्य में उपलब्ध 'गरुड पुराण', 'भविष्य-पुराण', 'स्कान्द शारीरिक', 'विवेक-विलास' आदि ग्रथो मे तथा समुद्र ऋषि, वराह मिहिर आदि सामुद्रिक के आचार्यों की कृतियो मे इस रेखा को आयु निर्णय करने मे (अर्थात् यह व्यक्ति कितना जियेगा) बहुत महत्त्व दिया गया है इस कारण इसका नाम 'आयु-रेखा' रखा गया।

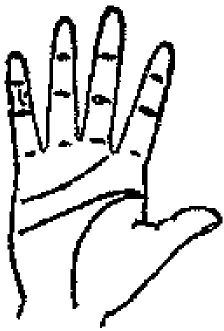

चित्र नं० ४८

अन्य शरीर-लक्षणो से भी—दीर्घायु, मध्यायु, अल्पायु—कितनी आयु होगी ये निष्कर्ष निकाले जाते हैं। ललाट की रेखा, कान, उगलियो की लम्बाई आदि के जो लक्षण आयु-निर्णय करने मे सहायक होते हैं वे, उन-उन प्रकरणो मे दिये गए हैं। इसलिये 'आयु-रेखा' से जो निष्कर्ष निकले उसका अन्य शरीर-लक्षणो से समन्वय कर अन्तिम परिणाम पर पहुँचना चाहिये। इस बात पर यहाँ जोर इसलिये दिया जा रहा है कि केवल आयु-रेखा की लम्बाई

देखते ही 'यह इतने वर्ष जियेगा' यह नतीजा हड़बड़ी में निकालना उचित नहीं है।

'गरुड-पुराण' का वचन है कि आयु-रेखा यदि कनिष्ठिका प्रान्त (बुध-क्षेत्र) से प्रारम्भ हो तथा तर्जनी प्रान्त (गुरु-क्षेत्र) तक जावे तो १०० वर्ष की आयु (अर्थात् पूर्ण आयु) समझना चाहिये। किन्तु यदि यह रेखा छिन्न हो तो वहाँ जीवन का भय होता है अर्थात् मृत्यु की आशंका होती है। जिस स्थान पर छिन्न हो उसके अनुसार वय (उम्र) में मृत्यु की शंका (मृत्यु या मृत्यु-तुल्य कष्ट) कहनी चाहिये। कितनी लम्बाई पर छिन्न होने से किस उम्र में मृत्यु की सम्भावना होगी यह आगे बतलाया जावेगा। 'स्कान्द-शारीरिक काशीखण्ड' में भी लिखा है—

अच्छिन्ना तर्ज्जनी व्याप्य तथा रेखास्य दृश्यते।
कनिष्ठा पृष्ठनिर्याता दीर्घायुष्य यथाऽऽनुशात्॥

इस मत से आयु-रेखा तर्जनी उँगली तक जानी चाहिये—अर्थात् गुरु-क्षेत्र तक जाने से काम नहीं चलेगा—तर्जनी उँगली के तृतीय पर्व को छूना चाहिये। समुद्र ऋषि इस सम्बन्ध में कहते हैं कि कनिष्ठिका से तर्जनी तक रेखा 'अक्षता' होनी चाहिये। यदि ऐसा हो तो मनुष्य १२० वर्ष जीता है। यहाँ दो शंका होना स्वाभाविक है। एक तो यह कि जिस प्रकार की रेखा का वर्णन समुद्र ऋषि ने किया वैसी रेखा तो लोगों के हाथ में मिलती है किन्तु १२० वर्ष तो वे नहीं जीते। दूसरी बात यह कि 'अक्षता' से क्या तात्पर्य है।

प्रथम शंका के सम्बन्ध में यह विचार करना चाहिये कि जिस समय ये आर्ष ग्रन्थ लिखे गये उस समय यम, नियम, प्राणायाम,

आहार, विहार, संयम के कारण तथा संक्रामक रोगों के अत्यल्प होने से बहुत लोग १२० वर्ष जीते थे। आजकल की परिस्थिति में यदि परमायु १०० वर्ष मान लें या इससे भी कुछ कम तो इसी तारतम्य से आगे जहाँ ८० वर्ष या ६० वर्ष कहे गये हैं उन वर्ष-प्रमाणों को अनुपात से कम करके कहना चाहिये। इसके अतिरिक्त अन्य शरीर-लक्षणों की ओर भी ध्यान देना उचित है।

'अक्षता' से तात्पर्य है कि टूटी-फूटी, कटी-फटी न हो और सुन्दर, स्वस्थ एकरूप हो। कोई दाग या विवर्णता भी नहीं होनी चाहिये। 'प्रयोग पारिजात' में समुद्र ऋषि ने लिखा है कि कनिष्ठिका उँगली के नीचे से रेखा निकलकर जो मध्यमा (बीच की) उँगली तक जावे (अर्थात् बीच की उँगली के तृतीय-पर्व मूल तक) और 'अविच्छिन्न' (टूटी-फटी या कटी न हो) तो मनुष्य ८० वर्ष जीता है—

कनिष्ठांगुलि देशात्तु रेखा गच्छति मध्यमाम्।
अविच्छिन्ना तु रेखा स्यात् अशीत्यायुर्विनिर्दिशेत्॥

'अशीति' का अर्थ है ८० वर्ष।

यदि मध्यमा उंगली तक आयु-रेखा न पहुँचे, अर्थात् अनामिका प्रान्त (सूर्य-क्षेत्र) के अन्त पर ही अन्त हो जावे तो ६० वर्ष की आयु कहना। 'गरुण प्रान्त' में 'मध्यमायां ह्यनागता षष्टि वर्षायुषम्' यह स्पष्ट निर्देश किया गया है।

वराह मिहिराचार्य का इस विषय में मन्तव्य है कि यदि प्रदेशिनी (तर्जनी) उंगली तक आयु-रेखा जावे तो यह व्यक्ति १०० वर्ष जियेगा यह समझना चाहिये। यदि यह रेखा छिन्न (टूटी या कटी)

हो तो पेड से गिरने का भय होता है। तात्पर्य यह है कि पूर्ण परिपक्व अवस्था को प्राप्त कर, शरीर के क्रमशः जीर्ण होने के कारण स्वाभाविक मृत्यु नही होती किन्तु अकस्मात् बाह्य कारण से (जैसे पेड से गिरना) अपमृत्यु होती है। पुराने समय मे पेड से गिरने से, पानी मे डूबने से, शेर, चीता या सींगवाले पशुओ के आघात से, सर्पदंश आदि से कुछ लोगो की अपमृत्यु होती थी, इस कारण द्रुम-पतन इस एक बाह्य कारण से अन्य आकस्मिक अप-मृत्युओ का संकेत कर दिया है। आजकल की परिस्थिति मे, मोटर या रेल के नीचे आ जाना, बिजली (A.C करेन्ट) से, संक्रामक रोगो से या अत्यधिक मदिरापान, सिगरेट-बीडी आदि से जो फेफडे या हृदय की बीमारियाँ होती है वे सब अपमृत्यु है। इसका विचार हस्तपरीक्षको को सदैव रखना चाहिये और देश, काल, पात्र, परिस्थिति आदि के विचार से फलादेश मे तारतम्य हो जाता है।

यदि रेखा तर्जनी प्रान्त तक गई हो तो १०० वर्ष। इससे न्यून (छोटी) हो तो न्यून (अपेक्षाकृत थोडी) आयु कहना। कुछ कम हो तो ६० वर्ष, उससे भी कुछ कम हो तो ८० वर्ष। यदि मध्यमा (बीच की उगली के प्रान्त तक (अर्थात् प्रान्त के अन्त तक) तो ७५ वर्ष कहना चाहिये। उससे भी कुछ कम हो तो ७० वर्ष ऐसी कल्पना करना।

'विवेक विलास' मे लिखा है कि प्रत्येक उगली के नीचे के भाग को (बुध, सूर्य, शनि तथा गुरु-क्षेत्रो का) मान २५-२५ वर्ष मानना चाहिये, जितने भी क्षेत्रो पर आयु-रेखा विद्यमान हो २५ वर्ष प्रति क्षेत्र के अनुपात से आयु कहना।

दुर्लभराज ने भी अपने 'सामुद्रतिलक' मे यही मत दिया है—

पुंसामायुर्भाग प्रत्येक पञ्चविंशति शरदाम् ।
कल्प्या कनिष्ठिकाङ्गुलि मूलादिह् तर्जनी परत ॥

स्त्री-लक्षणों का वर्णन करते हुए समुद्र ऋषि भी कहते हैं कि कनिष्ठिका से आयु-रेखा निकलकर यदि मध्यमा (बीच की उंगली) को पार कर तर्जनी तक आवे तो वह कन्या दीर्घायु होती है। 'सामुद्रतिलक' मे आयु-रेखा के सम्बन्ध मे लिखा है कि जितनी जगह टूटी या फटी या कटी हो उतने ही अवसरों पर 'अपमृत्यु' का भय रहता है।

यदि यह रेखा 'पल्लविता' हो (अर्थात् यदि इस पर पत्ते के निशान हों जिसे आजकल अंग्रेजी भाषानुसार 'द्वीप'-चिह्न कहा गया है) तो क्लेश होता है। यदि छिन्न हो, यदि कटी हो तो जीवन मे ही संदेह होता है (अर्थात् जिस अवस्था पर कटी हो उस उम्र मे सम्भवत मृत्यु हो जावे या मृत्यु के मुख से निकल भी आवे)। यदि 'विषम' अर्थात् टेढी हो तो धन-नाश होता है; यदि खुरदरी हो तो शरीर-कष्ट होता है—

यावन्मात्राश्छेदा जीवित रेखा स्थिता भवन्ति नृणाम् ।
अपमृत्यवोऽपि तावन्मात्रा नियत परिज्ञेया ॥
पल्लवितायां क्लेश छिन्नायां जीवितस्य संदेह ।
विषमायां धननाश परुषायां कर्शन तस्याम् ॥

यदि किसी स्थान पर 'पल्लवित' हो, या कहीं 'छिन्न' हो या 'विषम' हो या 'परुष' हो तो किस उम्र में इसका दोषयुक्त फल होगा यह ज्ञात करने के लिये निम्नलिखित उपाय है—

आयु-रेखा की लम्बाई के अनुसार पहले 'आयु' का निर्णय करें अर्थात् यह व्यक्ति इतने वर्ष जियेगा, यह निर्णय करना चाहिये।

फिर आयु-रेखा को दस खण्डो मे विभाजित करे। जिस खण्ड मे पल्लवित, छिन्न आदि हो आयु के उसी खण्ड मे कष्ट कहना।

उदाहरण के लिये आयु-रेखा की लम्बाई के अनुसार किसी की आयु ६५ वर्ष की होगी यह विचार मे आया तो ६५ को दस से भाग देने से ६½ वर्ष आये, तो प्रत्येक खण्ड ६½ वर्ष का हुआ। अब आयु-रेखा के दस भाग किये। यदि चतुर्थ भाग मे छिन्न है अर्थात् टूटी हुई है तो १९½ वर्ष के बाद २६ वर्ष के बीच के काल मे साघातिक रोग होगा। अर्थात् १९½ वर्ष के अनन्तर और २६ वर्ष के पहले। इस ६½ वर्ष के काल मे भी २०, २१, २२— ये सब वर्ष, 'छिन्नता' पहले है या बाद मे इस तारतम्य से निर्णय कर कहना उचित है।

शरीर-लक्षण मे इस सम्बन्ध के जो नियम बताये गए है उनका भी समन्वय कर लेना उचित है। दोनो प्रमाण से जब एक परिणाम निकले तो मिथ्या नही होता।

पाश्चात्य मत

पाश्चात्य मतानुसार इस रेखा को हृदय-रेखा कहते है। कीरो, सेण्ट जर्मेन, बैनहम आदि सभी विद्वानो ने इसे 'हृदय-रेखा यही नाम दिया है। हृदय के दो कार्य है। एक तो शारीरिक अर्थात् जो भी रक्त 'हृदय' मे पहुँचता है उसे वह समस्त शरीर मे वितरित कर देता है, और दूसरा मानसिक अर्थात् हमारे मनोभावो मे प्रेम, घृणा, क्रोध, आसक्ति, अहंकार, लोभ, मोह आदि उत्पन्न करना। वास्तव मे देखा जावे तो पाश्चात्य मतानुसार हमारी छाती मे बाई ओर जो 'दिल' या 'हृदय' है, जो निरन्तर आवाज करता है और रक्त को सारे शरीर मे फैलाता है, वह शरीर का एक पुर्जा-मात्र

है और प्रेम, आसक्ति, कठोरता आदि भावो का सचालन ज्ञान-कोष करते है जिनका स्थान मस्तिष्क मे है, हृदय मे नही। परन्तु हृदय का कार्य तथा मस्तिष्क दोनो इस प्रकार से सम्बद्ध है कि एक का दूसरे पर प्रभाव पडता है। इसी कारण हमारे हृदय के सब भावो का, विशेषत प्रेम करने की इच्छाओ का सम्बन्ध, हृदय-रेखा से माना गया है। नीचे हृदय-रेखा सम्बन्धी विविध मत दिये जाते हैं। परन्तु किसी भी एक मत से सहसा निष्कर्ष नही निकालना चाहिये। प्रेम या अनुराग (विशेषकर पुरुष का स्त्री की ओर या स्त्री का पुरुष की ओर) का विचार केवल हृदय-रेखा पर निर्भर नही है। पहले बताया जा चुका है कि हाथो की बनावट हथेली, उगलियो आदि के तारतम्य तथा शुक्र-क्षेत्र आदि से मनुष्य की इच्छाओ तथा प्रवृत्तियो का विशेष सम्बन्ध है। इस कारण यदि एक-सी ही हृदय-रेखा दो विभिन्न पुरुषो के हाथ मे हो (एक का हाथ कवि या कलाकार की आकृति का और दूसरे का चौकोर) तो दोनो का फल अलग-अलग प्रकार का होगा।

उसी प्रकार यदि हृदय-रेखा दो हाथो मे एक-सी ही हो किन्तु एक व्यक्ति का शुक्र-क्षेत्र बहुत विशद, उन्नत और ललाई लिये हो और दूसरे व्यक्ति का पीला, निस्तेज और छोटा तथा दबा हुआ हो तो भी फलादेश पृथक्-पृथक् होगा।

इसकी स्थिति और दिशा

यदि हृदय-रेखा बृहस्पति या शनि क्षेत्र के नीचे से प्रारम्भ हो, सीधी या कुछ गोलाई लिये हो और हथेली के अन्त तक आवे तो यह स्वाभाविक स्थिति समझनी चाहिये। यदि बृहस्पति-क्षेत्र के अन्दर से प्रारम्भ हो तो भी सामान्यत अच्छी है। परन्तु यदि इसकी

स्थिति अपने सामान्य स्थान से नीची* हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत प्रेम करने वाला नही होता, उसके हृदय मे सयम तथा कठोरता होती है और स्वार्थपरता भी। यदि मनुष्य का हाथ अच्छा है (अर्थात् हाथ की मासलता, वर्ण, आकार, उगलियो का गठन आदि) तो इस प्रकार की हृदय-रेखा वाले मनुष्यो के हृदय मे प्रेम तो होगा परन्तु अपने सयम के

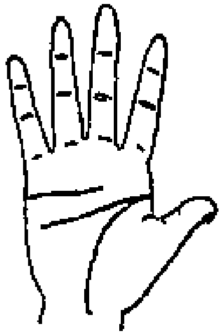

चित्र नं० ४६

कारण वे इसका प्रदर्शन नही करेगे। इसके विपरीत यदि एक निकृष्ट कोटि के हाथ मे (जिसकी हथेली, उगलियो तथा अन्य चिह्नो से गुण की अपेक्षा अवगुण अधिक प्रतीत होते है) हृदय-रेखा अपने सामान्य स्थान से अधिक नीची[1] हो तो ऐसा व्यक्ति कठोर प्रकृति का, लालची तथा धोखा देने की प्रवृत्ति वाला होगा।

यदि हृदय-रेखा बहुत ऊँची हो (देखिये चित्र न० ५०) अर्थात् उगलियाँ जहाँ हथेली से प्रारम्भ होती है उस स्थान के बहुत समीप तो ऐसे व्यक्ति बहुत उग्र रूप से प्रेम करने वाले होते है। उनके प्रेम मे तीव्रता विशेष होने के कारण उनमे डाह या ईर्ष्या की मात्रा भी साधारण से अधिक होती है। ऐसी हृदय-रेखा करीब-करीब वही प्रभाव उत्पन्न करती है जो शुक्र-मेखला मे होते है (देखिये प्रकरण १७)।

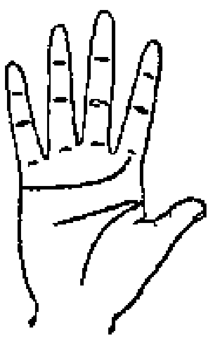

चित्र न०५०

यदि हृदय-रेखा कुछ गोलाई लिये एक ओर से दूसरी ओर पूरी

*'नीची' से तात्पर्य है उगलियो की जड़ से अधिक दूर।

हथेली पर हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यधिक प्रेम करने वाला होता है और अपने इस स्वभाव के कारण कष्ट भी उठाता है। यदि ऐसी हृदय-रेखा के साथ-साथ चन्द्र-क्षेत्र भी उच्च हो तो कल्पना का आधिक्य होने से स्वभाव मे अत्यधिक ईर्ष्या आ जाती है।

किन्तु हथेली पर आर-पार, पूरी चौडाई पर होती हुई भी, यदि हृदय-रेखा कुछ भी गोलाई लिये हुए न हो और बिलकुल सीधी हो और हाथ मे मृदुता या मासलता न हो तो ऐसा व्यक्ति कठोर प्रकृति का होता है अर्थात् उसका स्वभाव स्नेहशील नही होता।

यदि हृदय-रेखा शीर्ष-रेखा की ओर सहसा झुकी हुई हो और शनि-क्षेत्र या सूर्य-क्षेत्र के नीचे अधिक झुकाव हो जिस कारण हृदय-रेखा तथा शीर्ष-रेखा से सीमित क्षेत्र बहुत सकुचित हो गया हो तो प्रकृति में क्षुद्रता होगी। यदि उगलियो की सधि (गाठे) पुष्ट न हो और उनका अग्र भाग भी चतुष्कोण हो तो स्वभाव मे और भी क्षुद्रता होगी। ऐसे व्यक्तियो की दृष्टि मे 'आदर्श' का कोई मूल्य नही, स्वार्थपरता ही सब कुछ है और इसी भावना से वे कार्य करते है।

परन्तु यदि हृदय-रेखा का झुकाव किसी एक स्थान पर विशेष न हो प्रत्युत् क्रमश हृदय-रेखा शीर्ष-रेखा की ओर झुकती जा रही हो और इस कारण दोनो रेखाओ से सीमित स्थान सकुचित हो गया हो और चन्द्र-क्षेत्र भी विस्तृत और उच्च हो तो उसके स्वभाव मे 'दोरगी' बात होगी अर्थात् मन मे कुछ और बाहर और। साथ ही मिथ्या भाषण विशेष मात्रा मे पाया जावेगा।

यदि हृदय-रेखा के उपर्युक्त झुकाव के साथ-साथ शीर्ष-रेखा

का आरम्भ जीवन-रेखा से होता हो तो ऐसे व्यक्ति के स्वभाव में और व्यवहार में मृदुता का अभाव और ऊपरीपन होता है।

यदि हृदय-रेखा के उपर्युक्त झुकाव के साथ-साथ, यकृत-रेखा लहरदार और निकृष्ट कोटि की हो तो दमा आदि रोग होगे।

हृदय-रेखा के गुण, दोष, रूप, गठन आदि

(१) यदि हाथ में हृदय-रेखा न हो तो समझना चाहिये कि ऐसे व्यक्ति में भावुकता तथा अनुराग या प्रेम करने की प्रवृत्ति बहुत कम है। ऐसे व्यक्ति प्रायः लोभी तथा स्वार्थी होते हैं और यदि उनके हाथ में मंगल का प्रथम क्षेत्र भी उन्नत और विस्तृत हो तो 'क्रूरता' भी समझनी चाहिये। यदि हाथ लाल हो तो रुधिर-स्राव का रोग होगा।

(२) यदि देखने से ऐसा मालूम पड़े कि पहले तो हृदय-रेखा थी किन्तु बाद में मिट गई है* या बाये हाथ में क्षीण रूप में हो और दाहिने में न हो तो यह प्रकट होता है कि किसी प्रेमी ने इसे इतना निराश किया है कि उस आघात के कारण हृदय-रेखा लुप्त होती जा रही है।

(३) हृदय-रेखा जितनी लम्बी हो और बृहस्पति के क्षेत्र में जितने भीतर से प्रारम्भ हो उतना ही अधिक प्रेम करने वाला व्यक्ति होगा। बृहस्पति के क्षेत्र के अन्दर से हृदय-रेखा प्रारम्भ होने के कारण ऐसे व्यक्तियों के प्रेम में आदर्श-रक्षा का भाव भी होता है।

(४) हृदय-रेखा सुस्पष्ट, लम्बी और सुन्दर होनी चाहिये

---

* किसी का हाथ पहले देखकर नोट किया हो कि हृदय-रेखा थी और अब दिखाई न दे।

(अर्थात् यव या द्वीप-चिह्न न हो, टूटी-फूटी, कटी-फटी न हो, न अधिक पतली हो) ऐसी रेखा वाले व्यक्ति आजीवन दृढ़ प्रेम-निर्वाह करने वाले होते है।

(५) यदि यह रेखा बहुत लाल हो तो ऐसे व्यक्ति में प्रेम की तीव्रता के कारण हिंसात्मक वृत्ति[1] होती है। यह हिंसात्मक वृत्ति कहाँ तक उग्र रूप धारण करेगी यह मगल के क्षेत्र, अगुष्ठ के प्रथम तथा द्वितीय पर्व शीर्ष-रेखा तथा हाथ की बनावट से अनुमान करना चाहिये।

(६) यदि यह रेखा हलके नीले या सॉवले-से रग की हो, रग उडा-उडा प्रतीत हो या पीलापन हो तो यकृत-विकार, पित्त-जनित दोष होते है। शरीर की एक रेखा भी यदि उपर्युक्त रग की होगी तो अन्य रेखाएँ भी पीली या नीली, धब्बेदार दिखाई देगी क्योकि यकृत-विकार समस्त हाथ मे ही व्याप्त हो जाता है।

(७) यदि यह रेखा अत्यधिक गहरी हो तो Apoplexy (सहसा मूर्च्छा हो जाना, पक्षाघात, रक्तचाप अधिक होने से सिर मे रक्त चढ जाना आदि रोग) का भय होता है। जब कोई रेखा अत्यधिक गहरी हो तो समझिये कि उस पर बहुत जोर पड रहा है और यह भय का सकेत-चिह्न है।

(८) यदि हृदय-रेखा बहुत चौड़ी और पीली हो तो हृद्रोग। प्रायः आहार-विहार मे सयम न रखने से जब हृदय सारे शरीर मे

---

१. हिंसात्मक वृत्ति के उदाहरण—(क) पति पत्नी को अत्यधिक प्रेम करता है और उसको ससुराल से अपने घर ले जाना चाहता है। पत्नी इन्कार करती है तो उसको मारता है; (ख) पति पत्नी को किसी से हँसी-मजाक करते हुए देखता है तो क्रोध में उस दूसरे व्यक्ति पर वार करता है या अपनी पत्नी की ही नाक काट देता है।

जल्दी-जल्दी रक्त नहीं पहुँचा सकता है तो हृदय शिथिल हो जाने के कारण हृदय-रेखा चौड़ी और पीली हो जाती है।

(९) यदि यह रेखा पतली और लम्बी हो तो हृदय की क्रूरता व हिंसात्मक प्रवृत्ति प्रकट होती है।

शीर्ष-रेखा के प्रसंग में हम कह आये हैं कि रेखा का पतला और लम्बा होना गुण है किन्तु हृदय-रेखा का पतला होना गुण नहीं है।

(१०) यदि हृदय-रेखा क्षीण और असुन्दर हो (अर्थात् छोटी, बहुत पतली तथा अस्पष्ट हो) और अन्त तक (जहाँ बुध-क्षेत्र की बायीं ओर यह समाप्त होती है) इसमें से कोई शाखाएँ न निकलें तो ऐसे व्यक्तियों की सन्तानोत्पादन-शक्ति कम होती है।

(इस सम्बन्ध में शुक्र-क्षेत्र तथा संतान-रेखाओं का भी विचार कर लेना चाहिये।)

हृदय-रेखा की बनावट

(११) यदि हृदय-रेखा शृंखलाकार हो तो समझिये हृदय अपना कार्य अच्छी तरह नहीं कर रहा है। अनुचित प्रेम-सम्बन्ध की प्रवृत्ति रहती है।

(१२) यदि यह रेखा पीली, चौड़ी तथा शृंखलाकार हो तो ऐसा व्यक्ति दुष्टतापूर्वक भी अपनी अभिलाषा-पूर्ति में नहीं हिचकता। सुन्दर हृदय-रेखा पारस्परिक आकर्षण द्वारा प्रेम उत्पन्न करती है। परन्तु इस प्रकार की दोषयुक्त हृदय-रेखा नीच वृत्ति प्रकट करती है।

(१३) यदि हृदय-रेखा शृंखलाकार हो और बीच में शनि-

क्षेत्र की ओर झुकी हुई हो तो ऐसे पुरुषो को स्त्रियो की, तथा स्त्रियों को पुरुषो की कोई परवाह नही रहती। यदि हाथ के अन्य लक्षरण अच्छे हो तो यह प्रकट करते हैं कि एकान्तवास की भावना प्रबल होने के कारण ऐसे व्यक्ति सामाजिक सुख की ओर प्रवृत्त नही होते। किन्तु हाथ के अन्य लक्षरण अच्छे न हो तो इस प्रकार की रेखा, वाले अप्राकृतिक अवगुरणो की ओर झुकते हैं यह सकेत समझना चाहिये।

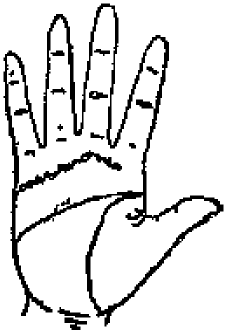

चित्र न० ५१

(१४) यदि यह रेखा सुन्दर, लम्बी और अपने उचित स्थान पर हो और अगूठे का पहला पर्व मजबूत हो तो अपनी ही पत्नी, या अपने ही पति तक प्रेम* सीमित रहता है। किन्तु यदि अगूठो का प्रथम पर्व मजबूत न हो तो ऐसा नही होता। अपने हृदय पर सयम नही रहता।

(१५) यदि हृदय-रेखा और शीर्ष-रेखा दोनो अच्छी हो और जीवन-रेखा जहाँ समाप्त होती है उस पर त्रिकोण चिह्न हो तो ऐसा जातक चतुर तथा व्यवहार-कुशल होता है।

(१६) किन्तु ऊपर निर्दिष्ट स्थान पर त्रिकोण तो हो किन्तु हृदय-रेखा तथा शीर्ष-रेखा खराब हो (लहरदार—कही गहरी, कही हलकी आदि दोषयुक्त) तो ऐसे व्यक्तियो की वाणी में कटुता और दूसरो की निन्दा करने की प्रवृत्ति होती है।

(१७) यदि हृदय-रेखा अच्छी और बलिष्ठ हो और चन्द्र

* स्त्री-पुरुष प्रेम।

तथा शुक्र के क्षेत्र विशेष रूप से विस्तृत और उन्नत हो तो नवीन-नवीन स्नेह-सम्बन्ध स्थापित करने की आकांक्षा और प्रेमालुता।

(१८) यदि हृदय-रेखा बहुत बडी हो, शुक्र-मेखला का चिह्न स्पष्ट हो और चन्द्र-क्षेत्र उच्च हो या उस पर बहुत सी बारीक-बारीक रेखा हो तो जातक मे अत्यधिक ईर्ष्यालुता होती है।

(१९) यदि हृदय-रेखा तथा शीर्ष-रेखा अच्छी न हो और उनके बीच का स्थान सकडा हो, उगलियाँ चिकनी हो (अर्थात् गाँठे उन्नत न हो) और अगुष्ठ का प्रथम पर्व छोटा हो तो ऐसे व्यक्ति के चित्त मे मुस्तकिल-मिजाजी (एक विचार पर दृढ रहना) नही होती है और वह सकल्प-विकल्प किया करता है।

(२०) यदि हृदय-रेखा खराब हो और शीर्ष-रेखा जीवन-रेखा के प्रारम्भ के भाग से न निकलकर ऊपर बृहस्पति के क्षेत्र से प्रारम्भ हुई हो तो अपनी अपेक्षा अत्यधिक उच्चकुल मे विवाह की महत्वाकाक्षा रखने के कारण जातक को दुख और निराशा प्राप्त होती है।

हृदय-रेखा की गहराई और रंग

यदि हृदय-रेखा एक डडे की भाँति सारी हथेली पर आर-पार हो व शीर्ष-रेखा भी ऐसी ही हो, तथा दोनो रेखा गहरी और लाल हो एवं मगल-क्षेत्र बहुत उन्नत हो तो ऐसा व्यक्ति हिंसक होता है और दूसरे के प्राण भी ले सकता है।

यदि हृदय-रेखा पीलापन लिए हुए और चौडी हो, और प्रभाव-रेखा शुक्र-क्षेत्र से आकर बुध-क्षेत्र या मगल के प्रथम क्षेत्र पर रुके तो विषय-वासना अधिक होती है। यदि शुक्र-मेखला की

दो रेखा हो, या टूटी हो तो अत्यधिक ईर्ष्या के कारण ऐसे व्यक्ति मे हिंसात्मक प्रवृत्ति भी हो सकती है।

यदि हृदय-रेखा अत्यधिक गहरी हो, शुक्र-मेखला बहुत स्पष्ट हो और चन्द्र-क्षेत्र विस्तृत और उन्नत हो या उस पर बारीक-बारीक बहुत-सी रेखा हो तो अत्यन्त ईर्ष्या के कारण ऐसे जातक की विचार-शक्ति कुण्ठित हो जाती है और वह ऐसे काम कर बैठता है जिनसे विपत्ति मे फसता है।

यदि हृदय-रेखा दुर्बल और अस्पष्ट हो और शीर्ष-रेखा भी दुर्बल तथा क्षीण हो तो ऐसा जातक विश्वास करने योग्य नही। वैवाहिक जीवन मे भी उचित रास्ते से डिग जाता है।

यदि हृदय-रेखा शृंखलाकार हो या अस्पष्ट हो और शीर्ष-रेखा भी ऐसी ही हो, शुक्र-क्षेत्र उन्नत और विस्तृत हो या उस पर आडी काटने वाली बहुत सी रेखा हो तो ऐसे पुरुष सदैव अन्य स्त्रियो से सम्बन्ध करने के इच्छुक रहते है या उनके अनेको सम्बन्ध हो चुके होते है। स्त्रियो के सम्बन्ध मे भी यही समझना चाहिये।

भाग्य-रेखा हृदय-रेखा को जहाँ काटे, हृदय-रेखा का वह भाग यदि शृंखलाकार हो तो समझना चाहिये कि हृद्रोग अथवा दुःखान्त प्रेमाधिक्य के कारण जातक के भाग्योदय तथा वृत्ति मे विघ्न पड़ गया।

हृदय-रेखा के उद्गम-स्थान तथा प्रारम्भ में निकली हुई शाखा

भारतीय मतानुसार तो यह रेखा कनिष्ठिका के मूल से (छोटी उगली के नीचे बुध-क्षेत्र के बायी बगल से) निकलकर तर्जनी-मूल (गुरु-क्षेत्र) की ओर जाती है। किन्तु पाश्चात्य मतानुसार बिल-

कुल उलटा, कनिष्ठिका मूल मे इसका अन्त और दाहिनी ओर (गुरु-क्षेत्र किंवा शनि-क्षेत्र पर) इसका प्रारम्भ माना जाता है।

(१) पाश्चात्य मतानुसार यदि तर्जनी के तृतीय पर्व से (पोरवे के अन्दर से) यह प्रारम्भ हो तो जीवन मे सफलता नही मिलती।

जब हथेली की रेखाये उगली के अन्दर से प्रारम्भ हो या उगली के अन्दर पहुँच जावे तो गुण नही प्रत्युत् अवगुण समझना चाहिए। इसका कारण यह है कि जिस ग्रह-क्षेत्र के ऊपर उगली है उस ग्रह का प्रभाव, रेखा पर इतना अधिक हो जाता है कि वह 'अति' मात्रा, अवगुण हो जाती है। 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' सीमा से बाहर कोई वस्तु अच्छी नही होती। यदि उगलियाँ अति लम्बी हो तो भी अच्छा नही, ग्रह-क्षेत्र अति उन्नत हो तो उनका अनिष्ट प्रभाव होता है। अति सौन्दर्य-प्रिय मे अति कामुकता आ जाती है। अति धार्मिक, सासारिक जीविका-उपार्जन के साधनो मे चतुर नही होते। इसी प्रकार सर्वत्र समझना चाहिये।

(२) यदि बृहस्पति के क्षेत्र के अन्दर—ऊपर की ओर से—हृदय-रेखा प्रारम्भ हो और प्रारम्भ मे कोई शाखा न हो तो ऐसे व्यक्ति आदर्श-प्रेमी होते है। उनमे कामुकताजन्य वासना की प्रधानता नही होती। (यह एक लक्षण है, अन्य लक्षणो से यह देख लेना चाहिये कि सम्पूर्ण प्रकृति किस प्रकार की होगी।) इस प्रकार की हृदय-रेखा वालो के प्रेम मे आदर्शवादिता अधिक होती है।

(३) किन्तु यदि यही रेखा बृहस्पति-क्षेत्र के मध्य से प्रारम्भ हो और आरम्भ मे एक ही शाखा हो तो भी गंभीर और दृढ प्रेम-प्रकृति का जातक होता है। ऐसे व्यक्ति मे प्रेमाधिक्य और

आदर्शवाद दोनों समान रूप से रहते है।

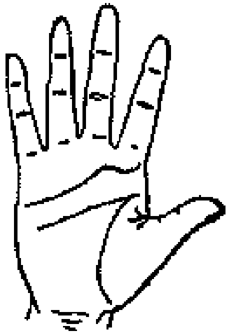

चित्र न० ५२

(४) यदि हृदय-रेखा बृहस्पति के क्षेत्र को अर्धवृत्त की तरह आधी ओर से घेर ले तो ऐसे व्यक्ति मे प्रेमाधिक्य के कारण ईर्ष्या की मात्रा तीव्र होगी। बहुत से पाश्चात्य विद्वानो का मत है कि ऐसी हृदय-रेखा यह प्रकट करती है कि जातक दार्शनिक और गुप्त विद्याओ का विशेष प्रेमी है। (देखिये चित्र न० ५२)

(५) यदि हृदय-रेखा गुरु-क्षेत्र और शनि-क्षेत्र के बीच के भाग से प्रारम्भ हो तो यह भी स्थिर प्रेम प्रकट करती है। ऐसे व्यक्ति न तो प्रेम के तूफान मे बहते हैं न किसी किनारे ही बैठे रहते है। उनके प्रेम मे विशेष उल्लास और तन्मयता नही होती, न निराशा और विरह उन्हे अधिक पीडित करते है। (देखिये चित्र न० ५३)

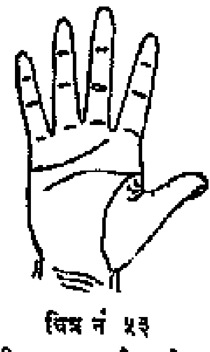

चित्र नं ५३

(६) यदि यही रेखा तर्जनी और मध्यमा के बीच के भाग से प्रारम्भ हो तो ऐसा जातक आजीवन कठिन परिश्रम करने वाला होता है। कठिनाइयो का सामना करने मे ही उसका जीवन जाता है। प्रेम की भावना हृदय मे दबी रहती है।

(७) यदि हृदय-रेखा शनि-क्षेत्र के नीचे से प्रारम्भ हो और आरम्भ मे कोई शाखा न हो तो ऐसे व्यक्ति मे प्रेम की अपेक्षा कामुकता अधिक होगी।

(८) (क) यदि हृदय-रेखा बृहस्पति-क्षेत्र के किनारे से प्रारम्भ

हो और तीन शाखाएँ (एक प्रधान रेखा का सिरा और दो शाखा) आरम्भ से ही निकलकर बृहस्पति-क्षेत्र के अन्दर तक पहुँच जावे तो जातक सौभाग्यशाली होता है।

(ख) यदि उपर्युक्त स्थान से तो रेखा प्रारम्भ हो किन्तु केवल एक शाखा निकलकर बृहस्पति के क्षेत्र पर जावे (अर्थात् प्रधान रेखा तो ऊपर ही रहे) तो ऐसे व्यक्ति को प्रेम मे सफलता और खुशी हासिल होती है। यदि साथ-ही-साथ शुक्र-क्षेत्र पर 'क्रॉस' चिह्न भी हो तो ऐसा व्यक्ति जीवन मे एक से ही प्रेम करता है और उसका प्रेम सफल तथा हर्षमय होता है।

(६) यदि प्रारम्भ मे शाखायुक्त हो और शाखा बृहस्पति-क्षेत्र पर जावे और दूसरी शीर्ष-रेखा की ओर जावे किन्तु शीर्ष-रेखा का स्पर्श न करे तो ऐसा व्यक्ति स्वय अपने को धोखे मे डाले रहता है (समझता है कि वह प्रेम करता है किन्तु करता नही)।

(१०) प्रारम्भ मे शाखायुक्त हो—एक शाखा बृहस्पति के क्षेत्र के ऊपर जावे और दूसरी तर्जनी तथा मध्यमा उगलियो के मध्य-भाग मे जावे—तो ऐसे व्यक्ति घर के प्रेमी होते है और उन्हे बदले मे वैसा ही प्रेम और हर्ष-सुख प्राप्त होता है। यह हृदय-रेखा का एक उत्कृष्ट रूप है।

(११) यदि हृदय-रेखा प्रारम्भ मे दो शाखायुक्त—एक स्वय एक अन्य शाखा—हो अर्थात् एक शाखा तर्जनी और मध्यमा उगलियो के मध्य भाग मे जावे और दूसरी शाखा बृहस्पति-क्षेत्र को स्पर्श-मात्र करे (अर्थात् उसके अन्दर न जावे) और चन्द्र-क्षेत्र उन्नत न हो तो जीवन शान्त-प्रेममय रहता है। न विशेष उल्लासमय आकाक्षा, न अतृप्ति।

(१२) यदि आरम्भ से ही दो शाखा हों—एक बृहस्पति के क्षेत्र पर आवे दूसरी शनि-क्षेत्र पर—तो ऐसे व्यक्तियों के प्रेम में झक्कीपन होता है। वे जिस स्थान पर प्रेम प्राप्त कर अपने जीवन को सुखी बनाने का प्रयत्न करते है, वहां उन्हें प्रेम प्राप्त नहीं होता। फिर भी वे प्रेमाधिक्य के कारण अपना उद्योग नहीं छोडते, केवल निराशा ही उन्हें प्राप्त होती है। उनके लिए प्रेम (परिणाम में असफलता के कारण) दुःख का ही कारण होता है।

(१३) यदि हृदय-रेखा छोटी हो और शनि-क्षेत्र के नीचे से प्रारम्भ हो और कोई शाखा न हो तो ऐसे व्यक्ति पूरी उम्र पाकर नहीं, किन्तु पहले ही मृत्यु को प्राप्त होते हैं। यदि शीर्ष-रेखा भी छोटी हो और उसके मध्य भाग में 'क्रॉस' का चिह्न हो तो उपर्युक्त फलादेश की पुष्टि होती है।

(१४) यदि हृदय-रेखा के आरम्भ में शाखा हो और शीर्ष-रेखा से भी एक शाखा निकलकर मंगल के द्वितीय क्षेत्र पर जावे तो आरम्भिक बाधाओं के बाद परिणाम में विवाह हो जाता है (उदाहरण के लिये दो व्यक्ति एक-दूसरे से विवाह करने की तीव्र अभिलाषा रखते हैं किन्तु परिस्थितिवश, या उसके अभिभावकों के दबाव के कारण विवाह नहीं हो पाता, किन्तु संघर्ष और कुछ समय बीतने के बाद उनकी विजय होती है और विवाह हो जाता है)।

हृदय-रेखा का अन्त

यदि हृदय-रेखा बुध-क्षेत्र के नीचे से भी आगे तक (हथेली के बगल में) जावे और शीर्ष-रेखा लम्बी और साफ हो तथा मंगल का क्षेत्र प्रमुख (उन्नत) हो तो जातक अत्यन्त साहसी होता है। भगवान् ने गीता में कहा है—"क्षुद्रं हृदय दौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ

परतप" अर्थात् हृदय-दौर्बल्य की परिचायक खराब हृदय-रेखा होती है। यदि रेखा लम्बी और अच्छी है तो साहस होगा, यह सिद्धान्त है। लम्बी और सुन्दर शीर्ष-रेखा होने से साहस के साथ-साथ दिमाग भी अच्छा और ठडा होगा। बिना इस गुण के साहस मूर्खता-मात्र है।

यदि हृदय-रेखा बुध-क्षेत्र को नीचे की ओर से अर्धवृत्त की तरह घेर ले तो मनुष्य गुप्त विद्याओ (ज्योतिष, दर्शन, मन्त्र-तन्त्र रहस्यवाद, योग आदि) मे विशेष रुचि रखने वाला होता है। यदि बुध-क्षेत्र के नीचे आने पर हृदय-रेखा मे से एक शाखा निकलकर बुध-क्षेत्र के अदर चली जावे और भाग्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक के स्वय व्यभिचार-दोष के कारण पति-पत्नी मे खटपट या विवाह-विच्छेद तक हो सकता है।

यदि हृदय-रेखा बहुत लम्बी हो और बुध-क्षेत्र के नीचे आने पर अनेक लघु-शाखा युक्त हो या उसमे से गो-पुच्छ के अन्त की तरह बहुत-सी रेखाएँ निकले तो प्रत्येक लघु-शाखा या सूक्ष्म रेखा किसी प्रेम-सम्बन्ध की द्योतक है। कई बार कोई विशेष सम्बन्ध नही होता किन्तु यह प्रेमी प्रकृति का परिचायक है।

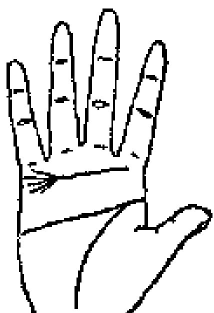
चित्र नं० ५५

यदि हृदय-रेखा के अन्त मे कोई शाखा न निकले तो सन्तानोत्पादक-शक्ति की अल्पता समझनी चाहिये (अन्य लक्षणो से इसकी पुष्टि करना उचित है)।

हृदय-रेखा की शाखायें

(१) यदि हृदय-रेखा से कोई शाखा निकलकर ऊपर की ओर

न जावे तो हृदय की शुष्कता और नीरसता प्रकट होती है। यदि साथ-ही-साथ शीर्ष-रेखा भी शाखाविहीन हो और हृदय-रेखा (विशेषकर इसका मध्य भाग) शीर्ष-रेखा से काफी दूर हो तो ऐसे व्यक्ति के जीवन में प्रेमजनित सरसता नही आती।

(२) यदि हृदय-रेखा से शाखायें निकलकर नीचे की ओर (शीर्ष-रेखा की ओर) जावें तो यह प्रकट करती है कि जातक जिनको प्रेम करता है वे बदले मे इसको प्रेम नही करते इस कारण इसके हृदय मे दु ख और निराशा उत्पन्न हुई या होगी।

(३) यदि हृदय-रेखा पर कई बिलकुल सीधी (लम्ब) रेखा नीचे की ओर होवे तो (क) यदि सूर्य-क्षेत्र के नीचे हो ऐसा जातक अनेक विद्याओ मे प्रवीण होता है किन्तु इसकी विद्वत्ता के अनुरूप इसे लाभ नही होता।

(ख) यदि अन्य क्षेत्रो के नीचे हृदय-रेखा पर शीर्ष-रेखा की ओर जाने वाली, लम्ब रेखाये हो तो मित्रो द्वारा कष्ट, विपत्ति समझनी चाहिये।

उपर्युक्त न० (२) और न० (३) मे अन्तर यह है कि हृदय-रेखा से जो शाखाएँ निकलती है वे हृदय-रेखा मे से निकलती हैं और हृदय-रेखा के साथ ३०-३५ डिग्री का कोण बनाती है। किन्तु लम्ब-रेखा ९० डिग्री का कोण बनाती है, और हृदय-रेखा को स्पर्श-मात्र करती है उसमे से निकलती नही।

यदि हृदय-रेखा से कोई रेखा निकलकर कनिष्ठिका पर जावे और वहा समाप्ति पर 'हुक' का आकार हो जावे तो किसी दुर्घटना से गहरी चोट लगती है।

यदि कोई लहरदार रेखा चन्द्र-क्षेत्र से चलकर हृदय-रेखा पर

आ मिले तो ऐसा व्यक्ति हिंसात्मक प्रवृत्ति का होता है। किन्तु यदि चन्द्र-क्षेत्र से दो सीधी समानान्तर रेखाये हृदय-रेखाओ पर आएँ तो Apoplexy[1] से मृत्यु होती है।

यदि हृदय-रेखा से निकलकर कोई शाखा शनि-क्षेत्र पर जावे और एकदम मुडकर 'हुक' का आकार बनाती हुई समाप्त हो जावे तो समझना कि जातक ने किसी को प्रेम किया किन्तु प्रेम के बदले प्रेम न प्राप्त होने के कारण उसे भारी धक्का लगा।

यदि हृदय-रेखा टूटी हो

यदि हृदय-रेखा कई स्थानो पर टूटी हो तो या तो ऐसे व्यक्ति प्रेमी होते नही या लगन के साथ किसी एक व्यक्ति को प्रेम[2] नही करते, उनके प्रेम के थोडे-थोड़े बहुत हकदार होते है।

यदि हृदय-रेखा दोनों हाथो मे शनि-क्षेत्र के नीचे टूटी हुई हो तो रक्त-प्रवाह के दोष के कारण साघातिक बीमारी होती है। हृदय को रक्त पहुँचाने वाली कोई नली बहुत चौडी हो जाती है और जातक अल्पायु होता है। किन्तु यदि दोनो खड -एक-दूसरे के ऊपर हो तो बीमारी के बाद जातक बच जाता है।

यदि शनि-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा टूटी हो तो प्रेम-सम्बन्ध (जातक की इच्छा के विरुद्ध) टूट जाता है। परिणाम मे दु ख पहुँचाने वाले प्रेम का, यह लक्षण है। यदि मगल-क्षेत्र-स्थित चिह्नो से इसकी पुष्टि हो तो निश्चय ही परिणाम मे घोर सताप होता है।

यदि सूर्य-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा टूटी हो तो झिक्कीपन मे आकर, आवेश मे किसी बात पर चिढकर, जातक प्रेम-सम्बन्ध विच्छेद कर देता है। जातक के प्रेम मे अभिमान या अहकार की

१. रक्तचाप जनित मूर्छा।
२. प्रेम—स्त्री-पुरुष प्रेम।

मात्रा विशेष होती है। यही चिह्न हृदय-रोग का लक्षण भी है। यदि दोनो हाथो मे इस स्थान पर हृदय-रेखा टूटी हो तो हृद्रोग के कारण मृत्यु होगी। यह समझना चाहिये।

यदि बुध-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा टूटी हो तो जातक के लोभ के कारण प्रेम-सम्बन्ध विच्छेद होता है। प्रेम की भावना से अधिक, द्रव्य की भावना, प्रबल होती है। स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से—यकृत-दोष के कारण—हृदय अपना कार्य ठीक नही करेगा। पित्तज हृद्रोग या उसी वर्ग के रोग का भय।

ऊपर जहाँ-जहाँ हृदय-रेखा टूटने का दोष और उसका फल बताया गया है वहाँ यदि एक ही हाथ मे हृदय-रेखा खण्डित तो हो और दोनो खण्ड एक-दूसरे के ऊपर भी आ जावे तो दोष की अल्पता समझनी चाहिए। प्रेम-सम्बन्ध विच्छेद हो जावेगा किन्तु पुनर्मिलन भी हो जावेगा। यदि दोनो हाथ मे टूटने का अशुभ लक्षण हो तो दोष की मात्रा अधिक समझनी चाहिये।

हृदय-रेखा की अन्य प्रधान रेखाओं से युति या सम्बन्ध

यदि दोनो हाथो मे हृदय-रेखा, शीर्ष-रेखा और जीवन-रेखा प्रारम्भिक स्थान मे मिली हुई हो और शीर्ष-रेखा के मध्य मे 'क्रॉस'-चिह्न हो तो सहसा मृत्यु हो जायेगी। यदि दोनो हाथो मे एक-से लक्षण हो तो आशंका और भी अधिक समझनी चाहिये। किस अवस्था मे मृत्यु होगी यह जीवन-रेखा से देखना चाहिये।

यदि हृदय, शीर्ष तथा जीवन-रेखा तीनो प्रारम्भिक स्थान मे मिली हो और बृहस्पति के क्षेत्र पर किसी अल्प टेढी रेखा को कोई दूसरी क्षुद्र-रेखा काटकर 'क्रॉस' चिह्न बनाती हो तो ऐसे

जातक के जीवन मे कोई ऐसा प्रेम-सम्बन्ध होगा जिसके कारण इसे घोर कष्ट, निराशा और संताप होगा—प्राणान्त कष्ट तक हो सकता है। इस 'क्रॉस' मे चारो 'क्रॉस'-खड बराबर नही होते किन्तु एक खड तलवार की तरह लम्बा होता है।

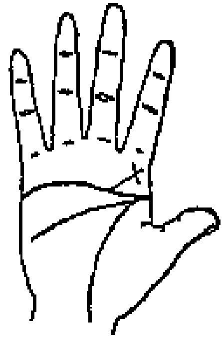

चित्र न० ५५

यदि हृदय-रेखा गहरी और लम्बी हो किन्तु प्रारम्भिक स्थान मे जीवन-रेखा तथा शीर्ष-रेखा से जुडी हुई हो, शीर्ष-रेखा के अन्त से एक शाखा निकलकर चन्द्र-क्षेत्र पर जावे और शीर्ष-रेखा स्वय का अन्त यथास्थान हो या हृदय-रेखा से मिल जावे तो यह अत्यन्त उग्र प्रेम का द्योतक है। ऐसे मनुष्य प्रेम मे अन्धे हो जाते है। उनकी बुद्धि सारा सयम छोड देती है। परिणाम—जो प्रेमान्धता का होता है वही।

हृदय-रेखा का गहरा और लम्बा होना प्रेमातिशय प्रकट करता है। प्रारम्भिक युति प्रकट करती है कि भावना का कितना अधिक जोर है। शीर्ष-रेखा का हृदय-रेखा पर अन्त होना यह प्रकट करता है कि दिल ने दिमाग पर काबू पा लिया। शीर्ष-रेखा से जो चन्द्र-क्षेत्र पर शाखा जाती है वह 'कल्पना' का आधिक्य सूचित करती है। इन्ही सब के कारण से प्रेमान्धता होती है। परिणाम अच्छा नही।

यदि हृदय-रेखा शनि-क्षेत्र के नीचे से प्रारम्भ हो और वहाँ शीर्ष-रेखा से मिली हुई हो तो प्रेमान्धता के कारण दुष्परिणाम होता है। यदि यह लक्षण दोनो हाथों मे हो तो इसी कारण आकस्मिक मृत्यु का द्योतक है।

यदि उपर्युक्त प्रकार की हृदय-रेखा शनि-क्षेत्र के नीचे किसी क्षुद्र-रेखा से कटी हो तो वैवाहिक जीवन दु खमय बीतता है। दु स्थानो मे (अनुपयुक्त व्यक्ति के साथ) विवाह या प्रेम-सम्बन्ध के कारण घोर निराशा होती है।

यदि स्वय हृदय-रेखा बुध-क्षेत्र के नीचे तक ठीक हो फिर लहरदार आकृति धारण कर शीर्ष मे जा मिले तो कम अवस्था मे मृत्यु होती है अर्थात् जातक पूर्णायु नही भोगता।

यदि बृहस्पति के क्षेत्र से हृदय-रेखा प्रारम्भ हो, और चन्द्र-क्षेत्र से निकली हुई भाग्य-रेखा आकर हृदय-रेखा मे विलीन हो जावे तो ऐसे जातक को ऐसी प्रेमिका प्राप्त होती है जिसके अत्यन्त प्रेम के कारण जातक का जीवन बहुत हर्षमय रहता है। यदि स्त्री के हाथ मे यह लक्षण हो तो उसे बहुत अधिक प्रेम करने वाला पति मिलेगा। किन्तु उत्कट प्रेम की प्रतिक्रिया भी होती है।

यदि हृदय-रेखा से कोई रेखा चलकर भाग्य-रेखा को काटे और भाग्य-रेखा खडित हो तो पति-पत्नी या अन्य प्रेमी व्यक्ति की मृत्यु की सूचक है भाग्य-रेखा जहाँ खडित हो उससे यह अनुमान लगाना चाहिये कि किस अवस्था मे शोक-घटना होगी। भाग्य-रेखा मनुष्य के कार-बार, धन-समृद्धि, कार्योत्पादन-शक्ति और उसमे सलग्नता का द्योतक है। यदि भाग्य-रेखा खडित हो तो इन सब मे बाधा सूचित होती है। इसलिये केवल ऐसे

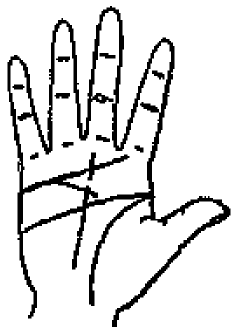

चित्र न० ५६

प्रियजनों में से किसी की मृत्यु होती है जिसके कारण भाग्योदय में बाधा पड़ गई हो।

यदि भाग्य-रेखा से रेखाएँ निकलकर हृदय-रेखा की ओर जावें किन्तु उसको स्पर्श न करें तो ऐसे प्रेम-सम्बन्ध द्योतित होते हैं जो विवाह में परिणत नहीं होते। यदि भाग्य-रेखा से निकलने वाली उपर्युक्त रेखा हृदय-रेखा का स्पर्श करे तो प्रेम का परिणाम विवाह होता है, यदि यही रेखा हृदय-रेखा को काट दे तो विवाह तो होगा किन्तु ऐसे विवाह का परिणाम दुःखद होता है।

यदि जीवन-रेखा से कोई रेखा या रेखायें निकलकर हृदय-रेखा पर आवें तो हृद्रोग[1] के कारण या प्रेम के परिणाम-स्वरूप निराशा के कारण रोग की द्योतक है।

यदि शीर्ष-रेखा से कोई रेखा निकल कर हृदय-रेखा का स्पर्श करे तो किसी आत्यन्तिक (बहुत अधिक) प्रेम के कारण ऐसे जातक के जीवन में उथल-पुथल होगी। किन्तु यदि हाथ के अन्य भागों से बहुत प्रेम करने के लक्षण जातक में न हों और बुध-क्षेत्र उन्नत हो तो ऐसे जातक का, प्रेम या विवाह में व्यापारिक दृष्टिकोण होता है कि मुझे आर्थिक लाभ कितना होगा? बुध धनोपार्जन-बुद्धि और व्यापारिक भावना का प्रतीक है, शुक्र कामुक वासना और सौन्दर्यप्रियता का प्रतीक है, मंगल उग्रता और साहस का, बृहस्पति उदात्त भावना, कर्त्तव्य परायणता तथा संयम का, चन्द्र कल्पना, मनोराज्य और चित्त की सरलता का, सूर्य गुणग्राहिणी

---

१. बहुत से मनुष्यों का 'हृदय' ठीक काम नहीं करता है इस कारण शरीर में रक्त-प्रसार ठीक प्रकार नहीं हो पाता और जातक बीमार हो जाता है। चाहे डाक्टर 'हृद्रोग' न कहें किन्तु मूल कारण 'हृदय' होता है।

शक्ति और आशा-प्रियता का तथा शनि अन्तर्मुखी वृत्ति और गम्भीरता का। इस कारण अन्य ग्रह-क्षेत्रों के उच्च न होने और केवल बुध-क्षेत्र के उच्च होने से प्रत्येक कार्य मे आर्थिक या व्यापारिक बुद्धि प्रबल हो जाती है।

यदि हृदय-रेखा से अनेक छोटी-छोटी समानान्तर रेखाएँ नीचे की ओर शीर्ष-रेखा के पास तक जावे—किन्तु उसे काटें नही—तो ऐसे पुरुष पर स्त्रियों का विशेष प्रभाव रहेगा। यदि स्त्री के हाथ मे हो तो उस पर पति का विशेष प्रभाव समझना चाहिए। इसका वास्तविक अर्थ है कि हृदय मस्तिष्क पर प्रभाव डाल रहा है। किन्तु यदि यही रेखाये हृदय-रेखा के उस भाग से निकलें जो सूर्य-क्षेत्र के नीचे है तो ऐसे व्यक्ति अनेक विद्या पारंगत होते है किन्तु उससे कोई विशेष फलोत्पत्ति नही होती।

हृदय-रेखा पर चिह्न

(१) यदि हृदय-रेखा को छोटी-छोटी आरी के नोको की तरह रेखाये आडी काटे तो या तो बारम्बार प्रेम मे निराशा-जनित दु:ख होता है या हृद्रोग किंवा यकृत-रोग का लक्षण है यकृत ठीक काम नही करने से स्नायविक-विकार हो जाते है जिनका हृदय पर अच्छा प्रभाव नही पडता।

(२) यदि हृदय-रेखा पर बिन्दु-चिह्न हो तो या तो प्रेम मे निराशा का द्योतक है या हृदय की तेज धडकन (एक प्रकार का हृद्रोग) का।

(३) किन्तु यदि हृदय-रेखा पर एक ही सफेद बिन्दु-चिह्न हो तो प्रेम मे सफलता प्रदर्शित करता है। जिस प्रकार शीर्ष-रेखा पर सफेद बिन्दु-चिह्न बौद्धिक गवेषणा और सफलता का प्रतीक है उसी

प्रकार हृदय-रेखा पर स्थित सफेद बिन्दु-चिह्न प्रेम-मार्ग मे अध्यवसाय और अन्त मे सफलता प्रकट करता है। जहाँ हृदय-रेखा प्रारम्भ होती है यदि करीब-करीब उसी स्थान पर यह सफेद चिह्न हो तो जातक ऐसी स्त्री से प्रेम करेगा जो विलासप्रिय, उज्ज्वल गौरवर्ण की होगी। बहुत ऊँची नही—जिसके ठोडी या गाल पर गड्ढे होगे। किन्तु यदि यह चिह्न गुरु-क्षेत्र के नीचे जो हृदय-रेखा का भाग है उस पर हो तो कुछ पीलापन लिये गौरवर्ण, गभीर, भाग्यशालिनी, शान्त प्रकृति की प्रेम करने वाली स्त्री से जातक प्रेम करेगा। यदि शनि-क्षेत्र के नीचे सफेद चिह्न हो तो कृपण, कुछ लम्बी, श्यामवर्ण की स्त्री से प्रेम होगा। यदि सूर्य-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा पर ऐसा चिह्न हो तो, कला मे विशेष रुचि रखने वाली उच्च कुल की कन्या से प्रेम कर विवाह मे सफलता होगी। यदि बुध-क्षेत्र के नीचे यह चिह्न हो तो दुबली पतली, बहुत बातूनी चचल किन्तु बुद्धिमती कन्या से विवाह या प्रेम होगा।

यदि बिन्दु-चिह्न सफेद हो तभी इसे शुभ लक्षण समझना चाहिये।

(४) किन्तु यदि यह बिन्दु-चिह्न काले रग का या मटमैला हो तो शुभ लक्षण नही है प्रत्युत् अशुभ लक्षण है। यदि यह अशुभ चिह्न सूर्य-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा पर हो तो जिस व्यक्ति को जातक प्रेम करता है, उसे अन्य कोई कलाकार या प्रसिद्ध पुरुष अपना लेगा (अपनी बना लेगा), इस कारण जातक को विषाद और निराशा होगी। यदि बुध-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा पर यह चिह्न हो तो जातक की प्रेमिका को कोई डाक्टर या व्यापारी अपनी बना लेगा और इस कारण दु:ख और निराशा होगी। यदि

स्त्री के हाथ में यह हो तो उसके पति या प्रेमी का संयोग उपर्युक्त प्रकार की अन्य स्त्री से होगा यह कहना उचित है।

किन्तु यदि स्वास्थ्य-रेखा भी क्षीण, अस्पष्ट और लहरदार हो तो प्रेम में निराशा की जगह इसे अस्वास्थ्य का चिह्न समझना चाहिये। यकृत के ठीक काम न करने से हृदय की धड़कन का रोग होगा।

(५) यदि हृदय-रेखा पर लम्बा लाल दाग हो तो रक्तचाप-जनित मूर्च्छा की आशंका होगी।

(६) यदि काले या नीले चिह्न हो तो तीव्र मलेरिया ज्वर या वात विकार (गठिया आदि रोग) हो।

(७) यदि बुध-क्षेत्र पर 'क्रॉस चिह्न हो और क्रॉस' बनाने वाली दोनो छोटी रेखाओ मे एक हृदय-रेखा को काटती हो तो व्यापार में गहरी हानि होगी। (कब होगी ? यह भाग्य-रेखा से विचार करना चाहिये।)

(८) जहाँ भाग्य-रेखा हृदय-रेखा को काटती हो वहाँ यदि कई 'क्रॉस'-चिह्न हो तो प्रेम मे पड जाने के कारण आर्थिक कठिनाइयाँ होगी, यह प्रकट होता है।

(९) यदि हृदय-रेखा से कोई शाखा निकलकर चन्द्र-क्षेत्र पर आवे और उसका योग किसी तारे के चिह्न से हो तो अतृप्त काम-वासना के कारण दिमाग खराब होने की आशंका होगी (बहुत सी कन्याओ और युवको मे इस रोग का मूल जन्म से ही रहता है और इस प्रकार के रोग मे पैत्रिक या मातृक रक्त का प्रभाव होता है। इन्हें शीघ्र ही हिस्टीरिया या अन्य इसी प्रकार के रोग हो जाते है।

(१०) यदि हृदय-रेखा पर छोटा-सा वृत्त चिह्न हो तो 'हृदय' की स्वास्थ्य-सम्बन्धी कमजोरी का द्योतक है। यदि सूर्य-क्षेत्र के नीचे यह हो तो आंखों की दृष्टि कम हो जावेगी।

(११) यदि हृदय-रेखा पर या भिड़ा हुआ चतुष्कोण चिह्न हो तो रोग किंवा प्रेमजनित निराशा से रक्षा करता है।

(१२) यदि हृदय-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो अनुचित प्रेम-सम्बन्ध प्रकट करते है। जितने द्वीप हों उतने ही अनुचित सम्बन्ध। किन्तु यदि हाथ के अन्य लक्षण वासना-प्रधान न हों तो "यह हृदय ठीक काम नहीं करता" यह अस्वास्थ्य घोषित करता है।

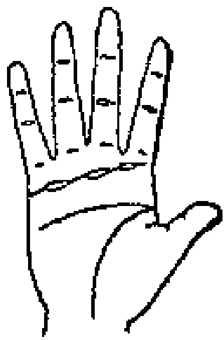

चित्र नं० ५७

(१३) यदि शनि-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा पर उपर्युक्त द्वीप-चिह्न हो तो समझना चाहिये कि अनुचित प्रेम-सम्बन्ध के कारण भाग्य में काफी बाधा पहुँची है। किन्तु जैसा ऊपर बताया गया है यदि हाथ के अन्य लक्षण वासना की प्रबलता न प्रकट करते हों तो हृदय की स्नायविक अस्वस्थता का द्योतक है।

(१४) यदि हृदय-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो और भाग्य-रेखा पर भी हो तो ऐसा व्यक्ति अनुचित प्रेम-सम्बन्ध करने में किसी बात का विचार न करेगा।

(१५) यदि द्वीप-चिह्न सूर्य-क्षेत्र के नीचे वाले हृदय-रेखा के भाग पर हो तो नेत्र-ज्योति को गहरा आघात (वृद्धावस्था में अन्धे होने का भय) प्रकट करता है।

यदि दो हृदय-रेखा हों

दो हृदय-रेखा होना आत्यन्तिक (अत्यन्त घना) प्रेम की भावना प्रकट करता है। बहुत प्रेम करना एक प्रकार से कष्ट भी पहुँचाता है, क्योंकि जितना अधिक प्रेम हो उतनी ही अधिक निराशा की प्रतिक्रिया भी होती है। यदि मनुष्यों के हाथ में ऐसी दो हृदय-रेखा हो तो उनमे आवश्यकता से अधिक जोश होता है। यदि

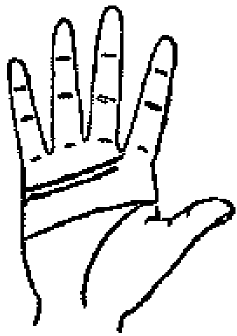

चित्र नं० ५८

स्त्रियों के हाथ में हो तो उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है। किन्तु दो हृदय-रेखा तभी समझनी चाहिये जब दोनों रेखा समानान्तर और लम्बी हो।

१३वाँ प्रकरण

भाग्य-रेखा

मणिबन्ध के कुछ ऊपर से आरम्भ होकर यह रेखा सीधी मध्यमा या तर्जनी के मूल तक जाती है। इसे संस्कृत में ऊर्ध्व-रेखा कहते हैं। समुद्र ऋषि के अनुसार—

"त्यक्त्वाऽधो मणिबन्ध या रेखा स्यातकरगामिनी।
सुवर्णं रत्नराज्यश्री दायिका सा न संशय ॥"

अर्थात् यह रेखा सुवर्ण, रत्न, राज्यश्री देने वाली है इसमें संशय नहीं। 'स्कान्द शारीरक' ग्रंथ के अनुसार यदि रेखा प्रारम्भ में जीवन-रेखा से मिली हो और इस रेखा के प्रारम्भ में 'शख' का चिह्न हो तो उस मनुष्य की विभूति या आर्थिक समृद्धि इतनी अधिक होती है कि लोगों के चित्त को मोहित कर लेती है। 'शख' की बजाय यदि 'मत्स' चिह्न हो तब भी यही फल होता है। ऐसी रेखा को 'धात्री' कहते हैं। यदि मध्यमा उंगली के नीचे जाकर यह समाप्त न हो किन्तु अनामिका के मूल में जाकर समाप्त हो तो भी भाग्योदय कारक बहुत विशिष्ट फल होता है। ऐसी ऊर्ध्व-रेखा या भाग्य-रेखा को 'गोपी' कहते हैं।

(देखिये 'स्कान्द शारीरक' पृ० ४३-४४)

समुद्र ऋषि का मत है कि —

"अंगुष्ठस्यापि मध्येऽपि स्तेनृपतिमुत्तमम्।
सैव तर्जनिकां प्राप्य दत्ते साम्राज्य मग्रिमम् ॥

सेनापतिर्यनेशो वा मध्यभागतरेखया ।
अनामिका पुन श्रेष्ठ धनवान् सर्वदा नर ।।
सुखिन सुभग वापि सम्प्राप्ता सा कनिष्ठिकाम् ।
करोति सत्यमेवैषा यद्यच्छिन्ना सुवर्णभाक् ।"

अर्थात् यदि यह रेखा अँगूठे और तर्जनी के बीच मे जाकर समाप्त हो और अखण्डित बलवान् हो तो मनुष्य को राजा बनाती है । यदि तर्जनी के मूल मे समाप्त हो और अच्छिन्न (टूटी हुई न हो) हो तो राज्याधिकार देती है । यदि मध्यमा के मूल तक जावे तो ऐसा व्यक्ति बहुत धनी होता है । अनामिका के मूल तक जावे तो भी यही फल । कनिष्ठिका के मूल तक जावे तो मनुष्य सुखी, सौभाग्यवान होता है और उसके पास बहुत सोना रहता है । सर्वत्र यह फल ऐसी रेखा का होता है जो कटी-फटी या दोषयुक्त न हो । इसी रेखा को ऊर्ध्व-रेखा भी कहते हैं । अब पाश्चात्य मतानुसार इसका विस्तृत परिचय दिया जाता है ।

पाश्चात्य मत

करतल के नीचे से—कभी मणिबन्ध से, कभी चन्द्र-क्षेत्र के निम्न भाग से या कभी जीवन-रेखा से भिडी हुई जो रेखा ऊपर की ओर शनि-क्षेत्र की ओर जाती है—उसे भाग्य-रेखा कहते हैं । कभी-कभी उपर्युक्त किसी भी स्थान से न निकलकर हाथ के बीच से ही यह निकलती है । कुछ हाथो मे यह शनि-क्षेत्र की ओर न जाकर सूर्य-क्षेत्र की ओर चली जाती है । जिस प्रकार इस के निकलने के स्थान अलग-अलग हैं उसी प्रकार इसका अन्त भी शनि-क्षेत्र पर न होकर या तो पास के किसी दूसरे ग्रह-क्षेत्र पर हो जाता है या यह मध्यमा उगली के तृतीय पर्व तक पहुँच जाती है ।

यदि अन्य किसी क्षेत्र पर यह जाकर रुके तो इसकी असाधारण स्थिति समझनी चाहिये। किन्तु सामन्यत शनि-क्षेत्र पर इसका अन्त होता है इस कारण बहुत से पाश्चात्य हस्तपरीक्षक इसे शनि-रेखा कहते है। किन्तु शनि-रेखा की अपेक्षा इसको भाग्य-रेखा कहना ही विशेष उपयुक्त होगा क्योंकि इससे भाग्योदय का विचार किया जाता है। यदि शनि-क्षेत्र पर यह रेखा पहुँचे और वहां गहरी हो तो शनि-ग्रह के अच्छे गुण यथा गम्भीरता, दूरदर्शिता किसी बात का पूर्ण विचार कर कार्य करना उस जातक मे पाये जायेंगे और इन्ही गुणो के कारण वृद्धावस्था मे ऐसे व्यक्ति पूर्ण भाग्योदय का अनुभव करते है। शनि का स्वभाव है परिश्रमशील होना, चिन्तनशीलता और अध्यवसायपूर्वक किसी काम मे लग जाना, ये सब गुण उस व्यक्ति मे होते है जिसके हाथ मे शनि-रेखा सुन्दर और गहरी शनि-क्षेत्र तक पहुँचती है। (देखिये चित्र नं० ५८)

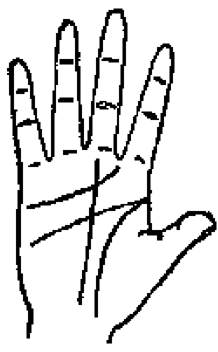

चित्र नं० ५९

बहुत से हाथों मे शनि-रेखा नही पाई जाती। इससे यह नही समझना चाहिए कि ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय होगा ही नही, क्योंकि बहुत से व्यक्ति ऐसे है जो आर्थिक दृष्टि से पूर्ण भाग्यवान कहलाने के अधिकारी हैं किन्तु उनके हाथ मे शनि-रेखा का सर्वथा अभाव है। शनि-रेखा का न होना केवल यह सूचित करता है कि ऐसे जातक साधारण स्थिति मे पैदा हुए। बचपन मे न उन्हें कोई विशेष सहायता मिली न इतना धन था कि वे कोई व्यापार आदि

द्वारा अपना भाग्योदय कर सकते किन्तु केवल अपने बाहुबल और परिश्रम से धीरे-धीरे अपनी स्वयं की उन्नति कर ये लोग उन्नति प्राप्त करते हैं। उनके जीवन मे बाहरी कोई साधन ऐसा नही था जिसे 'भाग्य' कहा जा सके। ये लोग अपने भाग्य के स्वयं निर्माता होते है। जो धनिक कुल मे उत्पन्न होता है वह पैत्रिक धन से उच्च शिक्षा प्राप्त कर उन्नत पद पर पहुँचे तो यह उसका 'भाग्य' है कि वह धनी कुल मे उत्पन्न हुआ। इसी प्रकार यदि कोई उच्च पदाधिकारी के घर जन्म ले और इस कारण बडे होने पर उसे कोई ऊँची जगह मिल जाय तो यह भी उसका 'भाग्य' है। किन्तु यदि यह सब परिस्थिति किसी के जन्म के समय अथवा बाल्यावस्था मे न हो तो वह 'भाग्य' लेकर पैदा नही होता किन्तु अपना भाग्य स्वयं बनाता है।

भाग्य-रेखा के प्रारम्भिक स्थान

भाग्य-रेखा या तो (१) मणिबन्ध से प्रारम्भ होती है, (२) या उससे कुछ हटकर हथेली के आरम्भ से, (३) या कुछ टेढी चन्द्र-क्षेत्र के नीचे के भाग से, (४) या शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर टेढी हाथ के मध्य भाग मे आती है और फिर ऊपर की ओर (उंगलियो की ओर) जाती है, (५) या जीवन-रेखा के नीचे के भाग से भिडी हुई प्रारम्भ होकर शनि-क्षेत्र को जाती है, (६) या हथेली के मध्य से, (७) या केवल शनि-क्षेत्र पर होती है।

(१) यदि मणिबन्ध की तृतीय रेखा से प्रारम्भ हो तो जातक को कोई भारी शोक होगा। किन्तु यदि मणिबन्ध की प्रथम रेखा से प्रारम्भ हो तो बचपन से ही उसके कन्धो पर अपना या अन्य कुटम्बी जनो का भी बोझा पड जायगा। यदि मणिबन्ध की प्रथम

रेखा से प्रारम्भ होकर हृदय-रेखा तक आवे तो ऐसे जातक को जीवन मे या तो प्रेम-सम्बन्ध के कारण जीवन-भर कठिनाइयो का सामना करना पडता है या अन्य रोग-चिह्न हो तो हृदय-रोग होता है। यदि मणिबन्ध से निकलकर यह सीधी मध्यमा उगली के तृतीय पर्व तक (पर्व के ऊपर) चली जाय तो ऐसे मनुष्य के भाग्य मे गहरा उलट-फेर होता है। यदि हाथ के अन्य लक्षण शुभ हो तो भाग्योदय, यदि अन्य लक्षण अशुभ हो तो इसके विपरीत समझना चाहिए।

(२) यदि करतल के नीचे से प्रारम्भ हो तो जातक को स्वय अपने उद्योग और परिश्रम से आर्थिक सफलता प्राप्त होगी।

(३) यदि चन्द्र-क्षेत्र से यह रेखा प्रारम्भ होकर शनि-क्षेत्र तक जावे तो ऐसे पुरुष का किसी स्त्री की सहायता या सहयोग से भाग्योदय होता है। बहुत बार यह भी देखा है कि ऐसे पुरुष अपनी ही पत्नी की उचित और नेक सलाह मानते है और उनको सफलता प्राप्त होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ मे ऐसी रेखा हो तो अच्छे कुल मे विवाह के कारण उसका भाग्योदय होगा। यदि वह स्त्री स्वय नौकरी या अन्य कार्य करती है तो किसी पुरुष की सहायता से उसकी पदोन्नति होगी।

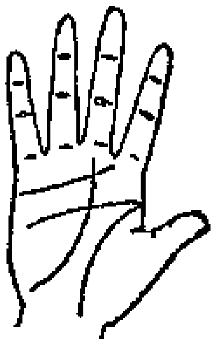

चित्र नं० ६०

(४) यदि शुक्र-क्षेत्र से भाग्य-रेखा प्रारम्भ हो तो यह प्रकट करती है कि जातक का भाग्योदय होगा और उसे आर्थिक सफलता मिलेगी। इसमे उसके सगे-सम्बन्धी सहायक होगे।

(५) यदि जीवन-रेखा से मिलकर आरम्भ हो तो जातक को अपने उद्योग से सफलता मिलती है परन्तु कुटुम्बी लोग उसे इतना योग्य बना देते है कि वह अपने पैरो पर खड़ा हो सके। किन्तु यदि जीवन-रेखा के पास-पास कुछ दूर तक भाग्य-रेखा रहे और उससे मिली हुई न हो तो जीवन के प्रारम्भिक भाग मे घर के लोगो का जातक पर विशेष प्रभाव रहेगा यह सूचित होता है।

(६) यदि भाग्य-रेखा हथेली के मध्य से प्रारम्भ हो तो समझना चाहिए कि जातक के जीवन का प्रारम्भिक भाग अच्छी स्थिति में नही बीता। यदि जीवन-रेखा का प्रारम्भिक भाग अस्वास्थ्य प्रकट करता हो और जिस अवस्था से भाग्य-रेखा प्रारम्भ हो रही हो उस अवस्था से जीवन-रेखा भी स्वास्थ्य प्रदर्शन कर रही हो तो समझना चाहिए कि स्वास्थ्य अच्छा न होने के कारण जीवन के शुरू मे भाग्योदय नही हो सका। इसी प्रकार यदि जीवन-रेखा तो प्रारम्भ से ही अच्छी हो किन्तु शीर्ष-रेखा अच्छी न हो तो दिमागी कमजोरी या पढाई में असफलता के कारण प्रारम्भिक काल में भाग्य मे रुकावट हुई। यदि जीवन-रेखा, शीर्ष तथा हृदय-रेखा भी कोई खराबी प्रकट न करें तो हाथ के अन्य भागो को देखकर यह निश्चय करना उचित है कि किस कारण प्रारम्भिक अवस्था मे अच्छा समय नही बीता। उदाहरण के लिए यदि बायें हाथ मे तो काफी नीचे से भाग्य-रेखा प्रारम्भ हुई हो किन्तु दाहिने हाथ मे हथेली के मध्य भाग से प्रारम्भ हुई हो तो यह अनुमान लगाना चाहिए कि जब जातक पैदा हुआ (इसका प्रदर्शक बायाँ हाथ है) तब स्थिति ठीक थी किन्तु बाद मे (इसका प्रदर्शक दाहिना हाथ है) स्थिति बिगड गई। यह स्थिति क्यो बिगडी इसका कारण ढूंढना चाहिए। जीवन के प्रारम्भिक

भाग मे जातक का अपना उतना दोप नही होता है जितना परिस्थिति का प्रभाव। उदाहरण के लिए यदि शुक्र-क्षेत्र पर जीवन-रेखा के समानान्तर मगल के द्वितीय-क्षेत्र से कोई प्रभाव-रेखा आए और कुछ दूर चलने पर उसके अन्त मे तारे का चिह्न हो तो यह माता या पिता, किसी के प्रभाव का अन्त हो गया अर्थात् उसकी मृत्यु हो गई, यह प्रकट करता है। ऐसे हाथ में यदि भाग्य-रेखा हथेली के मध्य से प्रारम्भ हो तो यह परिणाम निकालना चाहिए कि पिता की मृत्यु के कारण, आर्थिक परिस्थिति कमजोर हो जाने से, जीवन के प्रारम्भिक भाग मे रुकावट रही।

(७) यदि केवल शनि-क्षेत्र पर ही भाग्य-रेखा हो तो समझना चाहिए कि जीवन का मध्य भाग बहुत कठिनता से बीता और भाग्योदय पचास वर्ष की अवस्था के बाद हुआ।

रेखा का रूप, लक्षण, गुण और अवगुण

यदि रेखा गहरी हो तो अच्छा है किन्तु यदि और रेखाओ की अपेक्षा यह रेखा पतली और हल्की हो तो समझना चाहिए कि भाग्य-वृद्धि मे उतनी सहायक नही होगी।

यदि भाग्य-रेखा नीचे से प्रारम्भ हो कर शनि-क्षेत्र के ऊपर तक जावे तो आजीवन भाग्योदय रहेगा। किन्तु यदि थोड़ी ही दूर तक हो तो उतनी ही अवस्था तक भाग्योदय समझना चाहिए। यदि रेखा कही पतली और क्षीण तथा कही गहरी और पुष्ट हो तो जिस हिस्से मे कमजोर हो जीवन के उस भाग मे भाग्योदय कम होगा और जिस भाग मे बलिष्ठ हो जीवन के उस काल मे भाग्योदय भी पूर्ण होगा। भाग्य-रेखा यदि प्रारम्भ मे अच्छी और गहरी

हो तो ऐसे व्यक्ति बिना विशेष मेहनत और परिश्रम के ही आगे बढ़ जाते हैं। किन्तु यदि प्रारम्भिक काल में पतली और उथली रेखा हो या बिलकुल न हो तो बहुत परिश्रमपूर्वक सफलता प्राप्त होती है।

यदि भाग्य-रेखा बहुत चौड़ी और उथली हो तो इस का फल बहुत कम होता है अर्थात् बिलकुल नहीं होने से तो अच्छा है किन्तु यह विशेष प्रभाव उत्पादक नहीं है। ऐसे व्यक्ति को लगातार एक के बाद एक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

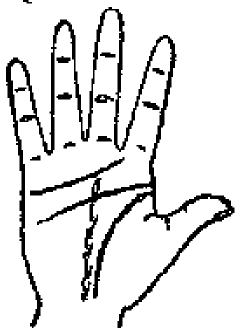

चित्र नं० ६१

यदि रेखा श्रृंखलाकार हो और आरम्भ से लेकर अन्त तक ऐसी ही दशा हो तो इसका परिणाम भी करीब-करीब वही समझिए जो ऊपर बताया जा चुका है। यदि भाग्य-रेखा का थोड़ा-सा भाग श्रृंखलाकार हो और बाकी का भाग गहरा और पुष्ट हो तो जितना भाग श्रृंखलाकार है, जीवन का उतना भाग कठिनाइयों में व्यतीत होगा।

जिस प्रकार जीवन-रेखा, हृदय-रेखा या अन्य रेखाओं में रंग का महत्त्व है उस प्रकार भाग्य-रेखा का रंग से कोई सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि रंग स्वास्थ्य का लक्षण है और भाग्य-रेखा से स्वास्थ्य के विषय में कोई परिणाम नहीं निकाला जाता।

भाग्य-रेखा में दोष-चिह्न

भाग्य-रेखा में क्या-क्या दोष हैं और कहाँ-कहाँ हैं यह ध्यान से

देखना चाहिये, क्योंकि ये सब भाग्य मे रुकावट डालते है। और यदि इनका कारण हाथ के अन्य लक्षणों से मालूम हो सके तो मनुष्य सम्भवत उनमे सुधार भी कर सकता है।

प्रारम्भिक अवस्था मे जो दोष-चिह्न होते है वे या तो अस्वास्थ्य के कारण या आर्थिक परिस्थिति या अन्य किसी ऐसे कारण से होते है कि व्यक्ति का अपना दोष नही कहा जा सकता किन्तु भाग्य-रेखा प्रारम्भिक स्थिति मे दोषयुक्त होने पर भी यदि बाद मे अच्छी हो जाय तो समझना चाहिए कि प्रारम्भिक कठिनाईयो को पार कर ऐसा व्यक्ति अपना भाग्योदय करने मे समर्थ हुआ। उदाहरण के लिए यदि शुक्र-क्षेत्र पर प्रभाव-रेखा तारे के चिह्न से योग करती हो और तारे के चिह्न से चिन्ता-रेखा निकलकर जीवन-रेखा से निकली हुई ऊर्ध्वगामी शाखा को काटती हुई शीर्ष-रेखा मे ऐसी जगह आ मिले जहाँ द्वीप-चिह्न हो और जिस अवस्था मे ये सब अशुभ चिह्न हो उस अवस्था मे भाग्य-रेखा भी अशुभ लक्षणो से युक्त हो तो पिता की मृत्यु के कारण चिन्ता से इसकी भाग्य-वृद्धि मे रुकावट हुई यह समझना चाहिए।

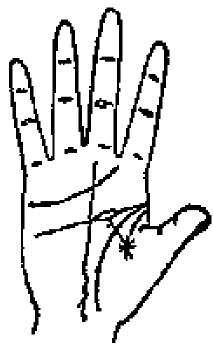

चित्र न० ६२

यदि भाग्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो यह भाग्य-वृद्धि मे रुकावट का लक्षण है। बहुत से पाश्चात्य विद्वान् इन द्वीपो से यह अनुमान लगाते है कि चरित्र-दोष के कारण भाग्य मे बाधा उपस्थित होगी। किन्तु इस दोष को चरित्र-दोष तक सीमित करना उचित नही। यह चरित्र-दोष के कारण या किसी भी अन्य दोष

के कारण आर्थिक क्षति प्रकट करता है—गहरा नुकसान हो या तीव्र आर्थिक कठिनता हो। यदि द्वीप-चिह्न भाग्य-रेखा के प्रारम्भ में ही हो तो माता-पिता की आर्थिक क्षति या कठिनाइयाँ प्रकट करता है। माता-पिता की परिस्थिति खराब होने पर जीवन के प्रारम्भिक काल मे जातक का भाग्य रुका रहा इस परिणाम की पुष्टि के लिए चिन्ता-रेखाओ पर ध्यान देना चाहिए। यदि शुक्र-क्षेत्र पर स्थित प्रभाव-रेखाओं से आरम्भ होकर चिन्ता-रेखाएँ भाग्य-रेखा के ऊपर द्वीप से योग करें तो उपर्युक्त निष्कर्ष अवश्य सत्य होता है। देखिये चित्र नं० ६३ और ६४।

इसी प्रकार जिस अवस्था पर भाग्य-रेखा मे द्वीप-चिह्न है उसी अवस्था पर जीवन-रेखा भी दोषयुक्त हो तो स्वास्थ्य के कारण भाग्य मे रुकावट हुई। यदि शीर्ष-रेखा पर अशुभ चिह्न हो तो मस्तिष्क की कमजोरी या बीमारी के कारण विद्या मे बाधा हुई। सिद्धान्त यह है कि जिस अवस्था मे भाग्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न है उसी अवस्था पर अन्य क्या अशुभ चिह्न है, वे जहाँ या जिस रेखा पर होगे उन्ही कारणो से भाग्योदय मे बाधा समझना उचित है। यदि शुक्र-स्थान पर अधूरी प्रभाव-रेखा तारे के चिह्न से योग करती हो और उस तारे के चिह्न से आरम्भ हुई चिन्ता-रेखाएँ भाग्य-रेखा के ऊपर द्वीप-चिह्न से योग करें तो पिता या अभिभावक की मृत्यु के कारण भाग्य मे बाधा समझनी चाहिए।

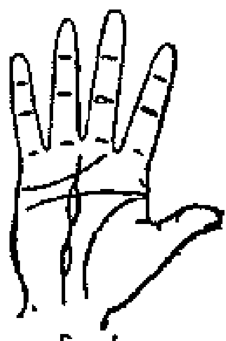

चित्र नं० ६३

यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर चिन्ता-रेखाएँ जीवन-रेखा को काटती हुई भाग्य-

रेखा पर द्वीप-चिह्न से योग करे तो यह समझना चाहिये कि इस जातक के जीवन का वह भाग ऐसे चिड़चिड़ेपन, चिन्ता, और कष्ट की परिस्थिति मे बीता कि उसकी विकास-शक्तियां रुकी रही और इस कारण भाग्योदय भी रुका रहा।

भाग्य-रेखा को काटने वाली छोटी-छोटी अर्गला रेखाएं

यदि भाग्य-रेखा छोटी-छोटी अर्गला रेखाओ से कटी हो तो यह भाग्य मे रुकावट का लक्षण है। जितनी अधिक भाग्य-रेखा को काटने वाली ऐसी रेखा होगी उतनी ही अधिक भाग्य मे रुकावट पड़ेगी। जिस अवस्था पर छोटी अर्गला-रेखा भाग्य-रेखा को काटे उसी अवस्था पर भाग्य मे रुकावट या हानि हुई होगी। काटने वाली रेखा जितनी अधिक गहरी हो उतना ही अधिक नुकसान करेगी। यदि यह बहुत ही छोटी और हल्की है और भाग्य-रेखा के ऊपर से चली जावे तो

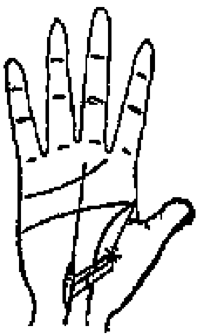
चित्र नं० ६४

साधारण हानि समझनी चाहिए। किन्तु यदि काटने वाली रेखा गहरी हो और भाग्य-रेखा को बिलकुल खण्डित कर दे तो समझिए कि काफी गहरा नुकसान लगेगा। यदि खण्डित होने के बाद भाग्य-रेखा फिर चालू हो जाए तो घाटे और नुकसान या नौकरी छूटने के बाद फिर हालत सुधर जायेगी। किन्तु यदि टूटने के बाद भाग्य-रेखा अपनी दिशा परिवर्तन कर लेती है तो समझिए कि जातक अपने काम के सिलसिले मे कुछ तरमीम या कुछ परिवर्तन कर लेता है। यदि टूटने के पहले भाग्य-रेखा गहरी हो और बाद मे पतली हो तो

समझिए कि पहली-सी स्थिति तो नही हुई किन्तु हाँ काम चल निकला।

यदि भाग्य-रेखा बारम्बार कटी या खण्डित दिखाई दे तो समझिए कि बारम्बार कठिनाइयाँ उपस्थित होगी और मुसीबतो का सामना करना होगा। जितनी बार और जिस अवस्था पर रेखा खण्डित हो उतनी बार भाग्य मे हानि, व्यापार मे घाटा, नौकरी छूटना या अन्य ऐसी ही आपत्तियाँ होगी। यदि खण्डित होने के बाद फिर रेखा तुरन्त ही प्रारम्भ हो जाय तो कष्ट की स्थिति थोडे दिन रहेगी। किन्तु यदि बीच मे भाग्य-रेखा का बिलकुल अभाव हो और कुछ दूर आगे चलकर पुन भाग्य-रेखा प्रारम्भ हो तो उतना समय कठिनता से बीतेगा। यदि दोनो हाथो मे उसी स्थान पर, भाग्य-रेखा पर अशुभ चिह्न हो तो जन्म-जात सस्कार ही इस भाग मे रुकावट के कारण होगे। किन्तु यदि बाये हाथ मे तो रेखा खण्डित न हो और दाहिने में हो तो अपने दोष, आदत, बीमारी या गल्ती से जातक ने उल्टी परिस्थिति उत्पन्न की है। जहाँ रेखा खण्डित हो और एक खण्ड के ऊपर दूसरा खण्ड आ जाय या रेखा खण्डित हो और खण्डित भाग के चारो ओर छोटा चतुष्कोण हो तो दोष की कमी हो जाती है।

यदि भाग्य-रेखा एक सी गहरी न हो—कही अधिक गहरी और चौडी और कही उथली और पतली हो—तो जिस स्थान मे गहरी हो उसके अनुरूप अवस्था मे धन की अच्छी आमदनी और जिस स्थान पर क्षीण रेखा हो जीवन के उस काल मे धन की कमी होगी। यह आमदनी मे वृद्धि और ह्रास प्रकट करती है।

यदि भाग्य-रेखा लहरदार हो तो यह प्रकट होता कि जातक

अपना व्यवसाय या नौकरी बदलता रहेगा और आर्थिक स्थिति बदलती रहेगी—कठिनाइयाँ आवेंगी—जहाँ रेखा गहरी हो वह काल अच्छा है बाकी का समय धनोपार्जन के लिए अच्छा न होगा।

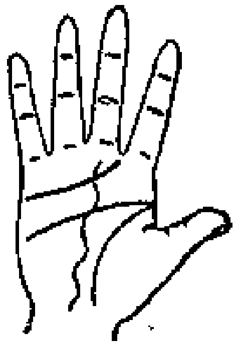

चित्र नं० ६५

यदि प्रारम्भ से भाग्य-रेखा अच्छी हो अर्थात् सुस्पष्ट, गहरी और सीधी हो किन्तु शीर्ष-रेखा तक जाकर रुक जाय तो समझना चाहिए कि ३५ वर्ष की अवस्था तक भाग्य-स्थिति अच्छी रहेगी और ३५-३६ वर्ष की अवस्था मे जातक अपने व्यवसाय या कार्य के सम्बन्ध मे ऐसा निर्णय करेगा जो उलटा परिणाम दिखायेगा अर्थात् जिस नये तरीके से वह धनोपार्जन करना चाहता है वह सफल नही होगा। जिस काल मे (जीवन के जिस भाग मे) भाग्य-रेखा अच्छी होती है उस काल मे थोडे परिश्रम से अधिक धन की आमदनी होती है और जब भाग्य-रेखा क्षीण हो जाय या बिलकुल न हो तो अधिक परिश्रम से थोडा धन उपार्जन होता है।

यदि भाग्य-रेखा से नन्ही-नन्ही सूक्ष्म रेखाएँ निकलकर ऊपर की ओर (उगलियो की ओर) जावे तो यह शुभ लक्षण है। जातक में आशा और आकांक्षा होगी और उसे सफलता प्राप्त होगी किन्तु यदि यही नन्ही-नन्ही सूक्ष्म रेखाएँ भाग्य-रेखा से निकल कर नीचे की ओर जावे तो कठिनता और निराशा प्रकट होती है। यदि इसी अवस्था को प्रकट करने वाले स्थान मे—जीवन-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो स्वास्थ्य-हानि के कारण भाग्य मे रुकावट होगी। किन्तु

यदि शीर्ष-रेखा या हृदय-रेखा पर इस अवस्था में अशुभ चिह्न हो तो दिमाग या दिल (कमजोरी आदि से) भाग्य-वृद्धि में रुकावट होगी। यदि शनि-क्षेत्र या चन्द्र-क्षेत्र के मध्य भाग में रोग-लक्षण हो तो वातजनक (गठिया, वाय आदि) रोग समझने चाहिए।

भाग्य-रेखा को काटने वाली रेखा—ऊपर बताया जा चुका है कि भाग्य-रेखा से निकल कर नन्ही-नन्ही सूक्ष्म रेखाएँ उंगलियो की ओर जावे तो शुभ लक्षण है किन्तु यदि ये रेखाएँ शुक्र-क्षेत्र से चली हुई प्रभाव या (चिन्ता) रेखाओं से कटी हो तो भाग्य-वृद्धि में रुकावट होती है। सम्पूर्ण शुभता या वृद्धि नष्ट न हो लेकिन उनमे कमी जरूर हो जाती है। इसी प्रकार यदि चन्द्र-क्षेत्र से या कही से भी निकलकर आडी रेखाएँ भाग्य-रेखा को काटे तो वे भाग्य मे रुकावट करती है। भाग्य मे रुकावट किसी बीमारी से हो या घटना से या किसी व्यक्ति-विशेष के कारण—परन्तु सभी काटने वाली रेखाओ से भाग्य मे बाधा प्रकट होती है। भाग्य-रेखा जिस स्थान पर काटी जाती हो वह जीवन का कौन सा वर्ष होगा यह अनुमान कर, किस वर्ष भाग्य मे रुकावट होगी, यह निश्चय करना चाहिए।

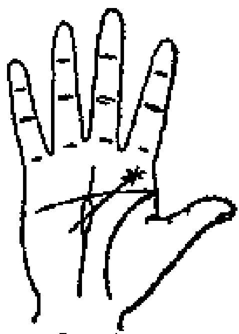

चित्र नं० ६६

यदि बृहस्पति के क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो और वहाँ से प्रारम्भ होकर कोई रेखा भाग्य-रेखा को काटे तो समझना चाहिए कि अत्यन्त महत्वाकांक्षा होने के कारण ऐसे जातक की भाग्य-वृद्धि मे बाधा होगी। ऐसा व्यक्ति यही मन्सूबे बांधता रहेगा कि किस प्रकार बड़े-बड़े आदमियो के सम्पर्क मे आवे और इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए बेतुकी

बातें करेगा जिनसे प्रयोजन सिद्धि न होगी बल्कि उल्टा परिणाम होगा। यदि बृहस्पति-क्षेत्र से आई हुई उपर्युक्त काटने वाली रेखा जहाँ भाग्य-रेखा को काटे वहाँ द्वीप-चिह्न भी हो तो अति उच्च मान और पद की अभिलाषा से जातक बहुत फिजूलखर्ची करेगा। इस कारण अपव्यय और भाग्य मे बाधा होगी। (देखिए चित्र न० ६६)

ऊपर यह बताया गया है कि काटने वाली रेखा जिस स्थान से प्रारम्भ हो उसके अनुसार कारण का अनुमान करना चाहिए। बृहस्पति-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर काटने वाली रेखा के विषय मे एक उदाहरण दिया गया। अब बुध-क्षेत्र से काटने वाली रेखा प्रारम्भ हो तो उससे क्या नतीजा निकालना चाहिए यह प्रकट किया जाता है।

यदि सारे हाथ का आकार यह प्रकट करे कि जातक पर बुध का अनिष्ट प्रभाव है—बुध का क्षेत्र जाल-युक्त हो, कनिष्ठिका उगली टेढी हो, बुधागली का तृतीय पर्व बहुत बडा हो और बुध-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर कोई रेखा भाग्य-रेखा को काटे तो जातक की बेईमानी के कारण भाग्य-बृद्धि मे बाधा होगी यह अनुमान निकालना चाहिए।

इन काटने वाली रेखाओ से बाधा पहुँचेगी यह मालूम होने पर यह निश्चय करना चाहिए कि इस बाधाकारक रेखा का परिणाम साधारण होगा या बहुत भयकर। यदि कटने के स्थान के बाद भी भाग्य-रेखा उसी प्रकार गहरी और अच्छी दिखाई दे तो विशेष बाधा नही प्रकट होती। किन्तु यदि भाग्य-रेखा पतली या अस्पष्ट हो जाय या बिलकुल खण्डित हो जाय तो समझना चाहिए कि भाग्य को काफी ठेस पहुँची है।

यदि शुक्र-स्थान पर कोई प्रभाव-रेखा हो और इस प्रभाव-रेखा की गहराई तथा लम्बाई से यह परिणाम निकलता हो कि यह पति या पत्नी का प्रभाव प्रकट करने वाली रेखा है और इस रेखा से निकलकर काटने वाली रेखा भाग्य-रेखा को काटे और आगे भाग्य-रेखा न चले तो समझना चाहिए कि पति या पत्नी के कारण भाग्योन्नति में बाधा हुई है। यदि उपर्युक्त प्रभाव-रेखा से निकलकर कोई अन्य रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर जाती हो तो समझना चाहिए कि जातक की पत्नी में अत्यधिक महत्वाकांक्षा है। इस कारण जातक ने उस लक्ष्य की पूर्ति के लिए धन का अपव्यय किया जिस कारण भाग्य में बाधा हुई। यदि इसके बाद भाग्य-रेखा बिलकुल न चले तो उपर्युक्त अपव्यय के कारण सदैव के लिए भाग्य-वृद्धि समाप्त हो गई यह समझना चाहिए।

यदि जीवन-रेखा अच्छी न हो और उससे आरम्भ होकर चिन्ता-रेखाएँ भाग्य-रेखा को काटें तो अस्वास्थ्य के कारण भाग्य में बाधा समझनी चाहिए—

(१) इस प्रकार काटने वाली रेखा जिस उद्गम स्थान से शुरू हो (२) उस उद्गम स्थान पर जो चिह्न हो और (३) उस उद्गम स्थान से निकलकर अन्य कोई रेखा कहीं जावे—इन सब बातों से भाग्य-बाधा का कारण निर्णय करना चाहिए। यदि काटने वाली रेखा शीर्ष-रेखा से निकले तो अपने गलत निर्णय के कारण भाग्य-हानि होगी। यदि हृदय-रेखा से निकले तो प्रेम के कारण या मोह के कारण जातक ने अपनी नौकरी या व्यवसाय को धक्का पहुँचाया। यदि शुक्र-क्षेत्र पर प्रभाव-रेखा के अन्त में तारे का चिह्न हो और प्रभाव-रेखा से आरम्भ हो चिन्ता-रेखा

भाग्य-रेखा को काटे तो किसी आत्मीय जन की मृत्यु के कारण भाग्यहानि हुई यह नतीजा निकालना चाहिए। किस वर्ष में यह घटना हुई, यह, भाग्य-रेखा जहाँ काटी जाती है, उस स्थान से अनुमान करना चाहिए।

यदि यह काटने वाली रेखा भाग्य-रेखा को न काटे किन्तु उस तक पहुँचने के कुछ पूर्व ही रुक जाय तो समझना चाहिए कि भाग्य-बाधा का कारण तो उपस्थित हुआ था किन्तु फलोत्पत्ति के पूर्व ही निवृत्ति हो गई इस कारण फल नहीं हुआ। यदि किसी हाथ में आगे के जीवन-काल में (उदाहरण के लिए जब जातक का हाथ देखा तब उसका ३५वाँ वर्ष है और ४५वें वर्ष के आसपास भाग्य-रेखा को काटने वाली रेखा भाग्य-रेखा के पास तक आई है किन्तु उसका स्पर्श न कर कुछ दूर पहले ही रुक गई) इस प्रकार की रेखा दिखाई दे तो जातक को बता देना चाहिए कि इस समय तो काटने वाली रेखा आपकी भाग्य-रेखा को नहीं काट रही है परन्तु आप अमुक कारण से सावधान रहिए। हो सकता है यह रेखा बढ़कर भविष्य में आप की भाग्य-रेखा को काट दे और भाग्य में बाधा पहुँचे। रेखाएँ बदलती रहती हैं।

भाग्य-रेखा की सहायक-रेखाएँ

ऊपर काटने वाली रेखाओं का वर्णन किया गया है। किन्तु जो रेखाएँ भाग्य-रेखा के बराबर-बराबर ऊपर की ओर चलें या भाग्य-रेखा में मिल जाएँ वे पुष्टिनी (पुष्ट करने वाली) तथा सहायक रेखा होती हैं। यदि सहायक-रेखा भाग्य-रेखा में आकर मिल जाएँ तो यह प्रकट होता है कि कोई घटना या व्यक्ति भाग्य-वृद्धि में सहायक हुआ है।

यदि भाग्य-रेखा पतली या दोष-युक्त हो और इसमें मिलने वाली या सहायक-रेखा गहरी और पुष्ट हो तो भाग्य-रेखा के दोष को दूर कर भाग्य-वृद्धि मे सहायक होती है। यदि भाग्य-रेखा प्रारम्भ मे शृंखलाकार या अन्य दोष से युक्त हो और किसी सम्मिलित होने वाली रेखा के योग के बाद गहरी और पुष्ट हो जावे तो समझना चाहिए कि किसी नवीन घटना या व्यक्ति की सहायता से भाग्य में शुभ परिवर्तन उपस्थित हुआ। यदि स्त्रियों के हाथ मे ऐसा हो तो जिस उम्र मे उनका विवाह अनुमान किया जाय प्राय उसी अवस्था पर कोई बलिष्ठ-रेखा भाग्य-रेखा से योग कर, उसे भविष्य मे अच्छी और गहरी बनाती हो तो यह नतीजा निकलना चाहिए कि किसी धनाढ्य कुल मे विवाह द्वारा भाग्य में शुभ परिवर्तन हुआ। यदि यह सम्मिलित होने वाली या पुष्टिनी रेखा चन्द्र-क्षेत्र से आकर भाग्य-रेखा से सम्मिलित हुई हो तो कहीं बाहर से शुभ प्रभाव का उदय हुआ है (जैसे—विवाह से)। यदि यह रेखा चन्द्र-क्षेत्र की बजाय शुक्र-क्षेत्र से आई हो तो अपने ही किसी सम्बन्धी का शुभ-प्रभाव, सहयोग या सहायता समझनी चाहिए।

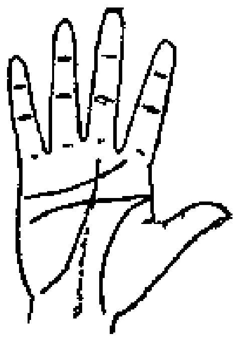

चित्र न० ६७

जिस स्थान पर इस रेखा का भाग्य-रेखा से योग हो उस स्थान के पहले भाग्य-रेखा बहुत क्षीण हो और बाद मे साधारण अच्छी हो तो साधारण भाग्योदय किन्तु यदि बाद मे बहुत पुष्ट हो तो विशिष्ट भाग्योदय। इसके विपरीत यदि बाद मे भी भाग्य-रेखा पहले की सी ही हालत मे दिखाई दे तो समझना चाहिए कि

भाग्य मे कोई विशेष परिवर्तन नही हुआ।

पुष्टिनी रेखा यदि भाग्य-रेखा के पास तक आवे किन्तु उस से योग (स्पर्श) न करे तो समझना चाहिए कि कोई भाग्य मे सहायक बात होने वाली थी किन्तु हुई नही।

पुष्टिनी रेखाओं के प्रारम्भिक स्थान

इस बात का निश्चय करने के लिए कि भाग्य मे वृद्धि किस क रण से हुई पुष्टिनी-रेखा के मूल पर ध्यान दीजिए कि वह कहाँ से प्रारम्भ हुई है। उदाहरण के लिए भाग्य-रेखा टूटी हो और पुष्टिनी-रेखा शीर्ष-रेखा से निकलकर समानान्तर रेखा का रूप धारण करे तो समझिए कि जातक ने अपने सुविचार और अच्छे निर्णय द्वारा जो हानि होने वाली थी उसको रोक सका। यदि उन्नत, विस्तृत, प्रथम मगल-क्षेत्र से पुष्टिनी-रेखा प्रारम्भ होती हो तो यह नतीजा निकालना चाहिए कि अपने साहस और बल के कारण जातक ने अपनी भाग्य-हानि न होने दी।

भाग्य-रेखा पर अन्य चिह्न

यदि भाग्य-रेखा प्रारम्भ मे अच्छी न हो तो परिस्थिति का दोष समझना चाहिए। किन्तु यदि बाद मे जाकर भाग्य-रेखा टूटी या अन्य दोषयुक्त हो तो जातक के अपने दोष से ऐसा होता है। भाग्य-रेखा जिस स्थान पर टूटी या लहरदार हो उसी स्थान पर वर्ग चिह्न हो और वर्ग की एक भुजा भाग्य-रेखा के रूप मे आगे बढी हो तो भाग्य मे जो बड़ी हानि होने वाली थी उससे रक्षा प्रकट होती

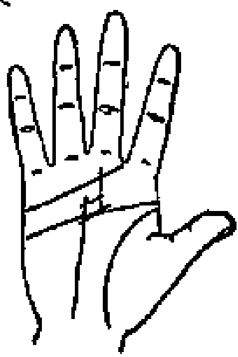

चित्र नं० ६८

है। यदि भाग्य-रेखा छोटी-छोटी आडी रेखाओ से कटी हो तो यह कठिनाइयो का लक्षण है। यह ध्यान से देखना चाहिए कि भाग्य-रेखा इन छोटी लाइनो को काटती है या स्वय उनसे काटी जाती है। यदि भाग्य-रेखा गहरी है और काटने वाली छोटी आडी रेखाओ को काटती है तो जातक कठिनाइयो को पार कर जावेगा। किन्तु यदि स्वय काटी जाती है तो वह स्वयं कठिनाइयो से कुचला जावेगा।

भाग्य-रेखा का अन्त

या तो भाग्य-रेखा हाथ के बीच मे ही समाप्त हो जाती है या फिर शनि-क्षेत्र तक जाती है। शनि-क्षेत्र तक जाने के कारण इसे बहुत से लोग शनि-रेखा भी कहते है किन्तु बहुत से हाथो मे यह शनि-क्षेत्र को न जाकर बृहस्पति के क्षेत्र को चली जाती है।

यदि भाग्य-रेखा हथेली के मध्य तक आकर बृहस्पति के क्षेत्र पर चली जाए तो जातक के हृदय मे बहुत उच्च महत्वाकाक्षा तथा उसकी सफलता प्रकट करती है। देखिये चित्र।

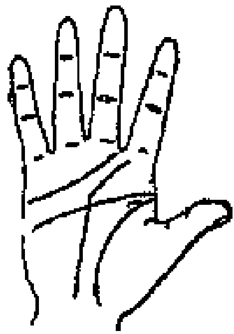

चित्र सं० ६६

यदि भाग्य-रेखा जीवन-रेखा के अन्दर से प्रारम्भ हो और गहरे तथा पुष्ट रूप मे बृहस्पति-क्षेत्र तक जावे तो किसी सम्बन्धी की सहायता से जातक की महत्वाकाक्षा सफल होगी। किन्तु यदि जीवन-रेखा के अन्दर से आरम्भ होकर थोडी दूर तक तो सुन्दर और गहरी हो किन्तु बाद मे कमजोर हो जाए तो समझना चाहिए कि जीवन के प्रारम्भिक काल मे सम्बन्धियो ने सहायता की किन्तु बाद में हाथ खींच लिया। जिस अवस्था पर ऐसा हो उस अवस्था पर हाथ में

स्वास्थ्य-सम्बन्धी या अन्य कोई अशुभ लक्षण है क्या, यह ध्यान से देखना उचित है। यदि कोई चिन्ता-रेखा जीवन-रेखा मे से निकली हुई ऊर्ध्वगामी (ऊपर को जाती हुई) रेखा को काटती हुई विवाह-रेखा को भी काटे और विवाह-रेखा द्विशाखायुक्त हो तो समझना चाहिए कि जातक के अनुपयुक्त विवाह के कारण भाग्य-हानि हुई।

यदि भाग्य-रेखा चन्द्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हो और सुन्दर तथा गहरी बृहस्पति के क्षेत्र पर जावे तो किसी स्त्री की सहायता से या किसी स्त्री द्वारा सहायता एव महत्वाकाक्षा के कारण सफलता प्रकट होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ मे ऐसी रेखा हो तो स्त्री की बजाय पति य अन्य पुरुष (भाई, ससुर आदि या पति के मित्र) की सहायता से भाग्योदय समझना चाहिए। किन्तु यह ध्यान मे रखना आवश्यक है कि भाग्य-रेखा सुन्दर, गहरी तथा लम्बी होगी तभी सफलता होगी। यदि टूटी-फूटी छोटी या दोष-युक्त हो तो यह प्रकट करती है कि सहायता के बावजूद भी सफलता नही प्राप्त होगी।

यदि भाग्य-रेखा अपने स्वाभाविक स्थान से प्रारम्भ होकर कुछ दूर तो सीधी जावे और फिर घूमकर मगल के प्रथम क्षेत्र पर चली जावे तो यह प्रकट होता है कि जातक अपने नेतृत्व और साहस के कारण सफलता प्राप्त करेगा। रेखा जितनी अच्छी हो और मगल-क्षेत्र जितना उन्नत और सुन्दर हो उतना ही अधिक शुभ फल होगा।

यदि भाग्य-रेखा मे से एक शाखा निकलकर बृहस्पति के क्षेत्र पर चली जावे तो महत्वाकाक्षा तथा अन्य व्यक्तियो पर सफलता-पूर्वक शासन करने के कारण अधिकार-वृद्धि का लक्षण है। प्राय: राजनीतिक क्षेत्र मे विशिष्ट व्यक्तियो के हाथ मे भाग्य-रेखा का गुरु-क्षेत्र से संयोग मिलेगा।

यदि भाग्य-रेखा से एक शाखा निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर चली जावे तो जातक कला, व्यापार आदि में सफल होगा। यदि अनामिका का प्रथम पर्व लम्बा हो तो कला, यदि द्वितीय पर्व लम्बा हो तो व्यापार, यह तारतम्य करना चाहिए।

यदि भाग्य-रेखा से कोई शाखा निकलकर बुध के क्षेत्र पर जावे तो व्यापारिक सफलता प्रकट होती है। ऐसे जातक में व्यापारिक बुद्धि तथा वाक्-चातुर्य भी होगा।

यदि भाग्य-रेखा से कोई शाखा निकलकर शीर्ष-रेखा का स्पर्श करे तो अपनी बुद्धि के कारण जातक को सफलता होगी।

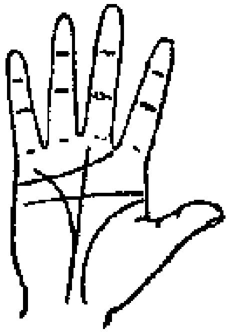
चित्र नं० ७०

यदि भाग्य-रेखा शनि-क्षेत्र या गुरु-क्षेत्र के ऊपर भी सुस्पष्ट हो तो जातक बुढ़ापे में भी धनोपार्जन करता रहेगा। किन्तु यदि वहाँ तक भाग्य-रेखा न पहुँचे तो जवानी में कमाया हुआ ही खावेगा। यदि शनि-क्षेत्र पर पहुँचकर भाग्य-रेखा में बिन्दु, क्रॉस या अन्य अशुभ लक्षण हो तो समझना चाहिए कि बुढ़ापे में काफी आर्थिक कठिनाइयाँ होंगी। इस प्रकार जीवन-रेखा शीर्ष-रेखा, हृदय-रेखा, प्रभाव-रेखा और चिन्ता-रेखा, किस अवस्था में भाग्य-रेखा को किस प्रकार प्रभावित कर रही हैं तथा भाग्य-रेखा कितनी दूर तक किन-किन गुणों या दोषों से युक्त है इसका विचार कर—हाथ तथा उंगलियाँ लम्बी और नुकीली हैं या चतुष्कोण, उंगलियों के कौन से पर्व लम्बे हैं—इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, जातक स्त्री है या पुरुष, तथा देश, काल और पात्र का विचार कर फलादेश करना उचित है।

१४वाँ प्रकरण

सूर्य-रेखा

जिस प्रकार भाग्य-रेखा मणिबन्ध या चन्द्र-क्षेत्र या हथेली के मध्य से, या जीवन-रेखा से निकल कर शनि-क्षेत्र किंवा गुरु-क्षेत्र को जाती है उसी प्रकार सूर्य-रेखा मणिबन्ध या जीवन-रेखा से या चन्द्र किंवा भौम-क्षेत्र से या अनामिका उगली और मणिबन्ध के बीच के किसी स्थान से निकलकर सूर्य-क्षेत्र को जाती है। इसे सूर्य रेखा कहते है।

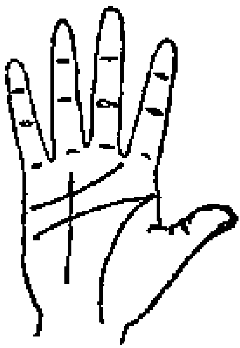

चित्र नं० ७१

सूर्य-रेखा और भाग्य-रेखा के फलों में समानता

बहुत से हाथो मे यह होती ही नहीं, बहुत से हाथों मे होती है किन्तु अस्पष्ट और छोटी। एक प्रकार से यह भाग्य-रेखा की सहायिका है। यदि भाग्य-रेखा टूटी हो और सूर्य रेखा पुष्ट हो तो भाग्य-रेखा के दोष को कम करती है। जिस अवस्था मे भाग्य-रेखा टूटी हो—उसी अवस्था मे सूर्य-रेखा पुष्ट और सुन्दर हो तो निश्चयपूर्वक यह कहा जा सकता है कि जातक का वह जीवन-काल—भाग्य-रेखा के टूटे रहने पर भी यश और मान से पूर्ण होगा। भाग्य-रेखा के खण्डित होने पर, उसके पास कोई सहायिका समानान्तर-रेखा थोड़ी दूर तक चलकर भाग्य-

रेखा के खण्डित होने के दोष को जो दूर करती है, उसकी अपेक्षा स्वतन्त्र सूर्य-रेखा का कहीं अधिक महत्व है।

उदाहरण के लिए एक जातक के हाथ मे ४० से ४३ वर्ष तक की अवस्था मे भाग्य-रेखा टूटी है और उसके बिलकुल पास एक छोटी सी समानान्तर रेखा इसी टूटे हुए भाग के पास है तो टूटी हुई भाग्य-रेखा की त्रुटि-पूर्तिकारक यह छोटी रेखा है। यदि यह छोटी रेखा न हो किन्तु ४० से ५० वर्ष तक की अवस्था मे सूर्य-रेखा सुस्पष्ट और पुष्ट हो तो भाग्य-रेखा के खण्डित होने के दोष की ही निवृत्ति नही होती किन्तु निश्चयपूर्वक इस काल मे यश, मान, प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी यह कहा जा सकता है।

जिस व्यक्ति के हाथ मे भाग्य-रेखा तथा सूर्य-रेखा दोनो लम्बी और सुन्दर हो उसके विषय मे तो कहना ही क्या है—निश्चय ही वह समाज मे अग्रगण्य होगा। किन्तु यदि एक भी रेखा पूर्ण और सुन्दर हो तो वह अन्य साधारण व्यक्तियो की अपेक्षा विशेष महत्व-शाली जीवन व्यतीत करेगा। भाग्य-रेखा तथा सूर्य-रेखा दोनो जीवन मे महत्व और उत्कर्ष, भाग्य-वृद्धि और प्रतिष्ठा प्रकट करती हैं किन्तु दोनो मे अन्तर यह है कि—

(१) भाग्य-रेखा—आर्थिक उन्नति, धन-वृद्धि, जमीन-जायदाद आदि का उपार्जन तथा जीवन मे किसी वस्तु की कमी न हो, सुख से जीवन व्यतीत हो इसको विशेष रूप से प्रकट करती है।

(२) सूर्य-रेखा—यह बताती है कि चाहे आर्थिक दृष्टि से जातक धनी न समझा जावे किन्तु मान तथा प्रतिष्ठा मे कमी न रहेगी। यदि जातक का हाथ कला, साहित्य, संगीत आदि की ओर झुकाव प्रकट करता है तो उसे इन क्षेत्रो मे सफलता या मान-प्राप्ति

होगी। यदि इस ओर झुकाव नही है तो उच्च पद तथा ख्याति और व्यापार आदि मे जातक सफल होगा। सूर्य-रेखा से महत्व, मान, प्रतिष्ठा, यश आदि विशेष प्रकट होता है। धन-सचय की विशेप परिचायिका यह रेखा नही है। चाहे कही से भी प्रारम्भ हो। इस रेखा का अन्त सूर्य-क्षेत्र पर होना चाहिए। तभी इसका नाम सूर्य-रेखा सार्थक होगा। यदि अनामिका उगली के बिलकुल सीध मे मणिबन्ध से—या इस बीच मे कही से प्रारम्भ हो और सूर्य-क्षेत्र तक न पहुँचे, बीच मे कही रुक जावे तो भी सूर्य-क्षेत्र के बिलकुल नीचे खडी रेखा होने से यह कहलावेगी तो सूर्य-रेखा ही किन्तु सूर्य-क्षेत्र पर न पहुँच पाने के कारण सूर्य-क्षेत्र के सब गुण पूर्ण मात्रा मे ऐसी रेखा में नही मिलेंगे। भारतीय मतानुसार इसे धर्म-रेखा कहते है। 'विवेक विलास' मे लिखा है—

"अनामिकान्त्य पर्वस्था प्रति रेखा प्रभुत्वकृत।
ऊर्ध्वा पुनस्तले तस्या धर्मरेखेयमुच्यते॥"

अर्थात् अनामिका के अन्तिम पर्व (पाश्चात्य मतानुसार प्रथम पर्व) मे छोटी पतली ऊर्ध्व-रेखा 'प्रभुत्व' प्रदान करती है और अनामिका उगली के नीचे करतल मे जो रेखा होती है उसे 'धर्म-रेखा' कहते है। इसका फल श्रेष्ठ है। इस रेखा से मनुष्य विद्वान्, यशस्वी, पुण्यशील होता है।

सूर्य-रेखा के गुण (पाश्चात्यमत)

सूर्य-रेखा का प्रधान गुण है जिस किसी भी सामाजिक स्थिति मे जातक हो उसमे विशेष योग्यता देना। यदि हाथ की बनावट उगलियो के अग्रभाग तथा पोरवो से जातक का कलाकार होना प्रकट नही हो तो जातक के हाथ में सूर्य-रेखा होने पर भी उसे

साहित्य, संगीत कला आदि में विशिष्टता-प्राप्ति होगी। ऐसी गलत भविष्यवाणी नही करनी चाहिए। बहुत से हस्तपरीक्षक इस बात का विचार नही करते कि हाथ की बनावट दार्शनिक किंवा कलाकार की है या शुद्ध दुनियावी सफलता की द्योतक। सर्वप्रथम हाथ को देखकर यह निश्चय करना है कि किस प्रकार का हाथ है।

यदि हाथ की बनावट दार्शनिकता, कला-पटुता या काव्य-साहित्य-प्रेम प्रकट करती है तो ऐसे जातक के हाथ मे खूब सुन्दर सूर्य-रेखा होने पर भी धन-संग्रह नही कहना चाहिए क्योंकि ऐसे व्यक्तियो को मान-प्रतिष्ठा विशेष प्राप्त होती है, धन कम। हाँ यदि भाग्य-रेखा भी विशेष पुष्ट हो तो धन-संग्रह होगा—किन्तु वह फलादेश भाग्य-रेखा का हुआ सूर्य-रेखा का नही।

किन्तु यदि चतुष्कोणाकृति हाथ मे सूर्य-रेखा हो तो छोटी भी रेखा सासारिक सफलता प्रकट करने के कारण विशेष महत्व रखती है। इसी प्रकार जिन हाथो मे उगलियो का अग्रभाग चौडा (चमसाकार) हो तो हाथो मे छोटी भी सूर्य-रेखा विशेष सफलता प्रकट करती है। इस बात को सदैव स्मरण रखना चाहिये कि (१) हाथ से जिस प्रकार का कार्य जातक का प्रकट होता हो उसी प्रकार की सफलता सूर्य-रेखा से प्रकट होती है।

(२) अन्य बात यह है कि भाग्य-रेखा की सहायिका रेखा के रूप मे इसे समझना चाहिये। यदि भाग्य-रेखा पूर्ण और सुन्दर हो और सूर्य-रेखा भी वैसी ही हो तो एक-एक मिल कर ११ का प्रभाव होगा—किन्तु यदि भाग्य-रेखा नही हो तो सूर्य-रेखा का प्रभाव भी विशेष फलीभूत नही होगा।

जिन व्यक्तियो के हाथ मे सूर्य-रेखा सुन्दर और पुष्ट होती है वे आसानी से लोगो को अपना मित्र बना लेते है। उन्हे अपेक्षाकृत कम परिश्रम से धन, मान और यश प्राप्त हो जाता है। किन्तु सूर्य-रेखा का पूर्ण फल तभी होता है जब जातक के हाथ मे अन्य गुण भी हो। उदाहरण के लिए सूर्य-रेखा तो अच्छी हो किन्तु हाथ मोटा तथा ढीला, लटकता हुआ—मानो इसमे शक्ति ही नही हो, कमजोर पूर्ण स्नायविक-शक्ति से हीन, निष्क्रिय-सा प्रतीत हो तो सूर्य-रेखा का पूर्ण फल नही होगा। उद्योगहीनता ऐसे हाथ का लक्षण है। क्रियाहीन को सफलता प्राप्त नही होती। इसी प्रकार यदि अगूठा कमजोर है तो जातक मे दृढ निश्चय का अभाव प्रकट होता है। बिना सकल्प के सिद्धि नहीं। ऐसी स्थिति मे भी सूर्य-रेखा पूर्ण फलद नही होती। यदि बुध, शुक्र, बृहस्पति तथा शनि के क्षेत्र अच्छे नही है तो इन-इन क्षेत्रो के जो विशेष गुण जातक मे होने चाहिये उन गुणो का अभाव होगा, तो भी सूर्य-रेखा का पूर्ण फल नही होगा। यदि शीर्ष-रेखा ही खराब है तो जातक मे बुद्धि, चिन्तन तथा विचारशक्ति कहाँ से आवेगी? बिना इनके सूर्य-रेखा अपना पूर्ण शुभ फल किस प्रकार दिखा सकती है? इसलिये सूर्य-रेखा अपना पूर्ण तथा सुन्दर फल तभी दिखाती है जब अन्य सुलक्षण भी हो—यह विस्मरण नही करना चाहिये।

यदि सूर्य-रेखा न हो

यदि सूर्य-रेखा हाथ मे न हो तो इसका यह अर्थ नही है कि जातक का जीवन सफल नही होगा। अधिकाश हाथो मे सूर्य-रेखा नही होती और बहुत से हाथ ऐसे देखे है जिनमे सूर्य-रेखा न होने पर भी जातक अपने जीवन मे सफल हुए है। सूर्य-रेखा सफलता

को सुगम बना देती है। बिना सूर्य-रेखा के उतनी ही सफलता प्राप्त करने के लिये परिश्रम विशेष करना पडता है। इसलिये यदि सूर्य-रेखा न भी हो किन्तु हाथ के अन्य लक्षणों से जातक में बुद्धि, चिन्तन, सुविचार, दृढ संकल्प तथा अध्यवसाय प्रकट होते है तो जातक उस व्यक्ति की बजाय विशेष सफल होगा जिसके हाथ मे सूर्य-रेखा तो हो किन्तु हाथ निष्क्रिय, शक्तिहीन हो, अंगुष्ठ तथा ग्रह-क्षेत्र कमजोर हो और शीर्ष-रेखा भद्दी हो।

सूर्य-रेखा की लम्बाई

सूर्य-रेखा जितनी लम्बी हो उतनी ही अधिक प्रभावशाली होगी। यदि मणिबन्ध से निकलकर सूर्य-क्षेत्र के अन्त तक सीधी, अखण्डित हो तो जातक अत्यन्त बुद्धिमान होगा और जीवन मे क्रमश उसके गुणो मे विकास होगा जिस कारण उसे पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। किन्तु यदि हथेली के नीचे के भाग से सूर्य-रेखा प्रारम्भ होकर थोडी दूर तक जावे और आगे न बढे तो उन गुणो के विद्यमान रहने पर भी जातक के जीवन मे उनका विकास या उपयोग न होगा—इस कारण जीवन मे वह कोई बडी सफलता प्राप्त नही कर सकेगा। यदि शीर्ष-रेखा तथा हृदय-रेखा के बीच सूर्य-रेखा हो तो ३५ से ५० तक की अवस्था मे उन गुणो का विकास विशेष होगा। इस अवस्था मे बुद्धि परिपक्व हो जाने तथा अपनी आर्थिक स्थिति के प्राय स्वतन्त्र हो जाने से जातक जिस भी क्षेत्र मे वह हो, बडा काम कर सकता है, इस कारण सफलता सुगम होती है।

यदि सूर्य-रेखा सूर्य-क्षेत्र पर पहुँच जाती है तो सूर्य-क्षेत्र की विशिष्टता के सब गुण जातक मे पाये जावेगे। यदि किसी भी क्षेत्र पर एक लम्बी खडी रेखा हो तो उस क्षेत्र के प्रभाव को बहुत बढा

देती है यह सामान्य नियम है। सूर्य-रेखा के सूर्य-क्षेत्र पर होने से चाहे जातक लेखक या कलाकार हो, उच्च पदाधिकारी या व्यापारी हो—अपनी बुद्धि और कौशल से वह अपना विशेष स्थान बना लेगा। औरो की अपेक्षा उसे अधिक महत्व और सफलता-प्राप्ति होगी।

सूर्य-रेखा का प्रारम्भ से अन्त तक निरीक्षण करते समय भाग्य-रेखा पर भी बराबर दृष्टि रखनी चाहिये। इन दोनो रेखाओ का एक प्रकार से 'अन्योन्याश्रय' सम्बन्ध है-अर्थात् एक को दूसरे से बल मिलता है। जीवन के जिस काल मे भाग्य-रेखा खण्डित हो उसी काल मे सूर्य-रेखा भी खण्डित हो तो जीवन के उस काल मे सफलता रुक जावेगी। किन्तु दोनो रेखाओ मे एक उस काल मे सुन्दर और सम्पूर्ण दोष-रहित हो तो दूसरी रेखा के खण्डित होने का उतना दुष्प्रभाव नही होता।

यदि सूर्य-रेखा बीच मे गायब दिखाई दे तो—ऐसा क्यो हुआ ?—कारण की गवेषणा करनी चाहिये। जिनके जीवन के बाद के काल मे सूर्य-रेखा हो (हृदय-रेखा और अनामिका उगली के बीच मे—या शीर्ष-रेखा और अनामिका उगली के बीच मे) उनके जीवन के पूर्व-भाग मे सूर्य-रेखा न हो तो केवल यह प्रकट होता है कि सूर्य-रेखा के गुण उनके जीवन मे बचपन से थे किन्तु उनका विकास तथा उपयोग जीवन के बाद के भाग मे हुआ। किन्तु यदि मणिबन्ध से ही—या हाथ के अन्य भाग के नीचे से ही—सूर्य-रेखा प्रारम्भ हो और थोड़ी दूर चले फिर गायब, फिर चले फिर गायब, यह दशा हो तो देखना चाहिये कि किस कारण ऐसा हुआ।

जीवन के जिस काल मे सूर्य-रेखा 'लुप्त' है, उस काल मे यदि जीवन-रेखा अशुभ लक्षणो से युक्त है तो अस्वास्थ्य के कारण

सफलता मे रुकावट प्रकट होती है। यदि उस काल मे शीर्ष-रेखा मे दोष है तो मानसिक दुर्बलता के कारण सफलता या महत्व मे बाधा समझनी चाहिये।

जिस स्थान मे सूर्य-रेखा लुप्त हो यदि उस स्थान को काटती हुई कोई रेखा जा रही हो तो उस काटने वाली रेखा के उद्गम-स्थान, सम्बन्ध तथा योग से यह अनुमान लगाना चाहिये कि किस कारण सफलता या महत्व मे बाधा हुई।

सूर्य-रेखा के प्रारम्भिक स्थान

१ यदि सूर्य-रेखा जीवन-रेखा से निकलकर सूर्य-क्षेत्र तक जावे तो भाग्य-वृद्धि-कारक होती है।

२ यदि भाग्य-रेखा से सूर्य-रेखा निकले तो यह भी शुभ है।

३ यदि मणिबन्ध से निकलकर सीधी सूर्य-क्षेत्र पर आवे तो बहुत अच्छी और स्वाभाविक स्थिति है।

४ यदि यह रेखा चन्द्र-क्षेत्र से निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर जावे तो जातक की कल्पना-शक्ति अच्छी होती है और भाषा पर अच्छा अधिकार होता है। यदि उगलियो के प्रथम पर्व भी लम्बे हो तो निश्चय ही जातक विशेष बुद्धिमान और विद्वान् होगा। यदि उगलियाँ पतली और नुकीली हो तो जातक काव्य और साहित्य का प्रेमी होगा। यदि शनि का क्षेत्र उन्नत होगा तो वैज्ञानिक विषयो पर लिखेगा। यदि उगलियाँ गाठदार और चतुष्कोणाकृति हो तो ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखेगा। इसी प्रकार यदि मगल और शुक्र-क्षेत्र उन्नत हो तो उन ग्रहो से सम्बन्धित साहित्य-सृजन करेगा।

५. यदि मगल के प्रथम क्षेत्र से सूर्य-रेखा प्रारम्भ हो तो ऐसे जातक मे बहुत अधिक धैर्य और साहस होगा और इन गुणो के

कारण सफलता प्राप्त करेगा।

सूर्य-रेखा पूर्ण रूप से तभी प्रभावशालिनी होती है जब यह सूर्य-क्षेत्र के ऊपर तक पहुँचे।

सूर्य-रेखा के गुण-दोष

यदि रेखा स्पष्ट और गहरी हो तो इसका पूर्ण प्रभाव होता है। जिन व्यक्तियो के हाथ मे यह पाई जाती है उनमे क्रियात्मक शक्ति विशेष होती है। यदि उंगलियो के प्रथम पर्व लम्बे हो तो साहित्य और कला के क्षेत्र मे जातक को विशिष्टता प्राप्त होती है। यदि द्वितीय पर्व लम्बे हो तो द्रव्य कमाने की क्षमता विशेष होती है। यदि तृतीय पर्व लम्बे हो तो जातक मे केवल द्रव्य कमाने की भावना

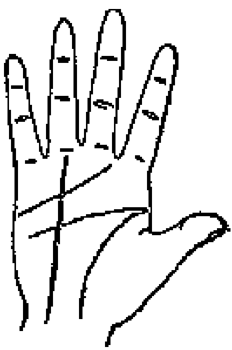

चित्र नं० ७२

प्रबल होती है और सूर्य तथा भाग्य-रेखाओ के रहने से जातक अपनी इस इच्छा मे सफल भी होता है।

यदि रेखा पतली हो तो पूर्ण प्रभावशालिनी नही होती। ऐसे जातक को थोड़ा सा मान, थोड़ी सी प्रतिष्ठा और थोड़ा ही धन प्राप्त होता है। यदि रेखा चौड़ी और उथली हो तो इस रेखा को कमजोर समझना चाहिए। इसी प्रकार यदि शृंखलाकार रेखा हो तो उसका कोई विशेष अच्छा प्रभाव नही होता। यदि सूर्य-रेखा का रंग पीलापन या सफेदी लिए हो तो रेखा को निर्बल समझना चाहिए, यदि गुलाबी हो तो अच्छा समझना चाहिए।

यदि रेखा कटी हो या बीच-बीच मे लुप्त हो गई हो या अन्य दोषो से युक्त हो तो अपना प्रभाव खो बैठती है। यदि यह रेखा

कहीं पतली और क्षीण, कहीं स्पष्ट और गम्भीर हो तो कभी जातक धन, मान प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा और कभी सब की कमी हो जायगी। ऐसी रेखाओं में यह देखना चाहिए कि सूर्य-क्षेत्र पर पहुँचने पर उनका क्या स्वरूप है, वह रेखा का अन्त का स्थान है इसलिए वहाँ रेखा गहरी और स्पष्ट हो तो इस बात का लक्षण है कि जीवन के अन्तिम भाग में जातक को यश और सम्मान प्राप्त होगा।

यदि सूर्य-रेखा लहरदार हो तो यह प्रकट होता है कि जातक धैर्यपूर्वक किसी एक ही कार्य में नहीं लगा रहेगा। कभी एक काम और कभी दूसरा काम उठा लेने से उसे किसी एक कार्य में सफलता नहीं मिलेगी। किन्तु यदि यह रेखा सूर्य-क्षेत्र पर जाकर स्पष्ट और सुन्दर हो गई हो तो जातक किसी-न-किसी एक बात में सफलता प्राप्त कर लेगा।

यदि सूर्य-रेखा के अन्त पर तारे का चिह्न हो तो जीवन के अन्तकाल में बहुत मान और प्रतिष्ठा मिलेगी।

यदि सूर्य-रेखा में बीच-बीच में द्वीप-चिह्न हो तो जातक को बहुत बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। वह उत्साह में आकर ऐसे काम करने की चेष्टा करेगा जिनसे एकदम बहुत बड़े लाभ की आशा हो किन्तु परिणाम विपरीत होगा। उसे घाटा लगेगा और असफलता होगी। ऐसी रेखा के साथ-साथ यदि अनामिका उंगली मध्यमा उंगली के बराबर हो तो जातक बहुत बड़ा सट्टा करने वाला होगा। यदि साथ-ही-साथ जीवन और शीर्ष-रेखाओं के प्रारम्भ में अधिक अन्तर हो तो जातक बिना आगा-पीछा सोचे सट्टे या व्यापार में बहुत बड़ा दाँव लगायेगा। किन्तु सूर्य-रेखा में द्वीप होने से इतना बड़ा घाटा लगेगा कि

बिलकुल बरबाद हो जावेगा। यदि अनामिका उंगली का तृतीय पर्व लम्बा और मोटा हो तो मनुष्य नीचे दर्जे का जुआरी होगा। यदि सूर्य-रेखा अच्छी हो और कनिष्ठा उगली टेढ़ी और घुमावदार हो तो जातक ताश खेलने मे या अन्य कामो मे बेईमानी द्वारा लाभ उठावेगा। सूर्य-रेखा ने बुद्धि और लाभ दिया और छोटी उगली के टेढ़ेपन ने बेईमानी।

यदि सूर्य-रेखा छोटी-छोटी आड़ी रेखाओ से कटी हो तो यह बाधा का चिह्न है। यह ध्यान से देखना चाहिए कि ये अत्यन्त सूक्ष्म है या मोटी। सूर्य-रेखा को ये काटती है या सूर्य-रेखा इनको काटकर, दबाती हुई आगे चली जाती है। यदि काटने वाली रेखा अत्यन्त सूक्ष्म हो तो केवल चिन्ता या मामूली विघ्न उपस्थित होगे। किन्तु यदि काटने वाली रेखाएँ मोटी है तो बड़े विघ्न समझने चाहिए। यदि काटने वाली रेखाएँ सूर्य-रेखा को काटती है तो जातक को उन अवस्थाओ पर असफलता प्राप्त होगी या घाटा लगेगा। किन्तु यदि सूर्य-रेखा अधिक बलवान है और बाधा-रेखाओ को काटकर उनके ऊपर से चली जाती है तो जातक बाधाओ को पार कर उन्नति करता रहेगा।

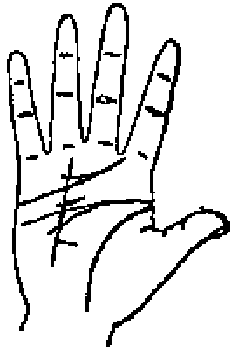
चित्र नं० ७३

यदि सूर्य-रेखा पर बिन्दु-चिह्न हो तो जातक की बदनामी होने का लक्षण है। हल्के बिन्दु हो तो लोग केवल कानाफूसी करके चुप हो जावेंगे किन्तु यदि बिन्दु गहरे हों तो मान, प्रतिष्ठा को बट्टा लगेगा। यदि इन बिन्दुओ या ऊपर बताई हुई बाधा-रेखा का

किसी प्रभाव-रेखा या ग्रह-क्षेत्र से सम्बन्ध हो तो उनसे कारण का अनुमान करना चाहिए।

यदि सूर्य-रेखा टूटी हो तो असफलता का लक्षण है। ऐसे जातक मे योग्यता होते हुए भी कला या व्यापार जो भी उसका कार्य-क्षेत्र हो उसमे पूर्ण सफलता नही मिलेगी। यदि टूटी हुई रेखा का सुधार हो गया हो अर्थात् जहाँ खण्डित है उसके पास ही कोई दूसरी छोटी रेखा खण्डित भाग के ऊपर सहायक रूप से हो या खण्डित भाग के चारो ओर वर्ग-चिह्न हो तो कुछ हद तक टूटी हुई रेखा का दोष कम हो जाता है। किन्तु जिस प्रकार चौडी और उथली रेखा पूर्ण प्रभावशालिनी नही होती उसी प्रकार टूटी हुई रेखा सुधार होने पर भी पूर्ण फल नही देती।

सूर्य-रेखा का अन्त[1]

(१) यदि प्रारम्भ मे सूर्य-रेखा स्पष्ट और गहरी हो और बाद मे हल्की और अस्पष्ट हो जाय तो जिस अवस्था मे रेखा गहरी हो उसी मे मान, प्रतिष्ठा अधिक प्राप्त होती है। जीवन के बाद के काल मे कोई विशेष सफलता नही मिलती।

(२) यदि रेखा के अन्त पर बिन्दु-चिह्न हो तो बाद मे घाटा या दिवालिया हो जाने के कारण अप्रतिष्ठा होगी।

(३) यदि रेखा के अन्त पर तारे का चिह्न हो तो पूर्ण मान, प्रतिष्ठा व सफलता का चिह्न है। ऐसे हाथो मे यह देखना चाहिए कि

---

१. सूर्य-रेखा के अन्त पर विविध चिह्नों द्वारा जो फल बताये गये हैं उनका प्रभाव केवल जीवन के अन्तिम काल में ही होता है ऐसा नहीं समझना चाहिये। इनका प्रभाव, एक प्रकार से समस्त जीवन-काल में रहता है।

कलाकार, कवि या मस्तिष्क-सम्बन्धी झुकाव हो तो इन क्षेत्रों में यश और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। व्यापारिक हाथ हो तो जातक धन बहुत कमाता है।

(४) यदि उपर्युक्त (३) प्रकार की रेखा हो और एक की बजाय दो तारे के चिह्न हों तो पूर्ण यश, प्रतिष्ठा और सफलता का लक्षण है। जिस अवस्था पर पहले तारे का चिह्न हो उस अवस्था से यश और लाभ प्रारम्भ होगा और आखीर तक मान, प्रतिष्ठा उसी प्रकार बनी रहेगी।

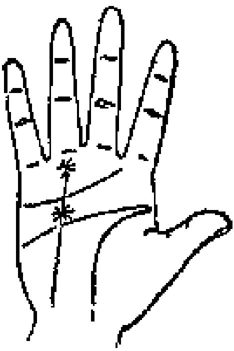
चित्र नं० ७४

(५) यदि सूर्य-रेखा के आरम्भ और अन्त दोनों सिरों पर तारे का चिह्न हो तो जातक का सारा जीवन सफलतामय तथा प्रतिष्ठापूर्ण रहेगा।

(६) यदि सूर्य-रेखा के अन्त पर कोई छोटी आड़ी रेखा उसके मार्ग को रोकती हो तो जातक के जीवन के अन्त में कोई बड़ी बाधा उपस्थित होकर उसके कार-बार को रोक देगी। जिस अवस्था पर यह बाधक रेखा हो उस अवस्था पर भाग्य-रेखा में क्या लक्षण है यह भी ध्यानपूर्वक विचारना चाहिए। यदि उसकी भी दशा उस अवस्था में खराब हो तो भाग्य में पूर्ण हानि समझिए। जिस अवस्था पर यह बाधक रेखा हो उस अवस्था में यदि जीवन-रेखा भी दोषयुक्त हो और उससे बीमारी प्रकट होती हो तो अस्वास्थ्य के कारण उन्नति में बाधा होगी। यदि इस अवस्था पर शीर्ष-रेखा में कोई तारे या द्वीप का चिह्न हो तो मानसिक शक्तियों

की कमी के कारण सफलता रुकेगी। यदि शीर्ष-रेखा से कोई शाखा-रेखा निकलकर—जहाँ बाधा-रेखा सूर्य-रेखा का मार्ग रोकती है उस स्थान से योग करे तो किसी गलत निर्णय के कारण घाटा होता है। उदाहरण के लिए, जातक किसी ऐसे कारबार मे रुपया लगा दे जहाँ आशा हो लाभ की किन्तु हानि हो जावे। (देखिये चित्र न० ७५)

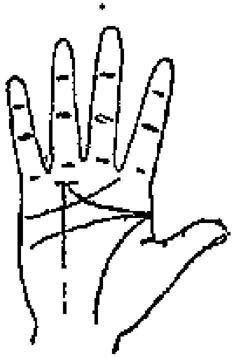

चित्र न० ७५

(७) यदि उपर्युक्त (६) प्रकार की रेखा हो किन्तु छोटी बाधा-रेखा की बजाय सूर्य-रेखा के अन्त पर क्रॉस चिह्न हो तो और भी अशुभ चिह्न है। जातक जिस नतीजे पर पहुँचना चाहता है उस पर नही पहुँच पाता क्योकि उसका सारा अन्दाज और अनुमान गलत बैठता है और उसे असफलता तथा अप्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

(८) यदि सूर्य-रेखा के अन्त पर वर्ग-चिह्न हो और उस वर्ग के बीच मे जाकर सूर्य-रेखा का अन्त हो जावे तो अशुभ परिणामों से रक्षा होती है। यदि कोई अशुभ लक्षण हो और साथ मे वर्ग-चिह्न भी हो तो पूर्ण अशुभ फल नही होगा।

(९) यदि सूर्य-रेखा के अन्त पर द्वीप चिह्न हो तो इसे भी क्रॉस की भाँति पूर्ण अशुभ लक्षण समझिए, सूर्य-रेखा कैसी भी सुन्दर हो जीवन के अन्त मे ऐसा बड़ा घाटा लगेगा कि सारी इज्जत चली जायगी।

(१०) यदि सूर्य-रेखा अन्त मे दो शाखायुक्त हो जाय तो यह प्रकट होता है कि जातक मे कई विशेष योग्यता है और इस कारण कई तरह का काम करने से उसे किसी एक काम मे पूर्ण सफलता नही मिलेगी।

(११) यदि अन्त मे सूर्य-रेखा तीन शाखायुक्त (त्रिशुल की भांति) हो जाय तो ऊपर जो तारे के चिह्न के शुभ लक्षण बताये गये है वही इसके भी होते है। देखिये चित्र।

(१२) यदि सूर्य-क्षेत्र पर सूर्य-रेखा के दोनो ओर एक-एक समानान्तर रेखा और हो तो सूर्य-रेखा को बल प्राप्त होता है और पूर्ण सफलता और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

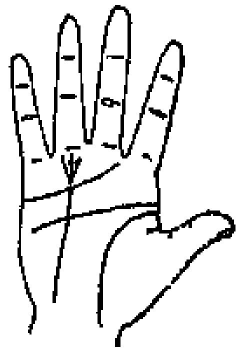

चित्र नं० ७६

(१३) यदि सूर्य-रेखा सूर्य-क्षेत्र तक जा कर समाप्त हो जाय और सूर्य-रेखा पर बहुत सी हल्की-हल्की खड़ी रेखा हो तो ऊपर (१०) का जो फल बताया गया है वही होता है।

(१४) यदि सूर्य-रेखा सूर्य-क्षेत्र पर जाकर गोपुच्छाकृति हो जाय तो भी उपर्युक्त (१०) का फल होता है।

ऊपर जो दोष बताये गये है—वे, सूर्य-रेखा अच्छी हो तो भी दोष समझने चाहिये। किन्तु यदि सूर्य-रेखा स्वयं कमजोर या अन्य दुष्ट लक्षणो से दूषित हो तो महान् दोष समझने चाहिये। इसी प्रकार जो गुण बताये गये है वे सूर्य-रेखा के उत्तम होने से पूर्ण शुभ फल दिखाते है किन्तु सूर्य-रेखा भद्दी हो तो पूर्ण शुभ प्रभाव नही होता।

सूर्य-रेखा की शाखाएँ

(१) यदि सूर्य-क्षेत्र पर पहुँचने पर सूर्य-रेखा से निकलकर एक शाखा शनि-क्षेत्र पर और दूसरी बुध-क्षेत्र पर जाये तो जातक मे योग्यता, बुद्धि की गम्भीरता और चतुरता तीनों गुण है और उसे धन और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

(२) सूर्य-रेखा से निकलकर जो भी शाखाएँ या हल्की-छोटी रेखाएँ

ऊपर की ओर (उंगलियों की ओर) जावें तो शुभ लक्षण है, शुभ प्रभाव की वृद्धि होती है।

(३) सूर्य-रेखा से निकलकर हल्की-हल्की या नन्ही छोटी रेखाएं नीचे की ओर आवें तो सूर्य-रेखा को कमजोर करती है। ऐसे जातक को विशेष परिश्रम करने पर सफलता मिलती है।

(४) यदि सूर्य-रेखा से कोई शाखा निकलकर बृहस्पति के क्षेत्र पर जावे तो जातक में महत्वाकांक्षा और हुकूमत करने की भावना विशेष होती है और उसे इसमें सफलता भी मिलेगी। यदि इस शाखा-रेखा के अन्त में बृहस्पति-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो तो विशेष शुभ लक्षण है। यदि साथ ही सूर्य-रेखा के अन्त पर सूर्य-क्षेत्र पर भी तारे का चिह्न हो तो अवश्य ऐसा जातक महान् राज्य का अधिकारी होगा। किन्तु इन शुभ लक्षणों के साथ-साथ हाथ मुलायम हो, शुक्र का क्षेत्र उच्च हो, उंगलियां पतली और नुकीली हों तो केवल गायन विद्या में श्रेष्ठता होगी। यदि-चन्द्र-क्षेत्र भी उच्च हो तो संगीत में और भी विशिष्टता प्राप्त होगी।

किन्तु यदि उंगलियां आगे से फैली हुई हों या चतुष्कोण हों तो जातक बाजा बजाने या अन्य कलाओं में सफल होगा। यदि उंगलियों के तृतीय पर्व लम्बे और पुष्ट हों तो कलाप्रियता न होकर केवल रुपया कमाने पर ध्यान होगा।

(५) यदि सूर्य-रेखा से कोई रेखा निकलकर शनि-क्षेत्र पर जाये तो जातक में बुद्धि-गाम्भीर्य और मितव्ययता आदि गुण होंगे। अगर अंगूठा सख्त हो तो जातक बहुत कंजूस भी होगा। यदि शाखा-रेखा के अन्त में, शनि-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो तो विशेष सफलता प्राप्त होती है किन्तु यदि तारे के चिह्न की बजाय वहां कोई छोटी

आड़ी रेखा, बिन्दु, क्रॉस या अशुभ चिह्न हो तो सफलता की बजाय अशुभता और बदनामी ही प्राप्त होगी। यदि शनि-क्षेत्र पर शाखा-रेखा के पास एक या दो सहायक रेखा के रूप मे रेखाएँ हो तो सफलता का चिह्न है। किन्तु यदि शाखा-रेखा शनि-क्षेत्र के पहुँचने के पहले ही रुक जाये और शनि-क्षेत्र पर कई खड़ी रेखाएँ हो तो जातक अनेक कार्यो मे सफलता प्राप्त करने की चेष्टा करता है इस कारण उसे किसी भी कार्य मे विशिष्टता नही प्राप्त होती। यदि शाखा-रेखा के अन्त मे शनि-क्षेत्र पर शुभ लक्षण हो और सूर्य-रेखा के अन्त मे सूर्य क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो तो विशेष सफलता का द्योतक है।

(६) यदि सूर्य-रेखा से निकलकर कोई शाखा-रेखा बुध के क्षेत्र पर जावे तो बुध-क्षेत्र-सम्बन्धी प्रभाव या सफलता विशेष होती है। यदि उगलियो के, खासकर कनिष्ठा उगली का प्रथम पर्व लम्बा हो तो जातक अच्छा लेखक या वक्ता होगा। यदि कनिष्ठा का द्वितीय पर्व लम्बा हो और बुध-क्षेत्र पर कई खडी रेखा हो तो जातक ख्याति-प्राप्त डाक्टर होगा। यदि तृतीय पर्व लम्बा हो तो धन-उपार्जन मे विशेष सफलता होगी। यदि दोनो शाखाओ के अन्त मे तारे का चिह्न हो तो विशेष शुभ लक्षण और सफलता प्रकट होती है। किन्तु यदि बुध-क्षेत्र पर क्रॉस, बिन्दु या बाधा-रेखा का चिह्न हो तो घाटा लगेगा, यदि छोटी उगली मुडी या टेढ़ी हो तो जातक चालाकी और बेईमानी का भी उपयोग करेगा।

(७) यदि सूर्य-रेखा से कोई शाखा-रेखा निकलकर मगल-क्षेत्र पर जाये तो जातक मे उत्साह, आत्म-शक्ति और साहस विशेष होता है। मगल-क्षेत्र पर शाखा-रेखा के अन्त मे तारे आदि का शुभ चिह्न हो तो शुभ-परिणाम। यदि अशुभ चिह्न हो तो अशुभ

परिणाम होता है।

(८) यदि चन्द्र-रेखा से कोई रेखा निकलकर सूर्य-रेखा में योग करे तो जातक में कल्पना-शक्ति विशेष होती है। यदि उंगलियाँ चिकनी हों और अग्रभाग नुकीले हों तो काव्य लिखने में विशेष यश मिलेगा। किन्तु यदि सूर्य-रेखा के अन्त में शुभ चिह्न हो तभी शुभ परिणाम समझना चाहिए। अशुभ-चिह्न हो तो अशुभ परिणाम।

(९) यदि सूर्य-क्षेत्र से कोई रेखा निकलकर शुक्र-क्षेत्र पर जावे तो शुक्र-क्षेत्र-सम्बन्धी (ललित कला, गायन आदि) सफलता होती है। यदि सूर्य-रेखा के अन्त में अशुभ चिह्न हो तो उलटे हानि ही होती है।

(१०) यदि सूर्य-रेखा से कोई शाखा निकलकर शीर्ष-रेखा में विलीन हो जाये और शीर्ष-रेखा सुन्दर, सुस्पष्ट और बलवान हो तो जातक को अपनी दिमागी ताकत की वजह से सफलता और यश प्राप्त होंगे। (देखिये चित्र नं० ७७)।

(११) यदि सूर्य-रेखा से कोई शाखा निकलकर हृदय-रेखा में विलीन हो जाये तो जातक को शराफत और भलाई के कारण अनेक मित्रों और सम्बन्धियों की सहायता से सफलता मिलेगी।

(१२) यदि कोई रेखा शुक्र-क्षेत्र से आकर सूर्य-रेखा को काटे तो अशुभ लक्षण है किन्तु यदि आकर उसमें विलीन हो जाये तो शुभ लक्षण है। शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हुई प्रभाव-रेखाओं के प्रकरण में यह विस्तारपूर्वक बताया गया है अतः उस प्रकरण को देखिए।

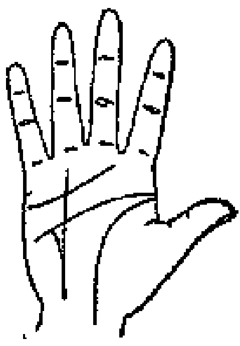

चित्र नं० ७७

१५वाँ प्रकरण

स्वास्थ्य-रेखा

भारतीय मतानुसार कनिष्ठिका उंगली के मूल में जो लम्बी रेखा हो उससे स्वास्थ्य का विचार किया जाता है—

"सर्वाङ्गुली मूल भवोर्द्धरेखा पर्वण्यधस्तान्मुनिभिः प्रशस्ता।
आरोग्य नामस्तुति लाभ पुत्रान् धत्ते कनिष्ठादि भव क्रमेण॥"

यदि यह अविच्छिन्न, सुन्दर, बलवान् हो तो सुन्दर स्वास्थ्य रहता है। पाश्चात्य हस्तपरीक्षकों ने इसका विस्तृत विवेचन किया है।

पाश्चात्य मत

जिस प्रकार करतल के नीचे के भाग से प्रारम्भ हो कर सूर्य-रेखा सूर्य के क्षेत्र पर जाकर समाप्त होती है या सूर्य-क्षेत्र की ओर जाती है, उसी प्रकार स्वास्थ्य-रेखा चन्द्र-क्षेत्र या हथेली के नीचे के किसी भी भाग से प्रारम्भ होकर बुध के क्षेत्र पर या बुध के क्षेत्र की ओर जाती है। इस कारण इसको बुध-रेखा भी कह सकते हैं, बल्कि बहुत से हस्तपरीक्षक इसको बुध-रेखा ही कहते हैं। किन्तु इस रेखा से स्वास्थ्य का विशेष विचार किया जाता है इस कारण अंग्रेजी पुस्तकों में इसका नाम 'लाइन आफ हैल्थ' अर्थात् 'स्वास्थ्य रेखा' प्रचलित है।

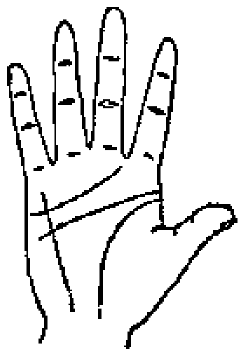

चित्र नं० ७८

जब कभी हाथ मे कोई अशुभ लक्षण दिखाई दे तो उसका कारण प्रायः स्वास्थ्य की खराबी होती है। जितनी बीमारियां हैं उनका तो स्वास्थ्य से साक्षात् सम्बन्ध है ही, किन्तु प्रेम मे सफलता, मित्रो से लाभ, भाग्योदय, व्यापारिक सफलता, प्रसिद्धि, यश, सम्मान आदि सब के मूल मे वे शक्तियां छिपी है जिनके कारण ये सब ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं और उन छिपी हुई शक्तियो का स्वास्थ्य से गहरा सम्बन्ध है। जिसका स्वास्थ्य अच्छा होगा वह परिश्रम भी पूर्ण कर सकेगा। मन और बुद्धि दोनो का योग अच्छा होने से तथा परिश्रम करने से विद्या और लक्ष्मी दोनो ही प्राप्त होती हैं। उच्चपद, यश, राजनीतिक सफलता आदि सभी सफलताओ के मूल मे सुन्दर स्वास्थ्य है। शारीरिक स्वास्थ्य से बढकर ऊंचा स्थान है मानसिक स्वास्थ्य का। चित्त प्रसन्न रहने से मित्र भी अधिक होते है। स्त्री-सुख भी अच्छा मिलता है। इस कारण हाथ मे जब कोई अशुभ लक्षण दिखाई दे तो यह यत्न-पूर्वक देखना चाहिये कि स्वास्थ्य से उन अशुभ लक्षणो का क्या सम्बन्ध है?

बहुत से डाक्टरो की यह राय है कि शरीर मे पाचन-शक्ति खराब होने से पित्त का प्रकोप होता है। पित्त के प्रकोप से दुष्ट बुद्धि होती है और मनुष्य बहुत से अनुचित कर्म करता है (चोरी आदि)। इसके विपरीत जिन का स्वास्थ्य अच्छा है, दिमाग साफ है उनको व्यापारिक बातें भी अच्छी सूझती है। इसलिये स्वास्थ्य-रेखा अच्छी होने से अन्य शुभ लक्षण भी अपना पूर्ण शुभ फल दिखाते है। स्वास्थ्य-रेखा खराब होने से भिन्न-भिन्न कारणो से रोग होते हैं। यदि जातक पर बृहस्पति का प्रभाव अधिक है और

स्वास्थ्य-रेखा खराब है तो समझ लीजिये कि उसके रोग का कारण अधिक भोजन करना है। यदि शीर्ष-रेखा में कोई अशुभ लक्षण हो तो स्वास्थ्य-रेखा से यह पता लगेगा कि यकृत (जिगर) और पेट की हालत क्या है। इसी प्रकार हृदय-रेखा मे कोई अशुभ लक्षण हो और दिल की बीमारी का अन्देशा हो तो स्वास्थ्य-रेखा से यह पता लग सकेगा कि जिगर और पेट की खराबी के कारण तो हृदय-रोग नही है? भाग्य-रेखा के प्रसंग मे बताया जा चुका है कि जिस अवस्था पर भाग्य-रेखा कमजोर हो उसी अवस्था मे स्वास्थ्य-रेखा भी खराब हो तो अस्वास्थ्य के कारण भाग्य-हानि समझनी चाहिये। कहने का तात्पर्य यह है कि स्वास्थ्य-रेखा की सहायता से अन्य रेखाओ के फल जानने मे भी आसानी होती है।

स्वास्थ्य-रेखा के लक्षण

सब लोगो के हाथ मे स्वास्थ्य-रेखा नही पाई जाती। करीब ५० फीसदी हाथो मे स्वास्थ्य-रेखा दिखाई नही देती। स्वास्थ्य-रेखा का न होना अशुभ लक्षण नही है। यदि स्वास्थ्य-रेखा लम्बी और सुन्दर (टूटी या अन्य दोषयुक्त न हो) हो तो जातक का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। किन्तु यदि स्वास्थ्य-रेखा खण्डित या दोषयुक्त हो तो इसकी बजाय स्वास्थ्य-रेखा का बिलकुल न होना ही अच्छा है। प्राय जिन हाथो मे कम रेखा होती है, स्वास्थ्य-रेखा भी नही होती। पतली-पतली बहुत-सी रेखाओं का जाल स्नायुओ की कमजोरी प्रकट करता है। ऐसा आदमी जल्दी घबरा जाता है। उसे शीघ्र क्रोध हो जाता है, उत्साह की कमी होती है। स्वास्थ्य-रेखा खण्डित या दूषित होने से प्राय. जिगर और पेट की खराबी रहती है और यदि हाथ मे पतली-

पतली बहुत सी रेखाओं का जाल हो तो समझना चाहिये कि प्रकृति की खराबी से जातक का स्वाभाव चिड़चिड़ा और गमगीन है। यदि स्वास्थ्य-रेखा न हो और हाथ में बहुत सी पतली-पतली रेखा न दिखाई दे तो समझना चाहिये कि जातक का जिगर और पेट ठीक काम कर रहा है। इस कारण स्वाभाविक दुर्बलता नहीं है।

रेखा का प्रारम्भ

साधारणत इस रेखा का प्रारम्भ चन्द्र-क्षेत्र से होना चाहिये किन्तु बहुत कम हाथों में ऐसा होता है। बहुत बार यह (१) जीवन-रेखा से (२) या भाग्य-रेखा से या (३) करतल-मध्य से प्रारम्भ होकर बुध-क्षेत्र की ओर जाती है। यदि भाग्य-रेखा और चन्द्र-क्षेत्र के बीच से यह रेखा प्रारम्भ हो तो कोई दोष नहीं किन्तु भाग्य-रेखा या जीवन-रेखा या इन दोनों के बीच के स्थान से प्रारम्भ होना अच्छा लक्षण नहीं है। यदि स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा से प्रारम्भ हो तो ऐसा जातक पूर्ण स्वस्थ नहीं रहेगा। जीवन-रेखा से प्रारम्भ होकर कोई रेखा स्वास्थ्य-रेखा से मिल जावे तो उसे अशुभ लक्षण नहीं समझना चाहिए।

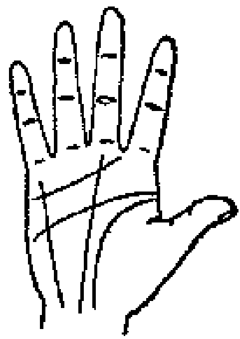

चित्र नं० ७६

यदि स्वास्थ्य-रेखा गहरी हो तो स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा। उत्तम स्वास्थ्य रहने से अच्छी स्मरण-शक्ति, बुद्धिमत्ता आदि गुण भी होंगे। यदि किसी की जीवन-रेखा पतली शृंखलाकार या अन्य दोष-युक्त हो और स्वास्थ्य-रेखा उत्तम हो तो जिस प्रकार सुन्दर

मंगल-रेखा जीवन-रेखा के दोष को दूर कर प्राणों को बल प्रदान करती है, उसी प्रकार सुन्दर स्वास्थ्य-रेखा होने से दोष-युक्त जीवन-रेखा के अशुभ फल कम हो जायेंगे।

मस्तिष्क की कमजोरी प्रायः मंदाग्नि आदि पेट की खराबी से होती है। इस कारण शीर्ष-रेखा अच्छी भी हो किन्तु स्वास्थ्य-रेखा खराब हो तो शीर्ष-रेखा का पूर्ण शुभ फल नही प्राप्त होगा। सुन्दर स्वास्थ्य-रेखा होने से हृदय-रेखा के दोष भी कुछ अंशो तक दब जाते हैं। इसका कारण यह है कि हृदय और जिगर का सम्बन्ध है।

यदि तीनो रेखाये (जीवन, शीर्ष और हृदय) सुन्दर हो और मगल तथा स्वास्थ्य-रेखाये भी अच्छी हो तो ऐसा जातक पूर्ण स्वस्थ रहेगा। यदि ऐसे व्यक्ति का मगल-क्षेत्र अति उन्नत हो, हाथो पर बाल हो तो उसमे तामसिक प्रकृति अधिक होने के कारण उसे कसरत, खेल-कूद आदि मे अपनी शक्ति लगानी चाहिए अन्यथा उसकी पूर्ण शक्ति उसे दुष्कर्मों की ओर ले जावेगी।

स्वास्थ्य-रेखा पर दोष-चिह्न

यदि स्वास्थ्य-रेखा पतली हो तो भी यही सूचित होता है कि यकृत अपना काम अच्छी तरह कर रहा है। रेखा का गहरा होना अधिक अच्छा लक्षण है। उसकी बराबरी पतली रेखा नही कर सकती। किन्तु स्वास्थ्य-रेखा दोष-युक्त हो (टूटी, लहरदार, बिन्दु, द्वीप-युक्त आदि) तो अस्वास्थ्य प्रकट होता है।

(१) यदि स्वास्थ्य-रेखा चौडी और उथली हो तो उसका जिगर बहुत मजबूत नही होगा। थोड़ी सी ही बदपरहेजी से सिर-दर्द, मदाग्नि, अपच, जलन आदि होगे।

(२) यदि स्वास्थ्य-रेखा शृंखलाकार हो तो जिगर और पेट

की खराबी प्रकट होगी। ऐसे व्यक्तियो को gall stone, यकृत, शोथ आदि रोग होते है। ऐसे व्यक्ति न केवल बीमार रहते है बल्कि उनका दिमाग भी गमगीन और उत्साहशून्य होता है। ऐसे लोग शक्की और चिडचिडे स्वभाव के होते है। इस कारण व्यापारिक सफलता भी उन्हे नही मिलती।

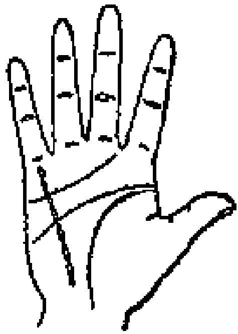

चित्र नं० ८०

(३) यदि यह रेखा लम्बी और सुन्दर हो तो आजीवन सुन्दर स्वास्थ्य रहेगा। किन्तु यदि कही तो सुन्दर हो और कही पतली, टूटी या अन्य दोष-युक्त हो तो जीवन के जिस काल मे अच्छी रेखा है उस काल मे अच्छा स्वास्थ्य रहेगा तथा जिस काल मे अशुभ लक्षण है उस काल मे अशुभ परिणाम होगा। चन्द्र-क्षेत्र की ओर से इसका प्रारम्भ माना जाता है और बुध-क्षेत्र पर इसका अन्त माना जाता है। जैसे अन्य रेखाओ के विषय मे बताया गया है उसी प्रकार इस रेखा पर अवस्था का अनुमान करना चाहिए। उसको देखने से यह स्पष्ट हो जायगा कि स्वास्थ्य-रेखा का कौन-सा भाग जीवन के किस काल को प्रकट करता है। इसकी सहायता से यह निश्चय करना चाहिये कि जातक कब स्वस्थ रहेगा और कब अस्वस्थ।

जीवन के जिस काल मे स्वास्थ्य-रेखा खराब हो यदि उसी काल मे जीवन-रेखा भी अशुभ लक्षणो से युक्त हो तो दोनो रेखाओ के अशुभ हो जाने से जीवन का वह भाग काफी बीमारी और मुसीबतो से भरा होगा। किन्तु स्वास्थ्य-रेखा पर तो अशुभ चिह्न

हो और जीवन-रेखा उस काल मे सुन्दर, दोषहीन हो तो अधिक अनिष्ट परिणाम नही होता।

(४) यदि स्वास्थ्य-रेखा का कोई भाग शृंखलाकार हो तो देखना चाहिये कि किस उम्र मे अस्वास्थ्य प्रकट होता है। उदाहरण के लिये यदि किसी के हाथ मे बत्तीस-तैतीस वर्ष की उम्र पर स्वास्थ्य-रेखा शृंखलाकार है और शीर्ष-रेखा से भी यह प्रकट होता है कि ३२, ३३ वर्ष मे द्वीप-चिह्न है या अन्य दोष है तो इस नतीजे की पुष्टि हुई कि इस अवस्था मे दिमाग की कमजोरी, पागलपन आदि होगा।

(५) यदि स्वास्थ्य-रेखा कुछ दूर तक गहरी और सुन्दर हो फिर हलकी पड कर लुप्त हो जाय और आगे चलकर बुध-क्षेत्र पर पुनः स्पष्ट और गहरी दिखाई पडे तो समझना चाहिये कि बीच मे स्वास्थ्य की कमजोरी थी किन्तु जातक बाद मे ठीक हो गया।

(६) स्वास्थ्य-रेखा पर, कही पर भी छोटी आडी काटने वाली रेखा, बिन्दु, क्रॉस या द्वीप-चिह्न हो तो इसे रोग का लक्षण समझना चाहिये। यदि यह रेखा के अन्तिम भाग मे हो तो जातक पूर्ण आरोग्य लाभ नही करेगा। किन्तु बीच मे कही हो और बाद मे स्वास्थ्य-रेखा अच्छी दिखाई दे तो यह स्वस्थ हो जाने का लक्षण है।

स्वास्थ्य-रेखा का रंग

वैसे तो जीवन-रेखा आदि अन्य रेखाओ के रग से भी स्वास्थ्य का पता चलता है किन्तु स्वास्थ्य-रेखा के रग का विशेष महत्व है। किन्तु कोई नतीजा निकालने के पहले यह अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिये कि जातक का शरीर और प्रकृति किस ग्रह से विशेष

प्रभावित है। यदि जातक पर बृहस्पति, शुक्र अथवा सूर्य का विशेष प्रभाव है तो उसकी हथेली का रग ललाई लिये हुए होगा । जिस पर मगल का प्रभाव अधिक होता है उसकी हथेली भी स्वभावत अधिक लाल होती है। इसलिये यदि ऐसे हाथ मे स्वास्थ्य-रेखा पीली हो तो बहुत अधिक दोष समझा जावेगा। किन्तु जिन व्यक्तियो पर बुध या शनि का प्रभाव अधिक होता है उनकी हथेली में ललाई अधिक नही होती। इस कारण ऐसे हाथो मे यदि स्वास्थ्य-रेखा कुछ पीली-सी दिखाई दे तो उतनी अधिक दोषकारक नही। इसी प्रकार चन्द्रमा का प्रभाव जिन पर अधिक होता है उनके हाथो मे सफेदी या पीलापन जल्दी ही आ जाता है। पीलेपन के मायने हैं कि जिगर अपना काम ठीक तौर पर नही कर रहा और पित्त का प्रकोप हो जाने से यह पीलापन स्वास्थ्य-रेखा मे दिखाई देने लगा है। जब यह रोग अधिक बढ जाता है तब तो हाथ ही क्या सारा शरीर पीला हो जाता है और स्पष्ट पीलिया रोग मालूम होने लगता है। किन्तु प्रारम्भिक अवस्था मे यदि स्वास्थ्य-रेखा पीली दिखाई दे तो चिडचिडापन, दु खी रहना, उत्साहहीनता आदि लक्षण जातक मे दिखाई देते है। यदि रग भी पीला या पीलापन लिये हुए हो और स्वास्थ्य-रेखा की बनावट भी खराब हो तो विशेष अनिष्ट प्रभाव सूचित होगा।

यदि स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो

यदि स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो तो यह सूचित करती है कि ऐसा जातक लम्बे अरसे तक कुछ-कुछ बीमार रहेगा। जिगर की खराबी से पचासो रोग होते है और जो भी लम्बा रोग जातक को हो उसकी जड मे— मूल कारण जिगर की खराबी होगी। यदि

जातक पर शनि का प्रभाव अधिक हो तो वात-विकार या गठिया-रोग होगा। स्नायु की दुर्बलता के कारण अन्य रोग भी हो सकते है। लहरदार स्वास्थ्य-रेखा होने से अनेक प्रकार के पित्त ज्वर—मलेरिया आदि होते है। जिन पर सूर्य का अधिक प्रभाव हो और स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो तो पाचन-शक्ति की खराबी के कारण उनको हृदय-

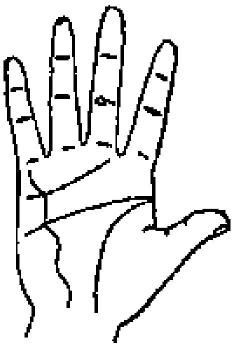

चित्र नं० ८१

रोग की शका होगी। ऐसे व्यक्तियो को उचित है कि वे अपने पेट और जिगर को ठीक हालत पर लावे, हृदय-रोग अपने-आप ठीक हो जावेगा। यदि मगल का प्रभाव अधिक होगा तो पेट की अतडियो मे शोथ हो जावेगा। जब कभी भी स्वास्थ्य-रेखा अच्छी न हो तो, हाथ के अन्य लक्षणो से तुलना कर यह विचार करना चाहिये कि क्या रोग होगा।

स्वास्थ्य-रेखा पर बिन्दु-चिह्न

ऊपर स्वास्थ्य-रेखा के कुछ दोष बताए जा चुके है। अब विशेष दोष-लक्षणो से क्या रोग अधिकतर होते है यह बताया जाता है—

(१) यदि स्वास्थ्य-रेखा छोटी-छोटी आडी रेखाओ से नसेनी की भाँति बनी हो तो बहुत तीव्र उदर-रोग का लक्षण है। अंतडियो की सूजन, मदाग्नि, उदर-विकार के कारण ज्वर आदि काफी परेशान करने वाले रोग होते है। यदि ऐसी रेखा पर कोई रंगदार बिन्दु-चिह्न हो तो उस अवस्था पर बहुत अधिक बीमारी का चिह्न है। साधारणतः बिन्दु-चिह्न उदर-विकार का लक्षण है किन्तु यदि यह बिन्दु लाल हो तो तीव्र ज्वर का लक्षण है। यदि

सफेद हो तो यह प्रकट होता है कि लम्बे अरसे तक बीमारी रहेगी।

(२) बिन्दु-चिह्न बीमारी का लक्षण है यह ऊपर बताया जा चुका है। यदि इस बिन्दु से प्रारम्भ होकर कोई रेखा किसी ग्रह-क्षेत्र पर जाती हो और वहाँ किसी दोष-चिह्न से योग करती हो तो उससे क्या रोग होगा यह नतीजा निकालना चाहिये।

(३) यदि स्वास्थ्य-रेखा पर बिन्दु-चिह्न हो और तर्जनी का तृतीय पर्व मोटा और पुष्ट हो तो अधिक भोजन करने के कारण उदर-विकार होगा। यदि शनि-क्षेत्र पर कोई दोष हो तो वायु या पित्त ज्वर का लक्षण है। बिन्दु लाल होने से ज्वर और पीला होने से वात-विकार समझा जाता है। यदि हृदय-रेखा सूर्य-क्षेत्र के नीचे टूटी, द्वीप-युक्त या अन्य दोषयुक्त हो तो पाचन-शक्ति की खराबी के कारण हृदय-रोग होगा। यदि सूर्य-क्षेत्र पर जाल-चिह्न हो और हाथ के नाखूनो से भी हृदय-रोग की सम्भावना प्रतीत हो तो इस लक्षण की पुष्टि होती है।

(४) यदि स्वास्थ्य-रेखा पर बिन्दु-चिह्न हो और स्वास्थ्य-रेखा बुध-क्षेत्र पर जाकर खण्डित या अन्य दोषयुक्त हो जाय तो जिस अवस्था पर बिन्दु हो उस अवस्था पर पित्त ज्वर होता है।

(५) स्वास्थ्य-रेखा पर बिन्दु-चिह्न हो और मंगल-क्षेत्र पर जाल, अर्गला रेखा हो तो अंतड़ियो का सूजन आदि रोग होते है।

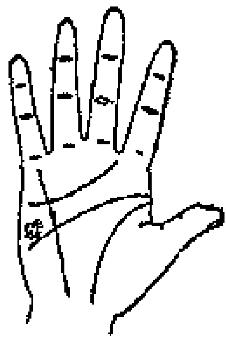

चित्र नं० ८२

(६) यदि स्वास्थ्य-रेखा पर बिन्दु-चिह्न हो और—

(क) चन्द्र-क्षेत्र का मध्य तृतीयांश जाल-चिह्न युक्त हो तो

वात-विकार ।

(ख) यदि चन्द्र-क्षेत्र का ऊपर का तृतीयांश जाल-चिह्न याअन्य दोषयुक्त हो तो अंतड़ियो की सूजन आदि का रोग होता है ।

अन्य दोष

(१) जिस अवस्था पर स्वास्थ्य-रेखा को कोई आडी रेखा काटे उस अवस्था पर कोई रोग होगा । यदि आडी काटने वाली रेखा छोटी और पतली हो तो साधारण रोग समझना चाहिए , यदि मोटी और गहरी हो तो ज्यादा गहरी बीमारी होगी । यदि काटने वाली कई रेखाएँ हो तो कई बार बीमारी होने का लक्षण है । यदि स्वास्थ्य-रेखा तथा शीर्ष-रेखा दोनो को बहुत नन्ही-नन्ही सूक्ष्म रेखाएँ काटे तो जिगर खराब रहने के कारण पित्त के प्रकोप से सिर-दर्द रहता है ।

(२) यदि स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो जिस अवस्था मे यह द्वीप-चिह्न है, जीवन के उस काल मे स्वास्थ्य कमजोर रहेगा । यदि इस द्वीप-चिह्न से प्रारम्भ होकर कोई रेखा किसी ग्रह-क्षेत्र पर जा रही हो और वहाँ किसी अशुभ चिह्न से योग करे तो उस ग्रह-क्षेत्र से सम्बन्धित बीमारी समझनी चाहिए । परन्तु स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न प्राय पेट की बीमारियो को प्रकट करता है—तथा जिगर या अतड़ियो की खराबी, (Appendicitis) वगैरह । इस पुस्तक मे नाखून, हृदय-रेखा, ग्रह-क्षेत्र आदि से जो रोग बताये गए है वे लक्षण भी यदि हाथ मे हो तो स्वस्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न होने से उन-उन रोगो के कारण स्वास्थ्य कमजोर होगा ।

(३) यदि स्वास्थ्य-रेखा पर दो, तीन या अधिक द्वीप-चिह्न

हो तो प्राय: गले या फेफड़े की बीमारी होती है। यदि साथ-साथ बृहस्पति के क्षेत्र पर भी द्वीप-चिह्न हो तो गले और फेफड़े की बीमारी होने के लक्षण की पुष्टि होती है। कुछ हस्त-परीक्षकों ने स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न को "दिवालिया होने का लक्षण बताया है" किन्तु भाग्य-रेखा तथा सूर्य-रेखा पर भी इसी अवस्था पर दिवालिया होने का कोई लक्षण हो तभी दिवालिया कहना चाहिए।

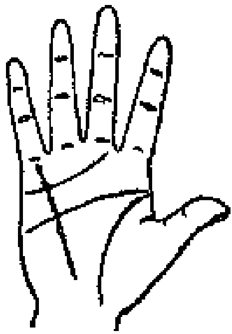

चित्र नं० ८३

(४) यदि स्वास्थ्य-रेखा टूटी हो तथा जिस अवस्था पर टूटी दिखाई दे उस अवस्था पर तीव्र रोग या लम्बे अरसे तक रहने वाली बीमारी होगी। यदि रेखा कई जगह टूटी हो तो पेट बहुत कमजोर रहेगा। जिगर के ठीक काम न करने से मदाग्नि आदि रोग होंगे। यदि टूटे हुए स्थान के चारों ओर चतुष्कोण चिह्न हो तो इस दोष की कमी समझनी चाहिए। चतुष्कोण चिह्न रक्षा करता है इस कारण अधिक बीमार होने पर भी प्राण नहीं जावेंगे। इसी प्रकार यदि टूटे हुए स्थान के पीछे कोई सहायक-रेखा हो तो स्वास्थ्य-रेखा के टूटने के दोष को कम करती है।

स्वास्थ्य-रेखा से भाग्योदय विचार

बहुत से प्राचीन हस्त-परीक्षकों ने स्वास्थ्य-रेखा को व्यापार का स्वामी माना है। इसका कारण यह है कि बुध का व्यापार से बहुत अधिक सम्बन्ध है। परन्तु अधिकतर झुकाव इसी ओर है। अतः इस रेखा से स्वास्थ्य का विचार करना चाहिए। हां! यदि किसी हाथ में भाग्य-रेखा तथा सूर्य-रेखा न हो तो स्वास्थ्य-रेखा

को ही भाग्य-रेखा मानकर विचार किया जाता है। जिस प्रकार अन्य रेखाओं के सुन्दर और सबल होने से उन-उन रेखाओं से सम्बन्धित सुख और ऐश्वर्य होता है। उसी प्रकार स्वास्थ्य-रेखा के अच्छे होने से स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और भाग्योदय भी अच्छा होगा।

स्वास्थ्य-रेखा से निकली हुई शाखायें

(१) यदि स्वास्थ्य-रेखा बुध-क्षेत्र के मध्य तक जाये और इस रेखा से निकलकर शाखा-रेखा ऊपर की ओर जावे तो शुभ लक्षण है। ऐसे व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और उसे व्यापारिक सफलता भी प्राप्त होगी।

(२) यदि शाखा-रेखा ऊपर की ओर न जाकर नीचे की ओर जावे तो यह सूचित होता है कि ऐसे व्यक्ति को कठिन परिश्रम करना पड़ेगा और कठिन परिश्रम के उपरान्त ही सफलता प्राप्त होगी।

(३) यदि बुध-रेखा सबल हो और उसमे से कोई शाखा निकलकर बृहस्पति के क्षेत्र पर जावे तो जातक की व्यापारिक सफलता का लक्षण है। इस व्यापारिक सफलता के मूल मे महत्वाकाक्षा और अपने अधीन लोगो से अच्छी प्रकार कार्य लेने की योग्यता होगी। यदि बृहस्पति पर तारे का चिह्न भी हो तो प्रभावशाली व्यक्तियो की मित्रता और सहायता से सफलता प्राप्त होगी।

(४) यदि सबल और सुन्दर स्वास्थ्य-रेखा से कोई शाखा निकलकर शीर्ष-क्षेत्र पर जावे तो ऐसे व्यक्ति मे सावधानी, बुद्धि, दूरदर्शिता, मितव्ययता आदि गुण होते है और इन गुणो के कारण सफलता प्राप्त होती है।

(५) यदि बुध-रेखा से कोई रेखा निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर जाये तो भी सफलता का लक्षण है। ऐसे व्यक्ति मे प्रखर बुद्धि, मिलन-

सारी, शिष्टता आदि विशेष होती है। (देखिये चित्र नं० ८४)

स्वास्थ्य-रेखा बुध-क्षेत्र पर जाती है और बुध का बुद्धि तथा व्यापार से सम्बन्ध है इस कारण इस रेखा से व्यापारिक सफलता आदि गुण बताये गए है। किन्तु सर्वत्र इस बात को ध्यान मे रखना चाहिए कि बुध से लिखने-पढने तथा बोलने की चतुरता भी होती है, बुध के शुभ फल से ही कुशल डाक्टर और वैज्ञानिक होते हैं और बुध से ही व्यापारिक सफलता मिलती है। इस बात का

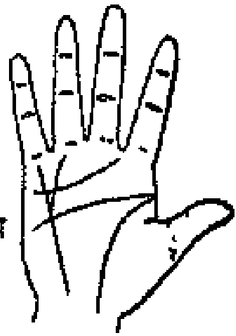

चित्र नं० ८४

निश्चय करने के लिए कि बुध के किस गुण का विशेष शुभ फल होगा यह निश्चय करना चाहिए कि छोटी उगली का कौनसा पर्व लम्बा है। यदि प्रथम पर्व विशेष लम्बा हो तो लिखने-पढने की योग्यता, वाग्मिता आदि विशेष गुण होगे। यदि मध्यम पर्व लम्बा हो तो वैज्ञानिक या डाक्टर का कार्य करने से जातक उन्नति करेगा। यदि तृतीय पर्व लम्बा हो तो जातक को व्यापारिक सफलता होगी।

प्रत्येक गुण कहाँ तक फलीभूत होगा इसका विचार करते समय अन्य लक्षणो का सामञ्जस्य कर लेना चाहिये। यदि शीर्ष-रेखा कमजोर हो तो विद्वत्ता कैसे होगी? यदि भाग्य-रेखा और सूर्य-रेखा न हो और ग्रह-क्षेत्र भी धसे हुए हो तो धन कैसे सग्रह होगा?

(६) यदि चन्द्र-क्षेत्र से कोई रेखा आकर स्वास्थ्य-रेखा मे मिलती हो तो चन्द्र-क्षेत्र का जो गुण है—कल्पना-शक्ति वह भी जातक मे विशेष मात्रा मे होगी और यदि साहित्यिक, कवि या लेखक होने के लक्षण जातक मे हैं तो उसमे कल्पना-शक्ति बहुत सहायक

होगी। जो व्यक्ति सट्टा आदि व्यापारिक कार्य करते हैं उनको भी कल्पना-शक्ति सहायक होती है। बुद्धि और कल्पना दो अलग-अलग गुण हैं। केवल बुद्धि से व्यक्ति सुन्दर, आलोचक या विद्वान् हो सकता है, कवि नही। केवल बुद्धि से व्यापारिक कार्य कर सकता है, सट्टे में या किसी बडी व्यापारिक योजना मे सफल नही हो सकता। बुद्धि मे कल्पना सहायक होती है, केवल कल्पना हो और बुद्धि न हो तो व्यक्ति शेखचिल्ली होता है।

(७) यदि बुध-रेखा से कोई शाखा निकलकर शीर्ष-रेखा मे जाकर मिल जाये तो बुद्धि की प्रखरता के कारण सफलता मिलती है।

स्वास्थ्य-रेखा का अन्त

प्राय जिन हाथो मे स्वास्थ्य-रेखा होती है वह बुध-क्षेत्र तक जाती है। किन्तु कुछ हाथो मे बुध-क्षेत्र पर अन्य एक या दो खडी रेखाएँ भी होती है। इस कारण यह ध्यान से देखना चाहिए कि बुध-क्षेत्र पर जो रेखा है वह स्वास्थ्य-रेखा ही है, अन्य स्वतन्त्र रेखा नही।

(१) यदि बुध-क्षेत्र पर कोई विवाह या प्रेम-रेखा स्वास्थ्य-रेखा को काटे तो प्रेम या विवाह के कारण उन्नति या स्वास्थ्य में बाधा होगी।

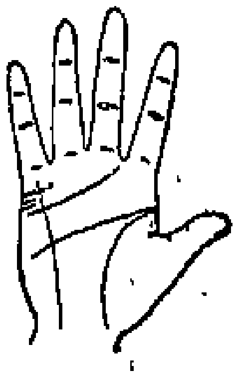

चित्र नं० ८५.

(२) यदि इस रेखा के अन्त पर कोई छोटी आडी रेखा हो या क्रॉस चिह्न हो तो बाधा का चिह्न है। यदि साथ-ही-साथ हृदय-रेखा पतली हो या अच्छी न हो, उगलियाँ टेढी हो और हाथ मे अन्य लक्षण भी अच्छे न हो तो ऐसा व्यक्ति धोखेबाज होता है और इस कारण उसे सफलता नही मिलती।

(३) यदि इस रेखा के अन्त पर जाल-चिह्न हो तो और भी अशुभ लक्षण है। स्वास्थ्य की खराबी या बेईमानी के कारण मनुष्य को सफलता प्राप्त नहीं होती। यदि सूर्य-क्षेत्र पर बिन्दु-चिह्न भी हो तो दिवालिया होने का या व्यापारिक बदनामी का लक्षण है।

(४) यदि इस रेखा के अन्त पर तारे का चिह्न हो तो पूर्ण सफलता का लक्षण है। भाग्य-रेखा और सूर्य-रेखा से इस फल की पुष्टि होती है या नहीं यह भी विचार करना उचित है।

(५) स्वास्थ्य-रेखा बुध-क्षेत्र पर पहुँच कर दो शाखायुक्त हो जाए तो ऐसा व्यक्ति अपनी बुद्धि को एक से अधिक प्रकार के कार्यों मे एक साथ लगाता है इस कारण पूर्ण सफलता नहीं होती।

(६) यदि जैसा ऊपर बताया गया है दो शाखा की बजाय कई शाखा निकल आयें तो भी अनेक कामो मे बुद्धि को लगाने से असफलता का लक्षण है।

(७) जहाँ स्वास्थ्य-रेखा शीर्ष-रेखा को काटती हो वहाँ या उसके पास तारे का चिह्न हो तो—

(क) स्त्री के हाथ मे यह लक्षण होने से गर्भाशय-सम्बन्धी रोग होता है। यदि साथ ही चन्द्र-क्षेत्र के नीचे के तिहाई भाग मे जाल-चिह्न हो तो इस रोग की पुष्टि का लक्षण है। ऐसी स्त्रियो को सन्तान पैदा करने मे बहुत कठिनता होती है। यदि जीवन-रेखा का घुमाव बहुत कम हो और शुक्र-क्षेत्र छोटा तथा नीचा हो तो प्राय सन्तान नहीं होती।

(ख) पुरुष के हाथ मे हो—अन्य लक्षण अच्छे हो अर्थात् स्वास्थ्य-रेखा और शीर्ष-रेखा उत्तम हो तो प्रखर बुद्धि का लक्षण है। यदि शीर्ष-रेखा और स्वास्थ्य-रेखा ख़राब हो तो दिमाग़ी बीमारी का लक्षण है।

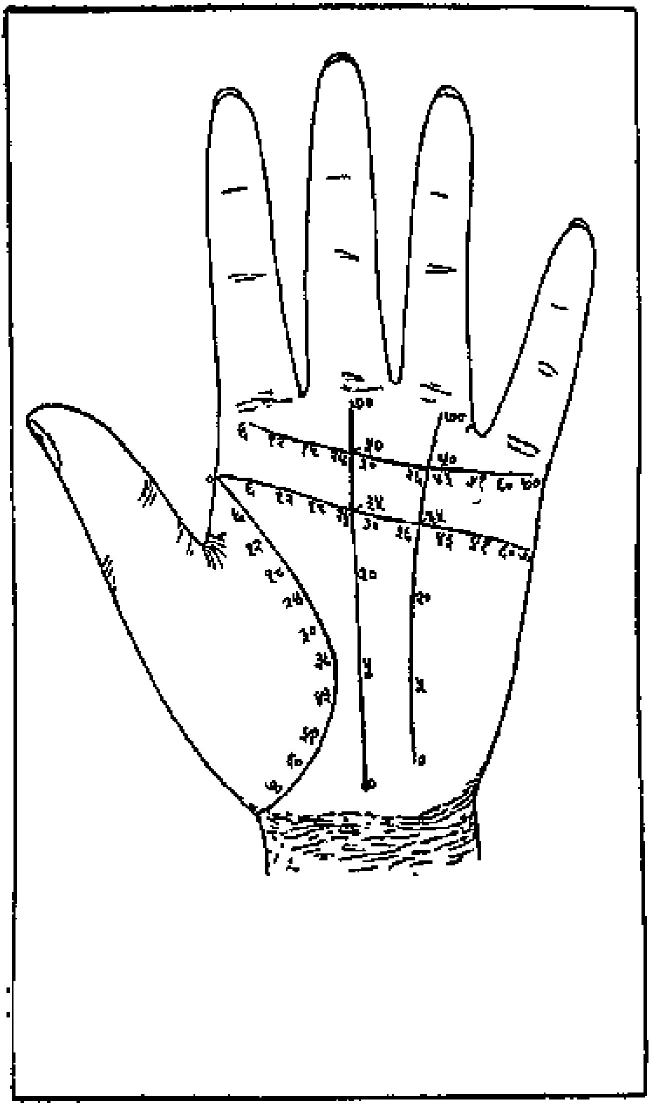

चित्र नं० ८६

उपसंहार

यदि बुध-रेखा सुन्दर और सबल हो तो उसके सम्बन्ध मे या उससे निकली हुई शाखाओ के सम्बन्ध में जो फल बताये गये है पूर्ण रूप से शुभ फल देते है। यदि रेखा दोषयुक्त अथवा निर्बल हो तो अशुभ लक्षण पूर्ण अशुभ फल देते है। यदि सुन्दर रेखा मे कोई थोडा सा दोष-चिह्न भी कही हो तो इतना नुकसान नही होता किन्तु निर्बल या लहर दार रेखा हो और उस पर द्वीप या अन्य अशुभ लक्षण हो तो अधिक अनिष्ट परिणाम होता है।

अन्य रेखाओ तथा ग्रह-क्षेत्रो के लक्षणो से जो फल प्रतीत होते है उनकी पुष्टि के लिए स्वास्थ्य-रेखा का अध्ययन आवश्यक है किन्तु यदि स्वास्थ्य-रेखा हो ही नही तो यह भी शुभ लक्षण है।

चित्र-परिचय (चित्र न० ८६)

जीवन-रेखा तथा भाग्य-रेखा पर किस स्थान से कौनसी उम्र समझना, इस विषय का एक चित्र दसवें प्रकरण के अन्त में दिया गया है।

सब हाथो की बनावट एक सी नहीं होती। रेखा की लम्बाई तथा दिशा में अन्तर होता है। इस कारण अनुमान सही तभी उतरता है जब निरन्तर हाथ देखते-देखते इस का पूर्ण अभ्यास किया जावे।

एक अन्य विद्वान् ने रेखाओं पर से उम्र का अन्दाज करने के लिए एक अन्य चित्र दिया है। उसकी प्रतिलिपि यहाँ दी जाती है। इस पर से जीवन-रेखा तथा अन्य रेखाओं पर जो विविध चिह्न होते हैं वे किस अवस्था में होंगे इसका अनुमान करना चाहिए।

विविध हाथों की रेखाओं की लम्बाई, गोलाई, सीधेपन आदि में अन्तर होता है—इस कारण एक ही पैमाना सबके लिये बिलकुल उपयुक्त नहीं हो सकता। सही अनुमान तो अभ्यास पर ही निर्भर है। तथापि यह चित्र इस सम्बन्ध में बहुत सहायक होगा यह आशा की जाती है।

१६वाँ प्रकरण

विवाह-रेखा

भारतीय मत

कनिष्ठिका उगली के नीचे और हृदय-रेखा के ऊपर हाथ के बाहरी भाग से प्रारम्भ हो बुध के क्षेत्र पर गई हुई रेखा या रेखाओ को विवाह-रेखा कहते है। समुद्र ऋषि कहते है—

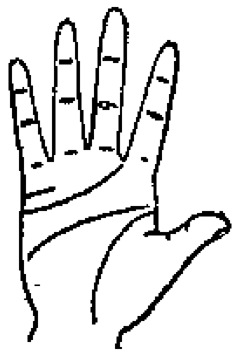

चित्र नं० ८७

स्थिताश्चान्ते च या रेखा
कनिष्ठा जीव रेखयो ।
तावन्त्यो महिला स्तस्य
स्त्रिया स्तावन्मिताधवा ॥

अर्थात् ये रेखा जितनी हो पुरुष के उतनी स्त्रियाँ और स्त्रियो के उतने पति होते है।

'प्रयोग पारिजात' मे भी लिखा है—

रेखा. कनिष्ठिकायुर्लेखामध्ये नरस्य यावत्य. ।
तावन्त्यो महिला स्युर्महिलाया पुनरपि मनुष्या ॥
रेखाभिर्विषमाभिर्विषमा समाभिरथ समशीला ।
हीनतरा हीनाभिर्ध्रुव मधिकतरा समधिकाभि ॥
पुष्टाभिर्हि पुनर्भू कन्याभिरेखाभिरथ सुदीर्घाभि ।
सुभगा सूक्ष्माभि स्यात्स्फुटिताभिर्दुर्भगा नारी ॥

अर्थात् पुरुष के हाथ मे जितनी रेखा हों उतनी स्त्रियाँ उसके

होगी और महिला के हाथ में जितनी हों उतने पति उसके होंगे।

विषम रेखा हो तो विषम (नीचे कुल की स्त्री से) यदि सम हो तो समशील (अपने समान कुलशील वाली) से विवाह होता है। यदि रेखा सुन्दर, सूक्ष्म, दीर्घ हो तो कन्या (जिसका पहले विवाह न हुआ हो) से विवाह होता है। यदि हीन (सुन्दर नहीं, छोटी) किन्तु पुष्ट (मोटी) रेखा हो तो ऐसी स्त्री से विवाह होता है जिसका पहले विवाह हो चुका हो। यदि रेखा फटी हुई हो तो स्त्री दुर्भगा (सौभाग्ययुक्त नहीं) होती है।

इन सब रेखाओं का फल, देश, काल, समाज का विचार कर कहना चाहिये।

पाश्चात्य मत

बहुत से पाश्चात्य हस्तपरीक्षक इनको विवाह-रेखा न कहकर प्रेम-रेखा कहते हैं क्योंकि हजारों-लाखों आदमी ऐसे देखे गए हैं—जिनके हाथ में यह रेखा थी किन्तु वे सारे जीवन-भर अविवाहित रहे और मर गये। उनके जीवन में गहरे प्रेम-सम्बन्ध अवश्य हुए। उनको प्रकट करने वाली यही विवाह या प्रेम-रेखा उनके हाथों में थी।

यूरोप आदि पाश्चात्य देशों में इतनी अधिक संख्या में लोग विवाह नहीं करते जितनी कि भारतवर्ष में। वहाँ का सामाजिक जीवन भिन्न प्रकार का है, किन्तु भारतवर्ष में ९९ फीसदी स्त्रियों के और ८०-९० प्रतिशत पुरुषों के विवाह होते हैं। इस कारण अपने देश के दृष्टिकोण से इन्हें विवाह-रेखा कहना ही विशेष उपयुक्त होगा। जहाँ कहीं इसका फल विवाह के रूप में न मिले वहाँ उसका अर्थ अपनी विवाहिता पत्नी के अतिरिक्त किसी स्त्री से प्रेम-सम्बन्ध समझना पड़ेगा। इसी प्रकार स्त्रियों के

हाथ मे यदि एक से अधिक रेखा हो तो जिन समाजो मे विधवा-विवाह या पुनर्विवाह प्रचलित है उनमे तो दो या अधिक विवाह-रेखाओ का अर्थ दो या अधिक विवाह किया जावेगा। किन्तु जिन समाजो मे पुनर्विवाह प्रचलित नही है या ऐसी स्त्रियो के हाथ देखने का अवसर मिले जिनकी अवस्था इतनी अधिक हो चुकी हो कि पुनर्विवाह का प्रश्न ही नही उठता—तो ऐसी परिस्थिति मे एक से अधिक विवाह-रेखा का अर्थ एक से अधिक प्रेम-सम्बन्ध अवश्य मानना पडेगा। युक्तियुक्त और तर्कसम्मत पक्ष तो यही है। किन्तु सामाजिक परिस्थिति पर भी ध्यान देना—स्त्रियो की कुलीनता पर भी दृष्टि रखना आवश्यक है। इस कारण देश, काल, पात्र का विचार कर, पति के अतिरिक्त अन्य पुरुष से प्रेम-सम्बन्ध नही कहना चाहिये। इसमे दो वैज्ञानिक हेतु भी है—(१) बहुत से लक्षरण जब बलवान नही होते तब उनके फल स्वप्न मे ही प्राप्त होते हैं ऐसा वराहमिहिराचार्य ने लिखा है।

इस कारण प्रत्येक लक्षरण का समाज-भिन्नता से पूरा फल ठीक नही बैठता।

(२) अन्य हेतु यह है कि किसी एक लक्षरण से अन्तिम निर्णय पर नही पहुँचा जा सकता। इस कारण स्त्री-लक्षरण प्रकरण मे जो अनेक लक्षरण कुलटाओ के बताये गए है वे भी यदि किसी स्त्री मे हो और विवाह-रेखा भी कई हो तो ऐसी स्त्री का पर-पुरुषो से सम्बन्ध है या रहा है यह निश्चय किया जा सकता है।

कुछ हाथो मे केवल एक ही रेखा होती है, कुछ हाथो मे अनेक। जिन व्यक्तियो का जीवन विवाह से बहुत प्रभावित हुआ है—अर्थात् विवाह के उपरान्त जिनका जीवन बहुत प्रेममय रहा हो

और जिनके दिल और दिमाग पर विवाहित जीवन की गहरी छाप लगी हो उनके हाथ मे गहरी विवाह-रेखा होगी। किन्तु जिनका विवाह हुआ—वैवाहिक जीवन भी व्यतीत किया, सन्तानें भी हुईं, किन्तु उनके दिल और दिमाग मे वैवाहिक तन्मयता नही हुई उनके हाथ मे विवाह-रेखा पतली और क्षीण होगी। ऐसे भी लोगों के हाथ देखे गये हैं जो बीस-बीस, पच्चीस-पच्चीस वर्ष से विवाहित हैं किन्तु उनके हाथ मे विवाह-रेखा बिलकुल नही है। इससे यही नतीजा निकाला जाता है कि, विवाह द्वारा जिनका जीवन एक विशेष प्रभावशाली धारा मे बहने लगा, उनके हाथ मे विवाह-रेखा गहरी, स्पष्ट और लम्बी होगी। किन्तु जन्मभर गृहस्थी की गाड़ी चलाते हुए भी, जिसके हृदय या मस्तिष्क का पूर्ण लगाव वैवाहिक जीवन के साथ नही हुआ, उसके हाथ मे विवाह-रेखा इतनी अस्पष्ट और क्षीण होगी कि सम्भवत यह प्रतीत होगा कि उसका विवाह हुआ ही नही। यह बहुत महत्व का विषय है इस कारण इस ओर विशेष ध्यान दिलाया गया है।

विवाह के विषय मे फलादेश करते समय जातक के स्वरूप, प्रकृति और स्वभाव की ओर ध्यान देना भी आवश्यक है। जिन पर सूर्य, मगल, बुध, बृहस्पति या शुक्र का प्रभाव अधिक होता है वे प्राय जवानी के प्रारम्भ मे ही विवाह करते है। इसलिये यदि बृहस्पति के प्रभाव से युक्त पुरुष के हाथ मे विवाह-रेखा, हृदय-रेखा के पास ही हो (अर्थात् बहुत दूर न हो) तो जातक का कम उम्र मे विवाह होगा किन्तु यदि ऐसी ही रेखा शनि या चन्द्र प्रभाव वाले व्यक्ति के हाथ मे हो तो उसका विवाह अधिक अवस्था मे ही कहना चाहिये। यदि रेखा क्षीण हो तो भी शुक्र या बृहस्पति प्रभाव वाले

व्यक्तियों का विवाह हो जावेगा—क्योंकि उनकी इस ओर स्वाभाविक प्रवृत्ति रहती है। किन्तु इस प्रकार की रेखा का परिणाम शनि-प्रभाव-युक्त व्यक्ति के हाथ में पूर्ण फलद नहीं होता। बहुत गहरी रेखा हो तभी विवाह का फलादेश करना चाहिये; और वह भी अपेक्षाकृत विलम्ब से।

विवाह की उम्र बताने का नियम यह है कि कनिष्ठिका उंगली के मूल और हृदय-रेखा में जो अन्तर हो उसे दो भागों में विभक्त करना चाहिये। यदि विवाह-रेखा—हृदय-रेखा की ओर जो आधा भाग है उस में हो तो विवाह जल्दी—जवानी के आरम्भ में ही होता है। विवाह-रेखा हृदय-रेखा के जितने पास हो उतनी ही जल्दी विवाह होगा। किन्तु यदि विवाह-रेखा कनिष्ठिका उंगली के ओर वाले आधे भाग में हो तो विवाह ढलती हुई जवानी में होता है।

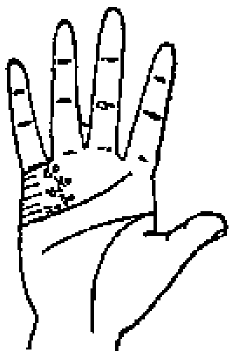

चित्र नं० ८८

विवाह-रेखा चिटली उंगली के जितने अधिक पास गई हो उतनी ही अधिक उम्र में विवाह होता है।

विवाह की उम्र निश्चित करने का यह साधारण नियम है। किन्तु भिन्न-भिन्न प्रकार के हाथों में—जैसे बृहस्पति या शनि-प्रभाव-युक्त व्यक्तियों के हाथ में—भिन्न-भिन्न प्रभाव होता है यह ऊपर उदाहरण देकर समझाया गया है। इस विचार के साथ-साथ यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि यूरोप आदि देशों में अधिक अवस्था में लोग विवाह करते हैं इस कारण यदि भारतवर्ष में इक्कीस-बाईस वर्ष की अवस्था में किसी पुरुष के विवाह करने पर जल्दी विवाह

कहा जाय तो इग्लैंड आदि देशो मे २७-२८ वर्ष की अवस्था मे भी वहाँ शीघ्र विवाह समझा जावेगा। भारतवर्ष मे ही कुछ प्रदेशो में अधिक अवस्था मे विवाह करना प्रचलित हो गया है। किसी समय २०-२२ वर्ष की उम्र में बगाली नवयुवको के विवाह हो जाते थे। किन्तु अब तीस-पैंतीस वर्ष की अवस्था मे, आधुनिक शिक्षित बगाली विवाह करते हैं।

लडकियो के विवाह के सम्बन्ध मे भी यही बात लागू होती है। जिस समाज मे जैसी प्रथा हो उसके अनुरूप ही कम उम्र क्या है और अधिक उम्र क्या यह निश्चित करना चाहिये। उदाहरण के लिए किसी समय १२-१३ वर्ष की अवस्था मे विवाह हो जाते थे और यदि १५वे या १६वे वर्ष मे विवाह हुआ तो विलम्ब से विवाह समझा जाता था। किन्तु अब १५वे या १६वे वर्ष मे विवाह हो तो शीघ्र विवाह समझा जाता है और पच्चीस या इससे भी अधिक अवस्थाओ की स्त्रियो का विवाह अब साधारण बात हो गई।

ऊपर जो विवाह का समय निश्चित करने के लिये नियम बताया गया है उसके अनुसार प्रधान विवाह-रेखा किस अवस्था मे है यह निश्चित करना चाहिये। यदि इसके पहले अन्य छोटी-पतली रेखायें हो तो विवाह के पूर्व प्रेम-सम्बन्ध प्रकट होता है। यदि विवाह-रेखा के उपरान्त ये रेखायें हो तो विवाह के बाद प्रेम-सम्बन्ध का लक्षण समझना चाहिये। किस अवस्था मे यह प्रेम-सम्बन्ध होगा इसका निश्चय उस रेखा की स्थिति से होगा—अर्थात् यह रेखा हृदय-रेखा से कितनी और कनिष्ठिका उगली के मूल से कितनी दूर है। यदि ये (प्रधान विवाह-रेखा के अतिरिक्त) अन्य रेखाये लम्बी और गहरी हो तो जातक के जीवन पर या हृदय पर इन सम्बन्धो का विशेष

प्रभाव पड़ा है यह समझना उचित है किन्तु ये रेखा छोटी या अस्पष्ट हो तो या तो ऐसा सम्बन्ध थोड़े काल तक रहा या जातक के हृदय पर विशेष प्रभाव नही पडा यह नतीजा निकालना उचित है।

उदाहरण के लिए किसी जातक के हाथ मे प्रधान विवाह-रेखा से पहले दो छोटी रेखा हो तो समझना चाहिये कि विवाह के पूर्व दो प्रेम-सम्बन्ध हुए, जिनका प्रभाव थोड़े दिन तक रहा। किन्तु यदि दो विवाह-रेखा—दोनो गहरी और लम्बी—हो तो इसका अर्थ दो विवाह होता है। किस अवस्था मे ये विवाह हुए या होगे इस का निश्चय उनकी स्थिति से करना चाहिये। कितने ही ऐसे व्यक्तियो के हाथ हमने देखे जिनके तीन विवाह हुए। दो रेखाये तो लम्बी और गहरी थी और एक अत्यन्त छोटी और हल्की थी। उनको जब यह बताया गया कि उनके दो विवाह और विवाह के पूर्व एक प्रेम-सम्बन्ध का लक्षण उनके हाथ मे है तो उन्होने बताया कि वास्तव मे उनके तीन विवाह हो चुके है—पहला विवाह १३-१४ साल की उम्र मे ही हुआ और चार-पाँच वर्ष के बाद ही उस पत्नी का देहान्त हो गया। फिर दूसरा विवाह दो-तीन वर्ष बाद हुआ, दस-बारह वर्ष तक वह पत्नी जीती रही और उसके उपरान्त तीसरा विवाह हुआ। ऐसे हाथो मे छोटी और अस्पष्ट रेखा भी प्रेम-सम्बन्ध नही बल्कि विवाह ही, प्रकट करती है।

बहुत से ऐसे व्यक्तियो के हाथ देखने का अवसर मिला जिनके पाँच-छः विवाह हो चुके थे किन्तु उनके दोनो हाथो को देखने पर भी दो-तीन से अधिक विवाह-रेखा न दीख पडी। इससे यही परिणाम निकाला कि उनका प्रेम और सहवास दो-तीन पत्नियो से ही विशेष रहा है।

यदि आप किसी हाथ में दो विवाह-रेखा देखें और प्रथम रेखा अधिक लम्बी और गहरी हो तो आप निश्चयपूर्वक कह सकते है कि जातक का अपनी प्रथम पत्नी के साथ द्वितीय की अपेक्षा विशेष प्रेम है। यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि विवाह-रेखाओ का विस्तार करते समय प्रथम, द्वितीय, तृतीय आदि हृदय-रेखा की ओर से गिनना प्रारम्भ करना चाहिये।

यदि कोई रेखा विशेष लम्बी किन्तु पतली हो और सबसे अधिक लम्बी होने के कारण यह निश्चय किया जाय कि वही विवाह-रेखा है और इस रेखा के पहले कोई गहरी रेखा हो तो समझना चाहिये कि जातक प्रेम तो किसी अन्य व्यक्ति को करता था किन्तु विवाह दूसरे से हुआ। यदि दोनो रेखा पास-पास और समान रूप से गहरी और लम्बी हो तो यह परिणाम निकालना चाहिये कि जातक दो व्यक्तियो को समान रूप से प्रेम करता रहा—चाहे दोनो पत्नी हो या एक या दोनो उपपत्नी।

प्रेम की गहराई का लक्षण रेखा की चौडाई और गहराई से ही लगता है। यदि रेखा हल्की और पतली हो तो ऐसे जातक की अपनी पत्नी के प्रति उदासीनता होती है। जिनके हाथ मे बहुत बारीक-बारीक और बहुत छोटी बहुत सी रेखाये हो तो यह प्रकट होता है कि जातक का प्रेम करने का स्वभाव नही है। बल्कि भौंरे के सदृश इधर-उधर रस लेने का स्वभाव होता है। रेखाओ के विषय मे कुछ अन्य लक्षण नीचे बताये जाते है—

(१) यदि हाथ के बाहरी भाग से प्रारम्भ होते समय पहले हिस्से मे रेखा गहरी हो और बाद मे हल्की और पतली होती चली जाय तो समझना चाहिये कि विवाह या प्रेम-सम्बन्ध में, प्रारम्भिक

काल मे तो जातक के दिल मे मुहब्बत का जोश था किन्तु बाद मे ठडा होता गया।

(२) यदि प्रारम्भिक काल मे (करपृष्ठ की ओर वाले भाग मे) रेखा हल्की हो और बुध-क्षेत्र पर आकर धीरे-धीरे गहरी होती जावे तो समझना चाहिये कि पहले प्रेम हल्का था बाद मे अधिक हो गया।

(३) यदि रेखा के रग मे सफेदी या पीलापन हो तो अधिक प्रेम सूचित नही होता। किन्तु यदि गुलाबी या लाल रग हो तो प्रेम मे जोश होता है।

(४) यदि विवाह-रेखा द्वीप-युक्त हो तो व्यभिचार का लक्षण है या वैवाहिक जीवन मे कष्ट और कलह सूचित होता है। पति-पत्नी मे विच्छेद भी हो सकता है। यदि विवाह-रेखा के प्रारम्भ मे यह चिह्न हो तो विवाह के प्रारम्भ काल मे, यदि बीच मे हो तो मध्य काल मे, यदि अन्त मे हो तो अन्तिम काल मे—जितना लम्बा द्वीप हो उतने काल तक कलह और दुख समझना चाहिये।

(५) यदि विवाह-रेखा सुन्दर और अच्छी हो और चन्द्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर कोई प्रभाव-रेखा भाग्य-रेखा मे आकर मिल जाय तो धनिक कुल मे विवाह होता है। (देखिये चित्र नं० ८९) वास्तव मे यह दो लक्षणो का समन्वय है। चन्द्र-क्षेत्र से कोई भी रेखा आकर यदि भाग्य-रेखा मे मिलती है तो अपने सम्बन्धियो के अतिरिक्त किसी बाहरी व्यक्ति की सहायता से भाग्य-वृद्धि का लक्षण है। इस का अर्थ विवाह द्वारा भाग्योदय किया जाता है। स्त्रियो के हाथ मे यह अर्थ विशेष सही

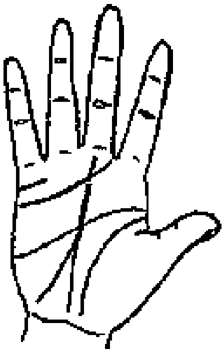

चित्र नं० ८९

बैठता है क्योंकि विवाह के उपरान्त उनके जीवन मे विशेष परिवर्तन होता है।

यदि चन्द्र-क्षेत्र से घुमावदार या टेढी रेखा आकर भाग्य-रेखा मे योग करे तभी उपर्युक्त अर्थ करना चाहिये।

(६) यदि चन्द्र-रेखा से कोई रेखा आरम्भ होकर कुछ दूर तक सीधी जावे और फिर मुड कर भाग्य-रेखा से योग करे तो प्रेम के कारण नही किन्तु लहर (किसी अस्थायी प्रभाव या झोंक) मे आकर मनुष्य विवाह करता है।

(७) यदि उपर्युक्त (५ और ६) चन्द्र-क्षेत्र से आई हुई रेखा भाग्य-रेखा की अपेक्षा विशेष बलवान (गहरी और चौडी) हो तो जातक की अपेक्षा उसकी पत्नी विशेष प्रभाव और व्यक्तित्व रखती है। यदि किसी स्त्री के हाथ मे ऐसी रेखा हो तो पत्नी के स्थान मे पति समझना चाहिये।

(८) यदि उपर्युक्त चन्द्र-क्षेत्र से आई हुई प्रभाव-रेखा भाग्य-रेखा के साथ-साथ सुन्दर और गहरी दूर तक जाये तो वैवाहिक-जीवन सुखमय होता है।

(९) विवाह-रेखा यदि सुन्दर सीधी, लम्बी और गहरी हो तो पूर्ण और शुभ फल देती है। किन्तु यदि बीच मे कटी, क्रॉस या अन्य अशुभ लक्षणयुक्त हो तो अनिष्ट फल होता है।

(१०) यदि विवाह-रेखा कुछ दूर सीधी आकर बाद मे नीचे की ओर—हृदय-रेखा की ओर घूम जाये तो जातक की पत्नी (या प्रेमिका) की मृत्यु पहले होगी, जातक की बाद मे। यदि स्त्री के हाथ मे ऐसी रेखा हो तो पति की मृत्यु पहले समझनी चाहिये।

(११) यदि उपर्युक्त रेखा नीचे की ओर न घूम कर ऊपर की

ओर (कनिष्ठिका उंगली की ओर घूमी हो) तो कीरो के मतानुसार ऐसे जातक का विवाह नही होता। परन्तु भारतीय परिस्थिति मे इसका अर्थ यह करना उचित होगा कि जातक की स्वय की मृत्यु पहले होगी, पत्नी की वाद मे।

(१२) यदि विवाह-रेखा स्पष्ट हो लेकिन उससे निकल कर पतली-पतली रेखाये हृदय-रेखा की ओर आये तो जातक की पत्नी (या पति) का स्वास्थ्य खराव रहने के कारण वैवाहिक जीवन सुख-मय न होगा।

(१३) विवाह-रेखा बुध के क्षेत्र पर पूरी आकर हृदय-रेखा की ओर घूम गई हो और इस घुमाव पर छोटे से क्रॉस का चिह्न हो तो जातक की पत्नी (या पति) की सहसा बीमारी से या किसी दुर्घटना से मृत्यु हो जायगी। किन्तु यदि इस घुमाव पर कोई चिह्न न हो और घुमाव भी लम्बा और क्रमश हो तो पत्नी (या पति) की लम्बे अरसे की बीमारी या अस्वास्थ्य के बाद मृत्यु होगी।

(१४) यदि विवाह-रेखा द्विशाखा युक्त हो जाये तो पति-पत्नी मे कलह का लक्षण है। ये दोनो शाखाये जितनी अधिक चौडी (एक-दूसरे से दूर) होगी उतना ही अधिक कलह या प्रेम की कमी समझनी चाहिये। यह विच्छेद या कलह जातक की गलती से नही वल्कि दूसरे फरीक की गलती से होता है। यदि विवाह-रेखा अन्त मे दो शाखाओ मे विभाजित हो जाय और घूम कर हाथ के मध्य भाग की दिशा मे जावे तो विवाह-विच्छेद होता है। यदि करतल के मध्य भाग

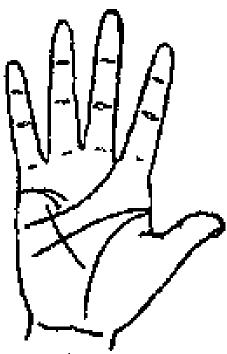

चित्र सं० ९०

से कोई रेखा आकर इस द्विशाखायुक्त विवाह-रेखा से योग करती हो या उसके पास तक आती हो तो इस लक्षण की पुष्टि होती है। (देखिये चित्र न० ९०)

(१५) यदि विवाह-रेखा मे छोटे-छोटे अनेक द्वीप हो और उस रेखा से निकलकर अति सूक्ष्म रेखाये नीचे की ओर जाती हो तो अत्यधिक अशुभ लक्षण है। ऐसे व्यक्ति को कभी वैवाहिक सुख नही प्राप्त हो सकता। इस कारण उसे विवाह नही करना चाहिये।

(१६) यदि विवाह-रेखा दो खण्डो मे विभाजित हो तो वैवाहिक जीवन मे घोर संकट उपस्थित होगा। रेखा के टूटी हुई होने से विवाह-विच्छेद भी हो सकता है। किन्तु यदि दोनो खण्ड एक-दूसरे के ऊपर आ जावे तो फिर मेल भी हो जायगा।

(१७) यदि विवाह-रेखा मे द्वीप-चिह्न हो और अन्त मे जाकर दो शाखायुक्त हो जाये तो उपर्युक्त (१५) मे जो फल बताया गया है वही होता है।

(१८) यदि विवाह-रेखा मे से एक शाखा निकल कर सूर्य-क्षेत्र पर पहुँचे और सूर्य-रेखा मे ऊपर की ओर जाकर मिल जाय तो ऐसे व्यक्ति का किसी उच्च और अत्यन्त प्रतिष्ठित कुल मे विवाह होता है।

(१९) किन्तु यदि विवाह-रेखा से कोई रेखा निकलकर या विवाह-रेखा स्वय घूमकर नीचे की ओर जावे और सूर्य-रेखा को काटे तो यह बहुत अशुभ लक्षण है। (देखिये चित्र न० ९१) ऐसा व्यक्ति विवाह के कारण अपना उच्च पद खो बैठता है। कहा जाता है कि ड्यूक आव विन्डसर (सम्राट् एडवर्ड अष्टम) के हाथ मे इसी प्रकार

की रेखा है और इसको देखकर प्रसिद्ध हस्तपरीक्षक कीरो ने बरसो पहले यह बता दिया था कि भावी सम्राट् किसी ऐसी स्त्री से विवाह करेंगे जिस के कारण उन्हे राज्यच्युत होना पड़ेगा।

(२०) यदि विवाह-रेखा के बाद उसके ही समानान्तर रेखा हो तो विवाह के उपरान्त जातक का किसी अन्य स्त्री से प्रेम-सम्बन्ध होता है।

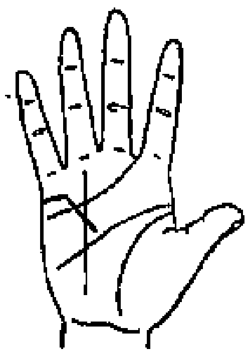

चित्र नं० ६१

विवाह-रेखा पर चिह्न

विवाह-रेखा पर कुछ चिह्नो का फल तो ऊपर बताया जा चुका है। इसके अतिरिक्त यदि शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होकर कोई रेखा विवाह-रेखा तक आवे या उसे काटे तो इसका फलादेश उस (प्रभाव-रेखा के) प्रकरण मे दिया गया है, किन्तु कुछ अन्य चिह्नो का फल नीचे दिया जाता है—

(१) यदि विवाह-रेखा पर क्रॉस का चिह्न हो तो अशुभ लक्षण है। वैवाहिक जीवन मे काफी क्लेश और बाधा का सामना करना पड़ेगा।

(२) यदि विवाह-रेखा सूर्य-क्षेत्र तक जाये और वहां किसी तारे के चिह्न से योग करे तो जातक का विवाह किसी सुविख्यात और सुप्रतिष्ठित व्यक्ति से होता है।

(३) यदि विवाह-रेखा अन्त मे त्रिशूलाकृति (तीन शाखायुक्त) हो जाये तो भी यही समझना चाहिए कि पति-पत्नी मे प्रेम नही रहा। चाहे अदालत के जरिये विच्छेद न हो किन्तु गार्हस्थ्य जीवन सुखमय नही होता।

(४) यदि विवाह्-रेखा बुध-क्षेत्र पर घूमकर अंकुश की भाँति हो जाये तो भी प्रेम नष्ट हो जाता है।

(५) यदि विवाह्-रेखा पर बिन्दु चिह्न हो तो अशुभ लक्षण है, इससे बाधा या विघ्न सूचित होता है। यदि इस बिन्दु के बाद विवाह्-रेखा क्रमश क्षीण होती जावे तो समझना चाहिये कि उस विघ्न के कारण धीरे-धीरे प्रेम भी नष्ट हो जावेगा। यदि विवाह्-रेखा पर काला दाग हो तो जातक विधवा या विधुर होता है।

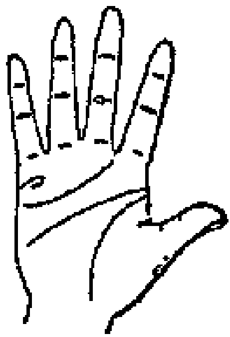

चित्र सं० ९२

(६) यदि विवाह्-रेखा किसी छोटी आडी रेखा से कटी हो और वहाँ से कोई रेखा आकर शीर्ष-रेखा से योग करती हो और शीर्ष-रेखा मे उस स्थान पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक के वैवाहिक जीवन मे बाधा पहुँचने के कारण उसे मस्तिष्क-विकार होगा।

यदि इस लक्षण मे शीर्ष-रेखा पर द्वीप के स्थान मे क्रॉस, छोटी आडी रेखा या बिन्दु-चिह्न हो तो भी यही फल बताना चाहिये।

(७) शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होकर आने वाली प्रभाव रेखाओ से यदि विवाह्-रेखा कटी हो या विवाह्-रेखा बुध-क्षेत्र पर कुछ दूर सीधी आये फिर घूमकर लम्बी, शुक्र-क्षेत्र पर चली जावे तो यह सूचित होता है कि जातक जिस से प्रेम करता था और विवाह् करना चाहता था उससे उसके सम्बन्धियो ने विवाह् नही होने दिया और इस कारण उसकी अभिलाषा मे बाधा पडी या यह विवाह्-रेखा लम्बी और गहरी हो तो यह फल समझना चाहिये कि सम्बन्धियो के हस्तक्षेप के कारण विवाह्-सुख मे बाधा पडी। जिस स्थान

पर यह प्रभाव-रेखा विवाह-रेखा को काटती हो उस स्थान पर विवाह-रेखा पर अशुभ लक्षण (द्वीप, द्विशाखायुक्त होना आदि) हो तो विशेष अनिष्ट परिणाम समझना चाहिये।

विवाह-रेखा का अन्य लक्षणों से सामञ्जस्य

वैसे तो सभी लक्षणो का परस्पर सामञ्जस्य करना आवश्यक है किन्तु विवाह-रेखा का जब तक अन्य लक्षणो से पूरा मिलान नही कर लिया जावेगा तब तक वैवाहिक जीवन की यथार्थता का पता नही लगेगा। मनुष्य का वैवाहिक जीवन बहुत-कुछ वह स्वय निर्माण करता है। जिसकी शीर्ष-रेखा बिलकुल सीधी और बलवान होगी उसके दिमाग मे इश्क के खयालो के लिये जगह कहाँ ? जिस की हृदय-रेखा हथेली मे काफी नीची और सीधी हो तथा शनि-क्षेत्र के नीचे तक ही आकर रुक जावे वह प्रेम के तूफान मे कैसे बह सकता है ? जिसकी हथेली और उगलियो का अग्र भाग चौकोर हो वह अपने समय को सासारिक उन्नति के उपयोग मे लगावेगा। पत्नी या प्रेयसी की इच्छानुसार वह अपना समय कैसे व्यतीत करेगा ? जिसके अगुष्ठ का प्रथम पर्व बडा और बलवान हो वह किसी दूसरे के हाथ मे अपनी नकेल देकर उसकी इच्छानुसार कैसे चलेगा ? जिसके उगलियो के बीच मे छिद्र ही नही है और धन खर्च करना जिसे अच्छा ही नही लगता वह कैसे उपहारो द्वारा अपनी प्रेयसी का मन प्रसन्न करेगा ?

इस कारण, हाथ के सब लक्षणो के साथ विवाह-रेखा का मिलान कर अन्तिम निर्णय पर पहुँचना चाहिये।

तृतीय खण्ड

१७वां प्रकरण

अन्य रेखायें तथा हाथ पर विविध चिह्न

पिछले खण्ड मे सात प्रधान रेखाओ का विस्तृत परिचय दिया जा चुका है। अब इस खण्ड मे अन्य रेखाओ तथा हथेली एव उगलियो पर विविध चिह्न, उनके लक्षण तथा फल दिये जाते है।

सत्रहवे प्रकरण में निम्नलिखित रेखाओ का वर्णन दिया गया है—

(क) मगल-रेखा

(ख) शुक्र-क्षेत्र से आने वाली प्रभाव रेखाएँ

(ग) शुक्र-मेखला

(घ) शनि-मुद्रिका

(ङ) बृहस्पति-मुद्रिका।

अन्य रेखाओ यथा यात्रा-रेखा, भ्रातृ-रेखा, सतान-रेखा आदि का वर्णन अठारहवें प्रकरण मे दिया गया है।

उगलियो तथा ग्रह-क्षेत्रो पर विविध चिह्नो का फल उन्नीसवें और बीसवें प्रकरण मे दिया गया है।

मंगल-रेखा

मगल के द्वितीय क्षेत्र से आरम्भ होकर यह रेखा जीवन-रेखा की भाँति गोलाई लिये प्राय जीवन-रेखा के समानान्तर चलती है।

यह एक प्रकार से जीवन-रेखा की सहायिका रेखा है और जीवन-रेखा को बल प्रदान करती है। जिनके हाथ मे जीवन-रेखा सुन्दर और पुष्ट न हो या दोषयुक्त हो उनके हाथ मे यदि मगल-रेखा लम्बी और पुष्ट हो तो जीवन-रेखा के दोष की निवृत्ति होती है और उनका स्वास्थ्य अच्छा ही रहता है। यदि जीवन-रेखा किसी स्थान पर खण्डित भी हो

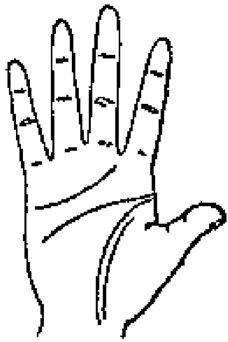

चित्र नं० ६३

और उसके पीछे मगल-रेखा सुन्दर, अखण्डित, पुष्ट हो तो ऐसा व्यक्ति बीमार होने पर भी मृत्यु से बच जाता है।

यदि जीवन-रेखा सुन्दर और पुष्ट हो और साथ ही मगल-रेखा भी बलयुक्त हो तो ऐसे व्यक्ति मे प्राण-शक्ति बहुत अधिक मात्रा मे होती है। उसमे उत्साह, सहनशक्ति, परिश्रम करने का गुण और बल-प्रयोग का स्वभाव अधिक मात्रा मे होता है। ऐसे लोग निरन्तर कुछ-न-कुछ कार्य करते ही रहते है। प्राणशक्ति का आधिक्य होने से निर्बलता या आलस्य या अकर्मण्यता नही होती और बिना किसी कार्य के वे निकम्मे नही बैठ सकते।

ऐसे व्यक्तियो पर यदि बृहस्पति का प्रभाव अधिक हो तो खाने-पीने के बहुत शौकीन होते है। यदि मगल का प्रभाव अधिक होगा तो खूब खाने-पीने के अतिरिक्त सैनिक-कार्य या खेल-कूद या अन्य ऐसा कार्य विशेष करेगे जिसमे परिश्रम विशेष पडे। इनमे सहन-शक्ति और परिश्रमशीलता विशेष होती है।

मंगल-रेखा की लम्बाई

यदि मगल-रेखा शुरू से आखीर तक जीवन-रेखा के साथ-साथ

चले-तो समस्त जीवन-भर प्राणशक्ति बहुतायत से होगी। यदि लगातार न हो तो जीवन-रेखा के जिस भाग के पीछे सुन्दर और पुष्ट मगल-रेखा होगी, जीवन के उस भाग मे प्राणशक्ति विशेष मात्रा मे होगी।

मंगल-रेखा से निकलने वाली रेखायें

यदि मगल-रेखा से कोई रेखा निकलकर जीवन-रेखा को काटती हुई ऊपर की ओर जावे तो यह परिश्रम के फलस्वरूप भाग्योदय का लक्षण है। यदि ऐसी ऊर्ध्वगामी रेखा जाकर शीर्ष-रेखा मे मिल जावे तो यह प्रकट होता है कि प्राणशक्ति जातक के मस्तिष्क (दिमाग) को बल पहुँचाती है। यदि यह रेखा जाकर भाग्य-रेखा मे मिले तो भाग्य-वृद्धि सूचित होती है।

मगल-रेखा से निकलकर जो रेखा शीर्ष-रेखा या भाग्य-रेखा मे मिले केवल उन्हे शुभ फलदायक समझना चाहिये, यदि इन रेखाओ को काटें तो अशुभ लक्षण है क्योकि काटने वाली रेखाएँ सदैव अशुभ परिणाम सूचित करती है।

मंगल-रेखा से निकली रेखाओं का अन्य लक्षणों के सहयोग से फल

यदि शुक्र-क्षेत्र बहुत उन्नत हो और जीवन-रेखा तथा मगल-रेखा दोनो पुष्ट और बलवान हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कामुक होगा और भोग-विलास बहुत करेगा।

(१) यदि ऐसे हाथ मे मगल-रेखा से कोई रेखा निकलकर भाग्य-रेखा या सूर्य-रेखा को काटे तो अत्यन्त भोग-विलास की प्रवृत्ति के कारण भाग्य-हानि, यश-हानि आदि अशुभ फल होते है। यदि

ऐसी स्थिति मे सूर्य-रेखा पर बिन्दु-चिह्न, क्रॉस या कोई आडी अर्गला रेखा हो तो उपर्युक्त लक्षण की पुष्टि होती है।

(२) यदि ऐसे हाथ मे मगल-रेखा से निकली हुई रेखा विवाह या प्रेम-रेखा को काटे तो जातक के भोग-विलास (अन्यथा सम्बन्ध) के कारण वैवाहिक सुख मे बाधा होगी। यदि विवाह-रेखा भी दो शाखायुक्त हो तो उपर्युक्त लक्षण की पुष्टि होती है।

(३) यदि मगल-रेखा से निकली हुई रेखा चन्द्र-क्षेत्र पर आवे तो अशुभ लक्षण है। ऐसा व्यक्ति भोगी, विलासी, चचल प्रकृति का बहुत घूमने वाला आवारा, गाने-बजाने का शौकीन होता है। यदि ऐसी चन्द्र-क्षेत्र पर आई हुई रेखा के अन्त पर बिन्दु, अर्गला-रेखा, क्रॉस या तारे का चिह्न हो तो अत्यन्त भोग-विलास के कारण शारीरक शक्ति का ह्रास हो जाने पर मनुष्य सहसा मर जाता है। यदि जीवन-रेखा के अन्त पर भी 'क्रॉस' या 'तारे' का चिह्न हो तो उपर्युक्त अशुभ लक्षण की पुष्टि होती है।

(४) यदि शीर्ष-रेखा बीच मे दोषयुक्त हो जावे तो समझना चाहिये कि इन बुराइयो के फलस्वरूप दिमाग कमजोर, रोगयुक्त या निकम्मा हो गया है। यदि शीर्ष-रेखा पर 'तारे' का चिह्न हो तो उपर्युक्त लक्षण होने से मनुष्य पागल हो जाता है।

मंगल-रेखा और जीवन-रेखा का तुलनात्मक अध्ययन

यदि मगल-रेखा जीवन-रेखा की अपेक्षा विशेष पुष्ट और बल-युक्त हो तो समझना चाहिये कि जातक को देखने से या जीवन-रेखा को देखने से जो बाहरी शक्ति मालूम होती है उसकी अपेक्षा भीतरी प्राणशक्ति विशेष है और जीवन-रेखा की भाँति मगल-रेखा का भी गम्भीर अध्ययन करना चाहिये। किन्तु यदि जीवन-रेखा ही

विशेष पुष्ट और बलयुक्त हो तो मुख्य (जीवन) रेखा की सहायिका होती है।

शुक्र-क्षेत्र की प्रभाव या चिन्ता रेखाएँ

वैसे तो हाथ मे सभी रेखाएँ अपना प्रभाव रखती हैं—कुछ कम कुछ अधिक, किन्तु शुक्र-क्षेत्र से जो रेखाएँ उठकर करतल की ओर आती हैं या अन्य किन्ही प्रधान रेखा या रेखाओ से योग करती हैं वे जातक के जीवन को विशेष रूप से प्रभावित करती हैं या चिन्ता का कारण उपस्थित करती हैं, इस कारण उन्हे प्रभाव-रेखा या चिन्ता-रेखा भी कहते है। जीवन-रेखा, शीर्ष-रेखा, हृदय-रेखा ये सर्वप्रधान तीन रेखाएँ है। इनके बाद भाग्य-रेखा, सूर्य-रेखा तथा बुध-रेखा हैं—ये तीनो ही नीचे से ऊपर को जाने वाली रेखाएँ हैं। इन छ रेखाओ के अतिरिक्त विवाह-रेखा, आयु-रेखा सतान-रेखा, मगल-रेखा, मणिबन्ध-रेखा आदि अन्य रेखाएँ हैं—परन्तु शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होने वाली रेखाओ का प्रभाव जातक पर बहुत अधिक होता है, इस का कारण यह है कि अगुष्ठ सब उगलियों मे प्रधान है और अगुष्ठ के नीचे वाले स्थान (शुक्र-क्षेत्र) से ये रेखाएँ प्रारम्भ होती है। शुक्र-क्षेत्र बहुत बडा होने के कारण एक नही अनेक रेखाएँ इस स्थान पर होती है—कुछ तो भीतर की ओर जीवन-रेखा के प्राय समानान्तर होती हैं और शुक्र-क्षेत्र के बाहर नही जाती, किन्तु कुछ अन्य रेखाएँ शुक्र-क्षेत्र से आडी निकलकर जीवन-रेखा, शीर्ष-रेखा, हृदय-रेखा, भाग्य-रेखा सूर्य-रेखा, विवाह-रेखा—इनमे से एक या कई को काटती हुई—हाथ मे तिरछी स्थिति मे रहती है—इन सब रेखाओ का नाम 'शुक्र-रेखा' रखना विशेष उपयुक्त है—किन्तु सैकडो वर्ष से इन्हें 'प्रभाव'-

रेखा या चिन्ता-रेखा यह नाम दिया गया है। इस कारण प्रस्तुत पुस्तक मे भी इनका इन्ही नाम से वर्णन किया जावेगा। यदि किसी हाथ मे इन रेखाओ का जाल-सा हो अर्थात् २०-२५-३० रेखा हो तो उनमे से-२-४ जो मोटी और स्पष्ट हो—उनको चुनकर—प्रत्येक का अध्ययन करना चाहिये। यदि कोई स्पष्ट न हो, सब बडी सूक्ष्म हो तो यह स्नायविक दुर्बलता का लक्षण है—यह समझकर इन रेखाओ का विचार छोड देना चाहिये।

'मगल-रेखा' भी एक प्रकार से—बहुत सी शुक्र-रेखा या प्रभाव-रेखाओ मे से एक है किन्तु जीवन-रेखा के बिलकुल समीप और प्राय समानान्तर होने से यह जीवन-रेखा की 'सहोदरा' (बहन) मानी गई है। दूसरी बात यह है कि प्राय मगल-रेखा, मगल के द्वितीय क्षेत्र से प्रारम्भ होती है इस कारण इसका नाम मगल-रेखा रखा गया है। किन्तु मगल-रेखा के अतिरिक्त जो उसके समानान्तर—कुछ गोलाई लिये हुए—शुक्र-क्षेत्र पर अन्य रेखाएँ होती है उन सब को प्रभाव-रेखा ही कहते है। (देखिये-चित्र न० ६४) इस प्रकार प्रभाव रेखाओ को निम्नलिखित वर्गों मे विभाजित कर सकते है—

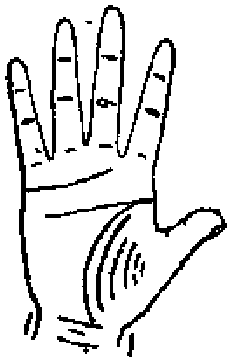

चित्र नं० ६४

(१) शुक्र-क्षेत्र पर—जीवन-रेखा के भीतर की ओर—जीवन-रेखा या मगल-रेखा के समानान्तर रेखाएँ।

(२) शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर जीवन-रेखा को काटकर करतल-मध्य की ओर जाने वाली तिरछी रेखाएँ।

इन दोनो वर्गो मे जो शुक्र-क्षेत्र पर ही मंगल-रेखा की समानान्तर रेखाएँ होती हैं वे जातक पर किसी स्त्री या स्त्रियो का प्रभाव प्रकट करती हैं। यदि किसी स्त्री के हाथ में ये रेखा हो तो किसी पुरुष या पुरुषो का प्रभाव समझना चाहिये। जितनी लम्बी और जितनी गहरी ये रेखा हो उतना ही अधिक प्रभाव समझना चाहिये।

यदि शुक्र-क्षेत्र के काफी नीचे (मणिबन्ध की ओर) से कोई प्रभाव-रेखा आरम्भ हो जीवन-रेखा के साथ-साथ (समानान्तर) चले और मंगल के द्वितीय क्षेत्र को चली जावे तो यह प्रकट होता है कि जातक पर किसी स्त्री या पुरुष का प्रभाव रहा था परन्तु वह अन्य व्यक्ति धीरे-धीरे जातक से किनाराकशी (तटस्थता) कर लेगा।

तिरछी प्रभाव रेखाएँ

ऊपर जो तिरछी प्रभाव या चिन्ता-रेखाएँ बताई गई हैं वे कुछ तो बहुत छोटी होती है और कुछ बहुत लम्बी। इसके अतिरिक्त कुछ रेखाओ के आदि या अन्त मे कोई चिह्न (यथा त्रिकोण, क्रॉस, तारा) नही होता, परन्तु किसी के प्रारम्भ मे कोई चिह्न होता है किसी के अन्त मे। इन विविध चिह्नो के आदि या अन्त मे रहने के कारण फलादेश अलग-अलग हो जाता है। इस कारण इनका अच्छी प्रकार अध्ययन करने के लिए इन्हे पाँच वर्गो मे विभाजित किया जाता है—

(क) छोटी रेखाएँ जो किसी रेखा को न काटे और भाग्य-रेखा तक न पहुँचे।

(ख) लम्बी रेखाएँ जो कई रेखाओ को काटती हुई किसी ग्रह-क्षेत्र पर जाकर समाप्त हो या अन्य रेखाओ को काटे या उन्ही मे विलीन हो जावे।

(ग) जिसके प्रारम्भ में चिह्न हो।

(घ) जिसके अन्त में चिह्न हो।

(ङ) जिसके आदि और अन्त दोनो स्थानो पर कोई चिह्न हो।

(क) छोटी रेखाएँ

अब उपर्युक्त प्रत्येक प्रकार की रेखाओ का वर्णन किया जाता है—

(१) यदि जीवन-रेखा से प्रारम्भ हो कर कोई रेखा मगल के द्वितीय क्षेत्र पर आवे तो यह रेखा जीवन-रेखा से घिरे हुए शुक्र-क्षेत्र पर होगी। यदि ऐसी रेखा किसी स्त्री के हाथ मे हो तो जीवन के प्रारम्भिक भाग मे किसी गुप्त प्रेम के कारण घोर दु ख होगा।

(२) यदि उपर्युक्त दृष्टात मे एक की बजाय दो-तीन छोटी-छोटी रेखाएँ जीवन-रेखा से प्रारम्भ होकर—आगे जाकर परस्पर मिलकर एक रेखा हो जावे और मगल के द्वितीय क्षेत्र पर ऊपर की भाति जावे और ऐसी रेखा यदि स्त्री के हाथ मे हो तो उसका गुप्त प्रेमी बहुत कामुक होगा और उसके द्वारा निरन्तर पीडा पहुँचाई जावेगी।

(३) शुक्र-क्षेत्र या मगल के द्वितीय क्षेत्र से जो रेखा प्रारम्भ होकर केवल जीवन-रेखा को काटे—छोटी होने के कारण शीर्ष-रेखा या भाग्य-रेखा तक न पहुँचे तो यह समझना चाहिये कि जातक के घर वाले—माता, पिता, भाई तथा अन्य रिश्तेदार उसके जीवन मे बहुत दस्तन्दाजी (हस्तक्षेप) करते रहेगे जिसके कारण उसे परेशानी अनुभव होगी।

यदि ऐसी बहुत सी पतली-पतली रेखाएँ हो तो यह सूचित होता है कि जातक मे स्नायविक दुर्बलता है और वह छोटी-छोटी बातो की अकारण चिंता करता है।

(४) यदि अंगुष्ठ के द्वितीय पोरवे से प्रारम्भ होकर कोई गहरी रेखा जीवन-रेखा को काटे और जीवन-रेखा को काट कर, कुछ दूर ही पर समाप्त हो जावे तो किसी प्रियजन की मृत्यु या प्रियजन के विश्वासघात (उसके अन्य को प्रेम करने) के कारण घोर संताप होता है।

(५) यदि रेखा उपर्युक्त (४) प्रकार की हो किन्तु अंगुष्ठ के द्वितीय पर्व की बजाय प्रथम पर्व से प्रारम्भ हो तो किसी शस्त्र से जातक की मृत्यु होती है।

(६) यदि कोई अर्धवृत्त सदृश छोटी-सी रेखा जीवन-रेखा को काटे तो अचानक भयंकर रोग या मृत्यु सूचित होती है।

(ख) बड़ी रेखाएँ

अब शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होने वाली उन बड़ी तिरछी रेखाओं का वर्णन किया जाता है जो जीवन-रेखा को काट कर—आगे बढ़कर किसी ग्रह-क्षेत्र पर जाती हैं या अन्य रेखा या रेखाओं को भी काटती हैं—

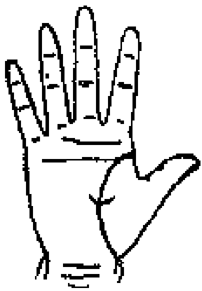

चित्र नं० ६५

(१) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर कोई रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई बृहस्पति के क्षेत्र पर पहुँचे तो जातक में बहुत अभिमान होता है और उसमें महत्त्वाकांक्षा भी बहुत अधिक होती है। अन्य लक्षण अच्छे हों तो उन्नति भी विशेष होती है।

यदि इस रेखा के अन्त पर (बृहस्पति-क्षेत्र पर) तारे का चिह्न हो तो सफलता प्रकट होती है। किन्तु यदि वहाँ इसको कोई छोटी सी आड़ी-रेखा काटे तो असफलता का लक्षण है, यदि 'क्रॉस'

चिह्न हो तो और भी खराबी होती है।

(२) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हो चिंता-रेखा जीवन-रेखा आदि को काटती हुई शनि-क्षेत्र पर पहुँचे तो किसी जानवर या मोटर से टकराने की या इसी प्रकार की दुर्घटना होती है। यदि शनि-क्षेत्र पर पहुँचकर इस रेखा की दो शाखा हो जावे (एक प्रधान रेखा—एक शाखा) तो उपर्युक्त दुर्घटना से मृत्यु हो जाती है या दाम्पत्य जीवन कलहमय होता है।

(३) यदि उपर्युक्त रेखा (२) मध्यमा उगली के तृतीय पर्व पर पहुँचे तो ऐसी रेखा वाली स्त्री को गर्भाशय के रोग रहते हैं या प्रसव मे बहुत कष्ट होता है।

यदि शीर्ष-रेखा तथा स्वास्थ्य-रेखा के योग होने के स्थान पर तारे का चिह्न हो और चन्द्र-क्षेत्र पर जाल की तरह अनेक पतली रेखाएँ हो तो उपर्युक्त फल की पुष्टि होती है।

(४) यदि उपर्युक्त रेखा (२) करीब-करीब भाग्य-रेखा के समानान्तर हो तो इसे भाग्य-रेखा की सहायिका रेखा समझना चाहिये—यह भाग्य-वृद्धि सूचित करती है। मित्रो या सम्बन्धियो का सहयोग प्राप्त होता है।

(५) यदि जीवन-रेखा से प्रारम्भ होकर यह रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर जावे और वहाँ पहुँचकर एकदम घूम कर शनि-क्षेत्र पर पहुँच जावे तो धार्मिकता की ओर प्रवृत्ति होती है—ऐसी धार्मिकता मे दुनियादारी छिपी रहती है।

(६) यदि शुक्र-क्षेत्र से चिंता-रेखा प्रारम्भ हो कर जीवन-रेखा को काटती हुई, जीवन-रेखा से निकली किसी ऊर्ध्वगामी छोटी रेखा को काटती हुई, मुड़कर शनि-क्षेत्र पर पहुँचे तो पति-पत्नी

में बहुत कलह रहता है या विवाह-विच्छेद हो जाता है। (देखिये चित्र न० ६६)

(७) यदि उपर्युक्त (६) रेखा बुध-क्षेत्र पर पहुँचे या विवाह-रेखा को काटे तो भी यही फल होगा ।

(८) यदि शुक्र-क्षेत्र से रेखा प्रारम्भ हो—सीधी (लहरदार नहीं) और पूर्ण स्पष्ट एकदम सूर्य-क्षेत्र पर आवे तो मित्रों या

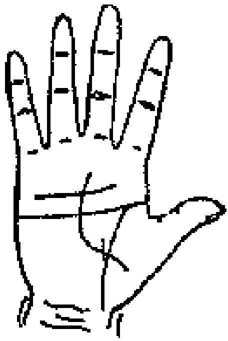

चित्र न० ६६

कुटम्बियों की सहायता से जातक को यश तथा ख्याति प्राप्त होती है।

(९) यदि उपर्युक्त रेखा (८) अस्पष्ट या टूटी हो या सीधी न हो—बल्कि लहरदार हो—तो जातक को यश तथा ख्याति मिलने मे बाधा होती है—किस दोष के कारण ? यह अन्य रेखाओं या लक्षणों से विचार करना चाहिये। ऐसा जातक बन्धुओं और मित्रों से सहायता प्राप्त करने पर भी सफलता या यश प्राप्त नहीं कर सकेगा ।

(१०) यदि उपर्युक्त (८) रेखा सूर्य-क्षेत्र की बजाय बुध-क्षेत्र पर आवे तो व्यापार या विज्ञान-क्षेत्र मे अत्यन्त उन्नति और लाभ प्रकट होता है। (चिटली उंगली का द्वितीय पर्व बड़ा होने से व्यापार मे, या प्रथम पर्व बड़ा होने से विद्या-सम्बन्धी विशिष्टता) इसमे मित्र तथा सम्बन्धी सहायक होंगे। इस रेखा के एकदम सीधे (लहरदार नहीं), स्पष्ट और अन्य दोषरहित होने से शुभ फल होता है।

(११) यदि उपर्युक्त (१०) रेखा टूटी, अस्पष्ट या लहरदार हो तो असफलता या विघ्न-बाधा का लक्षण है।

(१२) यदि शुक्र-क्षेत्र से चिंता-रेखा प्रारम्भ होकर जीवन, भाग्य, शीर्ष तथा सूर्य-रेखाओ को काटती हुई मगल के प्रथम क्षेत्र पर आवे तो सिर मे चोट का आघात होता है (सम्भवत किसी मित्र या सम्बन्धी द्वारा), किस वर्ष मे ?—वह जीवन-रेखा को जहाँ काटती हो उस स्थान से अनुमान करना चाहिये। किन्तु यदि उपर्युक्त मगल-क्षेत्र अत्यधिक उन्नत हो या उस पर बहुत-सी रेखाएँ हो तो जातक क्रोध मे स्वय दूसरे पर प्रहार करता है।

(१३) यदि शुक्र-क्षेत्र से चिंता-रेखा प्रारम्भ हो, जीवन तथा भाग्य-रेखाओ को काटती हुई चन्द्र-क्षेत्र पर आवे तो ऐसे पुरुष के कार-बार (या नौकरी मे) स्त्री या स्त्रियो के अनुचित हस्तक्षेप के कारण दुर्भाग्य उपस्थित होता है। यदि स्त्री के हाथ मे हो तो पुरुषो द्वारा हस्तक्षेप के कारण दुर्भाग्य होता है।

(१४) यदि शुक्र-रेखा प्रारम्भ होकर भाग्य-रेखा को काटकर वही समाप्त हो जावे तो सम्बन्धी या मित्रो द्वारा भाग्य मे बाधा। कई बार यह ऐसे विवाह का भी लक्षण होता है जिसके कारण जातक के भाग्य की गति रुक जाती है या बिगड जाती है।

(१५) शुक्र-क्षेत्र से रेखा प्रारम्भ हो, जीवन तथा भाग्य-रेखाओ को काटकर कुछ जरा सी आगे बढ कर समाप्त हो जावे तो जातक के मित्र या सम्बन्धी अनुचित हस्तक्षेप द्वारा जातक के रोजगार मे बाधा डालेगे (उदाहरण के लिए जातक नौकरी कर अपना भाग्योदय करता हो तो नौकरी छुडवा कर उसे व्यापार मे लगा देना)।

(१६) शुक्र-क्षेत्र से रेखा प्रारम्भ हो, जीवन-रेखा को काटती हुई शीर्ष-रेखा को काट कर वही समाप्त हो जावे तो जातक के स्वतन्त्र विचार मे सम्बन्धियो द्वारा अनुचित हस्तक्षेप।

(१७) यदि उपर्युक्त (१६) रेखा, शीर्ष-रेखा को काट कर कुछ आगे बढ जावे तो मस्तिष्क-विकार या सम्बन्धियो के हस्तक्षेप के कारण परेशानी।

(१८) यदि उपर्युक्त (१६) रेखा, आगे बढकर हृदय-रेखा को काटे और वहाँ समाप्त हो तो जातक के मित्रो या सम्बन्धियो के विश्वासघात या दुर्व्यवहार के कारण हृद्रोग। बहुत से परिवारो के एक या अनेक स्त्री या पुरुष ऐसे कलहकारी होते है कि झगडा करके जातक को इतना परेशान कर देते है कि हृदय-रोग हो जाता है।

(१९) यदि उपर्युक्त (१८) रेखा, हृदय-रेखा को कुछ काटकर आगे बढे तो समझना चाहिये कि जातक जहाँ स्वय अपनी मर्जी से विवाह करना चाहता है वहाँ उसके प्रिय व्यक्ति से विवाह करने मे जातक के सम्बन्धी बाधा डालेंगे।

(२०) यदि उपर्युक्त (१९) रेखा, जीवन-रेखा से निकली हुई ऊर्ध्वगामी किसी छोटी रेखा को काटे तथा शीर्ष एव हृदय-रेखाओ को भी काटे तो वैवाहिक जीवन परम अशान्तिमय, कलहपूर्ण होगा तथा सम्बन्ध-विच्छेद की नौबत आवेगी। यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हुई प्रभाव-रेखा विवाह-रेखा को भी काटे तो निश्चय विवाह-विच्छेद होगा।

(२१) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हुई प्रभाव या चिता-रेखा हृदय-रेखा तक पहुँचते-पहुँचते दो शाखायुक्त हो जावे (एक प्रधान-

रेखा—एक शाखा) और दोनो शाखाएँ हृदय-रेखा को काटे तो विवाह-विच्छेद का लक्षण है।

(२२) यदि उपर्युक्त (२१) रेखा, जहाँ भाग्य-रेखा को काटे वहाँ भाग्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न भी हो तो किसी अनुचित गुप्त प्रेम-सम्बन्ध के कारण बदनामी तथा विवाह-विच्छेद।

(२३) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हुई प्रभाव-रेखा, शीर्ष-रेखा तथा हृदय-रेखा को काटकर कुछ दूर आगे समाप्त हो—और इस प्रभाव-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो—तो जातक का किसी से गुप्त प्रेम होता है जिसका बहुत भयकर परिणाम होता है।

(२४) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर प्रभाव-रेखा आकर सूर्य-रेखा मे विलीन हो जावे तो सम्बन्धियो से सहायता के कारण सफलता, यश तथा ख्याति प्राप्त होती है।

(२५) जहाँ से जीवन-रेखा प्रारम्भ होती है—उसके भीतरी भाग (द्वितीय मगल-क्षेत्र) से प्रारम्भ होकर कोई रेखा सूर्य-रेखा को काटे तो जातक के माता-पिता की बदनामी या उनको अत्यधिक घाटा होने के कारण जातक के बचपन मे धन-हानि समझनी चाहिये।

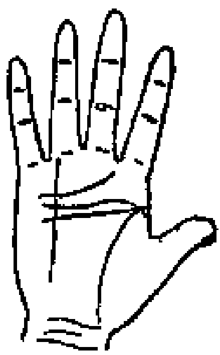

चित्र नं० ६७

(२६) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होने वाली रेखा सूर्य-रेखा को काटे तो यह समझे कि सम्बन्धियो के हस्तक्षेप के कारण जातक जैसा सफल अपना जीवन बनाना चाहता था वैसा नही बना सकेगा। यदि हाथ मे अन्य अशुभ लक्षण हो तो जिस अवस्था पर सूर्य-रेखा कटी हो उस अवस्था पर बदनामी और मान-हानि।

(२७) यदि उपर्युक्त (२६) रेखा, जीवन-रेखा से निकली हुई ऊर्ध्वगामी किसी छोटी रेखा को काटती हुई आगे बढ़कर सूर्य-रेखा पर जाकर समाप्त हो जावे तो जातक किसी सम्बन्धी से मुकदमा जीतता है। किन्तु यदि सूर्य-रेखा को पार कर प्रभाव-रेखा आगे बढ़ जावे तो मुकदमा हार जाता है।

(२८) यदि प्रभाव-रेखा विवाह-रेखा को काटे तो तलाक या विवाह-विच्छेद के मुकदमे में जातक को मुद्दायला बनना पड़ता है।

(२९) यदि उपर्युक्त (२८) रेखा द्वीपयुक्त हो तो विवाह-विच्छेद जातक के किसी अन्य व्यक्ति के साथ गुप्त प्रेम के कारण होता है, डिगरी जातक के खिलाफ होती है।

(३०) यदि उपर्युक्त (२८) रेखा, जीवन-रेखा से निकली हुई ऊर्ध्वगामी किसी छोटी रेखा को काटती हुई आगे बढ़कर दो शाखायुक्त विवाह-रेखा में जाकर विलीन हो जावे तो विवाह-विच्छेद अवश्य होता है, जातक के हक में डिग्री होती है।

(ग) प्रभाव रेखाएँ जिनके प्रारम्भ में कोई चिह्न हो

(१) बिन्दु (क) यदि शुक्र-क्षेत्र पर कोई बिन्दु हो और उससे प्रारम्भ होकर कोई रेखा जीवन-रेखा को काटे तथा जीवन-रेखा से निकली हुई ऊपर को जाती हुई किसी रेखा को काटे तथा (ख) बृहस्पति के क्षेत्र पर 'क्रॉस' चिह्न स्पष्ट हो तो जातक का किसी स्त्री से प्रेम हो जाता है, उससे विवाह भी होता है किन्तु बाद में विवाह-विच्छेद होता है।

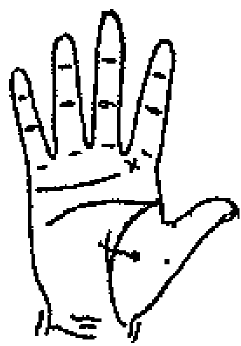

चित्र सं० ९८

(२) तारे का चिह्न—यदि शुक्र-क्षेत्र पर कोई तारे का चिह्न हो और वहाँ से प्रारम्भ होकर कोई प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटे और जरा सी आगे बढ़कर समाप्त हो जावे तो जीवन-रेखा को जिस अवस्था पर काटे उस अवस्था पर किसी सम्बन्धी की मृत्यु।

(३) यदि उपर्युक्त (२) प्रभाव-रेखा शनि-क्षेत्र तक आवे और वहाँ दो शाखायुक्त (एक प्रधान-रेखा—एक शाखा) हो जावे तो वैवाहिक जीवन संतापमय होता है—जातक की पत्नी पागल हो जाती है या मर जाती है।

(४) यदि उपर्युक्त (२) प्रकार की प्रभाव-रेखा सूर्य-क्षेत्र पर आवे तो किसी सम्बन्धी या मित्र की मृत्यु के उपरान्त झगड़ा या मुकदमेबाजी होती है जिसके परिणामस्वरूप बहुत बर्बादी होती है।

(५) यदि उपर्युक्त (२) प्रकार की प्रभाव-रेखा आकर भाग्य-रेखा मे योग करे और उसमे मिलकर विलीन हो जावे तो ऊपर (४) मे जो फल बताया गया है वह होता है किन्तु झगड़े या मुकदमेबाजी से बर्बादी न होकर भाग्य-वृद्धि होती है।

(६) यदि उपर्युक्त (२) प्रभाव-रेखा भाग्य-रेखा को काटे तो किसी सम्बन्धी या मित्र की मृत्यु से भाग्य मे बहुत हानि होती है।

(७) यदि उपर्युक्त (२) प्रकार की प्रभाव-रेखा सूर्य-रेखा मे योग करे और उसमे मिलकर विलीन हो जावे तो किसी सगे-सम्बन्धी या मित्र की मृत्यु से भाग्य-वृद्धि होती है।

(८) यदि उपर्युक्त रेखा (२) सूर्य-रेखा को काटे तो किसी सम्बन्धी या मित्र की मृत्यु से भाग्य-हानि या धन-हानि होती है।

(६) यदि शुक्र-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो, वहाँ से प्रारम्भ होकर कोई प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटे तथा जीवन-रेखा से प्रारम्भ हुई, ऊपर की ओर जाने वाली किसी छोटी रेखा को भी काटे तो किसी सगे-सम्बन्धी या मित्र की मृत्यु हो जाने पर विरासत के लिए मुकदमेबाजी होती है।

यदि उपर्युक्त रेखा सूर्य-रेखा को भी काटे तो मुकदमे में जातक की हार होती है। यदि सूर्य-रेखा में योग कर विलीन हो जावे तो जातक मुकदमा जीतता है। विरासत में धन या जायदाद मिलती है।

(१०) द्वीप चिह्न—यदि शुक्र-क्षेत्र पर द्वीप चिह्न हो—वहाँ से प्रारम्भ होकर कोई प्रभाव-रेखा बुध-क्षेत्र पर आवे तो जातक का किसी से अनुचित प्रेम सम्बन्ध हो जाता है—इस कारण कम-से-कम कुछ समय के लिये भाग्य में रुकावट होती है।

(११) यदि शुक्र-क्षेत्र पर द्वीप चिह्न से प्रारम्भ हो प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटे—जीवन-रेखा से निकली हुई ऊपर की ओर जाती हुई किसी छोटी रेखा को काटती हुई आगे बढकर सूर्य-रेखा से योग कर उसमे विलीन हो जावे तो जातक का किसी से गुप्त प्रेम-सम्बन्ध होता है—इस कारण किसी व्यक्ति से मुकदमेबाजी होती है। परिणाम में विजय जातक की होती है।

(घ) शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ प्रभाव रेखाएँ—जिनके अन्त में कोई चिह्न हो

अब उन प्रभाव रेखाओं का वर्णन किया जाता है जिनके अन्त में कोई चिह्न हो—

(१) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर कोई रेखा बृहस्पति के क्षेत्र

पर आवे और इस प्रभाव-रेखा के अन्त पर तारे का चिह्न हो तो महत्वाकांक्षा की सफलता का लक्षण है।

(२) यदि उपर्युक्त रेखा के अन्त पर तारे का चिह्न न हो किन्तु द्वीप चिह्न हो तो फेफड़े की बीमारी होती है।

(३) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हो प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा तथा भाग्य-रेखा को काटे और स्वास्थ्य-रेखा तक न पहुँचे तथा इस प्रभाव-रेखा के अन्त मे तारे का चिह्न हो तो बहुत बडा धन का घाटा होता है।

(४) यदि उपर्युक्त (३) रेखा का जहाँ अन्त हो वहाँ तारे की बजाय 'वर्ग' चिह्न हो और वर्ग के बीच में प्रभाव-रेखा समाप्त हो जावे तो जातक का किसी से गुप्त प्रेम हो जाता है इस कारण भविष्य मे होने वाली किसी विपत्ति से रक्षा होती है (उदाहरण के लिये यदि यह गुप्त प्रेम न होता तो किसी अनुपयुक्त स्थान मे विवाह हो जाता और उस कारण बदनामी या सताप होता)।

(५) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर कोई रेखा जीवन-रेखा को काटे तथा वहाँ पर इस रेखा की लम्बी द्वीपाकृति हो जावे जिससे शीर्ष-रेखा कटे और शनि-क्षेत्र के नीचे—जहाँ हृदय-रेखा तथा भाग्य-रेखा का योग होता है—वहाँ तक द्वीप चिह्न जावे और यदि ऐसी रेखा पुरुष के हाथ मे हो, तो किसी विवाहिता स्त्री से प्रेम। यदि स्त्री के हाथ मे हो तो किसी शादीशुदा आदमी से प्रेम।

(६) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हुई प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई शीर्ष-रेखा पर आकर समाप्त हो जावे और जहाँ समाप्त हो वहाँ तारे का चिह्न हो तो सम्बन्धियों तथा मित्रो के कारण चिन्ता—दिमागी परेशानी—मस्तिष्क विकार का लक्षण है।

(७) यदि दो प्रभाव-रेखाएँ शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हों—एक ही स्थान पर—भाग्य-रेखा पर योग करें और वहाँ तारे का चिह्न हो तो जातक का दो व्यक्तियों से एक साथ प्रेम-सम्बन्ध होता है। इस कारण दोनों प्रेम-सम्बन्धों में हानि और परेशानी होती है। या दो चार प्रेम-सम्बन्ध और परिणाम में परेशानी उठानी पड़ती है।

(८) यदि प्रभाव-रेखा शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर शीर्ष-रेखा और सूर्य-रेखा का जहाँ योग होता है वहाँ आकर समाप्त हो जावे और उस स्थान पर 'दाग' का चिह्न हो तो नेत्र विकार, आँखों की रोशनी में कमी व अन्धेपन का भय।

(९) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ कर प्रभाव-रेखा हृदय-रेखा पर आकर समाप्त हो और समाप्ति पर तारे का चिह्न हो तो सम्बन्धियों या मित्रों द्वारा इतना तंग और परेशान किया जाता है कि जातक को हृदय रोग हो जाता है।

(१०) यदि प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई आकर सूर्य-रेखा को काटे और इसके अन्त में द्वीप चिह्न हो तो जातक का किसी से अनुचित प्रेम होता है और इस कारण काफी बदनामी और अप्रतिष्ठा होती है।

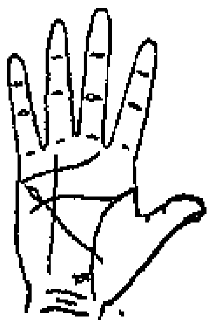

चित्र नं० ९९

(११) यदि प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा तथा उससे निकली किसी छोटी ऊर्ध्वगामी रेखा को काटती हुई सूर्य-रेखा पर आकर समाप्त हो जावे और वहाँ समाप्ति पर तारे का चिह्न हो तो या तो किसी बड़े मुकदमे में हार होती है या बहुत अधिक बदनामी और अप्रतिष्ठा।

(ङ) प्रभाव रेखाएँ—जिनके आदि तथा अन्त में दोनों स्थानों पर चिह्न हो

अब शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हुई उन रेखाओं का वर्णन किया जाता है जिनके आदि मे कोई चिह्न हो और समाप्ति पर भी।

(१) यदि शुक्र-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो—वहाँ से प्रारम्भ होकर प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई—स्वास्थ्य-रेखा तक पहुँचने के पूर्व ही समाप्त हो जावे और इस समाप्ति-स्थान पर भी तारे का चिह्न हो तो किसी सगे-सम्बन्धी या परम मित्र की मृत्यु के कारण घोर सर्वनाश (धन हानि) होता है।

(२) यदि शुक्र-क्षेत्र पर, जहाँ से प्रभाव-रेखा प्रारम्भ होती है। तारे का चिह्न हो और प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई भाग्य-रेखा पर समाप्त हो जावे और इस समाप्ति-स्थान पर बिन्दु चिह्न हो तो किसी सगे-सम्बन्धी की मृत्यु से जातक के भाग्य को कुछ समय के लिये गहरा धक्का लगता है।

(३) यदि शुक्र-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो—वहाँ से प्रभाव-रेखा प्रारम्भ होकर जीवन-रेखा को काटती हुई शीर्ष-रेखा तक आवे और प्रभाव-रेखा की समाप्ति स्थान पर—बिन्दु चिह्न हो तो सगे सम्बन्धी की मृत्यु से घोर सताप उठाना पडता है।

(४) यदि उपर्युक्त (३) प्रकार की रेखा हो किन्तु शीर्ष-रेखा पर जहाँ प्रभाव-रेखा समाप्त होती है बिन्दु चिह्न न हो बल्कि तारे का ही चिह्न हो तो किसी सगे-सम्बन्धी की मस्तिष्क विकार, रक्त-चाप या पागलपन के कारण मृत्यु होती है।

(५) यदि उपर्युक्त (४) प्रकार की प्रभाव-रेखा हो किन्तु जहाँ

प्रभाव-रेखा शीर्ष-रेखा पर समाप्त होती है वहाँ शीर्ष-रेखा स्वयं द्वीपयुक्त हो तो जातक के किसी सगे-सम्बन्धी की मस्तिष्क-विकार या राजयक्ष्मा आदि से मृत्यु होती है।

(६) यदि प्रभाव-रेखा शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हो जीवन-रेखा को काटती हुई भाग्य-रेखा पर आकर समाप्त हो जावे और प्रभाव-रेखा के आदि तथा अन्त दोनों स्थानों पर तारे का चिह्न हो तो किसी सगे-सम्बन्धी या मित्र की मृत्यु के कारण भाग्य को गहरा धक्का लगता है। किस अवस्था मे ? यह जीवन-रेखा जहाँ काटती हो उससे अनुमान लगाना चाहिये।

(७) यदि उपर्युक्त (६) प्रकार की रेखा हो-किन्तु जो बात भाग्य-रेखा पर बताई गई है, वह भाग्य-रेखा पर न होकर सब लक्षण सूर्य-रेखा पर समाप्त हो तो सगे सम्बन्धी की मृत्यु से गहरा आर्थिक धक्का लगता है।

(८) यदि उपर्युक्त (७) प्रकार की रेखा हो, पर सूर्य-रेखा पर जहाँ प्रभाव-रेखा समाप्त हो वहाँ सूर्य-रेखा स्वयं द्वीपयुक्त हो तो ऊपर (७) जो मे फल बताया गया है—वही इसका भी फल है।

(९) शुक्र-क्षेत्र पर द्वीप का चिह्न हो—उस द्वीप से प्रारम्भ होकर कोई प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई भाग्य-रेखा पर समाप्त हो जावे—और इसकी समाप्ति पर—भाग्य-रेखा पर तारे का चिह्न हो तो जातक का किसी से अनुचित प्रेम होता है इस कारण कुछ काल तक भाग्य मे हानि तथा बाधा होती है।

(१०) यदि शुक्र-क्षेत्र पर द्वीप चिह्न हो और वहाँ से प्रारम्भ होकर प्रभाव-रेखा, जीवन-रेखा को काटती हुई शीर्ष-रेखा पर समाप्त हो और इस समाप्ति-स्थान पर बिन्दु चिह्न हो तो जातक के अनुचित

गुप्त प्रेम के कारण दुश्चिन्ता या मस्तिष्क विकार का लक्षण है।

(११) यदि प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा से ही प्रारम्भ हो—प्रारम्भिक स्थान पर जीवन-रेखा पर बिन्दु हो और जीवन-रेखा से तिरछी निकल कर शीर्ष-रेखा को काटती हुई प्रभाव-रेखा मंगल के प्रथम क्षेत्र पर समाप्त हो तथा समाप्ति-स्थान पर तारे का चिह्न हो तो खूनी बवासीर का रोग होता है।

(१२) यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हुई प्रभाव-रेखा चन्द्र-क्षेत्र पर आवे और इस रेखा के आदि तथा अन्त दोनों स्थानों पर तारे का चिह्न हो तो किसी सगे-सम्बन्धी की मृत्यु से जातक के मस्तिष्क को इतना सदमा पहुँचता है कि वह पागल हो जाता है।*

शुक्र मेखला

प्रथम या द्वितीय उंगलियो के नीचे से प्रारम्भ होकर तृतीय या चतुर्थ उगली के नीचे समाप्त होने वाली अर्धवृत्त के आकार की रेखा किसी-किसी के हाथ मे दिखाई देती है। इस रेखा का शुक्र-क्षेत्र से कोई सम्बन्ध नही है फिर भी इसको 'शुक्र' मेखला कहते है। इसे यह नाम पाश्चात्य हस्त-रेखा-परीक्षको ने दिया है। अंग्रेजी मे इसे 'गार्डिल आव् वीनस' कहते है जिसका अनुवाद बहुत से हिन्दी हस्त-परीक्षको ने 'शुक्र मुद्रिका' या 'शुक्र ककरण'

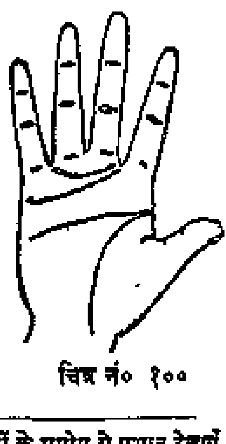

चित्र नं० १००

*नोट—इस ग्रन्थ में कई स्थानों पर जहाँ अन्य रेखाओं के संयोग से प्रभाव रेखाएँ विघ्न या चिन्ता उत्पन्न करती हैं उनका चिन्ता-रेखानाम से भी उल्लेख किया गया

किया है। किन्तु वास्तव मे अंग्रेजी के 'गर्डिल' शब्द का भाव मेखला से अच्छी तरह व्यक्त होता है—इस कारण इस पुस्तक मे इस रेखा का परिचय शुक्र मेखला नाम से दिया गया है।

जिस प्रकार सब हाथो मे जीवन-रेखा, शीर्ष-रेखा तथा हृदय-रेखा होती है उसी प्रकार 'शुक्र मेखला' प्रत्येक हाथ में नही होती। यह तो दो चार सौ हाथो मे से किसी एक हाथ में होती है। तथापि इस रेखा का कुछ महत्व है इस कारण इसका विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाता है।

प्रथम बात तो यह है कि इसका कोई सम्बन्ध शुक्र-क्षेत्र से नही, फिर इसका नाम 'शुक्र मेखला' क्यो रखा गया? पिछले प्रकरणो मे बताया गया है कि शुक्र-क्षेत्र का कामवासना से विशेष सम्बन्ध है। जिनके हाथ मे शुक्र-क्षेत्र विशेष उन्नत होता है उनमे कामवासना भी विशेष होती है। यही कामवासना जब बुद्धि से विशिष्ट सयोग करती है तो सौन्दर्यप्रियता, कलापटुता, गायन-चातुर्य आदि अनेक रूपो मे प्रकट होती है। यह सब मनोवृत्ति शुक्र-क्षेत्र से सम्बन्धित है। ज्योतिष मे भी शुक्र को "स्त्री कारक" माना गया है और क्योंकि इस रेखा का सम्बन्ध कामवासना—से विशेष है इस रेखा का नाम 'शुक्र मेखला' रख दिया गया है।

प्राचीन पाश्चात्य हस्तपरीक्षको ने लिखा है कि जिसके हाथ मे शुक्र मेखला हो वह व्यभिचारी होता है। इसका कारण यह है कि जिस पुरुष या स्त्री मे कोई भाव विशेष होता है वह उसको

है। शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होने वाली रेखाएं शुभ तथा अशुभ दोनों प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करती हैं। इस कारण इनका अशुभ प्रभाव उत्पन्न करने पर चिन्ता-रेखा नाम विशेष उपयुक्त है।

पूर्ति उचित या अनुचित मार्ग से करना चाहता है और शुक्र मेखला हाथ मे होने से अत्यधिक कामवासना जातक मे रहती है। किन्तु 'कीरो' का मत है कि चौडे मोटे हाथ मे शुक्र मेखला हो तो व्यभिचार प्रवृत्ति समझनी चाहिये, किन्तु यदि ऐसी रेखा पतले, नुकीली उंगलियों वाले हाथ मे हो तो जातक अत्यन्त बुद्धिमान् होता है, किन्तु जरा सी बात मे घबरा जाने वाला या नाराज हो जाने वाला अस्थिर प्रकृति का होता है। स्नायविक ततु जब अत्यन्त असहन-शील होते है तो उनकी सूक्ष्म वृत्ति के कारण जातक मे प्रेम, सौन्दर्यप्रियता, चिता, निराशा आदि सभी भाव उग्र मात्रा मे—थोड़े से ही कारण से प्रकट हो जाते है। ऐसे जातको मे बहुत शीघ्र उत्साह उत्पन्न हो जाता है किन्तु चित्तवृत्ति मे स्थिरता नही होती।

कीरो ने शुक्र मेखला के सम्बन्ध मे केवल एक ही महत्व की बात लिखी है कि शुक्र मेखला यदि विवाह-रेखा से स्पर्श करे तो वैवाहिक जीवन सुखमय नही होगा। जातक बहुत शक्की दिमाग होता है अत थोडी सी बात मे या अकारण ही उसके हृदय मे ईर्ष्या हो जाती है। वह चाहता है कि अपनी पत्नी को बिलकुल शिकजे मे बाँध कर रखे। इसी प्रकार जिन स्त्रियो के हाथ मे शुक्र मेखला बुध-क्षेत्र की ओर इतनी वढी हुई हो कि विवाह-रेखा को काटे या स्पर्श करे तो वे इतनी असहनशील प्रकृति की होगी कि यदि उनके पति किसी अन्य स्त्री से साधारण बात भी करते होंगे तो उनका पारा सातवें आसमान पर चढ जावेगा।

सक्षेप मे 'शुक्र मेखला' के लक्षण ऊपर बताये गये है। अब इस रेखा के गुण, दोष, प्रारम्भ तथा अन्तके स्थानो की विभिन्नता के अनु-सार फलादेश मे विभिन्नता तथा यदि एक रेखा शुद्ध अर्धवृत्ताकार हो

या कई टूटी रेखा मिलकर शुक्र मेखला बनाती हो तो क्या फल होता है, यह सब विस्तार से समझाया जाता है।

'शुक्र मेखला' एक प्रकार से हृदय-रेखा के नीचे होती है इस कारण इसे हृदय-रेखा की सहायिका रेखा कह सकते हैं। किन्तु यह हृदय पर 'सयम' रखने मे सहायक नही होती। हृदय मे प्रेम या 'कामविकार' के जो भाव होते है उन्हे अधिक मात्रा मे उत्तेजित करती है। इस कारण जिसके हाथ मे शुक्र मेखला हो वे दुगुने वेगसे प्रेम करते है और 'काम विकार' से सम्बन्धित ईर्ष्या, क्रोध आदि के जो भाव हैं वे भी दुगुने वेग से जातक पर अपना प्रभाव दिखाते हैं। किस जातक पर अधिक या कम प्रभाव होगा यह निश्चय करने के लिये उसके हाथ की बनावट, विशेषकर उगलियो की ओर ध्यान देना चाहिये। यदि हाथ पतला हो, शरीर भी दुबला-पतला हो, करतल अनेक पतली-पतली रेखाओ से भरा हुआ हो तो ऐसे हाथ मे शुक्र मेखला बहुत जल्दी घबराहट, चिंता, ईर्ष्या, क्रोध आदि उत्पन्न कर देगी। यदि शरीर भारी हो, हाथ भी चौकोर, बहुत रेखाओ से युक्त न हो तो प्रकृति मे विशेष स्थिरता होगी। किन्तु यदि ऐसे हाथ मे शुक्र-क्षेत्र बहुत उन्नत हो, हाथ मे ललाई अधिक हो, तो जातक मे कामवासना विशेष होगी।

शुक्र मेखला का भिन्न-भिन्न प्रकार के हाथों मे भिन्न-भिन्न फल

(१) यदि शुक्र-क्षेत्र चपटा, शक्तिहीन, ढीला हो, जीवन-रेखा का दायरा चौड़ा न हो (अर्थात् शुक्र-क्षेत्र छोटा भी हो), हाथ के रग मे सफेदी हो (इससे रक्त की कमी प्रकट होती है), उगलियो के तृतीय पर्व बीच मे पतले हो तो ऐसे जातक मे 'शुक्र मेखला' कामवासना

का लक्षण नही बल्कि 'घबराहट' तथा 'चिन्ता' का लक्षण समझना चाहिये ।

(२) यदि शुक्र-क्षेत्र ऊँचा उठा हुआ, बडा हो तथा उस पर आडी, तिरछी बहुत सी रेखाएँ हो, उगलियो के तृतीय पर्व मोटे हो, प्रथम पर्व छोटे हो, जीवन-रेखा खूब घूमकर गई हो (इस कारण शुक्र-क्षेत्र बहुत बडा होगा), हृदय-रेखा गहरी और लाल हो, मगल-क्षेत्र उन्नत हो, हथेली के रग मे ललाई अधिक हो, करपृष्ठ पर लाल हो—तो ऐसे जातक मे 'शुक्र मेखला' घबराहट या चिन्ता का लक्षण न समझकर अत्यधिक कामवासना (जिसका एक परिणाम व्यभिचार प्रवृत्ति होती है) का लक्षण समझना उचित है ।

(३) यदि चन्द्र-क्षेत्र के नीचे का तृतीयाश अधिक उन्नत हो, हाथ पतला हो, हाथ मे मांस अधिक न हो, शुक्र-क्षेत्र, चपटा हो, मगल का क्षेत्र भी नीचा हो तो ऐसे जातक की व्यभिचार प्रवृत्ति स्वय तक ही सीमित रहेगी ।

रेखा के स्वरूप के अनुसार फल में विभिन्नता

(१) यदि शुक्र मेखला की एक ही गोलाई लिये हुए रेखा, शुद्ध, अखडित और स्पष्ट हो तो जातक मे घबराहट या चिंता का लक्षण नही समझना चाहिये । यह विशेष 'कामविकार' का ही लक्षण है ।

(२) यदि यह रेखा टूटी हुई हो, या बहुत से छोटे-छोटे टुकडो से बनी हुई हो तो घबराहट, चिन्ता कामविकार-जनित स्नायविक अस्थिरता विशेष होती है । यदि हाथ के अन्य लक्षणो से भी स्नायविक दुर्बलता प्रकट होती हो तो ऐसे जातक को हिस्टीरिया या घबराहट के अन्य रोग हो जाते है । इस कारण जातक का

स्वास्थ्य खराब रहता है। उसमे सदैव असतोष और दुख की भावना रहती है।

(३) यदि शुक्र मेखला पर दोहरी या तीन सम्पूर्ण रेखाएँ—एक के ऊपर एक—हो तो इस रेखा के, जैसे हाथ मे जो दोष दर्शाये गये है, वे अधिक मात्रा मे होते है। यदि रेखा अधिक गहरी हो तो भी 'कामवासना' विशेष मात्रा मे होती है।

(४) यदि उपर्युक्त (२) प्रकार की रेखा हो और जीवन तथा शीर्ष-रेखाये भी दोषयुक्त हो तो जातक को मानसिक या स्नायविक रोग होने की आशका होगी। यदि शीर्ष-रेखा पर द्वीप चिह्न, क्रॉस या तारे का चिह्न हो तो जातक के मस्तिष्क मे विकार या पागलपन आ जावेगा।

(५) यदि शीर्ष-रेखा घूम कर चन्द्र-क्षेत्र के निचले भाग पर जाती हो और जहां शीर्ष-रेखा का अत हो वहाँ तारे, बिन्दु, क्रॉस या द्वीप का चिह्न हो, साथ ही शुक्र मेखला टूटी हो और हाथ बहुत सी रेखाओ से युक्त हो तो पागलपन का लक्षण है (विकृत तथा अत्यधिक कल्पना का परिणाम पागलपन होता है)।

(६) यदि शनि-क्षेत्र पर क्रॉस का चिह्न हो, शुक्र मेखला टूटी हो, शनि-क्षेत्र के नीचे—शीर्ष-रेखा पर बिन्दु या द्वीप चिह्न हो, चन्द्र-क्षेत्र पर 'जाल' हो, नाखून शीघ्र टूटने वाले हो या उन पर खडी रेखाएँ हो तो ऐसे जातक को 'लकवा' होने का भय रहता है।

(७) यदि हाथ का नीचे का भाग मोटा हो, हाथ की उगलियाँ मोटी हो, हाथ का रग लाल हो, रेखाये भी गहरी और लाल हो, जीवन-रेखा तथा शीर्ष-रेखा छोटी हो और इन दोनो रेखाओ के अतिम भाग मे अशुभ लक्षण हो तो अत्यधिक भोग-विलास

के कारण जातक अल्पायु होगा। कितनी आयु होगी यह जीवन-रेखा से अनुमान करना चाहिये।

(८) यदि हाथ की बनावट से जातक विलासी प्रकृति का प्रतीत होता हो, भाग्य-रेखा दोषयुक्त हो और शुक्र मेखला से कटी हुई हो, सूर्य-रेखा पर या सूर्य-रेखा के अन्त पर बिन्दु चिह्न हो तो अत्यन्त भोग-विलास के कारण जातक अपना कारबार या नौकरी नष्ट कर देगा और उसकी बदनामी भी होगी।

(९) यदि शुक्र मेखला गम्भीर हो और विवाह-रेखा को काटे, हृदय-रेखा से निकलकर नन्ही-नन्ही रेखाएं नीचे की ओर जावें, शीर्ष-रेखा का अन्तिम भाग दोषयुक्त हो और शीर्ष-रेखा के अन्त मे तारे का चिह्न हो, भाग्य-रेखा का मार्ग किसी छोटी आडी रेखा से रुका हो, तो अत्यन्त उच्छृङ्खल कामवासना के कारण जातक का वैवाहिक सुख नष्ट हो जावेगा। उसका दिमाग भी खराब होगा और कारबार या नौकरी सबका सर्वनाश होगा।

इस प्रकार जातक के स्वरूप, प्रकृति, हाथ के लक्षणो से समन्वय कर फलादेश करना उचित है।

शनि-मुद्रिका

तर्जनी और मध्यमा उगली के मूल के बीच से प्रारम्भ होकर गोलाई लिये हुए शनि-क्षेत्र को घेरती हुई यह रेखा मध्यमा और तर्जनी उगलियो के मूल के बीच मे समाप्त होती है। यह शनि-क्षेत्र को अगूठी की भाँति घेरे रहती है—इस कारण इसे 'शनि-मुद्रिका' कहते

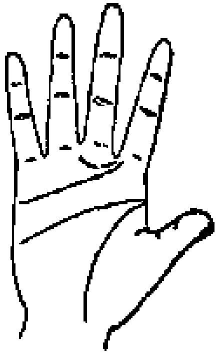

चित्र नं० १०१

हैं। यह रेखा सब हाथो मे नही होती। किसी-किसी व्यक्ति के हाथ मे होती है। कभी-कभी यह रेखा सम्पूर्ण नही होती। दो टूटे रेखा-खडो से मुद्रिका का-सा आकार दिखाई देता है। (देखिये चित्र न० १०१)

जिनके हाथ मे यह रेखा होती है उनमे अध्यवसाय की कमी होती है। किसी एक काम को जमकर नही करते। एक काम आरम्भ करते है उसको अधूरा छोडकर दूसरा कार्य प्रारम्भ कर देते हैं, इस कारण ऐसे व्यक्ति प्राय असफल रहते है। आडी-रेखाएँ प्राय बाधक रेखा होती है—बाधा उपस्थित करती हैं। शनि-मुद्रिका एक प्रकार की आडी रेखा है और शनि-क्षेत्र के स्वाभाविक गुणो को नष्ट करती है। शनि-क्षेत्र यदि गुणयुक्त हो तो मनुष्य दूरदर्शी, गम्भीर विचार करने वाला, परिश्रमी होता है। यदि इन गुणो की मनुष्य मे कमी हो जावे तो स्वभावतया जीवन मे सफलता नही मिलती। यदि हाथ मे अन्य अशुभ लक्षण हो तो मनुष्य मे जुर्म या अपराध करने की प्रवृत्ति होती है।

हाथ मे अन्य लक्षणो के योग से शनि-मुद्रिका के निम्नलिखित फल होते है—

(१) यदि मगल का प्रथम क्षेत्र नीचा और दबा हुआ हो, अगूठा छोटा हो, स्वास्थ्य-रेखा दोषयुक्त (उस पर तारे का चिह्न या द्वीप-चिह्न हो) तो मनुष्य अत्यन्त निराश हो जाता है। ऐसे मनुष्य अत्यन्त नैराश्यग्रस्त हो पागल हो जाते हैं या आत्महत्या करने की इच्छा करते है।

(२) यदि हाथ मुलायम, निर्जीव सा हो, शीर्ष-रेखा बलवान न हो, मगल-क्षेत्र नीचा और दबा हुआ, चन्द्र-क्षेत्र अति उच्च हो,

तो शनि-मुद्रिका से निराशा, धैर्य की कमी आदि अवगुणों का फल विशेष होगा।

(३) यदि शीर्ष-रेखा घूमकर चन्द्र-क्षेत्र पर आवे, चन्द्र-क्षेत्र बड़ा उच्च और जालयुक्त हो तो कल्पना के अत्यधिक और अनुचित विकास के कारण मनुष्य में अस्थिरता, बेचैनी और एक काम को छोड़कर दूसरे को करने की ऐसी विकलता हो जाती है कि वह जीवन में बिलकुल असफल रहता है।

(४) यदि भाग्य-रेखा खण्डित और दोषयुक्त हो तो शनि-मुद्रिका यह प्रकट करती है कि जीवन की असफलता अथवा भाग्य-हानि का कारण एक कार्य को लगकर नहीं करना—एक काम करना और छोड़ना—यही दोष होता है।

(५) यदि सूर्य-रेखा दोषयुक्त या खण्डित हो तो शनि-मुद्रिका वही परिणाम प्रकट करती है जो ऊपर (४ में) बताया गया है।

(६) टूटी हुई या द्वीपयुक्त शीर्ष-रेखा होने से मनुष्य के इरादों में तबदीली हुआ करती है। वह कायम-मिजाज नहीं होता। यदि साथ ही शनि-मुद्रिका हो तो इस अवगुण की और वृद्धि समझनी चाहिए।

(७) चन्द्र-क्षेत्र के दोष से जो चित्त में अस्थिरता होती है उसकी भी शनि-मुद्रिका वृद्धि करती है।

यदि शनि-मुद्रिका खण्डित हो तो शनि-मुद्रिका के जो अवगुण ऊपर बताए गए हैं, उनमें कमी हो जाती है। मुद्रिका जितनी पूर्ण होगी उतने ही उपर्युक्त अवगुण अधिक होंगे। यदि टूटी हुई शनि-मुद्रिका के दोनों खण्ड एक-दूसरे के ऊपर इस प्रकार आ जावें कि 'क्रॉस'-चिह्न बन जावे तो इसका वही फल होता है जो 'क्रॉस-

चिह्न का—अर्थात् अन्य हानि, दुर्घटना आदि अशुभ परिणाम होता है।

हाथ के अन्य लक्षणों से यह अन्तिम निर्णय करना चाहिए कि शनि-मुद्रिका का किस हद तक अशुभ परिणाम होगा। शीर्ष-रेखा अच्छी हो, अंगुष्ठ बलवान हो, चन्द्र-क्षेत्र अत्युच्च या दोषयुक्त न हो, प्रथम मंगल-क्षेत्र उन्नत हो तो मनुष्य मे धैर्य, अध्यवसाय, उत्साह, परिश्रम आदि के गुण होते है और कोरी 'कल्पना' का दुष्परिणाम नही होता, इस कारण शनि-मुद्रिका का दोष भी कम अशुभ फल दिखावेगा।

बृहस्पति-मुद्रिका

तर्जनी और मध्यमा उंगलियो के बीच के भाग से आरम्भ होकर गोलाई लिये हुए बृहस्पति-क्षेत्र को अँगूठी की भाति घेरती हुई यह रेखा होती है। (देखिये चित्र नं० १०२) यह सब हाथो मे नही पाई जाती। जिनके हाथ मे यह रेखा होती है वे गुप्त विद्याओ (ज्योतिष, मन्त्र-शास्त्र, तन्त्र आदि) के अध्ययन मे विशेष रुचि रखते है और उनमे विद्वान् होते है। परन्तु यह फलादेश करते समय हाथ के अन्य लक्षण-उंगलियों के आकार, ग्रह-क्षेत्र और विशेषकर शीर्ष-रेखा को ध्यान से देखना चाहिए कि उपर्युक्त लक्षणो की पुष्टि होती है या नही।

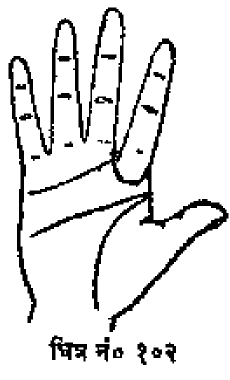

चित्र नं० १०२

१८वां प्रकरण

यात्रा-रेखा आदि शेष पाँच रेखाएँ

यात्रा-रेखाएं

यात्रा-रेखाओ का लक्षण बताने के पहले यह कहना आवश्यक है कि केवल यात्रा के ही सम्बन्ध मे नही सर्वत्र फलादेश करते समय देश, काल, पात्र और परिस्थिति का विचार करना आवश्यक है। किसी समय मद्रास से काशी या हरिद्वार जाना बहुत बडी यात्रा समझी जाती थी, परन्तु आजकल नित्य लोग दिल्ली से मद्रास, कलकत्ता, बम्बई जाते है। इसी प्रकार आज से ४०-५० वर्ष पहले बहुत कम लोग विलायत या अमेरिका जाते थे, परन्तु अब विशेषकर भारतीय स्वतन्त्रता के बाद दसो हजार व्यक्ति विलायत जाते है। इसलिए जो विशेष भ्रमण या यात्रा करते है और बीसो बार विलायत जा चुके है। यात्रा को मुख्यता नही देते, किन्तु जिनको ऐसा अवसर प्राप्त नही होता या सम्भावना नही होती उनके लिए विदेश-यात्रा या लम्बी यात्रा विशेष घटना होती है।

यात्रा की रेखा तीन स्थानो पर होती है—

१. चन्द्र-क्षेत्र पर

२ मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर ऊपर को जाती हुई

३ जीवन-रेखा से निकलकर जीवन-रेखा के सहारे-सहारे चलने वाली रेखाएं।

चन्द्र-क्षेत्र पर यात्रा रेखाएं

चन्द्र-क्षेत्र पर आडी रेखा प्राय यात्रा-रेखा समझी जाती है। पहले विदेश-यात्रा समुद्र पार जल-मार्ग से होती थी और चन्द्रमा का जल तथा समुद्र से विशेष सम्बन्ध है। चन्द्रमा समुद्र का पुत्र है, समुद्र से निकला है और चन्द्रोदय से समुद्र का जल ऊँचा उठता तथा गिरता है (ज्वारभाटा आता है)।

यदि चन्द्र-क्षेत्र की यात्रा-रेखा भाग्य-रेखा से योग करे तो ऐसी यात्रा का भाग्य पर विशेष प्रभाव पड़ता है। यदि यात्रा-रेखा छोटी और गहरी हो परन्तु भाग्य-रेखा से योग न करे तो उसे तनी महत्वपूर्ण यात्रा नहीं समझना चाहिए। (देखिए चित्र नं० १०३ रेखा क)

(१) यदि यह यात्रा-रेखा भाग्य-रेखा में विलीन हो जावे और उसके बाद भाग्य-रेखा गहरी हो तो समझना चाहिए कि यात्रा के फलस्वरूप भाग्य में गहरी उन्नति हुई।

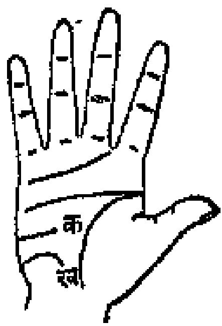

चित्र नं० १०३

(२) यदि यह यात्रा-रेखा नीचे की ओर (कलाई की ओर) झुकी हुई हो या कुछ मुड़ जावे तो यात्रा में बाधक होती है (देखिए चित्र नं० १०३ रेखा ख)। किन्तु यदि यह ऊपर की ओर जावे तो यात्रा से भाग्य-वृद्धि होती है।

(३) यदि एक यात्रा-रेखा दूसरी यात्रा-रेखा को काटे तो किसी कारण से दो बार यात्रा करनी पड़ेगी।

(४) यदि इस यात्रा-रेखा के अंत पर 'वर्ग' चिह्न हो तो यात्रा से दुर्घटना होगी किन्तु प्राण-रक्षा हो जावेगी।

(५) यदि यात्रा-रेखा शीर्ष-रेखा में मिले और वहाँ बिन्दु, दाग, द्वीप-चिह्न हो या शीर्ष-रेखा खण्डित हो तो ऐसी यात्रा के परिणामस्वरूप सिर में चोट या बीमारी होगी। (देखिये चित्र नं० १०४ रेखा ग)

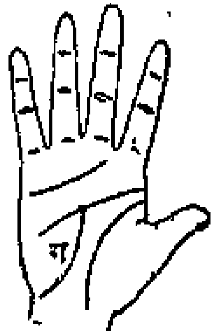

चित्र नं० १०४

मणिबन्ध से प्रारम्भ होने वाली यात्रा-रेखाएँ

दूसरी यात्रा-रेखाएँ वे होती है जो मणिबन्ध (प्रथम रेखा) से प्रारम्भ होकर ऊपर की ओर चन्द्र-क्षेत्र पर जाती है। (देखिए चित्र नं० १०५ रेखा क, ख)

(१) यदि ऐसी रेखा के अन्त पर 'क्रॉस' चिह्न हो (चित्र मे रेखा ख) तो यात्रा का परिणाम अच्छा नही होता। निराशा और असफलता होती है।

(२) यदि रेखा के अन्त मे द्वीप-चिह्न हो तो भी द्रव्य-हानि या नुकसान व असफलता का लक्षण है। (चित्र मे रेखा क)

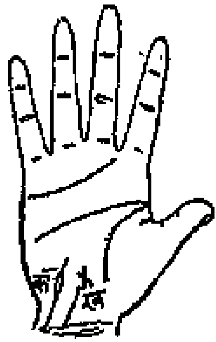

चित्र नं० १०५

(३) यदि मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर यात्रा-रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर जावे तो यात्रा लम्बी होगी और अधिकार तथा प्रभुत्व भी बढ़ेगा। यदि शनि-क्षेत्र पर जावे तो किसी गहरे घटना चक्र से यात्रा सम्बन्धित होगी। यदि सूर्य-क्षेत्र पर जावे तो यश, धन, नाम

की वृद्धि, और बुध-क्षेत्र पर जावे तो सहसा आकस्मिक धन-प्राप्ति का लक्षण है।

जीवन-रेखा से निकलने वाली रेखाएँ

तीसरी रेखा जिससे यात्रा का विचार किया जाता है जीवन-रेखा से निकलकर उसके सहारे-सहारे चलती है। इस रेखा का फल यह होता है कि मनुष्य अपनी जन्मभूमि छोड़कर विदेश में कारबार या नौकरी करता है। इस कारण—चन्द्र-क्षेत्र पर साधारण यात्रा-रेखाओं की अपेक्षा इसका विशेष महत्व है।

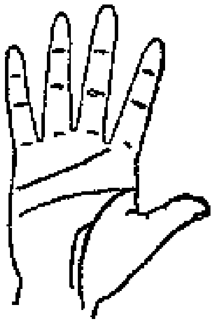

चित्र नं० १०६

यात्रा-सम्बन्धी दुर्घटनाएँ

यात्रा-सम्बन्धी दुर्घटनाएँ एक प्रकार से जीवन-रेखा के अन्तर्गत आ गई हैं, और ऊपर चन्द्र-क्षेत्र की यात्रा-रेखा व शीर्ष-रेखा का दोषयुक्त स्थान पर योग हो तो उसका भी फल बताया गया है किन्तु निम्न प्रकार के लक्षणों की ओर विशेष ध्यान आकृष्ट किया जाता है।

(१) दुर्घटनाओं के लक्षण जीवन-रेखा या शीर्ष-रेखा पर अवश्य होते हैं।

(२) शनि-क्षेत्र पर द्वीप-चिह्न हो और वहाँ से प्रारम्भ होकर रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई शुक्र-क्षेत्र पर जावे तो सांसारिक दुर्घटना का लक्षण है।

(३) यदि उपर्युक्त (२) रेखा के अन्त पर 'क्रॉस' चिह्न हो तो गहरी दुर्घटना होने पर भी प्राणरक्षा हो जायगी।

(४) शनि-क्षेत्र या इसके कुछ नीचे से आकर कोई भी रेखा जीवन-रेखा को काटे तो दुर्घटना का लक्षण है।

ऊपर जो लक्षण जीवन-रेखा के सम्बन्ध में बताये गए है उन्हे शीर्ष-रेखा पर भी लागू करना चाहिए। शीर्ष-रेखा से सम्बन्धित दुर्घटना हो तो मस्तिष्क विकार, सिर को चोट या प्राणान्त भी हो सकता है। लक्षण जितने अशुभ होगे उतना ही भयकर परिणाम होगा। किन्तु जीवन रेखा सुन्दर और अन्य लक्षण दीर्घायु होने के हो तो प्राण-रक्षा हो जावेगी।

सन्तान-रेखा

सन्तान का विचार दो स्थानो से किया जाता है। एक तो शुक्र-क्षेत्र का करपृष्ठ की ओर का जो भाग है (अगूठे से नीचे का हथेली का बाहर की ओर का भाग) उससे और दूसरा विवाह-रेखा पर जो अति सूक्ष्म रेखा होती है—उनसे।

यह पहले बताया जा चुका है कि जीवन-रेखा को भारतीय पद्धति के अनुसार 'गोत्र' रेखा या 'कुल' रेखा कहते है। दोनो का अर्थ है वश-वृद्धि। इस नाम से यह प्रकट होता है कि जिसकी जीवन-रेखा सुन्दर और बलवान होगी तथा जीवन-रेखा से घिरा हुआ भाग गुणयुक्त होगा उसी का 'कुल' चलेगा—उसी की 'गोत्र' वृद्धि होगी। पुत्र पौत्र, प्रपौत्र आदि एक के बाद दूसरे के सन्तान स्वस्थ होती चली जावे तभी कुल या गोत्र की वृद्धि सभव है। इसीलिये हमारे भारतीय महर्षियो ने कुल-वृद्धि या

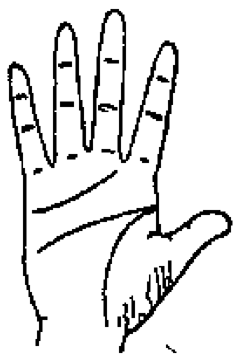

चित्र नं० १०७

गोत्र-वृद्धि का अर्थ केवल 'पुत्र' तक ही सीमित नही रखा। यदि कदाचित् किसी की निर्बल अवस्था मे निर्बल पुत्र हो गया और आगे उसकी वश-वृद्धि नही हुई तो 'गोत्र' वृद्धि नही मानी जावेगी। पुरुषो तथा स्त्रियो दोनो की सन्तानोत्पादन शक्ति, शुक्र-क्षेत्र तथा जीवन-रेखा पर बहुत अधिक मात्रा मे अवलबित है। इसी कारण अगुष्ठ के नीचे के भाग पर—करपृष्ठ की ओर निकली हुई रेखाओ से सन्तान का विचार किया जाता है (देखिये चित्र न० १०७)

'भविष्य पुराण' मे लिखा है—

'अगुष्ठ मूल रेखा पुत्रा स्युर्दारिका सूक्ष्मा'।

'प्रयोग पारिजात' मे भी लिखा है—

मूलेऽङ्गुष्ठस्य नृणा स्थूला रेखा भवन्ति यावत्य ।
तावन्त पुत्रा स्यु सूक्ष्माभि पुत्रिकास्ताभि ॥

अर्थात् अगूठे के मूल मे जो स्थूल रेखा हो उन्हे पुत्र-रेखा तथा जो सूक्ष्म-रेखा हो उन्हे कन्या-रेखा समझना चाहिये।

स्त्रियो के हाथ मे भी इन्ही रेखाओ को सन्तान-रेखा माना है। 'गरुड पुराण' का वचन है कि—

बृहत्या पुत्राः स्वल्पासु प्रमदा परिकीर्तिता ।
स्वल्पायुषो लघुच्छिन्ना दीर्घाच्छिन्ना महायुष ॥

बृहत रेखाओ से पुत्र और स्वल्प रेखाओ से कन्या अर्थात् जितनी मोटी रेखा हो उतने पुत्र और जितनी पतली रेखा हो उतनी कन्या होगी। जितनी छोटी और कटी हुई रेखा हो उतनी सन्तान अधिक नही जीवेगी। जितनी बडी और बिना कटी रेखा हो उतनी सन्तान जीवेगी।

पहले, प्राय 'सन्तान कितनी होगी—कितने लडके कितनी

लड़की, कितनी दीर्घजीवी होगी, कितनी शीघ्र मर जावेगी,—यह विषय हस्त-रेखा-परीक्षकों से बहुत दिलचस्पी से पूछा जाता था। अब धीरे-धीरे शिक्षा और औषधियों के प्रभाव से बच्चों की प्राण-रक्षा हो रही है। अकाल-मृत्यु पहले की अपेक्षा कम होती है। दूसरे, एक, दो या तीन सन्तान तक ही सन्तान-संख्या लोग सीमित रखना चाहते हैं और बहुत से लोग कृत्रिम उपायों से ऐसा करते भी हैं।

हमारे हाथ की रेखाएँ स्वाभाविक सन्तानोत्पादक शक्ति बताती हैं। यदि कोई बाल-विधवा हो जावे और उस समाज में विधवा-विवाह प्रचलित न हो तो सन्तान-रेखाओं का पूर्ण फल नहीं होगा। इसी प्रकार सन्तान-निरोध के उपायों को काम में लेने वाले व्यक्तियों के हाथ में भी ये रेखाएँ अपना पूर्ण प्रभाव नहीं दिखा पावेंगी।

इसके अतिरिक्त देश, काल, पात्र का भी विचार करना चाहिये। काश्मीर जैसे ठण्डे मुल्क में एक-एक स्त्री के १०-१२ सन्तान होती हैं और प्रायः सब जीवित रहती हैं। किन्तु कानपुर या बम्बई में मिलों में काम करने वाली स्त्रियों की सब सन्तान दीर्घजीवी नहीं होती।

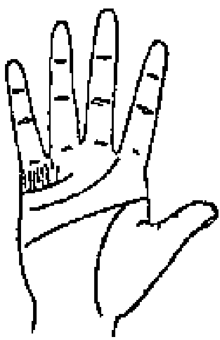

चित्र नं० १०८

ऊपर सन्तान-रेखा विचार का भारतीय मत बताया गया है। पाश्चात्य मतानुसार विवाह-रेखा पर जो खड़ी अति सूक्ष्म-रेखा होती है उससे सन्तान विचार करना चाहिये (देखिये चित्र नं० १०८)

हथेली के बाहरी ओर की तरफ जो पहली रेखा हो उसे प्रथम सन्तान, द्वितीय रेखा को द्वितीय सन्तान, तृतीय रेखा को तृतीय सन्तान समझना चाहिये। जो रेखा बिल्कुल सीधी हो उन से 'लडके' और जो कुछ झुकी हुई हो उनसे 'लडकियो' का अनुमान लगाना उचित है। जितनी रेखा अति सूक्ष्म या खण्डित हो उतनी सन्तान अल्पायु होती है। विवाह-रेखा पर जो सन्तान-रेखा बताई गई हैं वे कभी-कभी इतनी सूक्ष्म होती है कि अणुवीक्षण यन्त्र या आइग्लास से ही दृष्टि में आती है। इन रेखाओ की परीक्षा करते समय 'कीरो' के मतानुसार निम्नलिखित बातो पर विशेष ध्यान रखना चाहिये—

(१) शुक्र-क्षेत्र उन्नत तथा विशाल होने से सन्तान अधिक होती है।

(२) चौडी रेखाओ से पुत्र एव पतली और सूक्ष्म रेखाओ से कन्या समझना चाहिये।

(३) यदि रेखा सुन्दर और सबल हो तो बच्चे दीर्घजीवी होगे। यदि कमजोर या लहरदार हो तो अल्पायु।

(४) यदि किसी रेखा के प्रारम्भ मे द्वीप चिह्न हो तो बालक का प्रारम्भिक काल (बचपन) रोगयुक्त होता है।

(५) यदि बाद मे द्वीप हो तो बालक दीर्घजीवी नही होता।

(६) यदि कोई रेखा अन्य की अपेक्षा लम्बी और प्रधान हो तो उस बालक का माता-पिता के लिये विशेष महत्व होगा।

(७) स्त्रियो के हाथ मे सन्तान-रेखा विशेष स्पष्ट होती है।

भ्रातृ-रेखा

मणिबन्ध और 'आयु' (हृदय) रेखा के बीच मे, हथेली मे बाहर

की ओर निकली हुई जितनी रेखा हो उतने भाई-बहन होते है। (देखिए चित्र नं० १०९)

चित्र नं० १०९

'स्कन्द पुराण' काशीखंड मे लिखा है—

यावन्त्यो मणिबन्धायुर्लेखयोरन्तरे स्थिता ।
सहोदरगणास्तावान् विशेय पाणि पल्लवे ॥

'सामुद्रतिलक' मे भी लिखा है—

यावन्त्यो मणिबन्धायुर्लेखान्त प्रतिष्ठिता स्थूला ।
तावत्सख्याकान् भ्रातृन वदन्ति सूक्ष्मा पुनर्भगिनी ॥
रेखाभिश्छिन्नाभि सभावित मृत्यवो ज्ञेया ।
भावत्यस्ता पूर्णानियत जीवन्ति तन्सख्या. ॥

अर्थात् जितनी रेखा हो उतने सहोदर भाई, बहन होते है। स्थूल रेखा से भाई, सूक्ष्म रेखाओ से बहन समझना चाहिए। खडित या छिन्न रेखाओ से अल्पायु और पूर्ण तथा सुन्दर रेखाओ से दीर्घायु भाई तथा बहन होते है।

स्वास्थ्य-रेखा की सहायिका-रेखा

बहुत से हाथो मे स्वास्थ्य-रेखा के समानान्तर एक रेखा और होती है। इसे अगरेजी मे Via-Lasciva कहते है। इसका यदि हिन्दी अनुवाद किया जावे तो इसे 'कामुकता की रेखा' कह सकते है। यदि दोनो हाथो मे स्पष्ट हो तो ऐसा व्यक्ति कामुक तथा धन की अत्यन्त इच्छा रखने वाला होता है। (देखिये चित्र नं० ११०)

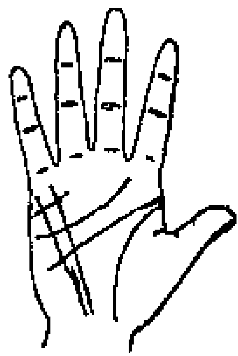
चित्र नं० ११०

यदि यह रेखा लहरदार हो तो मनुष्य व्यभिचारी होता है। इस कारण उसके

भाग्य मे भी बाधा होती है। यदि लहरदार हो और शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हो तो व्यभिचार के कारण मनुष्य की आयु भी कम हो जाती है।

यह एक प्रकार से स्वास्थ्य-रेखा की सहायिका रेखा है और जिस प्रकार जीवन-रेखा कटी या दोषयुक्त हो और उस स्थान पर मंगल-रेखा सुन्दर, स्पष्ट गहरी हो तो जीवन-रेखा के दोष को दूर करती है। उसी प्रकार यदि स्वास्थ्य-रेखा खंडित या दोषयुक्त हो और उस स्थान पर यह सहायिका-रेखा सुन्दर और पूर्ण हो तो स्वास्थ्य-रेखा के दोष को दूर करती है।

इसके विषय मे निम्नलिखित बातो पर विशेष ध्यान रखना चाहिए—

(१) यदि यह बुध-क्षेत्र पर जाकर समाप्त हो तो मनुष्य भाग्यवान्, वाग्मी (सुन्दर वक्ता) व राजनीति मे कुशल होता है किन्तु उसका चरित्र अच्छा नही होता।

(२) यदि अन्त मे दो शाखायुक्त हो जावे तो मनुष्य आलसी, नपुंसक होता है। अत्यन्त भोग के कारण जीर्ण रोगी, कमजोर हो जाता है।

(३) यदि यह स्वास्थ्य-रेखा को काटे तो यकृत रोग, मन्दाग्नि आदि रोग होते है। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य-रेखा से भाग्योदय आदि के जो शुभ लक्षण बताए गए है उनके फल को नष्ट करती है। प्रायः व्यापार आदि मे जो सुन्दर स्वास्थ्य-रेखा के कारण धन-लाभ आदि होते उस शुभ फल को अत्यन्त भोगविलास के कारण मनुष्य स्वय नष्ट कर देता है। जिस अवस्था पर स्वास्थ्य-रेखा को काटे उसी अवस्था पर यह अशुभ फल होता है।

(४) यदि इस रेखा से निकलकर कोई रेखा सूर्य-रेखा मे जाकर मिले—उसे काटे नही तो धनागम, भाग्योदय का लक्षण है। किन्तु यदि सूर्य-रेखा को काटे तो उलटा फल होता है, धन हानि, यश हानि आदि। इसका हेतु वही—अत्यन्त भोगविलास, व्यभिचार प्रवृत्ति आदि समझनी चाहिए।

(५) यदि इस पर 'तारे' का चिह्न हो तो शुभ लक्षण है। मनुष्य को धन-प्राप्ति होती है किन्तु भोगी प्रवृत्ति होने के कारण धन-रक्षा मे बहुत प्रयत्नशील होना पडता है।

एक प्रकार से यह स्वास्थ्य-रेखा की सहायिका-रेखा है इसलिए लक्षण स्वास्थ्य-रेखा के अनुसार ही समझने चाहिए।

अतीन्द्रिय ज्ञान-रेखा

मनुष्य के पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ है। आँख, कान, नाक, त्वचा और जिह्वा इन पाँच ज्ञानेन्द्रियो से देखने का, सुनने का, सुगन्धि-दुर्गन्धि का, गरम, ठण्डा, खुरदरा, मुलायम आदि का स्पर्श ज्ञान एवं जिह्वा से मीठा, कडुआ, खट्टा आदि का रसज्ञान होता है। किन्तु बिना किसी भी ज्ञानेन्द्रिय की सहायता के बहुत बार मन या 'चित्त' को पता लग जाता है कि ऐसा होने वाला है। उदाहरण के लिए कोई आपका मित्र आपसे मिलने आया। बिना हेतु के भी आप ताड जाते है कि यह रुपया उधार मागेगा। या कोई स्त्री एकान्त मे बैठी है और कोई पुरुष किसी बहाने से उसके पास आता है। उसे फौरन भान हो जाता है कि इस पुरुष के मन मे पाप-विचार है।

हमारा मन असल मे ग्यारहवी इन्द्रिय का काम करता है। किसी घटना का कोई हेतु न होते हुए भी बहुत से लोगो के दिल

मे इस प्रकार की स्फूर्ति होती है—या छाया-सी पडती है और भविष्य मे होने वाली घटना की झलक उनके दिल में पड जाती है। यह एक प्रकार से पाँचो ज्ञानेन्द्रियो से ज्ञातव्य ज्ञान से भिन्न है, इसी कारण इसे अतीन्द्रिय ज्ञान कहते है। यह सब मनुष्यो मे समान नही होता। मन मे जो अकल्पित घटना सम्बन्धी स्वय सूझ या स्फूर्ति होती है—इसे अगरेजी मे Intuition कहते हैं।

बहुत से व्यक्तियो मे यह अतीन्द्रिय ज्ञान विशेष मात्रा मे होता है। उनके हाथ मे यह व्यक्त करने वाली रेखा होती है। प्राय चन्द्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हो यह गोलाई लिए बुध-क्षेत्र पर आती है (देखिए चित्र न० १११)। ऐसे व्यक्ति ज्योतिष आदि गुप्त विद्याओ मे भी विशेष प्रवीण हो सकते है।

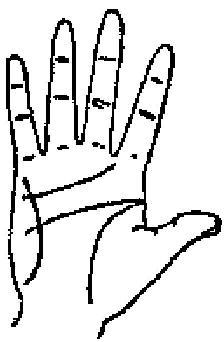

चित्र नं० १११

(१) यदि यह रेखा स्पष्ट हो और बृहत् चतुष्कोण मे क्रॉस-चिह्न हो तो ज्योतिष आदि फलित शास्त्र मे ऐसा व्यक्ति बहुत प्रवीण होता है।

(२) यदि यह रेखा सुन्दर और स्पष्ट हो और चन्द्र-क्षेत्र के ऊपर का भाग विशेष उन्नत हो तो मनुष्य मेस्मेरिजम आदि द्वारा दूसरो पर गहरा प्रभाव डाल सकता है।

(३) चन्द्र-क्षेत्र पर जितने अधिक ऊपर के भाग से यह रेखा प्रारम्भ होगी उतना ही अधिक यह विशेष ज्ञान मनुष्य मे होगा।

(४) यदि यह रेखा मगल के प्रथम क्षेत्र पर समाप्त हो तो उपर्युक्त (२) मे बताया हुआ फल विशेष मात्रा मे होता है।

(५) यदि यह रेखा छोटी, लहरदार व शाखायुक्त हो तो मनुष्य सदैव अस्थिर और अशात रहता है। ऐसे व्यक्ति को प्रसन्न करना कठिन होता है।

(६) यदि कई जगह खण्डित हो तो कभी तो इस विशेष ज्ञान का उदय बहुत अधिक मात्रा मे हो जाता है—कभी बिलकुल नही होता।

(७) यदि भाग्य-रेखा, शीर्ष-रेखा और इस रेखा द्वारा त्रिकोण बनता हो तो ऐसा व्यक्ति गुप्त विद्याओ मे बहुत प्रवीण होता है।

(८) यदि दोनो हाथो में हो और जीवन-रेखा, भाग्य-रेखा तथा यह रेखा बहुत सी आडी रेखाओ से कटी हो उस व्यक्ति के सम्बन्धी उसकी गुप्त विद्याओ की प्रवृत्ति मे बाधक होते है।

१९वाँ प्रकरण—

करतल में चिह्न

'भविष्य पुराण' मे लिखा है कि गहरी और चिकनी रेखा धनियो के हाथ मे होती है दरिद्रो के नही। जिसके हाथ मे मछली के आकार की रेखा हो उसको सब कार्यों मे सफलता मिलती है और धनी तथा वह पुत्रवान होता है। जिसके हाथ मे बहुत बडी तराजू का चिह्न हो उसको व्यापार मे सफलता होती है।

जिसके हाथ मे सूर्य या चन्द्रमा का चिह्न हो वह नित्य यज्ञ करने वाला और बहुत धनी होता है। जिसके हाथ मे पर्वत या वृक्ष का चिह्न हो वह बहुत धनवान होता है और उसके बहुत से नौकर होते हैं।

जिसके हाथ मे शक्ति, तोमर, बाण, तलवार या धनुष के आकार का चिह्न हो वह लडाई (झगडा या मुकदमेबाजी) होने पर विजयी होता है। यदि हाथ के बीच मे ध्वजा या शख दिखाई दे वह बहुत बली होता है और समुद्र-यात्रा करता है।

जिसके हाथ मे चक्र की ही आकार की तरह श्रीवत्स का चिह्न हो या कमल का या वज्र का अथवा रथ या कुम्भ (घडे) का चिह्न हो वह दूसरो की सेना को हराने वाला राजा होता है। आजकल की परिस्थिति मे यह कह सकते है कि वह अपने राज-नीतिज्ञ दल का नेता होकर दूसरे पक्ष को हराता है—

तिस्रो रेखा मणिबन्धनोत्थिता करतलोपगता नृपते।
मीनयुगाङ्कित पाणि नित्य सत्रप्रदो भवति ॥

वज्राकारा धनिना विद्याभाजा तु मीन पुच्छनिभा ।
शङ्खातपत्र शिबिका गजाश्व पद्मोपमा नृपते ॥
कलशमृणालपताकाङ्कुशो पमाभिर्भवति भूपाला ।
दामनिभैश्चगवाढ्य स्वस्तिकरूपाभि रैश्वर्यम् ॥
चक्रासि परशुतोमर शक्ति धनु कुन्त सन्निभा रेखा ।
कुर्वन्ति चमूनाथ यज्वानमुलूखलाकार ॥
मकरध्वज कोष्ठागार सन्निभाभिर्महाधनो पेता ।
वेदीनिभेन चैवाग्नि होत्रिणो ब्रह्मतीर्थेन ॥

वराहमिहिर ने भी कहा है कि यदि तीन रेखा मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर करतल के अन्त तक जाये तो मनुष्य राज्य पदवी प्राप्त करता है अर्थात् राजा होता है। जिसके हाथ मे दो मछलियो के चिह्न हो वह नित्य यज्ञ करने वाला और जिसके हाथ मे वज्र का चिह्न हो वह धनी होता है। जिनके हाथ मे मछली की पूंछ की तरह का आकार बनता हो वे विद्वान् होते है। जिनके हाथ मे शख, छत्र, पालकी, हाथी, घोडे, कमल, कलश, कमल का डठल, पताका या अकुश की आकार का चिह्न हो वे भूपाल अर्थात् पृथ्वी के पालन करने वाले (शक्ति और ऐश्वर्य सम्पन्न पदाधिकारी) होते है। जिनके हाथ मे माला का चिह्न हो वे धनाढ्य और जिनके हाथ मे स्वस्तिक (चतुष्क-चौकोर) चिह्न हो वे ऐश्वर्यमान होते हैं। जिनके हाथ मे ऊखल (ओखली) का-सा चिह्न हो वे यज्ञ करने वाले होते है। जिनके हाथ मे चक्र, तलवार, फरसा, तोमर, शक्ति, धनुष या भाले का चिह्न हो उनके मातहत बडी सेना रहती है।

जिनके हाथ मे मगर, ध्वजा, कोष्ठागार (कोठा) की तरह

चिह्न हो वे बहुत धनी होते है। जिनके हाथ मे बावडी, मन्दिर या त्रिकोण चिह्न हो वे धार्मिक और धनवान होते है। सिंहासन रथ, घोड़े आदि का चिह्न भी शुभ लक्षण है। 'गरुड पुराण' तथा 'स्कन्द पुराण' काशीखड मे भी इन्ही शुभ चिह्नो को दोहराया गया है। स्त्रियो के करतल के विषय मे कहा गया है कि यदि उनके करतल मे श्रीवत्स, ध्वजा, शख, कमल, गज, घोडा, चक्र, स्वस्तिक, वज्र, तलवार, पूर्ण कुम्भ, रथ, अकुश, प्रासाद, छत्र, मुकुट, हार, केयूर, कुडल, तोरण आदि शुभ चिह्न हो तो वह राजा की पत्नी होती है—अर्थात् करतल मे ये सब चिह्न होना शुभ लक्षण है।

जिस स्त्री के हाथ मे स्रुव, रक्त वृक्ष, दण्ड, कुण्ड आदि के चिह्न हो वह यज्ञ करने वाले की पत्नी होती है। जिसके हाथ मे दुकान, रास्ता, तराजू भाण्ड, मुद्रा आदि का चिह्न हो वह रत्न और सुवर्ण की स्वामिनी—वैश्यकी पत्नी होती है। जिसके हाथ मे कृषि मे काम आने वाले हल, ऊखल आदि के चिह्न हो उसका पति कृषि से बहुत कमाता है।

ये सब उस समय के शास्त्रो के वचन है जब ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य, शूद्र सब अपने-अपने वर्णों के अनुरूप कार्य करते थे।

आजकल के समय मे जब सब जाति के लोग सब कार्य करते है इन लक्षणो का अक्षरश मिलना कठिन है। देश और काल मे महान् परिवर्तन हो गया है। इन लक्षणो का यहाँ देने का अभिप्राय यह है कि भारतीय लक्षण-शास्त्र मे करतल के चिह्न के विषय मे क्या लिखा है यह परिचय हो जावे और इन लक्षणो का सार व्यवहार मे लिया जावे—अर्थात् ये शुभ लक्षण है—समृद्धिकारक है।

अनेक प्राचीन ग्रन्थो से सग्रह कर जैन श्वेताम्बर धर्मोपदेष्टा श्री शान्तिविजय जी ने हाथ मे अनेक चिह्नों का फल दिया है। (देखिये चित्र न० ११२)

१. गज—यदि हाथी का निशान हो तो मनुष्य भाग्यवान् बुद्धिमान, राजा के सदृश वैभव वाला हो। हाथी के व्यापार से लाभ हो।

२. मत्स्य—धनवान् आरामतलब, समुद्र-पार देशो की यात्रा करने वाला। मत्स्य (मछली) का चिह्न बहुत शुभ समझा जाता है।

३. पालकी—बहुत द्रव्य-सग्रह हो उत्तम सवारी, बहुत से नौकर-चाकर हो।

४. घोड़े का चिह्न—ऐसा चिह्न होने से घोडो का सुख, राज्य मे ऊँचा पद, सेना मे सम्माननीय स्थान आदि शुभ फल हो।

५. सिंह—यह आकृति होने से बहुत वीर, दूसरो पर शासन करने वाला, कभी न हारने वाला, राज-वैभव युक्त हो।

६. फूल माला—प्रसिद्ध, धार्मिक रुचि वाला, धर्म-कार्यों मे व्यय करने वाला, विजयी धनी हो।

७. त्रिशूल—धर्म मे दृढ मति हो।

८. देव विमान—ऐसा चिह्न होने से शुभ तीर्थ-यात्रा, मन्दिर-निर्माण आदि 'देवाय धर्माय' व्यय करने वाला व्यक्ति होता है।

९. सूर्य—यह चिह्न होने से तेजस्वी प्रकृति का, वीर, सात्विक अधिकार युक्त हो।

१०. अंकुश—विजयी, धनयुक्त हो।

११. मोर—सगीत कला मे अभिरुचि वाला, प्रतिष्ठित, भोगी हो।

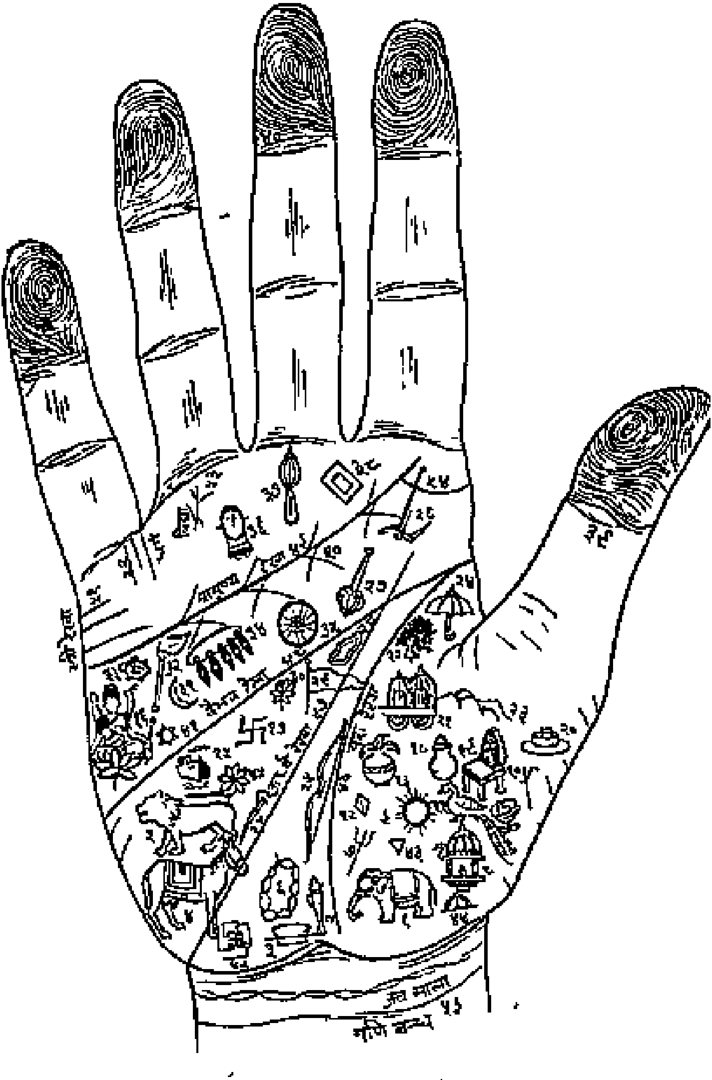

चित्र नं० ११२

१२. जिसके हाथ में ऐसा चिह्न हो वह प्रतापी, भोगी व लोक-विख्यात हो।

१३. कलश—धार्मिक यात्रा करने वाला, विजयी, देव-मन्दिर धर्मशाला आदि बनवावे।

१४. तलवार—भाग्यवान, राज सम्मानित, विजयी हो।

१५. जहाज़—समुद्र-पार देशों से व्यापार करे, भाग्यवान और दीर्घायु हो।

१६. लक्ष्मी—पूर्ण भाग्यवान, धनी।

१७. स्वस्तिक—विद्याभोगी, बुद्धिमान्, ऐश्वर्ययुक्त, लोगों में प्रतिष्ठित, मन्त्री या इसी प्रकार का उच्च वैभवयुक्त हो।

१८. कमंडल—सुखी, धनी, साधुसेवी, धर्मप्रचारक, दूर देशों की यात्रा करने वाला हो।

१९. सिंहासन—उच्च पदाधिकारी, राजा या मन्त्री, शासन करने वाला हो।

२० बावड़ी—धनी, वीर, धार्मिक, परोपकारी हो।

२१ रथ—ऐसा चिह्न होने से सवारी का सुख हो। ऐसा व्यक्ति धनी तथा शत्रुओं पर विजयी हो। बाग, बगीचे जमीन का सुख पूर्ण हो।

२२. कल्पवृक्ष—ऐसा चिह्न होने से पूर्ण धनी, दानी, परोपकारी भोगयुक्त हो।

२३. पर्वत—यह चिह्न होने से बड़ी-बड़ी इमारतें तैयार करावे, जवाहरात के व्यापर से लाभ हो। धनी हो।

२४. छत्र—राजा या राजा के सदृश अधिकार वाला, धार्मिक सर्वमान्य हो।

२५. धनुष—यह चिह्न होने से वीर, विजयी, कभी न हारने वाला हो। शत्रुओं को पराजित करे।

२६. हल—जमीन से लाभ। कृषि-कार्य से धन प्राप्ति।

२७. गदा—वीर, विजयी, दूसरों पर शासन करने वाला प्रभावशाली व्यक्ति हो।

२८. सरोवर—धनवान्, परोपकारी हो। कृषि और भूमि से लाभ हो।

२९. ध्वजा—धार्मिक, कुलदीपक, यशस्वी, प्रतापवान् हो।

३०. पद्म—धार्मिक, विजयी, राजा या राजा सदृश, धन-वैभव वाला और शक्तिशाली हो।

३१. चन्द्रमा का चिह्न होने से बहुत भाग्यवान्, सुन्दर, भोगी-विलासी हो तथा अनेक सुन्दर स्त्रियाँ उससे प्रेम करें।

३२. चामर—चवर का चिह्न होने से राजवैभवयुक्त, धार्मिक देव मन्दिर, धर्मशाला आदि पुण्य-कार्यों मे व्यय करने वाला हो।

३३. कच्छप—कछुवे का चिह्न होने से समुद्र-पार देशों की यात्रा करने वाला, ऐश्वर्ययुक्त हो।

३४. तोरण—धनी, मकान, बगीचे आदि जायदाद से युक्त विशिष्ट भाग्ययुक्त हो।

३५ चक्र—धार्मिक, विद्वानों की सहायता करने वाला, अति धनी, चक्रवर्ती राजा या राजा सदृश वैभवयुक्त हो। अनेक परम सुन्दर रमणियाँ उसको प्रेम करें।

३६ शीशा या दर्पण—उच्च पद पर प्रतिष्ठित होकर शासन करे। तीर्थों मे धर्मशाला या देव मन्दिर निर्माण करावे। वृद्धावस्था मे विरक्त हो धर्म-प्रचार करे और आत्मोन्नति मे समय लगावे।

३७ वज्र—यह चिह्न हो तो परम वीर, विजयी, शासन करने वाला, उच्च पदाधिकारी हो।

३८ वेदी—यह चिह्न होने से मनुष्य धार्मिक, यज्ञकर्ता, मन्त्र-विद्या का ज्ञाता व सात्विक ऐश्वर्य से युक्त होता है।

३९ अगूठे मे यव चिह्न होने से धनी, बुद्धिमान्, सुन्दर वक्ता लोकविख्यात और प्रतिष्ठित होता है।

४० शख—यह चिह्न होने से समुद्र-पार देशो की यात्रा करे और वहाँ के पदार्थों के व्यापार से उत्तम धनलाभ हो। धार्मिक यात्रा तथा देव-मन्दिर, धर्मशाला आदि पुण्य-कार्यों मे सद्व्यय करे।

४१ षट्कोण—भूमि-लाभ हो। ऐसा व्यक्ति धनी और ऐश्वर्य युक्त हो।

४२ नद्यावर्त्त स्वस्तिक का चिह्न होने से धनी, प्रतिष्ठित धार्मिक यात्रा करने वाला, वैभवयुक्त हो।

४३ त्रिकोण—यह चिह्न होने से सवारी तथा गाय-भैंस आदि का सुख, भूमि से लाभ हो। ऐसा व्यक्ति प्रतिष्ठित और धनी हो।

४४. मुकट—यह चिह्न होने से विद्वान्, परम चतुर, धार्मिक, लोकविख्यात, यशस्वी राजा या राजा के सदृश प्रतिष्ठित पदाधिकारी हो।

४५ श्रीवत्स—यह चिह्न होने से धार्मिक, सदैव सुखी, प्रसन्न-मुख, वैभवयुक्त हो। उसके मनोरथ पूरे हो।

४६ यश-रेखा—इसका प्रसिद्ध नाम 'जीवन-रेखा' है विस्तृत के लिये फल पृष्ठ १४५–१८५ देखिये।

४७ ऊर्ध्व-रेखा—इसका प्रसिद्ध नाम 'भाग्य-रेखा' है। देखिये पृष्ठ २४८–२६८।

४८ वैभव-रेखा—इसका प्रसिद्ध नाम शीर्ष-रेखा है। विस्तृत फल पहले दिया जा चुका है। देखिये पृष्ठ १८६–२१६।

४९ आयु-रेखा—इसके विस्तृत विवरण के लिये १२वां प्रकरण देखिये।

५० सम्पत्ति-रेखा—इन चतुष्कोणाकृति रेखाओं का नाम सम्पत्ति-रेखा है। जितने चतुष्कोणाकृति या वर्ग चिह्न हो उतनी ही अधिक सम्पत्ति होगी। इस सम्बन्ध मे हमारा मत श्री शान्ति-विजय जी से पृथक् है। हमारे मतानुसार काटने वाली रेखा सदैव अशुभ होती है। केवल ऊर्ध्वगामी-रेखा जो ऊपर की ओर जावे और किसी रेखा मे मिलकर उनको बल प्रदान कर दे, किन्तु काटें नही वही शुभ होती है।

५१ स्त्री-रेखा—इसका प्रसिद्ध नाम 'विवाह-रेखा' है। विस्तृत विवरण १६वें प्रकरण मे दिया गया है।

५२ धर्म-रेखा—यह सुन्दर अच्छिन्न होने से व्यक्ति मे धार्मिकता आदि गुण होते है। (पाश्चात्य मत भिन्न है जो पृथक् दिया गया है।

५३ विद्या-रेखा—प्रसिद्ध नाम 'सूर्य-रेखा'। देखिये पृष्ठ २७०–२८७।

५४ दीक्षा-रेखा—यह होने से, व्यक्ति धार्मिक व श्रद्धावान् होता है और दीक्षा ग्रहण करता है। इसे अंग्रेजी मे 'बृहस्पति मुद्रिका' कहते है। देखिये पृष्ठ ३५१।

५५. यवमाला—(इसके विस्तृत फल के लिये देखिये पृष्ठ ५१–५२)

श्री शान्तिविजय जी ने इन चिह्नो का एक चित्र भी दिया है जो पाठको के अवलोकनार्थ दिया जा रहा है। वास्तव मे इस प्रकार

के हाथी-घोडे आदि हाथ मे दिखाई देते नही। प्राचीन ऋषियो का हाथी-घोडे से क्या तात्पर्य था—किस चिह्न को हाथी का प्रतीक किसको घोडे का प्रतीक माना जाता था इस सम्प्रदाय और परम्परा का प्राय लोप हो गया है। इस कारण यह कहना बहुत कठिन है कि किस चिह्न को हाथी, किसको घोडा, किसको जहाज माना जाय। दर्पण या शीशा भी भिन्न-भिन्न आकार का होता है। दर्पण का प्रतीक कौनसा चिह्न माना जाय यह समस्या है। ध्वजा, हल, त्रिशूल, डमरू, त्रिकोण, षट्कोण, वेदी, चद्रमा, धनुष आदि चिह्न सुगमता से पहचाने जा सकते है। किन्तु 'पर्वत' से तात्पर्य उठे हुए ग्रह-क्षेत्रो से (जिन्हें—माउण्ट कहते है) तो नही है? जिसे अंग्रेजी मे तारे का चिह्न कहा है वही कच्छप (चारो ओर निकले हुए पैर वाला) तो नही है इत्यादि शका होती है। अस्तु, इस सम्बन्ध मे विद्वान् पाठक अपनी बुद्धि से निर्णय कर ले। प्राचीन मत का परिचय कराने मे यह विवरण सहायक होगा। इस दृष्टिकोण से उपर्युक्त विवरण दिया गया है। अब पाश्चात्य मत दिया जाता है।

पाश्चात्य मत

हाथ पर विविध चिह्न

हाथ पर अनेक प्रकार के चिह्न होते है—कुछ तो प्रधान रेखाओ के परस्पर मेल से बन जाते है—जैसे जीवन-रेखा, शीर्ष-रेखा और स्वास्थ्य-रेखा के मिलने से एक बृहत (बडा) त्रिकोण बन जाता है। किन्तु इन प्रधान रेखाओ के अलावा कुछ चिह्न नन्ही-नन्ही स्वतन्त्र-रेखाओ से बन जाते है। ये चिह्न अनेक प्रकार के होते है जिन्हे उनके स्वरूप के अनुसार तारे का चिह्न, क्रॉस, त्रिकोण, चतुष्कोण, बिन्दु आदि कहते है। साथ के चित्र मे इन

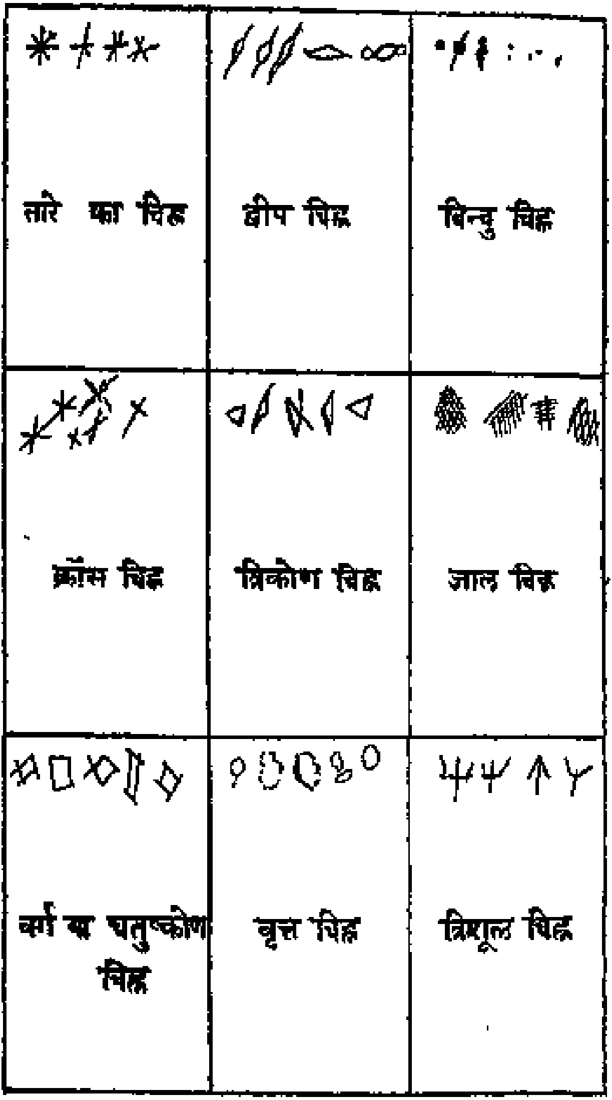
तारे का चिह्न
द्वीप चिह्न
बिन्दु चिह्न
क्रॉस चिह्न
त्रिकोण चिह्न
जाल चिह्न
वर्ग या चतुष्कोण चिह्न
वृत्त चिह्न
त्रिशूल चिह्न

चित्र नं० ११३

सब का स्वरूप दिखाया गया है। इसको देखकर पाठक देखेंगे कि एक ही चिह्न कई प्रकार का होता है। इस का कारण यह है कि, प्रत्येक मनुष्य की प्राणशक्ति और प्रवृत्तियाँ भिन्न-भिन्न होती है। इस कारण मनुष्य का स्वरूप, हाथ का लक्षण और चिह्नो के आकार भी अलग-अलग होते है। तारे का चिह्न या क्रॉस प्राय स्वतन्त्र ही होते है। किन्तु त्रिकोण या वर्ग चिह्न बहुधा किसी प्रधान रेखा पर इस प्रकार बने होते है कि एक भुजा प्रधान रेखा बनाती है और अन्य दो या तीन भुजाये अन्य गौण रेखाओ द्वारा बनती है।

तारे का चिह्न

बृहस्पति के क्षेत्र पर

तारे का चिह्न मुख्य चिह्नो मे से एक है। यह सदैव अशुभ नही होता बल्कि अच्छे स्थानो में होने से बहुत उत्तम फल दिखाता है। यदि बृहस्पति-क्षेत्र के सबसे ऊँचे उठे हुए स्थान पर हो तो जातक को बहुत उच्च मान, प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। उसकी महत्वाकाक्षाएँ सफल होती हैं और ऐसा जातक सब कठिनाइयो और विरोधियो पर विजय पाकर पूर्ण गौरव प्राप्त करता है। यदि शीर्ष-रेखा तथा भाग्य और सूर्य-रेखाएँ भी पूर्ण बलिष्ठ और सुन्दर हो तो कोई भी काम इतना ऊँचा नही जिसमे जातक सफलता प्राप्त नहीं कर सके। प्राय ये लक्षण अत्यन्त महत्वाकाक्षी और उच्च पद पर पहुँचने वाले लोगो के हाथ मे पाये जाते है।

किन्तु यदि ग्रह-क्षेत्र के उच्च शिखर पर यह चिह्न न हो किन्तु क्षेत्र के समाप्ति-स्थान पर बिलकुल तर्जनी उगली के नीचे या हथेली के बाहरी भाग की ओर हो तो जातक बडे-बडे लोगो के सम्पर्क

मे आता है किन्तु स्वयं किसी बहुत उच्च पद पर नही पहुंच पाता यह इस तारे के चिह्न का फल है। यदि हाथ मे अन्य शुभ लक्षणो से महान् पदवी प्राप्त कर ले तो भिन्न बात है।

शनि-क्षेत्र पर

यदि यह तारे का चिह्न शनि-क्षेत्र के सर्वोच्च शिखर पर हो तो किसी भयानक दुर्घटना का लक्षण है, इस चिह्न से मनुष्य बहुत विख्यात हो जाता है। किन्तु नेकनामी से नही, बल्कि बदनामी से। बहुत बार इस का फल यह होता है कि जातक को लकवे की बीमारी होती है। पुराने हस्तपरीक्षको के अनुसार यदि हाथ मे अन्य अशुभ लक्षण हो और दोनो हाथो मे इसी स्थान पर तारे का चिह्न भी हो तो जातक को फाँसी की सजा होती है। किन्तु यदि एक ही हाथ मे यह चिह्न हो और वह भी अस्पष्ट और खण्डित रूप मे तो अस्वास्थ्य का लक्षण है। ऐसे जातक का बुढापा भी अच्छा नही बीतता। यदि यह तारे का चिह्न शुक्र-मेखला पर हो तो जातक को आतशक या सुजाक की भयकर बीमारी होती है। यदि भाग्य-रेखा मध्यमा उगली के भीतर तक गई हो और भाग्य-रेखा पर—शनि-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो तो जातक का कोई खून करे या हाथ मे अन्य अशुभ लक्षण हो तो जातक स्वय हिसक प्रवृत्ति का हो। यह तारे का चिह्न शनि-क्षेत्र के बिलकुल किनारे पर—जहाँ शनि-क्षेत्र समाप्त होता है हो— तो जातक किसी ऐसे व्यक्ति के सम्पर्क मे आता है जो खून या अन्य दुष्कर्मो के कारण बदनाम हो।

सूर्य-क्षेत्र पर

यदि सूर्य-क्षेत्र के सर्वोच्च शिखर पर तारे का चिह्न हो तो

जातक को धन, मान और प्रतिष्ठा तो बहुत ऊँचे दर्जे की प्राप्त होती है किन्तु उसका जीवन सुखी नही होता। प्राय ऐसे व्यक्ति बुढापे मे अधिक धनी होते है और उच्चपद प्राप्त करते है। इस सफलता की प्राप्ति के लिये जीवनभर अत्यन्त परिश्रम करने के कारण उनका स्वास्थ्य खराब हो जाता है और उनके मन मे भी सदैव अशान्ति रहती है। इस कारण उनका जीवन सुख और शान्तिमय नही होता। यदि यही तारे का चिह्न सूर्य के क्षेत्र की सीमा के आस-पास हो तो जातक उपर्युक्त प्रकार के प्रभावशाली व्यक्ति के सम्पर्क मे आता है, किन्तु स्वय उच्चपद पर नही पहुँचता। यदि सूर्य-रेखा के ऊपर यह चिह्न हो तो बहुत शुभ लक्षण है, इसका विवरण सूर्य-रेखा के प्रकरण मे दिया गया है। बिलकुल उगली के मूल मे यह उतना प्रभावशाली नही होता जितना क्षेत्र के मध्य मे। यदि सूर्य-रेखा अच्छी न हो और केवल तारे का चिह्न हो तो बहुत साहस-पूर्ण (जिसमे घाटे की भी आशका हो) कार्य द्वारा जीवन में धन प्राप्त होता है। किन्तु अच्छी सूर्य-रेखा से युक्त होने से अपनी बुद्धि और परिश्रम से (अन्याय से नही) शुभ मार्ग से धन की प्राप्ति होती है।

बुध के क्षेत्र पर

यदि बुध-क्षेत्र के शिखर पर यह चिह्न हो तो वैज्ञानिक आवि-ष्कारो में या व्यापार मे जातक बहुत बुद्धिमान होता है और पूर्ण सफलता प्राप्त करता है। बुध-क्षेत्र तथा कनिष्ठिका उगली से व्यापार, वक्तृत्व शक्ति आदि देखे जाते हैं। इसलिये अन्य लक्षणो से जिस ओर विशेष झुकाव मालूम हो उसी कार्य मे सफलता-प्राप्ति कहना चाहिए। किन्तु यदि यह चिह्न बिलकुल सीमा प्रदेश

पर हो तो जातक केवल उपर्युक्त प्रकार के लोगो के सम्पर्क मे आता है। यदि हाथ मे अन्य लक्षण बेईमानी के हो तो तारे के चिह्न से बेईमानी बढ जाती है। यदि हाथ मे शुभ लक्षण हो तो जातक अवश्य बुद्धिमान होता है। वह दूसरे के विचारो और योजनाओ को भली प्रकार समझ सकता है। यदि स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा से योग न करती हो और बुध-क्षेत्र तक तिरछी, सुन्दर (लहरदार या टूटी न हो) आवे और इस रेखा के अन्त पर बुध-क्षेत्र के ऊपरी भाग पर तारे का चिह्न हो और बुध-क्षेत्र भी अच्छा हो तो जातक को निरन्तर सफलता प्राप्त होती है। व्यापारियो के हाथ मे यह बहुत उत्तम लक्षण है।

मंगल-क्षेत्र पर

यदि मगल के प्रथम क्षेत्र पर यह चिह्न हो तो जातक धैर्यपूर्वक निरन्तर परिश्रम करने के कारण सफलता प्राप्त करता है। किन्तु हाथ मे यदि अन्य अशुभ लक्षण हो और मगल का क्षेत्र अत्यधिक उन्नत हो तो जातक किसी का खून करता है। यदि क्षेत्र साधारण उन्नत है और उस पर यह चिह्न है तो अन्य अशुभ लक्षण होने से जातक का स्वय का खून किया जाता है। यदि मगल के द्वितीय क्षेत्र पर यह चिह्न हो तो लडाई मे वीरतापूर्वक लडने के कारण जातक को सुयश और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। किन्तु यदि किसी सीधी रेखा (शीर्ष-रेखा के प्रायः समानान्तर) के अन्त मे यह चिह्न हो तो जातक के किसी अत्यन्त प्रिय सम्बन्धी (पिता आदि) की मृत्यु का लक्षण है।

चन्द्र-क्षेत्र पर

यदि चन्द्र-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो तो बहुत से हस्तपरीक्षकों के अनुसार यह पानी में डूबने का लक्षण है। यदि शीर्ष-रेखा घूम कर चन्द्र-क्षेत्र के नीचे के भाग पर आती है तो इससे कल्पना की अधिकता प्रकट होती है। उस रेखा के अन्त पर तारे का चिह्न होने से उसकी कल्पना में इतनी अधिकता हो जाती है कि उसे एक प्रकार से मस्तिष्क-विकार समझना चाहिए। अन्य शुभ लक्षणों के साथ यदि चन्द्र-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो तो उसे अशुभ लक्षण नहीं समझना चाहिए। क्योंकि शुभ कल्पना द्वारा यह सफलता और प्रतिष्ठा दिलाता है। किन्तु यदि अन्य अशुभ लक्षण हों तो चन्द्र-क्षेत्र के बिल्कुल नीचे के भाग में होने से जातक को जलोदर रोग होने का लक्षण है। यदि मध्य भाग में हो तो पानी में डूबने का, यदि समुद्र-यात्रा रेखा पर हो तो जहाज डूबने का।

शुक्र-क्षेत्र पर

'कीरो' का मत है कि यदि शुक्र-क्षेत्र के सबसे ऊँचे भाग पर या मध्य भाग में यह चिह्न हो तो शुभ लक्षण है। ऐसे जातक को प्रेम में असाधारण सफलता प्राप्त होती है। प्राय अधिक प्रेम प्राप्त होने पर भी ईर्ष्या या कलह के कारण प्रेम की मधुरता में कटुता आ जाती है। किन्तु शुक्र-क्षेत्र पर यह चिह्न होने से किसी प्रकार का विघ्न नहीं होता। किन्तु 'सेंट जरमेन' के मत से यदि यह चिह्न बिल्कुल अंगूठे के मूल में—शुक्र-क्षेत्र पर हो तभी यह फल घटित होता है। यदि अन्य स्थान पर हो तो किसी प्रिय सम्बन्धी की मृत्यु का लक्षण है। यदि कई तारे के चिह्न पास-पास हों तो जितने चिह्न हों उतने ही प्रियजनों की मृत्यु समझनी चाहिए। यदि शुक्र-क्षेत्र पर मणि-

वन्ध रेखा से एक अंगुल दूर—जहां सन्तान-रेखा होती है वहाँ यह चिह्न हो तो किसी स्त्री से प्रेम के द्वारा जातक की भाग्य-हानि का लक्षण है। यदि स्त्री के हाथ मे हो तो किसी पुरुष के प्रेम के कारण समझना चाहिये। यदि इसके अतिरिक्त शीर्ष-रेखा भी घूम कर चन्द्र-क्षेत्र पर गई हो तो मस्तिष्क-विकार का लक्षण है।

क्रॉस का चिह्न

बृहस्पति के क्षेत्र पर

कुछ स्थानो के अतिरिक्त तारे का चिह्न प्रायः शुभ लक्षण समझा जाता है किन्तु क्रॉस के चिह्न का प्रभाव अधिकतर अशुभ होता है। यदि बृहस्पति के क्षेत्र पर हो तो जातक को प्रेम या विवाह मे सुख और जीवन मे सफलता मिलती है। यदि इस लक्षण के साथ-साथ भाग्य-रेखा भी चन्द्र-क्षेत्र से प्रारम्भ हुई हो तो बहुत ही शुभ लक्षण है। जातक को प्रेम-क्षेत्र मे पूर्ण सुख प्राप्त होता है। यदि यह क्रॉस जीवन-रेखा के बिल्कुल पास हथेली के अन्त मे गुरु-क्षेत्र पर हो तो युवावस्था के प्रारम्भ मे ही शुभ प्रेम या विवाह-सम्बन्ध होता है। यदि गुरु-क्षेत्र के मध्य मे चिह्न हो तो युवावस्था के मध्य मे और यदि बिलकुल तर्जनी उंगली के मूल मे गुरु-क्षेत्र पर क्रॉस का चिह्न हो तो जवानी ढलने पर यह शुभ अवसर मिलता है।

यहाँ इस ओर ध्यान दिलाना आवश्यक है कि यह क्रॉस का चिह्न बिल्कुल दो स्वतन्त्र नन्ही रेखाओ के एक-दूसरे को काटने से बनेगा तभी शुभ लक्षण समझा जायगा। यदि जीवन-रेखा से कोई शाखा या सूक्ष्म रेखा निकल कर बृहस्पति के क्षेत्र पर आई

हो और उसको कोई छोटी रेखा आडी काट कर क्रॉस का चिह्न बनावे तो यह अशुभ लक्षण है। इसका अर्थ है कि जीवन-रेखा से निकल कर ऊपर की ओर जाती हुई जो रेखा उन्नति या अभ्युदय सूचित करती थी उसमे बाधा पड गई, इसलिये निराशा और असफलता का लक्षण हुआ। इसी प्रकार यदि हृदय-रेखा से निकलकर कोई शाखा या सूक्ष्म रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर जावे और उसको कोई छोटी आडी रेखा काटे तो प्रेम मे निराशा या इस कारण भाग्य-हानि सूचित होती है।

यदि बृहस्पति के क्षेत्र पर तारे का तथा स्वतन्त्र-रेखाओ द्वारा बना क्रॉस चिह्न ये दोनो शुभ लक्षण हो, तो जातक को विवाह (या प्रेम) द्वारा पूर्ण सुख और प्रतिष्ठा दोनो प्राप्त होती है।

शनि के क्षेत्र पर

यदि शनि के क्षेत्र पर क्रॉस का चिह्न हो तो अशुभ लक्षण है। शनि-क्षेत्र से सम्बन्धित जो बीमारी या दुर्घटना या भाग्य-हानि के लक्षण है—उन सब मे और भी बुराई पैदा करता है। यदि इस स्थान पर भाग्य-रेखा से योग करता हो तो सहसा या किसी दुर्घटना से मृत्यु का लक्षण है। यदि शुक्र-क्षेत्र बहुत छोटा और दबा हुआ हो, सन्तान-रेखाये अस्पष्ट हो और शनि-क्षेत्र पर क्रॉस चिह्न हो तो जातक के सन्तान नही होती।

सूर्य-क्षेत्र पर

सूर्य-क्षेत्र पर यह चिह्न होना घोर निराशा, असफलता, धन-नाश आदि का अशुभ लक्षण है। यदि सूर्य-रेखा से योग करता हो और सूर्य-रेखा बहुत उत्तम हो तो धार्मिक प्रवृत्ति बहुत उत्तम होती

है और सफलता भी मिलती है। किन्तु सूर्य-रेखा खराब हो तो धर्मान्धता होती है। जो कुछ शुभ लक्षण यहाँ बताया गया है वह सूर्य-रेखा की उत्तमता के कारण, क्रॉस का चिह्न तो अशुभ ही है। यदि जातक कलाकार होगा तो कुछ ऐसी गलती करेगा कि उसे असफलता ही मिलेगी। जिनके हाथ में यह चिह्न हो उनको सावधान कर देना चाहिये कि घाटे का या सट्टे का काम न करें वरना बहुत अधिक घाटा सहना पड़ेगा।

बुध-क्षेत्र पर

यदि बुध-क्षेत्र पर क्रॉस चिह्न तो जातक में चालाकी जरूरत से ज्यादा होती है। वह दोरंगी बातें करता है, मन में कुछ और बाहर कुछ और। ऐसे लोग प्राय बेईमान भी होते हैं। यदि हाथ में अन्य अशुभ लक्षण हो तो निश्चय ऐसा व्यक्ति धोखेबाज होता है। परन्तु साथ ही उसमें चतुरता इतनी होती है कि जिससे अत्यन्त द्वेष या घृणा रखता हो उसको भी झुक के नमस्कार करेगा और मीठी-मीठी बातें करेगा। यदि छोटे-छोटे कई क्रॉस चिह्न हो तो उसमें गुप्त दुर्गुण होते हैं।

मंगल के क्षेत्र पर

यदि मगल के प्रथम क्षेत्र पर यह चिह्न हो तो उसके शत्रु बहुत भयानक रूप से जातक का विरोध करते हैं। यदि मगल का क्षेत्र अति उच्च हो तो जातक स्वयं भी बड़ा झगड़ालू होता है और स्वयं जातक को चोट लगने या भय की आशका होती है। यदि मगल के द्वितीय क्षेत्र पर हो तो करीब-करीब उपर्युक्त किन्तु विशेष भयानक फल होता है। यदि यह क्रॉस बेढगा-सा बना हो तो जातक

की स्वभाव की तीव्रता के कारण आत्महत्या की ओर भी प्रवृत्ति होती है।

चन्द्र-क्षेत्र पर

यदि चन्द्र-क्षेत्र पर क्रॉस चिह्न हो और शीर्ष-रेखा के नीचे हो तो जातक के विचारो मे युक्ति, व्यावहारिकता नही होती, इस कारण वह स्वय भी धोखे मे पडा रहता है और किसी कार्य का सफलता-पूर्वक सम्पादन नही कर सकता। यदि यह चिह्न बहुत बडा हो तो जातक धोखेबाज होता है। या कम-से-कम अपनी शेखी बघारा करता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह अशुभ लक्षण है। यदि चन्द्र-क्षेत्र के ऊपर के तृतीयाश पर हो तो अन्तडियो की बीमारी, उदरविकार आदि होते है। यदि मध्य मे हो तो वात-विकार गठिया आदि। यदि नीचे के तृतीयाश मे हो तो गुर्दे का रोग, मूत्राशय-सम्बन्धी रोग। यदि स्त्रियो के हाथ मे हो तो गर्भाशय-सम्बन्धी रोग होते है।

शुक्र-क्षेत्र पर

यदि शुक्र-क्षेत्र पर क्रॉस का गहरा चिह्न हो तो किसी सम्बन्धी के (पिता-माता, चाचा आदि) प्रेम के कारण बहुत कठिनता या मुसीबत उठानी पडेगी। किन्तु कुछ पाश्चात्य हस्तपरीक्षको के विचार से यदि यह क्रॉस बडा हो तो प्रेम मे सफलता का लक्षण है। जातक किसी एक व्यक्ति को ही जी-जान से प्रेम करता है। किन्तु यदि क्रॉस चिह्न बहुत छोटा हो और जीवन-रेखा के बिलकुल पास हो तो नजदीकी सम्बन्धियो से कलह और कटुता का लक्षण है।

अन्य स्थान पर

यदि भाग्य-रेखा के पास (उस ओर, जिस ओर जीवन-रेखा है)

करतल-मध्य मे क्रॉस का चिह्न हो तो जातक के कारबार मे उसके सम्बन्धी-रिश्तेदार बाधा पहुँचाते है। इस कारण कारोबार या नौकरी मे महान् परिवर्तन होता है। किन्तु यदि यही चिह्न रेखा के इस ओर न होकर दूसरी ओर (चन्द्र-क्षेत्र की ओर) हो तो कारबार (या नौकरी) की दृष्टि से कोई लम्बी यात्रा की जाये तो परिणाम मे निराशा प्राप्त होती है। यदि शीर्ष-रेखा के ऊपर यह चिह्न हो तो सिर मे चोट या दुर्घटना का लक्षण है। यदि सूर्य-रेखा के बगल मे हो तो पदच्युति और निराशा का लक्षण है। यदि भाग्य-रेखा के ऊपर क्रॉस का चिह्न हो तो आर्थिक घाटा या धन-प्राप्ति मे निराशा होगी। यदि हृदय-रेखा पर क्रॉस चिह्न हो (यह आवश्यक नही कि हृदय-रेखा को स्पर्श करे) तो किसी प्रियजन की मृत्यु का अशुभ लक्षण है।

चतुष्कोण चिह्न

चतुष्कोण या वर्ग चिह्न कई प्रकार के होते है। रेखागणित की परिभाषा के अनुसार वर्ग उसे कहते है जिसकी चारो भुजाये बराबर हो और चारो कोण समकोण हो। चतुष्कोण उसे कहते है जिसकी चार भुजाये हो परन्तु हस्त-रेखा-चिह्नो मे चाहे चारो समकोण हो या, न्यून या अधिक कोण। मोटे तौर पर यदि वर्ग या चतुष्कोण का चिह्न बनता हो तो उन सब का फलादेश चतुष्कोण या वर्ग मान कर ही किया जाता है। इस कारण रेखागणित की भाँति हस्त-रेखा-विज्ञान मे परिभाषा की बारीकी से पाबन्दी नही करनी चाहिये।

चतुष्कोण चिह्न को अच्छा चिह्न माना गया है। बहुत बार दो प्रधान रेखाओ को यदि दो अन्य रेखाये जोड कर चतुष्कोण

बनता है तो उसे भी चतुष्कोण मान लिया जाता है और यह तो अकसर होता है कि वर्ग या चतुष्कोण की एक भुजा तो किसी प्रधान रेखा का एक भाग हो और बाकी तीन भुजाये छोटी स्वतन्त्र रेखाये हो।

साधारणतः चतुष्कोण चिह्न किसी विपत्ति से रक्षा सूचित करता है इसलिये यदि किसी अशुभ चिह्न के चारो ओर चतुष्कोण चिह्न हो तो विपत्ति से रक्षा समझनी चाहिये। उदाहरण के लिये जीवन-रेखा खण्डित हो और खण्डित भाग के चारो ओर चतुष्कोण चिह्न हो तो किसी भयानक बीमारी या दुर्घटना होने पर भी जातक की प्राणरक्षा हो जावेगी। यदि खडित भाग्य-रेखा किसी सुनिर्मित[1] चतुष्कोण के अन्दर से जा रही हो तो किसी आर्थिक विपत्ति या कठिनता से रक्षा सूचित करती है। यह तो फलादेश हुआ व्यापारिक-वर्ग के लिये। जो लोग नौकरीपेशा है उनके जीवन मे नौकरी छूटने का प्रसग या झझट उपस्थित होगा। यह भी सम्भव है कि उन्हे किसी अन्य प्रकार से घाटा लग जाये। किन्तु भाग्य-रेखा बिना खण्डित हुए चतुष्कोण के बीच से निकलती हुई—आगे सुन्दर और सबल रूप से चली जाये तो हानि या घाटा नही होने पाता। यदि भाग्य-रेखा बीच मे टूट कर फिर शुरू हो जाये और इस खण्डित भाग के चारो ओर चतुष्कोण चिह्न हो तो यह समझना चाहिये कि भाग्य-सम्बन्धी कोई महान् सकट उपस्थित हुआ किन्तु थोडी ही विपत्ति के बाद रक्षा हो गई, बडा सकट टल गया। यदि भाग्य-रेखा के ऊपर ठीक शनि-क्षेत्र के नीचे वर्ग चिह्न हो तो किसी दुर्घटना

---

१ जब चतुष्कोण की चारों भुजायें सुस्पष्ट और गहरी हो और अच्छी तरह वर्ग या चतुष्कोण का आकार बनता है तो इसे सुनिर्मित कहते हैं।

से रक्षा सूचित होती है। यदि शीर्ष-रेखा किसी वर्ग चिह्न के अन्दर होकर जाती हो तो यह प्रकट होता है कि जातक को घोर मानसिक परिश्रम करना पड़ा या घोर चिन्ता के कारण उपस्थित हुए, परन्तु जातक का दिमाग सही-सलामत रहा। यदि यह चिह्न शनि-क्षेत्र के नीचे शीर्ष-रेखा पर हो तो सिर की किसी गहरी चोट से रक्षा हुई।

यदि हृदय-रेखा किसी वर्ग चिह्न के अन्दर से जाती हो तो प्रेम के कारण गहरी विपत्ति या कष्ट की द्योतक है। यदि यह वर्ग चिह्न उपर्युक्त प्रकार का शनि-क्षेत्र के नीचे हो तो जातक के किसी अत्यन्त प्रेमी व्यक्ति की दुर्घटना से मृत्यु होती है। ये उदाहरण इसलिये दिये गये हैं कि इसी के अनुसार अन्य किसी रेखा पर या उसके चारों ओर वर्ग चिह्न हो तो रेखा और स्थान का तारतम्य करके नतीजा निकालना चाहिये।

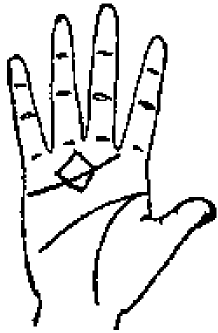

चित्र नं० ११४

ग्रह-क्षेत्रों पर वर्ग चिह्न का प्रभाव

यदि बृहस्पति के क्षेत्र पर वर्ग चिह्न हो तो अत्यधिक उत्साह या घमण्ड से जातक को बचाता है। बहुत बार मनुष्य इस कारण सफल नहीं होता कि वह अपनी हैसियत से कहीं ऊँची वस्तु पाने की महत्वाकांक्षा रखता है। इसी प्रकार व्यापार में सम्भावना से कहीं अधिक लाभ की आशा में मनुष्य रुपया बुरी तरह लगा देता है। बृहस्पति-क्षेत्र अत्यधिक उन्नत होने से मनुष्य में अभिमान की मात्रा भी बहुत अधिक हो जाती है और इसका परिणाम बुरा होता है।

इन सब बातो से वर्ग चिह्न रक्षा करता है। यदि शनि-क्षेत्र पर हो तो किसी दुर्घटना से जातक को बचाता है अर्थात् दुर्घटना हो तो भी जातक की मृत्यु नही होती। यदि वर्ग के अन्दर तारे का चिह्न हो तो कोई व्यक्ति जातक को कत्ल करने का उद्योग करेगा किन्तु जातक की रक्षा हो जायगी। यदि वर्ग के चारो कोणो पर लाल बिन्दु हो तो आग मे जल जाने की दुर्घटना उपस्थित होगी किन्तु जातक बच जावेगा।

यदि सूर्य-क्षेत्र पर वर्ग चिह्न हो तो जातक मे अत्यधिक यश-लिप्सा नही होती। जिसके हाथ में यह चिह्न होता है वह इस भावना से कि मेरी ख्याति हो जायगी आर्थिक दृष्टिकोण को बिल-कुल भुला दे—ऐसा नही होता। ऐसा व्यक्ति व्यापारियो से कस कर पैसा लेता है। अधिक धन-सचय करने पर भी उसमें घमण्ड नही होता।

यदि बुध-क्षेत्र पर यह चिह्न हो तो जातक मे विशेष चचलता नही होती बल्कि वह स्थिर प्रकृति का होता है। भारी आर्थिक घाटे से भी यह चिह्न रक्षा करता है।

यदि मगल का प्रथम क्षेत्र खासा उन्नत हो तो जातक का गुस्से का स्वभाव होता है। परन्तु उस पर यदि वर्ग चिह्न हो तो वह सयम द्वारा अपने क्रोध को काबू मे रखता है। यदि यह क्षेत्र नीचा हो और इस पर वर्ग चिह्न हो तो समझना चाहिये कि जातक के शत्रु उस पर शारीरिक हमला करेगे किन्तु उसकी रक्षा हो जावेगी।

यदि चन्द्र-क्षेत्र पर यह चिह्न हो तो अत्यधिक कल्पना से (खयाली पुलाव पकाना) जो दोष होते है उनसे रक्षा होती है। यदि

जल मे डूबने के या अन्य अशुभ लक्षण चन्द्र-क्षेत्र पर हो तो वर्ग चिह्न उन सब दुर्घटनाओ से रक्षा करता है।

यदि शुक्र-क्षेत्र पर वर्ग चिह्न हो तो अत्यधिक कामवासना के कारण जातक किसी कठिनाई या परेशानियो मे नही पड़ता। यदि शुक्र-क्षेत्र के बिलकुल बीच में यह चिह्न हो तो मनुष्य किसी से प्रेम हो जाने के कारण अनेको झगड़ो और मुसीबतो मे पड़ जायगा लेकिन बिना किसी खास नुकसान के उनसे सही-सलामत निकल जावेगा। यदि शुक्र-क्षेत्र पर बिलकुल नीचे और जीवन-रेखा के बिलकुल पास यह चिह्न हो तो या तो जातक को जेल होती है अथवा वह कुछ काल के लिये एकान्तवास करता है।

यदि वर्ग चिह्न जीवन-रेखा से भिडा हुआ, जीवन-रेखा के बाहरी भाग पर हो (जीवन-रेखा के एक ओर-शुक्र-क्षेत्र होता है इसलिये दूसरी ओर) तो भी जातक को जेल होती है या वह एकान्त-वास करता है।

जाल चिह्न

जब अनेक छोटी-छोटी सीधी और आडी रेखाये एक-दूसरे को काटती हुई जाली सी बना दे तो उन्हे जाल चिह्न कहते है। प्राय ये ग्रह-क्षेत्रो पर अधिक दिखाई देते है। यह अशुभ लक्षण है। जिस ग्रह-क्षेत्र पर यह चिह्न हो उस ग्रह-सम्बन्धी जातक की उन्नति में बाधा पडती है। प्राय उस ग्रह से सम्बन्धित कोई अवगुण जातक की प्रकृति मे ऐसा होता है जिसके कारण वह उन्नति नही कर पाता।

यदि बृहस्पति के क्षेत्र पर जाल-चिह्न हो तो जातक मे मिथ्या अभिमान, दूसरे को दबाकर रखने की चेष्टा, धर्मान्धिता तथा चरित्र-

हीनता के दुर्गुण होते है। यदि शनि-क्षेत्र पर हो तो जिन्दगी भर जातक भाग्यहीन रहता है, खास तौर पर आर्थिक दृष्टि से बुढ़ापा बुरा बीतता है। अन्य अशुभ लक्षण होने से जातक जेल भी जाता है। इस क्षेत्र पर जाल चिह्न का यह भी प्रभाव होता है कि जातक सदैव दुःखी और गमगीन रहता है।

यदि सूर्य-क्षेत्र पर यह चिह्न हो तो जातक में घमण्ड बहुत होता है। उसके दिल मे बस एक ही भावना प्रबल होती है कि वह प्रसिद्ध हो जाये और इसलिए बेवकूफियाँ करता है। वास्तव मे जातक मे योग्यता तो होती है कम परन्तु वह समझता है कि वह बहुत योग्य है और इस कारण वह अपनी सही स्थिति को समझकर जो थोडी सी सफलता प्राप्त कर सकता था वह भी नही कर पाता। यदि बुध-क्षेत्र पर जाल का चिह्न हो तो मनुष्य अस्थिर बुद्धि का होता है, उसके मन मे उचित-अनुचित का भी विचार नही होता और बेईमानी करता है। यदि अन्य अशुभ लक्षण हो तो इस बेईमानी के कारण गहरी यातना भोगनी पडती है (जेल जाना, आत्महत्या करना आदि)। यदि मगल के क्षेत्र पर यह चिह्न हो तो रक्तस्राव का रोग या चोट लगने से रक्तस्राव होता है। यदि मगल का क्षेत्र बहुत उन्नत हो तो जातक स्वय किसी का खून बहाना चाहता है। यदि जाल चिह्न इतना बडा हो कि आधा मगल-क्षेत्र और चन्द्र-क्षेत्र का ऊपर का तृतीयाश जाल चिह्न से भरा हुआ हो तो उदर-विकार व अन्तडियों की बीमारी होती है।

जिस व्यक्ति के चन्द्र-क्षेत्र पर जाल चिह्न होता है उसके मन मे सदैव अस्थिरता, अशान्ति और असन्तोष रहता है। यदि इसके साथ-साथ (१) हृदय-रेखा शृंखलाकार या द्वीपयुक्त हो तो ऐसे

आदमी अस्थिर प्रेम-सम्बन्ध वाले, व्यभिचारी प्रवृत्ति के होते है।

(२) यदि शीर्ष-रेखा शृंखलाकार, घूमी हुई या अन्य अशुभ लक्षणयुक्त हो तो मस्तिष्क-विकार होता है।

(३) शनि-क्षेत्र पर तारे का चिह्न हो तो लकवा या Apoplexy का भय।

(४) यदि सूर्य-रेखा बहुत सुन्दर हो तो सुन्दर काव्य लिखने की शक्ति होती है।

चन्द्र-क्षेत्र को तीन भागो मे बाटना चाहिये। ऊपर के तृतीयाश पर जाल चिह्न हो तो उदर-विकार, अन्तडियो की बीमारी, यदि मध्य तृतीयाश मे हो तो वात-विकार, गठिया आदि। यदि नीचे के तृतीयाश मे हो तो गुर्दे का रोग या मूत्राशय-सम्बन्धी रोग समझने चाहिये। यदि स्त्रियो के हाथ मे नीचे के तृतीयाश मे जाल चिह्न हो तो गर्भाशय-सम्बन्धी रोग का लक्षण है।

यदि शुक्र-क्षेत्र पर जाल चिह्न हो तो जातक बहुत कामुक होता है। जिधर तबीयत आई उधर ही चले गये। जिससे प्रेम करना है उसकी स्थिति, प्रतिष्ठा आदि का विचार जातक नही करता। यदि साथ ही शुक्र-क्षेत्र चपटा और सख्त हो तो जातक मे सौन्दर्य-प्रियता या प्रेम-सम्बन्धी उच्च भावना नही रहती। वह केवल व्यभिचारी होता है।

त्रिकोण चिह्न

यह शुभ लक्षण है, परन्तु प्रधान रेखा या रेखाओ के मिलने से हाथ मे अनेक त्रिकोण बनते हैं उनका लक्षण यहा नही दिया जा रहा है। यहाँ केवल उन त्रिकोण चिह्नो का लक्षण देते है जो शुद्ध स्वतन्त्र रूप से किसी ग्रह-क्षेत्र पर स्पष्ट हो। यदि बृहस्पति-

क्षेत्र पर त्रिकोण चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति नीतिकुशल और बुद्धिमान होता है। उसमे प्रबन्ध-कुशलता भी बहुत अधिक होती है और वह मातहत लोगो से अच्छी तरह काम ले सकता है। यदि शनि-क्षेत्र पर हो तो गुप्त विद्याओ (योग, ज्योतिष, मन्त्र-तन्त्र आदि) मे विशेष बुद्धि लगती है। किन्तु यदि मध्यम उगली के तृतीय पर्व पर तारे का चिह्न भी हो तो जातक अपनी उपर्युक्त योग्यता द्वारा दूसरे को हानि पहुँचाता है। यदि सूर्य-क्षेत्र पर त्रिकोण चिह्न हो तो ख्याति प्राप्त होने पर भी जातक मे घमण्ड नही होता। वह अपनी कला या बुद्धि का व्यावहारिक दृष्टि से उपयोग करता है। जिससे उसको सफलता और ख्याति प्राप्त होती है।

यदि बुध-क्षेत्र पर हो तो बुद्धि मे स्थिरता होती है और व्यापार तथा धनोपार्जन मे सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति राजनीति-कुशल भी होता है। यदि मगल के क्षेत्र पर हो तो विपत्ति के समय भी मनुष्य नही घबराता और शान्तिपूर्वक सकट से निकलने की युक्ति सोचता है। यदि किसी फ़ौजी जनरल के हाथ मे यह चिह्न हो तो वह बडे तरीके से अपनी फौजो को लडायेगा। सैनिक उत्कृष्टता का यह उत्तम लक्षण है।

जिन व्यक्तियो के चन्द्र-क्षेत्र पर त्रिकोण चिह्न होता है वे कल्पना के बहाव मे बह नही जाते। कल्पना का उचित प्रयोग करते है और किसी कार्य को तरतीब से सोचकर उसका सम्पादन करते है। कल्पना और बुद्धि के सयोग से ऐसे व्यक्तियो को सफलता प्राप्त होती है।

यदि शुक्र-क्षेत्र पर त्रिकोण-चिह्न हो तो ऐसा जातक प्रेम के तूफान मे बह नही जाता। उसमे विचार-शक्ति और सयम होता

है। वह ठण्डे दिमाग से सोचकर प्रेम-सम्बन्ध करता है।

त्रिशूल-चिह्न

किसी भी ग्रह-क्षेत्र पर त्रिशूल चिह्न पाया जाय तो यह शुभ लक्षण है। जिस ग्रह के क्षेत्र पर यह हो उस ग्रह-सम्बन्धी सफलता का लक्षण है।

वृत्त-चिह्न

पृष्ठ ३७४ पर दिए गये वृत्त चिह्न देखिये। यद्यपि रेखा-गणित की परिभाषा के अनुसार वृत्त चिह्न बिलकुल गोल नही होते फिर भी वृत्त चिह्न की भाँति गोलाई लिए हुए जो चिह्न मिलते है उन्हें वृत्त चिह्न कहते है। यदि किसी प्रधान रेखा पर यह चिह्न हो तो यह प्रकट होता है कि उस समय जातक कठिनाई मे पड़ेगा। बार-बार उन कठिनाइयो से निकलने की चेष्टा करेगा—उसे मालूम होगा कि वह किनारे पर आ लगा है, परन्तु फिर फिसल कर गड्ढे में जा पड़ेगा और कठिनाइयो का क्रम बना रहेगा।

यदि बृहस्पति-क्षेत्र पर यह चिह्न हो तो कुछ हस्त-परीक्षको ने इसे सफलता का लक्षण बताया है। एक तो साधारणत इस क्षेत्र पर यह चिह्न पाया ही नही जाता और जहाँ मिला भी वहाँ हमारे अनुभव से यह शुभ लक्षण सिद्ध नही हुआ। शनि-क्षेत्र पर भी यही फल समझना चाहिये। सूर्य-क्षेत्र पर यह चिह्न हो तो जातक की अत्यन्त ख्याति होती है। किन्तु यदि वृत्त-चिह्न सुस्पष्ट और पूर्ण न हो अर्थात् अच्छी प्रकार से न बना हो और सूर्य-रेखा भी दुर्बल हो तो अशुभ लक्षण समझना चाहिये। वृद्धावस्था में नेत्रो की ज्योति क्षीण हो जायगी। बुध-क्षेत्र पर यह बहुत अशुभ

लक्षण है। यदि किसी जातक के हाथ पर स्पष्ट वृत्त-चिह्न बन रहा हो तो जहरीले पदार्थ खाने से उसकी मृत्यु होती है। मगल के क्षेत्र पर भी यह अशुभ लक्षण है। आँख मे चोट लगती है। चन्द्र-क्षेत्र पर होने से ऐसा व्यक्ति डूब कर मरता है। शुक्र-क्षेत्र पर होने से जातक को लम्बे अरसे तक कोई रोग होता है और वह बीमारी कुछ-न-कुछ परेशान करे रहती है।

धब्बे या बिन्दु-चिह्न

यह भी अशुभ लक्षण है। दोनो का फल प्राय एक-सा है। पहले बताया जा चुका है कि यह रोग का लक्षण है। जीवन-रेखा के सिलसिले मे इसका काफी हवाला दिया गया है। यदि इनका रग काला या नीला हो तो स्नायु-सम्बन्धी रोग होते है। यदि स्वास्थ्य-रेखा पर लाल बिन्दु या धब्बे हो तो बुखार और यदि इसी प्रकार का कोई धब्बा शीर्ष-रेखा पर हो तो सिर मे चोट लगती है।

बृहस्पति के क्षेत्र पर होने से आदमी की बदनामी और बरबादी होती है। बहुत घाटा लगने या अन्यान्य कारण से मानभग, निर्धनता आदि का लक्षण है। यदि शनि-क्षेत्र पर हो तो दुष्प्रवृत्ति होती है। ये बुरी भावनाएँ किस तरफ जावेगी इनका परिचय शीर्ष तथा हृदय-रेखाओ से लगेगा। यदि सूर्य-क्षेत्र पर यह चिह्न हो तो मान-भग, प्रतिष्ठा नाश आदि का अत्यन्त अशुभ लक्षण है। बुध-क्षेत्र पर होने से व्यापार मे गहरा घाटा लगता है। यदि मसूर की तरह बडा चिह्न हो तो किसी दुर्घटना से शरीर मे चोट भी लगती है। मगल-क्षेत्र पर होने से जातक की किसी के साथ लडाई होती है और उसके चोट लगती है। किन्तु यदि मगल-क्षेत्र उन्नत हो तो

जातक दूसरे को घायल करता है। यदि चन्द्र-क्षेत्र पर हो तो स्नायु-सम्बन्धी या मस्तिष्क-सम्बन्धी विकार होता है, यदि अन्य अशुभ लक्षण हो तो पागलपन वरना साधारण रोग समझना चाहिये। शुक्र-क्षेत्र पर ऐसा चिह्न होने से आतशक, सुजाक या इसी प्रकार का रोग होता है। यदि काला चिह्न हो तो इसी रोग की भयंकरता समझनी चाहिए।

ग्रह-क्षेत्र पर एक या अधिक सीधी या आड़ी रेखाओं का फल

बृहस्पति-क्षेत्र पर

यदि बृहस्पति-क्षेत्र पर जहाँ तर्जनी और अनामिका उंगलियाँ मिलती है, कोई खड़ी रेखा हो[1] तो अंतड़ियो की कमजोरी—उदर-विकार होता है। यदि बृहस्पति-क्षेत्र के मध्य मे कोई खड़ी रेखा हो तो उस क्षेत्र के शुभ फल को बढ़ाती है किन्तु यदि दो समानान्तर खडी रेखाएँ हो तो ऐसे आदमी की महत्वाकांक्षाएँ दो दिशाओ को जाती है, इस कारण उसे सफलता नही होती। यहाँ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि एक खड़ी रेखा का जो शुभ फल बताया गया है वह तभी होता है जब वह किसी प्रधान-रेखा को न काटे। उदाहरण के लिए जिस एक खड़ी रेखा का होना शुभ बताया गया है वह यदि हृदय-रेखा या हृदय-रेखा की शाखा को काटे तो पूर्ण अशुभ फल होगा।

यदि गुरु-क्षेत्र पर छोटी-छोटी चार, पाँच या अधिक खड़ी रेखाएँ हो तो ऐसा व्यक्ति बारम्बार सफलता के लिए उद्योग करेगा

---

१. उंगलियो की दिशाओं में जो रेखा हो वह खड़ी रेखा और हृदय-रेखा की दिशा में जो रेखाएँ हों उन्हें इस प्रकरण में आड़ी रेखा कहा गया है।

किन्तु उसे सफलता प्राप्त न होगी। यदि बृहस्पति-क्षेत्र पर छोटी-छोटी आड़ी रेखाएँ हो तो असफलता का चिह्न है। ऐसे व्यक्ति को बारम्बार घाटा होता है।

शनि-क्षेत्र पर

यदि शनि-क्षेत्र पर केवल एक ही खड़ी रेखा हो तो शुभ चिह्न है। ऐसा व्यक्ति बहुत भाग्यशाली होता है। किन्तु यदि यह रेखा स्वतन्त्र रेखा न हो केवल भाग्य-रेखा का ही अन्तिम भाग हो और भाग्य रेखा कई जगह कटी हो तो ऐसे जातक का बुढ़ापा साधारण तथा शान्तिपूर्वक बीतता है। यदि भाग्य-रेखा के दोनों ओर एक-एक छोटी समानान्तर-रेखा हो तो जीवन के अन्तिम भाग मे बहुत परिश्रम के फलस्वरूप सफलता प्राप्त होती है। यदि शनि-क्षेत्र पर कई खड़ी रेखा हो तो दुर्भाग्य का लक्षण है। जितनी अधिक रेखाये होगी उतना ही अधिक दुर्भाग्य समझना चाहिए। यदि कई रेखाएं न तो बिल्कुल आड़ी हो न बिल्कुल सीधी किन्तु करीब ४५° का कोण बनाती हुई हृदय-रेखा को काटती हुई शनि-क्षेत्र पर आवे तो वात-विकार, वायु का लक्षण है।

यदि कोई छोटी रेखा आड़ी हो और भाग्य-रेखा को काटे तो अशुभ लक्षण है। भाग्य मे हानि होती है। यदि सूर्य-रेखा सूर्य-क्षेत्र पर अच्छी न हो तो शनि-क्षेत्र पर भाग्य-रेखा का कटना विशेष अशुभ लक्षण समझना चाहिये। यदि कई छोटी-छोटी आड़ी रेखाये एक के ऊपर एक नसेनी-सी बनाती हो तो एसे जातक की क्रमश: उन्नति होती है।

सूर्य-क्षेत्र पर

यदि सूर्य-क्षेत्र पर एक शुद्ध, गम्भीर खड़ी रेखा हो तो जातक

बहुत धनी और यशस्वी होता है। यदि दो रेखायें हो तो ऐसा व्यक्ति दो ओर अपनी बुद्धि और ध्यान को लगाता है इस कारण उसे सफलता प्राप्त नहीं होती। किन्तु यदि एक प्रधान सूर्य-रेखा हो और दूसरी उसकी सहायक रेखा हो तो शुभ फल है। यदि कई खड़ी रेखा हो तो न शुद्ध रूप से साहित्यिक या कलात्मक प्रवृत्ति होती है न वैज्ञानिक या व्यावसायिक। इस कारण जातक का मन किसी एक कार्य मे स्थिरतापूर्वक नही लगता। अनेक बात करने का विचार करता है और परिणाम कुछ नही निकलता।

बुध-क्षेत्र पर

यदि बुध-क्षेत्र पर एक खड़ी रेखा हो तो अकस्मात् आर्थिक उन्नति या व्यापार से लाभ होता है। यदि यह रेखा बहुत गहरी हो और अन्य लक्षण भी विज्ञान की ओर प्रवृत्ति करते हो तो वैज्ञानिक आविष्कार मे विशेष सफलता मिलती है। यदि कई खड़ी रेखाएँ हो तो ऐसा व्यक्ति यदि डाक्टरी पढे तो कुशल चिकित्सक हो सकता है। यदि स्त्री के हाथ मे हो तो वह भी डाक्टर होती है या डाक्टर से विवाह करती है। किन्तु यदि छः से अधिक और अत्यन्त सूक्ष्म खड़ी रेखाये हो तो जातक बहुत चालाक होता है। यदि वैज्ञानिक हो तो विज्ञान का दुरुपयोग करता है। यदि ये रेखाये हृदय-रेखा का स्पर्श करे तो जातक उदारता के आवेश मे रुपया बरबाद करता है। यदि किसी स्त्री के हाथ मे बुध-क्षेत्र पर कई छोटी-छोटी खड़ी रेखाये हो तो वह बहुत बातूनी होती है। यदि बुध के क्षेत्र पर एक गहरी आड़ी रेखा हो तो जातक के घर में चोरी होती है और द्रव्य-हानि का लक्षण है।

मंगल के क्षेत्र पर

यदि मगल के क्षेत्र पर एक खडी रेखा हो तो जातक मे साहस होता है। विपत्ति में भी उसका दिमाग ठण्डा रहता है। घबराता नही। यदि कई घिचपिच लाइन हो तो जातक को क्रोध बहुत आता है। उसके चित्त में कठोरता होती है और यह चरित्रहीनता का भी लक्षण है। यदि हाथ के अन्य लक्षणो से अस्वास्थ्य सूचित होता हो तो फेफडे या गले की बीमारी होती है। खास तौर पर यदि यह रेखा द्विशाखायुक्त हो जाये।

यदि मगल-क्षेत्र पर कई आडी रेखाये हो तो शत्रुता प्रकट करती है। यदि ये रेखाये गहरी और लम्बी हो तो शत्रु भी शक्ति-शाली होगे। यदि हलकी और छोटी हो तो शत्रु विशेष पराक्रमी न होगे। यदि ये रेखाये बहुत बडी हो और स्वास्थ्य-रेखा को काटे तो शत्रुता के कारण स्वास्थ्य मे खराबी होगी। यदि सूर्य-रेखा को काटे तो मान, प्रतिष्ठा मे बट्टा लगेगा और धनहानि भी होगी। यदि भाग्य-रेखा को काटे तो जातक के कारबार को गहरा धक्का लगेगा या नौकरी छूटगी। यदि यह जीवन-रेखा को काटे तो रिश्तेदार या अपने मित्र ही छिपे हुए दुश्मन होगे।

चन्द्र-क्षेत्र पर

यदि चन्द्र-क्षेत्र पर एक खडी रेखा हो तो अशुभ लक्षण है। यदि इस खडी रेखा को कोई छोटी आडी रेखा काटे (खास तौर पर चन्द्र-क्षेत्र के मध्य भाग मे) तो गठिया, वायु-विकार की बीमारी होती है। यदि बहुत सी टूटी-फूटी खडी रेखाये हो तो मस्तिष्क की कमजोरी से नीद नही आती। यदि हाथ के बाहरी भाग से प्रारम्भ

होकर एक या अनेक आडी रेखा हो तो समुद्र-यात्रा या लम्बी यात्रा होती है। यदि यह यात्रा-रेखा टूटी हो या द्वीपयुक्त हो या किसी छोटी रेखा से कटी हो तो यात्रा मे भय या अशुभ परिणाम होता है। यदि यह रेखा हृदय-रेखा तक जाय और वहाँ जाकर समाप्त हो जाय तथा उस स्थान पर (हृदय-रेखा पर) तारे का चिह्न हो तो जातक सब कुछ का त्याग कर अपने प्रेमी (या प्रेमिका) को लेकर दूर देश चला जावेगा।

यदि चन्द्र-क्षेत्र पर बहुत सी घिच-पिच रेखाये हो और शीर्ष-रेखा द्वीपयुक्त या शृखलाकार घूमकर चन्द्र-क्षेत्र पर आवे और वहां शीर्ष-रेखा के अन्त पर तारे का चिह्न भी हो तो जातक पागल हो जाता है।

शुक्र-क्षेत्र पर

यदि जीवन-रेखा के समानान्तर, मगल-रेखा की भाँति अन्य रेखा हो तो जातक का प्रेम-सम्बन्ध प्रकट करती है। यदि शुक्र-क्षेत्र पर दो या तीन खडी रेखाये हो तो जातक के प्रेम-सम्बन्ध मे स्थिरता नही होती अर्थात् कई सम्बन्ध होते है।

यदि गहरी आडी रेखाये हो और अगुष्ठ मूल से निकलकर जीवन-रेखा तक आये तो समझना चाहिये कि जातक के जीवन मे किसी समय स्त्रियो का प्रभाव उस पर विशेष रहा है। यदि स्त्री के हाथ मे ऐसी रेखा हो तो पुरुष का प्रभाव विशेष समझना चाहिये।

यदि इन रेखाओं मे से किसी के बीच मे द्वीप चिह्न हो तो अनुचित प्रेम-सम्बन्ध प्रकट होता है।

शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होकर जो प्रभाव या चिन्ता-रेखाये करतल-

मध्य की ओर आती हैं उनका विस्तृत वर्णन भिन्न प्रकरण मे किया गया है।

बृहत् चतुष्कोण में विविध चिह्न और उनका फल

रेखाएं—यदि हाथ बडा हो, हथेली लम्बी हो, उगलियाँ छोटी हो और उनसे गाठे न निकली हो और इस भाग मे बहुत-सी सूक्ष्म रेखा हो तो मस्तिष्क कमजोर होता है, इस कारण कम बुद्धि, मानसिक उद्वेग तथा स्वभाव मे चिडचिडापन होता है (देखिये चित्र नं० ११५)

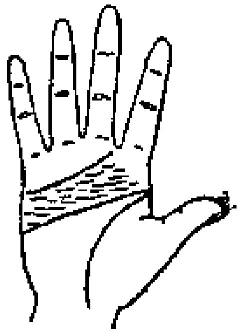

चित्र नं० ११५

खड़ी रेखा—यदि इस भाग से प्रारम्भ होकर कोई रेखा सूर्य-क्षेत्र पर जावे तो किसी बडे आदमी की सहायता के कारण सफलता मिलती है।

आड़ी-रेखा—यदि हृदय-रेखा तथा शीर्ष-रेखा के समानान्तर कोई दो शाखायुक्त रेखा हो तो मनुष्य नासमझी से कार्य करता है, (जिस अवसर जो नही करना चाहिये वह करता है) और हानि उठाता है।

लाल बिन्दु चिह्न—यदि हाथ मे अन्य लक्षण खराब हो तो ऐसा मनुष्य किसी का कत्ल करता है या गहरी चोट पहुँचाता है। परन्तु यदि जीवन-रेखा आदि यह सूचित करती हो कि स्वय इसकी आकस्मिक मृत्यु होगी तो स्वय जातक को कोई कत्ल करता है या गहरी चोट पहुँचाता है।

सफेद चिह्न—शारीरिक कमजोरी, खराब स्वास्थ्य का लक्षण है।

क्रॉस चिह्न—(१) यदि क्रॉस चिह्न इस प्रकार बना हो कि हृदय-रेखा को स्पर्श करे तो ऐसे पुरुष पर किसी स्त्री का प्रभाव होता है। यदि स्त्री के हाथ मे हो तो पुरुष का प्रभाव समझना चाहिये। यदि यह क्रॉस भाग्य-रेखा या सूर्य-रेखा को स्पर्श न करे तो शुभ लक्षण है। यदि शीर्ष-रेखा को स्पर्श करे तो जिसके हाथ मे चिह्न हो वह अन्य स्त्री-पुरुष पर विशेष प्रभाव डालता है इस स्थिति मे भी सूर्य या भाग्य-रेखा को स्पर्श करे तो अशुभ अन्यथा शुभ समझना चाहिये।

(२) यदि इस भाग मे शनि-क्षेत्र के नीचे सुन्दर, सुस्पष्ट बड़ा सा क्रॉस हो और दो छोटी स्वतन्त्र रेखाओ से बनता हो (शुक्र-क्षेत्र से आने वाली प्रभाव रेखा, भाग्य-रेखा, सूर्य-रेखा आदि से न बनता हो) और अतीन्द्रिय ज्ञान-रेखा (Line of Intuition) स्पष्ट हो तो मनुष्य गुप्त विद्याओ (मन्त्रशास्त्र, तन्त्र, ज्योतिष आदि) मे बहुत प्रवीण होता है। यदि यह भाग्य-रेखा को स्पर्श करे तो धार्मिक या धर्म-सम्बन्धी कार्यो के कारण भाग्य-वृद्धि का लक्षण है।

ऊपर जो 'क्रॉस' चिह्न के फल बताये गये है वे तभी शुभ फल देगे जब वे सुन्दर और स्पष्ट हो। यदि अस्पष्ट क्रॉस चिह्न दोनो हाथो मे हो तो अशुभ लक्षण है। जो ग्रह-क्षेत्र हाथ मे अत्युन्नत हो उस पर अशुभ चिह्न के कारण जो हानि बताई गई है उसमे वृद्धि करते है। यदि बृहस्पति-क्षेत्र अत्युन्नत हो तो अत्यधिक महत्वाकाक्षा के कारण हानि, शनि-क्षेत्र हो तो दु खी स्वभाव और नैराश्य, सूर्य-क्षेत्र अति उन्नत हो तो अति अभिमान और लोभ, बुध-क्षेत्र अति उन्नत हो तो धोखा देने या चोरी करने की प्रवृत्ति, चन्द्र-क्षेत्र हो तो पागलपन का रोग (भविष्य मे), मंगल का प्रथम क्षेत्र अति

उच्च हो तो अत्यन्त क्रोधी स्वभाव, शुक्र-क्षेत्र अति उच्च हो तो कामुकता तथा व्यभिचार की प्रवृत्ति, मंगल का द्वितीय क्षेत्र दोषयुक्त हो तो कायरता व भाग्य-हानि का कारण होता है।

तारे का चिह्न—यदि बृहत् चतुष्कोण में शनि-क्षेत्र के नीचे तारे का चिह्न हो तो मनुष्य की भाग्यवृद्धि बहुत अधिक होती है और उसे अपने कारबार या नौकरी में प्रमुखता प्राप्त होती है। यदि सूर्य-क्षेत्र के नीचे वाले भाग में हो तो बहुत धन प्राप्त होता है अथवा कला या साहित्य में यश-प्राप्ति होती है। बुध-क्षेत्र के नीचे हो तो व्यापार या वैज्ञानिक क्षेत्र में या इंजीनियरी आदि में सफलता का लक्षण है।

यदि तारे का चिह्न भाग्य-रेखा के दाहिनी ओर (दाहिने हाथ में) या बायें हाथ में (भाग्य-रेखा के बायीं ओर) बृहत् चतुष्कोण में हो और हृदय-रेखा टूटी हो तो किसी स्त्री से अत्यन्त प्रेम होता है। स्त्री के हाथ में पुरुष (या पति) का प्रेम समझना चाहिये।

त्रिकोण चिह्न—गम्भीर वैज्ञानिक विषयों के अध्ययन की ओर प्रवृत्ति होती है।

वर्ग चिह्न—यदि बृहत् चतुष्कोण सुन्दर आकार का हो तो मनुष्य दयालु स्वभाव का होता है। किन्तु यदि वर्ग चिह्न हो तो दयालु स्वभाव होने पर भी अत्यन्त क्रोधी होता है। यदि किसी रेखा (भाग्य-रेखा या सूर्य-रेखा आदि) का स्पर्श करे तो उस रेखा की त्रुटि की पूर्ति करता है।

वृत्त चिह्न—(१) नेत्र-रोग का लक्षण है।

(२) यदि शनि-क्षेत्र के नीचे तीन वृत्त चिह्न एक-दूसरे को स्पर्श करते हुए हों तो मिरगी का रोग होता है।

जाल चिह्न—यदि बृहत् चतुष्कोण बहुत चौडा हो और मंगल-क्षेत्र बहुत उच्च हो और बृहत् चतुष्कोण मे जाल चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति पागल की तरह बकता या अधिक बोलता है।

बृहत् त्रिकोण में विविध चिह्न और उनका फल

बिन्दु चिह्न—यदि स्त्रियो के हाथ मे लाल बिन्दु चिह्न हो तो उनके गर्भिणी होने का लक्षण है। यदि सफेद बिन्दु चिह्न हो तो खून की कमी, कमजोरी से मूर्च्छा रोग का लक्षण है।

रेखा —(क) जीवन-रेखा से निकल कर यदि ऊपर की ओर रेखाये जावे (देखिये चित्र न० ११६) तो यह बहुत शुभ लक्षण है। जिस अवस्था मे जीवन-रेखा से ये शाखा-रेखा निकले उस वर्ष मे धनागम, भाग्योदय, यश, प्रतिष्ठा-वृद्धि समझना चाहिये।

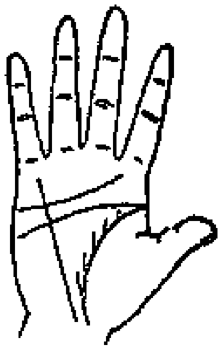

चित्र नं० ११६

(ख) यदि बृहत् त्रिकोण के मध्य मे (जीवन-रेखा या भाग्य-रेखा को स्पर्श न करती हुई) कोई दो शाखायुक्त छोटी सी रेखा हो तो स्वास्थ्य की कमजोरी प्रकट करती है।

क्रॉस चिह्न—(क) यदि मध्य भाग मे कोई 'क्रॉस' चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति अन्य लोगो से झगडा कर अपने लिये कठिनाइयाँ पैदा करेगा। यदि दोनो मे यह चिह्न हो और अन्य लक्षणो से पुष्टि होती हो, तो कत्ल तक कर सकता है।

(ख) यदि बहुत से 'क्रॉस' चिह्न हो तो निरन्तर भाग्यहीनता (तरक्की मे रुकावट) प्रकट होती है। यदि जहाँ स्वास्थ्य-रेखा जीवन-

रेखा से मिलती है उस कोण के पास बृहत् त्रिकोण मे क्रॉस चिह्न हो तो कोई फौजदारी मुकदमा चलता है। ऐसे व्यक्ति की मान-प्रतिष्ठा को काफी धक्का पहुँचने का अन्देशा होता है। जीवन मे काफी गिरावट (तबदीली) होती है।

(ग) यदि जहाँ जीवन-रेखा और शीर्ष-रेखा मिलती हैं उस कोण के पास क्रॉस चिह्न हो और किसी प्रधान रेखा को स्पर्श न करता हो तो ऐसा व्यक्ति मुकदमा जीतता है किन्तु यदि शीर्ष-रेखा या जीवन-रेखा को क्रॉस स्पर्श करे तो मुकदमा हार जाता है।

(घ) यदि बृहत् त्रिकोण के मध्य मे स्पष्ट-सा क्रॉस चिह्न हो (शुद्ध एक रेखा दूसरे को न काटे किन्तु क्रॉस के ढग का चिह्न हो) और शनि-क्षेत्र पर आडी रेखाये हो तो बराबर भाग्यहीनता का सिलसिला चलता है।

तारे का चिह्न—(क) यदि एक हाथ मे एक चिह्न हो तो शुभ लक्षण है। मनुष्य को बहुत परिश्रम करने पर धन या सफलता प्राप्त होती है किन्तु यदि दोनो हाथो मे यह चिह्न हो तो अशुभ लक्षण है। किसी अस्त्र या दुर्घटना से मृत्यु होती है।

(ख) यदि स्वास्थ्य-रेखा के पास—बृहत् त्रिकोण के अन्दर तारे का चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति अन्धा हो जाता है।

(ग) यदि तारे का चिह्न स्पष्ट न हो किन्तु पिच-पिच हो तो प्रेम-सम्बन्ध के कारण कठिनाइयाँ होती है।

(घ) यदि शुक्र-क्षेत्र से कोई प्रभाव-रेखा चलकर जीवन-रेखा को काटती हुई बृहत् त्रिकोण के मध्य मे आवे और समाप्त हो जावे और इस रेखा के अन्त पर तारे का चिह्न हो तो बडा सदमा होता है। यदि जहाँ से यह प्रभाव-रेखा प्रारम्भ हुई है उस ओर भी तारे

का चिह्न हो तो अत्यन्त निकट सम्बन्धी या मित्र की मृत्यु का सदमा लगता है।

वृत्त चिह्न—किसी स्त्री के कारण कठिनाइयाँ उठानी पड़ती है। यदि स्त्री के हाथ मे हो तो किसी पुरुष के कारण समझनी चाहिये। यदि चन्द्र-क्षेत्र भी उच्च हो तो चिड़चिड़ापन, दूसरे की बात काटना, झगड़ा करना आदि का स्वभाव होता है।

वर्ग चिह्न—यदि किसी रेखा का स्पर्श न करे तो खतरे का अन्देशा सूचित करता है।

त्रिकोण चिह्न—यदि जीवन-रेखा और भाग्य-रेखा के बीच मे हो तो लड़ाई (फौजी जीवन) मे यश, प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

जाल चिह्न—यदि हाथ मे अन्य लक्षण अच्छे हो तो यह प्रकट होता है कि ऐसे व्यक्ति के बहुत से गुप्त शत्रु होगे। यदि हाथ में अन्य लक्षण अच्छे न हो तो ऐसे व्यक्ति की शर्मनाक मृत्यु होती है।

२०वाँ प्रकरण

अंगूठे और उंगलियों पर चिह्न

भारतीय मतानुसार उंगलियो तथा अंगुष्ठ पर यह चिह्न होना अच्छा माना गया है। खडी रेखाओ को भी शुभ लक्षण कहा है। परन्तु रेखाओ से भी अधिक महत्व उन आकृतियो को दिया गया है जो शरीर की त्वचा मे सूक्ष्म धारियो के विविध आकार के होने से बन जाती है। जब अंगूठे या उंगली के अग्रभाग की छाप सफेद कागज पर ली जाती है तो इन धारियो की आकृति स्पष्ट दिखाई देती है।

जो शख की आकृति के चिह्न होते हैं, उन्हें शख कहते है। ये दो प्रकार के होते हैं—एक बायी ओर घूमे हुए, दूसरे दाहिनी ओर घूमे हुए। जो गोल-कुण्डल के समान आकृति होती है उसे 'चक्र' कहते है। इन दोनो लक्षणो से भिन्न जो आकृति होती है उसे 'सीप' कहते हैं।

चारो उंगलियो तथा अंगुष्ठ के अग्रभाग पर चक्र होना शुभ लक्षण है। इस प्रकार दोनो हाथो मे दस चक्र चिह्न हो तो मनुष्य सर्वैश्वर्यवान् किन्तु अल्पायु होता है, नौ चक्र हो तो राजा, आठ हो तो रोगयुक्त शरीर वाला, सात हो तो पुण्यशील, छ हो तो भोग-विलास मे रत, पाँच हो तो भी यही फल, चार हो तो दरिद्र, तीन हो तो धनवान्, दो हो तो मान, प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला, एक हो तो सुखी होता है।

इसी प्रकार यदि दस शख हो तो विशिष्ट राजा या विशिष्ट

योगी, नौ हो तो स्त्री-प्रकृति का, आठ हो तो सुखी, सात हो तो दरिद्र, छः हो तो विद्वान्, पाँच हो तो बहुत बड़े साम्राज्य का अधीश्वर, चार हो तो राजा, तीन हों तो स्त्री-वियोगी, दो हो तो दरिद्र, एक हो तो विद्वान् होता है।

सीप का फल इस प्रकार है--एक सीप वाला राजा, दो हो तो दरिद्र, तीन हो तो योगी, चार हो तो दरिद्र, पाँच हों तो धनी, छः हो तो योगी, सात हो तो दरिद्र, आठ हो तो धनी, नौ हो तो योगी, दस हो तो दरिद्र होता है। बहुत से ग्रन्थो के अनुसार, एक से अधिक शुभ फल दो का, दो से अधिक तीन का, इस प्रकार उत्तरोत्तर शुभ फल होता है। परन्तु हम इस मत से सहमत नही हैं।

पाश्चात्य मत

प्रथम पर्व पर चिह्न

रेखा--यदि अगूठे के प्रथम पर्व पर एक दो या तीन खड़ी रेखाएँ हो तो इच्छाशक्ति या चित्त की दृढता मे वृद्धि होती है। ऐसे व्यक्ति अपने इरादे के पक्के होते है। यदि तीन रेखाएँ हों तो इच्छाशक्ति के अनेक बातो मे बट जाने के कारण किसी एक इरादे मे मनुष्य उतना पक्का नही रहता। (देखिये चित्र न० ११७) यदि बिल्कुल नाखून के पास हो तो विरासत मिलती है।

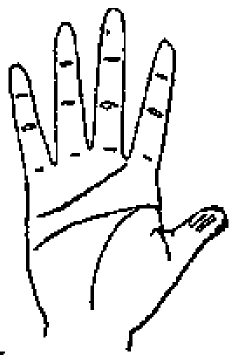

चित्र नं० ११७

यदि इन खड़ी रेखा या रेखाओं को कोई आडी रेखा काटती हो, या कोई खडी रेखा न हो और केवल आड़ी रेखाएँ हों तो सफलता मे बाधा समझनी चाहिये।

यदि प्रथम पर्व से प्रारम्भ होकर कोई रेखा जीवन-रेखा तक आवे तो शस्त्र से मृत्यु होती है।

क्रॉस चिह्न—यदि अंगुष्ठ के प्रथम पर्व पर नाखून के बिल्कुल पास क्रॉस चिह्न हो और शुक्र-क्षेत्र बहुत उन्नत हो या जालयुक्त हो तो अन्य स्त्री या पुरुष से अनुचित प्रेम-सम्बन्ध होता है।

यदि नाखून के पास दो क्रॉस चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत आरामतलब होता है।

तारे का चिह्न—यदि प्रथम पर्व पर तारे का चिह्न हो तथा शुक्र-क्षेत्र बहुत ऊँचा उठा हुआ हो या जालयुक्त हो तो ऐसे व्यक्ति का चरित्र अच्छा नहीं होता।

यदि अंगूठे के नाखून के पास दो तारे के चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति हमेशा दूसरे की बात में गलतियाँ निकालता रहता है और नुकताचीनी की आदत होती है।

त्रिकोण चिह्न—यदि अंगूठे के प्रथम पर्व पर त्रिकोण का चिह्न हो तो जातक की चित्त-शक्ति वैज्ञानिक अनुसन्धान या कार्यों में विशेष लगती है। यदि किसी ऐसे पुरुष या स्त्री के ये लक्षण हो और विज्ञान से उस व्यक्ति का कोई सम्पर्क न हो तो ऐसे काम में चित्त का लगना बताना चाहिये जिसमें हिसाब-किताब, नाप-तोल आदि का ज्यादा कार्य पड़ता हो।

वृत्त चिह्न—यदि प्रथम पर्व पर वृत्त चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति अपने इरादे का बहुत पक्का होता है और एक बार जिस विषय का विचार कर लेता है उसको पूरा करके ही छोड़ता है मनुष्य के इरादे दो कारण से बदलते हैं—एक तो मन की स्वाभाविक चंचलता और दूसरा धैर्य की कमी। आपत्तियों या कठिनता के

कारण जिस कार्य का दृढ निश्चय करते है उसे लोग छोड देते हैं। किन्तु प्रथम पर्व पर वृत्त चिह्न होने से मनुष्य अपने इरादे का बहुत पक्का होता है और अन्त मे उसे विजय या सफलता प्राप्त होती है।

वर्ग चिह्न—यदि प्रथम पर्व पर वर्ग चिह्न हो तो इच्छाशक्ति किसी एक ही बात पर जमी रहती है अर्थात् यदि ऐसे व्यक्ति ने विचार कर लिया कि मैं अमुक कार्य करूँगा तो फिर वह उसी पर अड़ा रहेगा। यदि उससे अच्छा भी कोई कार्य उसके हाथ मे आवे तो उसकी ओर ध्यान नही देगा। ऐसे व्यक्ति प्राय. कठोर वृत्ति के होते है और दूसरो पर निर्दयतापूर्वक शासन करते है।

जाल चिह्न—यदि नाखून के पास हो तो यह बहुत अशुभ चिह्न है। पति-पत्नी में अत्यन्त कलह होता है और एक-दूसरे की हिंसा भी कर सकते है। हाथ में अन्य क्रूरता के लक्षण हो तभी उपर्युक्त फलादेश करना चाहिये।

द्वितीय पर्व पर चिह्न

यदि द्वितीय पर्व पर खड़ी रेखाये (एक छोर प्रथम पर्व की दिशा मे, दूसरा छोर शुक्र-क्षेत्र की दिशा मे) हो तो ऐसे व्यक्ति में तर्क-शक्ति अच्छी होती है, किसी बात की गुण-दोष-विवेचना जातक अच्छी प्रकार कर सकता है। यह स्मरण रखना चाहिये कि जिस स्थान पर खडी रेखा हो वह उस स्थान के गुण को बढाती है और आडी रेखाये उस स्थान-सम्बन्धी बाधा या अवगुण प्रकट करती है यह साधारण नियम है। इसलिये यदि खड़ी रेखा न होकर आड़ी रेखायें हो (यवचिह्न के समानान्तर) तो ऐसे व्यक्ति मे तर्कशक्ति का अभाव होता है। वह किसी बात से सही नतीजा नहीं

निकाल सकता। इस कारण आडी रेखाओ को बुद्धि की कमी का लक्षण समझना चाहिये। खडी रेखा प्राय अच्छी होती है यह ऊपर बताया गया है, किन्तु यदि अगुष्ठ के द्वितीय पर्व से प्रारम्भ होकर कोई खडी रेखा जीवन-रेखा से आकर मिले तो वैवाहिक जीवन सुखमय नही होता। पति-पत्नी मे कलह होता रहता है। यदि कोई आडी रेखा दो शाखायुक्त हो तो ऐसा व्यक्ति किसी भी काम के करने मे झिझकता रहता है।

क्रॉस चिह्न—यदि द्वितीय पर्व पर क्रॉस चिह्न हो तो जातक शीघ्र ही दूसरे से प्रभावित हो जाता है। यदि अगूठे का प्रथम पर्व छोटा और निर्बल हो तो इस लक्षण की पुष्टि होती है। यदि बुध और मगल के क्षेत्र विशेष उन्नत होगे तो जातक मे स्वय ऊहापोह और विचार-शक्ति अधिक होगी। इस कारण वह शीघ्र प्रभावित नही होगा। किन्तु ये दोनो क्षेत्र नीचे हो और अगुष्ठ के द्वितीय पर्व पर उपर्युक्त लक्षण हो तो जातक शीघ्र प्रभावित होगा।

तारे का चिह्न—यदि द्वितीय पर्व पर एक या दो तारे के चिह्न हो तो जातक बहुत खुशमिजाज होता है। परन्तु बुरे कामो की ओर उसका स्वाभाविक रुझान होता है।

त्रिकोण चिह्न—यदि त्रिकोण चिह्न हो तो वैज्ञानिक या दर्शन-शास्त्रो मे विशेष प्रवीणता होती है।

वर्ग चिह्न—यदि वर्ग चिह्न हो तो ऐसा आदमी तर्क द्वारा जिस नतीजे पर पहुँचता है उस नतीजे से उसे हिलाया नही जा सकता। यदि हाथ मे अन्य बुद्धिमत्ता आदि के लक्षण न हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत जिद्दी और दुराग्रही होता है।

वृत्त चिह्न—द्वितीय पर्व पर वृत्त चिह्न तर्क-शक्ति को विशेष

मात्रा मे बढाता है। इस कारण यदि ऐसा व्यक्ति कोई ऐसा कार्य करे जिसमे विचार और ऊहापोह की विशेष आवश्यकता हो तो उसे पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

जाल चिह्न—यदि द्वितीय पर्व पर जाल चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति तर्क करने मे ईमानदारी से काम नही लेता, न नैतिक आदर्श की ओर ही उसका ध्यान रहता है।

उंगलियों पर चिह्न

पहले वे लक्षण बताये जाते है जो चारो उगलियो पर होने से फलदायक होजाते है। इसके बाद जिन लक्षणो का भिन्न-भिन्न उगलियों पर भिन्न-भिन्न प्रभाव होता है उनका वर्णन किया जायगा।

सामान्य लक्षण—यदि उगलियो के प्रथम पर्व का भीतरी भाग (एक ओर नख होता है दूसरी ओर वाला भाग) गोलाई लिये हुए हो तो ऐसे व्यक्ति मे नफासत और चतुरता होती है। वह किसी बात को बहुत शीघ्र समझ लेता है परन्तु उसे थोडे से कारण पर ही अरुचि, अप्रसन्नता या क्रोध भी हो जाता है।

यदि उगलियो के बीच मे जो पर्व की रेखा होती है उनको (साधारणत चारो उगलियो मे कुल बारह पर्व और बारह ही पर्व की रेखा होती है) छोटी खड़ी रेखाएँ काटे तो ऐसे व्यक्ति की सहसा मृत्यु होती है।

यदि सब उगलियों पर एक-एक लम्बी खडी रेखा हो जो तीनो पर्वो तक जाय तो ऐसे व्यक्ति मे ईमानदारी की भावना बहुत अधिक होती है।

यदि सब उगलियो के प्रथम पर्व पर लहरदार आडी रेखाये हो तो मृत्यु की (जल मे डूबकर या अन्य प्रकार से) आशका समझनी

चाहिए। हाथ मे अन्य लक्षणो से मिलान करना भी उचित है कि उपर्युक्त फल की पुष्टि होती है या नही।

यदि द्वितीय और तृतीय पर्व के बीच की पर्व-रेखाओ पर छोटे-छोटे त्रिकोण चिह्न हो तो ऐसे व्यक्ति का स्वास्थ्य कमजोर रहता है। यह बीमारी का लक्षण है।

उगलियो पर विविध चिह्नो के फल लिखे जाते हैं। यदि किसी उगली के किसी पर्व पर किसी चिह्न का फल न दिया गया हो तो समझना चाहिए कि वहाँ उसका कोई विशेष फल नही है।

तर्जनी पर चिह्न

खड़ी रेखा—यदि तर्जनी के प्रथम पर्व पर खडी रेखायें हो तो धार्मिक उन्नति और उच्चता का लक्षण है। यदि द्वितीय पर्व पर ऐसी रेखाये हो तो जातक को अपनी महत्वाकाक्षा-पूर्ति मे सहायता प्राप्त होगी। किन्तु यदि ये खडी रेखाये लहरदार या पिचपिच हो तो जातक की महत्वाकाक्षा का विषय कोई अच्छा न होगा। यदि द्वितीय पर्व पर कोई खडी रेखा शाखायुक्त हो तो वह सफलता का लक्षण है।

यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर कोई खडी रेखा तर्जनी के द्वितीय पर्व तक आवे तो ऐसा व्यक्ति बहुत उच्च चरित्र का होगा और उसे बहुत इज्जत प्राप्त होगी।

यदि तर्जनी के तृतीय पर्व पर छोटी-छोटी बिलकुल सीधी खडी रेखाये हो तो ऐसा व्यक्ति दूसरो पर भली प्रकार हुकूमत करता है। किन्तु यदि ये रेखा अस्पष्ट या लहरदार हो तो ऐसे व्यक्ति को सासारिक सुख के पदार्थों की विशेष इच्छा रहेगी। यदि साथ ही जीवन-रेखा से निकल कर ऊपर की ओर आने वाली रेखा भी हो (अर्थात् हाथ मे यह द्वितीय लक्षण भी हो) तो धन-प्राप्ति होती है।

आड़ी रेखा—यदि तर्जनी के प्रथम पर्व पर आडी रेखायें हो तो घमण्डिता का लक्षण है। यदि द्वितीय और तृतीय दोनो पर्वों पर ऐसी रेखा हो तो ईर्ष्यालु और दूसरे को धोखा देने की प्रवृत्ति होती है। यदि केवल तृतीय पर्व पर हों तो विरासत मे धन मिलता है। हुकूमत के कार्य मे बाधाएँ उपस्थित होती है। यदि अन्य लक्षण अस्वास्थ्य के हो तो यह कमजोर पाचन-शक्ति का भी लक्षण है।

क्रॉस चिह्न—यदि तर्जनी के प्रथम पर्व पर क्रॉस चिह्न हो तो पागलपन का रोग या अचानक मृत्यु होती है। पुष्टि के लिए अन्य लक्षणो का भी अन्वेषण करना चाहिए। यदि द्वितीय और प्रथम पर्व के बीच वाली आड़ी रेखा पर 'क्रॉस' चिह्न हो तो साहित्यिक सफलता प्राप्त होती है। यदि द्वितीय पर्व पर एक या दो क्रॉस चिह्न हो तो बड़े आदमियो का सरंक्षकत्व (सहायता) प्राप्त होता है। तृतीय पर्व पर क्रॉस चिह्न होने से, कामुकता और अन्य खराब आदतें होती हैं।

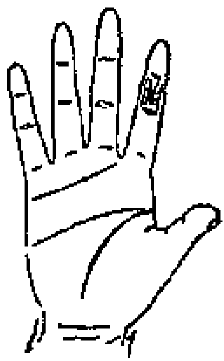

चित्र नं० ११८

तारे का चिह्न—यदि तर्जनी के प्रथम पर्व पर तारे का चिह्न हो तो जातक के जीवन मे कोई बहुत सौभाग्यशाली घटना होती है। यदि यह चिह्न द्वितीय पर्व पर हो और इसके दोनो ओर एक-एक खडी रेखा भी हो तो पातिव्रत्य का लक्षण है। पुरुषो के हाथ मे एक-पत्नीव्रत समझना चाहिए। किन्तु यदि तारे के चिह्न के बगल मे अर्धवृत्त चिह्न हो तो निर्लज्जता का लक्षण है। तृतीय पर्व पर तारे का चिह्न हो तो भी निर्लज्जता होती है।

त्रिकोण चिह्न—यदि तर्जनी के प्रथम पर्व पर त्रिकोण चिह्न

हो तो धार्मिक ग्रंथो तथा गुप्त विद्याओ के अध्ययन की ओर विशेष प्रवृत्ति होती है। द्वितीय पर्व पर यह चिह्न होने से मनुष्य कुशल राजनीतिज्ञ होता है तृतीय पर्व पर भी शुभ लक्षण है।

वर्ग चिह्न—यदि तर्जनी के प्रथम पर्व पर वर्ग चिह्न हो तो मनुष्य मे धैर्य और अध्यवसाय होता है। द्वितीय पर्व पर भी यही फल। तृतीय पर्व पर यह चिह्न होने से तानाशाही प्रकृति होती है। कामुकता का भी लक्षण है।

वृत्त चिह्न—प्रथम पर्व पर वृत्त चिह्न होने से तर्क या ज्ञान-मार्ग की अपेक्षा भक्ति की ओर विशेष झुकाव होता है। द्वितीय पर्व पर महत्वाकांक्षाओं की सफलता का लक्षण है। तृतीय पर्व पर भी यही फल।

जाल चिह्न—यदि प्रथम पर्व पर हो तो जेल या निर्जन एकान्त-प्रदेश मे वास। अन्ध-धार्मिकता का भी लक्षण है—द्वितीय पर्व पर होने से दुष्प्रवृत्ति और असफलता। तृतीय पर्व पर होने से चरित्र अच्छा नहीं होता, जेल-यात्रा भी होती है।

मध्यमा उंगली पर विविध चिह्न और उनका फल

खड़ी रेखा—यदि मध्यमा उंगली पर—तीनों पर्वों पर फैली हुई लम्बी लहरदार खड़ी रेखा हो और शनि-क्षेत्र पर छोटी-छोटी आड़ी रेखा हो तो जीवन मे बहुत-सी भाग्य-हानि या शरीर-कष्ट-सम्बन्धी दुर्घटनाएं होती हैं।

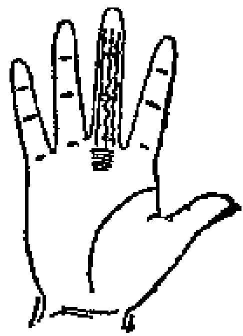

चित्र नं० ११९

यदि केवल प्रथम पर्व पर दो-तीन छोटी-छोटी खड़ी रेखा हो तो आत्महत्या की प्रवृत्ति का लक्षण है (अन्य लक्षण भी इस फल की पुष्टि के लिए देखना चाहिए)।

यदि प्रथम पर्व के अन्त से प्रारम्भ होकर एक खड़ी रेखा तीसरे पर्व तक आवे तो मूर्खता का लक्षण है।

यदि द्वितीय पर्व से प्रारम्भ होकर एक या दो खड़ी रेखा तृतीय पर्व पर आवे तो बुद्धिमत्ता का लक्षण है।

यदि तृतीय पर्व पर केवल एक खड़ी रेखा हो और वह शनि-क्षेत्र तक न आवे तो सैनिक विभाग में सफलता होती है। यदि यह रेखा बिलकुल सीधी न हो बल्कि कुछ तिरछी हो तो लड़ाई में मृत्यु होती है।

यदि तृतीय पर्व पर कई खड़ी, स्पष्ट और सुन्दर रेखा हो तो जमीन के अदर की वस्तुओ, लोहा, खनिज पदार्थ आदि के कार्य से धन-प्राप्ति होती है। यदि ये रेखा असुन्दर और अस्पष्ट हो तो मनुष्य दुखी रहता है।

आड़ी रेखा—यदि मध्यमा उगली के प्रथम पर्व पर छोटी-छोटी कई आडी रेखा हो तो आत्महत्या की ओर प्रवृत्ति होती है। हाथ मे अन्य लक्षण इसकी पुष्टि करते हों तभी यह फलादेश करना उचित है।

यदि द्वितीय पर्व पर ऐसी कई रेखा हो तो अज्ञानता, जिद्दी स्वभाव का लक्षण है यदि केवल एक मोटी आडी रेखा हो तो विष से मृत्यु होती है।

यदि तृतीय पर्व पर कई आडी रेखा हो तो ऐसा व्यक्ति दुखी जीवन व्यतीत करता है। उसके मित्र उससे किनाराकशी कर लेते हैं। किन्तु यदि हाथ मे अन्य शुभ लक्षण हों और प्रथम पर्व बहुत चिकना हो तो विरासत मे धन मिलता है।

क्रॉस चिह्न—यदि मध्यमा उगली के प्रथम पर्व पर क्रॉस चिह्न

हो तो अधविश्वास होता है। आत्महत्या या अन्य जुर्म करने की ओर भी प्रवृत्ति होती है। यदि द्वितीय पर्व पर हो तो भी बहुत अशुभ लक्षण है। यदि तृतीय पर्व पर स्त्री के हाथ मे यह चिह्न हो तो वह वन्ध्या होती है।

तारे का चिह्न—यदि प्रथम पर्व पर हो तो या तो ऐसा व्यक्ति बहुत भाग्यशाली होता है और बहुत उन्नति करता है या बहुत मन्दभागी होता है। यदि दोनो हाथो मे मध्यमा उगली के प्रथम पर्वों पर ऐसा चिह्न हो तो शस्त्र से मृत्यु होती है।

यदि केवल एक हाथ मे प्रथम पर्व पर तारे का चिह्न हो और शनि-क्षेत्र पर त्रिकोण चिह्न हो तो दुश्चरित्रता का लक्षण है।

यदि प्रथम पर्व पर एक तारे का चिह्न और द्वितीय पर एक तारे का चिह्न हो तो फांसी लगती है।

यदि केवल द्वितीय पर्व पर यह चिह्न हो तो भी अशुभ लक्षण है। ऐसा व्यक्ति जुर्म करता है तथा दण्ड पाता है। यदि केवल तृतीय पर्व पर यह चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति किसी की हत्या करता है। यदि हाथ के अन्य लक्षणो से ऐसा प्रतीत न हो तो ऐसे व्यक्ति की स्वय की हत्या से मृत्यु होती है।

त्रिकोण चिह्न—यदि मध्यमा उगली के द्वितीय पर्व पर त्रिकोण चिह्न हो तो गुप्त विद्याओ की ओर विशेष रुचि होती है। यदि तृतीय पर्व पर हो तो अशुभ लक्षण है। ऐसा व्यक्ति दुष्ट प्रकृति का और मन्दभागी होता है।

वर्ग चिह्न—यदि मध्यमा उगली के द्वितीय पर्व पर वर्ग चिह्न हो तो अपमृत्यु का लक्षण है। यदि तृतीय पर्व पर हो तो मनुष्य निष्ठुर प्रकृति का और कजूस होता है।

वृत्त चिह्न—मध्यमा उगली के द्वितीय पर्व पर वृत्त चिह्न होने से गुप्त विद्याओं मे विशेष विद्वान् होता है। तृतीय पर्व पर हो तो दर्शन-शास्त्र का पडित होता है।

जाल चिह्न—मध्यमा उगली के द्वितीय पर्व पर जाल चिह्न हो तो मन्दभागी और रोगी होने का लक्षण है। कान की, पैरो की वायु या स्नायु-विकार आदि होते है। तृतीय पर्व पर हो तो मनुष्य बहुत कंजूस और अनुदार होता है

अनामिका उंगली पर विविध चिह्न और उनका फल

खड़ी रेखा—यदि अनामिका उगली के प्रथम पर्व पर दो-तीन खडी रेखा हों तो ऐसा व्यक्ति कलाकार होता है किन्तु अपनी धुन में पागल रहता है। यदि एक खडी रेखा द्वितीय पर्व के ऊपरी भाग से प्रारम्भ हो तीसरे पर्व के मध्य तक गहरी हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत ख्याति और यश प्राप्त करता है। यदि ऊपर जिस प्रकार की एक रेखा बतलाई गई है—दो रेखा हों और बृहत् त्रिकोण तीनों रेखाओं से स्पष्ट और सुन्दर बना हो और हृदय-रेखा तथा शीर्ष-रेखा के बीच का स्थान (बृहत् चतुष्कोण) चौड़ा हो तो, मनुष्य मुस्तकिल मिजाज नही होता, उसके विचार बदलते रहते है।

यदि तृतीय पर्व पर कई लम्बी खडी रेखा—सारे पर्व की लम्बाई पर हो तो किसी स्त्री के कारण भाग्यहानि होती है। स्त्री के हाथ मे पुरुष के कारण समझनी चाहिए। किन्तु यदि ऐसी रेखा केवल एक हो और उगली के जड तक नही पहुँचे तो भाग्य और सुख का लक्षण है।

आड़ी रेखा—यदि प्रथम पर्व पर कई छोटी-छोटी आडी रेखा हों तो कला के जीवन में बहुत विघ्न-बाधा आती है जिस कारण

मस्तिष्क उलझन में पड़ा रहता है। द्वितीय पर्व पर हो तो मनुष्य में कोई विशेष योग्यता नहीं होती। उसका ईर्ष्यालु स्वभाव होता है। तृतीय पर्व पर निरन्तर भाग्यहीनता और दरिद्रता का लक्षण है।

क्रॉस चिह्न—यदि अनामिका उंगली के प्रथम पर्व पर क्रॉस चिह्न हो तो पातिव्रत्य या एक-पत्नीव्रत का लक्षण है। मनुष्य अपने कला-प्रेम में इतना मग्न रहता है कि उसी धुन में पागल रहता है। यदि द्वितीय पर्व पर क्रॉस चिह्न हो तो मनुष्य को अपने प्रतियोगियों पर विजय प्राप्त नहीं होती और वह ईर्ष्या में जला करता है। तृतीय पर्व पर यह चिह्न हो तो उसे सफलता नहीं प्राप्त होती, आकांक्षाएँ मिट्टी में मिल जाती है।

तारे का चिह्न—यदि अनामिका के प्रथम पर्व पर तारे का चिह्न हो तो मनुष्य अत्यन्त उच्चकोटि का कलाकार होता है। किन्तु हाथ में अन्य लक्षण खराब हो तो पागलपन होता है। द्वितीय पर्व पर तारे का चिह्न अत्यधिक योग्यता का लक्षण है। तृतीय पर्व पर हो तो मनुष्य बहुत खुशामद पसन्द होता है और आत्म-प्रशंसा के लिए सदैव लालायित रहता है।

त्रिकोण चिह्न—यदि प्रथम पर्व पर हो तो सौन्दर्यप्रियता का लक्षण है, द्वितीय पर्व पर होने से कला के हृदय तक पहुँचने की क्षमता होती है। तृतीय पर्व पर मनुष्य अपनी ख्याति और नाम के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता है।

वृत्त चिह्न—प्रथम पर्व पर हो तो सहसा बहुत उच्च सफलता प्राप्त होती है। द्वितीय और तृतीय पर्व पर भी सफलता और सौभाग्य का लक्षण है।

वर्ग चिह्न—यदि द्वितीय पर्व पर हो तो बुद्धि की जैसी उप-

योगिता या प्रसार होना चाहिए वैसा नही हो पाता। सीमित क्षेत्र तक ही सफलता होती है।

जाल चिह्न—प्रथम पर्व हो तो पागलपन का लक्षण है। द्वितीय पर्व पर होने से मनुष्य बहुत ईर्ष्यालु होता है। तृतीय पर्व पर होने से अनेक प्रकार के अपमान सहन करने पडते है—ईर्ष्यालु प्रकृति होती है। दरिद्रता मे जीवन बीतता है।

कनिष्ठिका उंगली पर विविध चिह्न और उनका फल

खड़ी रेखा—यदि एक ही लम्बी खडी रेखा तीनो पर्वो पर व्याप्त हो तो मनुष्य सत्यवादी व उचित वक्ता होता है। यदि ऐसी दो रेखा हो तो मनुष्य सच्चे और उच्च चरित्र का होता है।

यदि प्रथम पर्व पर छोटी-छोटी खडी रेखा हो तो मनुष्य दूसरो के कार्यो मे हस्तक्षेप करता रहता है। कभी-कभी बहुत बडे असम्भावित कारबार की आयोजना करता है। यदि हाथ मे अन्य लक्षण अच्छे हो तो वाग्मिता और गुप्त विद्याओ के अध्ययन मे विशेष दक्षता होती है। यदि दूसरे पर्व पर कई घिचपिच खडी रेखा हो तो मनुष्य दूसरो को धोखा देता है। यदि द्वितीय पर्व से प्रारम्भ होकर तृतीय पर्व के नीचे तक एक लम्बी स्पष्ट खडी रेखा हो तो वैज्ञानिक अनुसन्धानो मे सफलता प्राप्त होती है। किन्तु यदि उपर्युक्त रेखा लहरदार हो तो मनुष्य चालाक होता है। देखिये चित्र न० १२०।

यदि तृतीय पर्व पर कई घिचपिच या लहरदार रेखा हो तो चोरी की प्रवृत्ति। एक छोटी गहरी रेखा हो तो भी चोरी करने की आदत होती है।

आड़ी रेखा—यदि प्रथम पर्व पर छोटी-छोटी- आडी रेखा हो

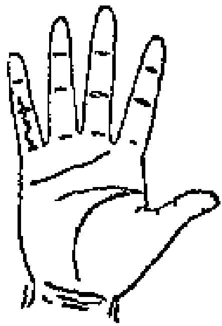

चित्र नं० १२०

तो मनुष्य बहुत बातूनी (व्यर्थ की बात करने वाला) झूठा और चोर होता है। द्वितीय पर्व पर होने से—मनुष्य अनेक प्रकार के कार्य करता है (व्यवसाय बदलता रहता है)। तृतीय पर्व पर ऐसी रेखा हो तो चोरी करने की प्रवृत्ति रहती है।

क्रॉस चिह्न—यदि शुभ लक्षणयुक्त हाथ मे कनिष्ठिका उंगली के प्रथम पर्व पर क्रॉस चिह्न हो तो मनुष्य मे भविष्य फलादेश करने की क्षमता होती है। यदि हाथ मे अच्छे लक्षण न हो तो चोरी या डकैती का लक्षण है। द्वितीय पर्व पर होने से जातक को बहुत कठिनताओ और मुसीबतो का सामना करना पड़ता है—जेल भी जा सकता है। तृतीय पर्व पर चोरी करने का लक्षण है।

तारे का चिह्न—प्रथम पर्व पर हो तो द्रव्य कमाने मे सफलता नही होती किन्तु भाषण देने मे सफलता मिलती है। द्वितीय पर्व पर होने से चोरी, जालसाजी आदि से बदनामी होती है। तृतीय पर होने से वाग्मिता, हाजिरजवाबी आदि गुण होते है। किन्तु यदि तृतीय पर्व पर दो तारे के चिह्न हो तो चोरी के कारण अपमानजनक मृत्यु होती है।

त्रिकोण चिह्न—प्रथम पर्व पर हो तो गुप्त विद्याओ मे प्रेम, द्वितीय पर गुप्त विद्याओ के अध्ययन और अभ्यास मे सफलता, तृतीय पर्व पर होने से राजनीतिक कुशलता होती है।

वर्ग चिह्न—कनिष्ठिका के प्रथम पर्व पर वर्ग चिह्न हो तो व्यापार मे धन-लाभ होता है। द्वितीय पर्व पर यह चिह्न होने से जो

अनेक कार्मों मे चतुर होने का बुध-क्षेत्र का प्रभाव है वह नही रहता। हाथ में अन्य दुष्ट लक्षण हों तो जेल-यात्रा होती है। तृतीय पर्व पर हो तो ऐसे व्यक्ति के मन की बात कोई नही जान सकता।

जाल चिह्न—यदि प्रथम पर्व पर हो तो मंत्र विद्या मे निपुण हो। किन्तु हाथ मे अन्य लक्षण खराब हो तो झूठ बोलना, चोरी आदि दुर्गुण का लक्षण है। द्वितीय पर्व पर होने से मनुष्य अपना कारबार तरतीब से नही करता। जेल जाने का लक्षण भी है। तृतीय पर्व पर अत्यन्त मूर्खता का लक्षण है।

वृत्त चिह्न—कनिष्ठिका उगली के तृतीय पर्व पर वृत्त चिह्न होने से चोरी की इच्छा रहती है परन्तु करता नही।

चतुर्थ खण्ड

२१वां प्रकरण

शरीर-लक्षण

लक्षण-शास्त्र का महत्व

मनुष्य के चेहरे तथा सिर की बनावट से बहुत कुछ उसके चरित्र तथा बुद्धि का पता लग जाता है। अपने मित्रो एवं सम्बन्धियो के सिर की बनावट तथा ललाट, नेत्र, भौ, कान, नाक मुह, ओठ, ठोडी आदि की ओर ध्यान से देखकर विचार कीजिये तो पता लगेगा कि उनके स्वभाव तथा प्रकृति का कितना ठीक अन्दाज आप लगा सकते है। जिन्होने इस विषय का गभीर अध्ययन किया है या जिनका इस विषय का अनुभव विशेष है वे इस कला मे इतने चतुर हो जाते है कि उनका अनुमान प्राय सच्चा उतरता है। जिन दुकानदारो को उधार देने का काम पडता है, वे प्राय उधार वस्तु खरीदने वालो के, वस्त्र या जेवर की ओर इतना ध्यान नही देते जितना उनकी मुखाकृति और बातचीत के ढंग पर, और उनको यह निश्चय करने मे देर नही लगती कि अमुक ग्राहक साधारण कपडे पहने है फिर भी वह बाद मे मूल्य चुका देगा और एक दूसरा व्यक्ति भडकीले और कीमती कपडे पहने है तथापि उसके यहां की रकम खटाई मे पडने का डर है। इसी प्रकार कुशल तथा

अनुभवी पुलिस के अफसर चेहरे, मोहरे, हरकत, बातचीत के ढग से, यह शीघ्र ही निश्चय कर लेते है कि चोरी या जुर्म करने वाला व्यक्ति अमुक है। जो लोग जिम्मेदारी के काम पर प्राय. नये नौकर रखते है उनका अनुभव और अभ्यास इतना दृढ हो जाता है कि ईमानदार और बेईमान, अपना उत्तरदायित्व पूरा करने वाले और न पूरा करने वालो की, पहचान उन्हे तुरन्त हो जाती है। इसी प्रकार जो दुश्चरित्र स्त्रियो की खोज मे रहते है वे स्त्री की मुखाकृति, हाव-भाव, बातचीत से तत्काल यह समझ जाते है कि वह चरित्र से गिरी हुई है। अंग्रेजी की एक कहावत है "यदि वह देखने मे पतिव्रता नही मालूम होती तो मै उसकी कोई कद्र नही करता, चाहे वह वास्तव मे पतिव्रता ही हो।" [१]

महाकवि शेक्सपियर ने कहा है कि मनुष्य के दिमाग की बनावट का नकशा चेहरे से जाना जा सकता है "To Find the minds construction in the face"[२] कितनी ही बार, आंतरिक दुष्टता को छिपाने के लिये दुर्जन मुसकरा-मुसकरा कर बात करते है। इस आशय का महाकवि शेक्सपियर का वाक्य है कि "He may smile and smile and be a villian still." अर्थात् वह चाहे बारंबार मुसकरा कर बात करे, परन्तु हो सकता है कि उसका हृदय दुष्टता से परिपूर्ण हो। [३]

---

१. If she seem not chaste to me, what care I, how chaste she be ? —Sir walter Ralegh

२. देखिये उनका सुप्रसिद्ध दु:खान्त नाटक (Macbeth)।

३. देखिये उनका नाटक (Hamlet)।

सुप्रसिद्ध रोमन बादशाह जुलियस सीजर की पत्नी क्लिओपेट्रा बहुत सुन्दर और कामुक थी। उसकी अनुपम सुन्दरता तथा चरित्र के कारण रोम का इतिहास ही बदल गया। उसी के विषय में कहा गया है कि क्लिओपेट्रा की नाक यदि वह कुछ छोटी होती तो सारे संसार का इतिहास ही भिन्न होता।[1]

अंग्रेज कवि, कलाकार तथा साहित्यिकों का लक्षण-शास्त्र का अध्ययन बहुत गंभीर और विशाल है। उन्होंने शरीर-लक्षणों से जो निष्कर्ष (नतीजे) निकाले है वे बहुत ही खोजपूर्ण हैं। परन्तु हमारे भारतवर्ष और इंगलैंड आदि ठंडे मुल्कों की जलवायु आदि में इतना अन्तर है कि उनके सब लक्षण यदि इस देश के मनुष्यों पर घटाये जायें तो पूरे नहीं उतरते। विभिन्न देश और जातियों के शरीर की बनावट, गठन तथा मुखाकृति भिन्न-भिन्न होती है। चीनियों के चेहरे दूसरी प्रकार के होते हैं। बर्मा या जापान के लोगों की आंख, नाक आदि हम लोगों से भिन्न प्रकार की होती है। इसी प्रकार इंगलैण्ड के आदि निवासी नौर्मन, स्लैव आदि विविध नस्ल के होने के कारण, यूरोप के अन्य देशों की अपेक्षा अंग्रेजों के शरीर की बनावट तथा मुखाकृति भिन्न होती है। इस कारण पाश्चात्य शरीर-लक्षण-शास्त्र की भारतीय नर-नारियों के लिये उतनी उपयोगिता नहीं हो सकती। इस कारण यद्यपि इस शास्त्र के मूल सिद्धान्त तो एक ही है तथापि भारतीय लक्षण-शास्त्र भारतीयों पर विशेष लागू होने के कारण उन्हें प्रधान मान मुख्य-मुख्य लक्षण दिये जाते हैं।

---

१. देखिये Pascal Pensees II.

भारतीय लक्षण-शास्त्र की उपयोगिता और प्राचीनता

भारतीय लक्षण-शास्त्र बहुत प्राचीन है। लक्षण देखकर किसी का भूत या भविष्य बताना एक विशेष विद्या है जिसको उसी विद्या के आचार्य जानते है जिन्होने उसका अच्छी प्रकार अध्ययन किया है। जिस प्रकार कुशल कविराज (वैद्य) नाड़ी देखकर शरीर की आभ्यन्तरिक क्रिया को जान लेता है, अथवा जिस प्रकार आकाश की स्थिति को देखकर आंधी, वर्षा आदि का ज्ञान हो जाता है उसी प्रकार मनुष्य के शरीर को देखने से उसकी शारीरिक, मानसिक तथा चित्त की व्यवस्था का पता लगाना कठिन नही है। घोड़ों के बच्चों को देखकर ही चतुर घुडसवार पहचान लेते है कि बड़े होने पर वह कैसा दौड़ेगे। गाय तथा भैंस को देखकर वह कैसा दूध देगी यह अनुमान लगाना सर्वसाधारण का अनुभूत विषय है।

पुरुष-लक्षण, स्त्री-लक्षण, गज-लक्षण, वाजि-लक्षण आदि सभी के सुलक्षण एव कुलक्षण शास्त्रो मे वर्णित है। ये हजारों वर्ष पूर्व भारत मे लिखे गये और इनका उद्देश्य था उस ज्ञान का प्रसार जिसके द्वारा अपने अभ्युदय के लिये मनुष्य सुलक्षण लोगो से सम्पर्क स्थापित करे तथा कुलक्षणयुक्त आदमियो से बचे।

वराह मिहिर, गर्ग आदि केवल ज्योतिष के आदि आचार्यो ने ही पुरुष-लक्षण स्त्री-लक्षण आदि की विस्तृत विवेचना नहीं की है। हमारे धर्मशास्त्रकारोने भी 'लक्षण शास्त्र' पर बहुत जोर दिया है। 'मनुस्मृति', 'याज्ञवल्क्य स्मृति' आदि 'स्मृतियो' मे इस बात का विवेचन किया गया है कि कन्या का पिता, किन लक्षणो से यह ज्ञात कर सके कि 'वर' मे पुस्त्व (पुरुषत्व) है। इस प्रकार वर किस प्रकार के लक्षणो से युक्त कन्या से विवाह करे जिससे उसका गार्हस्थ्य-जीवन

सुखी हो सके। ये स्मृतियाँ, श्रुतियों के वचन की पोषक हैं। 'श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्।' इससे सिद्ध हुआ कि भारतीय लक्षण-शास्त्र का आधार स्वयं भगवान् वेद हैं।

वाल्मीकि जी द्वारा शरीर-लक्षणों का उल्लेख

लौकिक काव्यों में महर्षि वाल्मीकिकृत रामायण सबसे प्राचीन है। इसी कारण महर्षि वाल्मीकि को आदि कवि कहा है। इन्होंने भी सुलक्षणों का विषय उठाया है। जब हनुमान जी सीता जी को ढूंढते हुए अशोक वाटिका में पहुँचे तो सीता जी ने कहा, "यानि रामस्य चिह्नानि लक्ष्मणस्य च वानर।

तानि भूय समाचक्ष्व . ॥"

अर्थात् राम के जो चिह्न है और जो लक्ष्मण के चिह्न हैं उन्हें कहो। इस पर हनुमान जी ने कहा—

" विपुलांसो महाबाहु कम्बुग्रीव शुभानन।
गूढजत्रु सुताम्राक्षो रामो नाम जनै श्रुत॥
दुन्दुभिस्वन निर्घोष स्निग्धवर्णं प्रतापवान्।
समश्च सुविभक्ताङ्गो वर्णं श्यामं समाश्रित॥
त्रिस्थिर स्त्रि प्रलम्बश्च त्रिसमस्त्रिषु चोन्नत।
त्रिताम्रस्त्रिषु च स्निग्धो गभीर स्त्रिषु नित्यश॥
त्रिवल भास्त्र्यवनत श्चतुर्व्यङ्ग स्त्रिशीर्षवान्।
चतुष्कलश्चतुर्लेखश्चतुष्किष्कुश्चतु सम॥
चतुर्दश समद्वन्द्वश्चतुर्दंष्ट्र श्चतुर्गति।
महोष्ठहनुनासश्च पञ्चस्निग्धोऽष्टवंशवान्॥
दशपद्मो दश बृहत् त्रिभिर्व्याप्तो द्विशुक्लवान्।
षडुन्नतो नवतनु स्त्रिभिर्व्याप्नोति राघव॥"

अर्थात् बडे कधो वाले, महाबाहु, शख की-सी गर्दन वाले, सुन्दर बदन, हसलियो की अस्थियाँ मासयुक्त, अरुण आँख वाले, लोगो में राम नाम से विख्यात है। वह गभीर शब्द वाले, चिकने वर्ण वाले, प्रतापी, सुविभक्त अग वाले, श्याम-वर्ण है। तीन वस्तु उनकी स्थिर है—अक, कलाई और मुस्का। तीन अग लम्बे है—भौंह, हाथ आदि। तीन समतल है—केश का अगला भाग, घुटने आदि। तीन स्थल उन्नत है—नाभि के चारो ओर का स्थान, सीना तथा बाजू। तीन स्थलो मे लालिमा है—नेत्रो के छोर मे, नाखूनो मे तथा हाथ और पैरो के तलुओ में। तीन वस्तुओ मे स्निग्धता है—पैर की रेखाओ, सिर के केश आदि मे। तीन गभीर है—नाभि, स्वर तथा गति। पेट तथा गले मे त्रिवलियाँ है। तीन गहरे है—पैरो के तलुओ का मध्य भाग, पैरो की रेखाये और स्तन के अग्रभाग। चार अग छोटे है—गर्दन, पीठ, पिडलियो आदि। उनके शीर्ष पर तीन आवर्त है। उनके अगूठेकी जड मे चार लकीरे है। वह चार हाथ ऊचे है। उनके चार अग सम है—हाथ, घुटने, गोदी तथा गाल। चारो युग्म अवयव एक समान है अर्थात् विषमता नही है। उनके चौदह अगद्वन्द्व (दोनो ओर के अग) सम है—भौहे नासिकापुट (नथुने), नेत्र, कान ओष्ठ, स्तनाग्र कुहनी, कलाई, घुटने, हाथ, पैर, कमर के दोनो भाग आदि। उनके मुख में दोनो तरफ चार-चार बराबर 'डाढे' है। सिह (बबर शेर), व्याघ्र, हाथी तथा बैल के समान उनकी चाल है। उनके ओष्ठ, ठोडी तथा नाक बडे है। पाँच वस्तु उनकी चिकनी और मुलायम है—जीभ, मुह, नाखून, बाल और त्वचा (शरीर का चमडा)। आठ वस्तु उनकी बाँस की तरह सीधी और पुष्ट ग्रथि वाली है—दोनो हाथो की उगलियाँ जाँघे तथा पिडलियाँ। उनके दस

शरीर के भाग 'पद्म' (कमल) के समान हैं मुख, नेत्र, जीभ, चेहरा ओष्ठ, तालु, स्तन, नख, हाथ तथा पैर। दस अंग उनके बड़े हैं—वक्ष स्थल, शीर्ष (माथा), गर्दन, हाथ, कन्धे, नाभि, पैर, पीठ तथा कान। तीन वस्तुओं से वह व्याप्त है—अर्थात् श्री, यश तथा तेज से—भावार्थ यह है कि उनके स्वरूप में इनका आभास मिलता है। दो वस्तु उनकी सफेद है, दाँत तथा नेत्र। छः अङ्ग उनके उन्नत हैं—कक्षा (काँख), नाक, बाँह, उर' स्थल, कंधे तथा ललाट। नौ अंग सूक्ष्म हैं—उंगलियाँ, केश, लोम, नख, त्वचा, मूछ बुद्धि, दृष्टि आदि।

ऊपर इन श्लोकों का अनुवाद इसलिये दिया गया है कि श्याम[1] वर्ण को छोड़कर और जितने भी लक्षण भगवान् रामचन्द्र के दिये गए हैं वे सब महापुरुषों के लक्षण हैं। ऊपर लिखे लक्षणों में जितने भी किसी पुरुष में पाये जावें उतना ही श्रेष्ठ वह 'पुरुष' होगा यह अनुमान करना चाहिये। इसी प्रकार जब युद्ध करते समय भगवान् राम और लक्ष्मण मूर्च्छित हो गये तो राक्षसराज रावण की आज्ञा से सीता जी को विमान में ऊपर ले जाकर बताया गया कि राम और लक्ष्मण लड़ाई में मारे गये और उनके मूर्च्छित शरीरों के लिये 'ये राम और लक्ष्मण के मृत शरीर हैं' यह कहा गया। स्वभावत सीताजी शोक-संतप्त हो गईं। उस समय उन्होंने दुःख में जो उद्गार निकाले हैं उनसे भी स्पष्ट है कि स्त्रियों के लक्षण देखकर उनका भावी शुभाशुभ पंडित लोग बताया करते थे। 'वाल्मीकि रामायण' के उपर्युक्त प्रकरण सम्बन्धी श्लोक ये हैं—

---

१. श्याम तथा गौर दोनों वर्णों के पुरुष श्रेष्ठ होते हैं।

"भर्तारं निहतं दृष्ट्वा लक्ष्मणं च महा बलम् ।
विललाप भृशं सीता करुणं शोक कर्षिता ॥
ऊचुर्लक्षणिका ये मा पुत्रिण्यविधवेति च ।
तेऽद्य सर्वे हते रामे ज्ञानिनोऽनृत वादिनः ॥
यज्वनो महिषी ये मामूचुः पत्नी च सत्रिणः ।
तेऽद्य सर्वे हते रामे ज्ञानिनोऽनृत वादिनः ॥
ऊचुः सश्रवणे ये मा द्विजाः कार्तान्तिकाः शुभाम् ।
तेऽद्य सर्वे हते रामे ज्ञानिनोऽनृत वादिनः ॥
इमानि खलु पद्मानि पादयोर्वै कुलस्त्रियः ।
आधिराज्ये भिषिच्यन्ते नरेन्द्रैः पतिभिः सह ॥
वैधव्य यान्ति यैर्नार्योऽलक्षणैर्भाग्यदुर्लभाः ।
नात्मनस्तानि पश्यामि पश्यन्ती हत लक्षणा ॥
सत्यनामानि पद्मानि स्त्रीणामुक्तानि लक्षणे ।
तान्यद्य निहते रामे वितथानि भवन्ति मे ॥
केशाः सूक्ष्माः समा नीला भ्रुवौ चासंहते मम ।
वृत्ते चारोमके जंघे दन्ताश्चाविरला मम ॥
शङ्खे नेत्रे करे पादौ गुल्फावूरू समौचितौ ।
अनुवृत्त नखाः स्निग्धाः समाश्चाङ्गुलयो मम ॥
स्तनौ चाविरलौ पीनौ मामकौ मग्नचूचुकौ ।
मग्ना चोत्सेधिनी नाभिः पार्श्वोरस्कं च मे चितम् ॥
मम वर्णो मणिनिभो मृदून्यङ्गरुहाणि च ।
प्रतिष्ठिता द्वादशभिर्मामूचुः शुभलक्षणाम् ॥
समग्र यव मच्छिद्रं पाणि पाद च वर्णवत् ।
मन्दस्मितेत्येव च मा कन्या लाक्षणिका विदुः ॥

आधिराज्ये अभिषेको मे ब्राह्मणैः पतिना सह।
कृतान्त कुशलैरुक्त तत्सर्वं वितथीकृतम् ॥"

अर्थात् देह के लक्षण जानने वाले पण्डितो ने मुझे बताया था कि मैं पुत्रवती होऊँगी और जीवन-भर सधवा रहूँगी। ज्योतिषियो ने कहा था कि रामचन्द्र बहुत-से अश्वमेध यज्ञ करेंगे और मै उनकी पटरानी होऊँगी। मुझे कल्याणी और पति से सम्मान पाने वाली बताया था। आज रामचन्द्र के मारे जाने से उन लोगो के वचन असत्य हुए। जिन ज्योतिषियो ने मुझे जीवन-भर सधवा रहने की बात बताई थी, उनकी बात भी आज असत्य हुई।

जिन कुलीन स्त्रियो के पैरों मे पद्म चिह्न होते हैं वे अपने पति के साथ राज्यसिंहासन पर अभिषिक्त होती है। मेरे पैरो मे पद्म भी है। जिन लक्षणो से स्त्रियां विधवा और अभागिन होती है वे लक्षण मेरी देह मे नही है। सामुद्रिक जानने वाले पण्डितो ने स्त्रियो के जो शुभ लक्षण बताए है आज रामचन्द्र के मारे जाने से उनकी सब बाते असत्य हुई। मेरे सिर के बाल सूक्ष्म, काले और समान है। भौंहे एक मे जुटी नही है, पिंडलियाँ गोल है, और उनमे रोयें नही हैं। दांत विरल नही हैं, दोनो नेत्रो के ऊपर का भाग, आँखे, हाथ-पैर, घुटने और जघा (पिंडलिया) समान है। उंगलियाँ स्निग्ध और बराबर है। नख गोलाकार और लाल है। स्तन कठोर है और कुचाग्र मग्न है। नाभि गहरी और उसके किनारे ऊँचे है। छाती चौड़ी और पार्श्व भरी हुई है। देह की कान्ति मणि के समान चमकती है।

रोयें कोमल है। पैरो की उंगलियाँ और तलवे जमीन से उठे नही रहते। मेरे हाथ और पैर मे यव चिह्न है। उंगलियां घनी है।

हथेली और तलवे लाल है। मन्द मुसकान है। इन सब लक्षणो से ज्योतिषियो ने पति के साथ राज्य-सिंहासन पर हमारा अभिषेक बताया था, उनकी बात असत्य हुई।

सौभाग्यवती स्त्रियो मे क्या शुभ लक्षण होते है इनका वर्णन उपर्युक्त पंक्तियो मे महर्षि वाल्मीकि जी द्वारा अच्छा किया गया है। जब संस्कृत के आदि काव्य मे स्त्री-लक्षण तथा पुरुष-लक्षण इतनी सूक्ष्मता और विस्तार से दिये गए है तो यह आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है कि हमारा लक्षण-शास्त्र कितना प्राचीन और कितना विशद था।

केवल 'वाल्मीकीय रामायण' ही मे नही 'श्रीमद्भागवत' आदि अन्य प्राचीन ग्रन्थो मे पद-चिह्न आदि का सूक्ष्म वर्णन किया गया है—

'पदानि व्यक्त मेतानि नन्दसूनोर्महात्मन ।
लक्ष्यन्ते हि ध्वजाम्भोज वज्राङ्कुश यवादिभि ॥'

(१०-३०-२५)

अर्थात् अवश्य ही यह चरण-चिह्न उदार शिरोमणि नन्दनन्दन के है क्योकि इनमे ध्वजा, कमल, वज्र, अकुश और जौ आदि के चिह्न स्पष्ट दीख रहे है।

ज्योतिष और लक्षण-शास्त्र का सम्बन्ध

पुराणों मे तो 'लक्षणों' का इतना अधिक उल्लेख है कि यदि उन सब का सग्रह किया जावे तो एक बृहत् पुस्तक का निर्माण हो सकता है। ज्योतिष और लक्षण-शास्त्र का घनिष्ठ सम्बन्ध है। ज्योतिषी जिन बातो को जन्म-कुडली के ग्रह तथा राशि से बताते है उन्ही बातो को लाक्षणिक स्त्री किंवा पुरुष के शरीर को देख कर

बता सकते है। कारण यह है कि जन्म-कुडली की बारह राशियाँ या भावो या विभागो का, शरीर के बारह अंगो से सम्बन्ध है—

१	मेष राशि या प्रथम भाव	शिर प्रदेश
२	वृषभ राशि या द्वितीय भाव	मुखमडल
३	मिथुन राशि या तृतीय भाव	गर्दन, दोनो बाहु, हाथ
४	कर्क राशि या चतुर्थ भाव	हृदय प्रदेश, वक्षस्थल
५	सिह राशि या पञ्चम भाव	पेट (नाभि के ऊपर, छाती के नीचे)
६	कन्या राशि या षष्ठ भाव	नाभि के नीचे 'वस्ति' के ऊपर
७	तुला राशि या सप्तम भाव	(नाभि और लिग के बीच के स्थान से लेकर 'वस्ति' तक)
८	वृश्चिक राशि या अष्टम भाव	लिग-मूल से गुदा तक
९	धनु राशि या नवम भाव	दोनो ऊरु (जाघ)
१०	मकर राशि या दशम भाव	दोनो घुटने

नोट—नाभि से लिग-मूल तक का भाग दो हिस्सों में विभाजित करने से ऊपर का षष्ठ भाव, नीचे का सप्तम भाव।

११. कुंभ राशि या एकादश भाव	पिंडलियाँ गुल्फ तक
१२. मीन राशि या द्वादश भाव	चरण-युगल

इसका विशेष विवरण देखने के लिए 'बृहज्जातक' (१—४); 'फलदीपिका' (१—४), 'सारावली' (१—५) आदि ज्योतिष के ग्रन्थ देखने चाहिये। जिस व्यक्ति के जन्म के समय जो राशि या भाव निर्बल, पापग्रह से युत या वीक्षित होता है उस मनुष्य के शरीर का भी वह भाग दुष्ट लक्षणो से दूषित पाया जायगा। जो मनुष्य शीर्षोदय है और माता के शरीर से निकलते समय जिनका 'सिर' पहले निकला उनके लिए यह क्रम है। जिनके जन्म के समय 'पैर' पहले निकले उनका प्रथम भाव पैर, द्वितीय भाव 'पिंडली' तृतीय जानू' यह क्रम समझना चाहिये। (देखिये—'दैवज्ञ कामधेनु', १२-३५)

इसी प्रकार द्रेक्काण (जन्मलग्न का तृतीय भाग) के अनुसार भी शरीर को तीन भागो मे विभाजित कर एक भाग को १२ हिस्सो मे बाँटा जाता है—प्रथम द्रेक्काण (१) सिर, (२) दाहिना नेत्र, (३) दाहिना कान, (४) दाहिना नथुना या नासिका का दाहिना भाग, (५) दाहिना कपोल, (६) ठोडी का दाहिना हिस्सा, (७) मुह, (८) ठोडी का बायाँ हिस्सा, (९) बायाँ कपोल, (१०) नासिका का वाम भाग, (११) वाम कर्ण, (१२) वाम नेत्र।

द्वितीय भाग के बारह हिस्से निम्नलिखित प्रकार से किये जाते हैं—

(१) कंठ, (२) दाहिना कंधा, (३) दाहिनी भुजा, (४) दाहिना

पार्श्व (५) छाती का दाहिना हिस्सा (६) कोड का दक्षिण भाग (७) नाभि (८) क्रोड का वाम भाग (९) छाती का वाम भाग (१०) वाम पार्श्व (११) वाम भुजा (१२) वाम कक्षा।

तृतीय भाग के बारह हिस्से निम्नलिखित प्रकार से किये जाते है—

(१) बस्ति (२) शिश्न (३) दक्षिण वृषण (४) दक्षिण जाघ (५) दक्षिण घुटना (६) दाहिनी पिडली (७) दोनो पैर (८) वाम पिंडली (९) वाम घुटना (१०) बाम जघा (११) वाम वृषण (१२) गुदा।

वराह मिहिराचार्य का मत है कि 'तस्मिन् पापयुते व्रण शुभयुते दृष्टे च लक्ष्मादिशेत्' ('बृहज्जातक', ६—२५) जिस द्रेक्काण मे पापग्रह हो वहाँ व्रण होता है या व्रणचिह्न होता है। शुभ ग्रह से युत, वीक्षित हो तो शुभ चिह्न होता है।

एक प्रकार से यह कहना चाहिये कि 'जन्म-कुडली' मनुष्य के शरीर का एक नक्शा है। जन्म-कुडली की जो राशि, भाव या द्रेक्काण शुभ ग्रह से युत, दृष्ट बलवान होता है, वह जिस शरीर के अग का अधिष्ठाता होता है, वह अग भी पुष्ट और सुन्दर होता है। ज्योतिष विद्या और लक्षण-शास्त्र एक-दूसरे से बहुत अधिक सम्बद्ध है। इसलिए हस्त-रेखा, शरीर-लक्षण आदि के अवलोकन तथा फल-कथन मे ज्योतिष विद्या के विद्वान् जितने सफल होते है उतने अन्य नही। हस्त-रेखा ज्ञान तथा लक्षण-शास्त्र मे विशेष दक्षता की इच्छा रखने वालो को उचित है कि ज्योतिष शास्त्र का भी थोडा ज्ञान प्राप्त कर ले। हाथ मे सूर्य, चन्द्र, मगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि आदि के जो स्थान है उनको देखकर कितने

ही व्यक्तियो को हमने बताया है कि जन्म-कुडली मे उनका कौन सा ग्रह अच्छा पडा है और कौन सा बिगडा है। जो ग्रह स्वगृही, उच्च या केन्द्र त्रिकोण मे होता है उसका हाथ मे जो स्थान* है वह उन्नत, सुन्दर, शुभ रेखायुक्त होता है, और जो ग्रह नीच, अनु-क्षेत्री या अनिष्ट भावस्थित होता है, हाथ मे उस ग्रह का स्थान नीचे दबा हुआ, कटी-फटी रेखाओ से युक्त, निस्तेज होता है।

इसी प्रकार जिनकी जन्म-कुडली मे धन भाव बलवान होगा उनके नेत्र, मुख, कपोल, शुभ लक्षणो से युक्त होगे। जिनकी जन्म-कुडली मे तृतीय 'भाव' अच्छा होगा उनके बाहु, ग्रीवा आदि श्रेष्ठ होगे। जन्म-लग्न से चतुर्थ भाव मे जिसके बलवान ग्रह पडे होगे उसका वक्षस्थल उन्नत तथा पुष्ट होगा। इसी प्रकार सर्वत्र समझना चाहिये।

विविध लक्षणों का समन्वय और संतुलन

लक्षण-शास्त्र के अनुसार मनुष्य के शरीर के अंग-प्रत्यग से यह अनुमान करना चाहिये कि इसकी प्रकृति, स्वभाव तथा भविष्य कैसा है। किन्तु जिस प्रकार जन्म-कुडली मे सभी ग्रह शुभ या सभी ग्रह अशुभ नही होते उसी प्रकार शरीर-लक्षणो मे, किसी के शरीर मे शुभ लक्षण ही शुभ लक्षण मिले—अशुभ लक्षण कोई न मिले ऐसा नही होता। जिस प्रकार जन्म-कुडली मे शुभ ग्रहो के सुप्रभाव की अनिष्ट ग्रहो के कुप्रभाव से तुलना कर ज्योतिषी फलादेश करते है उसी प्रकार शरीर के शुभ लक्षणो का क्या प्रभाव होगा और दुष्ट-लक्षण-दूषित अगो का क्या प्रभाव होगा इनका भली भाँति विचार तथा दोनो की तुलनात्मक विवेचना

*इसे माउण्ट, पर्वत, ग्रह-स्थान, ग्रह-क्षेत्र आदि कहते हैं।

कर किसी नतीजे पर पहुँचना चाहिये। केवल एक लक्षण से जो बिना विचार किए हुए तत्काल कह उठते हैं कि 'यह बेईमान है' या 'यह व्यभिचारी है' वे बड़ा अनर्थ करते है क्योंकि जो तराजू के दोनो पलडो की ओर देख कर बताता है कि किस तरफ तराजू झुकेगी उसी का अनुमान सत्य निकलता है—जो केवल एक पलडे के वजन को देख कर ही, बिना दूसरी ओर की आलोचना किये, शीघ्रता से किसी नतीजे पर पहुँच जाते है उनकी बात सही नही उतरती।

इसलिए इस गम्भीर लक्षण-शास्त्र का, विद्या की भांति अध्ययन कर, शरीर-लक्षणो से यदि किसी पुरुष का, फलादेश करना हो, तो उसके शरीर मे सिर से पैर तक जो लक्षण दिखाई दे उन्हे सूक्ष्म दृष्टि से देखकर एक कागज पर लिखना चाहिये। इसके साथ उसकी हस्त-रेखाओ से जो निष्कर्ष (नतीजा) निकाला जाय वह भी कागज पर विस्तारपूर्वक लिखते जाना चाहिये। इसमे धैर्य-पूर्वक समय लगाना उचित है। त्वरा या जल्दी मे, रास्ते चलते समय या जनसमुदाय के बीच जहाँ लोग वार्तालाप मे निमग्न हो और बुद्धि का मनोयोग सम्भव नही हो—फलादेश करना उचित नही।

शुभ और अशुभ लक्षणो का सतुलन अर्थात् अपनी बुद्धि से उनको तोल कर परिणाम क्या होगा यह बताना अनुभवसाध्य है। कई बार शुभ लक्षण और अशुभ लक्षण एक-दूसरे के प्रभाव को नष्ट कर देते है। कई बार दोनो प्रकार के परिणाम होते है—परन्तु जीवन के भिन्न-भिन्न काल मे। उदाहरण के लिए किसी के शरीर मे 'धन सम्पन्न' होने के भी लक्षण है और 'निर्धन' होने के भी, तो जीवन के भिन्न-भिन्न काल मे इनका परिपाक हो सकता है।

बहुत से विशिष्ट व्यक्तियो की हस्त-रेखा देखने का अवसर हमे प्राप्त हुआ। उनके शरीर मे वे बहुत से लक्षण है जिनके कारण वे उच्च पद पर आसीन हुए। परन्तु जीवन का प्रारम्भिक बहुत-सा भाग उनका साधारण स्थिति मे ही व्यतीत हुआ था। ऐसे व्यक्तियो के शरीर मे दोनो प्रकार के लक्षण हमने देखे। आगे चलकर यह बताया जावेगा कि शरीर-लक्षणो से यह ज्ञान कैसे हो कि किस अवस्था मे भाग्योदय होगा। परन्तु यहाँ यह लिखना आवश्यक है कि (क) लक्षण शास्त्र, (ख) हस्त-रेखा-ज्ञान, (ग) स्वर शास्त्र, (घ) ज्योतिष शास्त्र (ङ) शकुन शास्त्र आदि एक ही महाविद्या के अग है। इनका मनोयोगपूर्वक अध्ययन कर, शरीर-लक्षण तथा हस्त-रेखा देखने का अभ्यास करना चाहिए। बिना अभ्यास के विद्या फलीभूत नही होती। गत ३० वर्षो मे, हमने शरीर-लक्षणो का अवलोकन कर जो निष्कर्ष निकाले है वे निरन्तर अभ्यास के ही परिणाम है। जिस प्रकार पाक शास्त्र की पुस्तक-मात्र पढ लेने से, बिना अभ्यास के कोई सुस्वादु भोजन नही बना सकता उसी प्रकार शरीर-लक्षण देखते-देखते यह अभ्यास हो जाता है कि शुभ लक्षणो का इतना वजन है, अशुभ लक्षणो का इतना, और परिणाम यह होगा।

हमारे प्राचीन ऋषि, मुनि, स्मृतिकार, वराहमिहिर, गर्ग आदि आचार्यो के वचनो को अनुभव की कसौटी पर कस कर विविध लक्षणो का समन्वय और सतुलन कर परिणाम कहना चाहिये। केवल एक लक्षण से जो फलादेश करेगा उसका कथन भ्रमात्मक हो सकता है।

लक्षण-शास्त्र में वर्णित शरीर के विविध अंग

लक्षण-शास्त्र के अन्तर्गत निम्नलिखित अग, क्रिया आदि के लक्षण आते है—उन्मान (ऊंचाई), मान (वजन), गति (चाल), संहति,[1] सार (ताकत), वर्ण, स्नेह (चिकनाई), स्वर, प्रकृति, सत्व (साहस), अनूक, क्षेत्र, शरीर-कान्ति, गन्ध, रुधिर, पैर (पादतल) पैर का अगुष्ठ, पैर की उगलिया, नख, पादपृष्ठ, गुल्फ, पार्ष्णि, जघा (पिडली), रोम, जानु (घुटने), ऊरु (जाघ), कमर, नाभि, कुक्षि (कोख), पार्श्व (बगल—कमर से काख तक), पेट, त्रिवली, हृदय, कन्धे, कक्षा (काख), बाहु, ग्रीवा, ठोडी, मूंछ, कपोल, मुख, ओष्ठ, दात, जिह्वा, मसूडे, तालु, नासिका, हसना, छींकना, नेत्र, दृष्टि, पक्ष्म (बरौनी), पलक मारना, बोलना, भौं, कान, ललाट, सिर, केश आदि।

हाथ, हाथ की उगलिया, मणिबन्ध, हाथ का अगूठा, कर-रेखा, वर्ण, करतल, करपृष्ठ आदि भी लक्षण-शास्त्र के अन्तर्गत है और प्राचीन आचार्यो ने मनुष्य के शरीर-लक्षणो के अन्तर्गत इनकी भी विशद व्याख्या की है। परन्तु 'हस्तरेखा' का विषय स्वय बहुत विस्तृत और उपादेय होने के कारण, इस पुस्तक मे पृथक् दिया गया है। इसी प्रकार शरीर के विभिन्न भागो मे तिल आदि का जो फल है वह भी लक्षण-शास्त्र के अन्तर्गत है परन्तु पाठको की सुविधा के विचार से उसका प्रकरण भिन्न कर दिया है।

दाहिना भाग प्रधान या बायाँ

वैसे तो पुरुषो और स्त्रियो के दाहिने तथा बाए दोनो ही शरीर-भाग मुख्य है, परन्तु पुरुषो के शरीर मे दाहिनी ओर और स्त्रियो के

---

1. अगों का परस्पर सम्मिलन।

शरीर मे बायी ओर विशेष ध्यान देना चाहिये। 'प्रयोग पारिजात' मे लिखा है कि समुद्र ऋषि का (जिनके नाम से यह शास्त्र 'सामुद्रिक-शास्त्र' कहलाता है) यही मत है—'वाम भागे तु नारीणा दक्षिणे पुरुषस्य तु। निर्दिष्टं लक्षणं तज्ज्ञै समुद्रवचन यथा॥' 'स्कन्द पुराण-काशीखण्ड' मे नारद ऋषि का भी वाक्य है, 'पाणि दर्शय दक्षिणम्' अर्थात् दाहिना हाथ दिखाइये। यद्यपि शरीर के अन्य अग दाहिनी ओर बायी ओर प्राय एक-से होते है तथापि कभी-कभी दोनो ओर के अगो मे विभिन्नता भी पाई जाती है। ऐसी स्थिति मे पुरुष के दाहिने अग को और स्त्री के वाम अग को प्रधानता देनी चाहिये।

उन्मान (ऊंचाई)

'उन्मान मान गति सहृति सारवर्ण
स्नेहस्वर प्रकृति सत्व मनूक मादौ।
क्षेत्र मृजा च विधिवत्कुशलो ऽवलोक्य
सामुद्र विद्वदति यातमनागत वा॥'

(बृहत्संहिता, ६८-१)

"मनुष्य की ऊचाई, वजन, चाल (चलने का प्रकार), सार (रक्त आदि किस धातु की अधिकता है), वर्ण (कृष्ण, श्याम, गेहुँआ, गौर, अति गौर आदि, स्नेह (अगो का चिकनापन), स्वर (बोलते समय कठ से जो ध्वनि निकले), प्रकृति (स्वभाव), सत्व (चित्त के धर्म—धैर्य, उद्वेग आदि), अनूक (पूर्वजन्म को सूचित करने वाली आकृति), क्षेत्र (शरीर के विभिन्न विभाग), मृजा (शरीर की उज्ज्वलता अर्थात् कान्ति) इनको विधिपूर्वक देखकर सामुद्रिक शास्त्र का ज्ञाता भूत तथा भविष्य को जान सकता है।"

कात्यायन ऋषि का मत है कि मनुष्य खडा होने पर जितना

ऊंचा हो उसे 'उन्मान' कहते हैं। पुरुष को खड़ा करके पादतल से मस्तक तक तागे से नापना चाहिये। जितना ऊंचा मनुष्य हो, उतनी उंचाई पर तागे पर चिह्न करके तागा काट देना चाहिये। इस तागे को जिस मनुष्य का नाप लिया गया है, उसी की उंगलियों से नापना चाहिये। यदि यह लम्बाई—

(१) १०८ अंगुल हो तो उत्तम

(२) १०० " " " मध्यम

(३) ९० " " " निकृष्ट समझना

चाहिये। यह 'भविष्य पुराण' में समुद्र ऋषि का मत दिया है। किन्तु वराहमिहिराचार्य के मत से—

(१) १०८ अंगुल हो तो उत्तम

(२) ९६ " " " सम

(३) ८४ " " " हीन

आम तौर पर चारों उंगलियों से नाप कर 'चार अंगुल' कह दिया जाता है परन्तु कोई उंगली अधिक चौड़ी होती है कोई कम, इसलिए उंगली की चौड़ाई कितनी ली जावे? 'सामुद्र तिलक' का मत है कि बीच की उंगली का बीच का पर्व (पोरवा) जितना चौड़ा हो वह एक अंगुल चौड़ा मान लेना चाहिये। किन्तु 'हेमाद्रि' के अनुसार अपने अंगूठे के मध्यभाग के बराबर चौड़ाई को एक अंगुल मानना चाहिये।

'उन्मान' किंवा ऊँचाई से उत्तम, मध्यम, साधारण यह तीन प्रकार के पुरुषों की पहचान बताई गई है। अब 'ऊँचाई' से श्रेष्ठता ज्ञात करने का एक दूसरा प्रकार बताया जाता है—

'स्कन्द पुराण काशी खंड' में लिखा है कि कुंकुम से रंगे

हुए सूत की तीन लड़ करे और गरोश, उमा, महेश्वर का भक्ति-पूर्वक स्मरण कर उत्तर मुख खड़े हुए मनुष्य को पादतल से मस्तक तक नापे। फिर उस मनुष्य से कहे कि दोनो भुजा और हाथ फैलाकर खड़े हो जाओ। अर्थात् उत्तर की ओर मुख कर खड़े हुए आदमी का दाहिना हाथ पूर्व की ओर और बायाँ हाथ पश्चिम की ओर कधे के समतल फैला हुआ होगा। तब दाहिने हाथ की मध्यागुली (बीच की उगली) के अन्त से बाये हाथ की बीच की उंगली के अन्त तक नापे। यदि यह १०८ अगुल हो (जैसा ऊपर बताया गया है) और ऊँचाई के बराबर हो तो ऐसा मनुष्य बहुत श्रेष्ठ अधिकारी होता है।

मान (वज़न)

वराह मिहिराचार्य ने लिखा है कि जिसका वजन आधा 'भार' हो वह सुखी, यदि इससे कम हो तो दुखी। यदि वजन एक 'भार' हो तो अति धनी। यदि वजन डेढ 'भार' हो तो बहुत ही श्रेष्ठ पदवी का अधिकारी होता है। ('बृहत्सहिता', अध्याय ६८-१०६)

भार कितने वजन का होता है यह 'निघण्टु' मे दिया गया है—

५ गुजा (चिरमठी) का	१ माशा
१६ माशे का	१ कर्ष
४ कर्ष का	१ पल
१०० पल का	१ तुला
२० तुला का	१ भार

यहाँ स्वभावत. यह शका उठती है कि किस अवस्था में यह वजन लिया जावे क्योकि जैसे-जैसे अवस्था बढती है वजन बढता

जाता है।' इस शंका का समाधान करते हुए आचार्य कहते हैं कि २० वर्ष की युवती तथा २५ वर्ष के युवक की ऊँचाई तथा वजन लेकर उपर्युक्त परिणाम निकालने चाहिए।

गति (चाल)

गति, चाल या चलने के ढग को कहते हैं। समुद्र ऋषि का मत है हस, गृध्र या तोते की तरह जिसकी गति हो वह राजाओ मे श्रेष्ठ होता है। हाथी, सिह, बैल इनकी गति वाले भी भाग्यवान होते है। 'सामुद्र तिलक' मे लिखा है कि मत्त (जिसके गालो से मद चू रहा हो) गजेन्द्र, नेवले, हस तथा वृषभ (बैल) की गति वाले धर्मपरायण, धनी और भोगी होते है और इसके विपरीत जिनकी चाल गीदड, गधे, भैसे, कृकलास (गिरगट), खरगोश या हरिण की तरह होती है वे दुखी तथा सम्मानहीन होते है। 'भविष्य पुराण' मे लिखा है कि जल की लहर की तरह, कौए या उल्लू की तरह जिनकी गति हो वे दुखी, शोकाकुल और भयभीत रहते है। कुत्ते, भैसे, ऊँट, सुअर, गधे या भेडे की तरह चाल वाले भाग्यहीन होते है। वराह मिहिर का मत है कि सिह, व्याघ्र, वृषभ गजेन्द्र तथा मोर की-सी चाल वाले राजा होते है। जिनके चलने से शब्द न हो वे उच्च पदवी प्राप्त करते है। जो तेजी से या मेढक की तरह व्याकुलता से चलते है वे दरिद्र होते है।

संहति

शरीर मे परस्पर एक अग के दूसरे अग से मिलान को सहति कहते हैं। यथा किसी के कान तो बहुत सुन्दर है परन्तु अपने स्थान पर लगे ठीक न हो तो कहेगे कि कान तो सुन्दर है परन्तु इनकी सहति ठीक नही है। किसी व्यक्ति के अगो के परस्पर सम्मिलन मे जो

मांस, हड्डी, संधि-बन्ध आदि की शिथिलता या ढीलापन है वह दरिद्रता का परिचायक है। जिनके शरीर मे परस्पर अगो की सुश्लिष्टता और सहृति हो वे सुखी और दीर्घायु होते है।

सार

मनुष्य के शरीर मे सात 'सार' है—मेद (चरबी), मज्जा (हड्डी के भीतर का भाग), चर्म, हड्डी, शुक्र, रुधिर और मास।

जिनके शरीर मे मज्जा और मेद विशेष होती है और अच्छा शरीर होता है वे धन और सन्तानयुक्त होते है। जिनका शरीर का चमडा स्निग्ध अर्थात् चिकना हो वे धनी, मुलायम हो, वे सुन्दर और पतला हो, वे बुद्धिमान् होते है। जिनकी हड्डी मोटी हो वे बलवान, विद्वान् और सुन्दर होते है। जिनके शरीर मे शुक्र की बहुलता होती है (अर्थात् वीर्य बलवान तथा अधिक होता है) वे बुद्धिमान्, विद्वान और सुन्दर होते हैं। जिनमे रक्त का आधिक्य होता है उनके तालु, ओष्ठ, मसूडे, जीभ, पलक का भीतरी भाग, हथेली तथा पैर के तलुए ललाई लिये हुए होते है। जिनके शरीर मे मास अधिक हो और सुगठित शरीर हो वे विद्वान् और सुन्दर होते है।

'हेमाद्रि' मे लिखा है कि जिसके शरीर मे चरबी अधिक हो वह नित्य प्रसन्न रहने वाला (अर्थात् हँसमुख) सुन्दर, धनी और कम क्रोध करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति 'स्थिरमति' भी होता है अर्थात् विचार दृढ कर लेने पर उस पर कायम रहता है। जिसके शरीर मे वीर्य की प्रधानता हो और दांतो मे चमक हो तो यह मज्जा-प्रधान का लक्षण है। ऐसा व्यक्ति गुणी, साहसी और बुद्धिमान होता है। जिसके शरीर का चमडा चिकना, कोमल और

पतला हो वह बिना विशेष परिश्रम किये द्रव्य कमा लेता है, वस्त्र और आभूषणो का शौकीन होता है। उसकी शृंगार की ओर विशेष प्रवृत्ति होती है। ऐसे व्यक्ति सुशील होते है और प्रशसा प्राप्त करते हैं। जिसकी हड्डियो मे दृढता हो वह दीर्घायु होता है। जिसके शरीर मे रक्त की अधिकता हो वह बुद्धिमान, धनवान, पुत्रवान, चतुर, साहसी और सुखी होता है परन्तु उसमे शठता (शैतानी या चालाकी) भी होती है। जिसके शरीर मे मासाधिक्य हो और सम्पूर्ण शरीर का स्पर्श सुखकर हो और अधिक सोता हो ऐसा पुरुष दीर्घायु, धनी और सीधा होता है।

उपर्युक्त छ (मेद, मज्जा, त्वचा, मास, अस्थि, रुधिर) सारो की प्रधानता से जो गुण वर्णित किये गए है वे सब उस व्यक्ति मे होते है जिसमे वीर्य की प्रधानता हो। अर्थात् 'शुक्र' बलवान होने से ऊपर लिखे हुए सभी गुण मनुष्य मे होते है। सब 'सारो' का मुकुट-मणि शुक्र है। चेहरे पर तेज, आँखो मे ज्योति आदि 'शुक्र-सारता' के लक्षण है। इसीलिये प्रयत्नपूर्वक 'शुक्र' की रक्षा करनी चाहिए।

उपर्युक्त सात 'सारो' के अतिरिक्त 'हेमाद्रि' मे एक 'सत्व' सार और दिया गया है। निम्नलिखित गुण जिसमे हो वह 'सत्व' सार युक्त कहलाता है—

कृतज्ञ, धर्मज्ञ, शूर, पवित्र, मर्यादा के अन्दर रहने वाला, दुःख नही करने वाला, विद्वान्, अहकार (घमड) नही करने वाला, ख्याति-युक्त, उद्यमशील, निराश न होने वाला, आशा रखने वाला, पास मे थोडा भी हो तब भी देने वाला (दाता) और कल्याण की इच्छा रखने वाला व्यक्ति यदि अन्य शारीरक 'सार' (मेद, मास, मज्जा

आदि) से हीन भी हो तो भी राजा के समान उच्च पदवी प्राप्त करता है।

'हेमाद्रि' मे उपर्युक्त लक्षण लिखने का अभिप्राय यह है कि शरीर तो मनुष्य अपना बनाता नही है, वह तो माता-पिता की देन है और आहार, विहार आदि से बन जाता है किन्तु मनुष्य अपनी चित्तवृत्ति, व्यवहार आदि को उपर्युक्त साचे मे ढालने का प्रयत्न करे तो उसका भाग्योदय होता है।

वर्ण (रंग)

शरीर या मुख के रग की मीमासा करते समय हमारे आचार्यो ने तीन विभाग किये है—(१) गौर, (२) श्याम (३) कृष्ण। कहने की आवश्यकता नही कि गौर के अनेक भेद होते है, श्याम वर्ण भी कम या अधिक तारतम्य के अनुसार एकसा नही होता। परन्तु मुख्यत इन्ही तीनो भेदो के अनुसार शुभाशुभ कथन किया गया है। इनमे गौर और श्याम इन दो वर्णो को अच्छा और शुभ माना गया है। कृष्णवर्ण अर्थात् अत्यन्त काला अच्छा नही समझा गया है।

इन तीनो वर्णो मे भी स्निग्धता (चेहरे की चिकनाई) और चमक पर विशेष जोर दिया गया है। जिसके चेहरे पर चिकनाई और चमक मालूम हो वह श्रेष्ठ—उत्तम कोटि का, जिसके चेहरे पर यह कम मात्रा मे हो वह मध्यम कोटि का होता है। परन्तु जिसके चेहरे पर रूखापन हो या कही चिकनाई मालूम हो कही रूखापन वह अच्छा नही होता। रूक्षता (रूखापन) धनहीनता का लक्षण है।

गौर वर्ण की परिभाषा करते हुए कहते है कि (१) कमल के किञ्जल्क के समान जिसका वर्ण हो वह गौर, (२) प्रियङ्गु के पुष्प

की तरह जिसका वर्ण हो वह श्याम तथा (३) काजल की तरह जो काला हो वह कृष्ण वर्ण होता है।

'स्नेह'-लक्षण

'स्नेह' का अर्थ है चिकनाई। यह शरीर में सौभाग्य का लक्षण है। 'वाराही संहिता' अध्याय ६८, श्लोक १०१ में लिखा है कि पाँच जगह स्निग्धता देखनी चाहिए, 'वाणी, जिह्वा, दांत, आँख और नाखूनों में। यदि इन सब स्थानों में चिकनापन हो तो ऐसा मनुष्य सुत, धन, सौभाग्य से युक्त होता है। यदि इन स्थानों में रूक्षता हो तो निर्धनता होती है। 'सामुद्र तिलक' में इसी विषय की विवेचना करते हुए कहते हैं कि जिह्वा की स्निग्धता से प्रियभाषण करने वाला होता है, दांतों में स्निग्धता होने से अच्छा भोजन मिलता है। जिसके नेत्रों में स्निग्धता हो वह जनप्रिय होता है। शरीर के चमड़े में स्निग्धता या स्नेह हो तो 'अति सौख्य' प्राप्त होता है यदि किसी नीची श्रेणी के व्यक्ति में भी स्निग्धता दिखाई दे तो उपर्युक्त फलादेश करना चाहिए। गर्ग ऋषि का मत है कि—

"चक्षु स्नेहेन सौभाग्य दन्तस्नेहेन भोजनम्।
त्वक् स्नेहेन पर सौख्य नखस्नेहेऽधिक धनम्॥
त्वक् रोम नख केशेषु दन्तोष्ठनयनेषु च।
स्नेहो येषा तु दृश्येत कार्य तेषामकारणम्॥"

अर्थात् नेत्रों की स्निग्धता से सौभाग्य होता है, दातों के स्नेह से उत्तम भोजन, त्वक् (शरीर-चर्म) स्नेह से सुख, तथा नाखूनों की चिकनाई से अधिक धन। जिनके नख, केश आदि स्वभाव से ही स्निग्ध हों उनके बिना यत्न किये ही कार्य सिद्ध हो जाते हैं। 'प्रयोग पारिजात' का वचन है कि त्वचा की स्निग्धता से शय्यासुख

तथा पैर के चिकनेपन से सवारी मिलती है। ('ज्योतिर्निबन्ध', पृष्ठ १३७)।

स्वर

'भविष्य पुराण' का वचन है कि हस का-सा जिनका स्वर हो तथा मेघध्वनि के समान जिनकी वाणी हो या जिनकी कठध्वनि चक्रवाक या क्रौञ्च की कठध्वनि के समान हो वे राजा होते है। इसी प्रकार घडे को पानी मे डुबाने से जो गम्भीर ध्वनि होती है या दुन्दुभि के समान जिनकी वाणी मे गम्भीरता हो वे श्रेष्ठ पदवी प्राप्त करते है। इसके विपरीत गधे, कुरर या बच्चो के सदृश जिन की वाणी हो वे क्रूर और क्लेशभागी होते है। वराहमिहिर ने लिखा है कि जिस मनुष्य का स्वर (क) दुन्दुभि, (ख) मृदग, (ग) मेघध्वनि, (घ) सिह, (ङ) गज, (च) वृषभ का-सा हो वह राजा होता है, परन्तु जिसका स्वर गधे की तरह या रूखा व, 'जर्जर' हो वह निर्धन तथा दुःखी होता है।

हस, चक्रवाक आदि तो देखने को भी नही मिलते और नगर मे रहने वाले व्यक्तियो को सिंह तथा गज की वाणी सुनने का अवसर ही प्राप्त नही होता इस कारण श्रेष्ठता तथा सौभाग्य प्रकट करने वाले जो गुण है तथा धनहीनता एव दुर्भाग्य द्योतित करने वाले जो अवगुण है दोनो की नीचे व्याख्या की जाती है—

'स्वर' से तात्पर्य यहाँ गाना गाने से नही है। स्वाभाविक रूप से बोलते हुए कठ से जो ध्वनि निकलती है उसी पर से नतीजा निकालना चाहिये—

गंभीर—जब बोलने मे आदि, मध्य तथा अवसान तीनो समय एक-सा शब्द हो उसे गभीर कहते हैं।

दुन्दुभि—जो सब लोगों के मन को प्रसन्न करने वाला हो।

स्निग्ध—जिस वाणी में हर्ष, दीनता, भय, व्याधि, क्रोध आदि का प्रभाव प्रकट न हो और सुनने वालों के कानों को सुख देने वाली हो।

महान्—बहुत से लोग एक साथ बात कर रहे हों उसमें जिस की आवाज सबसे बुलन्द हो और सुनाई दे।

अनुनादी—दूर से धीरे-धीरे बोलने पर भी जो सुनाई दे।

गर्ग ऋषि ने 'स्वर' के उपर्युक्त पाँच गुण दिये हैं और लिखा है कि जिस व्यक्ति के स्वर में ये गुण पाये जावें वह दीर्घायु होता है। उसको विद्या, मान, सौख्य, धनागम, सवारी, पुत्र, स्त्री, भोग, ऐश्वर्य आदि सब शुभफल प्राप्त होते हैं। ऐसा व्यक्ति भोगी, दानी, बुद्धिमान तथा पुण्य-कर्म करने वाला होता है।

अब स्वर में दोष या अशुभ लक्षण क्या होते हैं उन्हें बताया जाता है—

विस्वर—घर्घर स्वर अर्थात् बोलते समय सुस्पष्ट एकसी आवाज का न आना।

प्रतिस्वर—चंडस्वर—जोर से बोलना (जैसा किसी को डाँटते या धमकाते समय बोला जाता है।)

भग्न स्वर—खंडितस्वर—बोलते-बोलते बीच में वाणी का टूटना, हकलाना।

क्षार स्वर—बोलते-बोलते तुतला जाना या कोई अक्षर छोड़ जाना।

रूक्ष स्वर—ऊपर 'स्निग्ध' स्वर की परिभाषा दी गई है, जो इसके विरुद्ध हो, रूक्ष स्वर होता है।

जर्जरित—फूटे काँसे की-सी आवाज वाला ।

निम्न—कंठ में ही जो आवाज रह जावे ।

इन दुर्गुणों के अतिरिक्त जिसकी वाणी कठोर हो, कटु शब्द बोले या जिसकी वाणी से अति भयानकता प्रतीत हो या बोलते समय थूक के छींटे निकले ये सभी कुलक्षण है । इन सब 'स्वर' के कुलक्षणों से यह परिणाम निकालना चाहिये कि यह व्यक्ति कलह करने वाला, क्रोधी, शठ, कठोर, अपमान करने वाला, निर्दयी, लोभी और तामसिक प्रवृत्ति का है ।

भेडिया, कौआ, उल्लू, ऊँट, प्लवग, क्रोष्ट, गधा व सुअर इनकी बोली से जिनकी आवाज मिलती है वे व्यक्ति दुष्ट होते है । सक्षेप मे यह है कि जिनकी वाणी मधुर, गम्भीर कानो को सुख देने वाली हो वे उत्तम, और जिनकी वाणी सुनकर कर्कशता, अस्पष्टता या विषमता (कभी तेज कभी धीरे, कभी बहुत जल्दी कभी बहुत धीरे) प्रतीत हो वे शठ होते है ।

प्रकृति और सत्व

यहाँ 'प्रकृति' का अर्थ है 'स्वभाव'—कुछ मनुष्य पृथ्वी-प्रकृति या पृथ्वी-स्वभाव के होते है, कुछ जल-प्रकृति या जल-स्वभाव के होते है इत्यादि । वैसे तो पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश ये पांचो ही तत्व मनुष्य के शरीर मे है और पांचो ही तत्वों की प्रकृति या स्वभाव मनुष्य मे पाया जाता है किन्तु किसी व्यक्ति मे किसी तत्व की विशेषता रहती है, किसी की कमी—और जिस तत्व की विशेषता रहती है, उसी प्रकृति का उस मनुष्य को कहा जाता है । इसी प्रकार सत्व, रज, तम ये तीनो ही गुण प्रत्येक मनुष्य मे रहते हैं । बिना इन तीनो गुणो के मनुष्य-शरीर रह ही नही सकता किन्तु

सत्त्वगुण प्रधान होने से व्यक्ति सात्विक, रजोगुण प्रधान होने से राजसिक तथा तमोगुण प्रधान होने से तामसिक कहा जाता है। प्राचीन आचार्यों ने पुरुषों को दस श्रेणी में बाँटा है—

(१) मही स्वभाव (२) तोय स्वभाव (३) अग्नि स्वभाव (४) वायु स्वभाव (५) आकाश स्वभाव (६) सुर प्रकृति (७) नर प्रकृति (८) राक्षस प्रकृति (६) पिशाच प्रकृति (१०) तिरश्चीन प्रकृति।

'बृहत्संहिता' में लिखा है कि जो व्यक्ति मही स्वभाव के होते हैं उनके शरीर से शुभ पुष्पों की-सी गन्ध निकलती है, उनकी श्वास सुगंधित होती है, वे स्थिर और सभोगवान् होते हैं। जिनकी जल-प्रकृति होती है वे जल बहुत पीते हैं, प्रियभाषण करते हैं और रसिक होते हैं और रस-भोजन के भी प्रिय होते हैं। अग्नि-प्रकृति का मनुष्य चपल, अति तीक्ष्ण, चण्ड (क्रूर तथा क्रोधी), क्षुधालु (जिसको सदैव भूख मालूम होती हो) तथा बहुत भोजन करने वाला होता है। वायु-प्रकृति का मनुष्य चचल प्रकृति का तथा दुर्बल होता है। उसे शीघ्र ही क्रोध आ जाता है। आकाश-प्रकृति का मनुष्य निपुण, अधिकतर खुला मुह रखने वाला, गाने मे कुशल, सुकुमार अग वाला होता है। सुर 'सत्व' (देव-प्रकृति) का मनुष्य मृदु कोप करने वाला, त्यागशील, स्नेहरत होता है। मानव-प्रकृति का व्यक्ति गीतप्रिय, भूषण-प्रिय, सुशील, बाटकर खाने वाला होता है। निशाचर-प्रकृति का मनुष्य बहुत उग्र क्रोधी, दुष्ट कार्य करने वाला तथा पापी होता है। पिशाच-प्रकृति का व्यक्ति चपल, गन्दा, बहुत बात करने वाला अधिक अगवाला या शरीर से मोटा होता है। पशु-प्रकृति का मनुष्य भीरु, सदैव खाने की इच्छा रखने वाला, बहुत खाने वाला होता है।

'गर्ग संहिता' के अनुसार सत्त्व की दूसरी ही व्याख्या की गई है। सत्त्व वह है जिसकी मुख्यता से सब फल होते है—वे जिनके कारण आपत्ति के समय धैर्य नही छोड जाता उसे सत्त्व कहते है। सत्त्व की प्रशसा और उसके महत्व के विषय मे कहते है—'गति' से अधिक महत्व 'वर्ण' का है, वर्ण से अधिक महत्व 'स्वर' का, 'स्वर' की अपेक्षा भी महत्व है 'सत्त्व' का। 'सत्त्व' का ही सर्वत्र सुप्रभाव और फल दृष्टिगोचर होता है। अस्थियो (हड्डियो) के शुभ लक्षण से धन होता है। मासलता के शुभ लक्षण से सुख, त्वचा के सुलक्षण से भोग, नेत्रो की शुभता से भोग, गति की शुभता से सवारी, स्वर के सुलक्षण से हुकूमत किन्तु 'सत्त्व' के सुलक्षण से ये सभी प्राप्त होते है, 'सत्त्व सर्वं प्रतिष्ठितम्'। 'विवेक विलास' मे भी लिखा है कि गति, वर्ण, स्नेह, स्वर, तेज, सत्त्व ये उत्तरोत्तर विशेष महत्व के है।

'सामुद्रतिलक' का वचन है कि और सब लक्षण एक तरफ और अकेला 'सत्त्व एक तरफ। जिसमे 'सत्त्व' होता है उस मनुष्य को लक्ष्मी कभी दुर्लभ नही होती। जिस तरह स्त्रियो का सबसे बडा भूषण 'सौभाग्य' है उसी प्रकार पुरुष का सबसे महत्वशाली गुण 'सत्त्व' है। इसके बिना पुरुष की पराजय होती है। बिना 'सत्त्व' के मनुष्य सदैव चिन्तित रहता है—

"ननु येषा न मनागपि मनो विकार कथञ्चनाभ्येति।
आपद्यपि सम्पद्यपि ते सत्त्व विभूषिता पुरुषा॥
शुभलक्षण मप्येक बाह्य न विलोक्यते स्फुट यस्य।
अथ दृश्यते पुन श्रीस्तस्य तदस्ति ध्रुव सत्त्वम्॥"

आपत्ति मे या सम्पत्ति प्राप्त होने पर जिनके चित्त मे तनिक

भी मनोविकार नही होता वे ही 'सत्त्व'-युक्त पुरुष है। जिनमे बाहरी तौर पर देखने से कोई भी शुभ लक्षण साफ न दिखाई दे और वे धनिक हो तो समझना चाहिये उनमे 'सत्त्व' है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम के सत्त्व की प्रशसा करते हुए कहते हैं कि उनके मुख की शोभा राज्याभिषेक से न प्रसन्नता को प्राप्त हुई न बनवास-दु ख से म्लान हुई—'प्रसन्नता यो न गताऽभिषेकत तथा न मम्लौ वनवास दु खत ।' इसलिए मनुष्य की मुखाकृति, बात, व्यवहार आदि से 'सत्त्व' का निर्णय करना चाहिये।

अनूक

पूर्व जन्म मे जैसा 'सत्त्व', 'स्वर', 'रूप', 'गति' आदि मनुष्य की थी उस अभ्यास के सस्कार-स्वरूप इस जन्म मे भी पूर्व जन्म का मनुष्य अनुकरण करता है। वह 'चेहरा' किस पशु-पक्षी आदि से मिलता है इसका निर्णय ध्यान से करना चाहिये। वैसे तो मनुष्य की मुखाकृति और पशुओ की मुखाकृति सर्वथा भिन्न होती है इस कारण भिन्नता होगी, परन्तु साथ के चित्र से स्पष्ट होगा कि किस प्रकार मनुष्य की मुखाकृति का पशुओ की आकृति मे साम्य होता है—

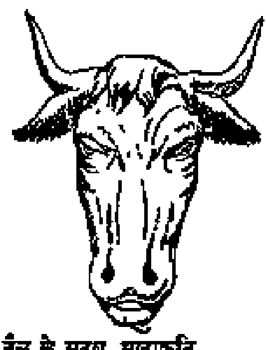

चित्र न० १२१ बैल के सदृश मुखाकृति

चित्र नं० १२२ कौए के सदृश मुखाकृति

चित्र नं० १२३ भेड़ के सदृश मुखाकृति

"जिनकी मुखाकृति गौ, वृषभ, सिंह, व्याघ्र या गरुड़ जैसी होती है वे प्रतापी और शत्रुओं को जीतने वाले, राजपद प्राप्त करने वाले होते हैं। जिनका मुख बन्दर, भैंस, सुअर या बकरे की तरह होता है, वे विद्या, धन और सुख प्राप्त करते हैं। जिनकी मुखाकृति गधे या ऊंट की-सी होती है वे दुःखी और दरिद्र होते हैं।" ('बृहत्संहिता', अध्याय ६८, श्लोक १०३-१०४)

पाश्चात्य मत यह है कि जिस पशु या पक्षी से मुखाकृति मिलती हो उसका स्वरूप और स्वभाव मनुष्य का होता है। इसका सर्वप्रथम प्रतिपादन एरिस्टोटिल ने किया। सुप्रसिद्ध लेखक

Decker के मतानुसार निम्नलिखित तालिका दी जाती है—

सादृश्य, स्वभाव तथा गुण

बन्दर—सावधान, खुशामदी, धोखा देने वाला, भीरु, छोटी-छोटी वस्तुओं की चोरी करने की आदत, मदिरापान की प्रवृत्ति, कामुकता।

लोमड़ी—अत्यन्त चालाक, धैर्य, ऊहापोह (किसी बात का गुणदोष अच्छी तरह विचार करना), घमंड, खुशामद।

रीछ (भालू)—असभ्य व्यवहार, मिलनसारी का अभाव, मनुष्यों से घृणा करना और अलग-थलग रहना।

बघेरा—चिड़चिड़ापन, शैतानी, ज्ञानेन्द्रियों का ठसपन (मोटी चमड़ी और मोटी बुद्धि)।

शेर—महत्ता, बड़प्पन, उदारता, स्थिरता, दृढ़ता, चरित्र की शालीनता, बुद्धि, शांति।

भेड़िया—धोखा देने की प्रवृत्ति और मृदुता का सर्वथा अभाव, झगड़ालू प्रकृति, ढोंग तथा बहाना, गमगीन मिजाज।

तोता—ऐसे व्यक्तियों की प्राय तोते के चोंच-जैसी नाक और भीतर धसी हुई ठोडी होती है। ऊपरी और दिखावटी ज्ञान, विचारशीलता का अभाव, वातूनी होना, चिड़चिड़ापन, लोभ।

उल्लू—कल्पना का अभाव, बहुत दबने वाला भी नहीं किन्तु साहस की कमी, चीजों को तरतीब से रखना, हरेक बात में सयम।

कौआ—चतुरता, बेहया और बदतमीज, हरेक चीज को झपट लेने की इच्छा करना, लोभ।

ईगिल (चील के सदृश पक्षी)—उच्च चरित्र, साहस, विचार की दृढ़ता।

कुत्ता—साहस, स्वामिभक्ति, प्रेम।

बिल्ली—घमंड, खुशामद करना, ऊपर से दिखाना परन्तु भीतर सच्ची हितैषिता का अभाव।

फैरट (जंगली चूहे के समान जानवर)—हरेक बात की जानकारी की इच्छा करना और पूछना, शैतानी, झगड़ा करने की आदत, अशान्ति और अत्यन्त चालाकी।

भेड़—सीधा-सादा ढंग, भलाई, नम्रता किन्तु खिद्दीपन, नकल (अनुकरण) करने की आदत।

सुअर—मृदुता तथा दया का अभाव, लापरवाही, बहुत अधिक खाने की आदत।

घोड़ा—उदारता किन्तु घमंड।

गधा—सुस्ती, अपने ही में खुश रहना, खाने-पीने, पहनने आदि की अभिरुचि और बौद्धिक कार्य, पठन, चिंतन आदि का सर्वथा अभाव।

बैल—लापरवाही और दूसरे की फिक्र न करना, जैसे दूसरे परिश्रम करते हैं वैसे ही लगकर परिश्रम करना, औरों के लिये उपयोगी साबित होना, अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करने की चिन्ता।

ऊंट—परिश्रमी तथा गम्भीर किन्तु प्रेम एवं सहानुभूति का अभाव। दूसरे को चुभने वाली या तानेजनी की बात कहना।

ऊपर निदर्शन-मात्र किया गया है। विज्ञ पाठक मुखाकृति देख कर अपने परिचित मित्रों की प्रकृति तथा स्वभाव का अध्ययन करें

तो अभ्यास से यह सुगम हो जायगा ।

मृजा (शरीर-कान्ति)

संस्कृत में शरीर-कान्ति को मृजा तथा छाया भी कहते हैं। वराहमिहिर ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'वाराही संहिता' में लिखा है कि घड़े के अन्दर रखे हुए दीपक की प्रभा जैसे घड़े के बाहर भी दिखाई देती है उसी प्रकार शरीर की कान्ति से आभ्यन्तरिक (भीतर के) गुण और अवगुण, शुभ और अशुभ फल मालूम हो जाते हैं।

शरीर की कान्ति को पाचों तत्व के अनुसार (१) पृथ्वी प्रधान (२) जल प्रधान (३) अग्नि प्रधान (४) वायु प्रधान तथा (५) आकाश प्रधान माना है। वराह मिहिर के मतानुसार जिस ग्रह की महादशा या अन्तर्दशा मनुष्य की होती है उसी के अनुसार शरीर की कान्ति बदलती रहती है। सूर्य की महादशा, अन्तर्दशा हो तो अग्निप्रधान कान्ति होगी। यदि यह कान्ति उत्तम तेजयुक्त हो तो प्रताप को बढ़ाने वाली, शत्रु पर विजय प्राप्त कराने वाली, अधिकार-वृद्धिकारक है। यदि चन्द्रमा की दशा अन्तर्दशा हो और शरीर की कान्ति विशेष लावण्ययुक्त, मृदुता, स्निग्धता आदि गुणविशिष्ट हो तो जल-प्रधान या समुद्र पार से आये पदार्थों से लाभ, लोकप्रियता, धन-लाभ आदि होता है। यदि मंगल की दशा अन्तर्दशा हो तो शरीर-कान्ति में अग्नि की तरह ललाई लिये हुए चमक, प्रकृति में कुछ तेजी, सहनशक्ति की कमी, नेत्रों की तिरछी दृष्टि आदि इसके लक्षण हैं। ऐसा व्यक्ति यदि सेना में हो तो विजय-प्राप्ति करता है। यदि सेना में न हो तो भी विजय प्राप्त करने वाला तथा शीघ्र वाञ्छित (मनचाही) वस्तु या धन प्राप्त करने में सफल होता है।

यदि बुध की महादशा अन्तर्दशा हो तो शरीर की कान्ति मे वृद्धि होती है—किन्तु कुछ श्यामता लिये। मनुष्य अधिक क्रियाशील हो जाता है। उसके शरीर की त्वचा (खाल), नख, रोम, केश, चिकने और मुलायम प्रतीत होते है। ऐसे मनुष्य के शरीर मे से स्वाभाविक सुगधि निकलती है, "छाया सुगन्धा च मही समुत्था।" इस प्रकार की कान्ति धनधान्य की वृद्धिकारक है।

बृहस्पति की दशा महादशा हो तो शरीर-कान्ति कुछ पीला-पन लिये हुए गौर और शात प्रतीत होती है। चेहरे पर सतोष की छाप और धार्मिकता की ओर प्रवृत्ति होती है। धन, धर्म, विद्या आदि की सफलता की यह द्योतक है।

शुक्र की महादशा अन्तर्दशा हो तो शरीर-कान्ति मे वृद्धि, लावण्य, आकर्षण विशेष होता है। विवाह तथा वैवाहिक सुख, भोग-पदार्थ तथा धनोपार्जन के लिये उत्तम है।

शनि, राहु, केतु की दशा अन्तर्दशा हो तो शरीर-कान्ति कम हो जाती है। चेहरे पर रूखापन, विवर्णता, मलिनता आदि दोष प्रकट होते है। शरीर से गन्ध अच्छी नही आती। यह हिंसा-प्रवृत्ति, शोक, अर्थनाश आदि दुःख और सकट प्रकट करती है।

सूर्य और मगल की अग्नि-प्रधान, चन्द्रमा और शुक्र की जल-प्रधान, बुध की पृथ्वी-प्रधान, बृहस्पति की आकाश-प्रधान तथा शनि, राहु, केतु की वायु-प्रधान शरीर की काति होती है।

'गर्ग सहिता' मे भी लिखा है कि शरीर की काति तेजयुक्त, प्रसन्नता और सौन्दर्य प्रकट करने वाली हो तो शुभ लक्षण और विवर्ण, परुष, रूक्ष, भस्मवर्ण, श्याम, दग्ध-सी हो तो दुःख और दौर्भाग्य-द्योतक है (अर्थात् रूखापन, काली झाई, मटमैला रग हो

जाना, कहीं चेहरे का रंग उड़ा हुआ प्रतीत हो कहीं गहरा, चेहरे का कुरूप या कांतिहीन होना अशुभ लक्षण है।

गंध-लक्षण

'गर्गसंहिता' का वचन है कि जिनके शरीर से प्याज, लहसुन, सड़े हुए मांस, चर्बी, विष्ठा, मूत्र आदि की गन्ध आती हो वे व्यक्ति भयंकर (क्रूरकर्मा, विश्वास के अयोग्य) होते हैं। समुद्र-ऋषि ने ऐसे व्यक्तियों को अतिनिन्दित कहा है। इसके विपरीत जिनके शरीर से सुगन्ध या मधुर-गन्ध आवे वे सत्य, धर्मपरायण, सात्विक पुरुष होते हैं।

'सामुद्र तिलक' में लिखा है कि गन्ध श्वास और त्वचा के छिद्रों से आती है। जिनके शरीर से कपूर, अगरु, चन्दन, कस्तूरी, चमेली, तमाल या पृथ्वी की गन्ध (प्रारम्भिक वर्षा के समय पृथ्वी से जैसी गन्ध निकलती है) निकले, वे शुभ हैं। ऐसे व्यक्ति भोगी धनी तथा ऐश्वर्यसम्पन्न होते हैं। किन्तु जिनके शरीर से मछली, अण्डे, सड़े हुए मांस, नीम, चरबी आदि की दुर्गन्ध निकले वे दरिद्री और दौर्भाग्ययुक्त होते हैं।

रुधिर-लक्षण

रक्त-कमल के रंग की तरह जिसके रुधिर का रंग हो वह धनवान् होता है। जिसके रुधिर में ललाई के साथ-साथ श्यामता भी हो तो वह पापकर्म करने वाला होगा। ऐसा व्यक्ति अधम कोटि का होता है जिसका रुधिर लालाई के साथ-साथ कुछ पीलापन लिये हो वह मध्यम कोटि के होता है, कभी सुखी कभी दुःखी रहता है परन्तु जिसका रुधिर शुद्ध प्रवाल की तरह लाल हो वह उत्तम कोटि का धनैश्वर्यसम्पन्न अधिकारी होता है।

'लाख' की तरह लाल रुधिर का वर्ण बहुत अच्छा माना गया है—

"अलक्त सदृश रक्त जायते यस्य शोणितम् ।
धनवान् भोगवाश्चैव स नर परिकीर्तित ॥"

यदि रक्त मे कुछ सफेदी या नीलापन हो तो ऐसे व्यक्ति के कन्या अधिक होती है और दु खी रहता है—

"पद्मपत्र निभ यस्य देहे भवति शोणितम् ।
जनयेत् बहुधा कन्या दु खित च सदा भवेत् ॥"

यहाँ पद्म-पत्र का अर्थ शास्त्रकारो ने सफेद कमल या नील-कमल किया है।

क्षेत्र (शरीर के दस भाग)

इस बात की विस्तार से आलोचना की जा चुकी है कि किन सुलक्षणो से मनुष्य भाग्यवान होता है और किन कुलक्षणो से दरिद्री और दु खी, किन्तु जिस प्रकार हस्त-रेखा मे जहाँ दोष, त्रुटि या कुचिह्न होते है उनसे किस अवस्था मे कष्ट होगा यह अनुमान लगा लेते है। अथवा ऊर्ध्वगामी रेखा से—किस वय मे भाग्योन्नति होगी यह निश्चय कर लेते है। उसी प्रकार शरीर-लक्षण से यह कैसे ज्ञात किया जावे कि जीवन का अमुक भाग सुखमय होगा और अमुक भाग दु खमय ? जिसके शरीर मे सभी लक्षण दु ख और दरिद्रता प्रकट करने वाले है, पैर से सिर तक सभी अग-हीनता एव कष्ट द्योतित करते है उसका तो समस्त जीवन ही दु खमय होगा। इसी प्रकार जिसके पद-तल से सिर तक सभी मे सुख और सौभाग्य के लक्षण है उसका सारा ही जीवन, सुख और समृद्धि से पूर्ण उत्कर्ष का होगा। किन्तु जिनके शरीर मे कोई अग सुलक्षण

युक्त और कोई दुष्ट लक्षण दूषित हो उनको किस अवस्था मे सुख-प्राप्ति होगी और कब कष्ट होगा इसका निर्णय कैसे किया जावे ?

इस विषय मे वराह मिहिराचार्य कहते हैं कि पहले हस्त-परीक्षा द्वारा यह निर्णय करना चाहिए कि इस व्यक्ति की आयु[1] कितनी है—अर्थात् यह कितने वर्ष जीवेगा। जो आयु निश्चय की जावे उसे दस भागो मे बांटना चाहिये। अर्थात् यदि यह निश्चय किया जाय कि यह मनुष्य ६० वर्ष जीवेगा तो ६० के १० खड करने से ६ वर्ष तक का एक खड हुआ। यदि यह निश्चय किया कि यह मनुष्य ७५ वर्ष जीयेगा तो ७½ वर्ष का एक खड हुआ—(१) जीवन का प्रथम भाग जन्म से ७½ वर्ष तक, (२) द्वितीय भाग ७½ वर्ष से १५ तक, (३) तृतीय भाग १५ से २२½ वर्ष तक, (४) चतुर्थ भाग २२½ से ३० तक, (५) पचम भाग ३० से ३७½ तक, (६) षष्ठ भाग ३७½ से ४५ तक, (७) सप्तम भाग ४५ से ५२½ तक, (८) अष्टम भाग ५२½ से ६० तक, (९) नवम भाग ६० से ६७½ तक, (१०) दशम भाग ६७½ से ७५ तक समझना चाहिये। इस प्रकार जितनी भी आयु निश्चित हो उसको १० से भाग देकर प्रत्येक खड कितने वर्ष का होगा यह निश्चित करना चाहिये। नीचे लिखे अनुसार जिस शरीर-भाग (अग) मे सुलक्षण हो उसके अनुरूप आयु-भाग मे सुख-समृद्धि होगी। जिस शरीर-भाग मे अशुभ लक्षण हो उसके अनुरूप आयु भाग मे कष्ट होगा।

---

१ हिन्दी में आपकी क्या अवस्था है ? आपकी क्या आयु है ? आप कितने वर्ष के है ? ये सब वाक्य एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। किन्तु सस्कृत में इस समय जो अवस्था हो उसे 'वय' कहते हैं और कितने वर्ष मनुष्य जीवेगा इसे आयु कहते हैं। इस ग्रन्थ में सर्वत्र 'आयु' सस्कृत के अनुसार ही प्रयुक्त हुआ है

(१)	प्रथम भाग	दोनो पैर, गुल्फ (टखने सहित)
(२)	द्वितीय ,,	दोनो पिडली और घुटने
(३)	तृतीय ,,	दोनो घुटनो से लेकर कमर तक
(४)	चतुर्थ ,,	नाभि तथा कमर
(५)	पचम ,,	पेट
(६)	षष्ठ ,,	हृदय तथा स्तन का प्रदेश
(७)	सप्तम ,,	बाहु तथा हँसली की हड्डी
(८)	अष्टम ,,	ओठ, गला तथा कधे
(९)	नवम ,,	नेत्र, भ्रू (भौं), ललाट
(१०)	दशम ,,	सिर

उदाहरण के लिये आयु-विचार से किसी की आयु ७० वर्ष की आती है और उसके शरीर मे और सब लक्षण अच्छे है किन्तु नेत्र, भौ, ललाट अशुभ लक्षणयुक्त है तो उसके जीवन का नवम भाग (५६वे वर्ष से ६३मे वर्ष तक) अच्छा नही बीतेगा। इसी प्रकार सर्वत्र समझना चाहिये।

यद्यद् गात्र रूक्ष मासविहीन शिरावनद्ध च।
तत्तदनिष्ट प्रोक्त विपरीत मत शुभ सर्वम् ॥

जो-जो भाग सूखा, खुरदरा, मासविहीन हो, या जिसमे नसे उभरी हुई हो उसके अनुरूप आयु का भाग अशुभ होता है।

जिस प्रकार जन्म-कुडली मे ग्रहो की दशा लगाते है उसी प्रकार शरीर मे दस दशा लगानी चाहिये।

प्रथम दशा पैर की दूसरी पिडलियो की.. . दसवी सिर की

क्षेत्र वशाज्जायन्ते मनुजाना जगति दश दशा क्रमश।
क्षेत्रेष्वशुभेष्वशुभा दशा शुभेषु च शुभा प्राय ॥

जो शरीर का भाग जैसा शुभ या अशुभ लक्षणयुक्त होता है प्राय वैसा ही उस शरीर-भाग की दशा का फल होता है।

२२वां प्रकरण

मनुष्य का पैर

पुरुष के पैर के विषय मे 'भविष्य पुराण' तथा 'गरुड पुराण' दोनो का मत है कि यदि पैर मासल (काफी मास भाग सहित), चिकने और सुन्दर हो तो शुभ लक्षण है। पैर के तलुए कमलपुष्प के भीतरी भाग की तरह गुलाबी तथा मुलायम होने चाहिए। पैर मे पसीना आना अच्छा लक्षण नही है। पैर की उगलिया परस्पर एक-दूसरे से भिडी और सुन्दर नखसहित होनी चाहिए। पैरो की एडिया गोलाई लिए हुए मासल होना अच्छा है। टखनो की हड्डिया अधिक निकला रहना अच्छा नही। इसी प्रकार पैरो मे नसे दिखाई देना अशुभ लक्षण है। पैरो को छूने से उनमे कुछ गरमाई होना शुभ लक्षण है और उनका ठडा होना अशुभ लक्षण है।

जिस पुरुष के पैर मे अकुश की भाँति रेखा हो वह पुरुष आजीवन सुख भोगता है। जिसके पैर आगे बहुत चौडे और पीछे बहुत सुकडे हो, या सूखे या दूर-दूर उगलियो सहित या जिस के पैरो मे नसो का जाल दिखाई दे वह दरिद्र और दुखी होता है। जिन के पैरो के तलवे पीले हो वे व्यभिचारी तथा जिनके पैर के कृष्ण वर्ण हो वे सदैव यात्रा करने वाले रहते हैं। जिनके पैरो के तलवे सफेदी लिए हो वे अभक्ष्य भक्षण करते हैं।

'स्कन्द पुराण काशी-खड' मे भी लिखा है —

पादौ समासलौ रक्तौ समौ सूक्ष्मौ सुशोभनौ।
समगुल्फौ स्वेदहीनौ स्निग्धावैश्वर्य सूचकौ ॥

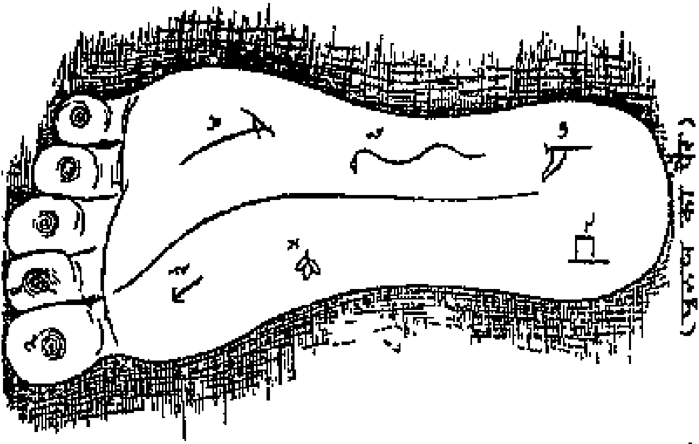

(चित्र नं० १२४) १ शंख २. चक्र ३ बाण ४ हल ५ कमल ६. सर्प ७. ध्वजा ८ व्यंजन (पंखा)

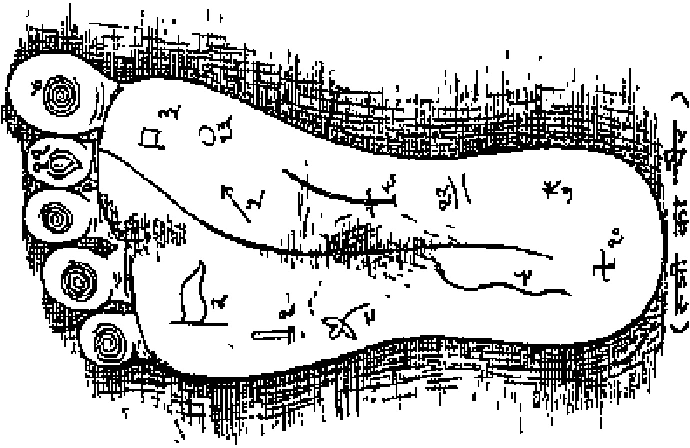

(चित्र नं० १२५) १. स्तंभ चिह्न २. ध्वजा ३. व्यजन (पंखा) ४ चक्र ५. बाण ६. तलवार ७. नक्षत्र ८ पद्म ९. सर्प १०. स्वास्तिक ११ शंख १२. वेदी १३. वृत्त चिह्न।

नोट—जो लम्बी रेखा है उसे 'ऊर्ध्व' रेखा कहते हैं। देखिये पृष्ठ ४७४-७५

इस मत से पैरो का सूक्ष्म होना गुण है। लोक मे कहावत है 'सिर बडा सरदार का, पैर बडा गवार का', किन्तु 'ज्योतिक निबन्ध' मे यह लिखा है—

"उरो विशालो धनवान् हनौ शीर्षेऽपराजित ।
बहुपुत्र कटि स्थूलो विशाल चरणो धनी ॥"

अर्थात् छाती विशाल होने से धनी, सिर और हनु (ठोडी के दोनो ओर का भाग) विशाल होने से किसी से न हारने वाला, कमर स्थूल होने से बहुत पुत्र वाला, विशाल पैर होने से धनी होता है। उसमे 'विशाल चरणो धनी' का यह अर्थ हो सकता है कि जिस का पैर कछुए की पीठ की तरह बीच मे उठा हुआ और मासल हो वह धनी होता है क्योकि शास्त्र का वचन है कि—

'कूर्मोन्नतौ च चरणौ प्रख्यातौ पार्थिवस्य तु ।'

अर्थात् कछुए की तरह उन्नत (ऊपर उठे हुए) पैर राजाओ के होते है। वराहमिहिर का भी यही मत है कि जिसके पैर कोमल, कछुए की तरह ऊँचे, उगलियाँ परस्पर मिली हुई लाल नखसहित हो वह भाग्यवान होता है और जिनके पैर की उगलियाँ छीदी हो, पैर के नाखून सफेद या पीलापन लिये हुए तथा रूखे हो वे जीवन मे कष्ट भोगते है। जिनके पैर बीच मे कुछ ज्यादा उठे हुए हों वे यात्रा बहुत करते है। जिनके पैर कषाय वर्ण के हो उनका वश आगे नही चलता और जली हुई मिट्टी की तरह जिनके पैर का रग हो वे पापी और हिंसक होते है। इसलिए बहुत छोटे पैर होना गुण नही है। क्योकि 'सामुद्र तिलक' का वचन है कि—

"पृथुपाणि, पृथुपाद पृथुकर्ण पृथुशिरा पृथुस्कन्ध ।
पृथुवक्षा पृथुजठर पृथुभाल पूजित पुरुष ॥"

अर्थात् बड़े हाथ वाला, बड़े पैर वाला, बड़े सिर, बड़े कान, बड़े कंधे, बड़ी छाती, बड़े पेट, बड़े ललाट वाला पुरुष पूजित होता है। इसमें 'पृथुपाद' अर्थात् बड़े पैर होना 'पूजित पुरुष' के लक्षणों में बताया गया है।

पैर के तलुए

'गर्ग संहिता' के मतानुसार जिनके पैर के तलुए पद्म गुलाब या रक्त की तरह लाल हों वे सुखी होते हैं और उच्च पद प्राप्त करते हैं। 'सामुद्र तिलक' में लिखा है कि जिनके पैर के तलुओं में रेखा न हो और वे कठिन, फटे हुए या रूखे हों तो ऐसे व्यक्ति दुःख पाते हैं। जिनके पैर के तलुए मांस रहित हों वे रोगी होते हैं और जिनका पैर का तलुआ मध्य में उठा हुआ हो वे यात्रा करने का शौकीन।

जिनके पैर में शंख, छत्र, वज्र, तलवार, ध्वजा, कमल, धनुष बाण, शक्ति, सर्प, व्यजन, चामर आदि चिह्न हों वे भाग्यशाली होते हैं। इन रेखाओं का गम्भीर (गहरा) और पूर्ण होना आवश्यक है अर्थात् बीच में कटी-फटी नहीं होनी चाहिए। यदि ये चिह्न हों तो पूर्ण किन्तु किसी रेखा से कटे भी हों तो जीवन के उत्तरार्द्ध में (अर्थात् आधा जीवन व्यतीत होने पर) इनको भोग और ऐश्वर्य प्राप्त होता है—

"रेखा शङ्ख छत्राङ्कुशकुलिशासि ध्वजादि संस्थाना।
अच्छिन्ना गम्भीरा स्फुटास्तले भागधेयवताम्॥"

यदि पुरुष के पैर में रेखाओं से साही, शृगाल, चूहा, तोता कौआ आदि की शक्ल बनती हो तो यह अशुभ लक्षण है। ऐसा पुरुष दरिद्र होता है।

लका देश मे हजारो वर्ष पहले सिंहलाक्षरो मे लिखे गये लक्षणो के अनुसार पैर मे कमल, ध्वजा, कुण्डल आदि के चिह्न तथा ऊर्ध्व-रेखा मनुष्य को राजा बनाती है—

"अंभोजचक्रा कुश कुण्डलाना दंभोलि शख ध्वज वारिजानाम् ।
चिह्नानि कुर्युं मनुज नरेश पादेपि चैव विहितोर्ध्व रेखा ॥"

पैर का अंगूठा

यदि पैर का अगूठा गोल, रक्त-नख का तथा स्वय ललाई लिए हुए हो तो बहुत शुभ लक्षण है । ऐसा व्यक्ति उच्च पद प्राप्त करता है और सुख भोगता है । पैर का अगूठा बडा होना अच्छा लक्षण नही । जिनके पैर के अ गूठे टेढे-मेढे हो वे भटकते फिरते है और क्लेश पाते है । यदि अ गूठा चपटा, कटा-फटा, टेढा, रूखा या बहुत छोटा हो तो यह भी अशुभ लक्षण है—

"वृत्तैस्ताम्रनखैं रक्तै रगुष्ठै राज्यभागिनः ।
अंगुष्ठा पृथुलाः येषा ते नरा भाग्यवर्जिता ॥
क्लिश्यन्ते विकृताङ्गुष्ठास्ते नरा वन गामिन ।
चिपिटै विक्षतै भंग्नैरङ्गुष्ठै रतिनिन्दिता ॥
वक्रै रूक्षैस्तथा ह्रस्वैरङ्गुष्ठै क्लेशभागिन ।

'सामुद्र तिलक' के मतानुसार पैर का अगूठा सर्प के फण की तरह गोलाई लिए, मासल हो तो शुभ है और यदि बहुत छोटा या बहुत बडा या टेढा या चपटा हो या उसमें नसे दिखाई देती हो तो अशुभ—

"वृत्तो भुजग फणाकृति स्तुङ्गो मासल शुभोऽङ्गुष्ठ ।
सशिरो ह्रस्वाश्चिपिटो वक्रो विपुल स पुनरशुभ ॥"

कितनी लम्बाई या मोटाई का अगूठा बडा समझा जाना

चाहिये और किस नाप से छोटा, ह्रस्व समझा जावे ? यह आगे 'पैर के प्रमाण' शीर्षक लक्षण से बतलाया गया है।

पैरों की उंगलियां

'भविष्य पुराण' के अनुसार पैरो की उगलियां बराबर, कुछ दाहिनी ओर झुकी हुई, मुलायम, परस्पर मिली हुई, उन्नत, आगे से गोल तथा देखने मे चिकनी और चमकदार मालूम हो तो ऐसा पुरुष बहुत ऐश्वर्यशाली एवम् प्रतिष्ठित पद प्राप्त करने वाला होता है। जिस पुरुष के पैर मे अगूठे के बाद की उगली अगूठे से आगे बढ जाय वह पुरुष निश्चय स्त्री-सुख प्राप्त करता है। यदि कनिष्ठिका (चिटली उगली) बडी हो तो पुरुष सुवर्ण (सोना) प्राप्त करता है। जिस पुरुष के पैर की उगलियाँ चपटी, फैली हुई (परस्पर एक-दूसरी से दूर) और सूखी हुई हो वह धनहीन होता है और सदैव दुखी रहता है--

चिपटा विरला शुष्का यस्याङ्गुल्यो भवन्ति वै।
स भवेत् दुःखितो नित्य धनहीनश्च जायते ॥
यस्य प्रदेशिनी दीर्घा अगुष्ठञ्च व्यतिक्रमेत्।
स्त्रीभोग लभते सोऽपि पुरुषो नात्र संशय ॥
मध्यमाया तु दीर्घाया विद्या भोगी भवेन्नर।
सा च ह्रस्वा भवेद्यस्य भार्याहानिमवाप्नुयात् ॥

समुद्र ऋषि का भी यही मत है कि प्रदेशिनी अगूठे की अपेक्षा लम्बी होने से पुरुष स्त्री-भोग प्राप्त करता है। किन्तु इनके मत से यदि प्रदेशिनी छोटी हो तो ऐसे पुरुष की स्त्री मर जाती है या प्रथम पुत्र मर जाता है और वह झगडालू होता है।

यदि मध्यमा उगली प्रदेशिनी से बडी हो तो ऐसा पुरुष विद्याभोगी

होता है अर्थात् विद्वान् होता है और विद्या से धन उपार्जन करता है। यदि मध्यमा उगली अनामिका से छोटी हो तो स्त्री-हानि करता है, अर्थात् उसको स्त्री-सुख कम होता है। यदि मध्यमा उगली प्रदेशिनी के बराबर हो और इधर-उधर की उगलियो से भिडी हो तो उसके अनेक पुत्र होते हैं। जिस पुरुष के पैर मे अनामिका मध्यमा से बडी हो उसको सोना मिलता है और यदि अनामिका कनिष्ठिका से छोटी हो तो ऐसे पुरुष व्यभिचारी होते हैं। जिसके पैर मे प्रदेशिनी और कनिष्ठिका स्थूल हो उसकी माता बचपन मे मर जाती है यह समुद्र ऋषि का मत है। जिसके पैर की उगलिया छोटी हो और छितराई हुई हो (अर्थात् परस्पर मिडी हुई न हो) तो ऐसा व्यक्ति क्षुद्र नौकरी करके अपना जीवन व्यतीत करता है:—

"असगताभि ह्रस्वाभिरगुलीभिस्तु मानव ।
दासो वा दासकर्मा वा भवेन्मर्त्यो न सशय ।।
अनामिकाथा दीर्घाया स्वर्णभागी भवेन्नर ।
सा च ह्रस्वा भवेद्यस्य त विद्यात्परदारगम् ।।

नख-लक्षण

जिनके उगलियो के नाखून लाल, शख की भाति घुमावदार और चमकदार हो वे श्रेष्ठ पुरुष होते है। जिनके नखो मे चिकनाई हो और शुभ्र बिन्दुयुक्त हो वे सौभाग्यवान होते है। नाखूनो पर सफेद चिह्न होने के सम्बन्ध मे दो मत हैं। कुछ शास्त्रकार इन्हे अच्छा समझते है और कुछ इनकी निन्दा करते है। नखो का सूक्ष्म, निर्मल और कुछ उठा हुआ होना अच्छा लक्षण माना गया है और नाखूनो का रूखा, मोटा, विकृत (भद्दे आकार का) या स्फुटित (फटा हुआ) होना अशुभ लक्षण है। जिनके पैर के नाखून टेढे-मेढे

हों वे सुशील नही होते और उनका जीवन आनंद मे नही बीतता। 'भविष्य पुराण' के मतानुसार यदि नाखून मोटे, फटे हुए और बेढंगे हों तो मनुष्य दरिद्र होता है। यदि नाखूनों मे कालापन हो तो ऐसा आदमी पाप-कर्म करने वाला होता है। उसके भाई उसे छोड देते हैं और ऐसे व्यक्ति का कुल नष्ट हो जाता है। 'सामुद्रतिलक' में लिखा है कि यदि नाखून मोटे, बीच मे चिरे हुए, छाजले की तरह या गधे या घोड़े के नाखून की तरह बहुत बड़े हो, तेज और कान्ति-हीन और सफेदी या कालापन लिये हों तो ऐसे व्यक्ति दरिद्री होते हैं।

पादपृष्ठ लक्षण—यदि पैर के ऊपर का भाग उठा हुआ, माँसल और कोमल हो तो शुभ लक्षण है। पैर के इस भाग में भी पसीना आना या बाल होना अशुभ लक्षण है। यदि नसें दिखाई दें तो यह भी अच्छा लक्षण नही।

गुल्फ-लक्षण

यदि पुरुष के पैर के टखने मास से ढके हो तो शुभ लक्षण है। समुद्र ऋषि के अनुसार जिनके गुल्फ शूकर के गुल्फ के समान होते है वे कष्ट उठाते है। भैंसे की तरह जिनके टखने हो वे पाप-कर्मी और दुखी होते है। टखनो का टेढा होना भी अशुभ लक्षण है। यदि गुल्फो पर रोएं हो तो सन्तान नही होती या पुत्र-सुख कम होता है।

पार्ष्णि (एड़ी)

समुद्र ऋषि के अनुसार यदि एड़ी बड़ी हो तो पुरुष दीर्घायु होता है—यदि पैर के बराबर हो तो ऐसा व्यक्ति कभी दुखी कभी

सुखी। यदि एडी छोटी हो तो दरिद्र और यदि उन्नत हो तो शत्रु पर विजय प्राप्त करता है।

पैर का प्रमाण (लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई)

ऊपर बताया जा चुका है कि छोटे और बड़े पैर के क्या-क्या शुभाशुभ लक्षण हैं किन्तु 'बड़ा' पैर कब समझना चाहिये और 'छोटा' कब ? प्रत्येक मनुष्य का पैर बहुत-कुछ उसकी ऊँचाई पर निर्भर रहता है। इसलिये एक ही ऊंचाई के ४-६ व्यक्तियों के पैर नापे जावें तो बड़े-छोटे की तुलना हो सकती है। किन्तु किसी व्यक्ति के पैर को नाप कर यह कैसे कहा जावे कि जितना होना चाहिये उससे यह छोटा है या अधिक लम्बा ? इस विषय में हमारे शास्त्रकार कहते हैं कि एडी से प्रदेशिनी तक चौदह उंगल (जिस मनुष्य का पैर हो उसके हाथ की बीच की उंगली के द्वितीय पोरवे की चौडाई को एक उंगल मानना चाहिये) लम्बा पैर होना चाहिये। चौडाई छः उंगल हो। अंगूठा दो उंगल लम्बा और उसका परिणाह (यदि तागा अंगूठे के चारों ओर लपेटा जावे तो उस तागे की लम्बाई) ४ उंगल होना चाहिये। इससे अधिक लम्बा और मोटा हो तो सामान्य से बड़ा और इससे पतला या छोटा हो तो 'ह्रस्व' समझना चाहिये।

प्रदेशिनी उंगली अंगूठे के बराबर होनी चाहिये। मध्यमा उंगली प्रदेशिनी से षोडशांश १/१६ कम। अनामिका उंगली मध्यमा से अष्टमांश १/८ कम और कनिष्ठिका अनामिका से १/६ षष्ठांश कम अर्थात् छोटी होनी चाहिये—

आपार्ष्णि ज्येष्ठान्त तलमत्र चतुर्दशाङ्गुलायाम।
विस्तारेण षडङ्गुल मङ्गुष्ठो द्व्यङ्गुलायाम॥

पञ्चाङ्गुल परिणाह. पादोन तर्ज्जनीखोऽङ्गुल दैर्घ्यात् ।
अगुष्ठ समा ज्येष्ठा मध्या तत्षोडशांशोना ॥
अष्टांशोनानामा, कनिष्ठिका, षष्ठभाग परिहीना ।
सर्वासाम्पासा नखाः स्वपर्व त्रिभाग मिता ॥
अन्यंगुलि परिणाहा प्रथमाङ्गुली विस्तृताङ्गुली भवति ।
अष्टाष्ट भागहीना शेषा क्रमशः परिज्ञेया ॥

इन सब उंगलियों के नख—पैर की उंगली के पोरवे से तिहाई लम्बे होने चाहियें। प्रदेशिनी उंगली की मोटाई (अर्थात् यदि एक तागा उसके चारों ओर लपेटा जावे तो उस तागे की लम्बाई) तीन उंगल होनी चाहिये। जितनी मोटी प्रदेशिनी हो उससे अष्टमांश १/८ कम मोटी मध्या उंगली और मध्या उंगली से अष्टमांश कम कनिष्ठिका होनी चाहिये।

लंका देश के प्राचीन विद्वान् का मत

श्री अनवमदर्शी स्थविर के मतानुसार यदि जन्म के समय ही पैर में मस्सा या तिल हो तो वह प्राकृतिक होता है। किन्तु पैदा होने के समय तो न हो और बाद में मस्सा या तिल हो तो उसे औत्पातिक समझना चाहिये। उसका फल निम्नलिखित है—

धनक्षय वितनुते माषको दक्षिणे पदे ।
स्त्री विप्रयोग वामे तु जङ्घयोरर्थ सम्पदौ ॥

दाहिने पैर में नवीन मस्सा हो तो धन का नाश कराता है। बायें पैर में हो तो स्त्री-विरह। दाहिने या बायें किसी भी पिंडली पर हो तो धन-सम्पत्ति दिलाता है।

* यह महानुभाव लंका देश में करीब ७०० वर्ष पहले उत्पन्न हुए और संस्कृत भाषा में किन्तु 'सिंहल' अक्षरों में इनकी कृति लिखी गई।

'तिल' के सम्बन्ध में भी उनका यही मत है कि जन्म के समय से ही तिल हो तो वह प्राकृतिक ही गिना जायगा। बाद मे यदि दाहिने पैर मे तिल हो तो उस पुरुष के पुत्र को कष्ट होगा (पुत्र को भयकर बीमारी या मृत्यु-तुल्य कष्ट या मृत्यु भी) यदि बाये पैर मे नवीन तिल हो उस पुरुष की पत्नी या मित्र के लिए अनिष्टकारक है (अर्थात् उसकी स्त्री या मित्र अत्यन्त बीमार हो जावे या मर जावे)। स्त्रियो के पैर मे उलटा फल—जो दाहिने मे कहा गया है वह बाये मे और जो बाये मे कहा गया है वह दाहिने मे समझना चाहिये—

"दक्ष पादतले जातस्तिलक स्तनयापह ।
वामे निहन्ति वनिता कुरुते च सुहृत्क्षयम् ॥"

चाहे बाये या दाहिने पैर के नाखूनो मे यदि सफेद, काले, पीले या लाल किसी भी रग के बिन्दु-चिह्न हो जावे तो वह 'उत्पात' कारक है। यदि पैर के दाहिने अगूठे के नाखून मे हो तो धन-नाश होता है और कलक लगता है। यदि प्रदेशिनी उगली के नाखून पर हो तो झगड़ा होता है, यदि बीच की उगली के नाखून पर हो तो चिन्ता और उद्वेगकारक है। यदि अनामिका उगली के नाखून पर हो तो प्रिय कार्य कराता है और कनिष्ठा उगली के नाखून पर पुत्र से हर्ष होता है। अर्थात् यदि नवीन सन्तान उत्पन्न होने की अवस्था हो तो पुत्र होता है। यदि सन्तानोत्पत्ति की अवस्था बीत गई हो तो पुत्र सम्पत्ति लाभ करता है अर्थात् पुत्र को धन-लाभ होता है।

बायें पैर मे इसका उलटा फल होता है। अर्थात् बाये पैर के अगूठे, प्रदेशिनी या मध्यमा उगली के नख पर दाग हो जावे तो

शुभ और अनामिका तथा कनिष्ठिका उंगलियो पर हो तो अशुभ समझना चाहिये।

दाहिने या बाये किसी पैर के ऊपर चिह्न हो तो माता-पिता को पीड़ा होती है।

लाल या काले दाग का प्रभाव विशेष उत्कट होता है। सफेद या पीले बिन्दु-चिह्नो का कम। जितने दिन तक ये चिह्न रहे उतने समय तक इनका प्रभाव रहता है। यदि चिह्न लुप्त हो जावें तो इनका प्रभाव भी समाप्त समझना चाहिये।

स्पन्द

यदि पुरुष के दाहिने पैर के तलुए मे पसीना आवे तो यह भय-कारक है। उसे यात्रा करनी पड़ेगी।

पुरुष के बायें पैर का फल इससे विपरीत समझना चाहिये। अर्थात् बाये पैर के तलुए मे स्पन्दन हो तो शुभ लक्षण है।

स्त्रियो का फल इससे विपरीत समझना चाहिये। दाहिने मे शुभ बाये मे अशुभ।

कण्डू—यदि पैर मे खुजली हो तो अच्छा नही है। शारीरिक रोग, यात्रा या धनक्षय होता है।

स्पन्द और कण्डू का फल १५ दिन के अन्दर होता है।

स्त्रियों के पैर

प्रतिष्ठितला: सम्यक् रक्ताम्भोज समत्विष।
तादृशा श्चरणा यस्या योषिता भोगवर्द्धना॥
करालैरति निर्मांसै रूक्षै रथशिराततै।
दारिद्रयं दुर्भगत्व च प्राप्नुवन्ति न सशय.॥

(भविष्य पुराण)

चलते समय जिन स्त्रियों के पैर के तलुए भूमि-भाग से संलग्न हो (अच्छी तरह लगें) और रंग में लाल कमल के समान हों ऐसे चरण प्रशंसा के योग्य हैं। ऐसी स्त्रियां धन और ऐश्वर्य भोगती हैं। यदि पैर कराल (बेढंगे, बड़े और भयानक), सूखे, रूखे हों और बहुत-सी नसें पैर में दिखाई देती हों तो दरिद्रता तथा दुर्भाग्य की द्योतक है।

शास्त्रों ने स्त्रियों के पैर के लक्षणों को बहुत अधिक महत्व दिया है : यहाँ तक लिख दिया है कि यदि कोई ऐसी कन्या से विवाह करे जिसके पैर निम्नलिखित शुभ लक्षणों से युक्त हों तो वह राजा हो जावेगा। स्त्री के सौभाग्य या दुर्भाग्य का प्रभाव पति पर पड़ता है। इस कारण शुभ-लक्षण कन्या से विवाह करने से सौभाग्य-वृद्धि और अशुभ लक्षण वाली कन्या से विवाह करने से दुर्भाग्य होता है—

"यस्याः स्निग्धौ समौ पादौ तनु ताम्रनखौ तथा।
श्लिष्टाङ्गुली चोन्नताग्रौ तां प्राप्य नृपतिं भवेत्॥
निगूढ गुल्फोपचितौ पद्मकान्ति तलौ शुभौ।
अस्वेदनौ मृदुतलौ मत्स्याङ्कुश यवाङ्कितौ।
वज्राब्ज हल चिह्नौ च दास्याः पादौ ततोन्यथा॥"

(गरुड़ पुराण)

तात्पर्य—दोनों पैर बराबर तथा चिकने हों। उनके नख ताम्र वर्ण के तथा पतले हों। पैर की उंगलियां परस्पर भिड़ी हुई हों। पैर आगे से ऊंचे हों। गुल्फ (टखने) मांसल हों अर्थात् टखनों की हड्डियां दिखाई न दें। पैरों के तलुए पद्म की कांति के हों—उनमें पसीना न आता हो, मृदु हों और उनमें मछली, अंकुश, यव, वज्र,

कमल तथा हल के आकार की रेखा हो—ऐसी कन्या से विवाह करे तो नृपति हो जावे। वराह मिहिर ने कन्याओं के पैर के शुभ-लक्षण बताते हुए उपर्युक्त गुण गिनाये हैं और लिखा है, "तामुद्वहेद् यदि भुवोऽधिपतित्वमिच्छेत्" अर्थात् यदि पृथ्वी का स्वामी होना चाहे तो ऐसी कन्या का पाणिग्रहण करे। जो शुभ चिह्न 'गरुड-पुराण' में बताये गये हैं उनके अतिरिक्त असि का चिह्न भी वराह-मिहिर ने लिखा है। अर्थात् पैर के तलुए में यदि तलवार की आकार का चिह्न हो तो वह भी शुभ लक्षण है।

पादतल लक्षण

'स्कन्द पुराण' के मतानुसार स्त्रियों के पैर के तलुए चिकने, सल, मृदु तथा सम होने चाहिये—अर्थात् कहीं ऊंचे कहीं नीचे नहीं। उनमें कुछ-कुछ गरमाई होना शुभ लक्षण है। पसीना आना अशुभ लक्षण है। इसी प्रकार यदि पैर के तलुए रूक्ष (रूखे), एक-सा रंग न हो या रंग उड़ा-उड़ा लगे, खुरदरे, बीच में खण्डित हो या उनमें परछाईं पड़े या दिखाई दे या शूप (छाजले) की तरह हो या बहुत सूखे हो तो दुःख और दौर्भाग्यसूचक हैं। 'सामुद्रतिलक' में भी लिखा है—

> "असित दौर्भाग्याय श्वेत दुःखाय योषाणाम्।
> शूर्पाकृतिभिश्चेट्य कुटिलै स्युर्दुर्भागाश्चरणतलै॥"

यदि स्त्री के चरणतल काले हो तो दौर्भाग्य का लक्षण है, यदि सफेद हो तो दुःख प्राप्त होता है, यदि शूर्प (छाजले—सूप) की आकृति के हो और कुटिल (टेढे) हो तो ऐसी स्त्रियां नौकरानी होती हैं और कष्ट पाती हैं।

पाद-रेखा-लक्षण

समुद्र ऋषि का मत है कि जिस स्त्री के पैर मे रेखा तर्जनी मे सुप्रकाशित (स्पष्ट) हो उसका शीघ्र विवाह होता है और उसका पति उसे बहुत प्यार करता है। जिन स्त्रियो के पैर के तलुओ में चक्र, पद्म ध्वजा, छत्र, स्वस्तिक आदि के चिह्न हो उनका विवाह उच्च पदाधिकारियो तथा शासको से होता है। ऐसी स्त्रियां बहुत ऐश्वर्यशालिनी होती हैं। इसी प्रकार जिनके माला, अकुश, दाहिनी ओर घूमा हुआ आवर्त चिह्न हो वे अति श्रेष्ठ तथा सम्माननीय कुल मे विवाही जाती हैं तथा उनके पति राजा के समान ऐश्वर्य-शाली और प्रतिष्ठित होते हैं।

'स्कन्द पुराण काशी खण्ड' के मतानुसार जिनके पैर मे चक्र, स्वस्तिक शख, कमल, ध्वजा, छत्र तथा मत्स्य-रेखा हो उनके पति पृथ्वीपति होते हैं। यदि पादतल के मध्य से रेखा चलकर—मध्या-गुली तक जावे तो ऐसी स्त्री अखण्ड भोग भोगती है। किन्तु यदि उसके पैर मे चूहे या सर्प के आकार की रेखा हो तो दुख और दरिद्रता प्रकट होती है—

> भवेदखड भोगाय मध्यागुलि सगता ।
> रेखाऽऽखुसर्पकाभा दुख दारिद्र्यसूचिका ।।

'सामुद्रतिलक' के मतानुसार भी उपर्युक्त ऊर्ध्व रेखा होने से पति की प्यारी होती है और उसका पति धनी होता है। 'गरुड पुराण' में उपर्युक्त शुभ चिह्नो के अतिरिक्त निम्नलिखित शुभ चिह्न और गिनाये गए हैं—

घोडा, हाथी, खभा, यव (जौ), तोमर, पर्वत, अकुश, कुडल, वेदी, रथ, श्रीवृक्ष (बिल्वल) आदि। जिन स्त्रियो के पदतल मे उपर्युक्त

चिह्नों मे से एक या अनेक हो वे बहुत उच्च तथा प्रतिष्ठित अधिकारी की पत्नी होती हैं।

'गर्गसंहिता' के वचनानुसार निम्नलिखित चिह्न पैर की उंगलियो या तलुओ मे होना सुख, समृद्धि, संतति तथा सौभाग्य का शुभ लक्षण है—

शंख, अंकुश, पद्म, छत्र, पृथ्वी, नक्षत्र, पर्वत, चन्द्र, चक्र, सूर्य, चामर, वज्र, व्यजन (पंखा), तोरण, सिंह, बछड़ा, घोड़ा, स्वस्तिक, मत्स्य, हंस, पूर्णकुम्भ, मकर, पताका आदि।

'सामुद्रतिलक' के मतानुसार यदि पदतल मे कुत्ते, श्रृगाल, भैंसा, कौवा, उल्लू, सर्प, चक्रवाक आदि के चिह्न हो तो ऐसी स्त्री दुख भोगती है।

उपर्युक्त जो शुभ और अशुभ चिह्न बताये गये हैं वे संपूर्ण (सब-के-सब) हो तो पूर्ण शुभफल और सब अशुभ चिह्न हो तो अत्यन्त अशुभ फल समझना चाहिये। किन्तु कुछ शुभ हो तो उसी अनुपात से शुभ और कुछ अशुभ हो तो उसी अनुपात से अशुभ समझना चाहिये—

"चक्रादि चिह्न मध्ये स्यादेकं बहूनि वा यासाम्।
ऐश्वर्यं सौख्य वा तासामपि तदनुमानेन ॥"

अंगुष्ठ-लक्षण

उन्नतो मांसलोऽङ्गुष्ठो वर्तुलोऽतुल भोगद ।
वक्रो ह्रस्वश्च विकटो दु ख दौर्भाग्य सूचक ॥
विधवा विपुलाङ्गुष्ठा दीर्घाङ्गुष्ठेन दुर्भगा ॥

(स्कन्द पुराण-काशी खण्ड)

जिस स्त्री के पैर के अंगूठे ऊंचे, मांसल, गोल हो वह बहुत ऐश्वर्य और सौभाग्यशालिनी होती है। यदि पैर के अंगूठे

टेढे, बहुत छोटे, विकट (बेढेगे) हो तो दुःख और दौर्भाग्य प्रकट होता है। यदि पैर के अगूठे बहुत बडे हो तो स्त्री विधवा होती है—यदि लम्बे अधिक हो तो दौर्भाग्यकारक हैं। 'सामुद्रतिलक' के मतानुसार भी छोटा, चपटा, टेढा पैर का अगूठा होने से कुल-क्षय होता है। अर्थात् या तो स्त्री विधवा हो जावे, इस कारण सतान न होने से कुल आगे न बढे या उसकी सतति जीवे नही, तो भी कुलक्षय हुआ। यदि अगूठे छोटे और गोल हो तो वह द्वेष करती है। अति लम्बा होना भी अशुभ है। वह पति की अप्रियकारिणी होती है।

पैरों की उंगलियां

'भविष्य पुराण' के मतानुसार यदि स्त्री के पैर की उगलियां परस्पर मिली हुई, सीधी, गोलाई लिये हुए हो और पैर के नाखून पतले तथा छोटे हो तो वह अनन्त ऐश्वर्यशालिनी होती है और राजसी भोगो को भोगती है—

"अगुल्य सहतावृत्ता अङ्ग्ल्यः सूक्ष्मनखास्तथा।
कुर्वन्त्यनन्तमैश्वर्य राजभोग च योषिताम्॥
ह्रस्वाश्च जीवित ह्रस्व विरला वित्तहानये।
दारिद्र्य मूलभुग्नास्तु प्रेष्यत्व पृथुलासु च॥"

यदि पैर की उगलिया बहुत छोटी हो तो अल्पायु होने का लक्षण है। यदि विरल हो अर्थात् एक-दूसरे से मिली न हो तो ऐसी स्त्री के पास धन-सग्रह नही होता या उसको धनहानि होकर घाटा उठाना पडता है। यदि पैर मे जहा उगलियां निकलती हैं उस ओर से गिनने पर प्रथम पव टेढा हो तो दरिद्रता का लक्षण है

यदि बहुत मोटी हो तो ऐसी स्त्री नौकरानी होती है—गृहस्थी मे नौकरानी की तरह काम करती रहती है।

यदि पैर की उगलिया एक-दूसरे पर चढी हुई हो, पतली और लम्बी पोरवे वाली हो तो पति-सुख मे कमी प्रकट होती है तथा दरिद्रता का भी लक्षण है। 'स्कन्द पुराण काशीखड' के मतानुसार यदि पैर की उगलिया बहुत लम्बी हो तो कुलटा और यदि अत्यन्त पतली हो तो निर्धनता का लक्षण है—

"दीर्घाङ्गुलीभि कुलटा कृशाभिरतिनिर्धना।"

यदि उगलिया चपटी या छिद्रयुक्त (एक-दूसरे से भिड़ी हुई न हो) हो तो यह भी अशुभ लक्षण है। चपटी उगलिया होने से दासी होती है—अपने स्वय के घर मे सदैव कार्य करने वाली या अन्य के घर मे कार्य कर अपना पेट पालना दासी का लक्षण है। यदि छिद्रयुक्त हो तो द्रव्य जमा नही होता।

जो स्त्री इस प्रकार चले कि उसके पैर के आघात से पृथ्वी से धूल उडे तो इसे अत्यन्त अशुभ लक्षण समझना चाहिये—ऐसी स्त्री कुल का विनाश करने वाली होती है।

स्त्रियो के पैर की उगलियो के सम्बन्ध मे 'विवेक विलास', 'गरुड पुराण', 'विष्णुधर्मोत्तर पुराण' आदि ग्रन्थो मे तथा समुद्र ऋषि, पराशर ऋषि आदि ने बहुत विस्तारपूर्वक लिखा है। ग्रंथ-विस्तार भय से वह सब-का-सब विषय इस पुस्तक मे उद्धृत नही किया जाता है। कुछ मोटी-मोटी बाते नीचे लिखी जाती है।

पराशर ऋषि का मत है कि जिस स्त्री के पैर के तलुए का मध्य भाग पृथ्वी का स्पर्श न करे और साथ ही पैर की कोई सी उगली भी पृथ्वी का स्पर्श न करे—ऐसी स्त्री को अधमा (बहुत

निकृष्ट कोटि की) समझना चाहिये। यदि किसी स्त्री की प्रदेशिनी उंगली अंगुष्ठ से बहुत बढ़ी हुई हो तो ऐसी कन्या दुःखिता तथा दौर्भाग्ययुक्त होती है। यदि मध्यमा उंगली पृथ्वी का स्पर्श न करे (अर्थात् इतनी उठी हुई हो कि जमीन से ऊंची रहे) तो ऐसी स्त्री स्वच्छन्द वृत्ति की होती है—क्या कार्य है, क्या अकार्य है, इसका विवेक उसे नहीं होता। यदि किसी स्त्री के पैर की अनामिका उंगली पृथ्वी का स्पर्श न करे तो यह भी अशुभ लक्षण है। यदि कनिष्ठिका उंगली पृथ्वी का स्पर्श न करे तो उसके दो पति अल्पजीवी होते हैं, तीसरे के साथ सुख-चैन करती है।

समुद्र ऋषि के मतानुसार यदि स्त्री के पैर की कनिष्ठिका उंगली भूमि का स्पर्श न करे तो 'भर्तारं प्रथमं हत्वा द्वितीयेन सहस्थिता' अर्थात् पहले पति को मार कर दूसरे के साथ रहती है। यदि इस लक्षण के साथ-साथ चिटली उंगली छितराई हुई अर्थात् अनामिका से बहुत दूर हो (दोनों के बीच में काफी अन्तर हो) और भी झुकी हुई, गाल पिचके हुए हों तो दुर्भाग्य का लक्षण है—ऐसी स्त्री व्यभिचारिणी भी होती है।

जिस स्त्री की अनामिका छोटी हो वह बहुत झगड़ालू होती है। छोटी होने से तात्पर्य है कि पुरुषों के पैर के वर्णन में जो सब उंगलियों की पारस्परिक लम्बाई दी गई है—'उसके अनुसार जो लम्बाई होनी चाहिये—उससे यदि छोटी हो तो 'कलहप्रिया' होती है—

"यस्या अनामिका ह्रस्वा तां विद्यात्कलहप्रियाम्।
अंगुष्ठं तु व्यतिक्रम्य यस्या पादे प्रदेशिनी।
कुमारी कुरुते जारं यौवनस्थैव का कथा॥

यदि प्रदेशिनी उंगली अंगूठे से बहुत बड़ी हो तो भी अशुभ लक्षण है।

'विवेक विलास' के अनुसार उंगलियों की जो लम्बाई दी गई है उस लम्बाई से कोई भी उंगली छोटी हो तो ऐसी स्त्री कलह-कारिणी होती है—

"यत्पादांगुलिरेकापि भवेद् हीना कथंचन।
येन केनापि सा सार्धं प्रायः कलह् कारिणी॥"

केवल पति से ही नहीं—किसी न किसी से वह झगड़ा करती ही रहती है।

'विष्णुधर्मोत्तर पुराण' में लिखा है कि यदि चिटली उंगली भूमि को स्पर्श न करे तो ऐसी कन्या से विवाह न करे। विद्वानों का मत है कि ऐसी कन्या साक्षात् 'मृत्यु' होती है अर्थात् उसका पति अल्पायु होता है। 'गरुड़ पुराण' के मतानुसार यदि निम्नलिखित दोनों अशुभ लक्षण कन्या में हों तभी वह कुलटा होती है—

(क) कनिष्ठिका या अनामिका भूमि का स्पर्श न करे।

(ख) अंगुष्ठ से बहुत बड़ी प्रदेशिनी हो

प्रायः इन्हीं लक्षणों को 'भविष्य पुराण' में भी दुहराया गया है—

"यस्याः कनिष्ठिका भूमिं न गच्छन्त्या परिस्पृशेत्।
अनामिका मध्यमा च यस्या भूमिं न संस्पृशेत्॥
पतिद्वयं निहन्त्याद्या द्वितीया च पतित्रयम्।
पतिहीनत्व कारिण्यौ हीने ते द्वे इमे यदि॥
प्रदेशिनी भवेद्यस्या अंगुष्ठादतिरेकिणी।
कन्यैव कुलटा सा स्यादेष एव विनिश्चयः॥"

उपर्युक्त मतानुसार यदि कनिष्ठिका, अनामिका तथा मध्या तीनो भूमि का स्पर्श न करें और प्रदेशिनी अगूठे से बहुत आगे निकली हो तो और भी अशुभ लक्षण है।

पैर की उगलियो के छोटे होने से अल्पायु तथा टेढे होने से 'टेढी' (क्रुद्ध प्रकृति की—'विषम स्वभाव वाली—पति के प्रतिकूल) होती है—

'ह्रस्वायुष्या च ह्रस्वाभिर्भुग्नाभि र्भुग्नवर्तिनी।'

'स्कन्द पुराण' के अनुसार यदि उगलियां मुलायम, सघन (परस्पर मिली हुई) उन्नत (पुष्ट) तथा गोलाई लिये हुए हो तो प्रशसा के योग्य अर्थात् यह शुभ लक्षण है। यदि उगलिया अंगुष्ठ के समान उन्नत पर्व वाली आगे से नुकीली, कोमल, बराबर हो तो ऐसी स्त्री रत्न तथा सुवर्ण की मालकिन होती है, यदि इससे विपरीत हो तो विपत्तिकारक होती है।

उगलियो का बहुत मोटा होना भी निर्धनता तथा आजीवन परिश्रम करना प्रकट करता है, 'प्रेष्यत्व पृथुलासु च'।

वक्राङ्गुलितलौ पादौ कन्या ता परिवर्जयेत्

जिस स्त्री के पैर के तलुए या पैर की उगलियां टेढी हो उससे विवाह न करे—

"स्थूल पादा च या कन्या सर्वाङ्गेषु च लोमशा।
स्थूलोष्ठदन्ता यस्या स्युर्विधवा ता विनिर्दिशेत॥
यस्या हस्तौ च पादौ च मुख च विकृत भवेत्।
उत्तरोष्ठे च रोमाणि सा क्षिप्र भक्षयेत्पतिम्॥"

जिस स्त्री के पैर मोटे हो और सारे शरीर पर रोए हो, जिसके होठ और दात मोटे हो ऐसी स्त्री विधवा हो जाती है। जिसके

हाथ, पैर और मुख विकृत (बेढंगे—ऊटपटांग, भद्दे) हो और ऊपर के होठ पर (मूंछ की जगह) रोम हो उसके पति की जल्दी मृत्यु हो जाती है।

कूर्म पृष्ठनखा. यस्या. स्निग्ध भाव विवर्जिता।
बाह्यांगुलितलौ पादौ ता कन्या परिवर्जयेत् ॥
स्थूल पादा च या कन्या दासी ता च विनिर्दिशेत्।
तथैवोत्कट पादा च वर्जनीया प्रयत्नत ॥

जिसके पैर के नाखून कछुए की पीठ की तरह बीच में ऊँचे, चारो ओर नीचे तथा खुरदरे और रूखे हो तथा उंगलियाँ बाहर निकली हो ऐसी कन्या से विवाह न करे। जिसके पैर बहुत मोटे हो वह दासी होती है। इस प्रकार जिसके पैर उत्कट (बहुत बडे, बेडौल और भयानक) हो उससे विवाह न करे। जिसके पैर की उगलियाँ एक-दूसरे से भिडी हुई—डोडी की तरह आगे पतली—हो उससे विवाह करना चाहिये।

पादौ यस्या स्फुटितौ रोमशा चिपिटागुली निगूढ नखौ।
कच्छप पृष्ठ नखौ वा सा दुःख दरिद्रता हेतु ॥
विपुल मुखी विपुल कुचा विपुल पदा विपुल कर्णहृन्नासा।
विपुलागुलिका प्रायो भर्तृघ्नी जायते योषित् ॥

जिसके पैर फटे, रोमयुक्त, उंगलियाँ चपटी हो, पैर के नाखूनो के चारो ओर चमडा ऊपर चढा हुआ हो, कछुए की पीठ की तरह बीच मे ऊँचे नाखून हो तो दुःख और दरिद्रता प्रकट करते है।

यदि स्त्री का बहुत बडा मुख, बहुत बड़े कुच, बहुत बडे पैर, बहुत बडे कान, बहुत बडी छाती, बहुत बडी नाक, बहुत बडी उगली हो तो प्राय. उसका पति मर जाता है।

पैरों के नाखून

यदि स्त्रियो के पैर के नख लाल, चिकने और सुन्दर हो तो शुभ लक्षण है—

सुभगत्वं नखैः स्निग्धैराताम्रैश्च धनाढ्यता ।
पुत्रा स्युरुन्नतैरेभि सुसूक्ष्मैश्चापि राजता ॥
पाण्डुरैः स्फुटितैः रूक्षैः नीलैः धूम्रैस्तथा खरैः ।
निःस्वता भवति स्त्रीणा पीतैश्चाभक्ष्यभक्षणम् ॥
(भविष्य पुराण)

यदि नख चिकने हो तो सौभाग्य, यदि लाल हो तो धनाढ्यता, यदि उन्नत हो तो अनेक पुत्रो की माता होती है । यदि सुन्दर और पतले हो तो ऐश्वर्य । यदि सफेदी लिए हो, फटे, रूखे, नीलापन लिए, खुरदरे या बदरग हो तो दरिद्रता का लक्षण है । यदि पीलापन लिये हो तो उचित-अनुचित का विचार किये बिना स्त्री सबकुछ खाती रहती है ।

चरणपृष्ठ लक्षण

'स्कन्द पुराण काशी खड' के अनुसार यदि स्त्रियो के पादपृष्ठ (पैर का ऊपर का भाग) उन्नत हो तो वे उच्च पदाधिकारी की पत्नी तथा ऐश्वर्यशालिनी होती हैं । पैर मे पसीना नही आना, नसो का दिखाई न देना, चिकनापन, मासलता तथा मृदुता शुभ लक्षण है । बीच का भाग यदि नीचा हो तो दरिद्रता, यदि नसे निकली हो तो सदा रास्ता चलने वाली, यदि रोम (पैर पर बाल) हो तो दासी (सदैव दासी की भाँति काम करने वाली) तथा पैर मासरहित हो तो दुर्भाग्ययुक्त होती है ।

गुल्फ-लक्षरण

जिसके पैर के गुल्फ चिकने तथा गोल हो, नसे दिखाई न दे वह बन्धु-बाधुओ के द्वारा धनाढ्य होती है अर्थात् पितृ-कुल तथा श्वशुर-कुल दोनो कुलो के लोग सम्पन्न होते है।

गुल्फो का मांस मे छिपा होना तथा नसो का दिखाई न देना जिस प्रकार शुभ लक्षरण है उसी प्रकार गुल्फो का ऊंचा-नीचा होना या बाहर निकला रहना, ढीला होना और रूखा होना दुर्भाग्य-सूचक है। समुद्र ऋषि के मतानुसार यदि भैंस की तरह गुल्फ हो तो बन्धन को प्राप्त होती है—अर्थात् अन्य अशुभ लक्षरण हो तो जेल जावे या इतनी परतन्त्रता मे रहे कि जीवन दु खमय हो जावे—

गुल्फैश्च महिषाकारै बंन्धन वधमाप्नुयात्।
निगूढ गुल्फा या नारी सात्यन्त सुखमेधते ॥

गर्ग ऋषि का भी वाक्य है कि गुल्फ अत्यन्त बड़े, बाहर निकले हुए, नसे जिनमे दिखाई देती हो तो ऐसी स्त्री की न सन्तान होती है न धनाढ्य होती है बल्कि विधवा होती है—

अत्युन्नताभ्यन्तरत शिराला,
गुल्फा विशालाश्च भवन्ति यासाम्।
प्रजान विन्दन्ति धन न चार्या,
स्ता गुल्फ दोषै विधवा भवन्ति ॥

पार्ष्णि (एड़ी)-लक्षरण

यदि एडियाँ सम (बराबर, बहुत निकली हुई नही) हो तो शुभ लक्षरण है। यदि बहुत लम्बी या चौडी हो तो दुख और दुर्भाग्यसूचक है। यदि बहुत उन्नत हो तो ऐसी स्त्री चचल स्वभाव की होती है।

'स्कन्द पुराण' के मतानुसार एड़ी का बहुत 'उन्नत' होना कुलटा-पने का लक्षण है किन्तु समुद्र ऋषि के मतानुसार ऐसी स्त्री दुःशीला (सुशीला के विपरीत) होती है। यदि एड़ी बहुत बड़ी हो तो व्यभि-चारिणी होती है—

उन्नत पार्ष्णिः दुःशीला महापार्ष्णिस्तु बन्धकी।
दीर्घपार्ष्णिः परिक्लिन्ना समपार्ष्णिस्तु शोभना॥

'विवेक विलास' के अनुसार एड़ी बहुत बड़ी हो तो कृपण (कंजूस), यदि चौड़ी अधिक हो तो क्रोध करने वाली, यदि उन्नत हो तो दुःशीला तथा एड़ी ऊँची-नीची हो तो निन्दनीय होती है—

कृपणा स्यान्महा पार्ष्णिः दीर्घ पार्ष्णिस्तु कोपना।
दुःशीलोन्नत पार्ष्णिश्च निन्द्या विषम पार्ष्णिका॥

'स्कान्द शारीरक' मतानुसार पैर की रेखाओं का फलादेश

यह फल पुरुष और स्त्री दोनों के लिये लागू है।

मदाघूर्णा पार्ष्णिभागे प्रादेशाङ्गुल संतता।
अस्या प्रयत्नसचारी विच्छिन्न स्वजनैरपि॥

यदि एड़ी से लेकर पिंडली तक—हाथ की प्रदेशिनी उंगली के बराबर लम्बी कोई रेखा दिखाई दे और कटी न हो तो इसे 'मदाघूर्णा' रेखा कहते है। जिसके पैर मे यह रेखा हो वह मद्य पीने वाली से संसर्ग करता हैं और स्वजनो से (अपने भाई, बन्धु पुत्रादि से) उसका विरोध होता है। कर्म विशेष के परिज्ञान या फल परिज्ञान में प्रत्येक कार्य के प्रयत्न मे उसकी प्रवृत्ति होती है।

मद पादतलस्थः या मध्यमामभिगच्छति।
तद्दाने तस्य सामर्थ्यं शुभमेव प्रयच्छति॥

यदि पैर के तलुए मे कोई रेखा मध्यमाङ्गुलि को जावे तो उस को 'मद' कहते है। ऐसा व्यक्ति सब विषयो में दानशक्ति रखता है अर्थात् मद तथा अन्य वस्तुओ के दान की सामर्थ्य उसमे होती है। यह शुभ रेखा है। पैर की ऊर्ध्व-रेखा तो मूल से प्रारम्भ हो कर उंगलियो तक जाती है—किन्तु यह 'मद' रेखा पैर के केवल चौथाई भाग मे होती है—यही दोनो मे अन्तर है।

तथैवानामिका या तु गच्छन्ती स्फुट निम्नगा।
अविच्छेदे स्थानयुग्मे सालसा परिकीर्त्यते ॥

यदि यही रेखा स्पष्ट हो, टूटी न हो और मध्यमा उगली की बजाय अनामिका उगली को जावे तो इसको 'अलसा' कहते हैं। ऐसा मनुष्य आलसी होता है।

तले पादस्य द्वास्था सा वामस्याङ्गुष्ठ सन्निधौ।
कीर्ति धर्मादि जनिता कीर्तिमत. सुत तथा ॥

बाये पैर के अगूठे के नीचे बन्धिनी रेखा के नीचे रेखा हो तो उसे 'द्वास्था' कहते है। जिस पुरुष के पैर मे यह रेखा हो वह धार्मिक तथा कीर्तियुक्त होता है और उसका पुत्र भी कीर्तिमान् होता है। यह रेखा जितनी लम्बी हो उतनी शुभता अधिक समझनी चाहिये।

बालिका स्वच्छवर्णाभा क्वचिद् बिल्वस्थिता तल ।

उपर्युक्त जिस 'द्वास्था' रेखा का वर्णन किया गया है उसके पास एक अंगुल भर दूरी पर रेखा हो तो उसे 'बालिका' कहते हैं। यदि यह सुन्दर वर्ण की हो तो जो 'द्वास्था' का फल है वही इसका समझना चाहिये। किन्तु यह कृष्ण वर्ण की हो तो 'लोभ' सूचित करती है। अर्थात् ऐसा व्यक्ति लोभी होता है

पादस्य मध्यतले या गता प्राप्ताशनो भवेत् ।

यदि पैर के मध्य मे कोई रेखा हो तो ऐसा व्यक्ति धन-धान्य समृद्धिमान्, सर्वस्व सम्पन्न होता है। ऊर्ध्व रेखा की भांति यह भी वैभव प्रदर्शित करती है। इसे शाकटायिनी कहते हैं।

विद्रुम प्रभया युक्ता महद्भिः सेव्यते बुधैः ।

यदि उपर्युक्त रेखा विद्रुम (मूंगे) की सी कान्ति की हो तो बड़े-बड़े विद्वान् उसकी सेवा मे रहते हैं। अर्थात् यदि पुरुष के पैर मे हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त उच्च पदाधिकारी होता है—यदि स्त्री के पैर मे हो तो वह महारानी या उत्कृष्ट पदाधिकारी की पत्नी होती है।

शकुरावपन पुसः पार्ष्णिमूलस्थिता भवेत् ।

यदि तलुए मे एड़ी के नीचे रेखा हो तो उसे 'शकु' कहते हैं। यह रेखा होने से पूर्व प्रवृत्ति का विच्छेद होता है। अर्थात् बाल्यावस्था या युवावस्था के आरम्भ मे जिस-जिस कार्य की ओर विशेष रुचि होती है अधिक अवस्था होने पर उससे भिन्न कार्य मे मनुष्य की रुचि होती है।

आन्नोटन पर पुसामनालस्य प्रयच्छति ।

यदि अंगूठे से करीब एक अंगुल दूर कोई रेखा प्रारम्भ हो तो उसे 'आम्रोटन' कहते है। ऐसा व्यक्ति आलसी नही होता।

पृष्ठा प्रतिष्ठिता भूमौ पूर्वस्या सकुलाधरा ।

जिसका पैर पृथ्वी पर अच्छी तरह प्रतिष्ठित हो—पैर का तलुआ तथा उंगलियां पृथ्वी का स्पर्श करे ऐसा व्यक्ति स्त्री-प्रिय होता है। यदि स्त्री उपर्युक्त लक्षण से युक्त हो तो वह पुरुष-प्रिय होती है—यदि अन्य शुभ लक्षण हो तो अपने पति की। यदि

अशुभ लक्षण हों तो उस तारतम्य से फलादेश करना उचित है।

कन्दुर्नाम मनुष्याणां तस्करत्व प्रयोजिका।
पार्ष्णिमूल प्रदेशे तु चतुरंगल मायता ॥

यदि एड़ी के नीचे चार अंगुल लम्बी रेखा हो तो उसे 'कन्दु' कहते है। यदि यह रेखा हो तो जातक 'चोर' होता है। स्त्रियों के पैर मे भी यही फल होता है।

कारणिजित कन्दर्पा भवेत् स्त्री निज भावणात्।
लक्षण तु तले पाद गामिनी जर्जरस्थिति. ॥

यदि पैर के तलुए जर्जर हों—चलने में परुष रव (अप्रिय घर-घराहट) हो तो ऐसी स्त्री मे वे लक्षण होते है जो साहित्य में 'स्वयदूती' किंवा 'वचन विदग्धा' मे वर्णित किये गये है।

छिदि प्ररोह पर्यन्ता पार्ष्णिभागे क्वचित्स्थिता।

यदि एडी मे कही एक अगुल लम्बी रेखा हो तो ऐसे जातक को स्त्री-सुख, होता है। स्त्री के पैर मे पुरुष-सुख समझना चाहिये।

तिस्रस्तु पश्चात् संयन्ति पार्ष्णि यस्य फलानि तु।
आयु. पुष्ट रतिश्चापि तादृशी धर्मसहिता ॥

यदि बाये पैर की एड़ी पर तीन रेखा हों तो अच्छी आयु, रति (स्त्री-सुख स्त्री के पैर में पति-सुख) तथा धार्मिकता होती है।

पैर में ऊर्ध्व रेखा का फल

यदि पैर के तलुए में ऊर्ध्व रेखा (जिस प्रकार हाथ मे भाग्य-रेखा होती है उसी प्रकार की रेखा पैर में) हो और ऊर्ध्व रेखा के नीचे तीन रेखा हों अर्थात् तीन रेखा आकर मिले और वहां से एक रेखा पैर की उंगलियों की ओर सीधी लम्बी जावे तो साम्राज्य,

दायिनी होती है अर्थात् ऐसा पुरुष या स्त्री पूर्ण ऐश्वर्यशाली होता है—

यदि सा पादतलगा साम्राज्य सूचयेद् ध्रुवम् ।
रेखात्रयोपबद्धा चेन्निरुद्धा मूलतोप्यसौ ॥

जितनी लम्बी यह रेखा होगी उतना ही अधिक फल ऊर्ध्व-रेखा का होगा । यदि पैर के मूल (एड़ी के नीचे का हिस्सा) से ही प्रारम्भ हो तो बहुत अधिक फल होगा ।

पादयोस्तलयो स्युश्चेन्मोह कान्तिरनादर ।
अगुलीषु सिरावन्धा शून्यता दापयन्ति हि ॥

यदि पैर के तलुओ मे नसें दिखाई दे तो इसका फल मोह, कान्ति तथा अनादर है। पैर की उगलियो मे नसे दिखाई दे तो द्रव्य नहीं ठहरता ।

२३वाँ प्रकरण (प्रथम भाग)

पुरुष-लक्षण

पैरों के लक्षण पिछले प्रकरण मे बताये जा चुके है। अब पिडलियों, घुटनो तथा पुरुषो के अन्य अगो के लक्षण बताये जाते है।

जंघा-लक्षण

बहुत से लोग समझते है कि जाँघ शब्द सस्कृत के जघा शब्द का अपभ्र श है इस कारण जघा का अर्थ जाँघ हुआ, परन्तु सस्कृत मे जघा कहते है घुटने तथा पैर के बीच के भाग को जिसे हिन्दी मे पिडली कहते है। यदि घोडे या हिरन की तरह टागो का नीचे का आधा भाग हो तो मनुष्य भाग्यशाली होता है। मछलियो की तरह जिनकी जघा होती है वे ऐश्वर्यशाली होते हैं। जिन व्यक्तियो की जघा (पिडलियाँ) सिंह या व्याघ्र की तरह हो वे धनी होते हैं। यदि पिडलियो पर बहुत रोये हो तो मनुष्य दरिद्री होता है और दु ख पाता है। शृगाल की तरह जघा वाला भाग्यहीन और कौए की तरह टाग वाला दु खी होता है। जघा का बहुत बडा या मोटा होना भी भाग्यहीनता का लक्षण है। यदि टाँग का निचला भाग हाथी की सूंड की तरह गोलाई लिए हुए, नीचे पतली ऊपर मोटी हो, उस पर कम रोम हों तथा जो रोम हो वे मुलायम हो तो शुभ लक्षण है।

समुद्र ऋषि के मतानुसार यदि अत्यन्त गोल जघा हो तो

ऐसा व्यक्ति ऐश्वर्यशाली होता है। यदि कुत्ते, शृगाल, गधे या रीछ की तरह जाघ हो तो अशुभ समझना चाहिए। ऊपर सर्वत्र घुटने से नीचे तथा टखनो के ऊपर जो टाँग का भाग है उसके लिए जघा शब्द का प्रयोग किया गया है।

रोम-लक्षण

ऊपर जघाओ के सिलसिले मे रोम या रोये के विषय मे चर्चा की गई है। किस प्रकार के रोये शुभ और किस प्रकार के अशुभ होते हैं यह बताया जाता है। रोम शरीर के चमडे मे जहाँ से निकलता है वहा एक अति सूक्ष्म छिद्र होता है। इसे रोमकूप कहते हैं। यदि एक रोमकूप मे से एक ही रोम निकले तो मनुष्य बहुत उच्च पद प्राप्त करता है। एक रोमकूप मे से यदि एक ही सिर का बाल भी निकले तो उसे भी बहुत शुभ लक्षण मानना चाहिए। यदि शरीर मे या सिर पर एक-एक रोमकूप से दो-दो रोम निकले तो ऐसा व्यक्ति महा बुद्धिमान और विद्वान् होता है। किन्तु यदि एक-एक रोमकूप से तीन-तीन रोम निकले तो मनुष्य दरिद्री और दुःखी होता है।

'सामुद्र तिलक' के मतानुसार यदि शरीर मे भौंरे के समान काले, सुन्दर, चिकने, अत्यन्त पतले रोम हो तो जातक राजा या उसके समान श्रेष्ठ पद प्राप्त करता है। शरीर मे रोम होने से मनुष्य सौभाग्यवान होता है। यदि रोये बहुत घने हो तो जातक विद्वान् होता है। यदि मनुष्य के शरीर मे बिलकुल रोम न हो तो सन्यासी होता है। यदि मोटे, रूखे तथा चुभने वाले रोम हो तो ऐसे मनुष्य को अधम समझना चाहिए। यदि रोम आगे से फटे हुए हो अर्थात् एक रोम आगे चलकर चिरा हुआ हो तो मनुष्य धनी होता है।

यदि शरीर मे रोम पीले हो तो पाप कर्म करने वाला होता है।

जानु (घुटने)-लक्षण

यदि घुटने भीतर धँसे हुए हों तो मनुष्य परदेश मे मरता है और अपनी स्त्री या स्त्रियो के अधीन रहता है। यदि घुटने टेढ़े-मेढे, विकराल या बहुत छोटे हो तो मनुष्य धनहीन होता है। यदि घुटने खूब मोटे हो और मांसयुक्त हो तो मनुष्य ऐश्वर्यवान और दीर्घायु होता है।

'सामुद्र तिलक' के अनुसार यदि हाथी के समान घुटने हों तो मनुष्य भोगी होता है। यदि घुटने मोटे हों तो पृथ्वी का स्वामी। यदि घुटने की सधि (जोड़) पैरो मे मजबूत और सुन्दर हो (अर्थात् मासल होने से दिखाई न दे) तो मनुष्य दीर्घायु होता है।

यदि घड़े की तरह घुटने हों तो मनुष्य की दुर्गति होती है। यदि तालफल की तरह हों तो बहुत दुःख उठाता है। जिसके दोनों घुटने कमज़ोर, ऊँचे-नीचे हो वह छोटे दर्जे की नौकरी करता है और दरिद्रता भोगता है। घुटनों पर मांस समान रूप से न हो, कही मांसल और कही मासहीन तो भी अशुभ लक्षण है। ऐसे मनुष्य धनी नही होते।

कटि-लक्षण

'बृहत् सहिता' के अनुसार यदि शेर की-सी कमर हो तो मनुष्य उच्चाधिकारी होता है। यदि बन्दर या हाथी के बच्चे की तरह कमर हो तो धनहीन होता है। समुद्र ऋषि के मतानुसार सिंह या व्याघ्र की तरह कमर होने से दण्डनायक (दूसरे को दंड देने का अधिकार रखने वाला मजिस्ट्रेट, जज, कलेक्टर आदि) होता है किन्तु बन्दर, कुत्ते, सियार, हाथी या भालू की तरह हो तो निर्धन होता है।

'सामुद्र तिलक' मे लिखा है कि कमर पर बहुत अधिक रोम हो तो दरिद्र। यदि बहुत छोटी कमर हो तो दुर्भाग्ययुक्त, यदि मोटी, बड़ी कमर हो तो मनुष्य धनी होता है।

नाभि

जिसकी नाभि विस्तृत, गोल, चारो ओर से ऊँची उठी हुई हो तो जातक सुखी, वीर तथा धन-धान्य-सम्पन्न होता है। यदि नाभि नीची और छोटी हो तो मनुष्य क्लेश पाता है। यदि बीच में घुमाव हो या रेखा हो तो धनहानि होती है तथा पेट मे दर्द होता है। यदि नाभि बायी ओर घूमी हुई हो तो ऐसा मनुष्य सदैव दुष्टता करता रहता है। यदि दाहिनी ओर घुमाव हो तो बहुत विद्वान् और बुद्धिमान होता है। यदि बगल मे ज्यादा फैली हो तो जातक दीर्घायु होता है। यदि ऊपर को ज्यादा फैली हो तो मनुष्य ऐश्वर्य-युक्त होता है। यदि नीचे को ओर ज्यादा फैली हो तो ऐसे व्यक्ति के पास गाय, बैल अधिक रहते हैं अर्थात् धनी होता है। नीचे अधिक फैली हुई होने से केवल धन विशेष कहना चाहिए। ऊपर विशेष चौड़ी होने से धन और पद दोनो मे विशिष्टता प्राप्त होती है। यदि कमल की कली के समान सुन्दर नाभि हो तो मनुष्य निश्चय राजा या उसके समान होता है। पुरुषो की नाभि गम्भीर और गोल होना शुभ लक्षण है। इससे विपरीत हो तो मनुष्य दुःखी होता है।

कुक्षि-लक्षण

पेट के बगल के भाग को कुक्षि कहते हैं। 'भविष्य पुराण' के अनुसार जिसकी कुक्षि बराबर हो (अर्थात् न ऊँची उठी हुई न नीची दबी हुई) वह भोगी होता है। जिसकी कुक्षि नीची हो उसका धन

नाश होता है। जिसकी कुक्षि हाथी के समान हो वह मायावी (बाहर से कुछ और भीतर से कुछ और) होता है और सदा कपट व्यवहार करता है।

पार्श्व-लक्षण

यदि पार्श्व मासल हो तो शुभ लक्षण। इस भाग का मुलायम होना शुभ लक्षण है। यदि पार्श्व बडी, मासल और मृदु हो तो जातक धनी, उच्चाधिकारी होता है और यदि टेढी-मेढी गड्ढेदार हो तो दरिद्र होता है। पार्श्व के बाल बराबर, मुलायम और दाहिनी ओर घूमे हुए हो तो सौभाग्य का लक्षण है। यदि इससे विरुद्ध लक्षण हो तो जातक निर्धन तथा पराधीन होता है।

उदर (पेट)

'भविष्य पुराण' के अनुसार पेट आगे को निकला हुआ न होना शुभ लक्षण है। ऐसा व्यक्ति जिसका उदर सम (बराबर) हो धन-ऐश्वर्य-सम्पन्न होता है। घडे की तरह पेट होना दरिद्रता का लक्षण है। "जिसका पेट हिरन या मोर की तरह हो वह 'धन्य' है।" जिसका पेट व्याघ्र या सिंह की तरह हो वह राजा होता है। जिसका पेट मेढक की तरह हो वह पृथ्वी का स्वामी होता है। वराहमिहिर ने लिखा है कि साँप की तरह पेट होना अशुभ लक्षण है। घड़े या हाडी की तरह पेट होने से आदमी बहुत

नोट—नाभि से ऊपर कंठ तक के भाग को तीन भागो में बाटा है। पेट, हृदय और वक्षस्थल इसी प्रकार बगल के भाग को तीन भागो में बाटा है। सब से नीचे का भाग कुक्षि (कोख), उससे ऊपर का भाग पार्श्व (जिसमें पसलियां होती हैं और ऊपर का कक्षा (काँख)।

भोजन करने वाला होता है। 'सामुद्रतिलक' ने भी प्राय उपर्युक्त लक्षणों को ही दोहराया है। लिखा है कि चारों ओर से पेट बराबर होने से मनुष्य बहुत धनी होता है। 'मेढक की तरह पेट होने से राजा, बैल या मोर की तरह पेट होने से भोगी, गोल पेट होने से सुखी, मछली या व्याघ्र की तरह पेट होने से सौभाग्यशाली, सर्प की तरह पेट होने से नौकर और बहुत भोजन करने वाला होता है।' यदि कुत्ते, गीदड या भेडिये की तरह पेट हो तो मनुष्य दरिद्र होता है। बहुत पतला पेट होने से मनुष्य पाप करने वाला तथा हिरन के बच्चे की तरह पेट वाला चोर होता है। पेट मे वलि या सलवट पडना अच्छा लक्षण है। यदि ये वलिया सीधी हो तो मनुष्य सदाचारी और सुखी होता है किन्तु ऊँची-नीची या टेढी हो तो व्यभिचार का लक्षण है। सीधी—यदि एक वलि हो तो विद्वान्, दो हो तो भोगी, तीन हो तो अनेक शास्त्रो का विद्वान, चार हो तो बहु पुत्रवान् होता है। किसी-किसी जगह एक वलि होना अच्छा नही माना गया है। सीधी वलि होना यद्यपि शुभ लक्षण है किन्तु यदि एक भी वलि न हो तो वह भी उत्तम लक्षण है।

हृदय-लक्षण

जिनका हृदय विस्तृत और मासल होता है वे दीर्घायु होते हैं। हृदय का भाग ऊँचा उठा हुआ, स्थिर तथा बिना रोम के अच्छा माना गया है। यदि रोम हो भी तो मृदु रोम होना अशुभ लक्षण नही है। पैने तथा चुभने वाले रोम हो या नसें निकली हुई हो तो ऐसा व्यक्ति अधम होता है। हृदय का सबसे शुभ लक्षण यह है कि कैसी भी परिस्थिति मे उसकी धडकन तेज न हो। हृदय का कांपना अशुभ लक्षण है।

वक्ष (छाती)

पेट के ऊपर और छाती के नीचे हृदय भाग होता है। हृदय-भाग के ऊपर वक्ष। यदि छाती समतल हो तो मनुष्य धनी होता है, यदि ऊँची-नीची हो तो शस्त्र से मृत्यु होती है। यदि छाती मोटी और पुष्ट हो तो आदमी बहादुर होता है, यदि छाती पतली हो तो मनुष्य द्रव्यहीन होता है। छाती पर खूब रोये होना शुभ लक्षण है। यदि रोये ऊपर की ओर जाते हो तो विशेष शूरता का द्योतक है। उर-स्थल जितना चौड़ा, स्थिर, उन्नत और कठिन हो उतना ही शुभ लक्षण समझना चाहिए।

जत्रु (हंसली की हड्डी)

यदि हसली निकली हुई हो तो मनुष्य दरिद्र होता है। यदि मासल और ऊँची उठी हुई हो तो मनुष्य धनी और भोगी होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि मांस मे छिपी हुई हो और उन्नत हो तो शुभ लक्षण है और विना मास के केवल हड्डी निकली हुई हो तो अशुभ लक्षण।

स्कन्ध (कंधे) लक्षण

यदि कधे ऊचे, बड़े और मासल हो तो ऐसा व्यक्ति बहादुर होता है। यदि हाथी, बैल या सुअर की तरह कधे हो तो मनुष्य महाभोगी, महाधनी और उच्च पदाधिकारी होता है। कधो का मासहीन होना या छोटा गड्ढेदार होना अच्छा लक्षण नही है। कधे पर रोम होना भी दरिद्रता का चिह्न है। केले के स्तम्भ की तरह या बकरे की तरह जिसका कन्धा होता है वे महाबलवान और धनी होते है।

कक्षा (काँख)-लक्षण

-'भविष्य पुराण' के मतानुसार जिसकी काँख उन्नत, बिना पसीने वाली, पुष्ट, मांसल और सुगन्धयुक्त हो वह राजा होता है। 'गरुड़ पुराण' में लिखा है कि पीपल के पत्ते की आकार की, सुगन्धित, मृदु-रोमयुक्त काँख राजाओं की होती है। इससे विरुद्ध लक्षण हो तो मनुष्य निर्धन होता है। सम होने से भोगी, नीची गड्ढेदार होने से निर्धन, उन्नत होने से राजा और विषम (ऊँची-नीची) होने से मनुष्य बेईमान और कपटी होता है।

बाहु (भुजा)-लक्षण

कन्धे से लेकर मध्यमा उंगली के अन्त तक के भाग को बाहु कहते हैं। जिसकी बाहु हाथी की सूंड की तरह पुष्ट और गोल हो तथा घुटने तक आवे वह राजा होता है। बाहुओं का लम्बा होना गुण है। बाहुओं की गोलाई सुन्दर होनी चाहिए। कन्धे के पास स्वभावतः बाहु विशेष मोटी होगी और कलाई के पास कम। इसी को स्पष्ट करने के लिए 'सामुद्रतिलक' में लिखा है कि गाय की पूंछ जैसे ऊपर मोटी और नीचे क्रमशः पतली होती जाती है उसी प्रकार पुरुष की दोनों भुजाएँ होनी चाहिए। बाहुओं में नसें दिखाई देना या अधिक रोम होना अच्छा लक्षण नहीं है। जिनकी बाहु छोटी और रोमयुक्त होती हैं वे दरिद्री होते हैं। यदि बाहु समान रूप से गोल न हो किन्तु ऊँची-नीची हो तो ऐसा मनुष्य चोर होता है। बाहु छोटी होने से स्वयं स्वतन्त्र या उच्चपदाधिकारी नहीं होता है किन्तु दूसरे की सेवा करने वाला पराधीन होता है।

पृष्ठ (पीठ)-लक्षण

'भविष्य पुराण' के अनुसार जिस पुरुष की पीठ व्याघ्र के

समान हो वह सेना का नायक होता है किन्तु यदि सिंह के समान पीठ हो तो बन्धन को प्राप्त होता है। कछुए के समान पीठ होना बहुत शुभ लक्षण है। ऐसे व्यक्ति धनवान और सौभाग्यशाली होते है। जिनकी पीठ पर रोयें न हो वे धनी और जिनकी पीठ पर बहुत रोये हो वे निर्धन होते है। समुद्र ऋषि के मतानुसार जिस आदमी की पीठ घोडे या व्याघ्र के समान हो वह पृथ्वीपति होता है। समुद्र ऋषि ने पीठ के विषय मे चार शुभ लक्षण कहे है। चिकनी हो, मासल हो, बीच में गड्ढेदार न हो और रोम न हो। ये चारो धनिको के लक्षण है। इससे विपरीत निर्धनता के लक्षण समझने चाहिए।

ऊपर जो व्याघ्र की पीठ शुभ और सिंह की पीठ अशुभ बताई गई है सो हिन्दी भाषा मे प्राय दोनो प्रकार के जन्तुओ को शेर ही कहते है। किन्तु व्याघ्र से काली धारीदार बाघ और सिंह से काठियावाडी बबर शेर समझना चाहिए।

कृकाटिका (गर्दन का पिछला हिस्सा)-लक्षण

यदि गर्दन के पिछले भाग मे रोम हो या नसे निकली हो तो दरिद्रता का सूचक है। यदि यह भाग टेढा-मेढा या बहुत बडा हो तो भी रोग और दरिद्रताकारक होता है।

ग्रीवा (गर्दन)-लक्षण

'भविष्य पुराण' के अनुसार चपटी गर्दन वाला दरिद्र होता है। जिसके गले मे नसे निकल रही हो उसका भी यही फल है। जिस की गर्दन भैंसे के समान हो वह शूरवीर, मृग के समान हो वह डरपोक होता है। छोटी गर्दन वाला सुखी, भोगी और धनवान

होता है। जिसकी गर्दन में शख के समान रेखा हो वह सब दुष्टो पर विजय पाने वाला होता है—

> क्रूर स्यान्महिषग्रीवो मृगग्रीवो भयातुर'।
> ह्रस्वग्रीवस्तुधनवान् स सुखी भोगवास्तथा ॥

जिनकी गर्दन बडी, टेढी, सूखी या कृश हो या खरगोश के समान गर्दन हो, वे निर्धन होते है। 'गरुड पुराण' मे भी प्राय यही लक्षण दोहराये गये है। यह विशेष रूप से लिखा गया है कि मृग के समान कठ होने से शस्त्र द्वारा मृत्यु होती है। बहुत लम्बी गर्दन होने से पुरुष अधिक भोगी होता है। समुद्र ऋषि लिखते है कि जिसके गले मे तीन बलि (सलवट) पडे उसे शख के समान ग्रीवा वाला समझना चाहिए। जिसकी गर्दन गोल घडे के समान हो वह धनी और दीर्घायु होता है। जिसकी गर्दन टेढी हो वह चुगलखोर, जिस की बगुले के समान हो वह पाखडी और गधे के समान ग्रीवा वाला दु खी होता है।

चिबुक (ठोड़ी)-लक्षण

ओठ के नीचे जो ठोडी का भाग है उसे सस्कृत मे चिबुक कहते है और गाल के नीचे ठोडी के दोनो ओर जो भाग है उसे सस्कृत मे हनु कहते है। पहले चिबुक का लक्षण बताया जाता है। 'सामुद्र-तिलक' के अनुसार पुण्यवान व्यक्तियो के चिबुक गोल, मासल, छोटे और मुलायम होते है। चिबुक बडा होना अच्छा नही। अति कृश, दीर्घ, स्थूल या आगे से दो भागो मे बटा हुआ चिबुक दरिद्रता का लक्षण है। समुद्र ऋषि लिखते है, "जिनकी ठोडी लबी और मास-हीन होती है वे सदैव निर्धन और रास्ता चलने वाले होते है। यदि

चिबुक मांसल हो तो पुरुष धनी और बहु पुत्रवान होते है।"

हनु-लक्षण

दीर्घ हनु होने से मनुष्य मे दृढता होती है। प्राय जिस मनुष्य मे दृढता और बुद्धि होती है वह हार नही खाता, इसलिए कहा गया है कि जिसका सिर और हनु ये दोनो भाग बडे हो वह मनुष्य विजयी होता है। हनु भाग बडा और टेढा हो तो शुभ लक्षण है।

श्मश्रू-लक्षण

प्राय आजकल लोग दाढी-मूंछ रखते ही नही इस कारण दाढी-मूंछ का लक्षण कुछ महत्व नही रखता। फिर भी 'सामुद्र-तिलक' का मत है कि दाढी-मूंछ के केश सघन, मृदु, सूक्ष्म होना उत्तम है। आगे से फटे हुए (दो भागो मे विभक्त) केश अच्छे नही होते। एक सस्कृत का प्रसिद्ध श्लोक इस प्रसग मे दिया जाता है—

चिबुके यस्य रोमराशि न वक्षसि न गण्डयो ।
तेन सख्य न कुर्वीत यदि निर्मानुष जगत् ।।

अर्थात् जिसके चिबुक पर रोम हो किन्तु कपोल या हनु पर बाल न हो और वक्ष-स्थल (छाती) पर भी बाल न हो उससे कभी दोस्ती न करे। यदि ससार मे कोई दूसरा मनुष्य न हो और केवल ऐसा ही एक पुरुष हो तो भी उससे मित्रता नही करे क्योकि ऐसा व्यक्ति विश्वास के योग्य नही।

कपोल (गाल)-लक्षण

'भविष्य पुराण' के अनुसार जिस पुरुष के कपोल फूले हुए और कमल के पत्र की तरह कान्तियुक्त होते है उसको कृषि (खेती) से बहुत धन प्राप्त होता है। यदि सिह, व्याघ्र या बडे हाथी की

तरह कपोल हो तो ऐसा व्यक्ति सेना का नायक और ऐश्वर्यशाली होता है। जिस समय 'भविष्य पुराण' का निर्माण हुआ भारत जैसे कृषि-प्रधान देश मे अधिकतर लोग खेती से धनवान होते थे किन्तु आजकल कृषि थोडे लोग करते है इस कारण कपोल मासल और कान्तियुक्त हो तो किसी भी साधन से धनयुक्त समझना चाहिए।

'गरुड पुराण' के अनुसार भी उन्नत कपोल होने से भोगी और उच्चपदाधिकारी होता है। 'सामुद्रतिलक' मे लिखा है कि उन्नत कपोल होने से सुखी और मासल कपोल होने से भोगी होता है। जिनके कपोल सिंह या हाथी की तरह हो वे किसी प्रान्त या रियासत पर हकूमत करने वाले होते है। जिनके कपोल धॅसे हुए या मास-हीन हो या जिनके कपोल पर बहुत कम रोये हो (अर्थात् घनी दाढी न हो) वे पापी, दुःखी, भाग्यहीन सदैव दूसरे की नौकरी करने वाले होते है।

मुख-लक्षण

मुख का बहुत अधिक महत्व है। जब हम किसी व्यक्ति से मिलते है तो सबसे पहले उसके चेहरे की तरफ ही दृष्टि जाती है। 'हेमाद्रि' मे लिखा है कि सारे शरीर मे शुभ लक्षण हो और मुख मे भी सुलक्षण हो तभी मनुष्य सुखी होता है। 'गर्ग सहिता' ने भी चेहरे को सबसे अधिक महत्व दिया है। लिखा है कि "यह एक प्रकार से मनुष्य के प्राण का घर है क्योकि मुख से ही मनुष्य बोलता है। मुख ही वास्तव मे पुरुष है। जिसका मुख मासल, चिकना अच्छी कान्तियुक्त, देखने मे प्रिय लगने वाला, मनोहर वाणीयुक्त हो और आँख, कान, नाक, कपोल, अधर, आदि प्रत्येक अवयव सुस्पष्ट हो वह मनुष्य सुखी और भोगी होता है।"

'भविष्य पुराण' के अनुसार जिस मनुष्य का मुख (चेहरा) गोलाई लिए हुए हों उसको धार्मिक वृत्ति का समझना चाहिए। इसके विपरीत जिनका चेहरा टेढ़ा-मेढ़ा हो या बहुत बड़ा हो या घोड़े की तरह हो या विकृत हो वे भाग्यहीन होते है—

महावक्त्रा नरा ये तु दुर्भगास्ते न संशय ।
हयवक्त्रा जिह्मवक्त्रा विकृतास्यास्तथा नराः ।।

इसी प्रकार जिनका मुंह कराल या भग्न हो (देखने से ऐसा प्रतीत हो कि कही कुछ हिस्से की कमी है) तो ऐसे व्यक्ति चोर होते है। जिनके मुंह चारो ओर से एक समान पुष्ट हो और हाथी या शेर की-सी मुखाकृति हो वे राजा होते है। जिनका मुख बकरे या बन्दर की तरह हो वे निर्धन होते है। समुद्र ऋषि का वाक्य है कि जिनका चेहरा हरिण या चूहे की तरह हो वे दुःख भोगते है। 'सामुद्रतिलक' के मतानुसार जिसका चेहरा गधे, व्याघ्र, ऊंट, मेढक या बन्दर की तरह हो वह दुःखभागी होता है। मनुष्य का चेहरा किस जानवर की तरह है यह विषय इसी पुस्तक मे 'अनूक'-लक्षण के प्रसग मे काफी विस्तारपूर्वक बता दिया गया है। इसलिए पुनरावृत्ति नही की जाती है।

'भविष्य पुराण' के अनुसार सम (अर्थात् दोनो ओर से एक सा), चिकना, गोलाई लिए हुए, जिसको देखने से सौम्यता मालूम हो अर्थात् जो सज्जन और शरीफ प्रतीत हो वह व्यक्ति राजा या राजा के समान अधिकारी, पृथ्वीपति होता है। मुख का चारो ओर से समान रूप से पुष्ट और कान्तियुक्त होना भोगी (उत्तम भोजन, वस्त्र मकान, सवारी, शयन आदि) पुरुष का लक्षण है। इस प्रकार उत्तम चेहरे के शुभ लक्षणो का फल बताने के बाद 'भविष्य पुराण'

में अशुभ लक्षण भी बताये गये है कि उपर्युक्त लक्षणो से भिन्न यदि लक्षण हो तो फल भी उलटा—दु ख, दरिद्रता आदि समझना चाहिए । यदि किसी पुरुष का मुख स्त्री का-सा हो—अर्थात् चेहरे पर दाढी-मूँछ के बाल बहुत कम हो और सहसा देखने से ऐसा लगे कि यह तो कोई स्त्री है—ऐसे पुरुष के पुत्र होते नही और होते है तो नाश हो जाते है । यदि शरीर के अनुपात से चेहरा बहुत बडा हो तो ऐसा व्यक्ति भय उत्पन्न करने वाला पाप-कर्मी होता है । जिसका चेहरा नीचा हो या धँसा हुआ हो उसको स्त्री-सुख या पुत्र-सुख नही होता । जिसका चेहरा चौकोर हो वह धूर्त अर्थात् चालाक और दगाबाज होता है और उसको-स्त्री-पुत्रादि का सुख नही होता । यदि चेहरा बहुत छोटा हो तो ऐसा व्यक्ति या तो दीर्घायु नही होता या उसका धन नाश हो जाता है । 'गरुड-पुराण' के मतानुसार जिसका चेहरा बहुत छोटा हो वह कृपण (कजूस) होता है और जिसका मुख नीचा धँसा हुआ हो उसके पुत्र नही होता । समुद्र ऋषि का भी मत है कि छोटा चेहरा होने से कजूस और चपटा चेहरा होने से दूसरो की नौकरी कर पेट पालने वाला होता है। वराहमिहिर ने लिखा है कि जिनका चेहरा स्त्री के चेहरे की तरह हो वे सतानरहित होते हैं तथा बिलकुल गोल चेहरे वाले शठ (शैतान और चालाक) होते हैं । इस प्रकार स्त्री के समान चेहरा होना अशुभ लक्षण माना गया है । किन्तु साथ ही यह भी लिखा है कि 'धन्या मातृमुखासुता' अर्थात् मा की तरह बेटे का चेहरा हो तो धन्य है । क्या इन दोनो मतो मे विरोध है ? नही, शास्त्रकारो ने इसका सामञ्जस्य इस प्रकार किया है—

(१) यदि माता से मुख न मिले और स्त्री का-सा मुख हो तो

दोष समझना चाहिए अन्यथा नहीं।

(२) जब बच्चा छोटा होता है तब माता के समान चेहरा होना उसके भावी ऐश्वर्य का लक्षण है। माता के समान मुखाकृति होने पर भी जैसे-जैसे वह बढ़ता जायगा, युवावस्था प्राप्त होने पर दाढ़ी-मूँछ आदि निकलने पर बदन की लम्बाई-चौड़ाई से जो माता के मुख के समान वाला होगा, वह भी पूर्ण रूप से पुरुष मालूम होगा। माता के समान मुख होना—इसका अर्थ है कि माता की मुखाकृति के सदृश मुखाकृति होना किन्तु स्त्री-मुख से तात्पर्य है कि जिसे देखने से लगे कि यह व्यक्ति तो स्त्री है, इस प्रकार दोनो मे बहुत अन्तर है।

'गरुड पुराण' मे लिखा है कि जो देखने मे डरपोक दिखाई देते है वे प्राय पापी होते है। 'सामुद्रतिलक' के मतानुसार जिनका चेहरा टेढा-मेढा, सूखा या घोडे की तरह हो वे निर्धन होते है।

अधर-लक्षण

कमल के समान जिसका नीचे का ओठ लाल हो वह धनवान तथा ऐश्वर्यवान होता है। 'गरुड पुराण' मे लिखा है कि बिम्ब फल के समान लाल और चिकने अधर वाले राजा होते है। इसके विपरीत जिनके नीचे के ओठ फटे हुए, विवर्ण (रग उडा हुआ) रूखे या खण्डित हो तो वे धनहीन होते है। अधरो के उपर्युक्त शुभ लक्षणो मे दो लक्षण और वराहमिहिर ने बताये है। इनके अनुसार अधर पतला और सीधा होना चाहिए तभी मनुष्य राजा या राजाओ के समान श्रेष्ठ होता है।

'सामुद्रतिलक' के अनुसार जिसका अधर बिम्ब फल के सदृश हो वह धनाढ्य होता है; जिस का अधर पाटल पुष्प की तरह लाल

हो वह विद्वान् होता है और यदि मूंगे की तरह सुन्दर कान्ति-युक्त अधर हो तो मनुष्य किसी बहुत बड़े राज्य का अधिकारी होता है। "जिनके अधर और ओष्ठ दो अंगुल चौड़े, कोमल और चिकने हो और ओष्ठो के कोने भी मुलायम और चिकने हो वे प्राय धनवान होते है।"

ऊपर का ओष्ठ

यदि ऊपर का ओष्ठ फटा हुआ, रूखा, भद्दे रग का (जिसमे ललाई न हो) हो तो मनुष्य निर्धन होता है।

'सामुद्रतिलक' के मतानुसार यदि ऊपर का ओठ मोटा हो तो मनुष्य सौभाग्यवान किन्तु यदि बहुत बड़ा हो तो मनुष्य डरपोक होता है। यदि ऊपर का ओठ छोटा हो तो ऐसा व्यक्ति भोगी होता है किन्तु यदि बहुत छोटा हो तो दुखी होता है।

दन्त-लक्षण

कुन्द कुड्मल सकाशै प्रकाशैर्दशनैर्नृपा
ऋक्ष वानर दन्ताश्च नित्य क्षुत्परिपीडिता ॥
हस्तिदन्ता खरदन्ता स्निग्धदन्ता गुणान्विता ।
सर्वे ते धनिनो ज्ञेया समुद्र वचन यथा ॥
करालै विरलै रूक्षैर्दशनै दु ख भागिन ।
द्वात्रिंशद्दन्ता राजान सैकत्रिंशश्च भोगवान् ॥

जिनके दात रीछ या वानर की तरह होते है वे सदैव भूख से पीडित रहते है (अर्थात् उनको अच्छे भोजन प्राप्त नही होते)। जिनके दात कराल (बहुत बडे और बेढगे, जिन्हे देखने से डर मालूम हो) और दूर-दूर होते है वे हमेशा दुख पाते है। 'गरुड-पुराण मे लिखा है कि चिकने, परस्पर मिले हुए दात शुभ होते

है। बगल के दांत बराबर और पैने हों तो श्रेष्ठ पुरुष का लक्षण है। 'भविष्य पुराण' के अनुसार हाथी या गधे के समान चिकने दांत वाले गुणी और धनी होते है। यदि ३२ दांत हो तो बहुत उत्तम है। ऐसा व्यक्ति राजा होता है, ३१ दांत वाला भोगी, ३० दांत वाला सुखी और दुःखी अर्थात् कभी सुख पाता है, कभी दुःख। २९ दांत यदि हो तो पुरुष दुःखभागी होता है। 'सामुद्रतिलक' का भी प्राय यही मत है। केवल यही अन्तर है कि इस ग्रन्थ के अनुसार ३० दांत वाला धनी होता है। २९ दांत वाला दुःखी होता है किन्तु २८ दांत वाला सुखी होता है। यदि दांत अच्छे भी हो किन्तु जितने दांत ऊपर हो उतने नीचे न हो अर्थात् ऊपर-नीचे के दांत की संख्या मे अन्तर हो तो मनुष्य दुःखी होता है। बच्चे के यदि बारह मास पूर्ण होने के पहले नीचे दांत आवे तो शुभ है। किन्तु यदि पहले ऊपर दो दांत आ जाये तो शुभ नही होता। समुद्र ऋषि का मत है कि दांत यदि कुछ ऊंचे हो तो ऐसा व्यक्ति बलवान और भोगी होता है। जिनके दांत न हो या थोडे दांत हो, या काले दांत हों, या चूहे की तरह छोटे-छोटे दांत हो वे पाप-कर्म करने वाले होते है।

जिह्वा (जीभ)-लक्षण

'भविष्य पुराण' के अनुसार जिसकी जीभ काली हो वह छोटी नौकरी करता है। यदि दो रंग की जीभ हो (सारी जीभ का एक समान रंग न हो) तो वह पाप-कर्म करने वाला होता है। जिसकी जीभ मोटी हो उसकी वाणी मे रूखापन होता है (ऐसे व्यक्ति रूखा और अप्रिय उत्तर देते है, उनसे बात करने मे रस या आनन्द नही आता)। जिनकी जीभ सफेदी लिये हो वे आचारहीन होते हैं।

किन्तु समुद्र ऋषि के मतानुसार यदि जिह्वा मे कुछ कालापन हो तो दोष नही है। ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठ होता है। इसी प्रकार जीभ में कुछ सफेदी हो तो मनुष्य आचारहीन नही होता। उन्होंने यहाँ तक लिख दिया है कि यदि कुछ श्यामता लिये हुए दीर्घ जिह्वा हो तो ऐसा व्यक्ति राजा होता है। इसलिए अति श्वेत और अति-कृष्ण जिह्वा निन्दनीय समझनी चाहिए।

जिसकी जीभ पीली हो वह मूर्ख होता है और सदैव दुखी रहता है। जीभ का लाल और न बहुत बडा, न बहुत छोटा होना शुभ लक्षण है। 'भविष्य पुराण' मे लिखा है कि जिसकी जीभ लाल कमल के पत्र की भाँति चिकनी और दीर्घ हो—न स्थूल, न फैली हुई—वह व्यक्ति बहुत उच्च पदवी पाता है। यदि जीभ का अग्र भाग नीचा, चिकना, छोटा और लाल हो तो ऐसा व्यक्ति अनेक विद्याओ का विद्वान् और सुन्दर वक्ता होता है।

तालु-लक्षण

जिनका तालु काला हो वे कुल का नाश करने वाले, दुखी होते है। ऐसे व्यक्तियो का धन-नाश हो जाता है। यदि तालु मे कुछ पीलापन हो तो श्रेष्ठ है। यदि लाल रग का और बडा तालु हो तो भी शुभ है। सिंह या हाथी के समान जिनका तालु हो वे राजा होते है। लाल कमल के रग के समान यदि तालु हो तो भी मनुष्य राजा या राजा के समान होता है। तालु यदि सफेद हो तो मनुष्य धनी होता है। चिकना और उत्तम वर्ण का तालु शुभ तथा विकृत, फटा, रूखा, मैला, खुरदरा तालु अशुभ समझना चाहिए।

हसित-लक्षण

जो व्यक्ति हँसते समय हिले नही उसे अच्छा समझना चाहिए।

हँसते समय जिसकी आँखें बन्द हो जायें उसे कपटी तथा पाप-कर्म करने वाला समझना चाहिए। जो श्रेष्ठ पुरुष होते हैं उनके हँसते समय दांत नहीं दिखाई देते केवल कपोल विकसित हो जाते हैं। हँसने के बहुत से भेद हैं—स्मित, हसित आदि, जिनका विशेष वर्णन साहित्य की पुस्तकों में किया गया है। दुष्ट पुरुष बार-बार हँसता है।

नासिका-लक्षण

'भविष्य पुराण' के मतानुसार जिनकी नाक तोते के समान हो वे राजा या राजा के समान उच्च पदवी प्राप्त करते हैं, जिनकी नाक बड़ी हो वे भोगी होते हैं, जिनकी नाक सीधी हो वे धर्मशील। जिनकी नाक हाथी, घोड़े या सिंह की तरह हो या आगे से पतली हो उनको व्यापार में अच्छा लाभ होता है। जिनकी नाक टेढ़ी-मेढ़ी, भद्दी या आगे से मोटी हो उसे पाप-कर्म करने वाला समझना चाहिए। 'बृहत्-संहिता' में लिखा है कि तोते के समान जिसकी नाक हो वह सुखी होता है। जिसकी नाक सूखी हुई हो (मांसल न हो) वह दीर्घजीवी होता है। बड़ी नाक होना शुभ लक्षण है, यदि टेढ़ी नाक हो तो चोर, चपटी नाक होने से स्त्री के कारण मृत्यु होती है। यदि आगे से नाक कुछ झुकी हुई हो तो ऐसा व्यक्ति धनी होता है। यदि दाहिनी ओर नाक झुकी हो तो क्रूर होता है। नथुनों का सुन्दर होना और नाक के छिद्रों का छोटा होना शुभ लक्षण है। 'सामुद्र तिलक' में लिखा है कि नाक बहुत बड़ी या बहुत छोटी हो और आगे से दो भागों में विभक्त हो तो मनुष्य निर्धन होता है।

छींक

जो धनी होते हैं वे एक बार छींकते हैं। दो या तीन बार जो छींके वह दीर्घायु होता है। चार बार छींकना भोग-नाश का लक्षण है। इससे अधिक छींकना भी दोषयुक्त है।

नेत्र-लक्षण

"जिसके नेत्र अनार के पुष्प के भाँति हो वह बहुत बड़ा भूपति होता है। जिसके नेत्र व्याघ्र के समान हो वह क्रोधी, मुर्गे के समान नेत्र वाले झगड़ालू होते हैं। बिल्ली के समान जिसके नेत्र हो उसे हिंसक और अधम समझना चाहिए। मोर या नेवले की तरह नेत्र वाले मध्यम कोटि के होते हैं। शहद के रंग के जिनके नेत्र हो वे सदैव धनी होते हैं। गोरोचन, हड़ताल या हाथी के समान कुछ पीलापन लिए हुए नेत्र वाले धनी, भोगी तथा उच्च पदाधिकारी होते है।" (भविष्य पुराण)

'गर्ग-संहिता' मे लिखा है कि लक्षण-शास्त्र के अनुसार सब अंगो की अपेक्षा चेहरे का विशेष महत्व है और चेहरे मे नेत्रो को सर्व-प्रधान समझना चाहिए। जिनके नेत्रो की सफेदी गाय के दुग्ध के समान शुभ्र वर्ण हो और पुतलियाँ काली हो तो बहुत अधिक शुभ लक्षण समझना चाहिए। सुन्दर, गोलाई लिये हुए, विशाल और फैले हुए नेत्र, जिनसे प्रसन्नता टपकती हो, बहुत शुभ लक्षण हैं। गर्ग मुनि ने भी व्याघ्र, मुर्गा तथा खरगोश के-से नेत्रो की निन्दा की है। ऐसे व्यक्ति निर्दय, क्रूर, पापी और झगड़ालू होते हैं। जिनके नेत्र गधे, भैसे या सर्प के समान हो उनकी शस्त्र से मृत्यु होती है। ऊँट के समान नेत्र वाले निर्दयी, पाप-कर्म करने वाले होते हैं। आँखो में चमक और उज्ज्वलता शुभ लक्षण है। इससे विपरीत यदि रूखे,

धँसे हुए, खुरदरे, जिनमे चमक न हो, ऐसे नेत्र हो—उन्हे अशुभ लक्षण समझना चाहिए। जिनके नेत्र बडे और टेढे हो वे स्त्रियो के वशीभूत रहते है। नेत्र के प्रान्त (किनारे) कुछ ललाई लिये हुए हो तो शुभ लक्षण है। बैल, मेढक, क्रौंच या कुरर के समान नेत्र वाले राजा होते है। जिनके नेत्र ऊँचे, चौडे और बडे हो—हंस, करौर या घोडे की तरह नेत्र वाले—प्रजा-पालन मे दक्ष और सबको सुख पहुँचाते है।

'गरुड पुराण' के अनुसार जिनके नेत्र औंडे हो वे क्रूर होते है। जिनके नेत्र हरिण की तरह हो वे पाप मति वाले होते है। जिनके एक ओर ढलावदार, टेढे या नेत्रो मे Squint हो वे चोर होते है। और हाथी के से नेत्र वाले सेना के नायक होते है। जिनकी दृष्टि गम्भीर हो वे उच्च अधिकारी, जिनकी मोटी आँखे हो वे मन्त्री, नील कमल सदृश नेत्र वाले विद्वान् तथा जिनके नेत्रो की पुतलियाँ काली हो वे सौभाग्यवान होते है।

'बृहत् संहिता' के अनुसार कमल-दल के समान जिनके नेत्र हो वे धनी और नेत्र के अन्त के भाग मे ललाई होने से लक्ष्मीवान होते है। जिनकी नेत्र की पुतलियाँ अति कृष्ण हो उनकी आँखे निकाली जाती है। (पुराने समय मे आँखे निकालने का दण्ड दिया जाता था। आजकल ऑपरेशन समझना चाहिए।)

महाभारत मे लिखा है अन्धा आदमी अच्छा लेकिन काना नही। काना होना अच्छा लेकिन केकर (औंडा-ऐंचा-ताना) होना अच्छा नही। केकर होना अच्छा लेकिन पिंगल (बिल्ली के-से नेत्र) होना अच्छा नही। यह दुर्योधन राजा कर्कश मधु पिंगल लोचन वाला है। केवल कुल का ही अन्त नही करायेगा, सारे क्षत्रियो का अन्त करा देगा।

ऊपर कई स्थानो मे मधु-पिंगल लोचन धनी होने का लक्षण बताया गया है—

"न श्रीस्त्यजति रक्ताक्ष पुरुष मधु पिङ्गलम् ।"

(समुद्र ऋषि)

"न श्रीस्त्यजति सर्वत्र पुरुष मधुपिङ्गलम् ।
आपिङ्गलाक्षा राजान सर्वभोग समन्विता ॥"

(भविष्य पुराण)

परन्तु दुर्योधन का मधु-पिगल लोचन होना अशुभ बताया गया है। इससे परिणाम निकलता है कि केवल मधु-पिंगल लोचन होना धनी होने का लक्षण है लेकिन कर्कशता आदि अन्य अवगुणो के कारण दुर्योधन कुल-घातक सिद्ध हुआ।

समुद्र ऋषि के अनुसार मुर्गे की तरह जिसके नेत्र होते है वह अपनी माता तथा पुत्रो से द्वेष करता है। ऊपर बताया जा चुका है कि 'गरुड पुराण' मे मेढक के नेत्र के समान जिसके नेत्र होते है उसे शुभ लक्षण कहा है किन्तु 'सामुद्र-तिलक' के अनुसार मेढक या कौए की तरह जिनके नेत्र हो उन्हे अधम कहा गया है। जिनके नेत्र मटमैले होते है वे अधम होने पर भी बहुत जीते है। जिनके नेत्र बहुत उन्नत होते है वे सौभाग्यवान होने पर भी कम जीते है।

वैसे तो शरीर मे सभी लक्षणो की प्रधानता है किन्तु गर्ग मुनि का मत बताया जा चुका है कि शुभाशुभ देखते समय नेत्रो को बहुत अधिक प्रधानता देनी चाहिए। गर्ग मुनि ने यहाँ तक लिख दिया है कि अन्य सौ अशुभ लक्षण एक पलडे मे और शुभ लक्षण वाले नेत्र एक पलडे मे रखे जायँ तो नेत्रो के शुभ लक्षणो का पलडा भारी होगा। इसलिए शुभाशुभ परीक्षा करने वालो को उचित है कि यत्न-

पूर्वक नेत्रों को देखे ।

दृष्टि (निगाह)-लक्षण

जिनकी दृष्टि में चिकनाई हो वे धनाढ्य होते है। जिनकी दृष्टि में दीनता हो वे निर्धन होते है। जिनकी दृष्टि में सफेदी या कुछ पीलापन हो वे प्रशसा के योग्य है। जिनकी दृष्टि गूढ हो वह महत्वता को प्रकट करती है। सर्प की तरह दृष्टि वाले क्रूर और दुश्शील होते है। जो निगाहे नीचे रखते है वे भी क्रूर होते है। जिसकी दृष्टि नासिका (नाक) के अग्र भाग पर रहती है वह विद्वान् होता है। किसी चीज को बारीकी से देखना सूक्ष्म-दृष्टि कहलाता है। बहुत सी विस्तृत वस्तुओ को एक ही साथ देखना स्थूल-दृष्टि कहलाता है। स्थूल-दृष्टि वाले सौभाग्यवान होते है। 'सामुद्र तिलक' के अनुसार जिनकी दृष्टि मे श्यामता हो वे सौभाग्यवान होते है। जिनकी दृष्टि मे चिकनापन हो वे बहुत भोगी होते है। स्थूल-दृष्टि वाले विद्वान, दीन दृष्टि वाले निर्धन। जिनका सरल चित्त होता है उनकी दृष्टि सीधी होती है। पुण्यात्मा सदा ऊपर की ओर देखते है। पापी नीचे की ओर देखते है। जो तिरछी नजर से देखते है वे क्रोधी होते है।

दुष्टो दारुणो दृष्टि कुक्कुट दृष्टि कलिप्रियो भवति ।
अहिदृष्टि ईगरोगी बिडालदृष्टि सदापाप ॥

जिसकी दृष्टि मे क्रूरता हो वह दुष्ट होता है। मुर्गे की-सी दृष्टि वाला नेत्र-रोगी और विलाव को तरह देखने वाला पापी होता है।

पक्ष्म (बरौनी)-लक्षण

जिनकी आँखो की बरौनी सघन, सूक्ष्म, सुदृढ और बिलकुल काली होती है वे दीर्घायु, धनवान, सौभाग्ययुक्त होते है। इससे विप-

रीत बरौनी वाले पापी और व्यभिचारी होते है।

निमेष (पलक)-लक्षण

जिसकी पलक नही झपकती वह धनरहित होता है। जो करीब ५ सैकिण्ड मे एक दफे पलक मारते हैं वे भी निर्धन होते है। जो १० सैकिण्ड मे पलक गिराते है वे भी दूसरो के आश्रित रहके अपना जीवन-निर्वाह करते है। करीब १५ सैकिण्ड मे जिनकी पलक गिरती हैं वे धनी होते है। २० सैकिण्ड मे जिनकी पलक गिरती है वे भी धनी होते है। २५ सैकिण्ड मे जिनकी पलक गिरे वे दीर्घायु, भोगी और धनी होते है।

रुदित-लक्षण

रोते समय जिनके अश्रु गिरे, दीनता न हो बल्कि चेहरे पर मुस्कराहट हो ऐसे रोने को शुभ समझना चाहिए। यदि रोते समय दीनता तथा कठ मे रूखापन हो तो अशुभ समझना चाहिए।

भ्रू (भौंह)-लक्षण

यदि द्वितीया के चन्द्रमा के समान भौं हो तो ऐसा व्यक्ति धनी होता है। बडी और परस्पर मिली हुई भौं होना शुभ लक्षण है। यदि भौं खण्डित हो तो मनुष्य निर्धन होता है, यदि बीच मे झुकी हुई हो तो ऐसे पुरुष का दूसरी स्त्रियो से प्रेम होता है। वराह मिहिर का मत है कि द्वितीया के चन्द्रमा के समान भौं न होकर ऊँची-नीची हो तो मनुष्य दरिद्र होता है। किन्तु 'सामुद्रतिलक' के अनुसार नाक के ऊपरी भाग से प्रारम्भ होकर अलग-अलग दोनो दिशा मे गोलाई लिये हुए, दीर्घ, पृथुल (बडी), उन्नत, श्याम रग की, मृदु रोमवाली भौं होना श्रेष्ठ है। यदि रोम बहुत थोडे, स्थूल या अत्यन्त सूक्ष्म हो, पीले रग के या रोम बहुत कडे हो तो शुभ नही होता।

कर्ण (कान)-लक्षण

'बृहत्संहिता' के मतानुसार मांसहीन कान होने से अपमृत्यु होती है। यदि कान चपटे हों तो मनुष्य बहुत सुख भोगता है। जिनके कान छोटे होते हैं वे कंजूस होते हैं, नीचे से नुकीले कान होना ऐश्वर्य का लक्षण है, जिनके कानों में नसें दिखाई दें वे क्रूर होते हैं, लम्बे और मांसल कान वाले सुखी, बड़े कान वाले धनी और जिनके कानों में रोम हों वे दीर्घायु होते हैं। 'भविष्य पुराण' के अनुसार बड़े कान वाले दीर्घायु और लम्बे कान वाले तपस्वी होते हैं।

'सामुद्रतिलक' का मत है कि जिनके कान का सारा भाग पूर्ण पुष्ट और सुव्यक्त हो, कान कनपटी के साथ सुन्दरता से जुड़े हों—कान तो विस्तीर्ण हो किन्तु कान के छेद छोटे हों तो ऐसा व्यक्ति राजा होता है। लम्बे कान वाला धनी होता है। जिसके कान की गोलाई और आवर्त (चारों ओर का घुमाव) सुन्दर हो तथा कान मुलायम हो वह सुखी होता है। चूहे के-से कान वाला बुद्धिमान, भाले की सी नोक वाला सेनानायक होता है। जिनके कानों के छिद्र बड़े हों और कान गहरे न हों—देखने से ही जो विरूप (कुरूप) मालूम हों—ऐसे कान वाले अल्पायु और दरिद्री होते हैं।

सर्वगात्र (सब अंगों के विषय में)-लक्षण

'विष्णु-धर्मोत्तर' तथा 'अग्नि-पुराण' में लिखा है कि जो-जो अंग सूखा, नसों से युक्त, मांसरहित तथा दुर्गन्धियुक्त हो वह अशुभ समझना चाहिए। और जो अंग चिकना, मांसल, कान्तियुक्त तथा सुगन्धि-युक्त हो उसे शुभ समझना चाहिए। 'गरुड़-पुराण' का भी यही मत है कि नसों का दिखाई देना, खुरदरापन, मांस की कमी होने

से अशुभ समझना और इनसे विपरीत हो तो शुभ समझना चहिए।

आवर्त्त (भौरी)-लक्षण

पुरुषों के दाहिने अग में दाहिनी ओर घूमी हुई भौरी हो तो पूर्ण शुभ फल, यदि दाहिने अग मे बायी ओर घूमी हो तो मध्यम शुभ फल, यदि बाये अग मे बायी ओर घूमी हुई भौरी हो तो पूर्ण अशुभ फल, यदि बाये अग मे दाहिनी ओर घूमी हो तो मध्यम अशुभ फल समझना चाहिए।

सुस्पष्ट भौरी शुभ होती है। शिर, भौ के बीच मे या बाहु पर दाहिनी ओर घूमी हुई भौरी विशेष शुभ फलकारक होती है। ललाट मे भौरी होने से मनुष्य अल्पायु होता है (पैर मे यदि दो भौरी हो तो वह निरन्तर घूमता रहता है। यह अशुभ लक्षण है।

२३वाँ प्रकरण (द्वितीय भाग)

स्त्री-लक्षण

आजकल प्राय शास्त्र का दुरुपयोग किया जाता है। स्त्रियों के लक्षण शास्त्र मे इसलिये बताये गये है कि वर स्वय या वर के माता-पिता आदि गुरुजन अच्छी कन्या का अन्वेषण करते समय अपने मन मे यह निश्चय कर ले कि अमुक कन्या मे क्या-क्या शुभ लक्षण है और उससे विवाह करना कहाँ तक उपयुक्त होगा। स्त्री-लक्षण-शास्त्र का ज्ञान करके यह कहना उचित नही है कि अमुक की पत्नी अच्छी है, अमुक की पत्नी दुष्ट लक्षणा। इसलिए इस शास्त्र को पढने वाले लोगो से साग्रह अनुरोध है कि बिना इस विद्या मे पारगत हुए और बिना वर्षों तक इसका अभ्यास किये किसी निर्णय पर तत्काल न पहुँचे।

यदि उपर्युक्त नियम का पालन नही किया जायगा तो दो प्रकार के दोषो की सम्भावना है—

(१) शुभाशुभ दोनो प्रकार के लक्षण प्रत्येक व्यक्ति मे पाये जाते है। जिस प्रकार के लक्षण अधिक बलवान और विशेष सख्या मे होते है वे विपरीत लक्षणो को दबा देते है। 'विवेक-विलास' मे लिखा है—

"पुष्ट यदेव देहे स्याल्लक्षण वाप्यलक्षणम्।
इतराब्दाध्यते तेन बलवत् फलद भवेत्॥"

अत हो सकता है किसी एक लक्षण से कोई स्त्री दुष्टा प्रतीत

होती हो किन्तु उसमे ऐसे बलवान शुभ लक्षण भी हो जिनको हम नही देख सकते।

(२) प्रत्येक स्थान पर ज्योतिष की भाँति लक्षण-शास्त्र मे भी देश, काल और पात्र का विचार करना उचित है। किसी समय कन्याओ के बहुत बाल्य-अवस्था मे विवाह होते थे तब उसी उम्र मे जो वर्ष शुभ प्रतीत होता था उसी मे 'विवाह होगा' यह कहा जाता था, किन्तु अब विभिन्न जातियो मे और विविध प्रदेशो मे कन्याओ के विवाह की अवस्था बढती जा रही है। इस कारण विवाह की अवस्था निर्णय करने मे जैसे हम देश और काल का विचार करते है वैसे ही सामाजिक परिस्थिति, कुल, शील, मर्यादा आदि का विचार रखना चाहिए। सद्गृहस्थो के यहाँ कन्याये या विवाहिता स्त्रिया अनुचित पथ पर नही जाती। इस कारण यदि सामान्य दुष्ट लक्षण अच्छे कुल की स्त्रियो मे मिले तो भी वह दुष्ट नही हो जावेगी। इसके विपरीत बहुत सी जातिया ऐसी है जिनका व्यवसाय ही सदाचार के विरुद्ध है। उन जातियो मे सुलक्षण कन्या भी सम्भवत सदाचारिणी न मिलेगी। इसी प्रकार आर्थिक परिस्थिति को भी ध्यान मे रखना चाहिये। दरिद्र के घर मे उत्पन्न हुई कन्या के लक्षण यदि धनवती होने के हो तो भी वे शायद दस-बीस-पच्चीस हजार तक का ही सग्रह करने मे सफल हो। इसके विपरीत यदि किसी महाराजा की कन्या धन के लक्षणो से युक्त न भी हो तो भी वह सम्भवत लाखो की स्वामिनी हो।

सदाचार भी देश-देश तथा जाति-जाति मे भिन्न होता है। कही स्त्रियो का शराब पीना और अन्य पुरुषो के साथ नाच, राग-रग मे शामिल होना सदाचार के विरुद्ध नही है और कही दिन मे

भी स्वतन्त्र घूमना मर्यादा के विरुद्ध माना जाता है। इसलिए सब बात का विचार कर फलादेश करना उचित है।

कन्या-निरीक्षण काल

'भविष्य पुराण' का वचन है कि शुभ दिन और शुभ मुहूर्त मे ब्राह्मणो के साथ जाकर कन्या-निरीक्षण करना चाहिये। 'जगन्-मोहन' नामक ग्रन्थ मे समुद्र ऋषि का भी वाक्य है कि शुभ-ग्रह अर्थात् शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र जब बलवान हो तब विवाह के लिए कन्या का निरीक्षण करना उचित है। 'आश्व-लायन गृह्य-सूत्र' के अनुसार कन्या मे निम्नलिखित शुभ लक्षण होने चाहिए—

(१) बुद्धि, (२) रूप, (३) लक्षण, अर्थात् शुभ लक्षण (४) शील (५) आरोग्य। रूप की परिभाषा करते हुए शास्त्रकार कहते है कि जिसमे वर का मन रमे उसे रूप कहते हैं। आपस्तम्ब ऋषि का भी कथन है कि—

"यस्या मनश्चक्षुषोर्निबन्धस्तस्यामृद्धिरिति।"

अर्थात् जिसको देखने से, नेत्र और मन जहाँ बँध जाये, ऐसी कन्या से विवाह शुभ है। कन्या के शुभ लक्षणयुक्त होने पर बहुत जोर दिया गया है। मनु महाराज कहते है कि कन्या लक्षणान्विता होनी चाहिए—'कन्या अगहीन न हो, कोई अग छोटा-बडा न हो, जिसका नाम मे सौम्य हो, जो हस या हाथी की भाति चलती हो, जिसके शरीर के रोम, केश और दात पतले हो और जिसका शरीर मृदु हो,' ऐसी कन्या से विवाह करना उचित है। दक्ष तथा याज्ञवल्क्य ऋषि ने भी लिखा है कि विवाह के पूर्व कन्या के लक्षणो को अवश्य देखे।

शातातप-प्रणीत 'पृथ्वी चन्द्रोदय' मे लिखा है कि जिसकी वाणी

हंस के समान हो और वर्ण मेघ की तरह हो अर्थात् चिकनाई लिए हुए श्याम-वर्ण, ऐसी कन्या से विवाह करने से गार्हस्थ्य-सुख प्राप्त होता है। नारद जी ने भी लिखा है कि मृग के समान जिसके नेत्र और ग्रीवा हो और हंस के समान जिसकी गति और वाणी हो ऐसी स्त्री राजपत्नी होती है। जिसकी भाषा मृदु हो अर्थात् चीख कर, पुकार कर या कर्कश स्वर से न बोले और कोमल शब्द-व्यवहार करे, जिसके चलने के समय पैरों से आवाज न हो, जिसके पैरों के तलुए मुलायम हों और मुख का वर्ण कुमुद के पुष्प के तरह सुन्दर हो, वह बहुत धनाढ्य और प्रतिष्ठित व्यक्ति की पत्नी होती है।

'गरुड पुराण' में लिखा है कि जिस कन्या के केश अति सुन्दर हों और उनका अग्रभाग कुछ टेढा हो, मुख गोल हो और नाभि में दाहिनी तरफ घुमाव हो, ऐसी कन्या कुल की वृद्धि करने वाली होती है। जिसका वर्ण (शरीरकान्ति, मुखकान्ति) सोने की तरह हो और हाथ लाल कमल की तरह कोमल और ललाई लिये हुए हो ऐसी स्त्री पतिव्रता होती है। पूर्ण चन्द्रमा के समान जिस कन्या का मुख सुन्दर हो या उदित होते हुए सूर्य के समान जिसकी कान्ति हो, जिसके नेत्र विशाल हों और जिसके ओष्ठ बिम्ब-फल के समान हों वह कन्या समस्त जीवन-सुख भोगती है—

यस्यास्तु कुंचिता केशा मुखं च परिमण्डलम्।
नाभिश्च दक्षिणावर्ता सा कन्या कुल वर्द्धिनी॥
या च कांचनवर्णाभा रक्त हस्त सरोरुहा।
सहस्राणां च नारीणां भवेत्सा च पतिव्रता॥

'विष्णु धर्मोत्तर पुराण' तथा 'अग्नि पुराण' के अनुसार नीचे दिये हुए लक्षण शुभ लक्षण हैं। जिसके सब अंग सुन्दर हों जो मद-पूर्ण

हाथी की तरह चलती हो, जिसके रोम बारीक हो, शरीर पतला हो; कमर पतली हो किन्तु जाँघे पुष्ट और भारी हो, कबूतर की तरह जिसकी दृष्टि हो, कोकिल की तरह मीठी वाणी हो, सुन्दर काले केश हो, जिसके शरीर का वर्ण चिकनाई लिए हुए मनोहर हो—ऐसी कन्या प्रशंसा के योग्य है।

कन्या के दोष

किस प्रकार की कन्या से विवाह करना उचित नही इस सम्बन्ध मे मनु महाराज कहते है जो सूरजमुखी हो (अर्थात् सारा शरीर, सिर के केश, भौह, पलक के बाल आदि सफेद हो) जिसके कोई अधिक अग हो, जो रोगिणी हो, जिसके शरीर मे बिलकुल रोमे न हो या बहुत अधिक हों और जो वाचाल हो और जिसके नेत्रो के डिम्ब पीले हो—ऐसे कोई भी कुलक्षण जिस कन्या मे हो उससे विवाह नही करना चाहिए। 'वाचाल' का अर्थ करते हुए शास्त्रकार कहते है कि जो दूसरो की बहुत निन्दा करने वाली हो। मनु महाराज ने और भी कहा है कि नक्षत्र नाम वाली (जैसे रोहिणी, विशाखा, रेवती) या जिसका नाम नदी, पर्वत, पक्षी, सर्प वाचक हो या जिसका नाम अन्त्यज (भगी, चमार आदि) या नौकर के नाम पर हो या जिसका नाम हृदय मे भय उत्पन्न करने वाला हो (जैसे कराली) ऐसे नाम वाली कन्या से भी विवाह न करे। नाम का भी बहुत महत्व है। नाम और रूप मे ही सब कुछ प्रतिष्ठित है। यह बहुत गहन और गम्भीर विषय है। इस सिद्धान्त की यहा विशेष व्याख्या नही की जा रही है किन्तु मनु महाराज का यह आदेश स्मरण रखने योग्य है।

बौधायन ऋषि कहते है कि जिसकी भौह मिली हुई हो, जिसके

नेत्र पीले हो जिसकी एडी मोटी हो, जो जुडली हो, जिसके शरीर मे बहुत रोम हो, जिसके दात काले या मैले हो ऐसी कन्या से विवाह न करे। शातातप ऋषि का वाक्य है कि जो अगहीन हो, व्यभिचारिणी हो, जिसके शरीर मे दीर्घ और कुत्सित रोग हो, (दीर्घ रोग—लम्बे समय तक रहने वाले रोग, जैसे—दमा, तपेदिक आदि, कुत्सित रोग—कुष्ठ) या जो कन्या किसी अन्य पुरुष से विवाह करना चाहती हो उससे विवाह न करे। 'विष्णु पुराण' मे निर्देश किया गया है कि जो शरीर से अत्यन्त दुर्बल और क्षीण हो, जिसका स्वर घर्घर या कौए के समान हो, जिसकी आँखे बिलकुल गोल हो या अच्छी तरह खुलती ही न हो, ऐसी कन्या से विवाह न करे।

जिसकी पिडलियो पर बहुत बाल हो, गुल्फ (टखने) निकले हुए हो और हँसते समय गाल पर गहरे गड्ढे पडे बुद्धिमान व्यक्ति को चाहिए कि ऐसी कन्या से विवाह न करे। जिसके चेहरे पर रूखापन हो, हथेली तथा पैरो के तलवे मे पीलापन, नाखूनों मे ललाई न हो सफेदी हो, तथा नेत्र लाल हो उसे भी सुलक्षण नही कहना चाहिए।

'भविष्य पुराण' मे निम्नलिखित दोष गिनाये गये है। यदि कन्या सूरजमुखी (शरीर का वर्ण, सिर के बाल, भौ और पलक आदि सब सफेद हो) या रोगिणी हो, भूरे नेत्र हो, गालो पर गड्ढे हो, नीले ओठ हो और शरीर पर बिलकुल रोये न हो—ये सब दुर्लक्षण है।

'बृहन्नारदीय पुराण' मे लिखा है कि जिस कुल मे राजयक्ष्मा

---

१ एक साथ जब माता के गर्भ से दो बच्चे होते है वे यमल या जोडले कहलाते है।

आदि सक्रामक भीषण रोग आदि हो या कन्या स्वय रोगिणी हो, जिसके सिर मे अत्यन्त केश हो या बिलकुल केश न हो जो कन्या बौनी हो या दीर्घ देह वाली हो (अर्थात् बहुत लम्बे-चौडे शरीर वाली), देखने मे भद्दी मालूम हो या क्रोधी स्वभाव की हो, पागल हो या उसके शरीर मे कोई अग कम या अधिक हो तो उससे विवाह करना उचित नही। जिसके गुल्फ (पैर के टखने) बहुत स्थूल हो, पिडलिया बहुत बडी हो और पुरुषाकृति हो (अर्थात् देखने मे मर्दाना औरत मालूम पडे), जिसके ऊपर के ओठ पर मूछे आ रही हो, जो बिना बात ही हसती रहती हो या सदा दूसरो के घर मे रहती हो—ऐसी कन्या से विवाह करना अच्छा नही। जो कन्या झगडालू हो या जिसका बहस करने का स्वभाव हो, जिसके दात बहुत बडे हो, जिसके शरीर की हड्डिया भी बहुत बडी हो, जो सदैव घूमने की शौकीन हो, निष्ठुर (अर्थात् क्रूर हृदया) हो, या बहुत अधिक खाने वाली हो उससे विवाह नही करे। जिसके चेहरे का रग पीला पड गया हो या लाल वर्ण हो या जिसकी रोने की आदत हो या जो बहुत धूर्त (चालाक) हो, जिसको खासी या दमे का जीर्ण रोग हो, जो अधिक सोती हो या अपशब्द या अमगल शब्द बोलती हो, सबसे द्वेष रखती हो, सदैव औरो की निन्दा करती हो, जिसमे चोरी की या धोखा देने की आदत हो, जिसके बदन मे बाल हो, जिसकी नाक बहुत बडी हो, जो घमडी हो तथा जिसकी बक-वृत्ति हो (बाहर से भोलापन, भीतर से घात) उससे विवाह न करे।

'पृथ्वी चन्द्रोदय' मे भी लिखा है कि जो स्त्रिया बहुत छोटी (बौनी) या बहुत ऊँची, अत्यन्त दुबली या अत्यन्त मोटी हो या

जिनकी आँखों की पुतलियाँ पीले रंग की हो, उनसे सम्बन्ध न करें।

'गरुड पुराण' के मतानुसार जिस कन्या के टेढे बाल हो और बिलकुल गोल आँखें हो उसका पति अल्पायु होता है और वह स्वयं दुखभागिनी होती है। जिस स्त्री के पैर के अगूठे और अनामिका उंगली पृथ्वी से स्पर्श न करे उसका पति अल्पायु होता है और वह स्वेच्छाचारिणी होती है। अर्थात् अपनी मर्जी के माफिक चलती है। जिसके पैरो मे, स्तनो मे रोम हो और दोनो ओठ उठे हुए हो, उसका पति अल्पायु पोता है।

'नागर खण्ड' मे लिखा है कि कोई पुरुष कितना भी कुलहीन, कितना भी दरिद्र तथा कितनी भी कठिन परिस्थिति मे हो वह ऐसी स्त्री से विवाह न करे जिसके तीन स्तन हो और पीठ पर भौरी हो।

कन्या-परीक्षा का एक प्रकार

शुभ समय मे आठ जगह से मिट्टी लाकर कन्या से कहे कि इनमे मे एक उठा लो।

(१) यदि वह खेत से लायी हुई मिट्टी का ढेला उठाये तो यह समझना चाहिए कि इसकी सन्तान धान्य-सम्पन्न होगी।

(२) यदि गोष्ठ (ग्वाडा, जहाँ गाय रहती है) से लायी मिट्टी उठाये तो वह बहुत पशुओ की स्वामिनी होगी।

(३) यदि वह वेदी (जिस पर हवन इत्यादि किया जाता है) से लायी हुई मिट्टी उठाये तो ब्रह्मवर्चस्विनी (तपस्विनी, धर्मपरायणा) होगी।

(४) यदि वह जलपूर्ण तालाब से लाई हुई मिट्टी उठाये तो सर्व-सम्पन्न होगी।

(५) जहाँ पर जुआ खेला जाता है वहाँ से लाया हुआ मिट्टी का ढेला उठाये तो चालाक और धोखेबाज होगी।

(६) यदि चौराहे से लाई हुई मिट्टी का ढेला उठाये तो अच्छा लक्षण नही है।

(७) यदि ऊसर जमीन से लायी हुई मिट्टी उठाये तो अच्छा लक्षण नही।

(८) यदि श्मशान से लायी हुई मिट्टी उठाये तो पति को मारने वाली होती है।

सुलक्षणा और सदाचारिणी कन्या से विवाह करने से पति की आयु तथा सौभाग्य की वृद्धि होती है और कुलक्षण कन्या से विवाह करने से पति की आयु कम होती है तथा भाग्य मे भी बाधा पहुँचती है।

स्त्रियो के सिर के लक्षण तथा पैर के लक्षण पृथक् प्रकरणो मे दिये गये है। पैर से लेकर गले तक का भाग वस्त्र से छिपा रहता है, इस कारण कौन से लक्षण मिलते है कौन से नही इसका निर्णय नही हो सकता। इसलिए यहाँ केवल वे लक्षण दिये जा रहे है जिनको सुगमता से देखा जा सकता है।

कंठ-लक्षण

जिस स्त्री का कठ मासल, गोल तथा चार अगुल लम्बा हो तो उत्तम है। यदि चपटा, ऊँचा-नीचा या बहुत बडा कठ हो तो अच्छा नही। जिसकी बहुत मोटी गर्दन हो वह विधवा होती है, टेढी गर्दन हो तो नौकरानी होती है, चपटी गर्दन हो तो वन्ध्या और छोटी गर्दन हो तो निर्धन होती है

'भविष्य-पुराण' के मतानुसार यदि गर्दन में चार अगुल लम्बी

तीन रेखा दिखाई दे तो ऐसी स्त्री सौभाग्यशालिनी होती है और उसको रत्नो से जडे हुए सोने के भूषण प्राप्त होते है। जिस स्त्री की ग्रीवा (गला) दुर्बल हो तो अधमता का लक्षण है। यदि गर्दन स्थूल हो तो दुःखभागिनी होती है, यदि छोटी हो तो सन्तति मर जाती है, जिसकी गर्दन बहुत लम्बी हो वह बन्धकी (व्यभिचारिणी) होती है।

अधमा स्त्री कृशग्रीवा दीर्घ ग्रीवा च बन्धकी।
ह्रस्वग्रीवा मृतापत्या स्थूल ग्रीवा च दुःखिता॥

गर्ग मुनि के मतानुसार भी तीन रेखाओ का ग्रीवा मे दिखाई देना, सुन्दर, गोल आकार, न अति दीर्घ, न अति ह्रस्व, चार अगुल का परिमाण उचित है।

चिबुक तथा हनु लक्षण

'चिबुक' ठोडी को कहते है और हनु भी ठोडी को कहते हैं। परन्तु दोनो मे अन्तर यह है कि ठोडी का जो भाग नीचे के ओठ के नीचे होता है वह तो चिबुक कहलाता है और दोनो गालो के नीचे तथा चिबुक के दोनो ओर जो भाग है उसे हनु कहते है।

स्त्रियो का चिबुक गोल, पुष्ट, सुकोमल, दो अगुल का हो तो शुभ लक्षण है। यदि यह भाग बहुत मोटा, बहुत चौडा, दो भागो मे बँटा हुआ या रोमयुक्त हो तो ऐसी कन्या से विवाह नही करना चाहिए।

'भविष्य-पुराण' के मतानुसार हनु का स्थूल, कृश, टेढा, रोमयुक्त या बहुत छोटा होना अशुभ लक्षण है। 'स्कन्द पुराण काशीखण्ड' के अनुसार हनु भाग चिबुक से बिलकुल मिला हुआ होना चाहिए। इस भाग का मासल होना गुण है किन्तु स्थूलता आदि के जो दोष

ऊपर बताये गये हैं वे नहीं होने चाहिए।

कपोल-लक्षण

चारों ओर से गोल, कुछ पीलापन लिए हुए गालों का होना शुभ लक्षण है। गाल पुष्ट, मांसल और उन्नत होने चाहिए। यदि पिचके, खुरदरे, मांसरहित या रोमयुक्त हों तो शुभ लक्षण नहीं है। यदि सब समय—बिना हँसे भी गालों के बीच में गड्ढे हों तो यह अच्छा लक्षण नहीं है।

मुख-लक्षण

'भविष्य-पुराण' के अनुसार सुन्दर, चमकीला, चिकना मुख भाग्यशाली स्त्रियों का होता है। पूर्णिमा के चन्द्रमा की तरह आकर्षक, गौर, शीतलता लिए हुए, कान्तियुक्त मुख हो तो स्त्री सौभाग्य, धन, पुत्र, सम्पत्तियुक्त सब फलों को प्राप्त करती है। जिन स्त्रियों का मुख कमल के समान मृदु तथा शोभायुक्त हो तथा उनके मुख से मालती, बकुल, कमल, गुलाब आदि पुष्पों की सुगन्ध आती हो उनको सदैव सरस भोजन, पान (सुगन्धित, पीने वाले पदार्थ) तथा ताम्बूल (पान के बीड़े) की कमी नहीं रहती अर्थात् राजसी भोग प्राप्त होते हैं—

> चतुरस्रमुखी धूर्ता मण्डलास्या च या भवेत्।
> अप्रजा वाजिवक्त्रा च महावक्त्रा च दुर्भगा॥

जिनका मुख बिलकुल चौकोर हो वे चालाक और धोखेबाज होती हैं। जिनका मुख-मण्डल बहुत बड़ा और बिलकुल गोल हो वे भी विश्वास के योग्य नहीं होतीं। जिनका चेहरा घोड़े की तरह हो उनको सन्तान-सुख नहीं होता, जिनका चेहरा बहुत बड़ा और बेडौल हो वे दुर्भाग्ययुक्त होती हैं। जिनका चेहरा कुत्ते, सुअर,

भेड़िये, उल्लू या मगर से मिलता हो वे क्रूर और पापकर्म करने वाली होती है। ऐसी स्त्रियों को सन्तान अथवा भाई-बन्धुओं का सुख नहीं होता। परन्तु जिनका मुंह कुछ गोलाई लिए हुए स्निग्ध, बराबर मांसल तथा स्वाभाविक सुगन्ध से युक्त होता है यह सौभाग्य का द्योतक है। उपर्युक्त गुणों के साथ-साथ जिस कन्या का चेहरा अपने पिता के सदृश हो वह धन्य है—बहुत प्रशंसा के योग्य है—

जनितृवदना ह्यत्र धन्यानामिह जायते।

कन्या का मुंह पिता से मिलना तथा पुत्र का मुंह माता के चेहरे से मिलना विशेष सौभाग्य का लक्षण है। 'उत्तर रामचरित' में महाकवि भवभूति ने भी लिखा है कि कुश और लव का चेहरा जानकी जी से मिलता था।

अधर-लक्षण

तांबे की तरह लाल और शोभायुक्त कुछ झुका हुआ और कुछ ऊंचा अधर जिस स्त्री का होता है वह बहुत भोग भोगती है। अधर नीचे के ओठ को कहते हैं। अधर का स्थूल (मोटा) होना भी दुर्गुण है और कृश होना भी अवगुण है। 'भविष्य पुराण' के मतानुसार यदि अधर का रंग उड़ा-उड़ा हो तो स्त्री अति दुःखित होती है, यदि अधर स्थूल हो तो कलहकारिणी। 'स्कन्द पुराण-काशी खंड' के अनुसार यदि अधर में चार गुण हों—(१) पाटल पुष्प की तरह लाल, (२) गोलाई लिए हुए, (३) चिकनाई तथा (४) बीच में एक रेखायुक्त तो ऐसी स्त्री का विवाह किसी उच्च पुरुष के साथ होता है। यदि अधर सूखा, लम्बा (नीचे लटका हुआ), टेढ़ा या पतला हो तो दुर्भाग्य-सूचक है। जिस स्त्री का अधर मोटा और काला हो वह विधवा और कलहकारिणी होती है।

'गरुड पुराण' के मतानुसार यदि ओठ कुछ-कुछ लाल हों तो श्रेष्ठता सूचित करते हैं। वराहमिहिराचार्य ने लिखा है कि बिम्ब फल के सदृश लाल अधर ऐश्वर्य का लक्षण है। समुद्र ऋषि का भी यही मत है कि जिसके अधर मांसल तथा चिकने हों, फटे हुए न हों और बिम्ब फल के सदृश लाल हों तो ऐसी कुमारी राजा की रानी होती है।

ऊपर का ओठ

ऊपर के ओठ का रंग, चिकनाई आदि सब नीचे के ओंठ की तरह से होना शुभ लक्षण है इसलिए उस लक्षण को दोहराया नहीं जाता है। ऊपर का ओठ तीक्ष्ण (कठोर) और पैना हो तो स्त्री अत्यन्त क्रोधकारिणी होती है। यदि ऊपर के ओठ पर रोम हों तो अपने पति के लिए शुभ नहीं होती।

दन्त-लक्षण

जिसके दांत चिकने, सीधे, एक-दूसरे से मिले हुए, शंख, कुंद के पुष्प या चन्द्रमा की तरह सफेद हों और आगे को निकले न हों वह स्त्री सदैव मिठाई आदि सरस भोजन और सुन्दर पेय पदार्थ प्राप्त करती है अर्थात् राजसी स्थिति में रहती है। यदि दांत अति पतले या अति छोटे हों या रूखे, या फटे हुए हों तो ऐसी स्त्री मूर्ख या दुर्बुद्धियुक्त होती है।

'गरुड पुराण' के मतानुसार यदि दांत कराल और विषम (ऊँचे-नीचे एक समान नहीं) हों तो क्लेश और भयकारक होते हैं। यदि दांतों का मसूड़ा काला हो तो ऐसी स्त्री में चोरी करने की आदत होती है, यदि दांत बहुत बड़े हों तो उसका पति अल्पायु होता है। 'स्कन्द पुराण' के अनुसार गाय के दूध की तरह सफेद और

चिकने, ऊपर-नीचे बराबर, कुछ उठे हुए ३२ दात हो तो शुभ लक्षण है। यदि कोई दात आगे निकले हो कोई पीछे, मोटे या बड़े दात हो तो अशुभ समझना चाहिए। दांतो के पीले या काले होने से स्त्री कष्ट पाती है। यदि दात सीप के आकार के हो (बीच मे चौड़े नीचे नुकीले) तो यह भी अच्छा लक्षण नही है। यदि नीचे के जबड़े मे ऊपर की अपेक्षा अधिक दात हो तो ऐसी कन्या की माता कम जीती है। यदि बहुत बड़े या चौड़े, भयकर दात हो तो ऐसी स्त्री पति से हीन होती है (विवाह न हो या पति जल्दी मर जाये)। जिसके दात छीदे हो अर्थात् एक दात और दूसरे दात में अन्तर हो वह कुलटा होती है।

समुद्र ऋषि का वाक्य है कि—

अनपत्या भवेन्नारी दन्ताना चलन यदि।
निधनत्व च दारिद्र्य तस्याश्चैव विनिर्दिशेत्॥

जिस स्त्री के दात चले, (दात परस्पर भिड़े जैसे—प्राय सोते समय बहुत सी स्त्रिया दात किटकिटाती है) तो उस स्त्री को सन्तान-सुख नही होता। ऐसी स्त्री दरिद्रा और दु खभागिनी भी होती है। गर्ग मुनि ने लिखा है कि दात आगे से कुछ गोलाई लिए हुए तथा तेज और दृढ होने उत्तम है। यदि मृणाल या चादी के समान उज्ज्वल परस्पर एक-दूसरे से भिड़े हुए दात हो तो ऐसी स्त्री धन्य है।

जिह्वा-लक्षण

'भविष्य पुराण' के अनुसार जिह्वा मे चार गुण सर्वोपरि है। लम्बी हो, सीधी हो, पतली और तावे की भाति लाल। इसके विपरीत यदि छोटी, टेढी, मोटी, फटी हुई या जिसमे ललाई न हो

ऐसी फीकी जिह्वा निन्दित है। 'स्कन्द पुराण' के अनुसार जिस स्त्री की जीभ लाल और मुलायम होती है उसको आजीवन सुन्दर, सरस मिष्टान्न भोजन प्राप्त होता है। यदि काली जीभ हो तो स्त्री दुःख भोगती है। बीच में सकड़ी और आगे चौड़ी जिस स्त्री की जीभ हो वह भी दुःख पाती है। यदि सफेद जीभ हो तो पानी में डूब कर या जल-विकार से मृत्यु होती है। यदि जिह्वा काली हो तो ऐसी स्त्री अत्यन्त कलहकारिणी होती है, यदि मोटी हो तो दरिद्रा। यदि बहुत लम्बी जीभ हो तो उचित, अनुचित का बिना विचार किये सब कुछ खाती रहती है। यदि बहुत विशाल (बहुत लम्बी और बहुत चौड़ी) जीभ हो तो स्त्री नशा करती है या लापरवाह होती है। समुद्र ऋषि के मतानुसार भी जीभ में श्यामता होना अशुभ लक्षण है। गर्ग मुनि ने जिह्वा के और तो वही शुभ लक्षण बताये है जो ऊपर बताये जा चुके है किन्तु जिह्वा का छोटा होना प्रशस्त माना है। ऊपर 'भविष्य पुराण' के अनुसार ह्रस्व होना अवगुण है। इसलिये परिणाम यह निकलता है कि बहुत चौड़ी, लम्बी और मोटी जीभ होना दोष है तथा पतली, लाल मध्यम माप की जीभ होना शुभ लक्षण है।

तालु-लक्षण

तालु तालुए को कहते है। जिन स्त्रियो के तालु लाल, चिकने और कोमल हो वे सौभाग्यशालिनी होती है। 'स्कन्द पुराण' के अनुसार यदि तालु पीला हो तो स्त्री संन्यासिनी हो जाती है, यदि सफेद हो तो विधवा। यदि तालु पीला हो तो सन्तान-सुख नही होता। 'गरुड पुराण' के मतानुसार यदि तालु सफेद हो तो अशुभ लक्षण अवश्य है, किन्तु स्त्री विधवा नही होती; यह धन के घाटे या

निर्धनता का लक्षण है। 'गरुड पुराण' मे यह भी लिखा है कि सन्तान-सुख के अभाव का जो लक्षण काले तालु होने का है वह तभी घटित होता है जब तालु मे श्यामता के साथ-साथ खुरदरापन भी हो। समुद्र ऋषि के मतानुसार तालु सफेदी लिये हो तो दासी, श्यामता लिये हो तो दु खिता, कालापन और रूखापन लिये हो तो सन्यासिनी हो जाती है।

ये जो अलग-अलग रगो से लक्षण बताये गये है उनका आज-कल के समाज पर लागू करने से सन्यासिनी का अर्थ यही किया जावेगा कि—सासारिक जीवन से विरक्त होना। विरक्ति और वैराग्य आजकल 'ज्ञान' के कारण इतना नही होता जितना दु ख के कारण। गर्ग मुनि ने सक्षेप मे यह भी लिख दिया है कि जिन स्त्रियो के तालु मासल और लाल होते है—धब्बेदार नही होते, वे स्त्रिया सौभाग्यशालिनी और पुत्रवती होती है।

हसित (हँसने का)-लक्षण

'स्कन्द-पुराण' के अनुसार यदि हँसने के समय दात दिखाई न दे, गाल कुछ फूल जायें, नेत्र बन्द न हो तो शुभ लक्षण है। हँसते समय गालो पर गड्ढा पडना अशुभ लक्षण है।

नासा (नाक का)-लक्षण

'भविष्य-पुराण' मे लिखा है कि जिस स्त्री की नाक अच्छी तरह उठी हो किन्तु न मोटी हो, न पतली, न टेढ़ी, न बहुत बडी, वह शुभ होती है। ऐसी स्त्री धन्य है। 'गरुड-पुराण' के अनुसार नथुने फूले हुए होना अच्छा लक्षण नही है। नाक के छिद्र गोल और छोटे शुभ माने गये है। यदि नाक का अग्र भाग मोटा हो और अधिक ऊँची

हो तो अच्छा लक्षण नही। जिसकी नाक टेढ़ी-मेढ़ी हो या बहुत छोटी हो वह दासी की भांति आजीवन मेहनत करती रहती है। जिसकी नाक बहुत बड़ी हो वह स्त्री झगड़ालू होती है। यदि नाक का अग्र भाग लाल हो और कुछ झुका हुआ हो तो पति-सुख मे बाधा करता है।

समुद्र ऋषि के मतानुसार—

दीर्घेण नासिकाग्रेण नारी भवति कोपना।
ह्रस्वेण च भवेद्दासी परकर्म्मकरी सदा।
चिपिटा नासिका यस्या वैधव्यमधिगच्छति॥

नाक का आगे का हिस्सा बहुत बड़ा होने से स्त्री बहुत क्रोधी होती है। यदि नाक बहुत छोटी हो तो दासी। जिसकी नाक बहुत चपटी हो तो—यह विधवा होने का लक्षण है।

छींक

यदि छींकने मे देर लगे (अर्थात् ३-४ सैकिण्ड लगे, यह नही कि एक ही सैकिण्ड मे छींक समाप्त हो जाये) और दो-तीन छींक एक साथ आवे तो दीर्घायु का लक्षण है।

नेत्र-लक्षण

भविष्य पुराण का मत—यदि कमल के आकार के बड़े नेत्र हो, उनमे कुछ-कुछ ललाई हो और नेत्रो की बरौनी सुन्दर हो तो ऐसी स्त्री सुख और सौभाग्य भोगती है। खरगोश, मृग या सुअर के नेत्रो के समान जिसके नेत्र हो, वह स्त्री बहुत भोग भोगती है। यदि नेत्र भीतर धँसे हुए न हो, बड़े हो, पलको पर कई रेखा हो तथा नेत्र का डिम्ब शहद के रंग का हो तो ऐसी स्त्रियो का विवाह उच्च पदाधिकारियो से होता है। यदि नेत्र बड़े, सुन्दर और

चमकीले हो (अर्थात् कान्तियुक्त हो, धुंधले नही) तो बहुत धन की स्वामिनी होती है। यदि नेत्र पीलापन लिए हो और भीतर धँसे हुए हो तो स्त्रिया बहुत जीती है किन्तु दुखिनी होती है, किन्तु जिनकी आँखे बहुत अधिक बाहर निकली हो उनकी केवल मध्यम आयु होती है। जिसकी कुत्ते की तरह आँख हो या नेत्र मे सफेदी न हो, मटमैला रग हो या नेत्र लाल हो या छोटे-बड़े हो तो ऐसी कन्या से विवाह न करे क्योकि ये सब अशुभ लक्षण है। यदि औडे या घूमे हुए नेत्र हो तो स्त्रियाँ मद्य-मास प्रिय तथा चपल होती है।

'स्कन्द-पुराण' के मतानुसार यदि नेत्रो का बिम्ब काला हो, नेत्रो के कोने कुछ लाल हो तथा और सब भाग गाय के दूध की तरह सफेद और चिकना व कान्तियुक्त हो तो बहुत शुभ लक्षण है। उन्नत नेत्र वाली स्त्री दीर्घायु नही होती। यदि नेत्र बिलकुल गोल हो तो कुलटा होती है। यदि मेढे या भैसे के नेत्र के समान आँखे हो या औडे नेत्र हो तो सुन्दर लक्षण नही है। यदि गाय की आँखो की तरह नेत्र हो तो उसका चलन अच्छा नही होता। यदि नेत्र लाल हो तो पति की मृत्यु जल्दी हो जाती है। कबूतर के नेत्र के समान हो तो दुश्शीला होती है। यदि आँखे बिलकुल अन्दर धँसी हो तो दुष्ट होती है। हाथी के नेत्र की तरह जिसके नेत्र हो वह भी अच्छा लक्षण नही। जो बाये आँख से कानी हो वह व्यभिचारिणी होती है और जो दाहिनी आँख से कानी हो वह वन्ध्या होती है। यदि शहद के वर्ण का आँखो का डिम्ब हो तो बहुत ऐश्वर्यशालिनी होती है।

'बृहत् संहिता' मे लिखा है कि जिसके नेत्र औडे या डिम्ब पीला या मटमैला हो, जो बार-बार चचल नेत्रो से इधर-उधर

देखती हो तो वह असती होती है। समुद्र ऋषि के अनुसार यदि नील कमल की तरह लावण्ययुक्त आँखें हो ऐसी स्त्री धन-धान्य-युक्त सौभाग्यशालिनी होती है। 'सामुद्रतिलक' के अनुसार पिंगल नेत्र अर्थात् (पीले नेत्र) होना या गो-पिंगल नेत्र होना चरित्र-भ्रष्ठ होने का लक्षण है।

पक्ष्म (आँखों की बरौनी)-लक्षण

यदि आँखो की बरौनी सूक्ष्म किन्तु सघन, स्निग्ध (चिकनी और मुलायम) हो तो सौभाग्य का लक्षण है। किन्तु इसके विपरीत बरौनी के बाल मोटे, दूर-दूर या भूरे रंग के हो तो अच्छा लक्षण नहीं।

भ्रू (भौंह)-लक्षण

यदि भौ ऊँची उठी हुई और एक-दूसरे से मिली हुई न हो तो अच्छा है। भौ के बाल मुलायम होने चाहिए। यदि भौ आधी टेढ़ी और सूक्ष्म हो तो ऐसी स्त्री सुख पाती है। यदि दोनो भौंहे गोल हो तो सौभाग्य का लक्षण है किन्तु बड़े-बड़े रोयें होने से स्त्री वन्ध्या होती है। जिस स्त्री की भौंहे छोटी, परस्पर मिली हुई हो और भौं के रोम पीलापन लिए हुए हो वह दरिद्रा होती है। 'स्कन्द पुराण' मे भी प्राय. इन्ही गुणो को दोहराया गया है। धनुष की तरह गोलाई लिये हुए मुलायम भौं को अच्छा और मिली हुई या सीधी भौ को निन्दित कहा गया है।

कर्ण (कान)-लक्षण

यदि कान लम्बे और सुन्दर, घुमावदार हो तो अच्छे, माने जाते है। यदि उनमे नसें निकली हो, टेढ़े-मेढे, छोटे, दुबले या पतले हो तो अच्छा लक्षण नहीं होता। 'गरुड़ पुराण' के मतानुसार दोनों

कान बराबर, मुलायम, कनपटी पर सुन्दर प्रकार से लगे हुए होने चाहिए। 'भविष्य पुराण' के मतानुसार यदि गधे, ऊँट, नेवले या उल्लू की तरह कान हों या कठिन (सख्त) हों तो ऐसे कान वाली स्त्रियाँ दुःख पाती हैं।

तिल, मस्सा, लहसन[1]

जिस स्त्री के कंठ, ओठ, बायें हाथ या कान पर मस्सा या तिल हो उसके पुत्र बहुत उच्च पदवी प्राप्त करते हैं। यदि भौं के बीच में मस्सा हो तो ऐसी स्त्री बहुत ऊँचा पद प्राप्त करती है। यदि बायें गाल पर लाल मस्सा हो तो सदैव अच्छे-अच्छे भोजन प्राप्त होते हैं। हृदय पर तिल या मस्से का चिह्न हो तो यह भी शुभ है। यदि नाक के अग्र भाग पर तिल हो तो अच्छा लक्षण है। ऐसी स्त्री का विवाह किसी उच्च पदाधिकारी के साथ होता है। किन्तु यदि काला हो तो ऐसी स्त्री अच्छी नहीं होती। यदि गुल्फ (पैर का टखना) पर तिल या मस्से का चिह्न हो तो दरिद्रता का लक्षण है। यदि ललाट पर चमकीला काला तिल हो तो उस स्त्री के पाँच पुत्र होते हैं, वह धार्मिक स्वभाव की तथा सौभाग्यवती होती है। स्त्रियों के बाएँ भाग में इन सब चिह्नों को शुभ समझना चाहिए।

भौंरी

यदि नाभि घुमावदार न हो और पीठ पर भौंरी का चिह्न हो तो उसका पति कम जीता है। नाभि में घुमाव होने से पतिव्रता होती है। यदि पैर में दाहिनी ओर भौंरी हो तो अच्छा लक्षण है। नाभि, कान तथा हृदय पर दाहिनी ओर घूमी भौंरी अच्छा लक्षण

---

१. विस्तृत फल २५वें प्रकरण में दिया गया है।

है। यदि कंठ में, सीमन्त या ललाट पर भौरी हो तो बहुत अशुभ लक्षण है। यदि सिर पर एक या दो भौरी हो तो भी बहुत अशुभ लक्षण समझना चाहिये। कमर पर भौंरी होने से स्वच्छन्द-चारिणी—मनमानी करने वाली, पीठ पर भौरी होने से विधवा तथा व्यभिचारिणी होती है। यदि दाहिने हाथ मे दाहिनी तरफ घूमने वाली भौरी हो तो धन और सौभाग्य का लक्षण है। बाये हाथ मे हो तो अशुभ लक्षण।

गन्ध-लक्षण

बिना साबुन, तेल लगाये हुए—यदि शरीर पर कोई भी सुगन्ध-युक्त वस्तु न लगाई जाय—तो शरीर से जो स्वाभाविक गन्ध निकलती है, उसके विचार से शुभाशुभ लक्षण बताया जाता है। जिस स्त्री के शरीर से अन्न, नीम, दूध, शहद या खून की गन्ध आती हो ऐसी कन्या से विवाह न करे। जिसके शरीर से गो-मूत्र, हड़ताल या और कोई दुष्ट गन्ध आती हो उसके साथ न रहे। जिसके शरीर से चकचून्दर या मछली की गन्ध या और कोई उग्र (तेज) गन्ध आवे तो उसे छोड दे। जिस स्त्री के शरीर से तूम्बी के फूल की-सी गन्ध निकले या लाख (चमडी) की गन्ध आवे वह गर्भ धारण नही करती और दुर्भाग्ययुक्त होती है। जिसके शरीर से चमेली चम्पा, अशोक, बकुल, केवडा या कमल की-सी गन्ध निकले वह बहुत भोग भोगती है और बहुत दीर्घजीवी सन्तानो से युक्त होती है। यदि कोई स्त्री देखने मे रूपहीन भी हो किन्तु उसके सारे शरीर से कस्तूरी की सी गन्ध निकले तो बहुत उच्च पदवी प्राप्त करती है।

छाया-लक्षण

स्त्रियो के शरीर मे सब अगो के अतिरिक्त जो एक विशेष लावण्य—कान्ति होती है, उसे छाया कहते है। जिसे देखने से नेत्रो को सन्तोष हो और सौभाग्य तथा लक्ष्मी का प्रसाद मालूम हो ऐसी स्त्री शुभ होती है। इसके विपरीत यदि उसे देखने से अशान्ति और उद्वेग हो तो उसे दुष्ट लक्षण समझना चाहिए।

सत्त्व-लक्षण

जो स्त्री आपत्ति के समय घबरावे नही और सम्पत्ति पाकर फूले नही, गम्भीरतायुक्त हो—तो सत्त्व का लक्षण है। जिनमे सत्त्व होता है उन स्त्रियो मे दया, सत्य, स्थिरता आदि गुण होते है। उनमे कुटिलता नही होती और प्राय दूसरो का हित और कल्याण करती है।

स्वर-लक्षण

जिनका स्वर वीणा, बासुरी, हस, कोकिल या मोर की तरह हो तो ऊँचे पदाधिकारियो तथा सम्पन्न पुरुषो से उनका विवाह होता है। 'हेमाद्रि' के अनुसार जिस स्त्री का स्वर मेघ, सारस, दुन्दुभि (नगाडे) आदि की तरह गम्भीर हो तो वह बहुत ऐश्वर्यशालिनी होती है। यदि स्त्री की आवाज फूटे कासे की तरह कर्कश या गधे और कौवे की आवाज की तरह कर्ण-कटु हो तो वह स्त्री रोगिणी, व्याधियुक्त होती है। उसे भय, और शोक झेलने पडते है तथा दरिद्रा होती है। 'सामुद्रतिलक' मे लिखा है कि जिस स्त्री की वाणी मे कठोरता न हो किन्तु दीनता भी न हो, चतुरतायुक्त हो किन्तु कुटिलता (दूसरे को चुभने वाली) न हो, स्निग्धता हो तथा सुनने से सान्त्वना और सन्तोष प्राप्त हो तो ऐसी स्त्री को शुभ लक्षण वाली कहना चाहिए।

गति-लक्षण

जिन स्त्रियों की गति सिंह, गज, हंस, चकवा, गौ (गाय) या बैल की तरह होती है, वे बहुत ऐश्वर्यशालिनी होती हैं। इसके विपरीत यदि कुत्ते, गीदड़ या कौए की तरह चले तो निन्दनीय समझनी चाहिए। यदि हिरन की तरह चले तो दासी होती है। यदि बहुत शीघ्र चले तो अच्छा चरित्र नहीं होता।

वर्ण-लक्षण

स्वर्ण की या कुंकुम की तरह जिनकी शरीर की कान्ति, सौंदर्य-युक्त हो तो उत्तम है। यदि श्याम-वर्ण हो और चेहरे पर कान्ति हो या दूब की नई कोपल के समान सुन्दर श्याम-वर्ण हो तो शुभ है। गौर-वर्ण और श्याम-वर्ण दोनों वर्ण शुभ हैं। यदि स्त्री का रंग काला भी हो किन्तु उसके चेहरे पर चिकनाई और कान्ति हो तो शुभ लक्षण है किन्तु यदि काले रंग के साथ-साथ रूखापन और कान्ति-हीनता हो तो अच्छा लक्षण नहीं।

अन्य लक्षण पुरुष-लक्षण के सदृश समझने चाहिए। यह पहले ही लिखा जा चुका है कि स्त्रियों के शरीर के जो भाग नहीं देखे जा सकते उनके लक्षण इस पुस्तक में नहीं दिये गये हैं। पैर, पैर की उंगलियाँ, तलुए, रेखा, गुल्फ आदि के लक्षण पृथक् प्रकरण में विस्तारपूर्वक दिये गये हैं। इसी प्रकार मस्तक, केश, ललाट आदि के लक्षण आगे २४वें प्रकरण में दिये गये हैं। सब लक्षणों को अच्छी तरह देखकर, हाथ की रेखाओं से मिलान कर राय कायम करने से सही परिणाम निकाला जा सकता है। देश, काल, पात्र और परिस्थिति का विचार रखना भी परमावश्यक है।

२४वाँ प्रकरण

मनुष्य का सिर

इस विषय मे भारतीय शास्त्रो मे तो सिद्धान्त मिलते ही हैं परन्तु पाश्चात्य विद्वानो ने भी बहुत विस्तृत खोज की है, इस कारण पहिले पाश्चात्य मत ही दिया जाता है। किन्तु यूरुप की स्त्रियो के केश भूरे, सुनहरी या ललाई लिये हुए तरह-तरह के होते है। वैसा प्राय. भारतवर्ष की स्त्रियो मे नही पाया जाता। शरीर का वर्ण (गौर, अति गौर, ललाई लिये हुए) जैसा यूरुप देश के नर-नारियो मे होता है, हमारे देश मे सम्भव ही नही है। इस कारण पाश्चात्य लक्षण-शास्त्र के मूल सिद्धान्तो को भारतीय नर-नारियो पर लागू करते समय उपर्युक्त उचित विचार अवश्य कर लें।

सिर का महत्व

मनुष्य का चरित्र और दिमाग, उसकी वृत्ति और प्रवृत्ति, ऊहापोह शक्ति (विचार और तर्क करने की क्षमता), लोभ, क्रोध, मोह, विद्या-प्राप्ति, ज्ञान-सचय की इच्छा, धनिक होने की उत्कठा और धन उपार्जन करने की क्षमता आदि प्राय सभी भाव और भावनाएँ मस्तक के आकार-प्रकार तथा उसके अन्तर्गत विविध ज्ञान-कोषो से विशेष सम्बन्ध रखती है। 'मस्तिष्क' हमारी सारी शारीरक और मानसिक क्रियाओं के सचालन का अधिष्ठाता है और उसी का बाहरी आवरण है 'सिर'।

यदि किसी के सिर की बनावट अच्छी है तो उसमे बहुत से गुण होगे। यदि 'सिर' की बनावट ही खराब है तो मनुष्योचित गुणो की उसमे बहुत कमी होगी। यदि मध्यम दर्जे का 'सिर' है तो गुण भी मध्यम मात्रा मे ही पाये जावेगे। नीचे एक 'सिर' का चित्र दिया जाता है। सिर की एक प्रकार की बनावट तो काली रेखा मे दिखाई गई है और अन्य दो प्रकार की दानेदार रेखा मे।

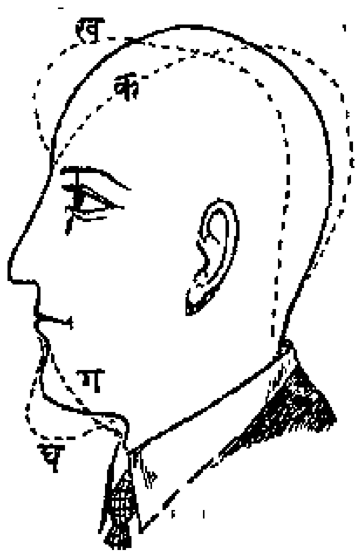

चित्र नं० १२६

काली रेखा मे जैसी आकृति दिखाई गई है वैसी ही प्राय साधारण अच्छी योग्यता के व्यक्तियो के सिर की रूप-रेखा होती है। इसके सब हिस्से यथोचित रूप मे है। कोई भाग सामान्य से अधिक निकला हुआ और कोई जहा जितना पिचका होना चाहिए उससे ज्यादा पिचका हुआ नही है। इस प्रकार के सिर से यही नतीजा निकाला जावेगा कि ऐसा व्यक्ति विश्वासपात्र, योग्य, विचारक्षम, साहसी और

सभ्य होगा। ललाट प्राय सीधा और ऊँचा है। इस कारण ऐसे व्यक्ति को खासा बुद्धिमान कहेंगे।

अब आप 'क' चिह्नित रेखा से ललाट और सिर का जो आकार दिखाया गया है उस पर दृष्टि दीजिये। बुद्धि-कोष जहाँ मस्तक के अन्दर होते है वह स्थान इस आकार मे बहुत ही पिचका हुआ है। इससे यही परिणाम निकाला जायेगा कि ऐसे व्यक्ति के बुद्धि-कोष उन्नत तथा विस्तृत नही है और यह भाग सामान्य से कम पुष्ट होने के कारण, ऐसा मनुष्य बुद्धिमान नही कहा जा सकता। उस को बारबार समझाने की आवश्यकता पड़ेगी। ऐसे मनुष्य बाल्यावस्था मे पढाई मे कमजोर होते हैं और अपनी श्रेणी मे कमजोर छात्रो मे गिने जाते हैं।

अब आप 'ख' चिह्नित रेखा से ललाट और सिर का जो आकार दिखाया गया है उस ओर दृष्टि दीजिये। इसमें बुद्धि-कोषो का स्थान सामान्य से अधिक पुष्ट है इस कारण सिर का अग्र भाग और ललाट उभरे हुए तथा आगे निकले हुए नजर आते हैं। बुद्धि-कोषो की अत्यधिक उन्नति और विस्तृति से—ऐसे व्यक्ति बहुत अधिक बुद्धिमान होते है। उनका वह बुद्धि का आधिक्य सत्कार्य, सदुद्योग नवीन आविष्कार मे लगेगा या दूसरो को हानि पहुँचाने मे, धोखा देने में या अन्य अनिष्ट कार्य मे, यह सिर के अन्य प्रदेशो तथा शरीर के अन्य लक्षणो पर निर्भर है। परन्तु इतना निर्विवाद कहा जा सकता है कि ऐसे मनुष्य अत्यन्त बुद्धिमान होते है। अत्यन्त बुद्धिमान होने से ही यह नही समझ लेना चाहिए कि ऐसे व्यक्ति मिलनसार या खुशमिजाज होते हैं। बहुत बार बुद्धिकोषो की अत्यधिक पुष्टि अन्य प्रवृत्ति-कोषो को इतना सकुचित कर देती है कि ऐसे व्यक्तियो मे

बुद्धि की अधिकता पाई जाने पर भी दया, दाक्षिण्य (चतुरता), प्रेम, सहिष्णुता आदि गुणो की त्रुटियो के कारण उनके साथ रहना भी कष्टप्रद हो जाता है।

सिर का परिमाण—सिर के बडे और छोटे होने पर ही बुद्धि की प्रखरता, उदारता, दयालुता आदि निर्भर है, ऐसा नही समझना चाहिए क्योंकि किसी भी वस्तु का 'परिमाण' ही सब कुछ है ऐसा समझना भ्रामक है। 'परिमाण' से अधिक महत्व है 'गुण' का। यदि 'मस्तिष्क' प्रदेश या ज्ञान-कोष पुष्ट हुए परन्तु उनमे 'शक्ति' या गुण का अभाव हुआ तो केवल 'परिमाण' उस त्रुटि की पूर्ति नही कर सकता।

जो वास्तव मे महान् पुरुष है या हुए हैं उनके सिर बडे थे लेकिन यह कहना सत्य न होगा कि जितने मनुष्यो के सिर बडे है वे सब महान् भी हैं। महत्ता के तीनो नीचे लिखे हुए 'गुण' होने चाहिये—

(क) **बड़ा परिमाण**—अर्थात् लम्बाई, चौडाई, ऊँचाई।

(ख) **विशेष वजन**—जैसे घी पानी की अपेक्षा भारी होता है। एक सोने का टुकडा उतने ही बडे पत्थर के टुकडे से अधिक भारी होगा उसी प्रकार उत्कृष्ट व्यक्तियो के मस्तिष्क सामान्य व्यक्तियो के मस्तिष्क से विशेष भारी होते हैं।

(ग) **विशिष्टता**—जैसे मलमल, मोटे कपडे की अपेक्षा बारीक होती है या रेशम के डोरे में सूती डोरे की अपेक्षा विशेष बल और चिकनाई होती है उसी प्रकार महान् व्यक्तियो के ज्ञान तथा प्रवृत्ति-कोष साधारण व्यक्तियो की अपेक्षा अधिक गुण-युक्त होते है।

अत यदि दो व्यक्तियो के सिर में उपर्युक्त (क) और (ख) गुण यदि समान मात्रा मे हो तो जिसके सिर का परिमाण अधिक हो अर्थात् जिसका सिर बडा हो उसको अधिक बुद्धिमान कहना चाहिये। सिर के बडे होने से यही अन्दाजा लगाया जाता है कि इसके ज्ञान-कोष बडे और पुष्ट है। विशिष्टता का कुछ अनुमान तो सिर के विविध भागो की उन्नति, अवनति से हो जाता है और कुछ वाणी, मुखाकृति, नेत्र आदि से जिसका विस्तृत विवेचन पिछले प्रकरणो मे किया गया है।

सिर की नाप

बुद्धिमान् तथा विद्वान् पुरुषो के सिर को यदि नापा जाय तो उनकी परिधि २१" (इक्कीस इञ्च) से कम नही होगी। नापने का तरीका यह है कि एक फीता लेकर सिर के चारो ओर इस प्रकार लपेटिये कि दोनो कान के ऊपर के सिर का भाग, ललाट और सिर के पिछले हिस्से को छूता हुआ सिर का नाप पूरा आ जावे। जितना नाप आवे उस लम्बाई को फुटे से नाप लीजिये। एक कान से ललाट के ऊपर होते हुए, दूसरे कान तक फीते की लम्बाई यदि १०½ (साढे दस) इच से कम है और सारे सिर की नाप (जैसा ऊपर नापने का तरीका बतलाया जा चुका है) यदि २१ इच से कम है तो ऐसा मनुष्य विद्वान् या विशिष्ट कोटि का बुद्धिमान नही होगा। इस परिमाण से छोटे सिर वाले चतुर, परिश्रमी, दूसरो की बातो को समझने की क्षमता रखने वाले, कलाकार, सगीत में निपुण हो सकते है। यह भी सम्भव है कि उनकी स्मरण-शक्ति बहुत उच्च कोटि की हो परन्तु बुद्धि की प्रखरता, शक्ति, नवीन आविष्कार की क्षमता या प्रकाण्ड पाण्डित्य

ऐसे व्यक्तियो मे नही मिलेगा।

अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, इगलैंड आदि देशो मे २२ इच सिर की नाप प्राय अच्छी समझी जाती है। यदि सिर इससे भी बडा हो तो अच्छा परन्तु २३ या २४ या २४½ इच तक ही सिर का नाप हो तो उत्तरोत्तर अच्छा समझना चाहिये। यदि इससे भी बडा सिर हो तो वह बडप्पन या विशिष्टता का द्योतक नही है। किन्तु यह समझना चाहिये कि सम्भवत कोई रोग है।

जो मनुष्य मूर्ख होते हैं, बहुत बार उनके सिर के परिमाण मे तो कोई कमी नही होती (अर्थात् उनका सिर काफी बडा होता है) परन्तु या तो आकार ठीक नही होता या ज्ञानकोष विस्तृत होते हुए भी उनमे क्षमता या शक्ति का अभाव होता है। परन्तु अधिकतर मूर्ख लोगो के मस्तिष्क होते ही छोटे परिमाण के हैं। यदि किसी व्यक्ति की सिर की नाप १८ इच से भी कम हो, और मस्तिष्क सिर के पीछे नीची ओर हो तो यही निष्कर्ष निकालना चाहिये कि बुद्धि तथा मस्तिष्क-शक्ति की कमी है।

स्त्रियों के सिर पुरुषो के सिर की अपेक्षा कुछ छोटे होते हैं। यदि साधारण बुद्धि के मनुष्य के सिर का नाप २१ इच रखा जावे तो स्त्री के सिर का नाप २० इच समझना चाहिये। बाल्यावस्था में सिर अधिक बढता है। ज्यो-ज्यों अवस्था अधिक होती जाती है सिर के बढने की रफ्तार धीमी होती जाती है। बहुत से वैज्ञानिको का कथन है कि १६-२० वर्ष की अवस्था तक जितना सिर को बढना है उतना बढ जाता है। परन्तु कभी-कभी ४० वर्ष तक के मनुष्यो के सिर मे वृद्धि के लक्षण पाये गये हैं।

सिर के बडे या छोटे होने के विषय मे सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक

Macnish का कथन है कि यदि अन्य बाते समान हो तो जिस जाति का सिर बडा हो वह उस जाति के लोगो को दबा लेगा जिनका सिर छोटा हो। स्कॉटलैण्ड के निवासियो का सिर बडा होता है इसलिये सम्भवत अगरेज (इगलैण्ड के निवासी) उन्हे स्थायी रूप से नही दबा सके। जब भी आप यह देखे कि कोई एक मनुष्य जनता पर बहुत बडा प्रभाव रखता है तो आप अवश्य यह देखेगे कि उस व्यक्ति का सिर बडा है। इस सम्बन्ध मे Pericles, Mirabeau, Franklin, क्रौमवैल, नेपोलियन आदि के नाम उल्लेखनीय है। ये सब अपने-अपने क्षेत्र मे बडे नेता हुए है। नेतृत्व के लिये केवल प्रखर बुद्धि की ही आवश्यकता नही है। चरित्र की दृढता, शक्ति, किसी बात को आगे बढाने की लगन और अध्यवसाय की भी आवश्यकता होती है। इन गुणो के लिए यह आवश्यक है कि इनसे सम्बन्धित ज्ञान-कोष भी मस्तिष्क मे पूर्ण रूप से विकसित और पुष्ट हो। इन्ही कोषो की विस्तृति और पुष्टि से मस्तिष्क का आकार बडा होता है और प्राय मस्तिष्क बडा होने से उसका बाहरी आवरण—मस्तक भी बडा होता है।

कुछ समय पूर्व 'मस्तक विज्ञान परिषद्' के सम्मुख डॉक्टर इलियटसन ने एक जन्मजात मूर्ख का सिर परीक्षा के लिए रखा। इसकी अवस्था १८ वर्ष की थी परन्तु सिर का दायरा (चारो ओर का नाप) १६ इच था और एक कान से लेकर सिर के ऊपर से

Pericles—यह प्राचीन काल में ग्रीक प्रजातन्त्र का प्रभावशाली नेता था।

Mirabeau—फ्रास की राष्ट्रीय सभा में जब इसका ओजस्वी भाषण होता था तो सभा मन्त्र-मुग्ध हो उसकी सिंह-गर्जना सुनती थी।

Franklin—सुप्रसिद्ध अमेरिकन नेता था।

नापते हुए—दूसरे कान तक—कुल लम्बाई ७$\frac{5}{6}$ इंच ही थी। मस्तिष्क के ऊपरी भाग का वजन केवल एक पौंड ७$\frac{1}{4}$ औंस था। और नीचे के भाग का केवल ४ औंस। इस प्रकार कुल मिलाकर १ पौंड ११$\frac{1}{2}$ औंस वजन था। अब तुलना कीजिए Cuvier के मस्तिष्क से जिसका वजन था ३ पौंड १० औंस ४$\frac{1}{2}$ ड्राम।

यदि सिर के चारो ओर की नाप (परिधि) १७ इंच से कम हो तो निश्चय यही अनुमान लगाना चाहिए कि मस्तिष्क पूर्ण विकसित नही है।

ललाट

सिर की गवेषणा करते समय निम्नलिखित बातो पर विशेष ध्यान रखना चाहिए—

(क) ललाट का केवल चौड़ा और ऊँचा होना ही आवश्यक नही है। यह भी आवश्यक है कि सिर के अागे का हिस्सा और ललाट प्रमुख हों। अर्थात् यदि सिर को दो भागो मे विभक्त किया जावे (अ) कानो के आगे का भाग और (ब) कानो के पीछे का भाग—तो प्रथम भाग अपेक्षाकृत बडा और विशेष उन्नत होना चाहिए।

(ख) ललाट यदि चौडा, ऊँचा और गहरा (जैसा ऊपर बताया जा चुका है) भी है, किन्तु क्या ललाट मे सामने की ओर उभार है ?

(ग) कितनी ही बार ललाट मे उपर्युक्त गुण होते है और ललाट इतना प्रमुख और उन्नत होता है कि मनुष्य के पुष्ट मस्तिष्क को पर्याप्त रूप मे प्रमाणित करता है, किन्तु यदि समान रूप से ललाट उन्नत न हो तो विद्या-सम्बन्धी खोज, सूझ-बूझ, दार्शनिक गवेषणा आदि के गुण तो मनुष्य मे आ जाते है किन्तु, विचारो को

कार्य मे परिणत करना और लोक-सफलता आदि नही आने पाती। ललाट के किस भाग के उन्नत होने से कौनसा गुण या स्वभाव विशेष मात्रा मे होता है यह आगे विस्तारपूर्वक बताया गया है।

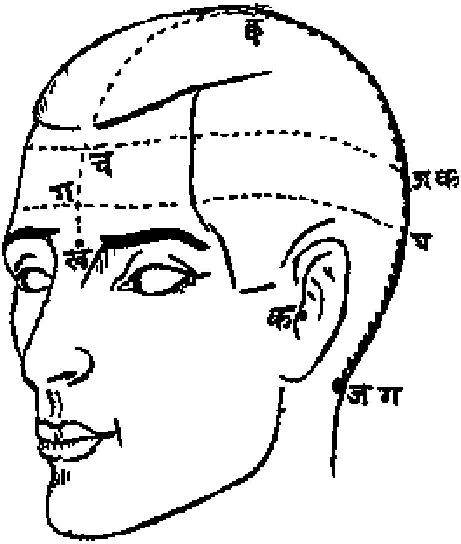

चित्र न० १२७

नाप

(१) सिर के चारो ओर एक फीते से—'ग' से 'घ' तक नापिये और फिर सिर का चक्कर पूरा करके 'ग' पर वापिस आ जाइये।

(२) इसी प्रकार 'च' से 'ज क' तक नापिये और फीते से सिर का चक्कर पूरा कर के 'च' पर वापिस आ जाइये।

ये दोनो लम्बाइयां प्राय बराबर होनी चाहिये। अनुभव से यह ज्ञात होता है कि प्रथम द्वितीय की अपेक्षा कुछ अधिक होती है। इन नापो से निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते है—

(क) यदि प्रथम लम्बाई द्वितीय से आधा या पौन इच अधिक हो तो ऐसा व्यक्ति व्यापारकुशल और परिश्रमी होगा।

(ख) यह दोनो नाप करीब २२½ इच हो तो ऐसा व्यक्ति साहित्यिक, अध्ययनशील और विद्वान् होगा।

(ग) यदि यह नाप २३ इच या अधिक हो तो ऐसा व्यक्ति वैज्ञानिक होगा।

(घ) यदि दूसरी लम्बाई पहली से करीब १ इच अधिक हो तो ऐसा व्यक्ति विचारशील तो होता है किन्तु क्रियाकुशल नही होता। अर्थात् अपने विचारो को कार्यान्वित करने के लिये जिस लोकपटुता, व्यवहार-दक्षता, परिश्रम, अध्यवसाय आदि की आवश्यकता होती है उसकी उसमे त्रुटि रहती है। ऐसे व्यक्तियो की सूझ-बूझ चाहे जैसी अनोखी हो पर उन पर अमल करके मनुष्य सासारिक सफलता नही प्राप्त कर सकता, क्योकि व्यावहारिक दुनिया की अपेक्षा ऐसे व्यक्ति खयाली पुलाव ही पकाते रहते है।

(३) **(अ) अब आप एक कान के बीच से प्रारम्भ कर फीते को सिर के ऊपर ले जाते हुए दूसरे कान के मध्य तक नापिये** (अर्थात् 'क' से 'छ' तक और 'छ' से दूसरे कान के मध्य तक— देखिये चित्र न० १२७)

(ब) अब आप 'ख' से 'छ' के ऊपर होते हुए सिर के पीछे की ओर तक—जहाँ सिर गर्दन से मिलता है 'अग' तक नापिये।

ये दोनो लम्बाइयाँ प्राय. समान होनी चाहिए। यदि आध इच के करीब कम हो तो कोई खास फर्क नही पडता। परन्तु इनकी तुलनात्मक विवेचना से निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते है—

(१) यदि 'प्रथम' की अपेक्षा 'द्वितीय' करीब आधा इच

पं० जवाहरलाल जी नेहरू

श्री आइजन हावर

अधिक हो तो ऐसे व्यक्ति मे बौद्धिक विकास और आदर्श-वादिता, महत्वाकांक्षा आदि गुण विशेष होते है। प्रबन्ध-पटुता तथा स्वार्थप्रवृत्ति अपेक्षाकृत कम होती है।

(२) यदि प्रथम की अपेक्षा द्वितीय १ इंच या अधिक हो तो ऐसा व्यक्ति शीघ्र प्रसन्न होने वाला, न्यायप्रिय होता है।

(३) यदि प्रथम की अपेक्षा द्वितीय बहुत अधिक हो (२ इंच या अधिक) तो ऐसे व्यक्ति मे इतनी आदर्शवादिता आ जाती है कि उसे किसी के काम से सन्तोष नही होता।

(४) यदि द्वितीय की अपेक्षा प्रथम अधिक हो तो सब बातो को गुप्त रखने की प्रवृत्ति, लालच, संग्रहशीलता, दूसरे को नष्ट करने की बुद्धि आदि राजसिक व तामसिक गुण होते है। आत्मिक या नैतिक उन्नति की अपेक्षा ऐसे व्यक्ति सावधानी तथा चतुरता को विशेष महत्त्व देते है।

(५) यदि मस्तिष्क का भीतरी विकास अच्छा न हो तो उपर्युक्त (नं० ४ मे कथित) राजसिक और तामसिक गुण चोरी, अनाचार आदि की ओर प्रवृत्ति करते हैं।

सिर का आकार

सिर के परिमाण (बडे या छोटे होने) के सम्बन्ध मे ऊपर बताया जा चुका है। परन्तु 'परिमाण' के साथ-ही-साथ 'आकार' का बहुत अधिक महत्त्व है। दोनो मे क्या अन्तर है यह समझाया जाता है। कोई मिट्टी का ढेला किसी रबर की गेंद से परिमाण मे बडा हो सकता है किन्तु ढेले का 'आकार' उतना सुन्दर नही होगा जितना गेंद का। सिर के आकार से तात्पर्य है कि यह देखना चाहिये कि यह गोल अधिक है या लम्बोतरा—आगे को झुका हुआ है, या पीछे को

झुका हुआ—क्रमशः गोलाई लिये है या कुछ दूर तक चपटा फिर एकदम गोल है इत्यादि।

सिर के 'परिमाण' से जो नतीजे निकाले जा सकते हैं—मनुष्य की बुद्धिमत्ता, उदारता, दयाशीलता आदि का जो पता सिर के बड़े या छोटे होने से लगता है इसका पर्याप्त विवरण पिछले पृष्ठों मे दिया जा चुका है। देखिये श्री नेहरू जी तथा जनरल आइजन हावर का चित्र।

किन्तु सिर के आकार का भी बुद्धि तथा मानसिक शक्ति से बहुत अधिक सम्बन्ध है। 'आकार' से स्वभाव तथा 'चरित्र' का भी काफी पता चलता है। मस्तिष्क के अन्दर का स्नायुजाल जब परिष्कृत और उच्चकोटि का होता है तो सिर का आकार भी भिन्न होता है। जिस प्रकार सफेदा या दशहरी आम के आकार से उनके भीतर के गूदे के स्वाद और सुगन्धि का पता लगा सकते है उसी प्रकार सिर के आकार-मात्र से यह पता लग जाता है कि मनुष्य बुद्धिमान है या मूर्ख, तथा इसका झुकाव किस ओर है।

अगले पृष्ठ पर ६ सिर के चित्र दिये जा रहे है। जिस व्यक्ति का सिर जितना बडा तथा जिस आकार का था उसके सिर का चित्र भी उसी अनुपात से दिखाया गया है इसलिए यह नही समझना चाहिए कि किसी का सिर छोटा था उसे बडा करके दिखा दिया गया है या किसी का सिर बडा था उसे चित्र मे छोटा करके दिखाया गया है। (देखिये चित्र न० १२०)

इन छहो चित्र मे प्रथम सिर वाला सबसे अधिक बुद्धिमान का चित्र है। इसके बाद बुद्धिमान द्वितीय सिर वाला है। इस प्रकार क्रमशः समझना चाहिए। छठे सिर वाला सबसे कम बुद्धि वाले का है। यहा 'परिमाण' के साथ-साथ ललाट की ऊँचाई तथा सिर का ऊपर

की ओर जो चढाव है उस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

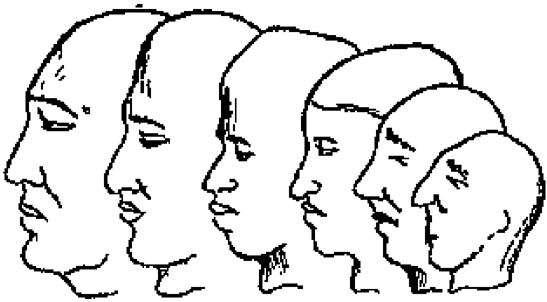

चित्र नं० १३०

इन चित्रों को सदैव अपने ध्यान मे रखने से जब आप किसी मनुष्य की ओर देखेंगे तो आपका ध्यान न केवल सिर के बडेपन या छोटे-पन पर जावेगा किन्तु आप यह भी अवश्य देख लेंगे कि उसका सिर—ललाट भाग—कितना ऊँचा तथा आगे निकला हुआ है और ऊपर की तरफ चढाव कैसा है।

सिर के विविध बाह्य भागों के सम, विषम, उन्नत या अवनत होने से फल में विभिन्नता

सिर के किस भाग के उन्नत और पुष्ट होने से कौन से गुण या प्रवृति विशेष मात्रा मे है यह निम्नलिखित चित्रों से स्पष्ट होगा। किस स्थान से क्या विचार करना यह नीचे बताया जाता है—

(१) कामवासना—यह उन्नत होने से कामवासना आवश्यकता से अधिक होती है।

(२) वात्सल्य भाव—अपनी सतान के प्रति प्रेम। यह उन्नत होने से मनुष्य अपनी सतानो को सामान्य से अधिक प्रेम करता है।

(३) अपने घर तथा देश के प्रति प्रेम—कुछ लोग 'मकानी'

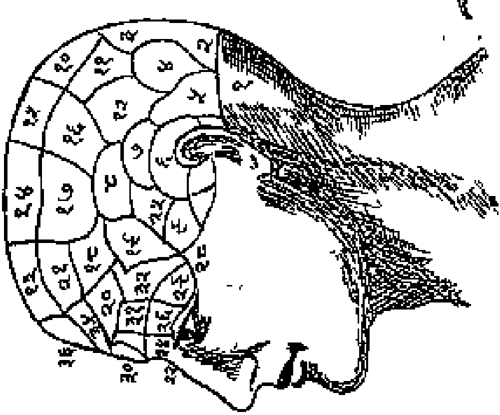

चित्र नं० १५१

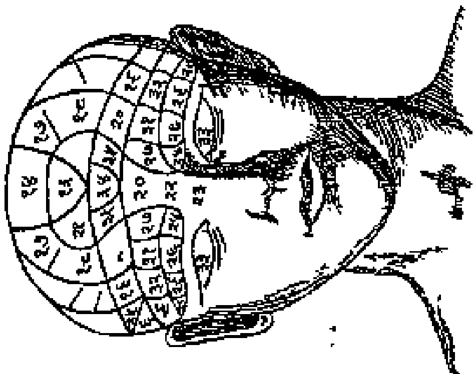

चित्र नं० १५२

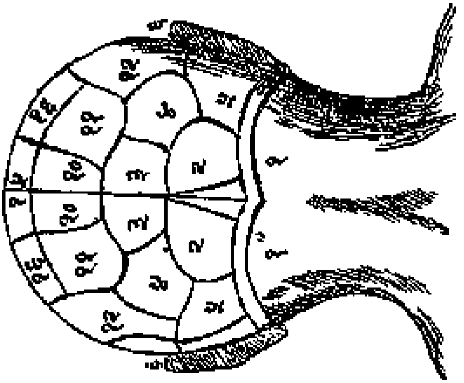

चित्र नं० १५३

अर्थात् अपने मकान मे ही अधिक रहना पसन्द करते हैं। कुछ 'सैलानी'—मकान से बाहर सैर-सपाटे मे अधिक रुचि रखते हैं। जिन के मस्तक का यह भाग अधिक उन्नत और पुष्ट होता है वे बाहर सैर की अपेक्षा अपने घर मे ही रहना पसन्द करते है।

(४) मित्रता की प्रवृत्ति—लोगो को प्रेम करना, मिलनसारी। जिनका यह भाग उन्नत हो उनके बहुत मित्र होते हैं। वे मित्रो के लिये कुछ कष्ट उठाने को भी तैयार होते है।

(५) युद्धप्रियता—ऐसे व्यक्ति झगडा हो जाने पर शात नही होते। उनको आप दबाकर नही रख सकते। जितना दबावेगे उतनी ही तीव्र प्रतिक्रिया उनके मन मे होगी। कठिनताओ से इनकी बदला लेने की भावना कम नही होती किन्तु बढती है। मुकदमा शुरू हो जावेगा तो चाहे घर-बार बिक जावे लेकिन सुप्रीम कोर्ट तक लडेगे।

(६) नष्ट करने की प्रवृत्ति—ऐसे लोग दूसरो को नुकसान पहुँचाने मे नही झिझकते। पुराना मकान होगा तो उसे पूरा तुडवा कर नया बनावेगे। घर मे कागज फैले होगे, तो तुरन्त रद्दी कागज छाटकर फाड देगे या जला देंगे। पेडो को कटवा देगे। मैदानो को सफा करा देगे।

(७) मन के विचारो को गुप्त रखने की इच्छा—जिसके मस्तिष्क का यह भाग उन्नत हो वह अपने विचारो को अकारण भी दूसरे पर प्रकट नही करेगा। चाहे वह कितना भी मिलनसार और हसमुख हो आप उसके मन का भेद नही पा सकेंगे। यदि मकान बनावेगा तो उसमे 'तहखाना' या गुप्त अल्मारिया अवश्य बनावेगा। छोटी चीज को भी छिपाकर या ताले मे रखेगा। उसके पास कितना रुपया है, यह शायद उसके भाई, बन्धु, स्त्री, पुत्र आदि भी न जान सकेंगे।

(८) **लोभ तथा संग्रहशीलता**—यह भाग उन्नत होने से मनुष्य में लोभ की मात्रा विशेष होती है। ऐसे व्यक्ति द्रव्योपार्जन के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते है और कष्ट को कष्ट नही गिनते। जो भी चीज देखेंगे उसे ले लेना चाहेंगे—अमुक वस्तु पर अपना अधिकार हो जावे और वह अपनी हो जावे, यह उनकी बलवती इच्छा होती है। आवश्यकता न होने पर भी वह अपनी सम्पत्ति, मकान, जायदाद आदि बढ़ाते रहते है और आखिर तक—मृत्यु के पहले दिन तक भी—अपने पुत्रों को भी अपनी सम्पत्ति पर अधिकार नही देना चाहते।

(९) **मस्तिष्क की सृजनात्मक प्रवृत्ति**—यह भाग उन्नत और पुष्ट होने से मनुष्य नयी वस्तु की सृष्टि मे रुचि रखता है। यदि मस्तक के अन्य भाग से मनुष्य विद्वान् प्रतीत हो तो यह सृजनात्मक प्रवृत्ति पुस्तक-निर्माण आदि का रूप धारण करेगी। यदि लोभ तथा संग्रहशीलता विशेष हो तो जातक मकान आदि निर्माण कराता है। व्यापारिक या व्यावसायिक प्रवृत्ति का संयोग होने से कल-कारखाने आदि बनाने मे लगा रहता है।

(१०) **आत्म सम्मान**—इस भाग के नीचे मस्तिष्क की वे शिराएँ तथा ज्ञान कोष है जिनसे आत्मसम्मान की भावना दृढ होती है। यदि अधिक उन्नत हो तो जातक अभिमानी होता है।

(११) **आत्म प्रशंसा**—यह भाग पुष्ट और ऊँचा होने से जातक आत्म प्रशंसा का भूखा रहता है—वह चाहता है कि जो काम उसने किया हो वह साधारण हो या विशिष्ट—लोग उसकी प्रशंसा करे। जिन अफसरो या अधिकारियों के मस्तक का यह भाग बहुत उन्नत हो उनकी चापलूसी मात्र करने से आप उनसे अपना कार्य

सिद्ध करा सकते है।

(१२) शकाशीलता—सदेह करने की आदत। इस भाग के नीचे स्नायुमडल का वह भाग है जो विशेष पुष्ट और सक्रिय होने से मनुष्य आगा-पीछा सोचता रहता है—नवीन काम करने मे या नवीन व्यक्ति को नौकर रखने मे सोचता है कि कही घाटा न लग जावे या आदमी धोखा न दे दे। जिनका यह भाग साधारण उन्नत हो उनमे यही शकालुता—दूरदर्शिता वन गुण सिद्ध होती हैं—किन्तु इस भाग का अत्यन्त विकास होने से सदैव औरो के कार्य तथा व्यवहार मे शका होने से मनुष्य दूसरो का विश्वास नही करता और शक्की दिमाग या वहमी होने से व्यापारिक कार्य मे सफलता प्राप्त नही होती। अत्यन्त अवनत या नीचा होने से लोग सच्चे तथा झूठे दोनो प्रकार के लोगो का विश्वास कर लेते है और धोखा खाते है।

(१३) दयालुता—मस्तक के इस भाग के नीचे मस्तिष्क की वे पेशियां है जिनमे दया तथा उपकार करने की भावना का केन्द्र रहता है। यह भाग पुष्ट होने से मनुष्य दूसरो के सग दयालुता तथा उपकार करता है।

(१४) श्रद्धा—शास्त्र, देवता, गुरु या अन्य आदरणीय पूज्य जनो के प्रति जो सम्मान की भावना होती है उसका केन्द्र इस स्थान के नीचे है। ससार की दृष्टि मे या पुलिस के डर से राजनीतिक नेताओ का लोग सम्मान चाहे कर ले किन्तु वास्तव 'श्रद्धा' भाग जब तक पुष्ट न हो, मनुष्य की हृदय से श्रद्धा अन्य व्यक्ति मे नही हो सकती।

(१५) दृढता—जो ऊपर श्रद्धा-भाग दिखाया गया है ठीक

उसके ऊपर जो भाग है उससे मनुष्य की विचार की दृढ़ता या अस्थिरता प्रकट होती है। कुछ लोग अपनी बात पर, अपने विचार पर दृढ़ रहते हैं परन्तु बहुत से चाहते हैं कि दृढ़ रहे किन्तु अपनी कमजोरी से दृढ़ रहने नही पाते। यद्यपि वे जानते है कि 'दृढ़' रहने मे उनका अपना ही लाभ है किन्तु वे अपनी प्रकृति से लाचार होते है। यह भाग उन्नत होने से दृढ़ता होती है अवनत होने से विचारो मे अस्थिरता—ऐसे व्यक्ति ढुलमुल यकीन होते है।

(१६) **न्यायप्रियता**—ऊपर दृढ़ता-प्रदर्शक मस्तक का भाग बताया गया है। उसके दोनो ओर यदि मस्तक भाग उन्नत हो तो मनुष्य कर्त्तव्यपरायण, न्यायप्रिय होता है। उसमे ईमानदारी का भाव विशेष जागरूक रहता है। उसके कार्य की देखरेख करने की आवश्यकता नही। उसकी आत्मा इतनी बलवान् और जागरूक रहती है कि वह उचित रीति से अपना कर्त्तव्य सम्पादन करता है।

(१७) **आशावादिता**—कुछ मनुष्य स्वभाव से ही आशावादी होते हैं और कुछ निराशावादी। आशावादी वे है जो भविष्य को उज्ज्वल समझते है। उनके मत से कठिनाइयाँ दूर हो जावेगी उलझने सुलझ जावेगी—अपने कठिन परिश्रम से या भगवद् अनुग्रह से प्रतिकूल परिस्थिति को भी वे अनुकूल बनालेगे। ऐसी जिन की भावना होती है उन्हे आशावादी कहते है। यह भाग जिनका उन्नत होता है वे आशावादी होते है। इसके प्रतिकूल जिनके मस्तक का यह भाग धँसा हुआ होता है वे निराशावादी होते हैं। उत्तम परिस्थिति मे भी घबराये रहते है कि भविष्य मे न जाने क्या हो—कल्पित तथा अकल्पित घटनाओ की आशंका से उन्हें भविष्य मे निराशा ही निराशा नजर आती है।

(१८) धार्मिक विश्वास—जिन व्यक्तियो के सिर का यह भाग विशेष उन्नत हो उनमे धार्मिक विश्वास अधिक मात्रा मे होता है। अत्यधिक उन्नत होने से अन्ध-विश्वास भी हो जाता है।

(१९) आदर्शवादिता—सौंदर्यप्रियता—जिनका यह भाग उन्नत होता है वे आदर्श सौदर्य-प्रेमी होते है। काव्य, कला, सगीत, साहित्य सभी मे वे सौन्दर्य का उत्कृष्ट रूप देखना चाहते है। इनकी सौन्दर्यप्रियता वास्तविक होती है, वासनामूलक नही।

(२०) हँसी-दिल्लगी का शौक—मजाकिया प्रवृत्ति तथा मस-खरापन—जिनका यह भाग उन्नत होता है उनमे उपर्युक्त प्रवृत्ति अधिक पायी जाती है। वे हाज़िर-जवाब भी होते है।

(२१) नकल करने की आदत—यह भाग पुष्ट होने से दूसरे की नकल करने की प्रवृत्ति होती है। यदि विद्वत्ता आदि के अन्य विशिष्ट लक्षण हो तो ग्रन्थकारिता, मशीन-निर्माण आदि मे अन्य लोगो के ग्रन्थ किंवा मशीन आदि का अनुकरण जातक करता है। यदि विद्वत्ता आदि के लक्षण न हो तो दूसरो की नकल कर मजाक उडाना तथा चुहलबाजी करना—यही आदत जातक मे पायी जाती है।

(२२) वस्तु-निर्देशता—पृथक् करण—यदि यह भाग उन्नत हो तो विश्लेषणात्मक बुद्धि प्रबल होती है। सयुक्त वस्तुओ या विचार को अलग-अलग कर जातक उलझी हुई गुत्थियो को सुलझाने मे सफल होता है।

(२३) यह भाग पुष्ट होने से मनुष्य को बहुत काल पहिले भी देखे हुए आदमियो या वस्तुओ का अच्छी तरह स्मरण रहता है। पुस्तक के श्लोक या कविता या गद्यांश याद रखना भिन्न बात है

और लोगो या वस्तुओ का स्वरूप याद रखना भिन्न। ऐसे जातक एक बार देखे हुए लोगो को तुरन्त पहचान लेते हैं और वस्तुओ की—आकार के दृष्टिकोण से परख भी अच्छी होती है।

(२४) कौन सी चीज कितनी लम्बी या कितनी चौडी थी—इस सम्बन्ध मे स्मरण-शक्ति तथा परखने की शक्ति—इस स्थान के उन्नत होने से होती है।

(२५) यह भाग पुष्ट होने से जातक वस्तु को छूकर या हाथ मे लेकर उसके वजन का अनुमान अच्छी तरह लगा सकता है। ऐसे जातक जल्दी घबराते नही।

(२६) यह भाग बहुत अच्छा हो (पूर्ण उन्नत तथा सुन्दर हो) तो जातक 'रग' का परिज्ञान भली प्रकार कर सकता है। प्राय साधारण आदमी 'रग' की उतनी बारीकियो मे नही जाता। किन्तु कलाकार या जो विविध रग या 'शेड' के कपडे मिलो मे बनवाते हैं, 'रग' तथा उसके प्रभाव के विशेष पारखी होते है। रत्न-परीक्षक भी जरा से रग के अन्तर से रत्नो की कीमत एकदम कम या ज्यादा आंकते है।

(२७) इस भाग के नीचे वे स्नायुपेशियाँ है जिनके विशेष सक्रिय होने से जातक यात्रा करना पसन्द करता है और भ्रमणशील होता है।

(२८) इस भाग के उन्नत होने से मनुष्य किसी वस्तु का मूल्याकन अच्छी तरह कर सकता है। इसके अतिरिक्त हेतु तथा तर्क की बुद्धि अच्छी होती है।

(२९) इस भाग के नीचे वे स्नायुपेशियाँ है जिनसे मनुष्य सुव्यवस्था पसन्द करता है और उसके विचारो, कार्यो तथा व्यव-

हार की वस्तुओ मे कायदा, सफाई तथा सुव्यवस्था नजर आती है।

(३०) इस भाग के उन्नत तथा पुष्ट होने से प्राचीन घटनाओं की स्मृति अच्छी होती है।

(३१) इस भाग के पुष्ट होने से किस समय क्या बात हुई थी—तथा अन्य समय-सम्बन्धी बातो का अनुमान करने मे जातक कुशल होता है।

(३२) इस भाग के नीचे वे स्नायुपेशियाँ है जिनके उन्नत होने से जातक गान, वाद्य मे कुशल होता है तथा भिन्न-भिन्न रसो तथा तालो का सूक्ष्म ज्ञान और उनमे विश्लेषण करने की विशेष योग्यता होती है।

(३३) यह नेत्रो के ऊपर मस्तक का भाग है। जिनका यह भाग पुष्ट हो वे नयी भाषा सीखने मेविशेष पटु होते है। कई भाषाओं के पडित होते है।

(३४) इस भाग के नीचे वे स्नायु है जिनके पुष्ट तथा सक्रिय होने से व्यक्ति भिन्न-भिन्न विषयो का विश्लेषण तथा तुलनात्मक विवेचन एव आलोचना करने मे विशेष क्षम होता है।

(३५) इस भाग का सम्बन्ध दार्शनिक अनुसधानो से है। यह उन्नत होने से जातक दर्शन शास्त्र का विशेष अध्ययन करता है।

(३६) यदि आँख के नीचे की हड्डी कुछ उठी हुई हो तो विविध भाषाओं को याद रखने की क्षमता (स्मरण-शक्ति) विशेष होती है।

(३७) न० (१०) तथा न० (३) के बीच का स्थान उन्नत हो तो 'एकाग्रता' की विशेष शक्ति होती है।

(३८) कनपटी के पास का यह भाग उन्नत हो तो खाने-पीने का बहुत शौक होता है। ऐसे जातक को भूख (सच्ची या झूठी) बहुत

लगती है, जिह्वा-लोलुपता की पूर्ति के लिये विशेष उत्सुक रहता है।

'सिर'—भारतीय मत

पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने शरीर के अन्य अंगों की अपेक्षा सिर का अध्ययन विशेष किया है इसलिये हाथ को छोड़कर अन्य अंगों की अपेक्षा 'सिर'-सम्बन्धी अध्ययन का जितना साहित्य पाश्चात्य देशों में उपलब्ध होता है उतना हमारे शास्त्रों में नहीं। हमारे यहाँ अनेक शरीर-अंगों में 'सिर' भी एक प्रधान अंग है—यह विचार कर सूत्र-रूप से थोड़े में बहुत बता दिया है। 'भविष्य पुराण' का वचन है—

उच्चैरनिम्न तु शिर श्लक्ष्ण सहतमेव च।
छत्राकार नरेन्द्राणा गवाढ्य मंडल स्मृतम्॥

ऊँचा, नीचा नहीं, चिकना, दृढ़, छत्राकार (छतरी की तरह का चारों ओर बराबर गोलाई लिये—लबोतरा नहीं) सिर, श्रेष्ठ पुरुषों का होता है। जिनका सिर मंडलाकार होता है उनके पास गो सम्पत्ति (गाय, बैल, बछड़े) विशेष होती है। पहले गो-सम्पत्ति कृषि, धन-धान्य, समृद्धि का द्योतक था। अर्वाचीन समय में इसका अर्थ-धन-सम्पत्ति युक्त करना चाहिये।

यदि सिर विषम हो (बेढंगे तौर पर ऊँचा-नीचा) तो दरिद्रता प्रकट करता है। यदि अन्दाज से बहुत बड़ा हो तो भी मनुष्य दुःखित रहता है। हाथी के कुंभ (सिर का एक भाग) की तरह परस्पर अच्छी तरह जुड़ा हुआ चारों ओर एक सी क्रमिक ढाल वाला सिर जिसका होता है वह धनी और भोगयुक्त होता है। जिसका सिर चपटा हो उसके माता-पिता दीर्घायु नहीं होते अथवा उसको माता-पिता का किसी भी कारण से पूर्ण सुख नहीं प्राप्त होता। यदि

घड़े की तरह सिर हो तो यात्रा बहुत करता है। यदि सिर नीचा हो (अर्थात् ऊपर की ओर उभार न हो) तो अनर्थ का कारण होता है। अर्थात् ऐसा मनुष्य दरिद्र होता है और आपत्तियों में फंसा रहता है।

> विषम तु दरिद्राणा शिरोदैर्घ्ये तु दुःखिता ।
> गज कुम्भनिभ सक्त सम सर्वत्र भोगिन. ॥
> चिपिट तु शिरो यस्य हन्यात् हि पितरौ नर ।
> घटाकृति शिरोऽध्वान मसकृत्सेवते नर ॥
> निम्न शिरोऽनर्थंद स्यान्नराणामृपभोत्तम ॥

वराह मिहिराचार्य ने भी 'बृहत्संहिता' में लिखा है कि घड़े की-सी आकृति का सिर वाला व्यक्ति सदैव यात्रा करने की इच्छा रखता है और जो 'द्विमस्तक' हो, जिसका मस्तक देखने में ऐसा लगे कि दो मस्तक मानो जुड़े हुए है—वह व्यक्ति पाप-कर्म करने वाला और निर्धन होता है।

यहाँ यह बताना आवश्यक है कि 'द्विमस्तक' से क्या तात्पर्य है। जब सिर की गोलाई और ऊँचाई समान रूप से चारों ओर होती है तो वह सुन्दर मस्तक प्रतीत होता है किन्तु ऊपर का भाग दो जगह से अधिक ऊँचा हो या आगे के सिर के अनुरूप पीछे का भाग न हो या बीच से विभाजित हो तो ऐसा प्रतीत होगा कि दो अलग-अलग आकार और परिमाण के सिर के आधे-आधे भाग लेकर जोड़ दिये गये है। ऐसे सिर वाले व्यक्ति को 'द्विमस्तक' कहते हैं।

हाथी के 'कुंभ' सदृश सिर और 'घट'—घड़े के सदृश सिर में क्या अन्तर है, यह बताना भी आवश्यक है। हाथी के सिर के दो

भाग होते है प्रत्येक भाग 'कुभ' कहलाता है। यह 'घड़े' की तरह होता है इसलिये इन्हे 'कुभ' कहते है क्योकि 'कुभ' का अर्थ है 'घडा', तब 'कुभ' और 'घट' मे क्या अन्तर है कि शास्त्रकारो ने दोनो तरह के सिर का पृथक्-पृथक् फल निर्देश किया ? प्रथम अन्तर यह है कि हाथी का कुभ उलटे घडे की तरह होता है। दूसरा अन्तर है कि हाथी के कुभ मे ढलाव क्रमश. होता है। 'घट' मे अधिक।

घट मूर्द्धा चाध्वरुचि द्विमस्तक पापकृत् धन परित्यक्त ।
(बृहत्संहिता)

धन विरहितो द्विमौलि पापरतो मीन मौलिरति दु.खी।
अध्वरुचिर्घट मौलि. प्रनत मौलि सदानिन्द्य ॥
(सामुद्रतिलक)

मछली की तरह जिसका सिर हो वह अति दु.खी होता है। आगे की ओर जिसका सिर झुका हो वह भी अच्छा नही।

लका देश के प्राचीन विद्वान् श्री अनवमदर्शी के मतानुसार यदि सिर दोनो ओर विभाजित दिखाई दे—जैसे हाथी के सिर पर दोनों ओर 'कुभ' होते है तो जातक परस्त्रीगामी होता है।

द्विधा विभिन्ना द्विप कुभ तुल्य ।
शिरो भवेदन्य वधूरतानाम् ॥

सिर का परिमाण

ठोडी से लेकर नाक, ललाट, सिर के ऊपर फीते को ले जाकर जहा सिर के बाल पीछे समाप्त होते है, वहां तक नापिये। यह नाप ३२ अगुल हो तो सिर श्रेष्ठ है, यदि इससे न्यून हो तो बड़प्पन की निशानी नही। एक कान से दूसरे कान तक १८ अगुल लम्बाई होनी चाहिये। प्रत्येक मनुष्य को स्वय के अंगुल से नापना चाहिये।

मध्यमा उगली के मध्य पर्व की चौडाई को एक अगुल समझना चाहिये।

आचिबुक पश्चिम कचप्रान्त द्वात्रिंशदङ्गुलो मूर्धा।
कर्णद्वयस्य मध्ये पुनरष्टाधिक दशागुलिक ॥

स्त्रियो का सिर

जिस स्त्री के सिर का घेरा लबाई से दुगुना और 'ललाट' से तिगुना हो या हाथी की तरह सिर हो वह उत्तम है। ललाट कितना लम्बा है—इसे एक फीते से नापिये। फिर कान के ऊपर से सिर को चारो ओर से नापिये। यदि सिर के चारो ओर की नाप, ललाट की लम्बाई से तिगुनी हो तो यह प्रशस्त है।

'स्कन्द पुराण काशी खड' मे लिखा है कि यदि स्त्री का सिर हाथी के 'कुभ' की तरह गोलाई लिये हो तो सौभाग्य और ऐश्वर्य का सूचक है। जिसका स्थिर 'स्थूल' हो वह विधवा होती है तथा जिसका सिर दीर्घ हो वह दासी की तरह घर का काम परिश्रम-पूर्वक करने मे ही अपना जीवन बिताती है। चारो ओर बराबर उन्नत सिर शुभ लक्षण है। यदि सिर विशाल हो तो भी दुर्भाग्य-सूचक है। 'गरुड पुराण' के मतानुसार स्त्रियों का सिर सम होना अच्छा है। इसके विपरीत यदि 'विषम' हो (बीच-बीच मे कही निकला हुआ ऊँचा-नीचा) तो यह अच्छा नही—

द्विगुण परिणाहेन ललाटात् त्रिगुण च यत् ।
शिर प्रशस्त नारीणा सुधन्या हस्ति मस्तकी ॥
गजकुम्भ निभोवृत्त सौभाग्यैश्वर्य सूचक ।
स्थूल मूर्द्धा च विधवा दीर्घशीर्षा च बन्धकी।
विशालेनापि सिरसा भवेद्दौर्भाग्य भाजनम् ॥

पुरुषों के 'केश'

सिर के बालो को केश कहते यदि पुरुषो के सिर के केश, शरीर के रोम, या दाढी-मूंछ के बाल रूखे, मोटे, फटे, चुभने वाले, फटे* या भूरे हो तो ऐसे व्यक्ति दु खित रहते है—अर्थात् धनवान सौभाग्यशील नही होते। बहुत घने बालो की अपेक्षा कुछ कम घने हो तो अधिक प्रशस्त है। केशो का भ्रमर के समान श्याम वर्ण, सुन्दर चिकनाई लिये हो तथा मृदुता सौभाग्य का लक्षण है ऐसा 'भविष्यपुराण' का वचन है—

वराहमिहिर का भी मत है कि—

एकैक भवै स्निग्धै कृष्णैराकुचितैरभिन्नाग्रै ।
मृदुभिरनतिबहुभि केशै. सुखभाक् नरेन्द्रो वा ॥
बहुमूल विषम कपिला. स्थूल स्फुटिताग्र परुष ह्रस्वाश्च ।
अति कुटिलाश्चातिघनाश्च मूर्द्धजा वित्तहीनानाम् ॥

अर्थात् एक रोमकूप मे एक ही बाल होना, स्निग्धता (चमक और मुलायम होना), कोमलता, कृष्ण वर्ण (बिल्कुल स्याह) और बहुत घने न होना सुखी और श्रेष्ठ पुरुष का लक्षण है। यदि एक ही जड़ से बहुत से बाल निकले, बालो मे सफेदी लिये हुए भूरापन हो, मोटे हो, आगे से छिदे (दो शाखा वाले), सख्त और छोटे हों, अत्यन्त कुटिल (एसे घुघराले कि छल्ले-छल्ले से पड जावें), या अत्यन्त सघन हों तो वित्तहीनता का लक्षण है। ऐसे पुरुषो के पास लक्ष्मी स्थिर नही होती।

स्त्रियों के केश

'गरुड पुराण' मे लिखा है कि काले, चिकने, मुलायम और

*फटे से तात्पर्य है अग्रभाग में दो शाखायुक्त ।

आगे से कुंचित होने वाले केश यदि स्त्रियों के हों तो शुभ हैं। 'भविष्य पुराण' का भी मत है कि सूक्ष्म, कृष्ण, मृदु, स्निग्ध तथा आगे से कुछ मुड़ने वाले केश लक्ष्मी और सौभाग्य के सूचक हैं। इससे विपरीत यदि मोटे, भूरे, कर्कश, रूखे केश हों तो क्लेश और शोक देने वाले होते हैं। 'स्कन्द पुराण काशी खंड' में लिखा है—

केशा अलिकुलच्छायाः सूक्ष्मा स्निग्धा सुकोमलाः।
किञ्चिता कुञ्चिताग्राश्च कुटिलाश्चाति शोभना ॥
परुषाः स्फुटिताग्राश्च विरलाश्च शिरोरुहाः।
पिंगला, लघवो रूक्षा दुःख दारिद्रय बान्धवाः॥

पुरुषों के केश विरल होना गुण है किन्तु इसके विपरीत स्त्रियों के केश का सघन होना गुण है।

पुरुषों का ललाट

ललाटेनार्ध चन्द्रेण भवन्ति पृथिवीश्वरा।
विपुलेन ललाटेन महानरपति स्मृत।
श्लक्ष्णेन तु ललाटेन नरो धर्मरतस्तथा॥

(भविष्य पुराण)

यदि पुरुष का ललाट अर्धचन्द्र की तरह हो तो ऐसा व्यक्ति जमीन-जायदाद का मालिक, ऐश्वर्यसम्पन्न होता है। विपुल (उन्नत और फैला हुआ) ललाट होने से मनुष्य ऊँचे ओहदे पर पहुँचता है। यदि ललाट चिकना हो तो मनुष्य धर्म में रत (धार्मिक) होता है।

जिस व्यक्ति के ललाट में त्रिशूल या 'पट्टिश' (भाले) का चिह्न हो वह बहुत ऊँचे पद पर पहुँचने वाला (गवर्नर, मिनिस्टर आदि) भोगी (धनैश्वर्यसम्पन्न, सुखी) तथा कीर्तिमान होता है। जिनके

दोनों नेत्रों के ऊपर के भाग को ललाट की हड्डी विपुल (बड़ी और फैली हुई) और उन्नत (ऊँची) हो ऐसे व्यक्ति धन्य है। अर्थात् वे ख्याति प्राप्त, धनधान्य, ऐश्वर्य-सम्पन्न, बहुत मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले होते हैं।

जिसका ललाट नीचा हो उसको पुत्र-सुख कम होता है। यह दरिद्रता का लक्षण भी है। यदि ललाट ऊँचा-नीचा हो तो भी मनुष्य धनहीन होता है। यदि सीप की तरह ऊँचा और फैला हुआ ललाट हो तो उच्च विद्वत्ता का लक्षण है।

शुक्ति विशालै राचार्याः शिरा सन्ततै रधर्मरता ।

(बृहत्संहिता)

यदि ललाट नीचा हो और उसमे नसे निकली हुई दिखाई दें तो मनुष्य अधर्म मे रत रहता है। किन्तु यदि इन नसों से 'स्वस्तिक' का चिह्न बना हुआ हो और ललाट उन्नत हो तो मनुष्य धनिक होता है।

जिनका ललाट सकडा होता है वे कृपण होते हैं। जिनका ललाट नीचा हो वे क्रूर कर्म करने वाले तथा हिंसक होते है और यदि अन्य अशुभ लक्षण हो तो जेल जाने का या गहरी विपत्ति में पड़ने का योग भी बन सकता है। बहुत उन्नत ललाट वाले प्राय. स्वतन्त्र, और हुकूमत करने वाले होते है।

समुद्र ऋषि का कथन है—

नि स्वा विषमभालेन दु खिता ज्वर जर्जरा ।
पुरकर्म करानित्यं प्राप्यन्ते वधबन्धनम् ॥

जिनका ललाट ऊँचा-नीचा हो (क्रमशः ऊँचा नहीं—कुछ ऊँचा फिर धँसा हुआ फिर ऊँचा) वे दुःखी, ज्वरपीड़ित और धनहीन

होते है। ऐसे लोगो का जीवन दूसरो का काम करने मे ही (नौकरी) जाता है ऐसे व्यक्तियो के हृदय मे दया कम होती है और कष्ट पाते है।

'सामुद्रतिलक' का वचन है कि जिसके ललाट मे रेखाओ से नसो से या रोम से 'श्रीवत्स', 'धनुष' आदि के शुभ चिह्न बनते हो वे भोगी (स्त्री, धन, वाहन, भृत्य आदि भोग-साधन सम्पन्न) और उच्च पदवी प्राप्त करने वाले होते है—

श्रीवत्स कार्मुकाद्या यस्य शिरारोमभि कृता भाले।
रेखाभिर्वा नृपतिर्भोगी वा जायते सपदि ॥

ललाट लक्षण से आयु-विचार

यदि ललाट फैला हुआ भी कम हो और ऊँचा भी कम हो तो व्यक्ति अल्पायु होता है। इसके अतिरिक्त ललाट की रेखाओ से भी आयु का ज्ञान किस प्रकार हो यह 'भविष्य पुराण' मे बताया गया है।

"जिस स्त्री या पुरुष के पाँच सम्पूर्ण रेखा ललाट मे हो वह ऐश्वर्यवान होते है और १०० वर्ष तक जीते है—अर्थात् पूर्णायु प्राप्त करते है। यदि चार रेखा आडी और सम्पूर्ण हो तो ८० वर्ष की आयु और यदि ३ रेखा पूर्ण हो तो ७० वर्ष की आयु समझना चाहिये। यदि दो रेखा सम्पूर्ण और अखण्डित हो तो ६० वर्ष तक और यदि केवल एक रेखा पूर्ण हो तो ४० वर्ष तक की आयु निर्धारित करनी चाहिये। यदि ललाट मे कोई रेखा न हो तो केवल २५ वर्ष की आयु समझनी चाहिये।"

पूर्णायु १०० वर्ष की मान कर—'भविष्य पुराण' मे जो आयु-मान दिया गया है, वह उस समय तो अवश्य बिलकुल ठीक लागू

होता था जब लोग दीर्घायु होते थे। किन्तु आजकल पूर्ण दीर्घजीवी व्यक्ति भी १०० वर्ष तक नहीं जीते इसलिये यदि साधारणतया इसमें कुछ न्यूनता कर दी जावे तो आयु का अधिक सही अनुमान बैठेगा। इंगलैण्ड आदि ठण्डे और विशेष धनधान्य आरोग्य, साधन-सम्पन्न देशों में भारत की अपेक्षा दीर्घजीवी व्यक्ति होते हैं। गत १५-२० वर्षों में भारत में भी औसत आयु बढ़ गई है। इसलिये देश और काल का पूर्ण विचार कर—पूर्णायु १०० की अपेक्षा कुछ कम कल्पना कर—उसी क्रम से ४ रेखा की, ३ रेखा की, २ रेखा और १ रेखा की—जितनी रेखा ललाट में आड़ी, अविच्छिन्न सुन्दर हों, आयु निश्चित करना उचित है।

यह रेखा सारे ललाट में एक ओर से दूसरी ओर तक पूर्ण होनी चाहिये तभी प्रत्येक रेखाकृत पूर्ण आयु-मान ठीक बैठेगा। वराहमिहिर का मत ऊपर दिये गये 'भविष्य पुराण' के मत से कुछ भिन्न है। वह लिखते हैं—

"तिस्रो रेखाः शतजीविनां ललाटायताः स्थिता यदि ताः।
चतसृभि रवनीशत्वं नवति श्चायुः स पञ्चाब्दा॥
(बृहत्संहिता—अध्याय ६८, श्लोक ७५)

यदि सारे ललाट पर तीन लम्बी आड़ी रेखा हों तो मनुष्य सौ वर्ष तक जीता है। यदि ऐसी चार रेखा हों तो राजा हो और ९५ वर्ष की आयु हो।"

ललाट की रेखा सारे ललाट पर फैली हुई (एक ओर से दूसरी ओर तक पूर्ण) शुभ लक्षण है किन्तु यदि वह कटी हो तो मनुष्य व्यभिचारशील होता है। यदि रेखा न हो तो भी ६० वर्ष की आयु होती है। यदि रेखा ललाट के ऊपरी भाग पर केश को छुए तो ८० वर्ष

की आयु और यदि पांच रेखा हो तो ७० वर्ष की आयु । यदि एक रेखा के अग्र भाग से अन्य रेखा कटती हो या कोने पर मिल जावे तो ६० वर्ष की आयु और बहुत सी (पाच से अधिक) रेखा हो तो जातक केवल ५० वर्ष जीता है। यदि रेखाएँ टेढी हो (आडी तो हो किन्तु बिल्कुल सीधी न हो) तो मनुष्य की आयु केवल ४० वर्ष की और भौं को छूती हुई आडी रेखा हो तो ३० वर्ष की आयु होती है। यदि रेखा ललाट के बायी ओर को झुकी हुई हो तो केवल २० वर्ष समझना चाहिये। यदि रेखा छोटी हो तो मनुष्य अल्पायु होता है। कोई रेखा लम्बी और कोई छोटी हो तो इसी अनुपात से आयु निश्चय करनी चाहिये।" (बृहत्संहिता, अध्याय ६८, श्लोक ७६-७८)

उपर्युक्त श्लोको से वराहमिहिर और 'भविष्य पुराण' के मतो मे अन्तर प्रतीत होता है, परन्तु सामजस्य के लिये शास्त्रकारो ने यह व्याख्या की है कि 'भविष्य पुराण' मे जो पाच रेखा होने पर १०० वर्ष की पूर्णायु बताई है वह वरामिहिर ने ३ रेखा होने पर ही—इसका कारण यह है कि वराहमिहिर के मतानुसार तीन रेखा ललाट पर एक कान से दूसरे कान तक पूर्ण होनी चाहिये क्योकि 'गरुड पुराण' मे लिखा है कि जिनके एक कान से दूसरे कान तक ललाट पर फैली हुई तीन पूर्ण रेखा हो वे सौ वर्ष तक जीते हैं—

आकर्णान्तगता रेखास्तिस्त्र स्युश्च शतायुष ।
ललाटोपसृता स्तिस्रो रेखा स्यु शतवर्षिणाम् ॥

एक कान से दूसरे कान तक ललाट पर रेखा होगी तभी सभव है जब ललाट पूर्ण लम्बा और उन्नत हो ।

इस विषय मे सभी शास्त्र एकसम्मत है कि यदि ललाट की रेखा ह्रस्व हो और कटी हुई हो तो ऐसा मनुष्य अल्पायु और

व्यभिचारशील होता है । रेखाओं का कटा होना या टेढा-मेढा होना अच्छा लक्षण नहीं है ।

स्त्रियों के ललाट

अर्द्धेन्दु प्रतिमा भोगमरोमश मनायतम् ।
तत् श्रीभोगकर श्रेष्ठं ललाट वर योषिताम् ॥
(भविष्य पुराण)

अष्टमी के चन्द्र के आकार का, जिस पर रोएँ न हों, बहुत चौडा नही—ऐसा ललाट यदि स्त्रियो का हो तो श्रेष्ठ है। इस शुभ लक्षण से स्त्री धनी और सौभाग्ययुक्त होती है 'स्कन्द पुराण' के अनुसार स्त्रियों का ललाट यदि आगे झुका न हो, रोमरहित हो, अष्टमी के चन्द्रमा के आकार का हो, उसमे नसे दिखाई न दे, और तीन अंगुल चौडा हो तो सौभाग्य और आरोग्य प्रकट करता है।

जिस स्त्री के ललाट पर रेखाओ से स्वस्तिक का चिह्न बने वह राज्य और सम्पदा पाती है अर्थात् बहुत उच्च पदवी, मान-प्रतिष्ठा व धनैश्वर्यशालिनी होती है। यदि उसके ललाट पर रेखाओ से त्रिशूल चिह्न बने तो हजारो स्त्रियो की स्वामिनी होती है (वह स्वय हुकूमत करती है या उसका पति बहुत उच्च-पदाधिकारी होता है)।

समुद्र ऋषि के मतानुसार भी स्त्रियो का ललाट तीन अगुल से अधिक ऊँचा नही होना चाहिये। ललाट का निर्मल होना तथा बराबर (गड्ढेदार नही) और सुन्दर होना जिसमे नसे और रोएँ दिखाई न दे दीर्घ आयु, सुख और धन का द्योतक है—

यदि ललाट पर नसे और रोएँ अधिक हों तो अशुभ लक्षण है। जिसका ललाट बहुत लम्बा हो उसका देवर (पति का छोटा भाई) दीर्घायु नहीं होता।

२५वाँ प्रकरण

तिल-विचार

तिल और मस्सों का विचार इस प्रकरण में दिया जा रहा है। वराहमिहिर के मतानुसार यदि मस्सा शरीर के वर्ण का हो या उज्ज्वल कान्तियुक्त हो तो ब्राह्मण के लिये विशेष शुभ होता है। अर्थात् यदि ब्राह्मण के शरीर पर ऐसा मस्सा हो तो उसके लिये शुभ होता है, क्षत्रिय के शरीर पर सफेद (उज्ज्वल कान्ति का—शरीर के वर्ण की भाँति हो) या कुछ ललाई लिये हुए मस्सा हो तो शुभ है। वैश्य के शरीर पर उज्ज्वल कान्ति का, ललाई लिये हुए या-कुछ पीलापन लिये हो तो शुभ है। शूद्र के शरीर पर उपर्युक्त तीनों मे से किसी रग का या काला मस्सा हो तो वह भी शुभ है।

यदि सिर पर उपर्युक्त शुभ मस्सा हो तो बहुत धनागम होता है। अगर चेहरे के पृष्ठभाग पर (सिर के पिछले हिस्से पर हो) तो भी सौभाग्य-लक्षण है। ललाट पर होने से बहुत धनागम होता है। भौं पर दौर्भाग्य का लक्षण है। यदि भ्रुवो के बीच मे हो तो ऐसे व्यक्ति का प्रियजनो से विशेष समागम होता है किन्तु ऐसा व्यक्ति स्वय दुष्ट होता है। पलक पर मस्सा हो तो दु खदायी है। नेत्र पर हो तो प्रियजनो का दर्शन-सुख, यदि कनपट्टी या भौं के ऊपर ललाट और नेत्र की हड्डी के योग स्थान पर हो तो ऐसा मनुष्य सब कुछ त्याग कर सन्यास ग्रहण करता है। जहाँ नेत्र से आँसू गिरते हैं उस स्थान पर हो तो चिन्ता उत्पन्न होती है।

बहुत बार यह देखा गया है कि जन्म के समय तो मस्सा इत्यादि नही होता, बाद मे हो जाता है। जब नवीन मस्सा हो, तब 'चिन्ता

उत्पन्न होना' आदि फल लागू होते हैं। यदि नाक पर हो तो नवीन वस्त्र-प्राप्ति, कपोल पर सुत-प्राप्ति, ओष्ठ पर उत्तम भोजन, चिबुक पर भी यही फल होता है। 'हनु प्रदेश पर हो तो बहुत धनागम होता है। यदि कान पर होने से भूषण-प्राप्ति तथा ज्ञान-प्राप्ति, वेदान्तादि का अध्ययन होता है। गले पर हों तो अच्छे पदार्थ, भोजन और पीने के लिये पेय प्राप्त हों। जहां सिर और गर्दन का जोड़ है वहां मस्सा निकल आवे तो लोहे के शस्त्र या औजार से चोट लगती है। ग्रीवा पर चोट, किन्तु यदि हृदय पर या वक्षस्थल पर हो तो पुत्र-प्राप्ति। पार्श्व (पसली या उसके नीचे हो) तो दुःख। कंधे पर हो तो वृथा घूमना और कांख मे हो तो अनेक प्रकार से धननाश हो। पीठ पर होने से दुःख और चिन्ताओं से निवृत्ति होती है। बाहु पर हो तो शत्रुनाश, भूषण तथा वस्त्र-प्राप्ति। किन्तु यदि कलाइयों पर हो तो अशुभ है—मनुष्य स्वयं बन्धन को प्राप्त होता है।

यदि हाथ या उंगलियों पर हो तो धनागम और सौभाग्य का लक्षण है, किन्तु पेट पर हो तो दुःख या क्लेश का लक्षण है। नाभि पर होने से उत्तम भोजन और पेय पदार्थ प्राप्त हों। यदि नाभि के नीचे हो तो चोरी से धनहानि होती है। यदि बस्ति[2] पर हो तो धन-धान्य, मेढ़ पर सुन्दर स्त्री और पुत्र-प्राप्ति, वृषण पर सौभाग्य, उससे नीचे धनागम प्रकट करता है।

जांघ पर 'पिटक' या मस्सा हो तो सवारी तथा स्त्री का लाभ,

---

१. हनु और चिबुक ठोढ़ी को कहते हैं परन्तु कौन सा भाग हनु और कौन सा भाग चिबुक कहलाता है यह पृष्ठ ४६९ पर देखिये।

२. बस्ति शरीर के किस भाग को कहते हैं यह पृष्ठ ४३१ पर देखिये।

घुटनो पर हो तो अशुभ होता है। शत्रुओ से हानि होती है। पिंडलियो पर होने से शस्त्राघात से पीडा, टखनो पर बन्धन, यात्रा-कष्ट आदि अशुभ फल।

नितम्ब पर धननाश, एडी पर किसी से अनुचित सम्बन्ध और यात्रा। पैर की उगलियो पर 'बन्धन' किन्तु पैर के अगूठे पर शुभ फल—लोगो से सम्मान प्राप्त होता है।

पुरुषो के शरीर पर मस्सा, फडकना, तिल, लहसन या भौरी शरीर के दक्षिण भाग पर हो तो शुभ होता है। स्त्रियो के वाम भाग पर शुभ, दाहिने भाग मे अशुभ समझना चाहिये। ऊपर जो मस्सो का फल दिया गया है वही तिल, लहसन तथा भौरी का होता है।

शरीर में तिल, मस्से और लहसन

अनेक भारतीय शास्त्रों का अवलोकन कर 'जैनमत पताका' में तिल, मस्सो आदि के निम्नलिखित फल दिये गये है। वे यहा उद्धृत किये जाते हैं—

"(१) शरीर के चमडे पर तिल जैसे आकार का श्याम रग का निशान हो उस को तिल बोलते है। चमडी मे कुछ ऊची बढकर मास की छोटी-सी गाठ राइ या बाजरे जितनी हो उसको मस्सा बोलते हैं, इसमें बडा मस्सा हो वह अच्छा नही।

(२) लहसन उसको बोलते हैं जो कुसुबे के रग के माफिक लाल रग का निशान शरीर की चमडी पर होता है। तिल, मस्सा या लहसन कोई हो, अगर खूबसूरत या साफ हो उम्दा फल देगा, बदसूरत या टूटा फूटा हो तो अच्छा फल न देगा।

(३) व्यजन शब्द का अर्थ तिल या मस्सा है। तिल-मस्से का रग श्याम और लहसन का रग लाल या कुछ श्याम होता है।

(४) मस्तक पर तिल, मस्सा या लहसन हो तो वह पुरुष हर जगह इज्जत पावे और फायदा मिले।

(५) ललाट की दाहिनी तरफ तिल हो वह शख्स दौलत पावे, बायी तरफ हो तो फल कम होगा, मगर बिल्कुल बेफायदे नही।

(६) भ्रू पर तिल हो तो मुल्कों की सैर करे और लाभ उठाये।

(७) आँख पर तिल हो तो नेता तथा अधिकारी हो।

(८) मुख पर तिल हो तो दौलत झलाझल मिले।

(९) गाल पर तिल हो तो उसकी पत्नी सुन्दर हो।

(१०) ऊपर के ओठ पर तिल हो तो दौलत पावे और उस की बात ऊँची रहे।

(११) नीचे के ओठ पर तिल हो तो कजूस हो।

(१२) कान पर तिल हो तो गहने, जवाहरात बहुत पहने।

(१३) गर्दन पर तिल हो तो उसको ऐश-आराम मिले और दीर्घायु हो।

(१४) दाहिनी छाती पर तिल हो उसको अच्छी स्त्री मिले और लाभ हो। बायी छाती पर तिल हो तो लाभ कम होगा मगर तिल बिल्कुल निष्फल न होगा।

(१५) दाहिने हाथ पर तिल हो तो अपने हाथ की कमाई भोगे। बाये हाथ पर हो तो कम फल देवे मगर बिल्कुल गलत नही। यदि दाहिने कंधे पर तिल हो काफी इल्म हो, बाये कंधे पर हो तो कम इल्म हो।

(१६) हाथ के पंजे पर तिल हो तो दिल का दिलेर हो।

(१७) जांघ पर तिल हो तो उसको सवारी का सुख मिले और फौज में फतह पावे।

(१८) पांव पर तिल हो, वह पुरुष मुल्कों का सफर करे और फायदा उठावे।

(१९) पुरुष के दाहिने अंग पर तिल, मस्सा या लहसन हो तो अच्छा फायदा करे। अगर बायें अंग पर हो तो कम फल होता है।

स्त्री के बायें अंग पर तिल, मस्सा या लहसन हो उसका फल

(१) जिस स्त्री के मस्तक पर तिल हो वह राजा की रानी बने।

(२) ललाट पर तिल हो तो धनी पति मिले।

(३) आंखो पर तिल हो तो पति की अच्छी नजर बनी रहे।

(४) गाल पर तिल हो तो ऐश-आराम भोगे।

(५) कान पर तिल हो तो गहने-जेवर बहुत पहने।

(६) गले पर तिल हो वह अपने घर मे हुकूमत चलावे।

(७) छाती पर तिल हो तो पुत्रवती हो।

(८) हाथ पर तिल हो तो उसका पति प्रेम करे।

(९) जाघ पर तिल हो, उसके पास नौकर-चाकर बने रहे।

(१०) पांव पर तिल हो—मुल्को का सफर ज्यादा करे।

(११) स्त्री के बायें अंग पर तिल, मस्सा या लहसन हो तो ज्यादा फायदा करता है। अगर दाहिने अंग पर हो तो कम फायदा मगर बिल्कुल निष्प्रभाव नही होता।"

पाश्चात्य मत

अब पाश्चात्य मतानुसार चेहरे के विविध भागो पर तिल का फल दिया जाता है। सर्वप्रथम ललाट के तिलो का शुभाशुभ निर्देश किया जाता है। (देखिये चित्र न० १३४)

ललाट के तिल

तिल नं० १—ललाट मे ऊपर दक्षिण भाग मे यह तिल होता

है। इसके फल की पुष्टि के लिये बायी तरफ रीढ के नीचे तिल है या नही यह देखना चाहिये। यदि यह शहद की भाति कुछ ललाई

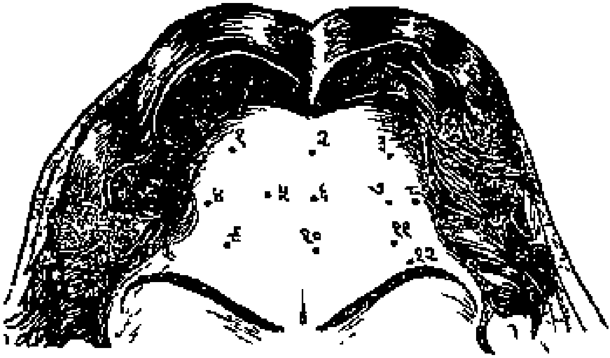

चित्र नं० १४३

लिये हो तो उसे विरासत मे सम्पत्ति मिलती है और जमीन-जायदाद से लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। किन्तु उस का स्वभाव कलहप्रिय होता है। यदि यह तिल काले रग का हो तो जीवन के अन्तिम २० वर्षों मे स्वास्थ्य अच्छा नही रहता। यदि स्त्री के ललाट पर—इस स्थान पर हो तो उसका स्वभाव अच्छा होगा परन्तु वह अधिक काल, विदेश (जन्मस्थान से दूर) रहेगी। यदि ऐसी स्त्री को सतान-कष्ट हो तो शुभ हीरा या नीलम धारण करना चाहिये।

तिल नं० २—ऐसे तिल के जोड का तिल दाहिने हाथ की कोहनी के ठीक नीचे होना चाहिये तभी निम्नलिखित-फल की पुष्टि होगी। यदि शहद के रंग का तिल इस स्थान पर ललाट पर हो तो फौजी नौकरी या ठेको से तथा सोना, चादी और लोहे आदि धातुओ से तथा जानवरो एव व्यापार आदि से लाभ होगा। यदि

हाथ की रेखा से पुष्टि होती हो तो अकस्मात् धन-लाभ भी हो सकता है। किन्तु यदि काले रंग का तिल हो तो अशुभ है। यदि स्त्री के ललाट पर हो तो वह कलाकुशल किन्तु अप्रिय बात करने वाली होती है। 'पन्ना' धारण करने से यह दोष कम होगा।

तिल नं० ३—ललाट पर इस स्थान पर तिल हो तो दाहिनी भुजा पर कोहनी के ऊपर तथा कंधे के नीचे तिल होना चाहिये। ऐसा व्यक्ति धनी नहीं हो पाता और किसी मित्र के विश्वासघात के कारण कष्ट को प्राप्त होता है। यदि काले रंग का तिल हो तो और भी अशुभ है। यदि स्त्री के ललाट पर कैसे भी रंग का—इस स्थान पर तिल हो तो पति-सुख में कमी करता है। ऐसी स्त्री का स्वभाव भी अच्छा नहीं होता।

तिल नं० ४—दाहिनी भौं के अन्त के कोने पर यह तिल होता है। इसके जोड़ का पेट के दाहिने हिस्से के नीचे कमर और जांघ के बीच में होता है। यदि यह तिल कुछ ललाई लिये हो तो मनुष्य धनी तो नहीं होता किन्तु ज्ञानोपार्जन तथा पुस्तक-पठन में विशेष रुचि होती है। ऐसे पुरुष को कोई-न-कोई स्त्री धोखा देती है, इस कारण उसके चित्त में स्त्री-जाति से विराग हो जाता है। यदि तिल काले रंग का हो तो कोई विशेष प्रभाव नहीं होता।

यदि स्त्री के ललाट पर यहां तिल हो तो उसके विचार अच्छे नहीं होते। वह उचित-अनुचित सब मार्गों से धन संग्रह को उत्सुक रहती है। यदि जीवन-रेखा तथा हृदय-रेखा बलिष्ठ न हो तो अल्पायु होने का भी भय रहता है।

तिल नं० ५—ललाट के ५ नं० के तिल के जोड़ का तिल, दाहिने सीने के नीचे के भाग में होता है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान तथा

धन-उपार्जन में चतुर होता है। मधु-वर्ण (शहद के रंग का) होने से यह तिल शुभ होता है किन्तु यदि बिलकुल काला हो तो अच्छा नहीं। यदि स्त्री के ललाट पर ऐसा तिल हो तो वह धनवती तथा दीर्घायु होती है।

तिल नं० ६—ललाट पर इस स्थान पर तिल हो तो, छाती पर बायीं ओर भी तिल होना चाहिये तभी निम्नलिखित फल पूर्ण घटित होगा। यदि मधु-वर्ण का तिल हो तो ३५-४५ वर्ष की अवस्था में गहरी बीमारी का अन्देशा होगा। देखिये जीवन-रेखा से उपर्युक्त लक्षण की पुष्टि होती है या नहीं। यदि तिल काला हो तो ऐसे मनुष्य के जीवन का प्राथमिक तथा मध्य भाग अच्छा नहीं बीतता परन्तु वृद्धावस्था में अपने परिश्रम से अपनी आर्थिक स्थिति सम्हालने में सफल होता है।

यदि किसी स्त्री के ऐसा तिल हो तो वह धनवती होती है। किसी सम्बन्धी द्वारा भी विशेष धन-प्राप्ति का योग होता है। ३० वर्ष की आयु में उदर-विकार या अन्य दुर्घटना की आशंका होती है। यदि जीवन-रेखा तथा अन्य रेखाएँ अच्छी हों तो दीर्घायु होती है।

तिल नं० ७—इसका स्थान ललाट के मध्य भाग के बायीं ओर है। इसके जोड़ का तिल बायीं तरफ की पसली के नीचे होता है। यदि मधु-वर्ण का तिल हो तो मनुष्य दुराग्रही, अपनी इच्छा-पूर्ति के लिए अनुचित कार्य करने वाला, अपव्ययी तथा ऐयाश होता है। परन्तु अपनी मिलनसारी और तहज़ीब से सब पर अच्छा प्रभाव डालता है। यदि तिल का रंग काला हो तो ४० वर्ष की अवस्था में कोई शिरो-रोग होने की आशंका होगी। पुष्टि के लिये देखिये जीवन-रेखा तथा शीर्ष-रेखा।

यदि स्त्री के ललाट पर, इस स्थान पर तिल हो तो वह अपव्ययी तथा स्वेच्छाचारिणी होती है। ऐसी स्त्री मे ३० वर्ष की अवस्था के बाद दुष्प्रवृत्तिया और बढेगी तथा पति से द्वेष करेगी।

तिल नं०८—इसके मुकाबिले का तिल बायें हाथ की कलाई के ऊपर होना चाहिये। यदि मधु की भाँति कुछ ललाई लिये यह तिल हो तो शुभ है। ऐसा मनुष्य धनी तथा ऐयाश होता है किन्तु उसका स्वभाव अच्छा नही होता। यदि तिल का रग काला हो तो कोई विशेष फल नही।

यदि स्त्री के ललाट पर—बायें भौ के कोने के ऊपर (देखिये चित्र न० १३४) ऐसा तिल हो तो वह दुष्टा तथा पति-द्वेषिणी होती है और उसे कोई छूत की भयकर बीमारी होने का अन्देशा होता है।

तिल नं०९—इस तिल की पुष्टि के लिये दाहिनी पसली के नीचे के भाग मे तिल है या नही, यह देखना चाहिये। जिस पुरुष के ऐसा तिल ललाई लिये हो वह व्यापार से विशेष धन-उपार्जन करता है। करीब ३५ वर्ष की अवस्था मे यात्रा द्वारा अपने व्यापार को विशेष तरक्की देने मे सफल होगा। पुष्टि के लिये, देखिये यात्रा-रेखाये पृष्ठ ३५२-३५६। यदि तिल काले रग का हो तो यात्रा मे अनिष्ट परिणाम होता है। यदि स्त्री के ललाट पर हो तो उसकी कल्पना-शक्ति अधिक होगी, पति-सुख सामान्य तथा एक सतान को तीव्र रोग होगा। अन्य सतान स्वस्थ रहेगी।

तिल नं० १०—यदि ललाट पर इस स्थान पर तिल हो तो इसके मुकाबिले का तिल वक्षस्थल के दाहिने भाग मे होगा। यदि यह कुछ ललाई लिये हो तो अत्यन्त शुभ होता है। ऐसा व्यक्ति कुलीन, धनी, मान-प्रतिष्ठायुक्त और उपकारी होता है। यदि तिल

काले रग का हो तो ऐसे मनुष्य मे अपव्यय का दुर्गुण होने के कारण वृद्धावस्था में आर्थिक कष्ट पाता है, और लम्बी बीमारी से भी त्रास होता है।

यदि स्त्री के ललाट पर इस स्थान पर तिल हो तो—स्नायु-पीड़ा से कष्ट होगा। ऐसी स्त्री को पति-सुख पूर्ण नही होता। स्त्री का स्वय का स्वभाव भी कर्कश होता है।

तिल नं० ११—इसकी पुष्टि के लिये देखिये कि वक्षस्थल के वाम भाग के नीचे तिल है या नहीं। यदि वहा भी तिल हो तो यह फल होता है कि मनुष्य अपनी जल्दबाजी तथा लापरवाही से ऐसे कार्य करता है कि उसका परिणाम उसके लिये अच्छा नही होता। ३० और ४० वर्ष के बीच कोई विशेष अनिष्ट परिणाम होता है। तिल यदि ललाई लिये हो तो यह फल है। यदि बिल्कुल काला हो तो कोई विशेष फल नही होता।

यदि स्त्री के ललाट पर यहा तिल हो तो उसका कम उम्र मे विवाह होता है और कई लडके होते है। मोती और मूगा पहिरना शुभ होता है।

तिल नं० १२—इस स्थान पर यदि शहद के रग का ईषत् ललाई लिये तिल हो तो ऐसे व्यक्ति का पारिवारिक मनुष्यो से विवाद होता है। परन्तु विवाह के उपरान्त भाग्य मे विशेष तबदीली होती है। यदि काले रग का तिल हो तो ३०-४० वर्ष के बीच में उदर-विकार या रक्त-विकार होता है। इस तिल का फल तभी होता है जब इसके मुकाबिले का तिल वाम नितम्ब पर हो।

यदि स्त्री के ललाट पर यहा तिल हो (देखिये चित्र नं० १३४) तो उसे कण्ठरोग होने की आशंका होगी। शरीर-लक्षण तथा हस्त-रेखाओं

से पुष्टि होती हो तो ऐसी स्त्री अत्यन्त चचल वृत्ति की होती है।

नेत्र-प्रदेश के तिल

अब नेत्रो के आसपास के तिलो का शुभाशुभ फल बताया जाता है। देखिये चित्र न० १३५। इसमे कुल ६ तिलो के स्थान बताये गये हैं। प्राय चेहरे के किसी भी भाग मे तिल का फल तभी पूर्ण रूप से घटित

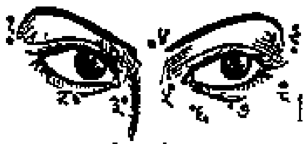

चित्र नं० १३५

होता है जब उसके मुकाबिले का तिल भी शरीर के स्थान-विशेष पर स्पष्ट रूप से हो। इसलिए नेत्र-प्रदेश के ६ तिलों के मुकाबिले के तिल, शरीर के किस-किस भाग मे होते है यह बताया जाता है—

नेत्रों के आसपास के तिल तिल न०	मुकाबिले का तिल
१. दाहिनी आख के कोने पर भौ के अन्त पर	पेट के वाम भाग मे
२ दाहिनी आख के नीचे	वक्षस्थल के नीचे
३. दाहिनी आख के बाये कोने पर	वाम ऊरु के नीचे
४ दोनो भौ के मध्य भाग मे	बाये या दाहिने पैर पर
५ वाम नेत्र के कोने पर नासिका के पास	बगल के नीचे बाईं भुजा के अन्दर की तरफ
६ वाम नेत्र के नीचे (देखिये चित्र)	दाहिने हाथ की कोहनी के नीचे
७ वाम नेत्र के नीचे (,, ,,)	दाहिनी कमर पर
८ वाम नेत्र के बायी ओर, नेत्र-प्रान्त और कान के बीच मे	सीने की हड्डी के नीचे
९ वाम नेत्र के कोने पर	बायें कन्धे पर

(नोट—इन १ से ९ तक तिलो के वही स्थान है जो चित्र नं० १३५ मे दिखाये गये है ।)

यदि उपर्युक्त नेत्र-प्रदेश पर कही तिल हो, और उसके मुकाबिले का तिल भी शरीर के निर्दिष्ट भाग पर हो तो निम्न-लिखित फल होता है ।

तिल नं० १—यदि पुरुष के चेहरे पर शहद की-सी ललाई लिये तिल हो तो उस पुरुष का स्वास्थ्य खराब रहता है । पेट की बीमारी तथा दिल की बीमारी होने की विशेष आशंका होती है। यदि काले रग का तिल हो तो दूर की यात्रा करने से अनिष्ट परिणाम होता है ।

यदि स्त्री के मुख पर यहा तिल हो तो उसका भी अनिष्ट परिणाम ही है । शारीरिक व्याधि तथा मानसिक दु ख दोनो से ही पीड़ा होती है ।

तिल नं० २—यदि काले रग का तिल हो तो कुछ विशेष फल नही होता किन्तु यदि मधु वर्ण का हो तो मनुष्य बुद्धिमान नही होता । उसकी प्रकृति तथा स्वभाव मे भी उद्दण्डता होती है। पैर मे भी कुछ विकार होता है ।

यदि स्त्री के उपर्युक्त स्थान पर तिल हो तो वह मूर्ख, आलसी किन्तु पाक-विद्या मे अभिरुचि वाली होती है । अपने माता-पिता मे विशेष श्रद्धा रखती है । जन्म-स्थान से दूर—विदेश मे उसकी मृत्यु होती है ।

तिल नं० ३—यदि काले रग का तिल पुरुष के चेहरे पर हो तो शुभ फल है । ऐसा व्यक्ति न्यायप्रिय होता है किन्तु यदि कुछ ललाई लिये हो तो मनुष्य झगड़ालू, मुकदमेबाज होता है और

कष्ट पाता है।

यदि स्त्री के चेहरे पर हो तो भी अशुभ परिणाम है। वह दुःख और कष्ट पाती है। यदि शरीर-लक्षण और हस्तरेखाओ से पुष्टि होती हो तो २४ व ३० वर्ष की अवस्था मे गुप्त प्रेम होता है।

तिल नं० ४—यदि पुरुष का यह तिल शहद के रग का हो तो बहुत शुभ है। ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली होता है किन्तु यदि काले रग का हो तो मनुष्य आपत्तिया झेलने वाला, भाग्यहीन, बुढापे मे अपस्मार आदि रोगो से विशेष कष्ट पाता है।

यदि स्त्री के इस स्थान पर तिल हो और हस्तरेखाओ तथा शरीर के अन्य लक्षणो से वह व्यभिचारिणी प्रतीत हो तो ऐसी स्त्री का किसी नीची श्रेणी के व्यक्ति से गुप्त प्रेम होता है और उसका अनिष्ट परिणाम होता है।

तिल नं० ५—यदि शहद के रग का तिल आख के पास इस स्थान पर पुरुष के चेहरे पर हो तो उसे अकस्मात् धन लाभ होता है। विदेश से माल मंगाने या विदेश को माल भेजने से ऐसे व्यक्ति को विशेष लाभ हो सकता है। यदि काले रग का तिल हो तो अशुभ है। उपर्युक्त फल उलटा होता है। यदि स्त्री के चेहरे पर इस स्थान पर तिल हो तो उसे अपने पति तथा अन्य सम्बन्धियो से धन लाभ होता है किन्तु स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव अच्छा नही होता।

तिल नं० ६—यदि ललाई लिये, ऐसा तिल पुरुष के चेहरे पर हो तो वह खेल-कूद, घुडदौड आदि का प्रेमी होता है और विशिष्ट पदाधिकारियो की सहायता से धन और मान प्राप्त करता है। यदि हस्तरेखा से पुष्टि होती हो तो ३७–४५ वर्ष की अवस्था

मे नेत्र-विकार होता है। यदि काले रग का तिल हो तो शेयर या अन्य सट्टे मे हानि होती है।

यदि स्त्री के ऐसा तिल हो तो बचपन मे अग्निभय या चोट की आशका होती है और ३० वर्ष की उम्र के बाद विरासत से धन-प्राप्ति होती है।

तिल नं० ७—यदि पुरुष के चेहरे पर ऐसा तिल हो तो विदेशो से माल मगवाने या भेजने से विशेष लाभ होता है। यदि तिल काले रग का हो तो ऐसे आदमियो को मुकदमे तथा धार्मिक सस्थाओ से हानि की आशका रहती है।

यदि स्त्री के चेहरे पर यह तिल हो तो वह सुखी तथा दीर्घायु होती है।

तिल नं ८—यदि शहद के रंग का तिल हो तो ऐसा पुरुष विलासी होता है। उसका अनेक स्त्रियो से सम्बन्ध होता है। यदि काले रग का हो तो विशेष फल नही।

स्त्री के चेहरे पर यह तिल होने से वह भी विलासिनी होती है और पुरुषो की भाँति बाहरी कार्यों में दक्ष होती है।

तिल नं ९—पुरुष के बाएँ भौं के अत के कोने पर यदि शहद के रग का तिल हो तो उसे मित्रो और सम्बन्धियों से धोखा तथा हानि की आशका होगी। यदि काले रग का हो तो परस्त्री प्रेम के कारण अप्रतिष्ठा। यदि स्त्री के चेहरे पर हो तो स्वास्थ्य खराब होगा तथ बिजली या अग्नि से भी भय की संभावना है। यदि अन्य लक्षण अच्छे न हो तो चरित्र भी संदेहास्पद होगा।

नासिका प्रदेश के तिल

अब नासिका प्रदेश के तिलों का शुभाशुभ फल बताया जाता

चित्र न० १३६

है। देखिये चित्र न० १३६। निम्नलिखित ८ तिलो का फल पढते समय ध्यान से देखे कि कौन सा तिल किस स्थान पर है।

तिल न० १—इसके मुकाबिले का तिल सीधे पुट्ठे पर होगा तब इसका निम्नलिखित फल सही बैठेगा। यदि पुरुष के चेहरे पर, नाक के ऊपर इस स्थान पर मधु की सी कान्ति का कुछ ललाई लिये हुए तिल पुरुष के चेहरे पर हो तो उसमे वाक्-चातुर्य तथा कला-चातुर्य विशेष मात्रा मे होता है। परन्तु वह स्त्रियो के जाल मे ऐसा फसा रहता है कि वे अपना अभिप्राय सिद्ध करती रहती हैं। यदि यह तिल काले रग का हो तो कोई विशेष फल नही।

यदि स्त्री के चेहरे पर यहा तिल हो तो शुभ लक्षण है। वह भाग्यशाली, दीर्घायु तथा पति सौभाग्ययुक्त होती है।

तिल नं० २—नाक के दाहिने भाग पर यदि तिल हो तो उसी के मुकाबिले का तिल बाई बगल के नीचे होना चाहिये। जिस पुरुष के नाक पर शहद के रग का तिल हो उसको जीवन के प्रथम और मध्य भाग मे सुख होता है, बुढापे मे कष्ट। ३०—३५ वर्ष की अवस्था मे शारीरिक कष्ट भी प्रकट होता है। यदि काले रग का हो तो कोई विशेष फल नही।

यदि स्त्री की नाक पर इस स्थान पर तिल हो तो वह अच्छे स्वभाव की होती है परन्तु फिर भी उसके कारण उसके पति को कष्ट होता है।

तिल नं० ३—नाक की बायीं ओर तिल हो तो उसके मुकाबिले का तिल बायीं जांघ पर होना चाहिये। यदि पुरुष की नाक पर शहद की सी कांति का तिल हो तो अशुभ है। ऐसा मनुष्य अस्वस्थ, भाग्यहीन तथा जीवन में असफल रहता है। यदि काले रंग का हो तो बिजली से या अन्य दुर्घटना से मृत्यु की आशंका होगी।

यदि स्त्री की नाक पर यह तिल हो तो वह बुद्धिमती होती है किन्तु किसी परिचित व्यक्ति के विश्वासघात से आर्थिक या जायदाद सम्बन्धी क्षति होती है।

तिल नं० ४—यदि नाक पर इस स्थान पर तिल हो (देखिये चित्र नं० १३६) तो इसके मुकाबिले का तिल दाहिनी जांघ पर होगा। यदि पुरुष की नाक पर शहद के रंग का यह तिल हो तो वह बुद्धिमान् तथा संग्रहशील होता है और उसे विरासत में सम्पत्ति भी मिलती है। यदि काले रंग का तिल हो तो उदर-विकार, यकृत् रोग आदि सूचित होता है।

यदि स्त्री की नाक पर यह तिल हो तो उसके शरीर का ढांचा कमजोर होगा और प्रसव में विशेष कष्ट और भय होगा। यदि ऐसी स्त्री की नासिका का अग्र भाग कटा हुआ सा, या हड्डी से अलग प्रतीत हो तो उसका चरित्र अच्छा नहीं होता।

तिल नं० ५—यदि बायें नथुने पर इस स्थान पर तिल हो तो इसके मुकाबिले का तिल दाहिने घुटने के ऊपर दाहिनी जांघ पर होता है। यदि पुरुष की नाक पर कुछ ललाई लिये यह तिल हो तो जमीन-जायदाद, कृषि तथा वृद्धजनों से लाभ होता है यदि तिल काला हो तो ४०—५० वर्ष के बीच में किसी दुर्घटना की आशंका होगी, किन्तु हाथ की रेखाओं से दीर्घायु प्रतीत होता हो तो प्राण-

रक्षा हो जावेगी ।

यदि स्त्री के इस स्थान पर तिल हो तो अशुभ चिह्न है, वह सदैव दुःखित रहती है ।

तिल नं० ६—यदि दाहिने नथुनेके नीचे (देखिये चित्र न० १३६) तिल हो तो इसकी जोड का तिल बायें सीने के नीचे होता है । यदि पुरुष के यह, कुछ ललाई लिये, तिल हो तो बहुत अशुभ परिणाम होता है । ऐसा व्यक्ति अपव्ययी तथा अन्य दोषो से युक्त होता है इस कारण ऐसे व्यक्ति पर फौजदारी मुकदमा चलता है । ऐसे व्यक्तियो को घृणित कार्यों से बचने का उद्योग करना चाहिये नही तो दण्डभागी होगे । यदि काले रग का तिल हो तो कोई विशेष फल नही होता ।

यदि स्त्री के यह तिल हो तो उसके लिये भी घोर अशुभ है वह अच्छे चरित्र की नही होती और अपनी स्थिति को स्वय बिगाड लेती है । पुष्टि के लिये हाथ भी देखिये ।

तिल नं० ७—नाक के नीचे और ऊपर के ओठ के ऊपर मध्य स्थान मे यदि तिल हो तो उसके मुकाबिले का तिल पेट के दाहिने भाग पर पसली के नीचे होगा । यदि पुरुष के यह तिल शहद के वर्ण का हो तो उसे सरकारी अफसरो से पीडा पहुँचती है । यदि ऐसे पुरुष की पत्नी या कन्या सुन्दरी हो तो उच्च स्थिति के लोगो की अनुचित इच्छाओ के कारण भी ऐसे व्यक्ति को कष्ट होता है । यदि तिल काला हो तो और भी विशेष कष्ट सूचित होता है ।

यदि स्त्री के यह तिल हो तो अस्वास्थ्य तथा चित्तक्लेश सूचित होता है । मूगा धारण करना चाहिये ।

तिल नं० ८—यदि वाम नासापुट के नीचे तिल हो (देखिये चित्र न० १३६) तो इसके मुकाबिले का तिल पीठ पर बाईं बगल के नीचे होता है। यदि शहद के रग का तिल पुरुष के हो तो ऐसा व्यक्ति बाहर से बहादुर किन्तु भीतर से बुजदिल होता है। स्त्रियो के कारण मुकदमे या अन्य कलह के कारण कष्ट होता है। यदि काले रग का तिल हो और हाथ की रेखाओ से पुष्टि होती हो तो जल मे डूबने का भय होता है।

यदि स्त्री के इस स्थान पर तिल हो तो भी अशुभ है। उसका चरित्र अच्छा नही होता। पुष्टि के लिये हस्तरेखा तथा शरीर-लक्षणो से मिलान करना चाहिये।

कान के पास के तिल

ललाट के, नेत्र-प्रदेश के तथा नासिका के ऊपर या उसके समीपवर्ती तिलो का फल बताया जा चुका है। अब कान के पास के तिलो का शुभाशुभ फल बताया जाता है। देखिये चित्र न० १३७। इस मे ३ तिल न० १, २ तथा ३ दाहिने कान के पास है और दो तिल न० ४ और ५ बाये कान के पास है। प्रायः इन तिलो के जोड के तिल शरीर के अन्य भाग पर भी होते है।

चित्र न० १३७

कान के पास के तिल	मुकाबिले का तिल
न० १	दाहिने पाँव की पिडली पर
२	पेडू के मध्य भाग में
३	दाहिने घुटने के ऊपर

४ बायें कंधे पर

५ बायीं जांघ पर

यदि ये मुकाबिले के तिल शरीर पर हों तो कान के तिलों का निम्नलिखित फल पूर्ण रूप से घटित होता है—अन्यथा कम। अब ऊपर के पाँचों तिलों का क्रमश फल बताया जाता है।

तिल नं० १—यदि यह तिल मधु की सी कान्ति वाला, कुछ ललाई लिये हो तो ऐसे पुरुष को किसी धनिक कुटुम्बीजन से विरासत में धन तथा जायदाद की प्राप्ति होती है। किन्तु ऐसे पुरुष का स्वभाव तथा बर्ताव कुछ उद्दण्डता लिये होता है। पुत्र-सुख में भी कमी करता है। ज्येष्ठ पुत्र आज्ञाकारी नहीं होता। यदि काले रंग का तिल हो तो ऐसे पुरुष के साथ उसका कोई मित्र विश्वासघात कर हानि पहुँचाता है।

यदि स्त्री के चेहरे पर कान के पास यह तिल हो तो अशुभ है। जल-विकार या कफ से उत्पन्न रोग से उसकी मृत्यु होती है।

तिल नं० २—यदि पुरुष के दाहिने कान के पास इस स्थान पर शहद के रंग का तिल हो तो वह सदाचारी किन्तु निर्धन होता है। उसके चित्त में सदैव चिन्ता या उदासी रहती है। यदि तिल काले रंग का हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि स्त्री के चेहरे पर कान के पास तिल हो तो वह अपने आचार तथा व्यवहार से बदनामी प्राप्त करती है। शरीर के अन्य लक्षणों से तथा हृदय-रेखा, सूर्य-रेखा और मस्तिष्क-रेखा से सामञ्जस्य करना चाहिये कि उसकी अधोगति किस मात्रा तक होगी।

तिल नं० ३—यदि यह चिह्न कुछ ललाई लिये पुरुष के चेहरे पर चित्रांकित स्थान पर (देखिये चित्र नं० १३७) हो तो

विवाहानन्तर उसके भाग्य मे वृद्धि होती है । उसे अपने किसी कुटुम्बीजन से विरासत मे धन-प्राप्ति भी होती है । यह शुभ तिल है । किन्तु यदि काले रग का हो तो कोई विशेष फल नही ।

यदि स्त्री के चेहरे पर यह तिल हो तो वह बुद्धिमती तथा धनशालिनी होती है किन्तु अन्य स्त्रियो के साथ मेल-जोल से नही रह सकती । पन्ना पहनना शुभ है ।

तिल नं० ४—यदि पुरुष के बाये कान के समीप इस स्थान पर मधु की-सी कान्ति वाला तिल हो तो वह अपने बुद्धि-चातुर्य से बहुत धन उपार्जन करता है । व्यापार द्वारा भी धन-लाभ होता है । यदि काले रग का तिल हो तो घोर अशुभ है । पैर मे चोट लगने का भय होगा और आर्थिक स्थिति मे भी बहुत उथल-पुथल होगी ।

स्त्री के चेहरे पर यदि यह तिल हो तो विवाह के पूर्व वह कुछ चचल चित्त की होती है । पुष्टि के लिये हस्त-रेखा तथा शरीर-लक्षणो से तुलना करनी चाहिये । उसे पति-सुख अच्छा होता है ।

तिल नं० ५—यदि पुरुष के चित्राकित स्थान पर यह तिल हो तो उसको, सम्बन्धी-रिश्तेदार लोगो से झगड़ा तथा मुकदमेबाजी के कारण परेशानी होगी । यदि काले रग का हो तो भी अशुभ है । मनुष्य अपने अनुचित आचरणो के कारण कष्ट भोगता है ।

यदि स्त्री के चेहरे पर उक्त स्थान पर तिल हो तो वह सदाचारिणी नही होती । यदि हाथ का अगूठा छोटा, शुक्र-क्षेत्र अति उन्नत, जाल चिह्न से युक्त, हृदय-रेखा द्वीपयुक्त तथा मस्तिष्क-रेखा कमजोर हो तो उसका अपने चित्त पर सयम नही रहता ।

कपोल के तिल

अब कपोल-प्रदेश के शुभाशुभ फलो का निर्देश किया जाता है। (देखिये चित्र न० १३८) इसमे ७ स्थानो पर तिल-चिह्न दिखाये गये हैं। यदि ठीक इन स्थानो पर तिल न होकर कुछ थोड़ा सा सरका हुआ तिल किसी के गाल पर हो तो, जिस चित्राकित तिल के सब से समीप, वह समझा जावे उस जैसा फल करेगा।

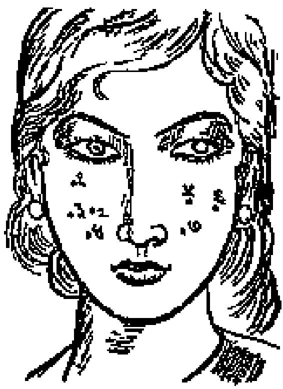

चित्र न० १३८

तिल नं० १—यदि चित्राकित स्थान पर पुरुष के दक्षिण कपोल पर तिल हो तो उसके मुकाबिले का तिल, बायी पसली के नीचे कमर के आस-पास होता है। यह तिल यदि शहद के रग का हो तो मनुष्य विदेश मे साधारण नौकरी कर अपना समय व्यतीत करता है। यदि यह तिल काले रग का हो तो करीब ३० वर्ष की अवस्था मे किसी से घोर शत्रुता होगी।

यदि स्त्री के कपोल पर यह तिल हो तो वह सदाचारिणी तथा धार्मिक होती है और मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करती है।

तिल न० २—दक्षिण कपोल के मध्य भाग मे तिल हो तो उसके मुकाबिले का तिल पेट पर होता है। यदि काले रग का तिल हो तो कोई विशेष फल नही होता किन्तु यदि शहद के रग का हो तो ऐसा पुरुष अपनी वक्तृत्व-शक्ति तथा चतुरता से उच्च पद प्राप्त करता है। किसी उच्चाधिकारी की पत्नी का उसकी उन्नति मे

सहयोग भी होता है।

यदि स्त्री के चेहरे पर यह तिल हो तो बातचीत मे चतुर किन्तु अपव्ययी और चचल स्वभाव की होती है। अपने सम्बन्धित वर्ग को त्रास पहुँचाती है।

तिल नं० ३—यदि पुरुष के दाहिने कपोल पर यह तिल हो तो उसके मुकाबिले का तिल वक्षस्थल के बाम भाग के नीचे होगा। यदि कपोल का तिल शहद के रग का हो तो वह अनियमित आहार-विहार के कारण व्याधिग्रस्त होता है और कष्ट पाता है। यदि यह तिल काले रग का हो तो और भी अशुभ है। भयकर शारीरिक कष्ट का द्योतक है।

स्त्री के कपोल पर भी प्रायः यही फल होता है।

तिल नं० ४—यदि दाहिने गाल पर इस स्थान पर तिल हो तो इसके फल की पुष्टि के लिए देखना चाहिये कि बायी तरफ की जाघ की सधि पर तिल है या नही। यदि पुरुष के कपोल पर यह तिल का रग हलका श्याम, कुछ ललाई लिये हो तो इसके जीवन का प्रथम तथा मध्य भाग साधारण आर्थिक स्थिति मे व्यतीत होगा। स्त्रियो के कारण धन-हानि भी होगी। अधिक उम्र होने पर धन-प्राप्ति का योग है। यदि काले रग का तिल हो तो किसी ऊँचे स्थान से गिरने की आशका होगी।

यदि स्त्री के कपोल पर यह तिल हो तो वह घूमने की बहुत शौकीन होती है। उसमे मुस्तकिल मिजाजी नही होती।

तिल नं० ५—यह तिल बाये कपोल पर चिन्हांकित स्थान पर होता है। इस के मुकाबिले का तिल दाहिनी ओर छाती के नीचे होता है। जिस पुरुष के यह तिल मधु-वर्ण का हो उसका

अपनी जन्मभूमि से बाहर (अर्थात् अन्य स्थान पर) विशेष भाग्योदय होता है।

यदि काले रग का तिल हो तो अपनी चतुरता से—किन्तु अन्याय मार्ग से धनोपार्जन करता है। ५०-५५ वर्ष की आयु मे सट्टे आदि मे अचानक धन-हानि होती है।

यदि स्त्री के वाम कपोल पर यह तिल हो तो वह विलासिनी होती है और उसे अनेक लोग चाहते हैं—विशेषकर उससे कम उम्र वाले।

तिल न० ६—यदि पुरुष के कपोल पर इस स्थान पर तिल हो तो उसके मुकाबिले का तिल वक्षस्थल पर होता है। यदि शहद के रग का तिल पुरुष के चेहरे पर हो तो वह अस्थिरचित्त तथा स्त्रियो के प्रभाव मे विशेष रहने के कारण नैतिक मार्ग से स्खलित हो जाता है। स्त्रियो के ससर्ग के कारण उसके सम्मान को भी क्षति पहुचती है। यदि काले रग का तिल हो तो कुछ फल नही होता।

यदि स्त्री के चेहरे पर इस स्थान पर तिल हो तो वह स्वतत्र वृत्ति की तथा हठी (दुराग्रही) होती है। उसे कोई भयकर व्याधि भी होगी परन्तु अन्त मे स्वस्थ हो जावेगी।

तिल न० ७—यदि यहा तिल हो तो इसके मुकाबिले का तिल दाहिने नितम्ब पर होता है। यदि मधु वर्ण का तिल हो तो विवाह के बाद भाग्योदय होता है। परन्तु यदि हाथ मे दो विवाह की रेखा स्पष्ट और बलवान हो तो प्रथम स्त्री का देहान्त हो जाता है और जातक दूसरा विवाह करता है किन्तु वैवाहिक सुख प्राप्त नही होता। यदि तिल का वर्ण काला हो तो विदेश मे किसी जानवर या सवारी से टकराने की या अन्य दुर्घटना की आशका होती है।

यदि स्त्री के कपोल पर इस स्थान पर तिल हो तो उसका धनिक

पति से विवाह होता है किन्तु स्वय का स्वास्थ्य ठीक नही रहता।

हनु प्रदेश के तिल

अब हनु प्रदेश के तिलो का शुभाशुभ फल बताया जाता है। साधारण तौर पर 'हनु' को भी 'ठोडी' तथा चिबुक को भी हिन्दी मे ठोडी ही कहते है। किन्तु वास्तव में हनु प्रदेश तो गाल के नीचे वाला हिस्सा कहलाता है और चिबुक ओष्ठ या मुख के नीचे वाला हिस्सा। देखिये चित्र न० १३६। इसमे जहा-जहा दाहिनी और बायी ओर तिल दिखाये गये है वह हनु-प्रदेश है। चित्र से स्पष्ट होगा कि तिल न० १, २, ३, ४ तो हनु-प्रदेश मे दाहिनी ओर है और तिल न० ५, ६, ७, ८, ९ बायी ओर। इन हनु प्रदेश के तिलों के मुकाबिले के चिह्न शरीर के किस-किस भाग मे होते है। यह नीचे बताया जाता है—

चित्र न० १३६

हनु प्रदेश के तिल	उसके मुकाबिले के तिल
१	पेट के दक्षिण भाग मे नीचे
२	बायी पसली के नीचे
३	पेडू के पास
४	दाहिने घुटने पर
५	
६	दाहिनी जांघ पर भीतर के भाग मे
७	बायीं जांघ के नीचे के भाग मे
८	पीठ पर नीचे की ओर

६ दाहिनी आँख के नीचे

तिल न० १—यदि पुरुष के चिन्नांकित स्थान पर शहद के रंग का यह तिल हो (देखिये चित्र न० १३१) तो ऐसा व्यक्ति झूठ बोलने वाला, दगाबाज, इन्द्रियलोलुप तथा विश्वास के अयोग्य होता है। उस पर कोई फौजदारी मुकदमा चलता है। यदि काले रंग का हो तो भी अशुभ ही है। मनुष्य निर्धन होता है तथा अनियमित जीवन व्यतीत करने के कारण रोगग्रस्त होता है।

यदि स्त्री के चेहरे पर यहां तिल हो तो उसके लिये भी घोर अशुभ लक्षण है। उसमे भी चरित्र-सम्बन्धी कमजोरियाँ होती हैं और सन्तान का सुख कम होता है। पुष्टि के लिये अन्य शरीर-लक्षण और हस्त-रेखा देखिये।

तिल नं २—यदि पुरुष के चेहरे पर हल्के श्याम वर्ण का यह तिल हो तो उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होती और उसके हृदय के विचार भी शुद्ध तथा उदार नहीं होते। यदि तिल बिलकुल काले रंग का हो तो पशु-भय या किसी दुर्घटना का भय होता है।

यदि स्त्री के चेहरे पर उपर्युक्त स्थान पर तिल हो तो उसका चरित्र संशयास्पद होता है और वह कलहप्रिया होती है। पैर के लक्षणों से इसकी पुष्टि करनी चाहिये।

तिल न० ३—यदि पुरुष के चेहरे पर यह तिल बिलकुल काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता किन्तु यदि कुछ ललाई लिये हो तो ऐसा पुरुष विद्या-प्रेमी, एकान्त पसन्द और भाग्यशाली होता है। यदि स्त्री के चेहरे पर इस स्थान पर तिल हो तो वह पतिव्रता तथा सौभाग्यवती होती है।

तिल नं० ४—यदि काले रंग का तिल पुरुष के मुख पर इस

स्थान पर हो तो वह बहुत कामासक्त रहता है। यदि कुछ ललाई लिये हो तो भी विषयोपभोग मे लीन, दुर्बल चित्त का और कार्य मे प्रवीण नही होता।

यदि स्त्री के चेहरे पर यह तिल हो तो अस्वास्थ्य का द्योतक है।

तिल नं० ५—यदि पुरुष के चेहरे पर इस स्थान पर काले रंग का तिल हो तो वह अपने अनुचित आचार-विचारो के कारण हानि उठावेगा। यदि तिल बिलकुल काला न होकर हलका श्याम, कुछ ललाई लिये हो तो भी शुभ नही है। ऐसे आदमी के अनेक शत्रु होगे और उसे हानि पहुँचावेगे तथा उसकी भाग्यवृद्धि मे बाधक होगे।

यदि स्त्री के चेहरे पर हो तो वह कामासक्त किन्तु भाग्यशालिनी होती है।

तिल नं० ६—यदि पुरुष के चेहरे पर शहद के समान रग का तिल इस स्थान पर हो तो वह भाग्यवान होता है। २८-३२ वर्षो के मध्य मे कुछ विशेष आपत्ति या कठिनता उठानी पडती है। यदि काले रग का तिल हो तो वैवाहिक जीवन दु खमय होता है। यदि स्त्री के चेहरे पर उपर्युक्त स्थान पर तिल हो तो वह धनी और सुखी होती है। जीवन के पहले भाग मे पति-सुख कुछ कम होता है, बाद का जीवन अच्छा बीतता है।

तिल नं० ७—यदि पुरुष के चेहरे पर यह तिल काले रग का हो तो कोई विशेष प्रभाव उत्पन्न नही करता किन्तु यदि हलका श्याम, कुछ ललाई लिये हो तो ऊपर से गिरने, जल मे डूबने या अन्य दुर्घटना की आशका होती है।

यदि स्त्री के चेहरे पर उपर्युक्त तिल हो तो स्वास्थ्य-हानि, भाग्यहानि आदि अनिष्ट परिणाम सूचित होते है । ३०-३१ वर्षों के मध्य मे शारीरिक रोग या मानसिक कष्ट होगा।

तिल नं० ८—यदि काले रग का तिल पुरुष के चेहरे पर इस स्थान पर हो तो ऐसा पुरुष स्वय अपने भाग्य का अपनी दुर्बुद्धि से नाश करता है।

यदि शहद के रग का तिल हो तो ऐसा व्यक्ति विदेश-यात्रा का शौकीन होता है और वहा से तिजारत द्वारा धन लाभ भी करता है।

यदि स्त्री के चेहरे पर उपर्युक्त तिल हो तो वह प्राय अच्छे चरित्र की नही होती उसका स्वास्थ्य भी ठीक नही रहता है।

तिल न० ९—यदि काले रग का तिल उपर्युक्त स्थान पर पुरुष के चेहरे पर हो तो ऊपर से गिरने या अन्य दुर्घटना की आशका होती है।

यदि शहद के रग का तिल हो तो भी शुभ नही। ऐसा व्यक्ति लोभी तथा क्षुद्र हृदय होता है और उसका बुढापा अच्छा नही बीतता।

यदि स्त्री के चेहरे पर इस स्थान पर तिल हो (देखिये चित्र न० १३९) तो जवानी की अपेक्षा बुढापे मे उसकी आर्थिक स्थिति बदल जाती है अर्थात् जवानी मे मालदार हो तो बुढापे मे आर्थिक स्थिति अच्छी नही होती और जवानी मे गरीब हो तो बुढापे मे धनाढ्य हो जाती है।

चिबुक प्रदेश के तिल

चित्र नं० १४०

पहले हनु प्रदेश के तिलों का शुभाशुभ फल बताया गया है। अब चित्र न० १४० देखिये। इसमे ५ तिल दिखाये गये है। इन तिलों के मुकाबिले के तिल शरीर के किस भाग मे होते है यह नीचे बताया जाता है—

चिबुक के तिल	इनके मुकाबिले के तिल
१	दाहिनी जाघ १२
२	जाघ पर
३	पीठ के बाये भाग मे नीचे की ओर
४	बाई जाघ पर भीतर की ओर
५	वक्षस्थल पर

यदि मुकाबिले का तिल शरीर पर उपर्युक्त स्थान पर हो तो चिबुक प्रदेश के वर्णित शुभाशुभ फल पूर्ण रीति से मिलते है—अन्यथा नही। अब इन तिलों का क्रमश फल बताया गया है—

तिल नं० १—यदि यह तिल शहद के रग का हो तो शुभ है। ऐसा पुरुष गुणी और विद्वान् होता है और उच्चस्थिति के लोगों के सम्पर्क और सहायता से उसका भाग्योदय होता है।

यदि तिल काले रंग का हो तो पुरुष दीर्घायु और धनी होता है। यदि स्त्री की ठोड़ी पर इस स्थान पर तिल हो तो वह धनवती होगी, और बाहर से उसका आचरण भी अच्छा ही प्रतीत

होगा। किन्तु हस्त-रेखाओ व शरीर-लक्षणो से चरित्रहीनता की पुष्टि होती हो तो—चरित्र निर्मल न होगा।

तिल न० २—यदि मधुवर्ण तिल हो तो शुभ है। ऐसा पुरुष बुद्धिमान तथा धनोपार्जन मे विशेष कुशल होता है। किन्तु वात-व्याधि से पीडित रहता है। यदि जीवन, शीर्ष तथा हृदय-रेखाओ से अल्पायु होने के लक्षण प्रतीत हो तो अल्पायु होता है।

यदि तिल काले रग का हो तो ऊँचे से गिर कर चोट लगने का भय होता है।

यदि स्त्री के मुख पर इस स्थान पर तिल हो तो वह विशेष बुद्धिमती नही होती। उसे प्रसव मे विशेष कष्ट या प्रसव-सम्बन्धी कोई रोग होता है या ऊपर से गिरने का भय होता है।

तिल न० ३—यदि मधुवर्ण का तिल पुरुष के चेहरे पर हो तो शुभ है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान, मित्रो से प्रेम-निर्वाह करने वाला तथा शत्रुओ से बदला लेने वाला होता है। किसी धनिक स्त्री की विरासत भी प्राप्त होती है। यदि तिल का रग काला हो तो कोई विशेष फल नही होता।

यदि स्त्री के चेहरे पर इस स्थान पर तिल हो तो जीवन के मध्य भाग मे किसी निकट सम्बन्धी की मृत्यु होती है। अनुचित औष-धि-प्रयोग के कारण स्वय उसके स्वास्थ्य को भी हानि पहुँचती है।

तिल न० ४—यदि पुरुष के चेहरे पर इस स्थान पर शहद के रग का तिल हो तो उसका विवाह धनी कुटुम्ब मे नही होता। यदि अन्य लक्षण अच्छे न हो तो व्यापार या सट्टे मे गहरी हानि होती है। काले रग का तिल और भी अशुभ है। धन-हानि के कारण गहरी विपत्ति उठानी पडती है। स्त्री के चेहरे पर भी

ऐसे तिल का अनिष्ट प्रभाव होता है। वह मायाविनी, धूर्त तथा दुष्टा होती है।

तिल नं० ५—पुरुष के चेहरे पर यदि शहद के रंग का तिल हो तो शुभ है। ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली तथा सभाचतुर होता है। स्त्रियों द्वारा (अपनी पत्नी तथा अन्य रिश्तेदार) उसकी भाग्यवृद्धि मे सहायता होती है। यदि भाग्य-रेखा अच्छी हो तो धनी भी होता है। यदि तिल काले रंग का हो तो विशेष फल नही होता।

यदि स्त्री के चेहरे पर इस स्थान पर तिल हो तो वह अपने पति को बहुत कष्ट देती है। ऐसी स्त्री के नेत्र भी कमजोर होते है।

ऊपर जो तिलो का फल बताया गया है वही मस्से या लहसन का भी होता है। तिल के फलादेश का शरीर-लक्षण तथा हस्तरेखाओ से समन्वय और सामञ्जस्य करके देश, काल, पात्र का विचार कर किसी निर्णय पर पहुँचना उचित है। विरुद्ध लक्षणो का सन्तुलन कर किस प्रकार के लक्षण-विशेष घटित होते हैं, यह सम्यक् विचार अभ्यास-साध्य है।

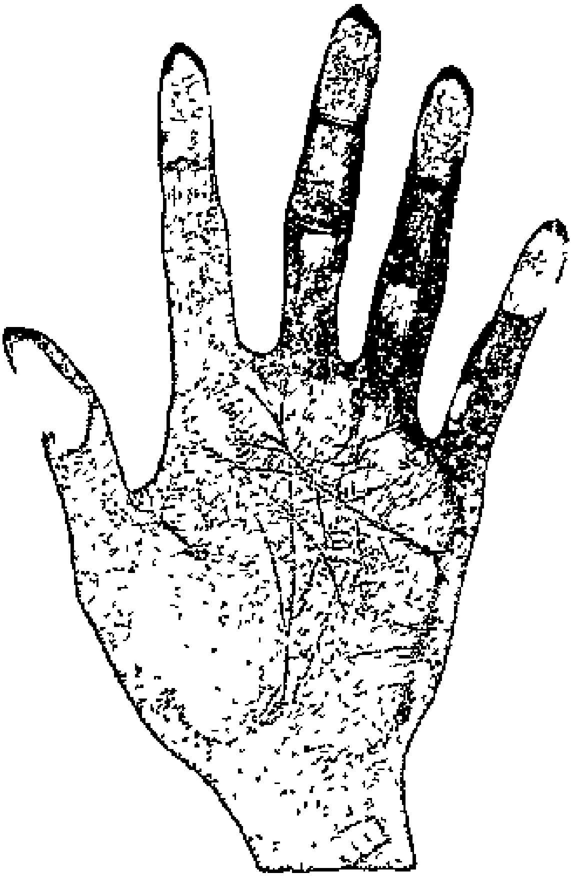

स्वर्गीय स्वामी विवेकानन्दजी

चित्र नं० १४१

माननीय पं० जवाहर लाल जी नेहरू

चित्र न १४९

हिज़हाइनेस महाराजा सर सवाई जयसिंहजी K. C. S. I. अलवर नरेश

चित्र नं० १४३

श्री जार्ज बर्नार्डशा

चित्र नं० १४४